International Journal of Microbial Science

ISSN (online): 2582-967X
Editor in Chief: Dr. D. Mubarak Ali
Email:info@theijms.com
Contact No.: +91 8788 383470
Website: https://theijms.com/
Vision: To transform each person into a researcher, writer, and publisher to sustain the universe.
Mission: Book Writing and Publication Campaign 5.

Date: 22st February 2023

To whomsoever it may Concern

This is to certify that **Dr. Kavita Chahal,** Ph.D. in Microbiology, CSIR-NET,Assistant Professor, Department of Botany, Government College Bichhua, Chhindwara, Madhya Pradesh**,** India, is an **Author** of a Textbook entitled 'Dairy Microbiology Choice Based Credit System (CBCS) 2019 Pattern Implemented from 2021-22 As per the syllabus by Savitribai Phule Pune University, Pune Applicable to all Indian Universities' published by International Journal of Microbial Science.
The details are as Follows,

Sr. No.	Name of the Paper	Year of Publication
01	**Dairy Microbiology** Choice Based Credit System (CBCS) 2019 Pattern Implemented from 2021-22 As per the syllabus by Savitribai Phule Pune University, Pune Applicable to all Indian Universities' ISBN: 978-93-93337-20-7	2023

During her tenure of work with us, we found her very sincere and hardworking and loyal to the assignment. We wish all the success for her future career.

Special features:

Will be available in United States, United Kingdom, Denmark, France, New Zealand, Japan, Brazil, Canada, Mexico, India, Italy

Verified & approved by editorial board of International Journal of Microbial Science

Written by subject experts

Thanks and regards.

Rajesh Dhakane
Founder,International Journal of Microbial Science,
Assistant Professor,
Department of Microbiology,
Jayawantrao Sawant College of Commerce and Science,
Hadapsar, Pune, Maharashtra, India.

Best of Best Collections

ISBN: 978-93-93337-19-1

Text book of

Dairy Microbiology

T.Y.B.Sc Microbiology (Semester V)
Skill Based Elective MB 3511
As per syllabus by Savitribai Phule Pune University, Pune
Based on Choice Based Credit Pattern (CBCS-2019)
To be implemented from academic year 2021-2022
(Applicable to all Indian Universities)

Authors
Manisha Shinde
Ms. Mansi Mohan Raut
Gouri Ruturaj Vaidya
Prajkta Pankaj Mohite
Rohini Nikam Ghadage
Kazi Namira Hussain
Dr. Kavita Chahal
Aniket Ramchandra Agrahari
Editors
Madhuri Santosh Bhandwalkar
Mrs Nilima Pradeep Tidar
Dr. Sureshchandra Singh

International Journal of Microbial Science (ISSN:2582-967X)

पर्यावरण संरक्षण एवं संसाधन प्रबंधन

Volume - 2

मुख्य संपादक

श्रीमति मीना ठाकरे

सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय बिछुआ, जिला छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश, भारत

सह–संपादक

डॉ. सी.पी. राहंगडाले

वानिकी वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र मैनपाट, सरगुजा, छत्तीसगढ, भारत

ब्राइटस्काई प्रकाशन

नई दिल्ली

पुस्तक का शीर्षक
''पर्यावरण संरक्षण एवं संसाधन प्रबंधन''

लेखक
श्रीमति मीना ठाकरे एवं डॉ. सी.पी. राहंगडाले

प्रकाशक
ब्राइटस्काई प्रकाशन
ऑफिस न. – 3, 1st फ्लोर,
H-34/3, सेक्टर – 3, रोहिणी,
दिल्ली – 110085, भारत

प्रथम संस्करणः 2023
पृष्ठः 130
मूल्यः ₹ 740/-

Paperback ISBN:

Book DOI:

मुद्रक
ब्राइटस्काई प्रकाशन
नई दिल्ली

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी अर्थ में प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता। सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन है।

सामग्री

स. न.	अध्याय	पृष्ट स.
1.	कृषि संसाधन और आर्थिक विकास *(संजय कुमार मेहरा)*	01-31
2.	भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि संसाधनों का योगदान *(यशोदा उइके)*	33-55
3.	भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्य फसल मक्का का योगदान *(जयगोविंद सनोडिया)*	57-71
4.	महासागरीय संसाधनों का संरक्षण एवं प्रबंधन *(मीना ठाकरे)*	73-96
5.	भारतीय कृषि का आधुनिकीकरण एवं प्रबंधन *(डॉ. सुनिता सोलंकी)*	97-112
6.	भारत में उर्जा संसाधन *(मीना ठाकरे एवं डॉ. सी. पी. राहंगडाले)*	113-130

अध्याय - 1
कृषि संसाधन और आर्थिक विकास

लेख़क

संजय कुमार मेहरा

धिकारी, शासकीय मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय, भोपाल,
मध्य प्रदेश, भारत

अध्याय - 1

कृषि संसाधन और आर्थिक विकास

संजय कुमार मेहरा

सारांश

कृषि एक बहुत प्रचलित व्यवसाय है। मानव सभ्यता के विकास में स्थाई कृषि एक महत्वपूर्ण चरण था, भूमि अथवा मिट्टी को जोतने, बीज बोकर बीज उत्पन्न करने, इसके साथ ही सहायक के रूप में पशु पालने, मत्स्यआखेट करने एवं वानिकी की संपूर्ण कार्य प्रणाली की कला एवं विज्ञान को कृषि कहते हैं या भूमि संसाधनों का उपयोग करके फसलों का उत्पादन करना कृषि कहलाता हैं। भारत कृषि की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण देश है। इसकी दो–तिहाई जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है। कृषि एक प्राथमिक आर्थिक क्रियाकलाप है जो हमारे लिए अधिकांश खाद्यान्न उत्पन्न करती है। खाद्यान्नों के अतिरिक्त यह विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चा माल भी पैदा करती है।भारत एककृषि प्रधान अर्थव्यवस्थाहै। इसकी लगभग 55% जनसंख्या इस क्षेत्रमें कार्यरत है।कृषि का भारतीय अर्थव्यस्था के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 14% योगदान है। लेकिन लगातार हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान घट रहा है। 1950 के दशक में हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान 53 प्रतिशत होता था जो वर्तमान में करीब 14% रह गया है। देश में निर्यात के क्षेत्र में कृषि का 10% हिस्सा है।

शब्दावली: कृषि, अर्थव्यवस्था,सकल घरेलू उत्पाद, राष्ट्रीय आय, संसाधन।

प्रस्तावना:

संसाधन किसी उद्देष्य को प्राप्त करने का आधार होता हैं। यह उद्देष्य व्यक्तिगत अथवा सामाजिक आवष्यकता एवं प्रयोजन की पूर्ति करता हैं। अतः कोई भी वस्तु तब तक संसाधन नहीं कहीं जा सकती जब तक कि उसमें मानव की आवष्यकता एवं प्रयोजन की पूर्ति अथवा कठिनाई निवारण की आंषिक अथवा पूर्ण क्षमता नहीं हैं। संसाधन की उपादेयता मानव की क्रियाओं द्वारा ही संभव है। मानव और उसके कार्यों से ही इसका संबंध है और मानव की आवष्यकतापूर्ति ही संसाधन उपयोग हैं।

मानव उपयोग के लिए यह संसाधन विभिन्न प्रकारों और रूपों में मिलते हैं। मानव ने सभ्यता के विकास के विभिन्न चरणों में संसाधनों का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया है।मानव ने अपनी आवश्यकताओं को विभिन्न संसाधनों के परिवर्द्धन–संसोधन और संस्करण द्वारा पूरा किया है। मृदा, जल, और सूर्यताप का

प्रयोग कर उसने अपनी आधारभूत जैविक आवष्यकताओं को पूरा किया है। आधारभूत आवष्यकताओं में भोजन और वस्त्र के लिए उसने संसाधनों का उपयोग कर खाद्यान्न और कपास आदि का उत्पादन किया हैं और इस प्रकार कृषि का विकास किया है। स्पष्ट है कि कृषि मृदा, जल और मानव संसाधन के उवयोग का समुच्चय है। कृषि मानव की बड़ी पुरानी परम्परा है।

कृषि के महत्व और भूमिका

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदण्ड है। जहां एक ओर यह प्रमुख रोजगार प्रदाता क्षेत्र है। वहीं सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। देश की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या अपनी आजीविका हेतु कृषि पर ही निर्भर है। कृषि की सकल घरेलू उत्पादन में भागीदारी लगभग 22 प्रतिशत है। वस्तुतः ये तथ्य भारत को विकासशील देशों में शामिल करते है, विकसित राष्ट्रों में जहां सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की भागीदारी का प्रतिशत कम होता है वहीं वहां की अपेक्षाकृत कम जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न होती है। उदाहरणार्थ ब्रिटेन व अमेरिका की राष्ट्रीय आय में कृषि की भागीदारी क्रमशः 2 प्रतिशत तथा 3 प्रतिशत है।कृषि के माध्यम से खाद्यान्न तो उपलब्ध होता ही है, साथ ही अनेक प्रमुख उद्योगों के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध होता है (सूती वस्त्र उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग, चाय उद्योग, सिगरेट उद्योग और तम्बाकू उद्योग, आदि)। कृषि, राष्ट्रीय आय का एक प्रधान स्रोत है। कृषिजन्य उत्पाद व्यापार (राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय) का एक अभिन्न एवं प्रमुख हिस्सा है। भारत द्वारा चाय, कपास, तिलहन, मसाला, तम्बाकू आदि का विश्व–व्यापार होता है। कृषिजन्य उत्पादों के आंतरिक व्यापार से परिवहन कर और अंतरराष्ट्रीय व्यापार से तटकर की आय में वृद्धि होती है, जो अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए नितांत आवश्यक है।

कृषि संपूर्ण राष्ट्र को प्रभावित करती है। कृषि–उत्पादन मुद्रास्फीति दर पर अंकुश रखता है, उद्योगों को शक्ति प्रदान करता है, कृषक आय में वृद्धि करता है तथा रोजगार प्रदान करता है। कृषि का आर्थिक महत्व के साथ–साथ सामाजिक महत्व भी है। यह क्षेत्र निर्धनता उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकांश निर्धन लोग ही कार्यरत हैं और यदि कृषि क्षेत्र का विकास होगा तो निर्धनता भी स्वतः समाप्त हो जायेगी।आज, भारत खाद्यान्न में आत्मनिर्भर है, हालांकि बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न जरूरतों को पूरा करने का दबाव भी भारत पर निरंतर बढ़ता जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय पटल पर, विश्व में भारतीय कृषि के लिए, भविष्य में निहितार्थ रखेगा। भारत किस प्रकार इन चुनौतियों से निपटेगा, यह देखा जाना शेष है।

भारतीय कृषि का स्वरूप

स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों बाद कृषि का उत्पादन कई गुणा बढ़ चुका है। किंतु भारतीय कृषि में व्याप्त कुछ कारक इसके संतुलित विकास व वृद्धि में अवरोधक हैं।

अभी भी भारत में प्रति हेक्टेयर भूमि में उत्पादन का स्तर बहुत ही न्यून है। कृषि के विकास के लिए नवीन तकनीक, मशीनरी तथा नव–विकसित बीजों को अपनाकर यदि कृषि के क्षेत्र में कदम बढ़ाया जाए, तो हम विश्व के प्रमुख देशों के उत्पादन–स्तर से अधिक हासिल कर सकते हैं। कृषि को उद्योग का दर्जा देना नितांत आवश्यक है। भारत में अधिकांश कृषि क्षेत्र अल्प–वर्षा वाले हैं और वहां सिंचाई की सुविधा भी बहुत ही सीमित है। बहुत–से क्षेत्र बाढ़ और सूखा जैसी प्राकृतिक आपदा से त्रस्त हैं। यहां मिट्टी का वितरण भी विभिन्न क्षेत्रों में असमान ही है, इसलिए विभिन्न प्रकार की फसलें उत्पादित होती हैं।

हमारे कृषक आज भी निरंतर कृषि की परम्परागत तकनीक का इस्तेमाल करते हैं और अधिकतर निर्वाह कृषि ही करते हैं। वित्तीय बाधाएं लघु एवं सीमांत कृषकों को उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि करने हेतु खेती की आधुनिक पद्धति को अपनाने से रोकती है। भारतीय कृषि अभी भी व्यापक रूप से सिंचाई हेतु मानसून पर निर्भर करती है। लगभग 60 से 70 प्रतिशत विशुद्ध बुवाई क्षेत्र निरंतर सिंचाई की अपेक्षा वर्षा के जल पर निर्भर रहता है। खस्ताहाल विपणन एवं भण्डारण व्यवस्था भी भारतीय कृषि की समस्याओं का बखान करती हैं।

निम्न उत्पादकता के कारण

भारतीय कृषि की उत्पादकता शेष विश्व के सापेक्ष निम्न रही है।स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि को देश की आत्मा के रूप में स्वीकार करते हुए जवाहर लाल नेहरू ने कहा था 'सब कुछ इंतजार कर सकता है मगर खेती नहीं।' इस तथ्य का अनुसरण करते हुए अनेक कार्यक्रमों एवं नीतियों का संचालन किया गया। किंतु सकारात्मक परिवर्तनों की बजाय कृषि नकारात्मक कारणों जैसे– किसानों द्वारा आत्महत्या का रास्ता अपनाना, कृषि ऋण माफी हेतु प्रदर्शन के कारण ही चर्चा में रहती है। निम्न उत्पादकता के कारण भूमि, श्रम व अन्य साधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता है। निम्न उत्पादकता के निम्नलिखित कारण हैं–

1) **भूस्वामित्व एवं वास्तविक कृषकः–** भारत में जमींदारी प्रथा के कारण भूमि का स्वामित्व जमींदारों, मध्यस्थ, सूदखोर, महाजन इत्यादि के हाथ में रहा है, जिसके कारण जोतदार (वास्तविक किसान) को भूमि सुधार, सिंचाई सुविधाएं स्थापित करने एवं अन्य माध्यमों से कृषि की उत्पादकता बढ़ाने का प्रोत्साहन नहीं मिला। ऐसा कृषक के पट्टेदारी अधिकारों के असुरक्षित होने के कारण हुआ। ऐसी स्थिति में मात्र प्रौद्योगिकी सुधारों के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि नहीं की जा सकती थी।

अतः उत्पादकता में वृद्धि के लिए भूमि सुधार आवश्यक हो जाते हैं। संस्थागत कारकों जैसे जोतों का छोटा आकार, किसानों के पास कृषि में निवेश के लिये साख का अभाव, कृषि उत्पादों के लिये बाजार की अनुपलब्धता, समर्थन मूल्य का तार्किक निर्धारण न होना। इसके साथ–साथ कृषि में संस्थागत सुधारों के प्रति नौकरशाहों में उदासीनता का भाव और राजनेताओं में इच्छाशक्ति का अभाव आदि।

2) **जीवन–निर्वाह कृषिः–** कृषि क्षेत्र में 2 हैक्टेयर से कम आकार वाले जोतों की अधिकता है। ऐसी जोतों पर आधुनिक कृषि पद्धति को स्वीकार नहीं किया जा सकता था। दूसरे, सहकारी कृषि के माध्यम से छोटी जोतों को वृहत् आकार प्रदान करने एवं कृषि की आधुनिक पद्धति अपना कर उत्पादकता बढ़ाने के प्रयासों को पूर्ण उत्साह के साथ लागू नहीं किया गया। ऐसी जोतों पर कृषि मात्र जीवन निर्वाह के लिए की जाती है।

3) **अल्प पूंजी आधारः–** अधिकांश कृषकों के पास पूंजी का अभाव है, जिसके कारण वे आधुनिक प्रौद्योगिकी के लाभों को नहीं उठा पाते हैं। अल्प पूंजी के कारण वे न तो सिंचाई सुविधाओं में निवेश कर पाते हैं और न ही फार्म–मशीनीकरण की दिशा में कदम उठा पाते हैं।

4) **मानसून पर निर्भरताः–** भारतीय कृषि उत्पादन मानसून के प्रति अतिसंवेदनशील है। सही समय पर मानसून आने का अर्थ अच्छी फसल का होना है। यदि मानसून सही समय पर नहीं आता है तो फसल उत्पादन बुरी तरह प्रभावित होता है। वृहत् सिंचाई सुविधाओं पर अत्यधिक बल देने तथा लघु सिंचाई सुविधाओं के कारण मानसून के प्रति भारतीय कृषि क्षेत्र की निर्भरता बढ़ी है।

हरित क्रांति के बाद के काल में उत्पादकता बढ़ाने की अनिवार्य शर्त के रूप में सिंचाई साधनों का विस्तार भी है। समग्र आर्थिक विकास में कृषि के महत्व के परिप्रेक्ष्य में उत्पादकता वृद्धि के लिए मानसून पर निर्भर रहना उचित नहीं है। मानसून समय पर न आने की परिस्थिति में भी कृषि उत्पादन पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ने देने के लिए वैकल्पिक सिंचाई साधनों का विकास अनिवार्य हो जाता है।

5) **मानवीय कारकः–** इसके अंतर्गत सामाजिक प्रथाओं और रीति–रिवाजों को शामिल किया जाता है। भारतीय किसानों का भाग्यवादी दृष्टिकोण और नई कृषि तकनीकों की अनभिज्ञता से उनका निवेश व्यर्थ हो जाता है।

खेती पर जनसंख्या का बढ़ता बोझ भी निम्न उत्पादकता का महत्त्वपूर्ण कारण है। आजादी के बाद भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ी है। साथ ही भूमि पर जनसंख्या के दबाव में निरंतर वृद्धि हुई है। आजादी के पश्चात् कृषि के अधीन नवीन भूमि लाने के बावजूद विगत वर्षों में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि घटी है।

6) **मिट्टी की प्रकृतिः–** भारत में अनेक प्रकार की मिट्टी पाई जाती है जो सामान्यतः उर्वरक है परंतु निरंतर कृषि के कारण मिट्टी की उर्वरता में कमी आई है। मिट्टी की उर्वरकता को कायम रखने के लिए नाइट्रोजन स्थिरीकरण जैसे वैज्ञानिक तरीकों को नहीं अपनाया गया।

7) **तकनीकी कारकः–** भारत में अल्प कृषि उत्पादकता की पृष्ठभूमि में कृषि सुविधाओं का अभाव भी महत्वपूर्ण कारण है। सिंचाई सुविधाओं की

पर्याप्तता का अभाव, उच्च उत्पादकता वाले बीजों की अनुपलब्धता, कृषकों के पास मृदा परख तकनीक का अभाव और कीटों, रोगाणुओं और चूहों जैसे अन्य कृंतकों से बचाव की वैज्ञानिक पद्धति की जानकारी का न होना।

इसके अतिरिक्त किसानों द्वारा उर्वरकों या कीटनाशकों के उचित अनुपात में प्रयोग न करना आदि कारण हैं। कृषकों को पर्याप्त विपणन व साख सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पाती हैं, जिससे वे न तो आवश्यक निवेश ही कर पाते हैं और न ही सही समय पर अपने उत्पादों की बिक्री कर पाते हैं।

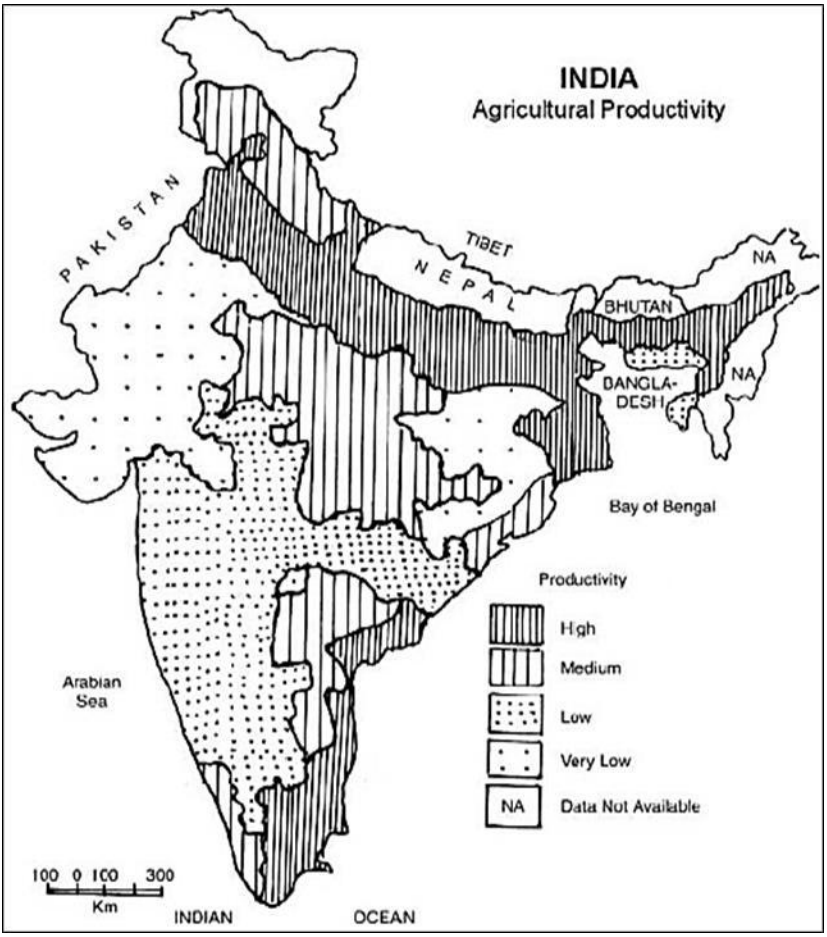

कृषि उत्पादकता में सुधार के लिये निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं–

1) नई राष्ट्रीय कृषि नीति की शुरुआत की गई है। इसके अंतर्गत किसानों को सूखा एवं वर्षा के साथ–साथ अन्य आपदाओं के लिये राहत प्रदान

करने की व्यवस्था की गई है। हाल ही में शुरू की गई प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के माध्यम से फसल बीमा को काफी व्यापक बनाया गया है।

2) हाल ही में सरकार द्वारा शुरू की गई मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना मृदा की गुणवत्ता को सुधारने के लिये एक महत्त्वपूर्ण पहल है। इस योजना में मृदा की प्रकृति को परख कर फसल और उर्वरक आदि का निर्धारण किया जाता है।

3) किसानों की साख में सुधार के लिये राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, किसान विकास पत्र आदि को आरंभ किया गया है।

4) किसानों को उत्पादों के उचित और एकीकृत मूल्य प्रदान करने के लिये ई–नाम (e-NAM) की शुरुआत की गई है।

इसके अतिरिक्त जैविक खेती को बढ़ावा, किसानों के लिये सिंचाई परियोजनाओं का विकास, मनरेगा के माध्यम से तालाब का निर्माण, भूमि की चकबंदी, किसानों को जलवायु के अनुकूल फसल उत्पादन करने का प्रशिक्षण आदि शामिल है।

कृषि के प्रकार

भारत एक विशाल देश है यहां अनेक प्रकार की कृषि की जाती है। भूमि की प्रकृति, जलवायविक विशेषताओं तथा सिंचाई की प्राप्त सुविधाओं के आधार पर कृषि को विभिन्न प्रकारों में बाँटा गया है, जो इस प्रकार है–

- स्थानान्तरी कृषि
- बागाती कृषि
- जीविका निर्वाह कृषि
- गहन कृषि
- रोपण कृषि
- शुष्क कृषि
- आर्द्र कृषि

1) स्थानांतरण कृषिः– स्थानांतरण कृषि किसे कहते हैं, इस कृषि के अंतर्गत कृषक अपना कृषि क्षेत्र बदलते रहता है। वनों को काटकर तथा झाड़ियों को जलाकर छोटे से भूखंड को साफ कर हल या अन्य किसी अन्य किसी औजार द्वारा खोदकर उसमें बीज बो दिया जाता है। इस कृषि में मोटे अनाज जैसे– मक्का, ज्वार, बाजरा आदि उत्पन्न किए जाते हैं। जिन्हें स्थानांतरण कृषि कहा जाता है।

2) **बागाती कृषिः–** बहुत से देशों में किसी बागानों के रूप में किया जाता है। बड़ी–बड़ी उपजे बागानों में उत्पन्न होती हैं। बागाती कृषि में निम्न विशेषताएं पाई जाती है–

बागाती कृषि या बागान कृषि की विशेषताएं

इसके अंतर्गत विशिष्ट उपजों का ही उत्पादन किया जाता है। जैसे केला, रबड़, कहवा, चाय आदि। इस कृषि के उत्पादों का उपयोग समशीतोष्ण कटिबंधीय देशों द्वारा किया जाता है। यह कृषि, फार्मों अथवा बागानों में की जाती है अधिकांश बाजारों में विदेशी कंपनियों का आधिपत्य रहा है।

3) **गहनभरण कृषिः–** यह कृषि उन देशों में विकसित हुई है। जहां उपजाऊ भूमि की कमी तथा जन आधिक्य पाया जाता है। अधिकांश मानसूनी देशों में यह कृषि की जाती है।

4) **भूमध्यसागरीय कृषिः–** इस कृषि का विस्तार भूमध्यसागरीय जलवायु प्रदेशों में हुआ है। यहां पर शीतकाल में वर्षा होती है तथा ग्रीष्म काल शुष्क रहता है। इस जलवायु की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ दो प्रकार की फसलें उगाई जाती है।

शीतकाल में वर्षा के कारण यहां गेहूं, आलू, प्याज, टमाटर तथा सेम की फसलें उत्पन्न की जाती है।

ग्रीष्म काल में यहां की प्रदेश शुष्क होती है इसलिए यहां पर ऐसी फसले उत्पन्न की जाती है जिन्हें वर्षा की आवश्यकता कम होती है जैसे– अंगूर, जैतून, अंजीर, सेब, नाशपति एवं सब्जियां ग्रीष्म काल की प्रमुख फसलें हैं।

5) **व्यापारिक कृषिः–** व्यापार के उद्देश्य से की जाने वाली कृषि को व्यापारिक कृषि कहते हैं। यह कम जनसंख्या वाले देशों में यह कृषि की जाती है। रूस, अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि देश इसके अंतर्गत आते हैं।

व्यापारिक कृषि की विशेषता

- यहां पर जोतों का आकार बड़ा होता है, अर्थात बड़े क्षेत्र में यह कृषि की जाती है।
- फसल की अधिक पैदावार के लिए इस कृषि में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है।
- गेहूं इस कृषि की प्रमुख उपज है।
- विभिन्न मशीनों द्वारा कृषि की जाती है।

6) **मिश्रित खेतीः–** मिश्रित खेती में कृषि कार्यों के साथ–साथ पशुपालन व्यवसाय भी किया जाता है, यहां पर कुछ फसलों का उत्पादन मानव के

लिए तथा कुछ का उत्पादन पशुओं के लिए किया जाता है। इन प्रदेशों में चौपाये, भेड़, बैल, बकरियां, गधे आदि भी पाए जाते हैं। इस प्रकार की जाने वाली कृषि को हम मिश्रित खेती करते हैं।

7) **फलों एवं सब्जियों की कृषिः–** नगरीय केंद्रों में समीपवर्ती कृषि क्षेत्रों में एवं फल एवं सब्जियों का उत्पादन अधिक मात्रा में किया जाता है बाजार केंद्र का नजदीक होना एवं परिवहन साधनों की सुविधा के आधार पर इस कृषि का विकास हुआ है। कैलिफोर्निया घाटी, फ्लोरिडा, अंध महासागर के तटीय प्रदेशों में यह कृषि की जाती है।

8) **शुष्क कृषिः–** यह कृषि पूर्णतया वर्षा पर निर्भर रहती है। देश की कुल कृषि भूमि के 70% भाग पर यह कृषि की जाती है।

इन स्थानों में दालें, तिलहन, मूंगफली, ज्वार, बाजरा और मक्के की कृषि की जाती है। शुष्क प्रदेशों में शुष्क कृषि तकनीक को अपनाते हुए कृषि की जाती है जो निम्नानुसार है।

- खेतों को वर्षा होने के पहले जोता जाता है।
- ऐसी बीजों का उपयोग किया जाता है जो कम सिंचाई में भी अधिक उत्पन्न हो।
- सिंचाई सुविधा जुटाया जाता है।
- शुष्क समय में उपयोग करने के लिए वर्षा जल के संग्रहण की विभिन्न पारम्परिक विधियों का प्रयोग किया जाता है अर्थात वर्षा को एकत्र रखने का प्रयास किया जाता है।
- भूमिगत जल के पुन: भरण के लिए तालाबों और छोटे–छोटे अवरोधों से वर्षा जल को व्यर्थ बहने से रोका जाता है।
- आर्द्रता की कमी के कारण शुष्क भूमि के क्षेत्रों की मिट्टी में जीवांश (ह्यूमस) की मात्रा बहुत कम होती है।
- शुष्कता के कारण तेज हवा और आँधी से मिट्टी की ऊपरी परत का कटाव अधिक होता है।
- शुष्क क्षेत्रों में प्राय: गरीब किसान रहते है और खेती करते हैं, जो उन्नत बीज, उर्वरक इत्यादि नहीं खरीद सकते हैं।
- पूँजी के आभाव में कृषि का उत्पादन भी कम रहता है।

9) **सहकारी कृषिः–** ऐसे कृषि क्षेत्रों में छोटे–छोटे खेतों के स्वामी को सामूहिक खेती करने हेतु प्रेरित किया गया। सभी कृषक अपनी–अपनी कृषि योग्य जमीन मिलाकर फार्म बना लेते हैं। वह सभी मिलकर मालिक की तरह लगन और छमता से कार्य करते हैं। तथा उत्पादन से अपनी

खेत की रकम को बराबर बॉट लेते हैं। भारतवर्ष में भी इस कृषि पद्धति को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

10) विस्तृत कृषिः– जिन क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि अधिक उपलब्ध होती है, वहां यह कृषि की जाती है, यहां अधिकांशतः कृषि, मशीनों द्वारा की जाती है इसका कारण यह है कि यहां श्रम शक्ति का अभाव पाया जाता है। वहां भी कृषि भूमि के बड़े–बड़े फार्म बनाए जाते हैं। इस प्रकार की कृषि संयुक्त राज्य अमेरिका, अर्जेंटीईना, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, ब्राजील आदि देशों में की जाती है।

कृषि संसाधन

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसकी लगभग दो–तिहाई जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है।

कृषि भूमि उपयोगः– भूमि एक अमूल्य संसाधन है। कृषि प्रधान देश में इसका बहुत अधिक महत्त्व हैं। वन तथा गैर–कृषि कार्यों में लगी भूमि भी महत्त्वपूर्ण है, किन्तु यहाँ स्थायी चारागाह की बहुत कमी है।

2002–03 में भूमि उपयोग के आँकड़ें इस प्रकार हैं–

1. कृषि योग्य भूमि	**59.77 प्रतिशत**
शुद्ध बोई गई भूमि	43.41 प्रतिशत
चालू परती भूमि	7.03 प्रतिशत
अन्य परती भूमि	3.82 प्रतिशत
कृषि योग्य व्यर्थ भूमि	4.41 प्रतिशत
बाग–बगीचे	1.10 प्रतिशत
2. वन क्षेत्र	**22.57 प्रतिशत**
गैर–कृषि कार्यों में लगी भूमि	7.92 प्रतिशत
बंजर और व्यर्थ भूमि	6.29 प्रतिशत
स्थायी चारागाह और घास क्षेत्र	3.45 प्रतिशत

शस्य गहनता

जनसंख्या वृद्धि और गैर–कृषि कार्यों में कृषि भूमि के बढ़ते उपयोग के कारण कृषि योग्य भूमि की कमी हो रही है। ऐसी स्थिति में उत्पादन में वृद्धि करने के दो उपाय हो सकते हैं– पहला,उर्वरक, सिंचाई, उन्नत बीजों का प्रयोग करके प्रति हेक्टेयर उत्पादन में वृद्धि। दूसरा, एक ही कृषि वर्ष में एक ही भूमि में एक से अधिक फसलों को पैदा करना।

एक ही कृषि वर्ष में एक ही भूमि पर एक से अधिक फसलों के उत्पादन की क्रिया को शस्य गहनता कहते हैं।

शस्य गहनता = कुल बोया गया क्षेत्र/शुद्ध बोया गया क्षेत्र *100

फसल प्रारूप या शस्य प्रारूप

भारत में विभिन्न प्रकार की फसलें विभिन्न ऋतुओं में उपजाई जाती हैं। ऋतु के आधार पर इन फसलों को तीन भागों में बाँटते हैं–

खरीफ– ये फसलें वर्षा पर आधारित हैं। इन्हें जून–जुलाई में बोया जाता है और सितंबर–अक्टूबर में काट लिया जाता है।

रबी– ये फसलें शीतऋतु के आरंभ होने पर नवम्बर में बोई जाती हैं और ग्रीष्म ऋतु के आरंभ में अप्रैल–मई में काट ली जाती हैं।

जायद– इन्हें गरम फसल भी कहते हैं, जिनकी खेती सिंचाई के सहारे की जाती है। इनकी खेती ग्रीष्म ऋतु में मार्च–अप्रैल से मई–जून के बीच की अल्प अवधि में की जाती है।

भारत की प्रमुख फसलें

भारत की विशालता एवं जलवायु की क्षेत्रीय विभिन्नता के करण इसके विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। सुविधानुसार उन्हें निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत रख सकते हैं–

1) खाद्य फसलें
2) दलहन एवं तिलहन
3) रेशेदार फसलें
4) पेय फसलें
5) नकदी फसलें

1) खाद्य फसलें:– भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ विविध प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं, इसमें खाद्यान्न फसलों की प्रधानता होती है।

- **चावल:–** चावल भारत की प्रमुख खाद्य फसलों में से एक है। चीन के बाद भारत का चावल के उत्पादन में विश्व में दूसरा स्थान हैं।

चावल एक उष्णकटिबंधीय पौधा है। इसकी अच्छी उपज के लिए उच्च तापमान और उच्च आर्द्रता की आवश्यकता होती है। इसके लिए लगभग 24सें० ग्रे० औसत मासिक तापमान की आवश्यकता होती है। बोने, वर्धनकाल और काटने की अवधि में चावल के लिए भिन्न तापमानों की आवश्यकता होती है। चावल देश के विस्तृत भागों में उगाया जाती है। पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्रप्रदेश, पंजाब, हरियाणा और तमिलनाडु चावल के प्रमुख उत्पादन राज्य हैं।

- **गेहूँ:–** यह भारत की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। देश के उत्तरी और उत्तरी पशिचमी भागों की यह सर्वप्रमुख फसल है। चीन के

बाद भारत विश्व का दूसरा प्रमुख गेहुँ उत्पादक देश है। गेहुँ शीतोष्ण कटिबंधीय फसल है।

गेहूँ रबी फसल हैं। इसके लिए बोते समय 10 सें० ग्रे० से 15सें० ग्रे० तथा पकते समय 20सें० ग्रे० से 25सें० ग्रे० तापमान की आवश्यकता होती हैं। 75 सेमी० वर्षा इसके उत्पादन के लिए अधिक उपयुक्त है।

- **मक्काः–** मक्का एक मोटा अनाज है। इसका उपयोग खाने और चारे, दोनों के लिए होता है। मक्का 50 सेमी० से 100 सेमी० वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है तथा कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई की मदद से यह फसल उगाई जाती है।
- **मोटे अनाजः–** भारत में उगाये जाने वाले मोटे अनाजों में ज्वार, बाजरा और रागी प्रमुख हैं। 18सें० ग्रे०से 32सें० ग्रेऔसत मासिक तापमान इसके उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं। इसके लिए लगभग 30 सेमी० से 60 से०मी० वर्षा की आवश्यकता होती है।

2) दलहनः– दलहन फसलों का मानवीय जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन फसलों से मानव शरीर को प्रोटीन जैसे महत्त्वपूर्ण विटामिन की प्राप्ति होती है।

- अरहर, चना, मटर और मसूर आदि फसलें रबी फसल ऋतु की प्रमुख दलहनी फसलें हैं।
- सोयाबीन, मूंग, उरद और लोबिया आदि फसलें खरीफ फसल ऋतु की प्रमुख दलहनी फसलें हैं।
- जिन क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधा होती है, वहाँ सोयाबीन, मूंग, औरउड़दजायद फसल ऋतु में भी उगाया जाता है।
- इस प्रकार कहा जा सकता है की दलहनी फसलों की खेती तीनों फसल ऋतुओं में की जा सकती है।
- देश में दलहनी फसलों के उत्पादन मेंमध्यप्रदेश का प्रथम स्थान है।

3) तिलहनः– तिलहन उन फसलों को कहते हैं जिनसे वनस्पति तेल का उत्पादन होता है। जिसमें महत्वपूर्ण हैं तिल, सरसों, अरंडी, बिनौला, मूँगफली, सोयाबीन और सूरजमुखी। भारत में तिलहनों की उपज बढ़ाने के लिये पीत क्रांति की संकल्पना दी गयी।

- **मूँगफलीः–** भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण तिलहन फसल है। इसके प्रमुख उत्पादक राज्यों में आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु कर्नाटक, गुजरात और महाराष्ट्र हैं। ये राज्य देश के कुल उत्पादन का लगभग 85 प्रतिशत खाद्य तेल पैदा करते हैं।

4) **रेशेदार फसलें:–** कपास और जूट भारत की दो प्रमुख रेशेदार फसलें हैं। कपास और उष्ण और उपोष्ण जलवायु की फसल है। यह खरीफ की फसल है। कपास की फसल को तैयार होने में 6 से 8 महीने लगते हैं। फसल को तैयार होने के समय खुला मौसम आवश्यक है। इससे कपास में चमक बनी रहती है।

- **जूट (पटसन):–** उष्णार्द्र जलवायु की फसल है। जूट फसल को तैयार होने में 8 से 10 महीने तक का समय लगता है।

5) **पेय फसलें:–** चाय और कहवा महत्त्वपूर्ण पेय फसलें हैं।

- **चाय:–** भारत में चाय एक विशिष्ट रोपण फसल है। चाय की उपज के लिए 20सें० ग्रे०से 30 सें० ग्रे० तापमान आदर्श है। 150 सेमी० से 200 सेमी० वार्षिक वर्षा इसके लिए उपयुक्त है।
- **कहवा:–** भारत की दूसरी महत्त्वपूर्ण पेय फसल है। इसकी खेती के लिए उष्णार्द्र जलवायु दशाएँ आवश्यक होती हैं। कहवा की उपज के लिए 15° सें० ग्रे० से 28° सें० ग्रे० तापमान तथा 150 सेमी० से 200 सेमी० वार्षिक वर्षा चाहिए।

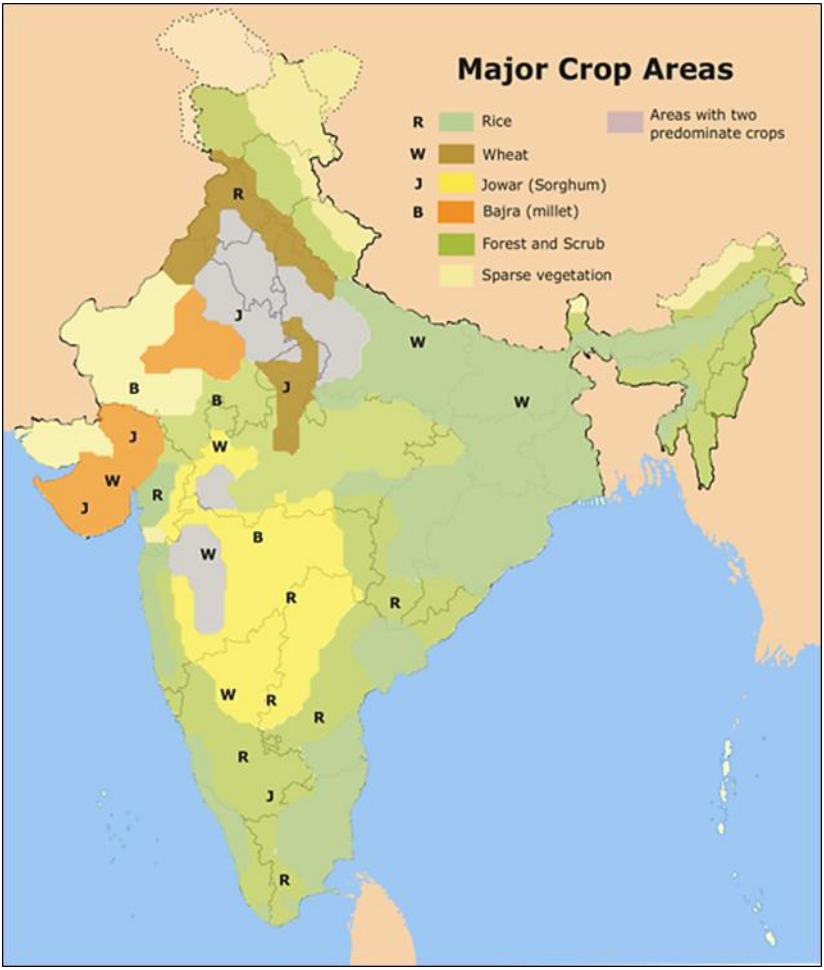

चित्र 1: भारत की मुख्य फसलें

भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताएँ

भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा वर्णित किया जा सकता है–

1) भारतीय कृषि गहन प्रकार की है। जनसंख्या की अधिकता के कारण प्रति व्यक्ति कृषि भूमि की कमी है तथा खेतों का आकर छोटा है।

2) भारतीय कृषि मुख्यतः जीवन निर्वाहक है। यहाँ अधिकतर किसान जीविका निर्वाह के लिए अनेक प्रकार के खाद्यान्नों का उत्पादन करते हैं।

3) स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्पश्चात् योजनाबद्ध कार्यक्रम के फलस्वरूप यहाँ अनेक नकदी और औद्योगिक फसलों की खेती होने लगी है।

4) भारत में कुल जनसंख्या का लगभग 64 प्रतिशत भाग कृषि कार्य में लगा हुआ है, जबकि यू० एस० ए० और यू० के० की क्रमशः 7 प्रतिशत और 5 प्रतिशत जनसंख्या कृषि में लगी हुई है।

5) भारत की कुल भूमि का लगभग 54 प्रतिशत भाग कृषि के अंतर्गत है, जबकि चीन की केवल 12% और जापान की 15% भूमि कृषि के अंतर्गत है।

6) भारत की कुल राष्ट्रीय आय का लगभग 27.4 प्रतिशत तथा उत्पादन का 80 प्रतिशत खाद्यान्न, 8 प्रतिशत अखाद्य पदार्थ, 4 प्रतिशत रेशेदार कृषि पदार्थ, 4 प्रतिशत तेलहन तथा 4 प्रतिशत चारा फसलों का उत्पादन किया जाता है।

किसानों की आय को दोगुना करनाः नीति आयोग की रिपोर्ट

भारत में कृषि क्षेत्र के विकास के लिये पूर्ववर्ती कार्यनीति ने मुख्यतया कृषि उत्पादन को बढ़ाने और खाद्य सुरक्षा को सुधारने पर जोर दिया। इस कार्यनीति में निम्नलिखित मुद्दों को शामिल किया गया था–

- बेहतर प्रौद्योगिकी और किस्मों के माध्यम से उत्पादकता को बढ़ाना तथा गुणवत्तापूर्ण बीज, उर्वरक, सिंचाई और कृषि रसायनों के उपयोग को बढ़ावा देना।
- कुछ फसलों के लिये लाभकारी कीमतों तथा कृषि संबंधी निवेश सामग्री पर सब्सिडियों के रूप में प्रोत्साहन ढाँचा तैयार करना।
- कृषि में और कृषि के लिये सार्वजनिक निवेश को बढ़ावा देना।
- इससे संबद्ध संस्थाओं को सुविधा प्रदान करना।
- इस कार्यनीति के कारण ही देश 1960 के दशक के मध्य में आए गंभीर खाद्य संकट से निपटने में समर्थ रहा। विगत पचास वर्षों (1965 से 2015) के दौरान हरित क्रांति को अपनाए जाने के बाद, भारत का खाद्य उत्पादन 3.7 गुना बढ़ा जबकि जनसंख्या में 2.55 गुना की वृद्धि हुई।
- इस कार्य नीति ने न तो किसानों की आय को बढ़ाने की जरूरत को स्पष्ट मान्यता दी और न ही किसानों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिये किसी प्रत्यक्ष उपाय का उल्लेख किया।
- किसानों की स्थिति की ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत को समझते हुए केंद्र सरकार ने 2015 में कृषि मंत्रालय के नाम को बदलकर कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय कर दिया।

यह स्पष्ट है कि किसान द्वारा कृषि से अर्जित आय, कृषि संबंधी संकट का समाधान करने और किसानों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस पृष्ठभूमि में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2022–23 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लिये निर्धारित किया गया लक्ष्य, किसानों के कल्याण को बढ़ावा देने, कृषि संबंधी संकट को कम करने तथा किसानों और गैर–कृषि व्यवसायों में कार्यरत कामगारों की आय में समानता लाने में अहम भूमिका निभाएगा।

किसानों की आय में विगत वृद्धि

यह विडंबना है कि CSO द्वारा किसानों की आय के अनुमान प्रकाशित नहीं किये जाते हैं, हालाँकि कृषि के लिये समय श्रृंखला और क्षेत्रकीय आय के अद्यतन अनुमान, राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी में उपलब्ध हैं। तथापि, NSSO ने अपने राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षणों नामत: 'किसानों की स्थिति का आकलन 2003' और 'कृषि परिवारों की स्थिति का आकलन 2013' के आधार पर किसानों की आय के स्रोतों और अनुमानों का सृजन करना है।

उपर्युक्त दानों सर्वेक्षणों के तहत किसानों अथवा किसान परिवारों की भिन्न–भिन्न परिभाषाएँ अपनाई गयी थी और इसलिये इन दोनों सर्वेक्षणों में सूचित किये गए आय के अनुमानों की तुलना नहीं की जा सकती है।

NSSO के दो राष्ट्रीय स्तर के सर्वेक्षण नामत: किसानों की स्थिति के आकलन संबंधी सर्वेक्षण 2003 (59वाँ दौर) और कृषि परिवारों की स्थिति के आकलन संबंधी सर्वेक्षण SAS 2013 (70वाँ दौर) कृषि सहित विभिन्न स्रोतों से किसानों की आय के अनुमान उपलब्ध कराते हैं। SAS के अनुसार, वर्ष 2012–13 के लिये कृषि और गैर–कृषि स्रोतों से कृषि परिवार की औसत वार्षिक आय 77,112 रुपए थी।कृषि परिवार की कुल आय का साठ प्रतिशत भाग कृषि कार्यकलापों (खेती और पशुओं की फार्मिंग) से अर्जित किया गया था और 40 प्रतिशत भाग गैर–कृषि स्रोतों (मजदूरी, वेतन, गैर–कृषि व्यवसाय आदि) से अर्जित किया गया था।कुल मिलाकर एक कृषि परिवार के लिये कृषि से 36,938 रुपए की वार्षिक आय सृजित हुई है और पशुधन से 9,176 रुपए की आय सृजित हुई।

इस अनुमान के अनुसार कृषि परिवार की कुल कृषि आय में पशुधन संबंधी कार्यकलाप का हिस्सा 19.89 प्रतिशत के करीब था। यह उसी वर्ष के लिये कृषि क्षेत्रक में निवल मूल्यवर्धन में पशुधन के हिस्से के संबंध में CSO के अनुमानों जो 28.6 प्रतिशत था, से बहुत कम है।इससे यह पता चलता है कि संभवत: SAS 2013 में उपयोग की गई किसान की विशिष्ट परिभाषा की वजह से SAS में सूचित की गई कृषि आय तथा कृषि आय के CSO मान में काफी अंतर है।

किसानों की आय में वृद्धि के स्रोत

किसानों की वास्तविक आय को 2015–16 के आधार वर्ष की तुलना में 2022–23 तक दोगुना करने के लिये किसानों की आय में 10.41 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर अपेक्षित है। इसका अर्थ यह है कि कृषि आय की वर्तमान और पूर्व में हासिल की गई वृद्धि दर को तेजी से बढ़ाना होगा। अतः कृषि क्षेत्र के अंदर और बाहर किसानों की आय को बढ़ाने के सभी संभावित स्रोतों का सदुपयोग करने के लिये सशक्त उपायों की जरूरत होगी। कृषक क्षेत्र के अंतर्गत प्रचलित वृद्धि के प्रमुख स्रोत निम्नानुसार हैं।

कृषि उत्पादकता में वृद्धिः– कृषि उत्पादन को बढ़ाने के दो स्रोत हैंअर्थात् क्षेत्र और उत्पादकता। गैर–कृषि उपयोगों के लिये भूमि की बढ़ती मांग तथा देश के सकल भौगोलिक क्षेत्र में कृषि–योग्य भूमि के पहले से ही उच्च हिस्से की वजह से कृषि क्षेत्र में आगे वृद्धि करना व्यवहार्य नहीं है।देश में अधिकांश फसलों की उत्पादकता कम है और इसे बढ़ाने की काफी गुंजाइश है। गेहूँ को छोड़कर देश में अन्य फसलों की उत्पादकता वैश्विक औसत से कम है और कृषि के क्षेत्र में अग्रणी देशों की तुलना में यह काफी कम है। देश के अंदर भी विभिन्न राज्यों की पैदावार में काफी अंतर है। विभिन्न राज्यों की पैदावार में एक बड़ा अंतर, सिंचाई सुविधा की उपलब्धता में अंतर की वजह से है परंतु एकसमान सिंचाई सुविधा वाले राज्यों में भी उत्पादकता में काफी अंतर दिखाई देता है।सिंचाई के समान स्तर पर उत्पादकता में भिन्नता और विश्व औसत की तुलना में भारत में कम पैदावार, बेहतर प्रौद्योगिकी के अपर्याप्त स्तर अथवा इसके कम उपयोग की वजह से है। देश में कृषि उत्पादकता और उत्पादन को बढ़ाने के लिये सिंचाई की उपलब्धता को बढ़ाना और प्रौद्योगिकीय उन्नति, सबसे शक्तिशाली साधन हैं।

सकल कारक उत्पादकता में सुधारः– सकल कारक उत्पादकता (TFP) में सुधार, उत्पादन बढ़ाने का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है जो लागतों की बचत और इस प्रकार आय को बढ़ाने में प्रत्यक्ष योगदान देता है।

TFP, उत्पादन का वह भाग है जिसके बारे में उत्पादन में उपयोग की गई निवेश सामग्री की मात्रा से कोई स्पष्टीकरण नहीं मिलता है। TFP, उत्पादन में किये गए कुल इनपुट्स में वृद्धि की तुलना में सकल उत्पादन वृद्धि संबंधी प्रावधानों के लिये उत्तरदायी है। TFP की वृद्धि दर प्रौद्योगिकीय परिवर्तन, कौशल, अवसंरचना आदि जिनकी उत्पादन इनपुट्स के सैट में गणना नहीं की जाती है के प्रभाव को दर्शाती है। इसमें उत्पादन में उपयोग किये जाने वाले इनपुट्स की कुशलता में वृद्धि भी शामिल होती है।

उच्च मूल्य वाली फसलों में विविधीकरणः– उच्च मूल्य वाली फसलों (HVC) की ओर विविधीकरण, किसानों की आय में बढ़ोतरी करने की अत्यधिक गुंजाइश

प्रदान करता है। मुख्य फसलों (अनाज, दालें, तिलहन) के तहत कुल अथवा सकल फसल क्षेत्र (GCA) का 77 प्रतिशत भाग है परंतु ये फसलें, फसल क्षेत्र के कुल उत्पादन में केवल 41 प्रतिशत योगदान देती हैं। HVC और मुख्य फसलों के तहत क्षेत्र में बड़े अंतर की वजह से HVC के तहत क्षेत्र में 1 प्रतिशत की वृद्धि के फलस्वरूप मुख्य फसलों के तहत क्षेत्र में 0.25 प्रतिशत की कमी आती है। अतः HVC के तहत क्षेत्र में 1 प्रतिशत की वृद्धि के फलस्वरूप फसल क्षेत्रक के उत्पादन में 0.319 प्रतिशत की वृद्धि होती है (मुख्य फसलों के तहत क्षेत्र को HVC के तहत अंतरित करने की वजह से उत्पादन में कमी को घटाने के बाद)। इन गणनाओं के आधार पर अनुमान लगाया गया है कि यदि विविधीकरण की विगत प्रवृत्ति, भविष्य में भी जारी रहती है तो इसमें फसल क्षेत्र के उत्पादन को प्रतिवर्ष लगभग 1 प्रतिशत बढ़ाने की क्षमता है। इसके फलस्वरूप 2022–23 तक किसानों की आय में 5 प्रतिशत वृद्धि हो सकती है। मुख्यतया फसलों की खेती पर गुजारा करने की बजाय वानिकी जैसे अन्य संबद्ध उद्यमों की दिशा में विविधीकरण के द्वारा भी किसानों की आय को बढ़ाने की गुंजाइश है।

फसल गहनता में वृद्धिः– भारत में फसल उगाने के दो मुख्य मौसम हैं नामत: खरीफ और रबी जिसकी वजह से एक ही भूखंड पर एक वर्ष में दो फसलों की खेती करना संभव हो जाता है। सिंचाई और नई प्रौद्योगिकियों की उपलब्धता के फलस्वरूप खरीफ के मुख्य मौसम और रबी के मुख्य मौसम के बाद अल्पावधि फसलों को उगाना संभव हो गया है। भूमि उपयोग संबंधी आँकड़े यह दर्शाते हैं कि निवल बुआई क्षेत्र के केवल 38.9 प्रतिशत भाग पर ही दूसरी फसल की खेती की जाती है। इसका अर्थ यह है कि देश में 60 प्रतिशत से अधिक कृषि भूमि आधी उत्पादनकारी अवधि के दौरान अप्रयुक्त रहती है।एक ही भूखंड पर दूसरी फसल उगाना, देश में भूमि की कमी का समाधान करने और प्रति इकाई भूमि से आय को बढ़ाने का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत हर खेत को पानी तथा अन्य घटकों पर जोर दिये जाने के फलस्वरूप सिंचाई का त्वरित विस्तार होने की आशा है जिसका फसल गहनता को बढ़ाने पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। फसल गहनता में हाल ही के वर्षों में देखी गई दर से वृद्धि होने से 7 वर्षों में किसानों की आय में 3.4 प्रतिशत और दस वर्षों में 4.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो सकती है।

कृषि क्षेत्र से अलग आय वृद्धि के स्रोत

किसानों के लिये व्यापार की शर्तों को बेहतर बनानाः– किसानों या कृषि क्षेत्र की वास्तविक आय का आकलन करने के लिये विभिन्न अस्फीति कारकों का उपयोग किया गया है। इनमें से कुछ है– किसानों द्वार प्रदत्त मूल्यों का सूचकांक, आगम मूल्यों का सूचकांक और गैर–कृषि वस्तुओं के थोक मूल्यों का सूचकांक आदि। इस कार्य हेतु CPIAL (कृषि श्रमिकों के लिये उपभोक्ता मूल्य सूचकांक) का

उपयोग अस्फीति कारक के रूप में किया गया है ताकि अनुमानित कृषि आय को वास्तविक कृषि आय में तबदील किया जा सके। CPIAL ग्रामीण क्षेत्रों में वस्तुओं और सेवाओं की मुद्रास्फीति को दर्शाता है और यह कृषक परिवार के समक्ष मौजूद मुद्रास्फीति को किसी भी अन्य सूचकांक की तुलना में अधिक सटीकता से दर्शाता है। कृषि उत्पाद के एवज में किसानों को मिली आय अगर CPIAL की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती है तो इससे वास्तविक आय में वृद्धि होती है– चाहे उत्पादन की मात्रा में वृद्धि न हुई हो तो भी। 2011–12 से 2015–16 के दौरान दो मामलों में किसानों की आय काफी कम रही। एक, स्थिर मूल्यों पर कृषि में मूल्य संवर्धित में वृद्धि बहुत कम रही। दूसरे CPIAL में वृद्धि कृषि उत्पाद के कृषकों को प्राप्त मूल्यों में वृद्धि की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक थी। भारत सरकार ने इस स्थिति को अनुकूल बनाने के लिये कई पहलें की हैं। किसानों को बेहतर मूल्य दिलाने के उद्देश्य से शुरू किया गया एक महत्त्वपूर्ण उपाय है, ई–नैम।

जोतदारों को गैर–कृषि और सहायक कार्यों में लगानाः– ग्रामीण क्षेत्रों में कुल कार्यबल का 64 प्रतिशत हिस्सा कृषि क्षेत्र में लगा हुआ है और कुल ग्रामीण निवल घरेलू उत्पाद में 39 प्रतिशत योगदान करता है। इससे पता चलता है कि कार्यबल कृषि पर एक सीमा से अधिक निर्भर है क्योंकि रोजगार के अन्य विकल्प नहीं हैं। इससे कृषि और गैर–कृषि क्षेत्र के बीच प्रति श्रमिक उत्पादकता में व्यापक अंतर का भी पता चलता है।

2011–12 के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और गैर–कृषि क्षेत्रों में श्रमिक उत्पादकता

कार्यबल को कृषि से इतर कार्यों में लगाकर किसानों की आय में काफी वृद्धि की जा सकती है।कृषि में कार्यबल में कमी के बावजूद रोजगार विविधीकरण निम्न कारणों से काफी धीमा है। खासकर विनिर्माण क्षेत्रकों में कौशल और विनिर्दिष्ट शिक्षा स्तर की अपेक्षा, भौगोलिक इकाइयों का ग्रामीण बस्तियों से दूर होना, भावी श्रमिकों के लिये उत्पादक रोजगार सुनिश्चित करने के लिहाज से गैर–कृषि क्षेत्र की क्षमता का सीमित होना।

कौशल विकास संबंधी सरकार की नई पहल की कृषक समुदाय के कौशल संवर्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो उन्हें गैर–कृषि क्षेत्रों में बेहतर रोजगार के अवसर मुहैया करा सकता है। पर जोतदारों की संख्या इसी तरह घटती रही जैसे 2004–05 से 2011–12 के बीच घटी, तो 2015–16 से 2022–23 के बीच यह संख्या 13.4 प्रतिशत घट जाएगी। इसका अर्थ यह हुआ की उपलब्ध कृषि आय 13. 4 प्रतिशत कम किसानों में वितरित होगी।

किसानों की आय बढ़ाने की कार्यनीति

उत्पादन और आय में वृद्धि के स्रोतों को चार श्रेणियों में रखा जा सकता है,

1) विकास पहलें

उत्पादन बढ़ाने और लागत को कम करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा हाल ही में शुरू की गई कुछ विकास पहलों में शामिल हैं।

- धानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
- मृदा स्वास्थ्य कार्ड
- परंपरागत कृषि विकास योजना।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहल है– प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जिसके तहत फसल और आय में हुए नुकसान की भरपाई की जाती है।नदियों को परस्पर जोड़ना भी एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहल है जिसमें उत्पादन और किसानों की आय बढ़ाने की काफी संभावनाएँ हैं। कार्यक्रमों को समयबद्ध रूप में कार्यान्वित करने की आवश्यकता है ताकि किसानों की आय पर अपेक्षित प्रभाव पड़ सके।

2) प्रौद्योगिकी और नवप्रवर्तन

उत्पादकता और कृषक आय में संधारणीय वृद्धि के लिये हरित क्रांति के समय से ही भारतीय कृषि में प्रधान रही प्रौद्योगिकियों की जगह नए विकल्प को अपनाने की आवश्यकता है। उत्पादन और किसानों की आय में लगातार वृद्धि के लिये एग्रोनिमिक प्रौद्योगिकियों, जैसे– प्रेसिजन फार्मिंग का दायरा बढ़ने के साक्ष्य लगातार बढ़ते जा रहे हैं। इसी प्रकार आधुनिक मशीनों, जैसे– भूमि समतल करने की लेजर मशीन, परिशुद्ध बुआई और रोपण मशीन और पद्धतियों जैसे SRI (धान गहनता प्रणाली), प्रत्यक्ष बोया गया धान, शून्य जुताई, ऊपर उठी क्यारियों में रोपण और मेढ़ रोपण से तकनीकी रूप से उच्च कुशल कृषि होती है।किंतु इन प्रौद्योगिकियों का विकास सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा किया जाता है और बाजार में बेचने की उनकी क्षमता बेहद कमजोर है। प्रौद्योगिकियों से मिलने वाले अवसरों और ऋण लेना आसान बन जाने के बारे में किसानों को बताया जाना चाहिये तथा उनके अंगीकरण के लिये नीतिगत माहौल बनाया जाना चाहिये।

3) नीतियाँ

भारत ने 1991 में नई आर्थिक नीति के तहत व्यापक आर्थिक सुधारों को अपनाया। इन सुधारों में उदारीकरण, विनियमन और निजी क्षेत्र से अत्यधिक नियंत्रण तथा प्रतिबंधों को समाप्त करना शामिल है जिनसे आर्थिक क्रियाकलापों में निजी क्षेत्र की सहभागिता के लिये बड़ी अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा हुईं। इन परिवर्तनों के प्रत्युत्तर में संघ सरकार ने वर्ष 2002 से कृषि क्षेत्र में कई सुधार किये। इनमें शामिल हैंविनिर्दिष्ट आहार के लिये लाइसेंस लेने, भंडारण सीमा और आवाजाही प्रतिबंध की समाप्ति आदेश, 2002 और 2003। इस आदेश के अनुसार गेहूँ, चावल, मोटे अनाज, चीनी, तिलहन, खाद्य तेलों, दालों, गुड़, गेहूँ उत्पादों और

हाइड्रोजेनेटेड वनस्पति तेल अथवा वनस्पति को आवश्यक वस्तु अधिनियम (1955) की सूची से हटा दिया गया जिसके कारण इनके कारोबार, भंडारण और आवाजाही के लिये किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं रह गई।

1992 के MMPO को आशोधित कर 2002 में दुग्ध और दुग्ध उत्पाद आदेश लाया गया तथा दुग्ध प्रसंस्करण में नई क्षमता स्थापित करने संबंधी प्रतिबंधों को समाप्त कर दिया गया और मिल्कशेड की अवधारणा खत्म कर दी गई। वर्ष 2003 में वादा कारोबार के निषेध की समाप्ति हो गई। इसके बाद कृषि विपणन में सुधार के कदम उठाए गए। संघ सरकार ने आदर्श APMC अधिनियम तैयार किया जिसे राज्य कृषि उत्पाद विपणन (विकास और विनियमन) अधिनियम, 2003 कहा गया तथा इसे कार्यान्वयन हेतु सभी राज्यों के साथ साझा किया गया। कृषि संबंधी नीतिगत परिदृश्य में अधिक परिवर्तन परिलक्षित नहीं हुआ क्योंकि कृषि क्षेत्र में सुधार यत्र–तत्र, छिटपुट और आंशिक ही रहा। इस क्षेत्र में अपेक्षित सुधारों की अनदेखी के कारण कृषि क्षेत्र और गैर–कृषि क्षेत्रों के बीच गंभीर असमानता उत्पन्न हुई है।

1990–91 तक दोनों क्षेत्रों की विकास दरें एक जैसी थीं और दोनों में काफी समानताएँ थे। जैसे–जैसे सुधार होते गए, वृद्धि–पथ में भिन्नता आती गई।पाँच वर्ष में औसत वार्षिक परिवर्तन दर से लगाए गए अनुमान के अनुसार अधिकतर समयावधि के दौरान गैर–कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 6.0 प्रतिशत से कम के स्तर से बढ़कर 8.0 प्रतिशत से अधिक हो गई। किंतु दीर्घकालिक रुझान की दृष्टि से कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 2.8 प्रतिशत रही। तुलना से पता चलता है कि बाजार सुधारों के अभाव में, कृषि दर कम रही और यह क्षेत्र गैर–कृषि क्षेत्रक की वृद्धि दर के मुकाबले पिछड़ गया। इस क्षेत्र को खोलने, विपणन, भूमि पट्टाकरण संबंधी विभिन्न प्रतिबंधों को हटाने और वन प्रजातियों की सामान्य भूमि पर खेती करने से किसानों का उत्पादन बढ़ेगा और उनकी आर्थिक गतिविधियाँ भी बढ़ेंगी और इन दोनों से किसानों की आय बढ़ेगी।

यह विडंबना ही है कि कई राज्यों में कटाई के बाद कई फसलों की कीमत न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम है। इससे पता चलता है कि किसानों का न्यूनतम समर्थन मूल्य से अधिक कीमत दिलाना सुनिश्चित करने के लिये प्रतिस्पर्धी बाजारों अथवा अन्य तंत्र की कितनी आवश्यकता है।

4) सांस्थानिक तंत्र

भारतीय कृषि में ज्यादातर किसान सीमांत और बहुत छोटे हैं जिन्हें कई तरह के गंभीर नुकसान झेलने पड़ते हैं। खेतों का आकार छोटा होने के कारण कई किसान अधिक प्रकार के फल और सब्जियाँ नहीं उगा पाते है, जिसका मुख्य कारण यह है कि मूल्य का जोखिम रहता है और विपणन काफी अलाभकारी होता

है। छोटे आकार के खेतों के कारण आगम और निर्गम बाजारों में अलग–अलग तरह के लेन–देन के मामलों मे भी किसानों की सौदेबाजी की शक्ति घटती है।इन समस्याओं का समाधान यह है कि किसानों को किसी सांस्थानिक तंत्र के तहत संगठित किया जाना चाहिये, जैसे– कृषि उत्पाद संगठन।

प्रयास

- 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लिये फसल उत्पादकता को 4.1 प्रतिशत और संवर्द्धित पशुधन मूल्य को 6.0 प्रतिशत की दर से बढ़ाना होगा। TFP (जो मुख्यतः कृषि अनुसंधान और विकास का परिणाम है), विस्तार सेवाओं, नए ज्ञान, दक्षता व्यवहार, जैसे– प्रेसिजन कृषि में सालाना 3.0 प्रतिशत की दर से वृद्धि करनी होगी।
- भारतीय किसानों को दो फसलों वाली भूमि के प्रतिशत को मौजूदा 40 प्रतिशत से बढ़ाकर 53 प्रतिशत करना होगा। उच्च मूल्य वाली फसलों वाली भूमि में प्रति वर्ष 4.4 प्रतिशत की वृद्धि करनी होगी।
- बाजार सुधार भी इस प्रकार करने होंगे जिनसे किसानों को वास्तविक अर्थों में आधार स्तर से 17 प्रतिशत अधिक मूल्य मिल सके। इसके लिये किसानों को मिलने वाले मूल्यों में प्रति वर्ष 2.26 प्रतिशत की वृद्धि करनी होगी। कुल मिलाकर, जोतदारों की कुल संख्या में प्रति वर्ष 2.4 प्रतिशत की कमी करनी होगी।
- मधुमक्खी, पालन, जैसे संबद्ध क्रियाकलापों के अलावा कृषि भूमि पर वानिकी आदि से भी कृषि आय में वृद्धि हो सकती है।
- विकास पहलों में बेहतर प्रौद्योगिकी और वेरायटी के माध्यम से तथा स्तरीय बीजों, सिंचाई, उर्वरक और कृषि रसायनों का उपयोग बढ़ाकर उत्पादकता में वृद्धि करना शामिल हो।

हरित क्रांति के 50 वर्ष के बाद भी अनाज की फसल वाले कुल क्षेत्रफल के केवल 69 प्रतिशत में उच्च उत्पादक किस्मों का उपयोग हो रहा है। चावल जैसी महत्त्वपूर्ण फसलों में देश के केवल 62 प्रतिशत क्षेत्रफल में उच्च उत्पादक किस्मों का उपयोग होता है– इसके बावजूद कि कुछ राज्य एचवाईवी के अंतर्गत 100 प्रतिशत कवरेज दर्शा रहे हैं। कम कवरेज वाले राज्यों में प्रमाणित बीज की बेहतर आपूर्ति के साथ पारंपरिक किस्मों वाले क्षेत्रो में उच्च उत्पादक किस्मों का उपयोग किया जा सकता है।किसानों को आधुनिक इनपुट की खरीदारी और कृषि परिसंपत्तियों में निवेश करने में सक्षम बनाने के लिये संस्थानिक ऋण एक अन्य महत्त्वपूर्ण इनपुट है। संस्थानिक ऋण में उचित दर से बढ़ोत्तरी हो रही है किंतु कई राज्यों में ऋण सुविधा खराब होने और कुल ऋण में मियादी ऋण की हिस्सेदारी घटने जैसे मुद्दे हैं। इसका समाधान करने की आवश्यकता है।

पशुधन उत्पादकता

देश में पशुधन की उत्पादकता बेहद कम है। पशुधन उत्पादकता बढ़ाने के लिये नस्ल संवर्द्धन, बेहतर चारा और पोषाहार, पशु स्वास्थ्य तथा बेहतर झुंड समूहबद्धता आवश्यक है। विकास पहलों के लिहाज से 2022–23 तक निम्नांकित लक्ष्यों के सुझाव दिये जाते हैं।

भारत में दुधारू पशुओं और भैंसों में कृत्रिम गर्भधान बमुश्किल 35 प्रतिशत है। कृत्रिम गर्भाधान कम रहने का एक मुख्य कारण है– सीमेन स्ट्रॉ। कृत्रिम गर्भाधान को उचित स्तर तक पहुँचाने के लिये हमें 160 मिलियन सीमेंट स्ट्रॉ की आवश्यकता है जबकि उपलब्धता केवल 81 मिलियन की है।फिलहाल गर्भाधान योग्य 4 मिलियन भैंसों, क्रॉसब्रीड वाले 1.3 मिलियन पशुओं और गर्भाधान योग्य 6 मिलियन स्वदेशी पशुओं का प्रजनन हुआ ही नहीं है। इनमें से कम–से–कम 2 मिलियन भैंसों, 0.8 मिलियन क्रॉसब्रीड और 3 मिलियन स्वदेशी पशुओं के मामले में प्रजनन के द्वारा इनकी संख्या 2020 तक और बढ़ जानी चाहिये।2020 तक भैंसों के युवा होने की उम्र को 3–4 महीने कम करना होगा। फिलहाल मुर्रा भैंसे लगभग 33 माह की उम्र में युवावस्था को प्रप्त करती हैं।

संवर्द्धित प्रौद्योगिकियों का सृजन और प्रसार

किसानों की आय को दोगुना करने के लिये बेहतर किस्मों, नस्लों, व्यवहारों, संवर्द्धित ज्ञान तथा नवप्रवर्तनों के माध्यम से इस क्षेत्र के लिये कुल कारक उत्पादकता में 3 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि करनी होगी जिसके लिये उत्पादकता में वृद्धि करना, इनपुट के प्रभावी उपभोग के माध्यम से उत्पादन की लागत को कम करना, अधिक मूल्य प्राप्त करने के लिये बेहतर उत्पाद स्तर आवश्यक है।किस्मों, बीजों और कृषि रसायनों के अलावा अन्य प्रौद्योगिकियों– खासकर प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन संबंधी प्रौद्योगिकियों का अंगीकरण बहुत कम है। कृषि अनुसंधान में मुख्य बल उत्पादकता बढ़ाने, कृषि प्रचालनों के संरक्षण और दक्षता पर ही है। विभिन्न प्रकार की सामाजिक–आर्थिक और जैव–भौतिक व्यवस्थाओं के लिये कृषि प्रणाली के प्रकारों का विकास करना चाहिये जिसमें कृषि आय पर बल दिया गया हो और सभी प्रौद्योगिकियाँ एक ही पैकेज में हों। इसके लिये प्रत्येक उप–प्रणाली और फसल क्रम, मिश्रित फसल, पशुधन, बागवानी, वानिकी जैसी अन्य उप–प्रणालियों के लिये उत्पादन, संरक्षण और फसल कटाई के बाद मूल्य संवर्द्धन संबंधी प्रौद्योगिकी और सर्वोत्तम व्यवहारों को साथ लाने की आवश्यकता है।

नीतियाँ और सुधार

- भारतीय कृषि की संभाव्यता का उपयोग करने और किसानों की आय बढ़ाने की राह में सबसे बड़ी बाधा है– संगठित निजी क्षेत्र की कृषि में कम भागीदारी होना।

- कृषि बाजार को उदार बनाने और प्रतिस्पर्द्धा बढ़ाने के लिये कई सुधारों की पहचान की गई है। इसमें राज्यों में APMC अधिनियम में सुधार के लिये सांस्थानिक उपाय करना तथा विपणन में प्रौद्योगिकी का उपयोग बढ़ाना शामिल है।
- अल्पकालिक सुधारों के लिये चिह्नित अन्य दो क्षेत्र हैं– भूमि पट्टे का उदारीकरण और पेड़ों की कटाई/आवाजाही तथा लकड़ी आधारित उद्योग पर लगे प्रतिबंधों में ढील।
- निजी भूमि पर वानिकी वृक्षों की कटाई और ढुलाई पर लगे प्रतिबंधों को हटाना।
- पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा जारी दिशा–निर्देशों के अनुसार इमारती लकड़ी और काष्ठ आधारित उद्योग को अनुमति देना।

नीति आयोग एवं कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार कृषि सुधारों को लागू और कार्यान्वित करने और विपणन की पद्धति, भूमि पट्टा कानून और कृषि भूमि पर वानिकी में परिवर्तन लाने के लिये राज्यों को सहमत करने के लिये कार्य कर रहे हैं।

उत्पादकों के लिये मूल्य प्रोत्साहन

पिछले पाँच दशकों का अनुभव दर्शाता है कि कृषि विकास पर मूल्यों का गंभीर प्रभाव पड़ता है और वे किसानों की आय के महत्त्वपूर्ण निर्धारक हैं।किसानों द्वारा प्राप्त किये जाने वाले मूल्यों पर सुधार का अपेक्षित प्रभाव नहीं पड़ने की स्थिति में फसल कटाई के मौसम में मूल्य MSP से नीचे नहीं गिरे, को सुनिश्चित करने के लिये सरकार को मूल्य हस्तक्षेप का विस्तार करना चाहिये। इसका कार्यान्वयान भरपाई मूल्य भुगतान प्रणाली के माध्यम से प्रत्यक्ष मूल्य हस्तक्षेप के माध्यम से होना चाहिये। भरपाई कीमत भुगतान के तहत उत्पादकों को उनके द्वारा बाजार में बेची गई उपज की मात्रा के लिये प्रतिनिधि बाजार में कृषि फसल मूल्यों और न्यूनतम समर्थन मूल्यों के बीच अंतर का भुगतान किया जाता है।

भरोसेमंद कृषि निवेश को प्रोत्साहन

आधुनिक प्रणालियों और पद्धतियों के उपयोग की दृष्टि से हमारी कृषि में पूंजी और ज्ञान की कमी रही है। आधुनिक फर्मों के साथ संविदा कृषि के किसानों को इनपुट और उन्नत प्रौद्योगिकी, कौशल अंतरण, गारंटीकृत और लाभकारी मूल्यों और भरोसेमंद बाजार तक पहुँच का प्रावधान करने में मदद मिलती है। उत्पादन में आधुनिक ज्ञान और पूंजी के समावेशन में जोखिम को साझा करने, उपज के लिये आकर्षण बाजार उपलब्ध कराने तथा उच्च मूल्य उत्पादों में विविधीकरण के प्रोत्साहन के लिये निजी क्षेत्रक की भागीदारी की भूमिका को स्वीकार करते हुए वित्त मंत्री ने बजट 2017–18 के भाषण में उल्लेख किया कि संविदा कृषि पर एक

आदर्श कानून तैयार किया जाएगा और अंगीकरण के लिये राज्यों में परिचालित किया जाएगा।

बजट भाषण में APMC में से शीघ्र खराब होने वाली कृषि जिन्सों को अनधिसूचित करने के लिये बाजार सुधारों पर भी जोर दिया गया था।

मूल्य संवर्द्धन को प्रोत्साहन

अनौपचारिक या परंपरागत आपूर्ति शृंखलाएँ भारत में कृषि की विशेषताएँ हैं जो स्थानीय मध्यस्थ व्यक्तियों और उसके बाद लघु स्थानीय भंडारों को उत्पाद उपलब्ध कराती हैं। औपचारिक मूल्य संवर्द्धन उसी उत्पाद को सामान्यतरू बेहतर अथवा अधिक समान गुणवत्ता में, अधिक वाणिज्यिक फर्मों– थोक विक्रेताओं, सुपर बाजारों या निर्यातकों को उपलब्ध करवा सकते हैं। लघु उत्पादकों को घरेलू और निर्यातोन्मुखी दोनों प्रकार के अधिक आधुनिक मूल्य संवर्धन में समेकित करने के लिये मार्ग खोजने की आवश्यकता है।

किसानों द्वारा उपज का अधिकांश भाग कच्चे माल के रूप में बेचा जाता है जो फसल कटाई के बाद खेतों से मंडी लाया जाता है। इससे बाजार में आधिक्य की स्थिति पैदा हो जाती है और कीमतें कम रह जाती हैं। किसान कमी के महीनों में बेचने के लिये उपज नहीं रखते हैं। अब भंडारगृह प्राप्ति और क्त। पंजीकृत भंडारगृहों में उपज को रखने के लिये प्रावधान है। इस सुविधा का लाभ कुछ किसान ही उठाते हैं। खराब होने वाली वस्तुओं के मामले में मूल्यों का एकदम नीचे आना आम बात है। कृषि भूमि पर स्थित भंडारण सुविधा की कमी, उत्पादों को अधिक समय तक सुरक्षित रखने के वैज्ञानिक तरीकों की कमी और देश में खराब प्रसंस्करण आधार, मूल्यों में एकदम कमी के कुछ कारकों में से है।यदि बाजार सुधारों को गंभीरता से कार्यान्वित किया जाता है, तो यह एक बड़े पैमाने पर मूल्य संवर्द्धनों सहित कृषि में निजी क्षेत्रक के प्रवेश के लिये मार्ग प्रशस्त करेगा।

उत्पादकों के संगठनों को प्रोत्साहन

कृषि कार्य बहुत ही छोटे आकार की उत्पादन इकाइयों द्वारा किया जाता है जो छोटे आकार की कृषि जोतों पर कृषि करते हैं और उनके पास कुछ पशुधन होता है। ऐसी प्रचालनात्मक इकाइयाँ उनके छोटे आकार, खराब सौदेबाजी क्षमता और बाजार तक अपर्याप्त पहुँच के कारण अपने स्तर पर आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं होती हैं। ऐसे उत्पादकों को सामूहिक कार्य, संसाधनों के संग्रहण, समूह विपणन और फसल की कटाई उपरांत मूल्य वृद्धि कारण के लिये संस्थागत तंत्र की आवश्यकता है। के स्तर पर एसएफएसी और नाबार्ड देश में किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) को प्रोत्साहित कर रहे हैं। तथापि देश के आकार को ध्यान में रखते हुए एफपीओ के सृजन, पोषण और स्थापना में राज्य स्तरीय एजेंसियों को शामिल करने की आवश्यकता है। व्यवसाय कंपनियों की तरह कृ

षि व्यवसाय संबंधी कार्यकलाप शुरू करने के लिये किसान उत्पादक कंपनियाँ (FPC) के गठन को सुसाध्य बनाने के लिये कानूनों में प्रावधान सृजित किये गए हैं।

उत्पादन को प्रसंस्करण से जोड़ना

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग अन्य उद्योगों की तुलना में अधिक श्रम गहनता वाला उद्योग है। ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा देना रोजगार सृजन और कार्यबल का कृषि से उद्योग की ओर स्थानांतरण करने में सहायता प्रदान करेगा।

किसानों की आय को दोगुना करने के लिये विभिन्न पहलों की आवश्यकता है जिनमें केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और राज्यों की सक्रिय और समन्वित भागीदारी अपेक्षित है। कृषि सहकारिता और किसान कल्याण मंत्रालय को अग्रणी भूमिका निभानी चाहिये, इस लक्ष्य के लिये महत्त्वपूर्ण अन्य क्षेत्र जल संसाधन, खाद्य प्रसंस्करण, उर्वरक, उधार, अवसंरचना और ग्रामीण विकास से संबंधित हैं। किसानों की आय दोगुना करने संबंधी सफलता मुख्यताय राज्यों और संघ राज्य–क्षेत्रों की कार्रवाई और उनकी सहभागिता पर निर्भर करेगी।

भविष्य की दिषा

- किसानों की आय का निम्न स्तर और इसमें प्रतिवर्ष उतार–चढ़ाव कृषि संबंधी संकट का एक प्रमुख कारण है। किसानों की आय का तरंतर निम्न स्तर देश में कृषि के भविष्य पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव का कारण भी बन सकता है।
- कृषि के भविष्य को सुरक्षित करने और भारत की जनसंख्या के आधे भाग की आजीविका सुधार के लिये किसानों के कल्याण में सुधार और कृषि आय में वृद्धि की ओर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है।
- इस लक्ष्य की प्राप्ति से कृषि और गैर–कृषि आय के मध्य स्थायी असमानता कम होगी, कृषि संबंधी संकट घटेंगे, समावेशी विकास को प्रोत्साहन मिलेगा और कृषि क्षेत्रक में गतिशीलता का समावेश होगा।

भारत में कृषिः चुनौतियाँ एवं समस्याएँ

कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था का केन्द्रबिन्दु व भारतीय जीवन की धुरी है। आर्थिक जीवनका आधार, रोजगार का प्रमुख स्रोत तथा विदेशी मुद्रा अर्जन का माध्यम होने के कारण कृषिको देश की आधारशिला कहा जाएतो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। देश की कुलश्रमशक्ति का लगभग 52 प्रतिशत भाग कृषि एवं कृषि से सम्बन्धित क्षेत्रों से ही अपना जीविकोपार्जन कर रहा हैं। अतः यह कहना समीचीन होगा कि कृषि के विकास समृद्धि व उत्पादकता पर ही देश का विकास निर्भर करता है।

सरकार ने वर्ष 1960–61 में भूमि सुधार कार्यक्रम का सूत्रपात किया, जिससे किसानों को भूमि का मालिकाना हक प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सरकार ने भू–जोतों की अधिकतम सीमा तथा चकबन्दी जैसे कार्यक्रमों को प्राथमिकता प्रदान की जिससे कृषक वर्ग लाभान्वित हो सके। कृषि का विकास व सम्पन्नता कृषि उत्पादन वृद्धि के साथ ही उत्पादित उपज के उचित मूल्य प्राप्ति पर भी निर्भर है। गौरतलब है कि देश के अधिकांश छोटे किसान गरीबी के दुष्चक्र में जकड़े हुए हैं। गरीबी तथा ऋणग्रस्तता के कारण किसान अपनी उपज कम कीमतोंपर बचौलियों को बेचने केलिए बाध्य हैं। इन बिचौलियों के जाल से किसानों को मुक्त करवाने तथा विपणन व्यवस्था में सुधार लाने हेतु सरकार ने नियन्त्रित मण्डियों के विस्तार, कृषि उपज के श्रेणीकरण व प्रभावीकरण, माल गोदामों की व्यवस्था, बाजार एवं मूल्य सम्बन्धी सूचनाओं का प्रसारण व सहकारी विपणन व्यवस्था का प्रबन्धन जैसे महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान की स्थापना भी इसी दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। यह संस्थान कृषि विपणन में विशिष्ट शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान की सेवाएँ प्रदान करते हुए कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

इसके अतिरिक्त कृषि उपज की विपणन व्यवस्था को सरल व सुचारू बनाने हेतु गाँवों को निकटवर्ती शहरों से जोड़ने हेतु 'भारत निर्माण' योजना के अन्तर्गत ग्रामीण सड़कों के निर्माण पर सर्वाधिक बल दिया जा रहा है। गौरतलब है कि भारत निर्माण योजना के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों के सिंचाई, सड़क, जलापूर्ति, आवास, विद्युतीकरण व दूरसंचार विकास को प्राथमिकता प्रदान की जा रही है ताकि कृषि के विकास व उत्पादकता हेतु आधारभूत संरचना को सुदृढ़ किया जा सके। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत इन सब सिंचाई परियोजनाओं को पूरा करने का प्रावधान भी रखा गया है जो कि वित्त के अभाव के कारण अधर में लटकी हुई है।

भारतीय कृषि जोखिम भरा है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सरकार कृषि उत्पादों की कीमतों में गिरावट के कारण सम्भाव्य हानि से किसानों को सुरक्षा प्रदान करने हेतु प्रति वर्ष समर्थन मूल्यों की घोषणा करती है। इसी प्रकार किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा प्रदान करने हेतु 'फसल बीमा योजना' प्रारम्भ कीगई जिसे बाद में 'व्यापक फसल योजना' तथा वर्तमान में 'राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना' के रूप में क्रियान्वित किया जा रहा है। यही नहीं कृषिगत निर्यातों के विकास हेतु कृषि निर्यात क्षेत्रों को भी स्थापित किया गया है। चिन्ता का विषय यह है कि देश में प्रति वर्ष 21 प्रतिशत फसल कीड़े–मकोड़े व बीमारियों के कारण नष्ट हो जाती है। जिसको नियन्त्रित करने हेतु 'पौध संरक्षण कार्यक्रम' का सूत्रपात कियागया तथा कीटाणुनाशक दवाइयों के उपयोगपरबल दिया गया। कृषि क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी बनने तथा उत्पादकता बढ़ाने हेतु कृषि में 'यन्त्रीकरण' को प्रोत्साहित कियागया है। इस उद्देश्यकी पूर्ति के लिए किसानों को कमब्याज दर पर ट्रैक्टर, सेट व मशीनरी आदि खरीदने के लिए ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है तथा कृषिगत यन्त्रों की

किराया क्रय पद्धति व्यवस्था करने हेतु 'कृषि उद्योग निगम' की स्थापना की गई है।

निष्कर्ष

2022 तक किसानों की आय को दोगुना करना निश्चय ही चुनौतिपूर्ण है लेकिन इसकी आवश्यकता है और यह प्राप्य है। किसानों की आय को दोगुना करने के लिये कृषि क्षेत्र में (1) विकास पहलों (2) प्रौद्योगिकी और (3) नीतिगत सुधारों पर केंद्रित तीन सूत्री कार्यनीतियों की आवश्यकता है।

लक्ष्य को हासिल करने के लिये उत्पादन को बढ़ाने वाले संसाधनों की वृद्धि दरों में 33 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी करने की आवश्यकता है। देश में गुणवत्ता युक्त बीज, उर्वरक के उपयोग और कृषि क्षेत्र में बिजली की आपूर्ति में क्रमशः 12.8, 4.4 और 7.6 प्रतिशत प्रतिवर्ष बढ़ोतरी करने की आवश्यकता है। सिंचित क्षेत्र में 1.78 मिलियन हेक्टेयर का विस्तार और दोहरी फसल वाले क्षेत्र में 1.85 मिलियन हेक्टेयर की बढ़ोतरी प्रति वर्ष की जानी चाहिये। इसके अतिरिक्त, फलों और सब्जियों के उत्पादन वाले क्षेत्र में 5 प्रतिवर्ष वृद्धि की जाने की आवश्यकता है।पशुधन के संबंध में पशुओं की गुणवत्ता में सुधार, बेहतर चारा, कृत्रिम गर्भाधान में बढ़ोतरी, बच्चे देने के अंतराल में कमी, पहली बार बच्चा देने की आयु में कमी करना वृद्धि के संभावित स्रोत हैं।

ICAR और प्रदेशों के कृषि विश्वविद्यालयों को कृषि आय पर ध्यान देते हुए एक पैकेज में उनकी सभी प्रौद्योगिकियों को शामिल कर विभिन्न प्रकार की समाजार्थिक और जैव भौतिक परिस्थितियों के लिये कृषि प्रणाली के प्रतिरूप विकसित करने चाहिये। इसमें अन्य उप–प्रणालियों जैसे फसल क्रम, फल मिश्रण, पशुधन, बागवानी, वानिकी के साथ सभी उप–प्रणालियों के लिये उत्पादन, संरक्षण और फसल कटाई उपरांत मूल्यवर्धन को कवर करते हुए प्रौद्योगिकी और उत्तम पद्धतियाँ शामिल होंगी। किसानों की आय में लगभग एक तिहाई वृद्धि बेहतर कीमत प्राप्ति, फसल कटाई उपरांत कुशल प्रबंधन, प्रतिस्पर्द्धात्मक मूल्य संवर्धन और संबद्ध कार्यकलापों को अपनाने के माध्यम से सरलता से प्राप्य है। इसके लिये बाजार में व्यापक सुधार, भूमि पट्टा और निजी भूमि पर वृक्षारोपण की आवश्यकता है। संस्थानिक पूंजी और आधुनिक ज्ञान के अभाव में कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। उत्पादन और बाजार में उत्तरदायित्वपूर्ण निजी निवेश को आकर्षित करने के लिये कृषि को उदार बनाने की आवश्यकता है।प्रतिस्पर्द्धात्मक बाजार या सरकारी हस्तक्षेप के माध्यम से कृषि उत्पादन के लिये डैच सुनिश्चित करने मात्र से ही बहुत से राज्यों में किसानों की आय में काफी वृद्धि होगी।

कृषि के लिये अधिकांश विकासात्मक पहलें और नीतियाँ राजयों द्वारा कार्यान्वित की जाती हैं। राज्य सिंचाई जैसे बहुत से विकासात्मक कार्यकलापों पर केंद्र द्वारा परिव्यय की तुलना में बहुत अधिक निवेश करते हैं। बाजार और भूमि

पट्टा से संबंधित विभिन्न सुधारों की प्रगति भी राज्यों का विषय है। इसलिये किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य को अपनाने और उसे हासिल करने के लिये राज्यों और संघ राज्य–क्षेत्रों को संघटित करना अनिवार्य है। केंद्र और सभी राज्यों और संघ राज्य–क्षेत्रों द्वारा संगठित और अच्छी तरह से समन्वित प्रयास किये जाते हैं तो देश वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य हासिल कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बंसल एस.सी. "भारत का भूगोल" मिनाक्षी प्रकाषन, मेरठ।
2. चौहान "भारत का भूगोल" रस्तोगी प्रकाषन, मेरठ।
3. डॉ. अल्का गौतम "भारत का वृहद भूगोल" षारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009।
4. प्रो. आर. सी. तिवारी "भारत का भूगोल" प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. माधुर एवं नारायण "संसाधन भूगोल" वसुन्धरा प्रकाषन, गोरखपुर।
6. डॉ. चतुर्भुज मामोरिया, डॉ. बी.एल.शर्मा "संसाधन एवं पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
7. अरविन्द कुमार, ''भारत का भूगोल'' पेरियार प्रकाशन, पटना।
8. डॉ. अल्का गौतम, ''संसाधन एवं पर्यावरण'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2007।
9. डॉ. प्रमिला कुमार, डॉ. श्रीकमल शर्मा, ''मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2010।
10. डॉ. गायत्री प्रसाद, डॉ. राजेश नोटियाल, ''पर्यावरण भूगोल'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2012।
11. एस.डी. मौर्य ''संसाधन भूगोल'' इलाहबाद पुस्तक भवन, इलाहबाद।
12. हुसैन माजिद, ''भारत का भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
13. झामोरिया, डॉ. चतुर्भुज, ''भारत का भूगोल'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
14. खुल्लर डी.आर., ''भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
15. कौशिक एस.डी. ''संसाधन भूगोल'' प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद।
16. सिसौदिया डॉ. एम.एस. ''संसाधन भूगोल'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
17. हुसैन माजिद, ''भारत और विश्व का भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
18. https://www.prabhasakshi.com

19. अग्रवाल, डॉ. अनुपम, "विकास एवं पर्यावरणीय अर्थशास्त्र", साहित्य भवन पब्लिकेषन।

20. नचिकेता नीरज. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी अ डायनामिक एप्रोच, जी के पब्जिकेषन, 2019।

21. चतुर्भुज मामोरिया, बी.एल. शर्मा "संसाधन एवं पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा 2015।

22. गौतम अल्का. ''संसाधन एवं पर्यावरण'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2007।

अध्याय - 2
भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि संसाधनों का योगदान

लेखिका

यशोदा उइके

सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय,
बिछुवा, छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश, भारत

अध्याय - 2

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि संसाधनों का योगदान

यशोदा उइके

सारांष

शरत एक कृषि प्रधान देष हैं क्योंकि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत में कृषि सिंधु घाटी सभ्यता के समय से ही की जाती रही है। 1960 के बाद कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति के साथ नया दौर शुरू हुआ। सन् 2007 में भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं सम्बन्धित कार्यों (जैसे वानिकी) का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में हिस्सा 16.6% था। उस समय सम्पूर्ण कार्य करने वालों का 51% कृषि में लगा हुआ था। कृषि, राष्ट्रीय आय का एक प्रधान स्रोत है। कृषिजन्य उत्पाद व्यापार (राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय) का एक अभिन्न एवं प्रमुख हिस्सा है। कृषि–उत्पादन मुद्रास्फीति दर पर रोक लगाता है, उद्योगों को शक्ति प्रदान करता है, कृषक आय में वृद्धि करता है तथा रोजगार प्रदान करता है। कृषि का आर्थिक महत्व के साथ–साथ सामाजिक महत्व भी है। वर्तमान में आज 68 प्रतिषत जनसंख्या कृषि के क्षेत्र में रोजगार के अवसर सुनिष्चित कर रही हैं। स्वतंत्रता के पष्चात् शरतीयों को बहुत ही पिछड़ी हुई कृषि अर्थव्यवस्था विरासत रूप मिली हैं। महात्मा गांधी भी कृषि को "भारत की आत्मा" मानते थे। प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में टिकाऊ कृषि उत्पादन और संसाधन संरक्षण के लिए अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों का नियोजन, समन्वयन एवं निगरानी आवष्यक हैं। प्राकृतिक संसाधनों के अंतर्गत कृषि संसाधनों का संरक्षण एवं प्रबंधन वर्तमान समय की महती आवष्यकता हैं।

शब्दावलीः– कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था, कृषि–उत्पादन, कृषि संसाधन, संरक्षण।

प्रस्तावना

भारत में 8000 ईसापूर्व तक पौधे उगाने, फसलें उगाने तथा पशु–पालने और कृषि करने का कार्य शुरू हो गया था। शीघ्र यहाँ के मानव ने व्यवस्थित जीवन जीना शुरू किया और कृषि के लिए औजार तथा तकनीकें विकसित कर लीं। दोहरा मानसून होने के कारण एक ही वर्ष में दो फसलें ली जाने लगीं। इसके फलस्वरूप भारतीय कृषि उत्पादन तत्कालीन वाणिज्य व्यवस्था के द्वारा विश्व बाजार में पहुँचना शुरू हो गया। दूसरे देशों से भी कुछ फसलें भारत में आयीं। पादप एवं पशु की पूजा भी की जाने लगी क्योंकि जीवन के लिए उनका महत्व समझा गया।

भारत में पाषाण युग में कृषि का विकास कितना और किस प्रकार हुआ था इसकी संप्रति कोई जानकारी नहीं है। किंतु सिंधुनदी के काँठे के पुरावशेषों के उत्खनन से इस बात के प्रचुर प्रमाण मिले है कि आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व कृषि अति उन्नत अवस्था में थी और लोग राजस्व अनाज के रूप में चुकाते थे, ऐसा अनुमान पुरातत्वविद् मोहनजोदड़ो में मिले बड़े बडे कोठरों के आधार पर लगाया जाता हैं। वहाँ से उत्खनन में मिले गेहूँ और जौ के नमूनों से उस प्रदेश में उन दिनों इनके बोए जाने का प्रमाण मिलता है। वहाँ से मिले गेहूँ के दाने ट्रिटिकम कंपैक्टम (Triticum Compactum) अथवा ट्रिटिकम स्फीरौकोकम (Triticum sphaerococcum) जाति के हैं। इन दोनों ही जाति के गेहूँ की खेती आज भी पंजाब में होती है। यहाँ से मिला जौ हाडियम बलगेयर (Hordeum Vulgare) जाति का है। उसी जाति के जौ मिश्र के पिरामिडो में भी मिलते है। कपास जिसके लिए सिंध को आज भी ख्याति प्राप्त है उन दिनों भी प्रचुर मात्रा में पैदा होता था।

भारत के निवासी आर्य कृषि कार्य से पूर्णत: परिचित थे, यह वैदिक साहित्य से स्पष्ट परिलक्षित होता है। ऋग्वेद और अर्थर्ववेद में कृषि संबंधी अनेक ऋचाएँ हैं जिनमें कृषि संबंधी उपकरणों का उल्लेख तथा कृषि विधा का परिचय है। ऋग्वेद में क्षेत्रपति, सीता और शुनासीर को लक्ष्य कर रची गई एक ऋचा है जिससे वैदिक आर्यों के कृषि संसाधनों विषयक के ज्ञान का बोध होता है। अतः भारतीय कृषि अपने इतिहास में भी समृद्ध थी। जो कि वर्तमान में भी निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर हैं।

आधुनिक कृषि प्रणालीः– आधुनिक कृषि प्रणाली ने समूचे देश में अनाज के उत्पादन की वृद्धि में भारी योगदान दिया है। आधुनिक कृषि प्रणाली के प्रयोग से देश अनाज के उत्पादन में पर्याप्तता प्राप्त कर सकता है। कृषि कार्य में उपयोगी आधुनिक विधियाँ हैं– बेहतर बीजों का प्रयोग, उचित सिंचाई तथा रासायनिक खादों के प्रयोग से पौधों को पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्वों की आपूर्ति व कीटनाशकों के प्रयोग से पौधों को लगने वाली बीमारियों व कीटाणुओं का नियंत्रण आदि। आधुनिक कृषि में ट्रैक्टर, कम्बाइन हार्वेस्टर व सिंचाई के लिये ट्यूबवेलों द्वारा आधुनिक जोताई (खेती) की विधियों का प्रयोग किया है। उच्च उत्पादकता वाले बीजों के माध्यम से खाद्य–उत्पादन में भारी वृद्धि को हरित क्रांति कहा गया है। आधुनिक कृषि का मुख्य उद्देश्य अच्छी फसल के साथ–साथ वायु, जल, भूमि व मानवीय स्वास्थ्य का संरक्षण भी होना चाहिए।

उद्देश्य

- हरित क्रांति को परिभाषित कर सकेंगे।
- भारत के प्रयोग में आने वाले ऊँची उत्पादकता के पौधों की किस्मों (HYV) के विषय में जानकारी रख सकेंगे।
- खादों व कीटनाशकों की आवश्यकता का महत्त्व जान सकेंगे।

- बेहतर किस्म के बीजों, कृषि यंत्रों और सिंचाई की आवश्यकता पर पर्याप्त जोर दे सकेंगे।
- मशरूम (खुम्मी) की बुवाई, पशुपालन व मत्स्य पालन की विधियाँ जैसी नई कृषि विधियों के बारे में जानकारी रख सकेंगे।
- पशुपालन को परिभाषित कर सकेंगे।
- मवेशियों का निवास, भोजन इत्यादि के सम्बन्ध में प्रबंधन प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे।
- मवेशियों को साधारणतः होने वाली बीमारियों का नाम बता सकेंगे।
- मरे हुए पशुओं के निपटान का पर्यावरण पर दुष्प्रभाव से सम्बन्ध जोड़ सकेंगे।
- हार्मोनों के अविवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग का मवेशी, इत्यादि पर दुष्प्रभाव को जान सकेंगे।
- जलीय कृषि के विपरीत प्रभावों की विवेचना कर सकेंगे।

हरित क्रांतिः भारतीय कृषि में नवीन रणनीति

'हरित क्रांति' शब्द का अर्थ है– नए पौधों की किस्मों के विकास द्वारा उत्पादन को कई गुना बढ़ाने के उपाय तथा छठे दषक के मध्य में कृषि उत्पादन में हुई उस शरी वृद्धि से हैं जो कुछ थोड़े से समय में उन्नतषील बीजों, रासायनिक खादों एवं नवीन तकनीकों के फलस्वरूप हुई। उच्च उत्पादन वाली (High yielding varieties, HYVs) धान व गेहूँ की किस्में हरित क्रांति के मुख्य तत्व रहे हैं। मार्च 1968 में अमेरिकी अर्न्तराष्ट्रीय विकास एजेंसी (US Agency for International Development-USAID) के संचालक विलियम गैंड ने पहली बार ''हरित क्रांति'' शब्दों का प्रयोग किया था। इस शब्द का प्रयोग नई तकनीकों द्वारा चावल, गेहूँ, मक्के और अन्य पौधों की कई गुना विकसित हुई उत्पादकता के संदर्भ में किया गया था। हालाँकि 'हरित क्रांति' नामक शब्दों का प्रयोग मुख्यतः गेहूँ और धान के संदर्भ में किया जाता है, परन्तु कुछ कृषि विशेषज्ञों ने मक्का, सोयाबीन व गन्ने जैसे उन अन्य अनाजों को भी इस श्रेणी में शामिल किया है, जिनके उत्पादन में, नई तकनीकों के प्रयोगों द्वारा, कई गुणा वृद्धि हुई है। जिनके द्वारा हरित क्रांति संभव हुई है, वे इस प्रकार है।

- फसलों के उच्च उत्पादकता वाले पौधों का प्रवेशन।
- बहु–कृषि (सम्मिलित रूप से पौधे उगाने की प्रक्रिया), बेहतर सिंचाई व पर्याप्त मात्रा में खादों की आपूर्ति।
- बीमारियों व कीटाणुओं के विरुद्ध पौधों के संरक्षण की विधियों का प्रयोग।
- वैज्ञानिक कृषि की तकनीकों का अनुसंधान व उनका खेतों से ग्रामीण कृषकों तक स्थानान्तरण।
- खेतों से बाजार तक फसल के यातायात की बेहतर व्यवस्था करना।

आधुनिक तकनीकों के प्रयोग द्वारा पौधों (विशेषकर अनाज) के उत्पादन में महत्त्वपूर्ण वृद्धि को हरित क्रांति नाम दिया गया है। उदाहरण के लिये, जब एक मेक्सिकन गेहूँ की किस्म (ऊँची उत्पादकता एवं अच्छी तरह सिंचाई किए हुए) का उतने ही अच्छे स्तर की भारत गेहूँ की किस्म (रोग की प्रतिरोधक क्षमता एवं अच्छी गुणवत्ता वाला अनाज) से आधुनिक तकनीक द्वारा संकरण किया गया तब एक उच्च उत्पादकता वाले और बीमारी से लड़ने में सक्षम गेहूँ की किस्म की उत्पत्ति हुई। कुछ मुख्य 'क्रांतिकारी' किस्मों के नाम हैं– 'कल्याण सोना', 'सोनालिका', और 'शर्बती सोनोरा' इत्यादि।

भारत में उच्च उत्पादन की किस्मों के प्रयोग का आरम्भ

कृषि के क्षेत्र में विकसित देशों के मुकाबले, हमारी औसत राष्ट्रीय उत्पादकता की दर केवल 800 किलो प्रति हेक्टेयर के स्तर की ही थी, जो कि विकसित देशों की तुलना में बहुत कम थी। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के डायरेक्टर जनरल एम. एस. स्वामीनाथन ने पौधों की उत्पादकता के ठहराव व पौधों के उत्पादन की अस्थिरता का गहरा विश्लेषण किया तथा उन कारणों की तह तक पहुँचने की कोशिश की, जिनके कारणवश यह स्थिति विद्यमान थी। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि उस समय प्रयोग में आने वाली लम्बी किस्मों की शारीरिक बनावट ही अधिक उत्पादन के मार्ग में एक बाधा सिद्ध हो रही थी। उन्होंने उक्त पौधों की किस्मों की उत्पत्ति की प्रक्रिया की ही जननिक कार्यशैलियों के पुनःनिर्देशन पर जोर दिया।

सन 1970–80 के दशक के दौरान, गेहूँ की जननिक प्रक्रियाओं के माध्यम से नए किस्म के बीजों वाले, उच्च उत्पादकता के छोटे आकार के गेहूँ की किस्मों का विकास किया गया। इसी दौरान कुछ महत्त्वपूर्ण किस्में, 'कल्याण सोना', 'शर्बती सोनारा', 'सोनालिका' जैसी ऊँची उत्पादकता की किस्मों का विकास हुआ जिन्होंने खादों और सिंचाई की ओर अच्छा रुख अपनाया।

भारतीय जननिक वैज्ञानिकों के अनुरोध पर, सन् 1963 में भारत सरकार ने मैक्सिको देश से प्रोफेसर नॉर्मन–ई–बोरलौग (Prof-Norman E-Borlaug) को आमंत्रित किया ताकि पौधों की बौनी (कम आकार) किस्मों के उत्पादन की संभावनाओं का वे भारत वर्ष में मूल्यांकन करें। भारत के कई क्षेत्रों का दौरा करने के पश्चात,

उन्होंने भारत में मैक्सिकी उद्‌भव के ही छोटे आकार के गेहूँ की किस्मों को बोने का प्रस्ताव रखा। वे इस निष्कर्ष पर इस कारणवश पहुँचे क्योंकि मैक्सिको का मौसम व भूमि दोनों तुलनात्मक रूप से एक समान थीं। उनके सुझाव पर, लेरमा–राजो व सोनोरा–64 नामक दो किस्मों का चयन किया गया और उन्हें हमारे सींचे गए खेतों में बोने के लिये प्रयुक्त किया गया। इन किस्मों के प्रयोग से गेहूँ की उत्पादकता कई गुना बढ़ गयी और हमारे गेहूँ के निर्यात में क्रांति आ गई।

डॉ. बोरलॉग, मैक्सिको सरकार तथा रॉकफेलेर फाउंडेशन की सहकारी योजना के अन्तर्गत गेहूँ अनुसंधान व विकास कार्यक्रम के मुखिया के रूप में जुड़े। सन् 1966 में उनकी गेहूँ के विकास की गुपचुप क्रांति ने संसार भर का ध्यान आकर्षित किया तथा मैक्सिको में ही अन्तर्राष्ट्रीय गेहूँ व मक्के के विकास का केन्द्र (Centre for Quiet Revolution in Wheat Improvement) स्थापित किया गया। सन् 1970 में उन्हें 'हरित क्रांति' लाने के लिये नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसी हरित क्रांति ने भारत की इतनी मदद की थी। डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन एक बेहतरीन उत्परिवर्तन जननिक वैज्ञानिक रहे हैं। इन्होंने सन् 1967 में उगाने के लिये 'शर्बती सोनारा' नामक किस्म को निर्मित किया। उत्परिवर्तन जनन के कार्यक्रम में सोनारा 64 को अल्ट्रावायलेट किरणों से पारित करके उन्होंने इस 'किस्म' का निर्माण किया।

संरक्षण खेती के फायदे

1. आर्थिक फायदे
2. मृदा में कार्बनिक पदार्थों की वृद्धि
3. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं समुचित उपयोग
4. पर्यावरणीय लाभ
5. सीमान्त ताप (टर्मिनल हीट) प्रभाव।

किसी भी विशेष प्रक्षेत्र में फसलों, फसल प्रणालियों का प्रबंधन वहां पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों एवं प्रबंधन तकनीकियों के अनुसार करना आज के समय की जरुरत बन गयी है। नवीन तकनीकियों को व्यापक स्तर पर अपनाने के लिए एक बड़े नियोजित समूह को आकर्षित करने की जरूरत होती है। इसमें किसानों को जो वे कर रहे हैं और उनको क्या जरूरत है के बीच अन्तर को समझाने की आवश्यकता पड़ती है। संरक्षण खेती को वृहद स्तर पर लागू करने के लिए इससे मिलने वाले लाभों के प्रति जागरूकता बढ़ानी होगी। इससे मिलने वाले लाभ निम्न प्रकार हैं–

आर्थिक फायदे

फसल सघनीकरण के कारण भूमि में मुख्य पोषक तत्वों जैसे नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश, सल्फर के साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जिंक, लोहा, मैंगनीज इत्यादि की कमी के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति का गिरना, भू–जलस्तर में गिरावट, कृषि मजदूरों में कमी व कृषि आयातों की बढ़ती कीमतों की वजह से पारम्परिक खेती के अन्तर्गत उत्पादन खर्च में वृद्धि व शुद्ध मुनाफे में कमी हो रही है। जबकि दूसरी ओर संरक्षण खेती को अपनाकर पारम्परिक खेती की तुलना में 25–30 प्रतिशत तक समय, ईंधन व मजदूरी की बचत की जा सकती है। पारम्परिक खेती की मौजूदा कृषि पद्धतियों में मजदूरों की उपलब्धता दिन प्रतिदिन घटती जा रही है व इस पर होने वाले खर्च में भी निरतर वृद्धि हो रही है। संरक्षण खेती में बुआई पर होने वाले खर्च को 5000 रुपये प्रति हैक्टेयर तक आसानी से कम किया जा सकता है।

मृदा में कार्बनिक पदार्थों की वृद्धि

संरक्षण खेती में मिट्टी को स्वस्थ तथा उसकी पैदावार बनाए रखने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि मिट्टी की सतह पर फसल अवशेषों का पर्याप्त आवरण हो। मृदा में फसल अवशेष का स्थायी आवरण होने के कारण उसमें उपस्थित सूक्ष्म जीवों की जैविक गतिविधियां बढ़ जाती हैं जिससे मृदा में कार्बनिक पदार्थों की वृद्धि होती है जिसके परिणामस्वरूप फसल को समुचित मात्रा में पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। कार्बनिक पदार्थ का मृदा के भौतिक गुणों जैसेः मृदा संरचना, जल धारण क्षमता, मृदा भार घनत्व, उर्वरक उपयोग क्षमता, मृदा समुच्चय, मृदा पारगम्यता दर, पोषक तत्व प्रतिधारण (रिटेंशन) को फसल के जड़ीय क्षेत्र (राइजोस्फियर) में बढ़ाने में मुख्य भूमिका है। संरक्षण खेती के अन्दर किसान का मित्र कहे जाने वाले कंचुए की संख्या में वृद्धि होती है। फसलों की जड़ों एवं केंचुए द्वारा बनाये हुये छिद्रों में पानी एवं हवा का अनुपात (11) बना रहता है जिससे फसलों की वृद्धि एवं विकास ठीक ढंग से होता है।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं समुचित उपयोग

संरक्षण खेती प्रणाली को अपनाने से पर्यावरण एवं संसाधन दोनों का संरक्षण होता है। न्यूनतम जुताई, फसल अवशेष का स्थायी आवरण तथा फसल विविधिकरण

अपनाने से मृदा एवं जल संसाधनों की गुणवत्ता और फसल की उत्पादक क्षमता बढ़ती है। फसल अवशेष जैव विविधता, जैविक गतिविधियों एवं वायुवीय गुणवता में बढ़ोत्तरी करते हैं। यह कार्बन को संचय (सिक्वेस्ट्रेशन) करने एवं मृदा तापमान को नियंत्रित करने में भी सहायक होती है। मृदा सतह पर उपस्थित फसल अवशेष मृदा सतह पर बहने वाले पानी (रन ऑफ) और हवा की गति को कम कर देते हैं जिससे मिट्टी के महीन कणों का उपरी सतह से विस्थापन एवं मृदा काबर्निक पदार्थों का क्षरण बहुत कम हो जाता है। फसल अवशेष मृदा सतह से पानी का वाष्पीकरण कम करने में सहायक होते हैं जिससे अधिक समय के लिए मृदा में नमी बनी रहती है।

पर्यावरणीय लाभ

फसल अवशेषों में बुआई करने वाली मशीनों के अभाव एवं किसानों के साफ–सुथरा खेत रखने की सोच के कारण सिंधु–गंगा के उत्तर–पश्चिमी मैदानी इलाकों में फसल अवशेषों से छुटकारा पाने के लिए फसल अवशेषों को पूरी तरह से जलाने का परम्परा बनी हुयी है। धान के अवशेषों को जलाने से इनमें से जहरीली गैसें जैसेः कार्बन डाइऑक्साइड (CO), सल्फर डाइऑक्साइड (SO), नाइट्रस ऑक्साइड (NO), कार्बन मोनोऑक्साइड (CO) आदि निकलती हैं जिनसे समूचा वातावरण प्रदूषित हो जाता है एवं मृदा के पोषक तत्वों तथा जैव पदार्थों को नुकसान होता है।

धान की पुआल के जलाने से

कार्बन–लगभग 90–99 प्रतिशत, नाइट्रोजन–80 प्रतिशत, फास्फोरस एवं पोटेशियम–20 प्रतिशत तथा सल्फर–50 प्रतिशत का नुकसान होता है। धान की पुआल में लगभग 50–55 प्रतिशत कार्बन, 0.62–0.68 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.20–0.23 प्रतिशत फास्फोरस एवं 0.78–1.15 प्रतिशत पोटेशियम होते हैं जो जलाने के उपरान्त नष्ट हो जाते हैं। धान की पुआल को जलाने पर उसमें उपस्थित कार्बन का 0.7 प्रतिशत उत्सर्जन कार्बन डाइऑक्साइड का, 70 प्रतिशत कार्बन मोनोऑक्साइड एवं 7 प्रतिशत मिथेन के रुप में होता है जबकि कुल नाइट्रोजन का 21 प्रतिशत हिस्सा नाइट्रस ऑक्साइड के रुप में उत्सर्जित होता है। पूरे भारत में लगभग 9281 मिलियन टन फसल अवशेषों को जला दिया जाता है जिससे काफी मात्रा में पौधों के लिए जरुरी पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। पंजाब एवं हरियाणा में अनुमानतः 196 एवं 0. 91 मिलियन टन फसल अवशेषों को प्रतिवर्ष जला दिया जाता है।

संरक्षण खेती आधारित फसल प्रणालियों को अपनाकर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है तथा साथ ही उपलब्ध संसाधनों को समुचित उपयोग में भी लाया जा सकता है। संरक्षण खेती में हैप्पी/टर्बो सीडर तथा रोटरी डिस्क ड्रिल की मदद से गेहूँ को धान के अवशेषों के मध्य (10 टन फसल अवशेष भार के साथ) सफलतापूर्वक बोया जा सकता है।

सीमान्त ताप (टर्मिनल हीट) प्रभाव

मृदा की सतह पर अवशेषों को रखने से मिट्टी में नमी का संरक्षण, खरपतवार नियंत्रण तथा मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है। अवशेषों को मिट्टी पर बनाए रखने से न केवल मृदा सुधार होगा बल्कि सूक्ष्म वातावरण भी फसल के अनुकूल होगा। गेहूँ की फसल में प्रकाश संशलेषण की दर 20–25 डिग्री सैल्सियस पर अधिकतम होती है तथा यह 30 डिग्री सेल्सियस के बाद तेजी से गिरने लगती है। गेहूँ की फसल में मार्च के महीने में तापमान के 35 डिग्री सैल्सियस से अधिक होने पर इसका सीधा प्रभाव गेहूँ की उत्पादकता पर पड़ता है जिसे हम सीमान्त ताप प्रभाव के नाम से जानते हैं। इस तापक्रम के बाद प्रत्येक डिग्री सेल्सियस की बढोत्तरी पर 4–5 प्रतिशत उपज में कमी आती है। संरक्षण आधारित खेती करने से सीमान्त ताप प्रभाव को नियंत्रित किया जा सकता है एवं इसकी वजह से गेहूँ की फसल में होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। मृदा सतह पर उपस्थित फसल अवशेष तापमान को 1–3 डिग्री सैल्सियस तक कम करने में सक्षम होते हैं जिससे फसल के सूक्ष्म पर्यावरण में तापमान गेहूँ की जरुरत के अनुसार बना रहता है। फसल अवशेषों की वजह से कम होने वाला तापमान मृदा सतह पर उपस्थित अवशेष भार पर निर्भर करता है। सीमान्त ताप की वजह से समय पूर्व परिपक्वता के कारण गेहूँ के दाने सिकुड़ जाते है जिसकी वजह से कम उत्पादन प्राप्त होता है। दोनों की गुणवत्ता एवं आकार खराब होने से अच्छे बाजार भाव नहीं मिलते हैं जिसकी वजह से किसान को भारी खामियाजा भुगतना पड़ता है।

कृषि विकास, नई तकनीक से ही संभवः–

तकनीक ने इस संसार के स्वरुप को ही नहीं बल्कि मानव जीवन में भी बदलाव किए हैं। आज कोई भी क्षेत्र तकनीकी से अछूता नहीं है। इनमें कृषि एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर पूरा मानव जीवन चक्र निर्भर करता है और इसमें तकनीक का अहम योगदान है। नई तकनीकों के चलते देश की कृषि ने नई राह पकड़ी है। देश की कृषि तकनीकी, कृषि मशीनरी, खाद्य एवं उर्वरक, सिंचाई और बाजार व्यवस्था पर निर्भर करती है क्योंकि किसान खेत तैयार करने से लेकर उत्पाद को बेचने तक तकनीकी का ही इस्तेमाल करता है। देश की जीडीपी में कृषि क्षेत्र की 15 प्रतिशत से अधिक की हिस्सेदारी है। यदि कृषि तकनीकी के क्षेत्रों की बात करें तो देश में कृषि मशीनरी उद्योग की हिस्सेदारी लगभग तकनीक ने इस संसार के स्वरुप को ही नहीं बल्कि मानव जीवन में भी बदलाव किए हैं। आज कोई भी क्षेत्र तकनीकी से अछूता नहीं है. इनमें कृषि एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर पूरा मानव जीवन चक्र निर्भर करता है और इसमें तकनीक का अहम योगदान है। नई तकनीकों के चलते देश की कृषि ने नई राह पकड़ी है। देश की कृषि तकनीकी, कृषि मशीनरी, खाद्य एवं उर्वरक, सिंचाई और बाजार व्यवस्था पर निर्भर करती है क्योंकि किसान खेत तैयार करने से लेकर उत्पाद को बेचने तक तकनीकी का ही इस्तेमाल करता है।

भारत में 60 प्रतिशत कीटनाशक, 18 प्रतिशत फफूंदीनाशक, 16 प्रतिशत खरपतवारनाशक, 3 प्रतिशत बायोपेस्टिसाइड और अन्य फसल सुरक्षा उत्पाद इस्तेमाल होते हैं। फसल सुरक्षा के लिए कृषि रसायनों के साथ–साथ बायो उत्पाद और जैविक उत्पादों का इस्तेमाल भी किसानों के बीच काफी बढ़ा है।

कृषि सिंचाई तकनीकों में भी काफी बदलाव हुए हैं। अब किसान टपक सिंचाई और सूक्ष्म बूंद सिंचाई जैसी तकनीक को अपना रहे हैं। कृषि सिंचाई की इन तकनीकों से पैदावार में बढ़ोत्तरी, पानी का सही मात्रा में उपयोग और पौधों को संतुलित रूप से पोषक तत्वों की पूर्ती करने जैसे लाभ किसानों को मिल रहे हैं. फिलहाल भारत में यह इंडस्ट्री 3.78 बिलियन डॉलर का कारोबार कर रही है। साल 2022 तक 11. 60 सीएजीआर की वृद्धिदर से यह बढ़कर 6.54 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। कृषि फसलों के बीज व्यापार में भी तकनीकी के चलते बदलाव आए हैं जो किसान पहले देशी किस्म के बीजों से कम पैदावार लेते थे आज वे किसान हाइब्रिड बीज से अधिक पैदावार ले रहे हैं। सरकार ने कृषि बाजारों को भी तकनीकी से जोड़ते हुए कृषि मंडियों को ऑनलाइन कर दिया है। इसी के साथ कुछ निजी क्षेत्र की कंपनियों ने इस पर काम करना शुरू किया ये कंपनियां ऐसी तकनीक विकसित कर रही हैं जिनसे किसानों को उत्पाद का सही मूल्य, कृषि सलाह, मंडीकरण, मौसम की जानकारी, ऑनलाइन कृषि उत्पाद बेचना और खरीदना जैसी सुविधा मिल सकेगी। एक किसान आसानी से घर बैठे कृषि से जुड़ी अधिकतर जानकारी अपने फोन पर पा लेता हैं। यह आधुनिक तकनीक के जरिए ही संभव हो पाया हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आधुनिक तकनीकों के चलते कृषि क्षेत्र में बड़े बदलाव हुए। इसका सीधा फायदा कृषि क्षेत्र से जुड़े हर एक व्यक्ति को मिला है लेकिन अभी भी कृषि की नवीन तकनीक से बहुत से किसान वंचित हैं। यदि आधुनिक कृषि तकनीकों को सही से किसानों तक पहुंचाया जाए तो इससे बड़ा फायदा हो सकता है और किसानों की आय में वृद्धि संभव है। यह कोई परिकल्पना नहीं बल्कि एक हकीकत हो सकती है।

कृषि सिंचाई तकनीकों में भी काफी बदलाव हुए हैं। अब किसान टपक सिंचाई और सूक्ष्म बूंद सिंचाई जैसी तकनीक को अपना रहे हैं। कृषि सिंचाई की इन तकनीकों से पैदावार में बढ़ोत्तरी, पानी का सही मात्रा में उपयोग और पौधों को संतुलित रूप से पोषक तत्वों की पूर्ती करने जैसे लाभ किसानों को मिल रहे हैं। फिलहाल भारत में यह इंडस्ट्री 3.78 बिलियन डॉलर का कारोबार कर रही है। साल 2022 तक 11. 60 सीएजीआर की वृद्धिदर से यह बढ़कर 6.54 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। कृषि फसलों के बीज व्यापार में भी तकनीकी के चलते बदलाव आए हैं। जो किसान पहले देशी किस्म के बीजों से कम पैदावार लेते थे आज वे किसान हाइब्रिड बीज से अधिक पैदावार ले रहे हैं। सरकार ने कृषि बाजारों को भी तकनीकी से जोड़ते हुए कृषि मंडियों को ऑनलाइन कर दिया है। इसी के साथ कुछ निजी क्षेत्र की कंपनियों ने इस पर काम करना शुरू किया। ये कंपनियां ऐसी तकनीक

विकसित कर रही हैं जिनसे किसानों को उत्पाद का सही मूल्य, कृषि सलाह, मंडीकरण, मौसम की जानकारी, ऑनलाइन कृषि उत्पाद बेचना और खरीदना जैसी सुविधा मिल सकेगी।

कृषि के महत्व और भूमिका (The Importance and Role of Agriculture)

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदण्ड है। जहां एक ओर यह प्रमुख रोजगार प्रदाता क्षेत्र है। वहीं सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। देश की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या अपनी आजीविका हेतु कृषि पर ही निर्भर है। कृषि की सकल घरेलू उत्पादन में भागीदारी लगभग 22 प्रतिशत है। वस्तुतः ये तथ्य भारत को विकासशील देशों में शामिल करते विकसित राष्ट्रों में जहां सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की भागीदारी का प्रतिशत कम होता है वहीं वहां की अपेक्षाकृत कम जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न होती है। उदाहरणार्थ ब्रिटेन व अमेरिका की राष्ट्रीय आय में कृषि की भागीदारी क्रमशः 2 तथा 3 प्रतिशत है।

कृषि के माध्यम से खाद्यान्न तो उपलब्ध होता ही है, साथ ही अनेक प्रमुख उद्योगों के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध होता है (सूती वस्त्र उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग, चाय उद्योग, सिगरेट उद्योग और तम्बाकू उद्योग, आदि)। कृषि राष्ट्रीय आय का एक प्रधान स्रोत है। कृषिजन्य उत्पाद व्यापार (राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय) का एक अभिन्न एवं प्रमुख हिस्सा है। भारत द्वारा चाय, कपास, तिलहन, मसाला, तम्बाकू आदि का विश्व–व्यापार होता है। कृषिजन्य उत्पादों के आंतरिक व्यापार से परिवहन कर और अंतरराष्ट्रीय व्यापार से तटकर की आय में वृद्धि होती है, जो अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए नितांत आवश्यक है।

कृषि संपूर्ण राष्ट्र को प्रभावित करती है। कृषि–उत्पादन मुद्रास्फीति दर पर अंकुश रखता है, उद्योगों की शक्ति प्रदान करता है, कृषक आय में वृद्धि करता है तथा रोजगार प्रदान करता है। कृषि का आर्थिक महत्व के साथ–साथ सामाजिक महत्व भी है। यह क्षेत्र निर्धनता उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकांश निर्धन लोग ही कार्यरत हैं और यदि कृषि क्षेत्र का विकास होगा तो निर्धनता भी स्वतः समाप्त हो जायेगी।

आज, भारत खाद्यान्न में आत्मनिर्भर है, हालांकि बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न जरूरतों को पूरा करने का दबाव भी भारत पर निरंतर बढ़ता जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय पटल पर, विश्व में भारतीय कृषि के लिए, भविष्य में निहितार्थ रखेगा। भारत किस प्रकार इन चुनौतियों से निपटेगा, यह देखा जाना शेष है।

भारतीय कृषि का स्वरूप

स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों बाद कृषि का उत्पादन कई गुणा बढ़ चुका है। किंतु भारतीय कृषि में व्याप्त कुछ कारक इसके संतुलित विकास व वृद्धि में अवरोधक हैं।

अभी भी भारत में प्रति हेक्टेयर भूमि में उत्पादन का स्तर बहुत ही न्यून है। कृषि के विकास के लिए नयी तकनीक, मशीनरी तथा नव–विकसित बीजों को अपनाकर यदि कृषि के क्षेत्र में कदम बढ़ाया जाए, तो हम विश्व के प्रमुख देशों के उत्पादन–स्तर से अधिक हासिल कर सकते हैं। कृषि को उद्योग का दर्जा देना नितांत आवश्यक है। भारत में अधिकांश कृषि क्षेत्र अल्प–वर्षा वाले हैं और वहां सिंचाई की सुविधा भी बहुत ही सीमित है। बहुत–से क्षेत्र बाढ़ और सूखा जैसी प्राकृतिक आपदा से त्रस्त हैं। यहां मिट्टी का वितरण भी विभिन्न क्षेत्रों में असमान ही है, इसलिए विभिन्न प्रकार की फसलें उत्पादित होती हैं।

हमारे कृषक आज भी निरंतर कृषि की परम्परागत तकनीक का इस्तेमाल करते हैं और अधिकतर निर्वाह कृषि ही करते हैं। वित्तीय बाधाएं लघु एवं सीमांत कृषकों को उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि करने हेतु खेती की आधुनिक पद्धति को अपनाने से रोकती है। भारतीय कृषि अभी भी व्यापक रूप से सिंचाई हेतु मानसून पर निर्भर करती है। लगभग 60 से 70 प्रतिशत विशुद्ध बुवाई क्षेत्र निरंतर सिंचाई की अपेक्षा वर्षा के जल पर निर्भर रहता है। खस्ताहाल विपणन एवं भण्डारण व्यवस्था भी भारतीय कृषि की समस्याओं का बखान करती हैं।

निम्न उत्पादकता के कारण

भारतीय कृषि की उत्पादकता शेष विश्व के सापेक्ष निम्न रही है। निम्न उत्पादकता के कारण भूमि, श्रम व अन्य साधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता है। निम्न उत्पादकता के निम्नलिखित कारण हैं–

1) भूस्वामित्व एवं वास्तविक कृषकरू भारत में जमींदारी प्रथा के कारण भूमि का स्वामित्व जमींदारों, मध्यस्थ, सूदखोर, महाजन इत्यादि के हाथ में रहा जिसके कारण जोतदार (वास्तविक किसान) को भूमि सुधार, सिंचाई सुविधाएं स्थापित करने एवं अन्य माध्यमों से कृषि की उत्पादकता बढ़ाने का प्रोत्साहन नहीं मिला। ऐसा कृषक के पट्टेदारी अधिकारों के असुरक्षित होने के कारण हुआ। ऐसी स्थिति में मात्र प्रौद्योगिकी सुधारों के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि नहीं की जा सकती थी। उत्पादकता में वृद्धि के लिए भूमि सुधार आवश्यक हो जाते हैं।

2) जीवन–निर्वाह कृषिरू कृषि क्षेत्र में 2 हैक्टेयर से कम आकार वाले जीतों की बाहुल्यता है। ऐसी जोतों पर आधुनिक कृषि पद्धति को अंगीकार नहीं किया जा सकता था। दूसरे, सहकारी कृषि के माध्यम से छोटी जोतों को वृहत् आकार प्रदान करने एवं कृषि की आधुनिक पद्धति अपना कर उत्पादकता बढ़ाने के प्रयासों को पूर्ण उत्साह के साथ लागू नहीं किया गया। ऐसी जोतों पर कृषि मात्र जीवन निर्वाह के लिए की जाती है।

3) अल्प पूंजी आधाररू अधिकांश कृषकों के पास पूंजी का अभाव है, जिसके कारण वे आधुनिक प्रौद्योगिकी के लाभों को नहीं उठा पाते हैं। अल्प पूंजी

के कारण वे न तो सिंचाई सुविधाओं में निवेश कर पाते हैं और न ही फार्म–मशीनीकरण की दिशा में कदम उठा पाते हैं।

4) मानसून पर निर्भरतारू भारतीय कृषि उत्पादन मानसून के प्रति अतिसंवेदनशील है। सही समय पर मानसून आने का अर्थ अच्छी फसल का होना है। यदि मानसून सही समय पर नहीं आता है तो फसल उत्पादन बुरी तरह प्रभावित होता है। वृहत् सिंचाई सुविधाओं पर अत्यधिक बल देने तथा लघु सिंचाई सुविधाओं के कारण मानसून के प्रति भारतीय कृषि क्षेत्र की निर्भरता बढ़ी है। हरित क्रांति के बाद के काल में उत्पादकता बढ़ाने की अनिवार्य शर्त के रूप में सिंचाई साधनों का विस्तार भी है। समग्र आर्थिक विकास में कृषि के महत्व के परिप्रेक्ष्य में उत्पादकता वृद्धि के लिए मानसून पर निर्भर रहना उचित नहीं है। मानसून समय पर न आने की परिस्थिति में भी कृषि उत्पादन पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ने देने के लिए वैकल्पिक सिंचाई साधनों का विकास अनिवार्य हो जाता है।

5) जनसंख्या दबावरू आजादी के बाद भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ी है। साथ ही भूमि पर जनसंख्या के दबाव में निरंतर वृद्धि हुई है। आजादी के पश्चात कृषि के अधीन नवीन भूमि लाने के बावजूद विगत वर्षों में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि घटी है।

6) मिट्टी की प्रकृतिरू भारत में अनेक प्रकार की मिट्टी पाई जाती है जो सामान्यतः उर्वरक है परंतु निरंतर कृषि के कारण मिट्टी की उर्वरता में कमी आई है। मिट्टी की उर्वरकता को कायम रखने के लिए नाइट्रोजन स्थिरीकरण जैसे वैज्ञानिक तरीकों को नहीं अपनाया गया।

7) कृषि सुविधाओं का अभावरू भारत में अल्प कृषि उत्पादकता की पृष्ठभूमि में कृषि सुविधाओं का अभाव भी महत्वपूर्ण कारण है। कृषकों को पर्याप्त विपणन व साख सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पाती हैं, जिससे वे न तो आवश्यक निवेश ही कर पाते हैं और न ही सही समय पर अपने उत्पादों की बिक्री कर पाते हैं।

कृषि के प्रकार Types of Agriculture: भारतीय कृषि को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया गया है।

स्थानांतरण कृषि– कृषि की इस पद्धति के तहत् किसान अपने परिवार की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कृषि करता है। यदि अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद खाद्यान्न बच जाता है, तो उसका उपयोग अन्य वस्तुओं के लेन–देन में किया जाता है। स्थानांतरण कृषि में क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था लगभग स्थायी होती है और उसका आधार पूर्णतया ग्रामीण उत्पादन ही होता है। इस प्रकार कृषि के लिए भूमि का निर्माण अधिकांशतः जंगलों में आग लगाकर किया जाता है। इस प्रकार की कृषि का चक्र चार से आठ वर्ष तक का होता है, कभी–कभी यह पांच से पन्द्रह वर्ष

का भी होता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानांतरण कृषि को विविध नामों से पुकारा जाता है, यथा– असम में झूम, केरल में पोणम, आंध्र प्रदेश और ओडीशा में पोडू तथा मध्य प्रदेश में बीवर, मशान, पॅण्डा और बीरा।

इस प्रकार की कृषि मुख्यतः असम, नागालैंड, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडीशा आदि के वन क्षेत्र में की जाती है। इसके अंतर्गत शुष्क धान, गेहूं, मक्का, चोरे ज्वार, तम्बाकू और गन्ना मुख्यतः उत्पादित होते हैं।

स्थानबद्ध कृषि– कृषि की इस पद्धति के तहत किसी एक स्थायी और निश्चित निवास स्थान पर रहने वाला किसान और उसका परिवार मिल–जुलकर कृषि–कार्य करता है। इस प्रकार की कृषि में किसान फसलों में परिवर्तन करता है और वह भूमि तथा फसलों की अपेक्षाकृत अधिक देखरेख करता है। भारत के अधिकांश कृषक कृषि की इसी पद्धति को अपनाते हैं और इसके लिए बैल और भैस जैसे पशु तथा हलों (लकड़ी अथवा लोहे का हल) का उपयोग करते हैं। कृत्रिम स्रोतों से आर्द्रता आपूर्ति की उपलब्धता पर आधारित होती है।

पूंजी आधारित कृषि– कृषि की यह पद्धति उन क्षेत्रों में अपनायी जा रही है, जहां कृषि के लिए पूर्णतया मशीनों की आवश्यकता होती है। इस पद्धति में पूंजी का अधिकाधिक व्यय होता है, यद्यपि कृषि से आय भी अधिक होती है। भारत में इस प्रकार की कृषि अभी बहुत ही न्यून क्षेत्रों में होती है। बागवानी कृषि के अंतर्गत ऐसे क्षेत्रों की खोज अभी जारी है।

फसल ऋतुएं– भारत विविधताओं का देश है। यहां मौसम भी परिवर्तित होता रहता है और विविध ऋतुओं में विविध प्रकार की फसलें उत्पादित होती हैं। यहां मुख्य रूप से तीन प्रकार की फसली ऋतुएं होती हैं–

खरीफ या वर्षा ऋतु की फसल

दक्षिण–पश्चिमी मानसून के भारत में आने के समय के प्रारंभ होने पर मई से जुलाई तक बोयी जाती है और इसकी समाप्ति पर सितंबर से लेकर अक्टूबर–नवम्बर तक काटी जाती है। इस ऋतु की प्रमुख फसलें हैं– ज्वार, बाजरा, धान, गन्ना, तम्बाकू आदि।

रबी या शीत ऋतु की फसल

रबी या शीत ऋतु की फसलें विविधतापूर्ण जलवायु में होती है। बीज के अंकुरण व प्रारंभिक वृद्धि के लिए ठण्डी जलवायु व अल्प प्रकाश काल की आवश्यकता होती है, जबकि पकने के लिए अधिक तापमान एवं दीर्घ प्रकाश काल की आवश्यकता होती है। यह फसल शीत काल के प्रारंभिक दिनों में अक्टूबर से दिसंबर तक बोयी जाती है और फरवरी से अप्रैल तक तथा कहीं–कहीं मई तक काटी जाती हैं। इसकी प्रमुख फसलें हैं– गेहूं, जौ, मटर, चना, सरसों, आलू, बरसीम, मसूर, अरहर आदि।

जायद

खरीफ और रबी फसलों के उत्पादन के अलावा पूरे वर्ष में कृत्रिम सिंचाई की व्यवस्था से कुछ क्षेत्रों में जायद फसलों की कृषि भी की जाती है। जायद फसल को दो श्रेणी में रखा जाता है– जायद खरीफ और जायद रबी।

जायद खरीफ फसल वर्षा ऋतु के अंतिम दिनों में अगस्त से सितंबर तक बोयी जाती है और फसलों की कटाई दिसंबर से जनवरी तक होती है। इसकी प्रमुख फसलें हैं– चावल, ज्वार, सरसों, तिलहन, कपास आदि।

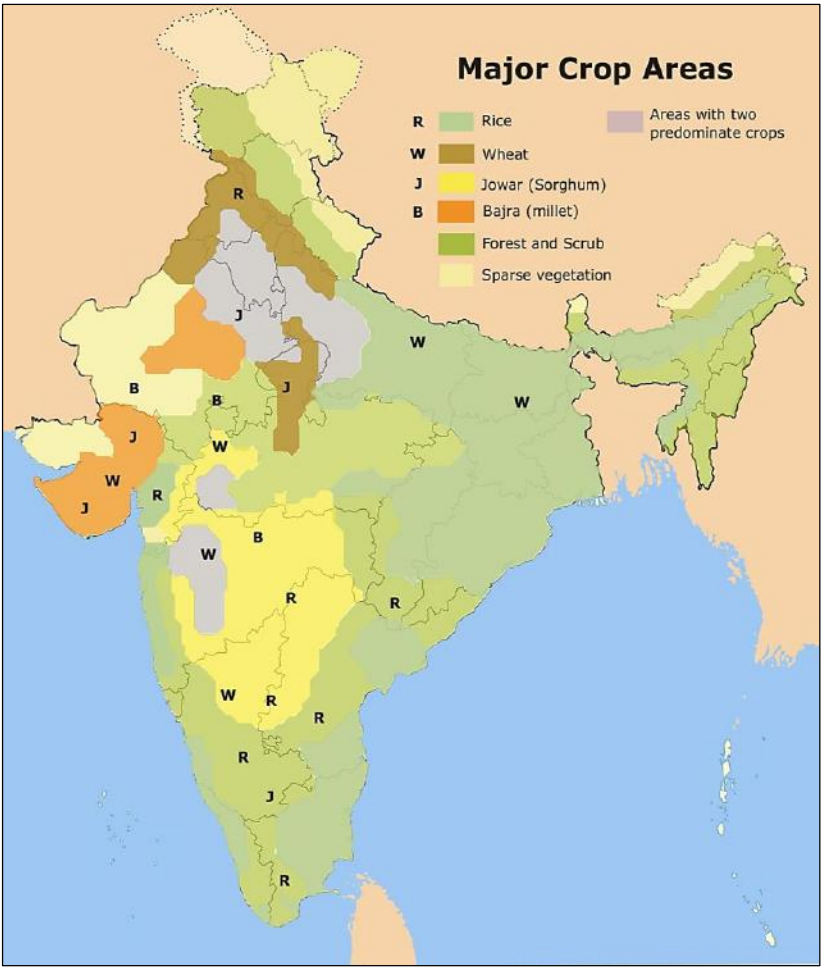

जायद रबी फसलों का बीज फरवरी–मार्च महीने में बोया जाता है जबकि इनकी कटाई अप्रैल–मई महीने में की जाती है। इसकी प्रमुख फसलें हैं– खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, ज्वार, मूंग, लोबिया, पत्तीदार सब्जियां आदि।

भारत की जीडीपी में कृषि क्षेत्र का योगदान

कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है, हालांकि कुछ विश्लेषक देश की जीडीपी में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के योगदान का हवाला देकर इस पर सवाल भी उठाते हैं। विश्लेषक आंकड़ों का हवाला देकर ये बताते हैं कि देश की आबादी का करीब 50 फीसदी मानव संसाधन कृषि क्षेत्र में है, इसके बाद भी ये क्षेत्र जीडीपी में 15–16 फीसदी ही योगदान कर पाता है। इस अध्याय में हम आपको बताएंगे कि इन तथ्यों के बावजूद क्यों भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनी हुई है कृषि और कैसे इस क्षेत्र में आ रहा है बदलाव?

पिछले करीब दो साल कोविड 19 वैश्विक महामारी से बुरी तरह प्रभावित रहे हैं। वैश्विक आपदा कोरोना के असर से दुनिया के सभी प्रभावित देशों की तरह ही भारत की भी आर्थिक गतिविधियां करीब–करीब ठप पड़ गईं, जिससे वित्त वर्ष 2020–2021 की पहली छमाही में जीडीपी में 14.9 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई, दूसरी छमाही में भी 0.3 फीसदी की मामूली वृद्धि ही अनुमानित है। दूसरी ओर, इसी दौरान अगर कृषि विकास दर की बात करें तो वहां 3.6 फीसदी की बढोतरी दर्ज हुई। वहीं वित्त वर्ष 2021–2022 कृषि विकास दर की बात करें तो वहां 3.9 फीसदी की बढोतरी दर्ज हुई।

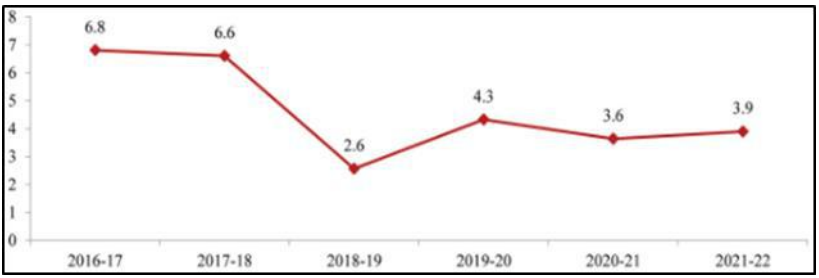

Fig 1: Growth of agriculture and allied sectors (per cent)

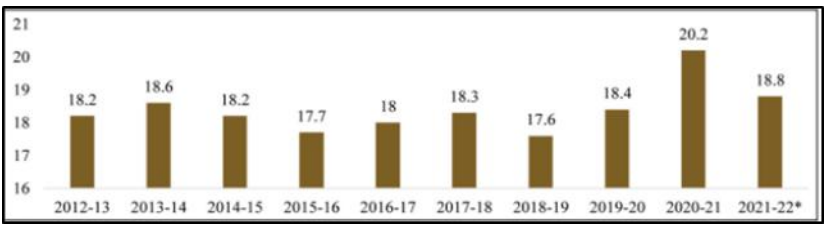

Fig 2: Percentage share of GVA of agriculture & allied sector to total GVA (at current prices)

इन आंकड़ों ने ये साबित किया है कि बाकी तमाम क्षेत्र अगर अच्छी विकास दर हासिल कर रहे हैं तो विपरीत परिस्थितियों में नकारात्मक विकास में भी जा सकते हैं, जबकि कृषि विकास में एक स्थायित्व है, मजबूती है और ये मजबूती रीढ़ की हड्डी

जैसी है। इस साल पेश की गई आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट के मुताबिक साल 2021–22 में देश की जीडीपी में कृषि की हिस्सेदारी 20.2 फीसदी थी, जो 2021–22 में 18.8 फीसदी दर्ज की गई है। कृषि विकास दर में लगातार दो वित्तीय वर्ष में ऊपर की ओर जाता ये ग्राफ एक महत्वपूर्ण संकेत है।

जीडीपी में कृषि क्षेत्र का करीब 20 फीसदी का योगदान करीब दो दशक पहले देखा गया था। साल 2000 से लेकर 2003 तक लगातार दो वित्तीय वर्ष में सूखा पड़ा था, जिससे कृषि विकास दर में भारी गिरावट हुई थी। इसके बाद 2003–04 में 9 फीसदी से ज्यादा की वृद्धि के साथ कृषि विकास दर वापस पटरी पर लौटी थी। 2003–04 में जीडीपी में कृषि की हिस्सेदारी 20.7 फीसदी थी, जिसके बाद से अब जाकर ये 19.9 फीसदी पहुंची है।

5 ट्रिलियन इकोनॉमी का चुनौतीपूर्ण लक्ष्य हासिल करने के लिए कृषि विकास दर का ग्राफ लगातार ऊपर की ओर चढ़ना जरूरी है। अगर हम 2014 की एसएएस रिपोर्ट (सिचुएशन असेसमेंट सर्वे) और मौजूदा रिपोर्ट की तुलना करें तो फसल उत्पादन से शुद्ध प्राप्तियों में 22.6 फीसदी की वृद्धि देखते हैं। कृषि क्षेत्र का ये विकास सिर्फ फसल उत्पादन पर निर्भरता का नतीजा नहीं है, पिछले एक दशक में पशुपालन, डेयरी, मछलीपालन जैसे कृषि संबद्ध क्षेत्रों में सक्रियता बढ़ने से सकारात्मक आंकड़े सामने आने शुरू हुए हैं।

भारतीय कृषि की विशेषताएँ

1) खाद्यान्न की प्रधानता– [illegible] की कृषि खाद्यान्न प्रधान है क्योंकि विशाल जनसंख्या के लिए भोजन जुटाना मुख्य लक्ष्य है। कुल कृषि उत्पादन में 80% भाग खाद्यान्नों का होता है।

2) फसलों की विविधता– [illegible] में जलवायु विषमता के कारण कई प्रकार की फसलें ली जाती हैं। एक ही खेत में एक साथ अनेक फसलें बोयी जाती हैं।

3) कृषि का पुराना ढंग– [illegible] में आज भी कृषि पुराने ढंग से की जाती है। मशीनों का प्रयोग नगण्य है, खाद का प्रयोग कम होती है और कृषक नई वैज्ञानिक विधियों को अपनाने में हिचकते हैं क्योंकि अधिकांश भारतीय ग्रामीण किसान निर्धन व अशिक्षित हैं।

4) कृषि मानसून का जुआ– [illegible]ीय कृषि पूर्णतरू मानसून जलवायु पर आधारित है। मानसून की अनिश्चितता के कारण कृषि प्रभावित होती है। हमारे देश की जलवायु व मिट्टी वर्ष भर कृषि कार्य के लिए उपयुक्त है, लेकिन वर्षा न होने पर एक ही फसल मिलना कठिन हो जाता है।

5) कृषि जोत का छोटा आकार– [illegible] में कृषि जोत या खेतों का आकार छोटा है। देश में कृषि योग्य भूमि [illegible]क, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक आदि

कारणों से छोटे–छोटे खेतों में बँटी हुई है। इस पर आधुनिक ढंग से कृषि करना कठिन है।

6) उत्पादन कम होना– भारत में अधिकांश कृषि जीवन निर्वाह मूलक है। गहन कृषि का अभाव है। फलतः कृषि योग्य भूमि की पर्याप्तता के बावजूद फसलों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन यहाँ अत्यन्त कम है।

भारत की कृषि समस्याएं

हाल ही में, भारत में किसानो द्वारा कई जगह विरोध दर्ज किया गया तथा कई जगह इसने आन्दोलन का रूप ले लिया। इन घटनाओं ने भारत में कृषि संबंधी समस्याओं को लेकर एक नयी बहस शुरू की है। हमने यहाँ भारतीय कृषि से जुड़ी लगभग सभी समस्याओं का विश्लेषण किया है।

भारत ने गांधी जी के चंपारण विरोध की 100 वीं वर्षगांठ मनाई थी, जो बिहार के चंपारण जिले के नील की खेती करने वाले किसानों के लिए किया गया था। दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद यह गाँधी जी का पहला सामूहिक राजनीतिक विरोध था। पचास वर्ष पहले 1960 में पश्चिम बंगाल में नक्सलबारी के किसानों ने जमींदारों के खिलाफ हिंसक विद्रोह शुरू किया था। गलत आर्थिक नीतियों के कारण हुए कई किसान आन्दोलनों (विद्रोह) का वर्णन आधुनिक भारतीय इतिहास में किया गया है। पिछले तीन दशकों से भारत में कृषि व्यवस्था सबसे अधिक संकट ग्रस्त स्थिति से गुजर रही है। लगातार 1986–87 और 1987–88 के सूखे के दौरान कम बारिश के कारण भारत को इस तरह का संकट झेलना पड़ा एवं 2014 में भारत को खराब मानसून का सामना करना पड़ा जिसने कृषि के संकट को और भी बढ़ा दिया था। भारत में लगभग 65 % कृषि बारिश पर निर्भर करती है और आधे से अधिक क्षेत्र में अत्यधिक बारिश या अत्यल्प बारिश हमेशा परेशानी का कारण बनती है। हाल के महीनों में आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और पंजाब जैसे विभिन्न राज्यों के किसानों के नेतृत्व में कई विरोध प्रदर्शन हुए हैं। अतः ऐसी परिस्थिति में उन महत्वपूर्ण कारकों को जानना आवश्यक हो जाता है जिसके कारण भारतीय कृषि में गंभीर समस्याएं पैदा होती रहती हैं।

1. ग्रामीण–शहरी विभाजन

भारत में अधिकांश खेती देश के ग्रामीण हिस्सों में की जाती है. हालांकि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में सुधार हुआ है लेकिन भारत के ग्रामीण और शहरी अंतर के पुल को कम करने के लिए यह पर्याप्त नहीं है.ग्रामीण मासिक प्रति व्यक्ति व्यय 1993–94 और 2004–05 के बीच 0.8% की एक अप्रत्यक्ष वार्षिक दर से बढ़ी, लेकिन 2004–05 और 2011–12 के बीच इसमें 3.3% की तीव्र गति से वृद्धि हुई (निरंतर 1987–88 कीमतों पर).

लेकिन शहरी आय की वृद्धि दर तेज हो गई है और ग्रामीण और शहरी उपभोग के बीच का अंतर इस अवधि से थोड़ी सा बढ़ गया है. इस प्रकार ग्रामीण आय में बढ़ोतरी और ग्रामीण गरीबी दर गिरने के बावजूद भी खेती के अंतर्गत असमानता केवल ग्रामीण इलाकों में पाया जाता है.

लोकनीति द्वारा 2014 में किये गए एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 40: किसान अपनी आर्थिक स्थिति से पूरी तरह से असंतुष्ट थे. यह आंकड़ा पूर्वी भारत में 60: से अधिक था. 70: से अधिक किसानों का यह मानना है कि शहरी जीवन ग्रामीण जीवन से बेहतर है.

2. कृषि में निवेश का अभाव

कृषि क्षेत्रों में नए निवेश में कमी हुई है. कई अर्थशास्त्रियों ने इसके लिए कई कारण बताए हैं और कई लोग मानते हैं कि कृषि में अस्थिरता का मूल कारण भूमि असमानता है. यह तर्क दिया जाता है कि खेती की व्यवस्था के तहत मकान मालिक–किरायेदार आदि द्वार बाद के सभी उत्पादन खर्चों को वहन किया जाता है और किरायेदारों में निवेश योग्य संसाधनों की कमी होती है जो कृषि उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं.

कृषि में निवेश करना अन्य वेंचरों में निवेश की तुलना में कम लाभदायक होता है.अन्य क्षेत्रों में निवेश कृषि की बजाय उच्च रिटर्न देने वाले सिद्ध होते हैं.परिणाम स्वरुप कृषि में निवेश में कमी हुई है और इस क्षेत्र का नुकसान हुआ है.

3. प्रभावी नीतियों का अभाव

भारत में कृषि से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए सरकारों द्वारा किए गए कई प्रयासों के बावजूद भारत में कोई सुसंगत कृषि नीति नहीं है.भारतीय कृषि में स्थिरता और उत्पादकता में वृद्धि के मुद्दे को लेकर एक सुसंगत कृषि नीति पर एक व्यापक समझौता की आवश्यकता है.

राजनैतिक और आर्थिक दोनों कारणों से पिछले कुछ दशकों में भारतीय राज्य द्वारा व्यापक आधार पर कृषि कार्यों की उपेक्षा की गयी है. पिछली शताब्दी के उत्तरार्ध में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत की तरह अधिकांश विकासशील देशों ने अपने कृषि क्षेत्र के संरचनात्मक विकास को नजरअंदाज किया है. तुलनात्मक रूप से भारत ने अपने कृषि विकास के वनिस्पत अपने औद्योगिक विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है.

4. प्राकृतिक संसाधनों के सही उपयोग का अभाव

जब खेती की बात आती है तो इस क्षेत्र के लिए भारत ने अपने प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित और विकसित नहीं किया है. मुख्य रूप से सिंचाई से संबंधित संसाधनों को संरक्षित करने के लिए बहुत कम प्रयास किया गया है. महाराष्ट्र और

अन्य जगहों में प्रवास की कहानियों और गंभीर जल संकट से स्थिति की गंभीरता स्वतः स्पष्ट हो जाती है.

5. विमुद्रीकरण का प्रभाव

कृषि में तनाव की घटनाओं का दिखाई देने का मुख्य कारण विमुद्रीकरण है. इस वित्तीय वर्ष में कृषि उत्पादों में कमी आई थी. नकद कृषि क्षेत्र में लेनदेन का प्राथमिक तरीका है जो भारत के कुल उत्पादन में 15: योगदान देता है. इनपुट–आउटपुट चौनलों के साथ–साथ मूल्य और आउटपुट फीडबैक प्रभावों से कृषि प्रभावित होती है. बिक्री, परिवहन, विपणन और थोक केंद्रों या मंडियों के लिए तैयार माल का वितरण मुख्य रूप से नकद लेन देन पर ही आधारित है.

इसके अतिरिक्त विमुद्रीकरण के कारण आपूर्ति की श्रृंखला में गिरावट, व्यापार के बकाया को नकदी के बजाय कम राजस्व के रूप में दिखाया जाना और सीमित पहुंच वाले बैंक खातों में जमा करने जैसे अवरोधों की वजह से कृषि क्षेत्र प्रभावित होता है.

6. कीमतों पर अत्यधिक हस्तक्षेप

भारत में मूल्य नियंत्रण पर कई प्रतिबंध हैं. उन प्रतिबंधों से भारतीय कृषि को मुक्त किया जाना चाहिए.

इसके अलावा अस्थिर कीमतों, कृषि उत्पादों के आंदोलन पर प्रतिबंध और वैश्विक बाजारों तक पहुंच की कमी के कारण इस क्षेत्र में वाणिज्यिक जोखिमों को लेकर कुछ सुधारात्मक उपायों को लागू करने की आवश्यकता है.

कई विशेषज्ञों का मानना है कि इस संकट का समाधान राज्य नियंत्रण की व्यवस्था को खत्म करने से कुछ हद तक हो सकता है.

7. सिंचाई सुविधाएं

भारत के कुल शुद्ध सिंचाई क्षेत्र में सरकारी आंकड़े में शायद ही कभी कोई वृद्धि दिखाई गयी हो. कुल सिंचित क्षेत्र लगभग 63 मिलियन हेक्टेयर है और देश में बोया हुआ कुल क्षेत्रफल का केवल 45 प्रतिशत ही है.

हाल के वर्षों में असम, मध्य प्रदेश, जम्मू और कश्मीर और राजस्थान में सिंचाई की सुविधाओं में कुछ सुधार हुआ है. लेकिन 2004–05 में प्रमुख, मध्यम और लघु सिंचाई में वास्तविक सार्वजनिक निवेश में 2,35 अरब रूपये से लेकर 2013–14 में 30 9 बिलियन तक भारी वृद्धि के कारण यह नगण्य लगता है.भारत ने प्रमुख परियोजनाओं के लिए अपने पूंजीगत व्यय में में 3.5 गुना तक वृद्धि की है, जबकि छोटे सिंचाई में निवेश केवल 2.5 गुना बढ़ा है.

सिंचित क्षेत्र में बनी स्थिरता से इस क्षेत्र में किये जाने वाले निवेश और इसकी दक्षता पर सवाल उठते हैं. सिंचाई क्षेत्र में विकास के लिए इन बातों पर गौर करना जरुरी है.

सरकारी आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि मध्यम और बड़े सिंचाई परियोजनाओं की तुलना में छोटे सिंचाई परियोजनाओं के लिए सार्वजनिक व्यय से बनाई गई सिंचाई क्षमता का अनुपात अधिक है. छोटी सिंचाई परियोजनाओं पर नीति निर्माताओं द्वारा कम ध्यान दिया गया है. लेकिन वास्तविकता यह है कि कुओं, बाढ़ नियंत्रण और सूखे की कमी के रिचार्जिंग के लिए छोटे सिंचाई परियोजनाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं.

8. सुस्त उर्वरक उद्योग

पिछले 15 वर्षों में भारत में उर्वरक क्षेत्र के अंतर्गत कोई निवेश नहीं हुआ है. कुछ यूरिया निर्माता भी अपना शटर डाउन करने की गंभीरता से सोच रहे हैं. ऐसी स्थिति उस समय है जब दुनिया में उर्वरकों की मांग के अनुसार सबसे अधिक उत्पादन भारत में होता है. लेकिन आज कल निर्यात की बजाय आयात दिनों दिन बढ़ता जा रहा है. उत्पादन काफी हद तक स्थिर बना हुआ है.

इसका मुख्य कारण भारतीय उर्वरक नीति में व्याप्त समस्याएं हैं.इस उद्योग में अवैतनिक उर्वरक सब्सिडी बिल 40,000 करोड़ रुपये से अधिक तक पहुंच गया है एवं इसे इस वित्त वर्ष के अंत तक 48,000 करोड़ रुपये तक पहुंचने की संभावना है. उर्वरक सब्सिडी के लिए करीब 73,000 करोड़ रुपये के बजटीय आवंटन का वास्तविकता से कोई लेना देना नहीं है. वर्ष दर वर्ष वकाया की राशि बढ़ती ही जा रही है. इसके अतिरिक्त भारत उपभोग के लिए लगभग एक–तिहाई नाइट्रोजन का आयात करता है, जबकि तुलनात्मक रूप से 2000–01 में इसके 10 प्रतिशत से भी कम आयात करता था.

9. मानसून पर निर्भरता

भारत में अधिकांश कृषि क्षेत्र असिंचित होने के कारण कृषि क्षेत्र में समग्र विकास के लिए मानसून महत्वपूर्ण है. ऐसे मामले में मानसून पर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की निर्भरता को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है.

बीज बोने का पैटर्न हमेशा उस क्षेत्र के मॉनसून पर निर्धारित होता है. खराब मॉनसून के कारण खेती पर बहुत बुरा असर पड़ता है और किसानों को बहुत भारी नुकसान उठाना पड़ता है. ऐसी ही स्थिति खरीफ फसलों के उत्पादन और उपज में भी उत्पन्न होती है. अधिकांश कृषि राज्यों में मॉनसून पर निर्भरता के कारण खरीफ फसलों का उत्पादन किसानों को बिना किसी फायदे के करना पड़ता है.

10. किसान उत्पादक संगठनों की अक्षमता

भारत में किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को मजबूत किया जाना चाहिए. क्या छोटे और सीमान्त किसान एफपीओ से लाभान्वित हो रहे हैं या नहीं इस मुद्दे पर विशेष ध्यान देना चाहिए. एफपीओएस द्वारा दूध सहकारी समितियों से सबक सीखा जाना चाहिए. मूल्य श्रृंखलाओं के विकास के लिए कमोडिटी–विशिष्ट एफपीओ

को प्रोत्साहन दिया जा सकता है. उदाहरण स्वरुप दालों के लिए एफपीओ बड़े पैमाने पर विकसित किए जा सकते हैं

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दत्त एंड सुंदरम "भारतीय अर्थव्यवस्था" विकास पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. चौहान "भारत का भूगोल" रस्तोगी प्रकाषन, मेरठ।
3. डॉ. अल्का गौतम "भारत का वृहद भूगोल" षारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009।
4. प्रो. आर. सी. तिवारी "भारत का भूगोल" प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. माधुर एवं नारायण "संसाधन भूगोल" वसुन्धरा प्रकाषन, गोरखपुर।
6. डॉ. चतुर्भुज मामोरिया, डॉ. बी.एल.शर्मा "संसाधन एवं पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
7. अरविन्द कुमार, ''भारत का भूगोल'' पेरियार प्रकाशन, पटना।
8. डॉ. प्रमिला कुमार, डॉ. श्रीकमल शर्मा, ''मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2010।
9. एस.डी. मौर्य ''संसाधन भूगोल'' इलाहबाद पुस्तक भवन, इलाहबाद।
10. हुसैन माजिद, ''भारत का भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
11. झामोरिया, डॉ. चतुर्भुज, ''भारत का भूगोल'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
12. खुल्लर डी.आर., ''भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
13. कौशिक एस.डी. ''संसाधन भूगोल'' प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद।
14. सिसौदिया डॉ. एम.एस. ''संसाधन भूगोल'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।

अध्याय - 3
भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्य फसल मक्का का योगदान

लेखक

जयगोविंद सनोडिया

सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय,
बिछुवा, छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश, भारत

अध्याय - 3

भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्य फसल मक्का का योगदान

जयगोविंद सनोडिया

सारांश

मक्का रकबे के संदर्भ में दुनिया की दूसरी सबसे महत्त्वपूर्ण अनाज की फसल है और इसे 'अनाज की रानी' (Queen of Cereals) कहा जाता है। भारत में कम–से–कम 15 मिलियन किसान मक्के की खेती करते हैं और इससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 650 मिलियन से अधिक के कार्य–दिवसों का सृजन होता है। कुल कृषिगत उत्पादन में मक्का का हिस्सा 2% है। मक्का अन्य अनाजों की तुलना में पानी की कम मांग करता है और यह एक C4 फसल है। C4 पौधे, वे पौधे होते हैं जो कार्बन–डाइऑक्साइड स्थिरीकरण के क्रम में प्रथम उत्पाद 4–कार्बन परमाणु युक्त यौगिक तथा ऑक्सैलो–ऐसीटिक अम्ल का निर्माण करते हैं। इससे प्रकाश संश्लेषण अधिक दक्ष तरीके से होता है। इसके अतिरिक्त मक्का एक 'डे नियुट्रल' (Day Neutral) फसल है। यह कम अवधि में प्रति हेक्टेयर अधिक उपज देता है और इसे किसी भी मौसम में उगाया जा सकता है। इसे खाद्यान और चारे दोनों के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है। इसलिये किसानों की आजीविका और आय सुरक्षा में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

शब्दावली: मक्का, कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था, कृषि–उत्पादन, कृषि संसाधन, संरक्षण।

प्रस्तावना

मक्का (वानस्पतिक नाम: *Zea maize*) एक प्रमुख खाद्य फसल हैं, यह ग्रेमिनी या पोएसी कुल के अंतर्गत आता है। यह एकवर्षीय पौधा है। जो मोटे अनाजो की श्रेणी में आता है। इसे भुट्टे की शक्ल में भी खाया जाता है। मक्का के दाने एकबीजीय होते है। मक्का की फसल में नर भाग पहले परिपक्व हो जााता है।

विभिन्न कृषि–जलवायु स्थितियों के अंतर्गत सबसे बहुमुखी उभरती हुई व्यापक अनुकूल फसल में से एक है। वैश्विक स्तर पर, मक्का को अनाजों में प्रमुख माना जाना जाता है क्योंकि इसमें अनाजों के बीच उच्च आनुवांशिक उपज क्षमता होती है। इसकी खेती लगभग 165 देशों में लगभग 190 मीटर हेक्टेयर पर की जाती है जिसमें मिट्टी, जलवायु, जैव विविधता और प्रबंधन प्रथाओं की व्यापक विविधता है जिसका वैश्विक अनाज उत्पादन में 39 प्रतिशत है। लगभग 36 प्रतिशत योगदान के

साथ संयुक्त राज्य अमरीका (यू.एस.ए) मक्का का सबसे बड़ा उत्पादक है। मक्का अमरीकी अर्थव्यवस्था का चालक है। भारत में मक्का पूरे वर्ष उत्पादित किया जाता है। मक्का, सीजन में खेती के अंतर्गत 85 प्रतिशत क्षेत्र के साथ एक प्रमुख खरीफ फसल है। भारत में चावल और गेहूं के बाद मक्का तीसरी सबसे महत्वपूर्ण अनाज की फसल है। यह देश में कुल अनाज उत्पादन का लगभग 10 प्रतिशत है। पशुओं के लिए मानव और गुणवत्ता खाद्य के लिए मुख्य भोजन के अतिरिक्त मक्का हजारों औद्योगिक उत्पादों के लिए एक मूल कच्चे माल के रूप में कार्य करता है जिसमें स्टार्च, तेल, प्रोटीन, मादक पेय पदार्थ, खाद्य स्वीटर्स, फार्मास्यूटिकल, कॉस्मेटिक, फिल्म, कपड़ा, गम, पैकेज और पेपर उद्योग आदि शामिल हैं।

भारत के अधिकांश मैदानी भागों से लेकर 2700 मीटर उँचाई वाले पहाडी क्षेत्रों तक मक्का सफलतापूर्वक उगाया जाता है। इसे सभी प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है तथा बलुई, दोमट मिट्टी मक्का की खेती के लिये बेहतर समझी जाती है। मक्का एक ऐसा खाद्यान्न है जो मोटे अनाज की श्रेणी में आता तो है परंतु इसकी पैदावार पिछले दशक में भारत में एक महत्त्वपूर्ण फसल के रूप में मोड़ ले चुकी है क्योंकि यह फसल सभी मोटे व प्रमुख खाद्यानो की बढ़ोत्तरी दर में सबसे अग्रणी है। आज जब गेहूँ और धान मे उपज बढ़ाना कठिन होता जा रहा है, मक्का पैदावार के नये मानक प्रस्तुत कर रही है जो इस समय बढ़कर 5.98 तक पहुँच चुका है।

यह फसल भारत की भूमि पर 1600 ई० के अन्त में ही पैदा करना शुरू की गई और आज भारत संसार के प्रमुख उत्पादक देशों में शामिल है। जितनी प्रकार की मक्का भारत में उत्पन्न की जाती है, शायद ही किसी अन्य देश में उतनी प्रकार की मक्का उत्पादित की जा रही है। हॉ यह बात और है कि भारत मक्का के उपयोगो मे काफी पिछडा हुआ है। जबकि अमरीका में यह एक पूर्णतया औद्योगिक फसल के रूप में उत्पादित की जाती है और इससे विविध औद्योगिक पदार्थ बनाऐ जाते है। भारत में मक्का का महत्त्व एक केवल खाद्यान्न की फसल के रूप मे जाना जाता है।

सयुक्त राज्य अमरीका मे मक्का का अधिकतम उपयोग स्टार्च बनाने के लिये किया जाता है।

मक्का उत्पादन का विश्व वितरण: संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, ब्राजील, मैक्सिको, भारत।

संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व में मक्का की कुल फसल का 35 प्रतिशत से अधिक उत्पादन करता है, जबकि भारत की हिस्सेदारी सिर्फ 2 प्रतिशत है। मक्का के उत्पादन में चीन, ब्राजील, मैक्सिको, अर्जेंटीना, अहम् भूमिका निभा रहे हैं। भारत में कर्नाटक 16 प्रतिशत मक्का उत्पादन करता है। इसके बाद तेलंगाना और बिहार का नंबर आता है। यह भी उल्लेखनीय है कि खरीफ में 71 प्रतिशत उत्पादन होता है, जबकि शेष रबी की फसलें है। उत्पादकता से हिसाब लगाए तो अभी भी विश्व की तुलना में औसत से 50 प्रतिशत ही भारत में उत्पादकता ली जा रही है। विश्व में 3 प्रतिशत उत्पादन प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। इसकी खपत विश्व स्तर पर पशुआहार और औद्योगिक रूप से अधिक मात्रा में होती है।

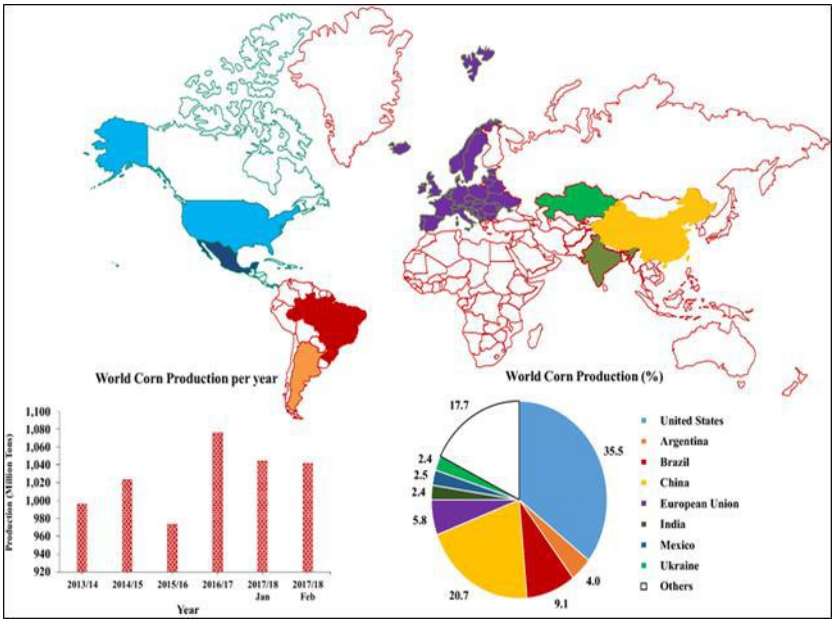

भारत में भी 60 प्रतिशत मुर्गी व अन्य पशुआहार में उपयोग की जाती है। भोजन में केवल 20 प्रतिशत मक्का का उपयोग होता है। गैर खाद्य औद्योगिक उत्पाद बनाने में 20 प्रतिशत की खपत हो रही है। इसमें से 14 प्रतिशत स्टार्च बनाने में उपयोग होने लगी है। उत्पादन में वृद्धि का लाभ इस वर्ष आदिवासियों को मिल रहा है। उन्हीं का मुख्य आहार है, जो अभी तक सस्ता है। पिछले कुछ वर्षों से बिहार, कर्नाटक किसानों के बाद म.प्र., उ.प्र. राजस्थान, आंध्र, तमिलनाडु में मक्का का उत्पादन बड़ी

मात्रा में होने लगा है। राजस्थान, म.प्र. आंध्र, तमिलनाडु आदि में खरीफ एवं बिहार और उ.प्र. में रबी में मक्का की फसल होती है। पिछले वर्षों में मक्का की आपूर्ति में बिहार की अति महत्वपूर्ण् भूमिका रहीं है। इस वर्ष बिहार के अलावा उप्र में जोरदार फसल होने से व बंगाल, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा को आपूर्ति इन दोनों राज्यों से हो रही है। वर्तमान में स्थिति यह है कि पूरे देश में मक्का के भाव 1100 रुपए के आसपास चल रहे हैं। खरीफ में इस बार म.प्र. में रिकार्ड फसल हुई है।

नर्मदा बांध बंध जाने के बाद खंडवा, खरगोन, बुरहानपुर, टिमरनी, हरदा में खरीफ के साथ रबी की फसल भी ली जाने लगी है इस बार खरीफ में सोयाबीन के स्थान पर छिंदवाड़ा और भोपाल पट्टी में मक्का की बुआई को प्राथमिकता दी गई है। इस वजह से रिकार्ड उत्पादन की आशा है।

40 फीसदी स्टार्च का निर्यात

मक्का के भाव टूटने के बाद स्टॉकिस्ट सक्रिय हो गए हैं। स्टार्च फैक्टरियों की भी अच्छी मांग है। कुल उत्पादन का 40 प्रतिशत स्टार्च निर्यात में जा रहा है। निर्यात पड़तल भी अच्छी बैठ रही है। सूखी मक्का आने के बाद भारत से खाड़ी देशों को निर्यात होने की संभावना है। अगले कुछ दिनों के बाद मक्का के भावों में सुधार आने की आशा व्यक्त की जा रही है। मक्का का समर्थन भाव 1425 रुपए क्विटंल है। देखना यह है कि मक्का उत्पादन किसानों को भावांतर योजना का कितना लाभ मिलता है। अगले वर्ष बोवनी योजना में मिले लाभ– हानि का आधार बन सकती है।

मक्का में मंदी का कारण

पिछले रबी सीजन में बिहार के साथ उप्र में भी मक्का का उत्पादन अनुमान से काफी अधिक हुआ है। सामान्यतरू उप्र की मक्का फसल आने के 1.5 से 2 माह बाद समाप्त हो जाती है। इस वर्ष यह फसल अभी तक किसानों के पास शेष है। पं. बंगाल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और पूर्वी भारत को अभी तक आपूर्ति की जा रही है। इसके अलावा कर्नाटक, महाराष्ट्र, म.प्र. की फसल 15–20 दिन के अंतर से आती है। इस बार इन राज्यों में एक साथ आ गई। इससे आपूर्ति सरल बन गई। यूपी, बिहार की मक्का अभी तक 1200 रुपए बिल्टी में बेची जा रही है।

भारत में मक्का के प्रमुख उत्पादक क्षेत्रः

कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु, तेलंगाना, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश – भारत में मक्का के प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। भारत में मक्का की खेती जिन राज्यों में व्यापक रूप से की जाती है वे हैं– आन्ध्र प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, राजस्थान, उत्तर प्रदेश इत्यादि। इनमे से राजस्थान में मक्का का सर्वाधिक क्षेत्रफल है व कर्नाटक में सर्वाधिक उत्पादन होता है। परन्तु मक्का का महत्व जम्मू कश्मीर, हिमाचल, पूर्वोत्तर राज्यों, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, महाराष्ट्र, गुजरात व झारखण्ड में भी काफी अधिक है।

भारत मे 7 प्रकार के मक्का पाए जाते है – देशी, संकर, संकुल

1. पॉप कॉर्न (जिआ मेज ईवर्टा)
2. स्वीट कॉर्न (जिआ मेज सेकेराटा)
3. फ्लिंट कॉर्न (जिआ मेज ईन्डूराटा)
4. वैक्सि कॉर्न (जिआ मेज सेकेराटा)
5. पॉड कॉर्न (जिआ मेज ट्यूनीकाटा)
6. फ्लोर कॉर्न (जिआ मेज ईमाईलेशिया)
7. डेंट कॉर्न (जिआ मेज ईन्डेनटाटा)

बुआई का समयः मार्च अप्रैल (जायद) जून के आरम्भ में। सितंबर–अक्टूबर

बुवाई की विधिः पौधों की जड़ों को पर्याप्त नमी मिलती रहे और जल भराव से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए यह उचित है कि फसल को मेड़ों पर बोया जाये। बुवाई पूर्वी–पश्चिमी दिशा की मेड़ों के दक्षिणी शग में करनी चाहिए। बीज को उचित दूरी पर लगाना चाहिए। आजकल विभिन्न बीज माप प्रणालियों के प्लान्टर उपलब्ध हैं, किन्तु एन्कलाइंड प्लेट, कपिंग या रोलर टाइप के सीट मीटरिगं प्रणाली सर्वोत्तम पायी गयी है। प्लांटर का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि इससे एक ही बार में बीज व उर्वरकों को उचित स्थान पर डालने में मदद मिलती है।चारे के लिए बुआई सीडड्रिल द्वारा करनी चहिए। मेड़ों पर बुआई करते समय पीछे की ओर चलना चाहिए।

मेड़ (रिज) पर मक्का बोने के लाभ

- बीज, खाद व पानी की मात्रा में कमी एवम् बचत ।
- उत्पादन लागत में कमी ।
- फसल को पकने से पूर्व गिरने से बचाने के लिए और अधिक उत्पादन के लिए ।
- क्षारीय व लवणीय मृदाओं में अधिक पैदावार ली जा सकती है ।
- इस विधि से मक्का उत्पादन करने पर न सिर्फ नालियों का प्रयोग सिंचाई के लिए किया जाता है। अपितु अधिक पानी (वर्षा ऋतु में) की निकासी के लिये भी किया जा सकता है।
- छोटे पौधों में मशीन द्वारा निराई–गुड़ाई की जा सकती है।
- अवांछित पौधों को निकालने में आसानी रहती है।

मक्का उत्पादन के लिए भौगोलिक कारकः मक्का मुख्य रूप से वर्षा–आधारित खरीफ फसल है जिसे मानसून के आगमन से पहले बोया जाता है। तमिलनाडु में

यह एक रबी फसल है जिसे सितंबर और अक्टूबर में बारिश होने से पहले बोया जाता है।

रुक–रुक कर होने वाली 50–100 सेंटीमीटर तक की वर्षा मक्के की कृषि के लिये अनुकूल होती है।

100 सेमी. से अधिक वर्षा और वर्षा ऋतु में सूखे की लंबी अवधि मक्के की फसल के लिये नुकसानदेह है। वर्षा के बाद धूप मक्का के लिये बहुत उपयोगी है।

पंजाब और कर्नाटक जैसे कम वर्षा वाले क्षेत्रों में इसकी सिंचाई द्वारा खेती की जाती है।

यह फसल आम तौर पर 21 डिग्री सेल्सियस से 27 डिग्री सेल्सियस के तापमान में अच्छी तरह से बढती है। हालाँकि यह 35 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान सहन कर सकती है।

पाला अथवा फ्रॉस्ट (Frost) मक्का के लिये हानिकारक है और यह फसल केवल उन क्षेत्रों में उगाई जाती है, जहाँ एक वर्ष में लगभग साढ़े चार महीने पालारहित होते हैं।

- उत्पादक कटिबन्ध–उपोष्ण कटिबन्ध
- तापमान–25 से 30 सें. ग्रे.
- वर्षा–60 से 120 सें. मी.
- मिट्टी–चिकनी, दोमट व कांप मिट्टी
- खाद–नाइट्रोजन, सल्फेट आदि

5वां भारतीय मक्का सम्मेलन, 2018

20–21 मार्च 2018 को फिक्की द्वारा पाँचवें भारतीय मक्का सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर यह रेखांकित किया गया कि पिछले कुछ वर्षों में मक्का उत्पादन में काफी वृद्धि दर्ज की गई है, जो रकबे के साथ ही उत्पादकता में बढ़ोतरी की वजह से संभव हुआ है। जिसके महत्त्वपूर्ण बिंदु नीचे दिए गए है–

- 1950–51 में भारत में सिर्फ 1.73 मीट्रिक टन (MT) मक्का का उत्पादन हुआ था, जो 2016–17 में बढ़कर 25.89 MT हो गया और 2017–18 में इसके बढ़कर 27 MT होने का अनुमान है। भारत में मक्का की औसत उत्पादकता 2.43 टन प्रति हेक्टेयर है।
- भारत में गेहूँ और चावल के बाद मक्का तीसरा सबसे ज़्यादा पसंद किया जाने वाला खाद्यान्न है। चार राज्यों मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और राजस्थान की देश के कुल मक्का उत्पादन में आधी से ज़्यादा की हिस्सेदारी है।

- वर्तमान में भारत दुनिया के शीर्ष मक्का निर्यातक देशों में शामिल है। अमेरिका और चीन के बाद भारत मक्का का शीर्ष उत्पादक है। इसके बावजूद भारत की सिर्फ 25% जनसंख्या ही इसका खाद्य फसल के तौर पर इस्तेमाल करती है।
- वैश्विक स्तर पर खाद्यान्न की मांग और उपभोक्ताओं की खाद्य प्राथमिकताओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारत जैसे विकासशील देशों सहित अधिकांश विकसित देशों में मक्का को काफी पसंद किया जाता है।
- इस मौके पर फिक्की और प्राइसवाटरहाउस कूपर्स (PWC) द्वारा संयुक्त रूप से मक्का विजन 2022 भी जारी किया गया।
- भारत में मक्का के तहत सिर्फ 15% कृषि क्षेत्र ही सिंचित है। इसलिये मक्के की फसल के लिये पर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ देना आवश्यक है, जिससे मक्के का उत्पादन, उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार किया जा सके।
- भारत में मक्के के तहत लगभग आधा रकबा कर्नाटक, राजस्थान, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में केंद्रित है तथा बिहार सहित ये राज्य मक्के के कुल राष्ट्रीय उत्पादन का 2/3 हिस्सा उत्पादित करते हैं।
- हालाँकि, मक्का की राष्ट्रीय उत्पादकता वैश्विक मानकों से काफी कम है। भारत की मक्का की पैदावार ब्राजील (5.5 टन/हेक्टेयर), चीन (6 टन/हेक्टेयर) और अमेरिका (10.2 टन/हेक्टेयर) से काफी कम है।
- ICAR–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान (IIMR), लुधियाना को मक्का के उत्पादन, उत्पादकता और स्थायित्व में सुधार के उद्देश्य से बुनियादी, रणनीतिक और शोध का काम सौंपा गया है।
- सरकार कई माध्यम से आवश्यक वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर 28 राज्यों के 265 जिलों में मक्का उत्पादन को प्रोत्साहन दे रही है।
- 2015–16 से इस अभियान को केंद्र व राज्य सरकारों के बीच 60:40 और केंद्र व पूर्वोत्तर एवं 3 पर्वतीय राज्यों के बीच 90:10 की साझेदारी व्यवस्था के तहत लागू किया जा रहा है।

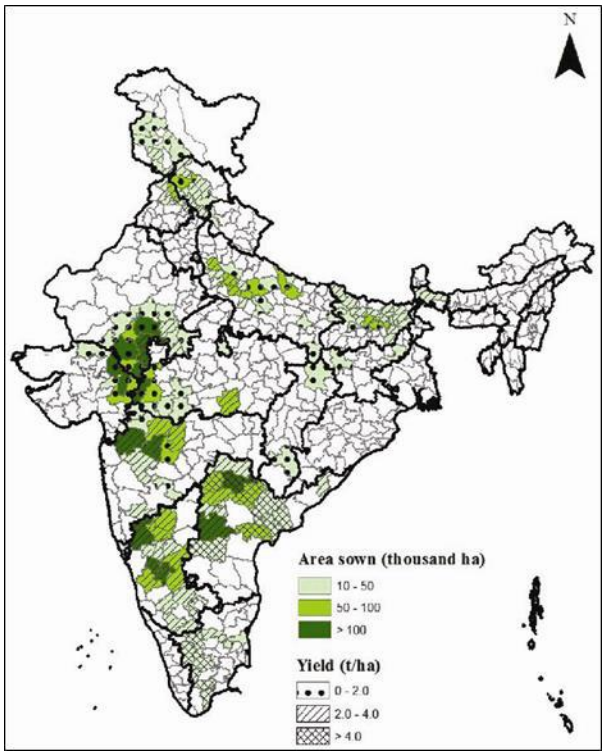

भारत में मक्का के प्रमुख जिलें

मध्यप्रदेश में उत्पादन

MP में मक्के का कुल 13 लाख हेक्टेयर के लगभग है। मक्का का इतना रकबा देश में किसी और जिले में नहीं है। औसत उत्पादन में जिला छिंदवाड़ा देश में नंबर वन है। वहीं बात की जाए देश की तो तमिलनाडु के बाद दूसरे नंबर पर सबसे ज्यादा मक्का उत्पादन होता है। भारत में मक्का का औसत उत्पादकता 21.46 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। अकेले छिंदवाड़ा की बात करें तो यहां 50.23 क्विंटल प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन है। तमिलनाडु की औसत उत्पादकता 65 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, लेकिन उत्पादन के मामले में वो पीछे है। खास बात ये है कि मक्का की किस्में इजाद करने में भी छिंदवाड़ा की अहम भूमिका रही है। यहां देश में सबसे ज्यादा सात प्रकार की कंपोजिट किस्में इजाद होती हैं।

रकबे में छिंदवाड़ा नंबर वनः छिंदवाड़ा को कॉर्न सिटी के नाम से जाना जाता है। मकई को विकसित करने के लिए आवश्यक उपयुक्त मिट्टी और जलवायु की उपस्थिति के कारण पूरे जिले में उगाया जाता है। उगाए गए मकई को दूसरे जिलों में भी निर्यात किया जाता है। सितंबर 2018 में, कॉर्न फेस्टिवल, जिले में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया था। यह त्यौहार 2 दिन का कार्यक्रम था जिसमें खाद्य

उद्योग, कपड़ा, फार्मास्यूटिकल्स, स्टार्च, ग्लूकोज, मिठास, जैव–प्लास्टिक, पशु आहार, बीज, उर्वरक और कीटनाशक, कृषि उपकरणों आदि से मकई आधारित उत्पादों वाली कंपनियों ने अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया और बातचीत की। खरीफ मौसम में छिंदवाड़ा का रकबा 2 लाख 45 हजार हेक्टेयर है।

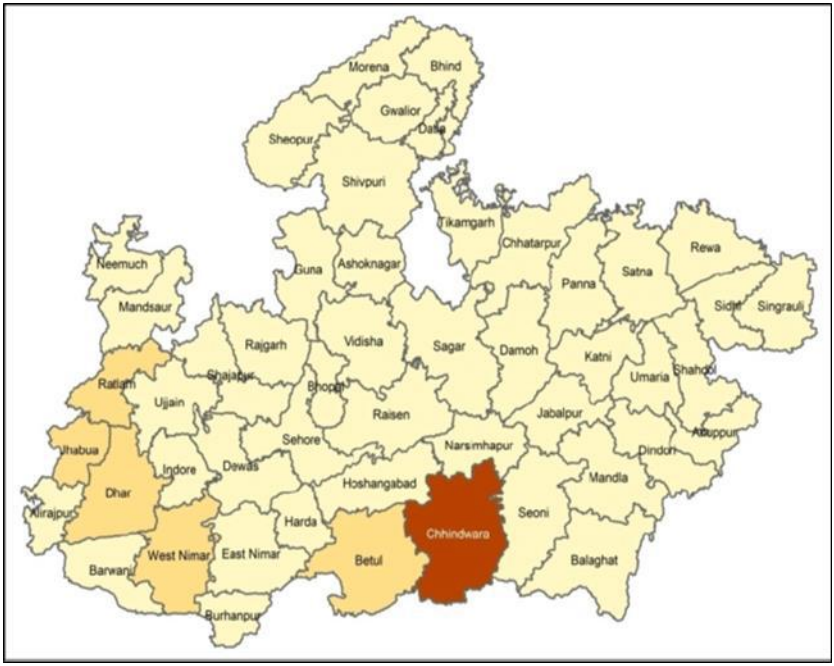

स्वीट कॉर्न की अलग पहचानः जिले में स्वीट कॉर्न के उत्पादन में भी किसान खास रुचि दिखा रहे हैं। करीब 2000 हेक्टेयर में किसान स्वीट कॉर्न का उत्पादन कर रहे हैं।खास बात यह है कि यहां का स्वीट कॉर्न अपनी गुणवत्ता के कारण विशेष पहचान बना चुका है। महाराष्ट्र समेत अन्य प्रदेशों में छिंदवाड़ा के स्वीट कॉर्न की मांग रहती है। छिंदवाड़ा की जलवायु मक्का उत्पादन के लिए अनुकूल है। अनुकूल वातावरण होने से यहां उत्पादकता और उत्पादन लगातार बढ़ रहा है। जो प्रदेश ही नहीं, देश में अव्वल है। इसके अलावा मेहनती व जागरूक किसानों की मेहनत की वजह से भी उत्पादन में इजाफा होता है। जिले के आंचलिक अनुसंधान केंद्र चंदनगांव में मक्का की संकुल प्रजातियों पर अनुसंधान कर नई किस्में तैयार की गई है। इसमें चंदन मक्का–1, चंदन मक्का–2, चंदन मक्का–3, जवाहर मक्का–8, जवाहर मक्का–12, जवाहर मक्का– 216 और जवाहर पॉप–11 की किस्में तैयार की गई हैं।

मक्का उत्पादकता बढ़ाने के लिए रणनीति

Case study: एक अध्ययन से पता चला है कि देश के कई जिले ऐसे हैं, जहां उत्पादन क्षेत्र अधिक होने के बावजूद प्रति हेक्टेयर उत्पादकता बेहद कम है। देश के 14 जिले ऐसे हैं, जहां एक लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में मक्के की खेती होती है। इन जिलों की उत्पादन क्षमता का सही उपयोग किया जाए तो मक्के की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी हो सकती है और पैदावार 2.3 मीट्रिक टन तक बढ़ सकती है। हैदराबाद स्थित केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान और अंतरराष्ट्रीय अर्ध–शुष्क ऊष्ण कटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान (इक्रीसैट) के ताजा अध्ययन में यह बात उभरकर आई है।

देश के ज्यादातर मक्का उत्पादक जिलों में पैदावार क्षमता से काफी कम है। शोधकर्ताओं ने देश के 146 मक्का उत्पादक जिलों को 26 एक समान कृषि जलवायु क्षेत्रों में बांटकर ऐसे क्षेत्रों की पहचान की है, जहां मक्का उत्पादन की क्षमता का भरपूर उपयोग अभी तक नहीं किया जा सका है।

इस अध्ययन से पता चला है कि देश के कई जिले ऐसे हैं, जहां उत्पादन क्षेत्र अधिक होने के बावजूद प्रति हेक्टेयर उत्पादकता बेहद कम है। राजस्थान के भीलवाड़ा, उदयपुर, बांसवाड़ा, गुजरात के सबारकांठा तथा पंचमहल और मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में उत्पादन क्षेत्र एक लाख हेक्टेयर से अधिक होने के बावजूद उत्पादकता दो टन प्रति हेक्टेयर से भी कम दर्ज की गई है। शोधकर्ताओं ने पाया है कि उपयुक्त जलवायु दशाओं के बावजूद मक्के की कम उत्पादकता के लिए उन्नत किस्म के बीजों और पोषक तत्वों का उपयोग न होना भी प्रमुख कारण है।

इस अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि मक्के के कम उत्पादकता वाले जिले उन्नत किस्म के बीजों के उपयोग में पिछड़े हुए हैं। इनमें जम्मू कश्मीर के डोडा, बारामूला,

कुपवाड़ा, बडगाम और उत्तर प्रदेश का गोंडा जिला शामिल है। वहीं, तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले में उन्नत किस्म के बीजों के उपयोग की दर सर्वाधिक 100 प्रतिशत दर्ज की गई है। जबकि, उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती और बहराइच समेत अन्य कई जिलों में पोषक तत्वों के उपयोग में कमी उत्पादकता दर की बढ़ोत्तरी में प्रमुख बाधा बनी हुई है।

अध्ययन के दौरान सिंचित क्षेत्र, फसल सत्र, मिट्टी की गुणवत्ता, पोषक तत्वों के उपयोग, मिट्टी की जल धारण क्षमता, आर्द्रता सूचकांक, उत्पादन क्षेत्र और उत्पादकता संबंधी तथ्यों को केंद्र में रखकर निष्कर्ष निकाले गए हैं। आर्द्रता सूचकांक के आधार पर ही जिलों का वर्गीकरण शुष्क, अर्ध्दशुष्क और आर्द्र दशाओं के अनुरूप किया गया है। प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में फॉस्फोरस, पोटैशियम और नाइट्रोजन जैसे पोषक तत्वों और उन्नत किस्म के बीजों के उपयोग को केंद्र में रखकर कम उत्पादकता वाले जिलों की तुलना अधिक उत्पादकता वाले जिलों से की गई है।अध्ययन में शामिल प्रत्येक जिले में कम से कम 10 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में मक्के की खेती होती है। इसलिए शोध के दौरान 10 से 50 हजार हेक्टेयर, 50 हजार से एक लाख हेक्टेयर और एक लाख हेक्टेयर से अधिक मक्का उत्पादन क्षेत्र के आधार पर इन जिलों को तीन समूहों में बांटा गया है। जिले में मक्के की उत्पादकता को भी अध्ययन में शामिल किया गया है, ताकि उत्पादन क्षेत्र और उत्पादकता की तुलना की जा सके।

अध्ययनकर्ताओं में शामिल बी.एम.के. राजू के अनुसार, "देश के अधिकतर क्षेत्रों में मक्के की खेती वर्षा आधारित है। वर्षा आश्रित क्षेत्रों में मक्का उत्पादन की दर 1. 9 टन प्रति हेक्टेयर और सिंचित क्षेत्रों में यह दर 3.5 टन प्रति हेक्टेयर है। कई वर्षा आश्रित मक्का उत्पादन क्षेत्रों में उत्पादकता क्षमता मौजूद होने के बावजूद इसक उपयोग अभी नहीं किया जा सका है। इस अध्ययन का उद्देश्य मक्के की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी की बाधाओं को दूर करना है।"

वैज्ञानिकों के अनुसार, मौजूदा उत्पादन के मुकाबले वर्ष 2050 तक भारत में मक्का उत्पादन की मांग पांच गुना तक बढ़ सकती है। फसल उत्पादन क्षेत्र में सीमित बढ़ोत्तरी के कारण भविष्य में मक्के की उत्पादकता बढ़ाना ही एकमात्र विकल्प हो सकता है। ऐसे में उन मक्का उत्पादक क्षेत्रों की पहचान जरूरी है, जहां उत्पादकता में बढ़ोत्तरी की संभावनाएं मौजूद हैं। बी.एम.के. राजू के मुताबिक, "मक्का उत्पादक जिलों को समरूप कृषि जलवायु वाले समूहों में बांटने का उद्देश्य विभिन्न जिलों में उत्पादकता में अंतर को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना है। ऐसा करके उत्पादन प्रक्रिया की खामियों को दूर करके, फसल प्रबंधन और उपयुक्त तकनीकों के चयन से उत्पादकता को बढ़ाया जा सकेगा।"

फसल क्षेत्र के मामले में गेहूं और चावल के बाद मक्का भारत की तीसरी प्रमुख खाद्यान्न फसल है। वर्ष 2013–14 में भारत में 2.68 टन प्रति हेक्टेयर की दर से 90 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में 24 लाख मीट्रिक टन से अधिक मक्का उत्पादन हुआ था।

अनुमान है कि वर्ष 2050 तक मक्का उत्पादन की मांग बढ़कर 121 मीट्रिक टन हो सकती है। तेजी से बढ़ते पॉल्ट्री उद्योग को इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार माना जा रहा है।

वर्षा, तापमान, हवा की गति और सिंचाई जैसे संसाधनों पर तो किसान का नियंत्रण नहीं होता। हालांकि, उन्नत बीजों के प्रयोग और पोषक तत्वों के उचित प्रबंधन जैसे कारकों पर किसानों का नियंत्रण रहता है। उत्पादन की सही रणनीति के उपयोग से उत्पादकता में वृद्धि करके भविष्य में मक्के की बढ़ती मांग को पूरा करने में मदद मिल सकती है।

शोधकर्ताओं का कहना यह भी है कि "इस शोध के नतीजों के आधार पर मक्के की कम उत्पादकता से ग्रस्त किसान और जिलों के कृषि विभाग अपने क्षेत्र की उत्पादकता क्षमता का पता लगा सकते हैं, जिससे सही रणनीति बनाकर पैदावार में सुधार किया जा सकेगा।" अध्ययनकर्ताओं में राजू के अलावा सी.ए. रामाराव, के.वी. राव, सी.एच. श्रीनिवास राव, जोसिली सैमुअल, ए.वी.एम. सुब्बा राव, एम. उस्मान, एम. श्रीनिवास राव, एन. रवि कुमार, आर. नागार्जुन कुमार, वी.वी. सुमंत कुमार, के. ए. गोपीनाथ और एन. स्वप्ना शामिल थे। यह अध्ययन शोध पत्रिका करंट साइंस में प्रकाशित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. दत्त एंड सुंदरम "भारतीय अर्थव्यवस्था" विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. चौहान "भारत का भूगोल" रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ।
3. डॉ. अल्का गौतम "भारत का वृहद भूगोल" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009।
4. प्रो. आर. सी. तिवारी "भारत का भूगोल" प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. माधुर एवं नारायण "संसाधन भूगोल" वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
6. डॉ. चतुर्भुज मामोरिया, डॉ. बी.एल.शर्मा "संसाधन एवं पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
7. अरविन्द कुमार, ''भारत का भूगोल'' पेरियार प्रकाशन, पटना।
8. डॉ. प्रमिला कुमार, डॉ. श्रीकमल शर्मा, ''मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2010।
9. एस.डी. मौर्य ''संसाधन भूगोल'' इलाहबाद पुस्तक भवन, इलाहबाद।
10. हुसैन माजिद, ''भारत का भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
11. झामोरिया, डॉ. चतुर्भुज, ''भारत का भूगोल'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।

12. खुल्लर डी.आर., ''भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
13. कौशिक एस.डी. ''संसाधन भूगोल'' प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद।
14. सिसौदिया डॉ. एम.एस. ''संसाधन भूगोल'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
15. https://chhindwara.nic.in/district

अध्याय - 4
महासागरीय संसाधनों का संरक्षण एवं प्रबंधन

लेखिका

मीना ठाकरे

सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, छिन्दवाड़ा, प्रदेश राज्य, भारत

अध्याय - 4

महासागरीय संसाधनों का संरक्षण एवं प्रबंधन

मीना ठाकरे

सारांशः

आने वाले भविष्य हेतु संसाधनों के भंडार के रूप में महासागर, महासागरीय खनिजों (धातु, तेल, प्राकृतिक गैस, रसायन आदि), भोजन (मछली, झींगे, झींगा मछली आदि) और ऊर्जा (लहरें, जल धारा, ज्वार आदि) जैसे संसाधनों का एक विशाल भंडार हैं। हम जहाजों और तेल टैंकरों में माल के परिवहन के लिए और मनोरंजन उद्देश्यों (समुद्र तट, पानी के खेल आदि) के लि, महासागरों का उपयोग करते रहे हैं। महासागर हमारी जीवन शक्ति हैं, हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं और पृथ्वी पर हमारे रहने के लि, उपयुक्त परिस्थितियों को बनाने के लि, जिम्मेदार हैं। हमारे वर्षा जल, पेयजल, मौसम प्रणाली और जलवायु सभी अंततः महासागरों द्वारा प्रदान और संतुलन में रखे जाते हैं।

शब्दावलीः महाद्वीपीय संसाधन, महासागरीय संसाधन, समुद्री संसाधन, समुद्री जल

प्रस्तावनाः

महासागरीय संसाधनः शैगोलिक वितरण की दृष्टि से विश्व के संसाधनों को महाद्वीपीय संसाधनों और महासागरीय संसाधनों में बॉटा गया है। इन दोनों में महाद्वीपीय संसाधनों का दोहन व्यापक रूप से हो रहा है। फलतः इनके खत्म होने की समस्या सामने आ रही है। ऐसे में वैकल्पिक संसाधनों के रूप में समुद्री संसाधनों विकास के लिए विश्व स्तरीय प्रयास किए जा रहे है। जो कि समुद्र में संसाधनों की विविधता है। अतः वर्तमान में समुद्री संसाधनों पर बहुत बल मिल रहा है। समुद्री संसाधनों के दोहन एवं उपयोग के लिए 1982 से संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय समुद्री कानून की घोषणा की गई। और समुद्री क्षेत्र को तीन शर्गों में बांटा गया।

जैवविविधता के स्वर्ग-महासागर

1) **क्षेत्रीय सागरः** समुद्र तट से 12 समुद्री मील तक। क्षेत्रीय जल या क्षेत्रीय सागर, जैसा कि 1982 सागर पर विधान हेतु संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में तय हुआ था सागर रेखा/तट से लगी एक तटीय जल की पट्टी (प्रायः औसत न्यून–जल चिन्ह) जो कि अधिकतम बारह नॉटिकल मील तक होती है। क्षेत्रीय जल को राज्य का सार्वभौम क्षेत्र माना जाता है, यद्यपि उससे विदेशी जहाज (सामरिक एवं नागरिक) जा सकते हैं। राज्य की सार्वभौमिकता उस क्षेत्र के ऊपर के हवाई क्षेत्र, एवं सागर तलहटी तक भी जाती है।

2) **अनन्य आर्थिक क्षेत्रः** आधार रेखा से 200 समुद्री मील तक। संयुक्त राष्ट्र संघ के सागरों से सम्बन्धित कानूनों के अनुसार अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EÛclusive Economic Zone या EEZ) समुद्र के उस भाग को कहते हैं जिसके आर्थिक रूप से दोहन के लिए किसी राज्य विशेष को कुछ विशिष्ट आर्थिक अधिकार प्रदान किए गए हों।

- भूभागीय समुद्र (Territorial waters)
- महाद्वीपीय शेल्फ (Continental shelf)
- अन्तरराष्ट्रीय समुद्र (International waters)
- हवाई रक्षा पहचान क्षेत्र (Air Defense Identification Zone)

3) **समुद्री तल का अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र या उच्च सागरः–** अनन्य आर्थिक क्षेत्र के आगे।

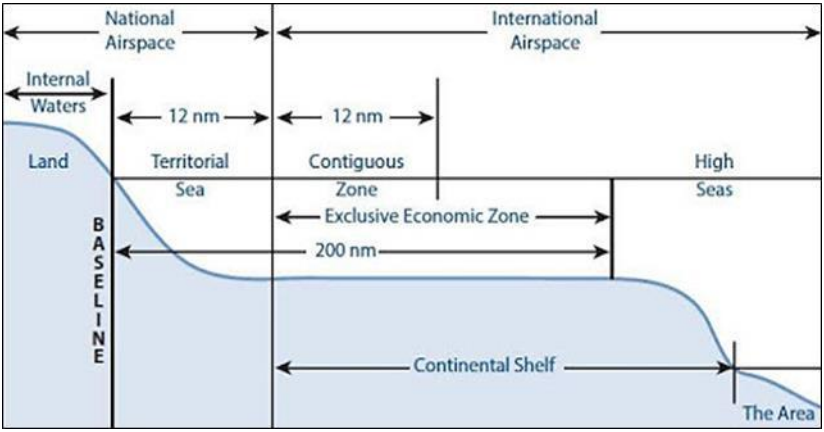

पृथ्वी के धरातल पर महाद्वीपों की अपेक्षा महासागर अधिक व्यापक है। मनुष्य का निवास स्थलखण्डों पर होता है। परन्तु पृथ्वी पर स्थलखण्डों का क्षेत्रफल बहुत कम हैं। महासागर सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से महत्त्वपूर्ण होने के कारण अत्यंत उपयोगी है। महासागरों के प्रति जागरूकता के उद्देश्य से हर साल 8 जून को विश्व महासागर दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रत्येक वर्ष एक थीम विशेष पर पूरे विश्व में महासागर दिवस से सम्बंधित आयोजन किए जाते हैं। इस वर्ष 2022 की थीम 'पुनरुद्धार–महासागरों के लिए संयुक्त कार्य' 'Revitalization: Collective Action for the Ocean है। संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में निश्चित किए गए टिकाऊ विकास के लक्ष्यों में महासागरों के संरक्षण एवं उनके टिकाऊ उपयोग को भी शामिल किया गया है। इससे जुड़े मुद्दों पर चर्चा करने के लिये संयुक्त राष्ट्र महासागर सम्मेलन भी चलाए जाते है।

भूतल का लगभग 72 प्रतिशत भाग महासागरीय जल से आच्छादित है जिसकी औसत गहराई 3.5 कि.मी. हैं। सभी स्थलखण्ड सम्पूर्णतः महासागरीय जल से घिरे हुए है। सागरों और महाद्वीपों में एक महान अन्तर यही है कि महाद्वीप एक दूसरे से पृथक हैं, परन्तु सभी महासागर आपस में जुड़े हुए है और एक है। ग्लोब पर वातावरण

का सबसे बड़ा तत्व महासागर है। पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व यहाँ उपस्थित वायुमंडल और महासागरों जैसे कुछ विशेष कारकों के कारण ही संभव हो पाया है। अपने आरंभिक काल से वर्तमान तक महासागर जीवन के विविध रूपों को संजोए हुए हैं। पृथ्वी के विशाल क्षेत्र में फैले अथाह जल का भंडार होने के साथ ही महासागर अपने अंदर व आस–पास अनेक छोटे–छोटे नाजुक पारितंत्रों को आश्रय देते हैं जिससे उन स्थानों पर विभिन्न प्रकार के जीव–जंतु व वनस्पतियाँ पनपती हैं। महासागरों में प्रवाल भित्ति क्षेत्र ऐसे ही एक पारितंत्र का उदाहरण है, जो असीम जैवविविधता का प्रतीक है।

तटीय क्षेत्रों में स्थित मैंग्रोव जैसी वनस्पतियों से संपन्न वन, समुद्र के अनेक जीवों के लिये नर्सरी बनकर विभिन्न जीवों को आश्रय प्रदान करते हैं। अपने आरंभिक काल से आज तक महासागर जीवन के विविध रूपों को संजोए हुए हैं। महासागर पृथ्वी के सबसे विशालकाय जीव व्हेल से लेकर सूक्ष्म जीव को रहने के लिये ठिकाना मुहैया कराते हैं। एक अनुमान के अनुसार समुद्रों में जीवों की करीबन दस लाख प्रजातियाँ मौजूद हैं।

मैंग्रोव वनस्पतियॉ

महासागर धरती के मौसम को निर्धारित करने वाले प्रमुख कारक हैं। महासागरीय जल की लवणता और विशिष्ट ऊष्माधारिता का गुण पृथ्वी के मौसम को प्रभावित करता है। यह तो हम जानते ही हैं कि पृथ्वी की समस्त ऊष्मा में जल की ऊष्मा का विशेष महत्त्व है। अधिक विशिष्ट ऊष्मा के कारण दिन में सूर्य की ऊर्जा का बहुत बड़ा भाग समुद्री जल में समाहित हो जाता है। इस प्रकार अधिक विशिष्ट ऊष्माधारिता से महासागर ऊष्मा का भण्डारक बन जाते हैं जिसके विश्व भर में मौसम संतुलित बना रहता है या कहें कि पृथ्वी पर जीवन के लिये औसत तापमान बना रहता है।

मौसम के संतुलन में समुद्री जल की लवणता का भी विशेष महत्त्व है। समुद्री जल के खारेपन और पृथ्वी की जलवायु में बदलाव की घटना आपस में अन्तःसम्बंधित होती है। हम जानते ही हैं कि ठंडा जल, गर्म जल की तुलना में अधिक घनत्व वाला होता है। इसके अलावा महासागर में किसी स्थान पर सूर्य के ताप के कारण जल

के वाष्पित होने से उस क्षेत्र के जल के तापमान में परिवर्तन होने के साथ वहाँ के समुद्री जल की लवणता और आस–पास के क्षेत्र की लवणता में अंतर उत्पन्न हो जाता है जिसके कारण गर्म जल की धाराएँ ठंडे क्षेत्रों की ओर बहती है और ठंडा जल उष्ण और कम उष्ण प्रदेशों में बहता है। अतः महासागर के जल का खारा होना समुद्री धाराओं के बहाव की घटना का एक मुख्य कारण है। यदि सारे समुद्रों का जल मीठा होता तो लवणता का क्रम कभी न बनता और जल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने वाली धाराएँ सक्रिय न होतीं। परिणामस्वरूप ठंडे प्रदेश बहुत ठंडे रहते और गर्म प्रदेश बहुत गर्म। तब पृथ्वी पर जीवन के इतने रंग न बिखरे होते क्योंकि पृथ्वी की असीम जैव विविधता का एक प्रमुख कारण यह है कि यहाँ अनेक प्रकार की जलवायु मौजूद है और जलवायु के निर्धारण में महासागरों का महत्त्वपूर्ण योगदान नकारा नहीं जा सकता है।

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति महासागरों में ही हुई और आज भी महासागर जीवन के लिये आवश्यक परिस्थितियों को बनाए रखने में सहायक हैं। क्योंकि महासागर पृथ्वी के एक तिहाई से अधिक क्षेत्र में फैले हैं इसलिए महासागरीय पारितंत्र में थोड़ा सा परिवर्तन पृथ्वी के समूचे तंत्र को अव्यवस्थित करने की सामर्थ्य रखता है।

आज जब विश्व की कुल जनसंख्या का 30 प्रतिशत तटीय क्षेत्रों में निवास करता है तो ऐसी स्थिति में महासागर उनके लिये खाद्य पदार्थों का प्रमुख स्रोत साबित हो सकते हैं। महासागर खाद्य पदार्थों का एक प्रमुख स्रोत होने के कारण हमारी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की मदद से महासागरों से पेट्रोलियम सहित अनेक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों को निकाला जा रहा है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन सहित अनेक मौसमी परिघटनाओं को समझने के लिये समुद्रों का अध्ययन भी महत्त्वपूर्ण है। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अंतर्गत गोवा में कार्यरत् राष्ट्रीय समुद्रविज्ञान संस्थान में ऐसे अनेक अध्ययन किए जा रहे हैं। महासागरों में बढ़ता प्रदूषण चिंता का विषय बनता जा रहा है। अरबों टन प्लास्टिक का कचरा हर साल महासागर में समा जाता

है। आसानी से विघटित नहीं होने के कारण यह कचरा महासागर में जस का तस पड़ा रहता है। अकेले हिंद महासागर में भारतीय उपमहाद्वीप से पहुँचने वाली भारी धातुओं और लवणीय प्रदूषण की मात्रा प्रतिवर्ष करोड़ों टन है। विषैले रसायनों के रोजाना मिलने से समद्री जैव विविधता भी प्रभावित होती है। इन विषैले रसायनों के कारण समुद्री वनस्पति की वृद्धि पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने वाले परितंत्रों में महासागर की उपयोगिता को देखते हुए यह आवश्यक है कि हम महासागरीय पारितंत्र के संतुलन को बनाए रखें, तभी हमारा भविष्य सुरक्षित रहेगा।

जल संसाधनः

जल संसाधन पानी के वह स्रोत है, जो मनुष्य के लिए उपयोगी हों या जिनके उपयोग की सम्भावना हो। पानी के उपयोगों में शामिल हैं– कृषि, औद्योगिक, घरेलू, मनोरंजन हेतु और पर्यावरणीय गतिविधियों में। वस्तुतः इन सभी मानवीय उपयोगों में से अधिकतर में ताजे जल की आवश्यकता होती है।

समस्त महासागर एक मिली जुली इकाई है। महासागर की आपेक्षिक स्थिति के अनुसार महासागरों के कई बड़े शग है। जो पृथक–पृथक महासागर माने जाते है। पृथ्वी पर पानी की कुल उपलब्ध मात्रा अथवा भण्डार को जलमण्डल कहते हैं। पृथ्वी के इस जलमण्डल का 75% भाग समुद्रों में खारे जल के रूप में है और केवल 25% ही मीठा पानी है, उसका भी दो तिहाई हिस्सा हिमनद और ध्रुवीय क्षेत्रों में हिम चादरों और हिम टोपियों के रूप में जमा है। शेष पिघला हुआ मीठा पानी मुख्यतः जल के रूप में पाया जाता है, जिस का केवल एक छोटा सा भाग भूमि के ऊपर धरातलीय जल के रूप में या हवा में वायुमण्डलीय जल के रूप में है। मीठा पानी एक नवीकरणीय संसाधन है क्योंकि जल चक्र में प्राकृतिक रूप से इसका शुद्धीकरण होता रहता है, फिर भी विश्व के स्वच्छ पानी की पर्याप्तता लगातार गिर रही है दुनिया के कई हिस्सों में पानी की मांग पहले से ही आपूर्ति से अधिक है और जैसे–जैसे विश्व में जनसंख्या में अभूतपूर्व दर से वृद्धि हो रही हैं, निकट भविष्य मैं इस असन्तुलन का अनुभव बढ़ने की उम्मीद है। पानी के प्रयोक्ताओं के लिए जल संसाधनों के आवण्टन के लिए फ्रेमवर्क (जहाँ इस तरह की एक फ्रेमवर्क मौजूद है) जल अधिकार के रूप में जाना जाता है। आज जल संसाधन की कमी, इसके अवनयन और इससे सम्बन्धित तनाव और संघर्ष विश्वराजनीति और राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। जल विवाद राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण विषय बन चुके हैं।

जल संसाधन के प्रकारः

भारत में जल संसाधनों का स्रोत मुख्य रूप से वर्षा जल ही हैं। परन्तु कुछ भागों में हिम भी महत्त्वपूर्ण है पर्वतों पर जमा हिम गर्मियों में पिघलकर नदियों में प्रवाहित होता है।

जल संसाधन को निम्न तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

1) महासागरीय जल संसाधन
2) सतही जल संसाधन (नदियाँ, तालाब, नाले)
3) भूमिगत जल संसाधन।

महासागरीय जल संसाधनः

सतही जल संसाधन (नदियाँ, तालाब, नाले):

जल मानव निवास का आधार है। नदी, झील, तालाब, पोखरा, फिर्योडतट, दलदल, नहर आदि सतही जल के उदारहण है। सतही जल पृथ्वी की सतह पर पाया जाने वाला पानी है जो गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में ढाल का अनुसरण करते हुए सरिताओं या नदियों में प्रवाहित हो रहा है अथवा पोखरों, तालाबों और झीलों या मीठे पानी की आर्द्रभूमियों में स्थित है। किसी जलसम्भर में सतह के जल की प्राकृतिक रूप से वर्षण और हिमनदों के पिघलने से पूर्ति होती है और वह प्राकृतिक रूप से ही महासागरों में निर्वाह, सतह से वाष्पीकरण और पृथ्वी के नीचे की ओर रिसाव के द्वारा खो जाता है।

हालाँकि कि किसी भी क्षेत्रीय जल तंत्र में पानी का प्राकृतिक स्रोत वर्षण ही है और इसकी मात्रा उस बेसिन की भौगोलिक अवस्थिति और आकार पर निर्भर है। इसके अलावा एक जल तंत्र में पानी की कुल मात्रा किसी भी समय अन्य कई कारकों पर निर्भर होती है। इन कारकों में शामिल हैं झीलों, आर्द्रभूमियों और कृत्रिम जलाशयों में भंडारण क्षमता इन भण्डारों के नीचे स्थित मिट्टी की पारगम्यता बेसिन के भीतर धरातलीय अपवाह के अभिलक्षण, वर्षण की अवधि, तीव्रता और कुल मात्रा और स्थानीय वाष्पीकरण का स्तर इत्यादि। यह सभी कारक किसी जलतंत्र में जल के आवागमन और उसके बजट को प्रभावित करते हैं।

मानव गतिविधियाँ इन कारकों पर एक बड़े पैमाने पर प्रभाव डाल सकती हैं। मनुष्य अक्सर जलाशयों का निर्माण द्वारा बेसिन की भंडारण क्षमता में वृद्धि और आद्रभूमि के जल को बहा कर बेसिन की इस क्षमता को घटा देते हैं। मनुष्य अक्सर अपवाह की मात्रा और उस की तेजी को फर्शबन्दी और जलमार्ग निर्धारण से बढ़ा देते हैं।

किसी भी समय पानी की कुल उपलब्ध मात्रा पर ध्यान देना भी जरूरी है। मनुष्य द्वारा किये जा रहे जल उपयोगों में से बहुत सारे वर्ष में एक निश्चित और अल्प अवधि के लिये ही होते हैं। उदाहरण के लिए अनेक खेतों को वसंत और ग्रीष्म ऋतु में पानी की बड़ी मात्रा की आवश्यकता होती है और सर्दियों में बिल्कुल नहीं। ऐसे खेत को पानी उपलब्ध करने के लिए, सतह जल के एक विशाल भण्डारण क्षमता की आवश्यकता होगी जो साल भर पानी इकट्ठा करे और उस छोटे समय पर उसे प्रवाह कर सके जब उसकी आवश्यकता हो। वहीं दूसरी ओर कुछ अन्य उपयोगों को

पानी की सतत् आवश्यकता होती है, जैसे की विद्युत संयंत्र जिस को ठंडा करने के लिए लगातार पानी चाहिये। ऐसे बिजली संयंत्र को पानी देने के लिए सतह पर प्रवाहित जल की केवल उतनी ही मात्रा को भंडारित करने की आवश्यकता होगी कि वह नदी में पानी के कम होने की स्थिति में भी बिजली संयंत्र को शीतलन के लिये पानी उपलब्ध करा सके।

दीर्घकाल में किसी बेसिन के अन्दर वर्षण द्वारा पानी की कितनी मात्रा की पूर्ती की जाती है यही उस बेसिन की मानव उपयोगों हेतु जल उपलब्धता की ऊपरी सीमा होती है।

प्राकृतिक धरातलीय जल की मात्रा को किसी दूसरे बेसिन क्षेत्र से नहर या पाइप लाइन के माध्यम से आयात द्वारा संवर्धित किया जा सकता है। मनुष्य प्रदूषण द्वारा जल को खो सकता है (यानी उसे बेकार बना सकता है)।

मीठे जल के भण्डारों के मामले में ब्राजील दुनिया मे सबसे अधिक जल भण्डार रखने वाला देश है जिसके बाद दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं रूस और कनाडा।

नदी तली के नीचे का प्रवाह

नदी के पूरे मार्ग में नीचे की ओर प्रवाहित जल की मात्रा केवल वही नहीं होती जो स्वतंत्र जलधारा के रूप में बहती हुई दिखती है बल्कि नदी की तली के ठीक नीचे भी काफी पानी प्रवाहित होता रहता है। यह पानी तली के असंगठित पदार्थों के बीच से होकर बहता है जैसे कि कंकड़ों और गोलाश्मों की मोटी परत के बीच से होकर। ऐसे प्रवाह को अवप्रवाह कहते है और यह कभी कभी दिखाई पड़ने वाले प्रवाह से अधिक भी हो सकता है। नदी के नीचे अवप्रवाह की इस पेटी को अवप्रवाह मण्डल कहा जाता है। एक प्रकार से यह वह पेटी है जहाँ भूजल और नदीजल का आपसी अंतर मिट जाता है। यह कार्स्ट प्रदेशों और तराई क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण होता है।

समुद्री संसाधन आर्थिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण हैं:

बढ़ती मानव आबादी के कारण, भूमि संसाधनों पर बोझ दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और कुछ क्षेत्रों में यह निरंतर अरक्षणीय (unsustainable) स्तर तक पहुंच गया है। समुद्री संसाधन इन समस्याओं के विकल्प हैं। यह पर्यावरणीय जोखिम को कम करता है और पारिस्थितिक चुनौतियों को कम करता है।

- पोषण सुरक्षा, विशेष रूप से विकासशील देशों की प्रमुख समस्याएँ हैं। समुद्री भोजन जैसे मछली, जो प्लांकटन, फाइटोप्लांकटन बहुत सारे भोजन पोषक तत्वों से भरे हुए हैं जो वैश्विक पोषण सुरक्षा समस्या को हल कर सकते हैं।

- डेनमार्क एक कृत्रिम ऊर्जा द्वीप का निर्माण कर रहा है, यह स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करेगा।
- अमेरिका, यूरोपीय देशों, सिंगापुर और जापान जैसे अधिकांश विकासशील देशों को समुद्री बंदरगाह के कारण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से उनके जीडीपी में बहुत ज्यादा लाभ होता है।
- मालदीव और सेशेल्स जैसे कुछ देशों की अर्थव्यवस्था ज्यादातर ब्लू अर्थव्यवस्था (समुद्री संसाधन) और समुद्री पर्यटन पर निर्भर है।
- भारतीय जलवायु पर समुद्री प्रभाव के कारण भारत अधिक कृषि समृद्ध है।

समुद्री संसाधन आर्थिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये जीडीपी की मात्रा और जीवन की गुणवत्ता दोनों को बढ़ाते हैं। अर्थव्यवस्था में समुद्री संसाधनों का योगदान लैंडलॉक और तटीय देशों के विकास के अंतरों में देखा जा सकता है। समुद्री संसाधनों के कारण ही मध्य एशियाई देशों की तुलना में दक्षिणपूर्व एशियाई देश अधिक आर्थिक रूप से विकसित हैं।

ब्लू इकोनॉमीः

महामारी के बाद प्रमुख समस्याओं में से एक रोजगार एवं आजीविका की चुनौती है। इसका समाधान समुद्री संसाधनों के उचित उपयोग से किया जा सकता है। ब्लू इकोनॉमी में आर्थिक गतिविधियों और रोजगार सृजन की अपार संभावनाएँ है।

भारत की समुद्री स्थिति अद्वितीय है। इसकी 7,517 किलोमीटर लंबी तटरेखा एवं दो मिलियन वर्ग किलोमीटर का अनन्य आर्थिक क्षेत्र (Exclusive Economic Zone & EEZ) है। भारत के पास विशाल समुद्री संसाधन है। अतः आर्थिक विकास को बढ़ावा देने, बेरोजगारी, खाद्य सुरक्षा और गरीबी से निपटने के लिये एक उपयुक्त अवसर है।

ब्लू इकोनॉमी में निवेश भारत के आर्थिक विकास, जलवायु एवं पर्यावरण की दृष्टि से भी फायदेमंद रहेगा।

ब्लू इकोनॉमी बनाम महासागरीय अर्थव्यवस्था

ब्लू इकोनॉमी, एक उभरती हुई अवधारणा है जो हमारे महासागर या जलीय संसाधनों के बेहतर प्रबंधन को प्रोत्साहित करती है। ग्रीन इकोनॉमी के समान, ब्लू इकोनॉमी मॉडल का उद्देश्य मानव कल्याण और सामाजिक समानता में सुधार करना है साथ ही, पर्यावरणीय जोखिमों और पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन को कम करना है।

अंतर्राष्ट्रीय समुदायों का मानना है कि ब्लू इकोनॉमी में तीन बिंदु शामिल हैंः–

- वैश्विक जल संकट से जूझ रही अर्थव्यवस्था।

- अभिनव विकास संबंधित अर्थव्यवस्था।
- समुद्री अर्थव्यवस्था का विकास।

यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि ब्लू इकोनॉमी समुद्री संसाधनों को केवल आर्थिक विकास के लिये एक तंत्र के रूप में देखने से परे है। महासागरीय अर्थव्यवस्था मॉडल में बड़े पैमाने पर औद्योगिक राष्ट्रों ने बिना भविष्य में परिस्थिति तंत्र, मानव समुदाय के स्वास्थ्य एवं इन संसाधनों की उत्पादकता पर पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन किये महासागरीय एवं समुद्री संसाधनों का दोहन किया है। उदाहरण के लिये शिपिंग, वाणिज्यिक मछली पकड़ने और तेल, गैस, खनिज और खनन उद्योगों के माध्यम से।

ब्लू इकोनॉमी केवल बाजार में नए अवसर नहीं उत्पन्न करता है बल्कि यह अधिक अमूर्त समुद्री संसाधनों के संरक्षण और विकास का भी प्रावधान करता है। उदाहरण के लिये जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी प्रभावों को कम करने में कमजोर राज्यों की मदद करने के लिये जीवन के पारंपरिक तरीके, कार्बन पृथक्करण इत्यादि का प्रयोग करना।

यह एक समावेशी मॉडल प्रदान करता है जिसमें तटीय राज्य, जिनके पास अपने समृद्ध समुद्री संसाधनों के प्रबंधन करने की क्षमता का अभाव होता है, उन संसाधनों का लाभ सभी तक पहुँचाना शुरू कर सकते हैं।

महत्त्व

निवेश पर उच्च लाभरू नॉर्वे के प्रधानमंत्री की सह–अध्यक्षता में एक स्थायी महासागरीय अर्थव्यवस्था के लिये उच्च–स्तरीय पैनल द्वारा किये गए नए शोध से पता चलता है कि प्रमुख महासागरीय गतिविधियों में निवेश किये जाने वाले प्रत्येक डॉलर के बदले पॉच गुना या उससे अधिक मूल्य प्राप्त होता है। भारत सरकार द्वारा जारी न्यू इंडिया विजन में ब्लू इकोनॉमी को 10 प्रमुख आयामों में से एक बताया गया है।

सतत् विकास लक्ष्य को प्राप्त करने में सहयोग रू इससे संयुक्त राष्ट्र के सभी सतत् विकास लक्ष्यों, विशेष रूप से एसडीजी 14 "जल के नीचे जीवन" (लाइफ Below Water) को पूरा करने में सहायता मिलेगी।

सतत् ऊर्जा, अक्षय ऊर्जा की बढ़ती मांग का समर्थन करते हुए, अपतटीय क्षेत्रों में अपतटीय पवन, लहरों, ज्वारीय धाराओं सहित महासागरीय धाराओं और तापीय ऊर्जा के लिये व्यापक संभावनाएँ हैं।

भारत के लिये महत्त्व, नौ तटीय राज्यों, 12 प्रमुख और 200 छोटे बंदरगाहों में फैली 7,500 किलोमीटर से अधिक लंबी तटरेखा के साथ, व्यापार का 95% समुद्री मार्ग के जरिए होता है और इसके सकल घरेलू उत्पाद में 4% (अनुमानित) का

योगदान करती है। ब्लू इकोनॉमी के सभी क्षेत्रों में एक बड़े कार्यबल को शामिल करने की क्षमता है और पिछले कई दशकों से कम से कम मछली पकड़ने, जलीय कृषि, मछली प्रसंस्करण, समुद्री पर्यटन, शिपिंग और बंदरगाह गतिविधियों जैसे क्षेत्रों में ऐसा दृष्टव्य है। अब अपतटीय पवन, समुद्री जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, और जहाज निर्माण एवं जहाज तोड़ने जैसी अन्य गतिविधियॉ भी बड़े पैमाने पर बढ़ रहा है।

आगे की राह

ब्लू इकोनॉमी को प्रोत्साहित करने हेतु पैकेज प्रदान करना COVID-19 जैसे संकट से निपटने के लिये ब्लू इकोनॉमी हेतु एक सतत् और न्यायपूर्ण प्रोत्साहन पैकेज प्रदान की जानी चाहिये। जिससे वैश्विक स्तर पर एवं भारत के लिये भी स्थायी समुद्री तंत्र का निर्माण हो। इसमें निम्नलिखित पॉच प्रोत्साहन कार्रवाइयों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये।

- तटीय और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण हेतु निवेश।
- तटीय समुदायों के लिये सीवेज और अपशिष्ट जल अवसंरचना।
- टिकाऊ समुद्री जलीय कृषि।
- शून्य–उत्सर्जन समुद्री परिवहन।
- महासागर–आधारित नवीकरणीय ऊर्जा के लिये प्रोत्साहन।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोगः भारत–नॉर्वे एकीकृत महासागर प्रबंधन पहल (India & Norway Integrated Ocean Management Initiative) एक अच्छा उदाहरण है, जिसके तहत शोधकर्ता और अधिकारी समुद्री स्थानिक योजना (Marine Spatial Planning) के माध्यम से समुद्री संसाधनों के शासन में सुधार के लिये सहयोग कर रहे हैं।

ब्लू इकोनॉमी में शिक्षाः– विश्वविद्यालयों और इंजीनियरिंग/तकनीकी संस्थानों में ब्लू इकोनॉमी के पारंपरिक और उभरते दोनों क्षेत्रों से जुड़े शैक्षिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिये। इससे संबंधित प्रशिक्षकों को बहाल किया जाना चाहिये।

गांधीवादी दृष्टिकोणः– भारत को विकास, रोजगार सृजन, समानता और पर्यावरण की सुरक्षा के व्यापक लक्ष्यों को पूरा करने के साथ आर्थिक लाभों को संतुलित करने के लिये गांधीवादी दृष्टिकोण को अपनाना चाहिये।

निष्कर्षतः आर्थिक और पर्यावरणीय संघर्ष के प्रति संतुलन को बनाए रखने में महासागर की भूमिका है। शिपिंग डी–कार्बोनाइजेशन, सी फूड (Sea Food) का उत्पादन और महासागर आधारित नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश से बेहतर स्वास्थ्य परिणाम, समृद्ध जैव विविधता, अधिक सुरक्षित नौकरियॉ और आने वाली पीढ़ियों के लिये एक सुरक्षित ग्रह उपलब्ध होता है।

भूजल क्या है

भूजल या भूमिगत जल मीठे जल का हिस्सा है जो मिट्टी और चट्टानों के रंध्राकाशों (pore) में स्थित होता है।

यह जल स्तर के नीचे जलभरे (aquifer) के भीतर बहने वाला जल भी है।

भूजल के इस प्रवाह को अधोप्रवाह (underflow) कहा जाता है।

कभी–कभी सतह के ठीक नीचे के जल को भूजल तथा अत्यधिक गहराई में पाए जाने वाले जल को भूगर्भिक जल या जीवाश्म जल (fossil water) भी कहते हैं।

भूजल को यदि एक विशाल जल भण्डार माना जाय तो इस भण्डार में जल का आगमन या इसको पानी की उपलब्धता धरातल की सतह के ऊपर के सतही जल के नीचे की ओर रिसाव द्वारा होती है और इससे जल का निष्कासन अधोप्रवाह द्वारा समुद्रों में या फिर अत्यधिक गहरे जीवाश्म जल के रूप में होता है। अतः भूजल भी कई मायनों में धरातलीय जल जैसा ही होता है। जल तंत्र में आदान–प्रदान और भण्डारण के सन्दर्भ में यदि इसकी तुलना धरातलीय जल से की जाए तो महत्वपूर्ण अंतर यह है कि गमनागमन की धीमी गति होने के कारण भूजल के भंडार आमतौर पर धरातलीय जल से अधिक विशाल और स्थाई होते हैं। इस अन्तर के कारण मानव आसानी से भूजल का लम्बे समय तक बिना गंभीर परिणामों के गैर दीर्घकालिक उपयोग कर सकते हैं। हालाँकि यह भी ध्यातव्य है कि भूजल एक बार प्रदूषित हो जाने पर इसके प्राकृतिक चक्रण द्वारा साफ होने की प्रक्रिया और भी धीमी है।

भूमिगत जल संसाधनः

इसके अंतर्गत ज्वालामुखी जल (Magmatic water) एवं सहजात जल (Connate Water) आते है। ज्वालामुखीय अंशतः शूमि के गर्भ से संबंधित हैं। जो गैस के रूप में प्रकट होता हैं। देश में भूगर्भिक जल का विस्तृत भंडार है परन्तु वितरण बड़ा असमान है। चट्टानों की संरचना, धरातलीय दशा, जलापूर्ति दशा आदि कारक भूमिगत जल की मात्रा को प्रभावित करते हैं। भूमिगत जल की उपलब्धि के आधार पर भारत के तीन प्रदेश चिन्हित किये जा सकते हैं।

- उत्तरी मैदान (कोमल मिट्टी, प्रवेश्य चट्टानें)।
- प्रायद्वीपीय पठार (कठोर अप्रवेश्य चट्टानें)।
- तटीय मैदान।

भारत में भूमिगत जल क्षमता का मूल्यांकन केन्द्रीय भूमिगत जल बोर्ड करता है। इसके अनुसार भूमिगत जल का 3/4 भाग सिंचाई में प्रयोग होता हैं। शेष भाग औद्योगिक और अन्य कार्यों में प्रयुक्त होता है। अभी तक भूमि जल के समपूर्ण संभावित भंडार में से मात्र 37.3% ही विकसित हो पाया है। भारत के विभिन्न राज्यों में भूमिगत जल की उपयोग क्षमता में अत्यधिक भिन्नता मिलती है।

जल संसाधनों का उपयोग

जल संसाधन का बहुविध उपयोग निम्नलिखित है।

जलीय कृषि (Aquaculture): जल का एक छोटा लेकिन बढ़ता प्रयोग है। मीठे पानी में व्यावसायिक मत्स्य पालन भी पानी का कृषि उपयोग माना जाता है, लेकिन इसे सिंचाई से कम महत्व दिया जाता है। जैसे–जैसे विश्व की जनसंख्या और अनाज की मांग में वृद्धि हो रही है जल के सीमित स्रोतों के इष्टतम उपयोग द्वारा अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिये सिंचाई की विधियोंख,और प्रौद्योगिकी, कृषि जल प्रबंधन, शस्य संयोजन और जल संरक्षण के क्षेत्र में विकास की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

कृषि क्षेत्र: जल का प्रमुख उपयोग सिंचाई में होता है। भारत का अधिकांश भाग उष्ण और उपोष्ण कटिबन्ध में स्थित है इसलिए अधिक वाष्पोत्सर्जन के कारण सिंचाई के लिए जल की आवश्यकता पड़ती है।

जल से बिजली उप्तादन: यह ऊर्जा का प्रदूषणरहित और सस्ता स्रोत है. भारत में 84,000 MW जलशक्ति उत्पादन की क्षमता है।

घरेलू जल आपूर्ति: राष्ट्रीय जल नीति के अनुसार, पेयजल की आपूर्ति को सबसे अधिक प्राथमिकता दी गई है।

औद्योगिक उपयोग: औद्योगिक विकास के लिए पर्याप्त जल की आपूर्ति की आवश्यकता है. 2025 तक उद्योगों को 120 अरब घन मीटर जल की आवश्यकता होने का अनुमान है।

मनोरंजन के लिए प्रयोग: मनोरंजन के लिए प्रयोग होने वाला जल आमतौर पर कुल जल प्रयोग का एक बहुत छोटा किन्तु बढ़ता हुआ हिस्सा है। मनोरंजन में पानी का उपयोग अधिकतर जलाशयों, क्षिप्रिकाओं, झरनों और साहसिक खेलों से जुड़ा हुआ है। यदि एक जलाशय में पानी का स्तर सामान्य की तुलना में अधिक रखा जाय तो मनोरंजक खपत के लिए उसका उपयोग एक नवीकरणीय या अक्षय उपयोग के तौर पर वर्गीकृत किया जा सकता है। कुछ जलाशयों से जल निर्गमन श्वेत जल के रूप में दृश्यावलोकन और राफ्टिंग (नाव खेना) इत्यादि मनोरंजक कार्यों के लिए समयबद्ध किया जाता है जो मनोरंजक उपयोग माना जा सकता है। अन्य उदाहरण स्कीयर, प्रकृति उत्साही और तैराक हैं जो जल का इस रूप में उपयोग करते हैं। आधुनिक सभ्यता में वाटर पार्क जैसी सुविधाएँ भी इसी श्रेणी में गिनी जा सकती हैं।

मनोरंजक उपयोग आमतौर पर गैरक्षयी होता है। गोल्फ कोर्स पानी की अत्यधिक मात्रा का उपयोग करने के लिए प्रसिद्द है, विशेषकर खुश्क क्षेत्रों में। बहरहाल, यह स्पष्ट नहीं है की मनोरंजक सिंचाई के लिए जल का उपयोग (जिस में निजी उद्यानों शामिल होंगे) पानी के संसाधनों पर क्या प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। ऐसा काफी हद तक विश्वसनीय डेटा के आभाव के कारण है। कैलिफोर्निया की सरकार सहित कुछ

सरकारों ने गोल्फ कोर्स में जल के उपयोग को कृषि करार दिया है ताकि पर्यावरणविद् इसे जल बर्बादी न कह पायें हालांकि उपरोक्त आंकड़ों का एक आधार के रूप में उपयोग करते हुए, इस हेर–फेर का वास्तविक सांख्यिकीय प्रभाव शून्य के करीब माना जाता है।

इसके अतिरिक्त, मनोरंजन में उपयोग अन्य उपयोगकर्ताओं के लिए विशिष्ट समय और स्थानों पर पानी की उपलब्धता में कमी का कारण भी हो सकता है। उदाहरण के लिए पानी के एक जलाशय में देर गर्मियों में नौकायन के लिए बनाए रखना और किसानों को बसंत के मौसम की खेती के दौरान उपलब्ध नहीं रखना ऐसा ही उपयोग होगा। श्वेत जल राफ्टिंग के लिए जल निर्गमन बिजली की मांग के व्यस्ततम समय पर पनबिजली उत्पादन के लिए जल की अनुपलब्धता में परिणत हो सकता है।

पर्यावरणीय उपयोग: स्वच्छ पर्यावरण के लिये पानी का प्रयोग भी एक बहुत छोटा उपयोग है लेकिन बढ़ती कुल जल का प्रयोग का प्रतिशत है। पर्यावरणीय जल उपयोगों में शामिल हैं– कृत्रिम आर्द्रभूमि निर्माण, वन्यजीव आवास के लिए अपेक्षित कृत्रिम झीलें, बाँध के इर्द गिर्द मत्स्य सोपान और मछली पालन के लिए समयबद्ध जलाशयों से जल मुक्ति इत्यादि।

मनोरंजन के साधन के उपयोग की तरह, पर्यावरणीय उपयोग गैर क्षय वाला है लेकिन विशिष्ट समय और स्थानों पर अन्य उपयोगकर्ताओं के लिए पानी की उपलब्धता में कमी का कारण हो सकता है। उदहारण के लिए जलाशय से मछली उद्योग के लिए जल मुक्ति के बाद पानी ऊपरी खेतों के लिए उपलब्ध नहीं होगा।

जल संकट

जल संकट और जल तनाव (water stress) की अवधारणा सरल हैरू सतत विकास के लिए विश्व व्यापार परिषद (World Business Council for Sustainable Development) के अनुसार यह उन परिस्थितियों पर लागू होता है जहां सभी उपयोगों के लिए पर्याप्त पानी नहीं उपलब्ध है चाहे वे औद्योगिक, कृषि या घरेलू उपयोग हों। प्रति व्यक्ति (per capita) उपलब्ध जल तनाव को परिभाषित करना जटिल है, तथापि यह धारणा है कि जब प्रति व्यक्ति वार्षिक अक्षय मीठे पानी की उपलब्धता 1700 घनमीटर से कम हो, तो देश अल्पावधिक या नियमित रूप से पानी तनाव का अनुभव करने लगते हैं। 1,000 घन मीटर से कम जल उपलब्धता आर्थिक विकास और मानव स्वास्थ्य और समृद्धि में बाधा डालती है।

जनसंख्या वृद्धि और जल संसाधन

सन् 2000 में, दुनिया की आबादी 6.2 अरब थी। संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है की सन् 2050 तक जनसँख्या में 3 अरब की वृद्धि हो जायेगी और इसका ज्यादातर हिस्सा विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि करेगा जो पहले से ही जल तनाव से ग्रस्त हैं। इस लिए जल की माँग और बढेगी जब तक इस महत्वपूर्ण संसाधन में

जल संरक्षण और पुनर्प्रयोग (recycling) द्वारा अनुकूल वृद्धि नहीं होती।

समृद्धि में बढ़त

गरीबी उन्मूलन दर की वृद्धि हो रही है खासकर चीन और भारत जैसे दो जनसंख्या दिग्गजों में। बहरहाल, बढ़ती समृद्धि (affluence) का मतलब है निश्चित रूप से अधिक पानी की खपत। 24 घण्टे, 7 दिन मीठे पानी की आवश्यकता और बुनियादी स्वच्छता (sanitation) से ले कर उद्यान सिंचाई और गाड़ी धोने के लिए पानी की माँग करने से ले कर जकुज्जी या निजी तरणताल की चाहत तक यह समृद्धि जल की माँग में वृद्धि ही करेगी।

व्यावसायिक गतिविधियों का विस्तार

तेजी से हो रहे औद्योगीकरण से सेवा क्षेत्र जैसे पर्यटन और मनोरंजन जैसी व्यावसायिक गतिविधियां तेजी से विस्तार कर रहीं हैं। इस विस्तार के फलस्वरूप पूर्ति और स्वच्छता सहित जल सेवाओं में वृद्धि होती है जो पानी और प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिक तंत्र पर और अधिक दबाव के कारण हो सकते हैं।

तीव्र शहरीकरण

शहरीकरण के रुझान इसमें तीव्र वृद्धि के हैं। निजी लघु कुँए और गटर (septic tank) जो कम घनत्व समुदायों में कारगर साबित होते हैं, भारी घनत्व के शेहरी क्षेत्रों में सक्षम नहीं होते। शहरीकरण के होते जल सम्बंधित बुनियादी सुविधाओं में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता है। व्यक्तियों तक पानी पहुँचाने के लिए और मलजल को और प्रदूषित और दूषित जल का उपचार किये जाने को सुविधाओं का विकास अनिवार्य है अन्यथा ये सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिम बन जायेंगे। 60% यूरोपीय शेहेरों में जिस की जनसँख्या 1,00,000 से अधिक है, वहाँ भूमिगत जल तेज दर से प्रयोग किया जा रहा है। यदि कुछ जल उपलब्ध है, तो उसे ग्रहण करने की लागत में वृद्धि ही वृद्धि (costs more and more) हो रही है।

जलवायु परिवर्तन और जल संसाधन

जलवायु परिवर्तन मौसम और जल चक्र के बीच अभिन्न सम्बन्धों के कारण दुनिया भर के जल संसाधनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। बढ़ते तापमान के रहते वाष्पीकरण में वृद्धि होगी और परिणामतः वर्षण में भी वृद्धि होगी, हालाँकि वर्षा में क्षेत्रीय विवधिता में भी वृद्धि होगी। कुल मिलाकर, ताजे पानी की वैश्विक आपूर्ति में वृद्धि होगी लेकिन सूखा और बाढ़ विभिन्न क्षेत्रों में अलग अलग समय पर अक्सर हो सकते हैं और पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी और तुषार पिघलाव की सम्भावना है। बढ़ा तापमान जल गुणवत्ता को कैसे प्रभावित करेगा यह अच्छी तरह समझा नहीं गया है। सम्भावित प्रभावों में शामिल हैं जलधाराओं और जलाशयों का यूट्रोफिकेशन इत्यादि। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि सिंचाई, उद्यान सेचक और शायद तरणताल की माँगों में वृद्धि भी हो सकती है।

जलभरों का रिक्तीकरण

मानव आबादी के विस्तार के कारण जल के लिए प्रतिस्पर्धा ऐसे बढ़ रही है कि विश्व के प्रमुख जलभरे समाप्त होते जा रहे हैं। यह भूमिगत जल के द्वारा कृषि सिंचाई और प्रत्यक्ष मानव उपभोग दोनों के लिए कड़वा यथार्थ है। पूरी दुनिया में सभी आकार के लाखों पम्प इस समय भूमिगत जल निकाल रहे हैं। उत्तरी चीन और भारत जैसे शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई भूमिगत जल के द्वारा और असम्वृधीय दर से निचोडा जा रहा है। जिन्हों ने जलस्तर में गिरावट अनुभव की हैं, उन शहरों में शामिल हैं मेक्सिको सिटी, बैंकॉक, मनीला, बीजिंग, मद्रास और शंघाई इत्यादि।

अन्य जगहों की तरह भारत में भी भूजल का वितरण सर्वत्र समान नहीं है। भारत के पठारी भाग हमेशा से भूजल के मामले में कमजोर रहे हैं। यहाँ भूजल कुछ खास भूगर्भिक संरचनाओं में पाया जाता है जैसे भ्रंश घाटियों और दरारों के सहारे। उत्तरी भारत के जलोढ़ मैदान हमेशा से भूजल में संपन्न रहे हैं लेकिन अब उत्तरी पश्चिमी भागों में सिंचाई हेतु तेजी से दोहन के कारण इनमें अभूतपूर्व कमी दर्ज की गई है।

भारत में जलभरों और भूजल की स्थिति पर चिंता जाहिर की ज रही है। जिस तरह भारत में भूजल का दोहन हो रहा है भविष्य में स्थितियाँ काफी खतरनाक होसकती हैं। वर्तमान समय में 29 प्रतिशत विकास खण्ड या तो भूजल के दयनीय स्तर पर हैं या चिंतनीय हैं और कुछ आंकड़ों के अनुसार 2025 तक लगभग 60 प्रतिशत ब्लाक चिंतनीय स्थितिमें आ जायेंगे।

ध्यातव्य है कि भारत में 60 प्रतिशत सिंचाई हेतु जल और लगभग 85 प्रतिशत पेय जल का स्रोत भूजल ही है ऐसे में भूजल का तेजी से गिरता स्तर एक बहुत बड़ी चुनौती के रूप में उभर रहा है। विश्व के अलग–अलग देशों में भूमिगत जल का अलग महत्व है।

प्रदूषण और जल संरक्षण

जल प्रदूषण आज विश्व के प्रमुख चिंताओं में से एक है। कई देशों की सरकारों ने इस समस्या को कम करने के लिए समाधान खोजने के लिए कड़ी मेहनत की है। जल आपूर्ति को कई प्रदूषकों से खतरा है, किंतु सब से अधिक व्यापक विशेषकर अल्पविकसित देशों में है। कच्चे मलजल का प्राकृतिक जल में प्रवाह द्वारा इसके निपटान की यह विधि अल्पविकसित देशों में सबसे आम है लेकिन यह अर्ध विकसित देशों जैसे चीन, भारत और इरान में भी प्रचलित है।

मल, कीचड, गन्दगी और विषाक्त प्रदूषक, सब पानी में फेंक दिए जाते हैं। मल उपचार के बावजूद समस्याएं खड़ी होती हैं। मल कीचड में तब्दील होता है, जो समुद्र में बहा दिया जाता है कीचड के अतिरिक्त उद्योगों और सरकारों द्वारा रासायनों का रिसाव जल प्रदूषण का प्रमुख स्रोत हैं।

जल विवाद

कावेरी जल विवाद की जड़ 19वीं शताब्दी तक जाती है लेकिन इस मुद्दे का हल आज तक नहीं निकला। ये विवाद वैसे तो चार राज्यों के बीच का है लेकिन नदी जल बंटवारे पर सबसे ज्यादा दो राज्यों में विवाद है। कर्नाटक और तमिलनाडु में इस नदी के जल पर निर्भर लाखों परिवारों के लिए काफी भावनात्मक मसला है।

कावेरी भारत की एक नदी है, जिसे दक्षिण भारत की गंगा भी कहा जाता है। ये कर्नाटक के कोडागू जिले से निकलती है और तमिलनाडु से होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। कावेरी घाटी में एक हिस्सा केरल का भी है और समंदर में मिलने से पहले ये नदी पॉन्डिचेरी के कराइकाल से होकर गुजरती है। कावेरी नदी लगभग 800 किमी लंबी है, जो कुशालनगर, मैसूर, श्रीरंगापटनम, त्रिरुचिरापल्ली, तंजावुर और मइलादुथुरई जैसे शहरों से गुजरती हुई तमिलनाडु से बंगाल की खाड़ी में गिरती है। कावेरी विवाद की जड़ 19वीं शताब्दी तक जाती है लेकिन इस मुद्दे का हल आज तक नहीं निकला है। ये विवाद वैसे तो चार राज्यों के बीच का है लेकिन नदी जल बंटवारे पर सबसे ज्यादा दो राज्यों में विवाद है। कर्नाटक और तमिलनाडु में इस नदी के जल पर निर्भर लाखों परिवारों के लिए काफी भावनात्मक मसला है।

नदी का इतिहास

कावेरी एक अंतरराज्यीय नदी बेसिन है। इसकी शुरुआत कर्नाटक से होती है और ये नदी बंगाल की खाड़ी में जाकर खत्म हो जाती है। इस दौरान ये तमिलनाडु और पुदुचेरी से होकर गुजरती है। कावेरी बेसिन का जल संभ्रण इलाका कुल 81,155 वर्ग किलोमीटर है। इसमें से 34,273 वर्ग किलोमीटर कर्नाटक में है। 2,866 वर्ग किलोमीटर केरल में और बाकी 44,016 वर्ग किलोमीटर तमिलनाडु और पुदुचेरी में है। लेकिन पानी को लेकर मुख्य विवाद तमिलनाडु और कर्नाटक के बीच है। दोनों ही राज्य सिंचाई के पानी की जरूरत की वजह से कावेरी के मुद्दे पर दशकों से लड़ रहे हैं। दोनों ही राज्य अपने किसानों की बदहाली का हवाला देते हैं। ये विवाद भी आज का नहीं है और न ही इसे हल करने की कोशिशे नई हैं।

विवाद का इतिहास

कावेरी पर पहला कानूनी विवाद 19वीं शताब्दी के दौरान सामने आया। जब भारत में रियासतें थीं और अंग्रेजों का राज था। एक तरफ मैसूर राजघराना था और दूसरी तरफ मद्रास प्रेसिडेंसी थी। 1881 में जब तत्कालीन मैसूर राज्य ने कावेरी पर एक बांध बनाने का निर्णय लिया तो तत्कालीन मद्रास राज्य ने इस पर आपत्ति की। ब्रिटिश शासन काल में पहली बार 1892 में मद्रास प्रेसिडेंसी और मैसूर रियायत के बीच समझौता हुआ। 1924 में एक बार फिर कावेरी जल को लेकर विवाद हो गया और मामला कोर्ट में गया। लेकिन इस बार इसके जल के दावेदारों में दो नाम और जुड़ चुके थे– केरल और पुदुचेरी। उस वक्त सभी पक्षों के बीच समझौता कराया

गया और ये 50 सालों के लिए था। लेकिन 1947 में भारत आजाद हो गया और सभी रियासतें अब भारतीय गणराज्य का हिस्सा हो गई। मैसूर और मद्रास प्रेसिडेंसी बन गई कर्नाटक और तमिलनाडु राज्य।

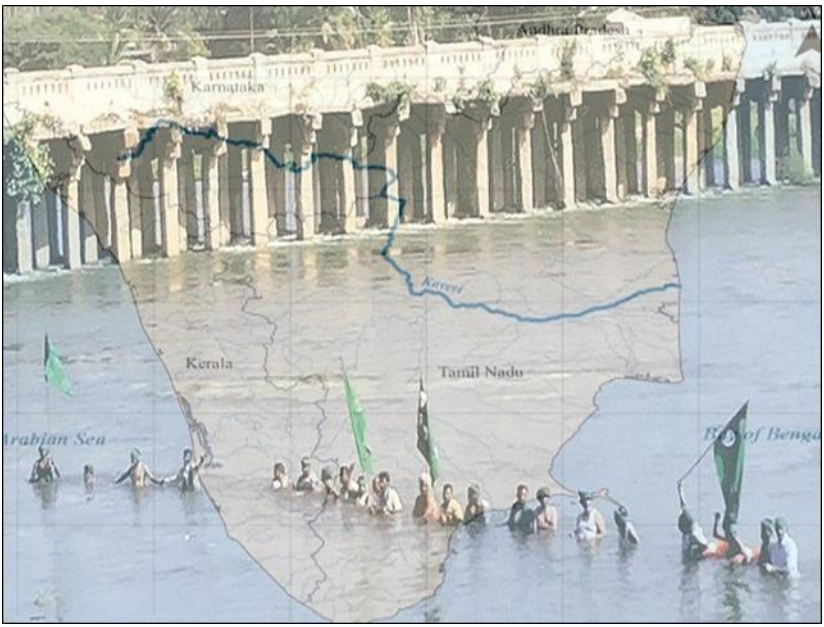

जल के पीछे वास्तविक अन्तर राज्य संघर्ष का एक उदहारण है शरत के दो राज्यों के बीच नदी जल विवाद के प्रमाण अक्सर देखने को मिलते है। प्रमाण के आभाव में भी यह कहा जा सकता है कि केवल जल के पीछे ही इतिहास में विभिन्न युद्ध लड़े गए हैं। जब पानी की कमी राजनीतिक तनाव का कारण बनता है, तो इसे जल तनाव कहा जाता है। जल तनाव अक्सर क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर संघर्ष का कारण रहा है। जल तनाव संघर्ष और राजनीतिक तनाव को भी बढ़ावा दे सकते हैं चाहे वह पानी से सम्बंधित न भी हों। समय के साथ ताजे पानी की गुणवत्ता या मात्रा जनसंख्या की सेहत गिराते हुए आर्थिक विकास में अवरोधक भी हो सकती है और क्षेत्रीय अस्थिरता बढ़ा सकती है।

जल सम्बंधित संघर्ष और तनाव संभावित राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर भी है, विपत्तिकालीन नदी घाटी के निचले हिस्सों में चीन के दक्षिणी क्षेत्र उदाहरण के लिए पीली नदी या थाईलैंड में चाओ फ्राय नदी (Chao Phraya River) कई वर्षों से जल सम्बंधित तनाव से पीड़ित हैं इसके अतिरिक्त, चीन, भारत, ईरान और पाकिस्तान जैसे शुष्क देश जो भारी मात्रा में सिंचाई के लिए निर्भर हैं, वह विशेष रूप से जल सम्बंधित संघर्ष के जोखिम क्षेत्र में हैं राजनीतिक तनाव, नागरिक विरोध और हिंसा भी पानी के निजीकरण की प्रतिक्रिया हो सकते हैं। हम विभिन्न रूपों में जल का उपयोग

करते हैं हम पानी का उपयोग तैराकी जैसे मनोरंजन के लिए करते हैं हम वस्तुएं धोने के लिए पानी का उपयोग करते हैं। पानी बिजली और सिंचाई के लिए प्रयोग किया जाता है। यह पौधों को सींचने के काम आता है खेती बाड़ी और फसल बढ़ाने में जल का उपयोग होता है।

जल संसाधनों के उपयोग की समस्याएँ

सभी के लिए पेय जल हेतु स्वच्छ जल का अभाव है।

जलके प्रदूषण या उसकी गुणवत्ता की समस्या है।

पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उ.प्रदेश में जल के अति दोहन की समस्या है।

समुद्र में जाने वाले जल के उपयोग को सुलभ बनाने के लिए तकनीक का अभाव है।

जल संरक्षण की नव–तकनीकः शूगर्भं जलाशयों के निर्माण की नव–तकनीक का विकास करके भूमिगत जल का संरक्षण किया जाता है। इसमें सिद्वांत रूप में सूखे मौसम में भूमिगत जल के अत्यधिक उपयोग द्वारा भूमिगत जल सतह के स्वाभाविक स्तर के काफी नीचे से इनका निर्माण और विकास किया जा सकता है।

केस स्टडीः– छत्तीसगढ़ में नई तकनीक से किया जा रहा है पानी संरक्षण

छत्तीसगढ़ में पानी की समस्या से निपटने के लिए, वैज्ञानिक तकनीक के जरिये, पानी को संरक्षित किया जा रहा है। इस तकनीक से अब तक 4 हजार 855 नरवा को पुनर्जीवित किया जा चुका है।

देश में बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण में वृद्धि और कृषि में विस्तार होने से पानी की मांग बढ़ती ही जा रही है। ऐसे में सतही पानी की बजाय ग्राउंड वॉटर का ज्यादा इस्तेमाल से पूरे विश्व के सामने पानी का संकट पैदा हो रहा है। गर्मियों के दिन में अक्सर नदी–नाले और जल स्रोत सूख जाते हैं। लोगों को पानी के समस्या से जूझना पड़ता है, ऐसे में इस दौर में भू–जल स्तर में सुधार किया जाना सबसे बड़ी चुनौती है। वहीं पानी की समस्या से निपटने के लिए छत्तीसगढ़ में नई तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है।

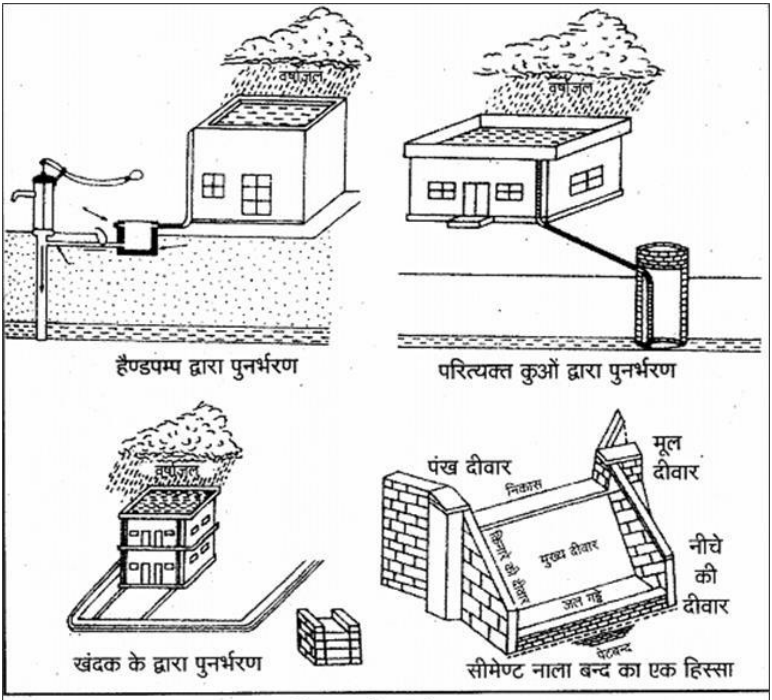

चित्र—वर्षाजल संग्रहण।

दरअसल पहाड़ियों से छोटी छोटी नदी और जलस्रोत निकलते हैं, यह अपने तेज बहाव के साथ दिशाहीन हो कर बहते हैं। इसके लिए वैज्ञानिक पद्धति से एक–एक नरवा (छोटी नदी) में करीब एक दर्जन अलग–अलग डेम बनाए जा रहे है। पहले डेम से तेज बहाव पर कंट्रोल किया जाता है, फिर अलग–अलग डेम के जरिए से पानी को इकठ्ठा किया जाता है। इससे जहां पहले गर्मियों के दिनों में पानी सूख जाता था, वहीं अब इन महीनों में भी पानी आसानी से उलब्ध है।

गूगल अर्थ से मिली सहायता

राज्य में नरवा विकास योजना जल संरक्षण किया जा रहा है। इसके लिए प्रदेश भर में वाटर रिचार्ज के गूगल अर्थ स्टूडियो से करीब 30 हजार छोटी नदियों की पहचान की गई है। इसमें से 8 हजार नरवा का ट्रीटमेंट किया जा रहा है, जबकि इस योजना से अब तक दो साल में 4 हजार 855 नरवा को पुनर्जीवित किया जा चुका है। इसके लिए 2019 से अब तक 88 लाख 79 हजार 216 संरचना स्वीकृत हुए है और कुल 9 हजार 834 किलोमीटर नरवा पुनर्जीवित किया गया है।

ढाई फीट तक बढ़ा वॉटर लेवल

वाटर रिचार्ज के लिए सर्वप्रथम बेस लाईन सर्वे के द्वारा नरवा की पहचान की जाती है। GIS पद्धति से DPR तैयार करना और क्षेत्रीय स्तर पर Ridge to Valley

के आधार पर काम को अंजाम दिया जाता है। इससे नरवा के कैचमेंट एरिया में ग्राउंड वाटर लेवल करीब ढाई फीट बढ़ गई है।

जल संरक्षण के लिए बनाए जा रहे हैं 17 प्रकार के डेम

छत्तीरगढ में वाटर रिचार्ज के लिए कई प्रकार के डेम बनाए जाते है। इसमें लूज बोल्डर चेकडैम, गेबियन संरचना, अर्दन डेम, वॉटर एब्जापर्शन ट्रेंच, स्टैगगर्ड कंटूर ट्रेंच/कंटिन्यूअस कंटूर ट्रेंच, अर्दन गल्ली प्लग, चेक डेम,स्टॉप डेम, पर्कुलेशन टैंक, तालाब/डबरी/वॉटरहोल, डाइक,30–30 मॉडल (वृक्षारोपण सहित), कंटूर बंड, तालाब गहरीकरण/स्टील रीमूवल, एनिकट बनाया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दत्त एंड सुंदरम् "भारतीय अर्थव्यवस्था" विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. चौहान "भारत का भूगोल" रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ।
3. डॉ. अल्का गौतम "भारत का वृह्द भूगोल" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009।
4. प्रो. आर. सी. तिवारी "भारत का भूगोल" प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. माधुर एवं नारायण "संसाधन भूगोल" वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
6. डॉ. चतुर्भुज मामोरिया, डॉ. बी.एल.शर्मा "संसाधन एवं पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
7. अरविन्द कुमार, ''भारत का भूगोल'' पेरियार प्रकाशन, पटना।
8. डॉ. प्रमिला कुमार, डॉ. श्रीकमल शर्मा, ''मध्य प्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2010।
9. एस. डी. मौर्य ''संसाधन भूगोल'' इलाहबाद पुस्तक भवन, इलाहबाद।
10. हुसैन माजिद, ''भारत का भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
11. झामोरिया, डॉ. चतुर्भुज, ''भारत का भूगोल'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
12. खुल्लर डी. आर., ''भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
13. कौशिक एस. डी. ''संसाधन भूगोल'' प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद।
14. सिसौदिया डॉ. एम.एस. ''संसाधन भूगोल'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
15. https://hi.wikipedia.org/wikiजल संसाधन
16. https://www.abplive.com/states/chhattisgarh/chhattisgarh-for-water-conservation-in-4855-small-rivers-have-revived-with-scientific-technology-ground-water-also-increased-ann-2065841
17. https://www.prabhasakshi.com/mri/cauvery-water-dispute-why-two-states-fighting-for-water-for-140-years

18. https://www.bspublications.com/books/1646455622-paryavaran-sanrakshan-evam-sansadhan-prabandhan-volume-1
19. https://www.geojournal.net/uploads/archives/4-1-3-384.pdf
20. https://www.geojournal.net/uploads/archives/3-1-3-478.pdf
21. http://www.ijcspub.org/papers/IJCSP21D1016.pdf
22. http://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2107067.pdf
23. https://ijarsct.co.in/jan1.html

अध्याय - 5
भारतीय कृषि का आधुनिकीकरण एवं प्रबंधन

लेखिका

डॉ. सुनिता सोलंकी

सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय,
बिछुआ, छिन्दवाड़ा, प्रदेश राज्य, भारत

अध्याय - 5

भारतीय कृषि का आधुनिकीकरण एवं प्रबंधन

डॉ. सुनिता सोलंकी

सारांश

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान सर्वोपरि है। देश के सकल राष्ट्रीय उत्पादन का लगभग 38 प्रतिशत अंश कृषि से प्राप्त होता है। चूंकि भारतीय कृषि क्षेत्र में 1967–68 के अल्पकाल में कृषि उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई और उसके बाद एक दीर्घावधि तक कृषि उत्पादन उच्च बना रहा। इस विकास चरण को हरित क्रांति के नाम से जाना जाता है। आधुनिक वैज्ञानिक प्रयास से आज कृषि में अनेक नवाचार एवं मशीनों का प्रदुर्भाव हुआ है। कृषक प्रमुख ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, नलकुप, पशु आहार काटने की मशीन थ्रेसर, क्रेन हार्वेस्टर, पुटेटों हावे, स्प्रींकलर सिस्टम आदि यंत्रों का प्रयोग अपनी सामर्थ्यता के अनुसार करता था। सम्पन्न कृषक द्वारा स्वयं कृषि यंत्र खरीद लिये जाते है। मध्यम एवं सीमांत कृषक इन मशीनों को किराये पर लेकर कृषि कार्य करवाते है। कृषि में इन यंत्रों का आगमन वैज्ञानिक खोजों के कारण हुआ। अतः अपने कार्य को आसान एवं आरामदायक बनाने के लिए अनेक वैज्ञानिक खोजे की गई जिनमें अनेक नवीन कृषि यंत्र एवं ऊर्जा के साधन, रासायनिक खाद व बीजों का आविष्कार हुआ हैं, चूंकि आधुनिक वैज्ञानिक यंत्र बिना ऊर्जा के चलना सम्भव नहीं, इसलिए कोयला, डीजल, पेट्रोलियम, विद्युत और अणुशक्ति आदि ऊर्जा के प्रमुख स्त्रोतों की भी शेष की गई है। उपर्युक्त मशीनें और ऊर्जा के स्त्रोतों की भी खोज की गई है। ऊर्जा के स्त्रोतों को कृषि कार्य में प्रयुक्त किया जाने लगा है। इन्हें आधुनिक कृषि तकनीकी के नाम से जाना जाता है।

प्रस्तावना

यंत्रीकरण कृषि उत्पादिता बढाने हेतु यांत्रिक शक्ति का प्रयोग हैं। फसल और उन्नत कृषि के लिए यांत्रिक शक्ति का उपयोग महत्वपूर्ण है। यंत्रीकरण का संबंध उन्नत कृषि यंत्रों से है जिनकी सहायता से प्रति इकाई उत्पादन लागत में कमी की जा सकती है व ऐसी भूमियों पर खेती सम्भव हो जाती है जो बंजर एवं कम उपजाऊ है। सघन एवं बहुफसली कृषि प्रणाली भी कृषि में नवीन व उन्नत कृषि औजारों की अपेक्षा करती है। यंत्रीकरण से एक और श्रम व मजदूरी में बचत होती है और दूसरी ओर कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है। विभिन्न कृषि कार्य इस प्रकार के है जिन्हें हाथ से करना अनुपयोगी और महॅगा होगा। यंत्रीकरण में प्रयोग किये जाने वाले यंत्रों को

दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम वर्ग में वे जो 'खींचने' का कार्य करते है। इसमें परती भूमि को खेती योग्य बनाने के लिए गहरी जड़ों वाली, घासों को भूमि से निकालने के लिए भूमि को समतल और रजवाहों के बनाने में व गहरी जुताई के लिए का प्रयोग किए जाने वाले यंत्र आते है। दूसरे में वे यंत्र है जो 'स्थिर' रहकर कार्य करते है। इनमें सिचाई के यंत्र, गन्ना पेरने के यंत्र, कुट्टी काटने वाले यंत्र–थ्रेसर आदि आते है।

कृषि यंत्रीकरण का अर्थ (Mechanisution of Agriculture)

जब परम्परांगत परम्परागत तकनीकी के स्थान पर आधुनिक यंत्र व उपकरणों से कृषि की जाती है तो इसे ''कृषि का यंत्रीकरण'' कहते है। यंत्रीकरण की परिभाषा इस प्रकार से दी जाती है। प्रो. भट्टाचार्य के अनुसार, ''कृषि कार्यों में यंत्रीकरण से आशय भूमि संबंधी कार्यों में जिन्हें प्रायः बैल–भैंस, घोड़े व अन्य पशुओं या अनिवार्य श्रम द्वारा किया जाता है, यांत्रिक शक्ति का प्रयोग करने से है।'' उदाहरण के लिए, खेती की जुताई व बुआई हल के स्थान पर ट्रैक्टर से करना, फसल काटने का काम हार्वेस्टर से करना, फसल गाहने का काम थ्रेसर से करना, सिंचाई का काम ट्यूबबैल या पम्पिंग सैट से करना आदि। आज जब विश्व अणु क्रांति के युग से गुजर रहा है, भारतीय कृषक खुरपी व लकड़ी का हल लिये ही परम्परागत ढंग से कृषि कर रहा है। वी. पी. सिंह के अनुसार–कृषि में यंत्रीकरण दो प्रकार का होता है।

खेत में

रोपण के दौरान खेत में आधुनिक

हारवेस्टर

कंबाइन हार्वेस्टर

1. **पूर्ण यंत्रीकरण (Complete Mechanisation):** खेत में जुताई से लेकर मण्डी तक फसल पहुंचाने के सभी कार्यों से मशीनों का प्रयोग होना पूर्ण यंत्रीकरण कहलाला है। यह तरीका अमेंरिका में अपनाया गया है।
2. **आंशिक येत्रीकरण (Partial Mechanisation):** कुछ कार्यों में मशीनों का प्रयोग हो तथा शेष कार्यो से मानवीय प्रयास निहित हो तो इसे आंशिक यंत्रीकरण कहते है। आंशिक यंत्रीकरण भारत में अपनाया गया है। कृषि के मशीनीकरण में निम्न प्रमुख यंत्रों का प्रयोग होता है।

1. **ट्रैक्टरः** इसके द्वारा भूमि जोती जाती है।
2. **कम्बाइड ड्रिलः** इसके द्वारा खाद व बीच एक साथ डाले जा सकते है।
3 **हार्वेस्टरः** यह मशीन फसलों की कटाई में सहायक होती है।
4. **प्लान्टरः** यह मशीन भूमि कुरेदती है और बीज बोती है।
5. **थ्रेसरः** यह मशीन गेहूं गाहने के काम में लाई जाती है।
6. **कैशरः** मशीन से गन्ने को पेलकर रस निकाला जाता है।
7 **पम्पिंग सैटः** इसके द्वारा खेत में कृत्रिम रूप में पानी पहुंचाया जाता है।

इन मशीनों के अतिरिक्त और भी बहुत सी मशीनें होती है। जैसे कुट्टी काटने की मशीन, मक्का के दाने निकालने की मशीन, चावल निकालने की मशीन आदि जिनका प्रयोग कृषि में किया जाता है।

उत्पादन एवं उत्पादन फलन (Production and Production Function)

सृजन सामर्थ्य भूमि की अनुपम और अपौरुषेय सामर्थ्य है। प्रकृति एवं मातृत्ववत भूमि भी उत्पादक है। इसलिए भूमि में मातृत्व अभिकल्पित है। प्रकृतिवादी अर्थशास्त्री तो कृषि को ही उत्पादक व्यवसाय मानते थे। भूमि से बहुविध फसलों का उत्पादन होता है। सामान्य बोलचाल की भाषा में वस्तु के सृजन से आशय उत्पादन से है। अर्थशास्त्र में मानवीय प्रयत्नों से फसल के अतिरिक्त यंत्र, सीमेंट, वस्त्र अथवा प्रयोग की कोई भी वस्तु बनाना उत्पादन कहलाता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह माना जाता है कि व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार वस्तु के स्वरूप में परिवर्तन करता है, अधिक उपयोगी बनाना है जिसे उत्पादन कहा जाता है। इसलिये अर्थशास्त्र में उत्पादन का अर्थ किसी वस्तु में उपयोगिता सृजित करना अथवा उसकी उपयोगिता बढ़ाना होता है। इस प्रकार उत्पादन का अर्थ किसी पदार्थ के निर्माण से नहीं होता है, वरन इसका अभिप्राय ''वस्तु में मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट करने की योग्यजा, शक्ति या गुन में वृद्धि करना होता है।''

उपयोगिता के सृजन या वृद्धि करने की प्रक्रिया को उत्पादन कहा जाना है। उत्पादन प्रक्रिया द्वारा मनुष्य अनुपयोगी वस्तु को उपयोगी और कम उपयोगी वस्तु

को अधिक उपयोगी बनाता है। स्पष्ट है कि इन प्रक्रियाओं के अन्तर्गत किसी वस्तु का निर्माण नहीं किया जाता है, बल्कि वस्तु के स्वरूप को इस प्रकार परिवर्तित कर दिया जाता है कि उसमें उपयोगिता का सृजन हो जाता है। इसलिए उपयोगिता सृजन की प्रक्रिया को अर्थशास्त्र में, उत्पादन कहते हैं। कुछ अर्थशास्त्री उत्पादन के इस अर्थ से सहमत नहीं है उनका विचार है कि उत्पादन से आशय मूल्यों के सृजन (Creation of Values) से है। इस मत के कुछ अनुयायी अर्थशास्त्री 'आर्थिक उपयोगिताओं के सृजन (Creation of Economics Utilities) की प्रक्रिया को उत्पादन मानते है किसी वस्तु में मूल्य वृद्धि करना अथवा मूल्य का सृजन करना ही उत्पादन कहलाता है। वास्तव में वस्तु से उपयोगिता सृजन तथा मूल्य सृजन तभी होता है जबकि उसे मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति के लिए तुष्टिगुण का सृजन किया जाये। वस्तु के तुष्टिगुण को ही उपयोगिता कहा जाता है। अतः मूल्य सृजन और उपयोगिता का अभिप्राय समान है। किसी वस्तु की उपयोगिता से में वृद्धि के विविध माध्यम है यथा वस्तु के स्वभाव स्थान, स्वरूप आदि में परिवर्तन। कुछ वस्तुओं में उपयोगिता वृद्धि से भी होती है।

आधुनिकीकरण की आवश्यकता (Need for Modernisation)

भारत में कृषि का यंत्रीकरण अथवा आधुनिकीकरण एक विवाद का विषय रहा है। जो लोग आधुनिकीकरण का समर्थन करते है उनका कहना है कि इससे उत्पादकता में वृद्धि होती है। कृषि की अन्य लागतों जैसे बीजों, सिंचाई की सुविधाओं, उर्वरकों, आदि के अधिक प्रयोग की आवश्यकता तभी पड़ती है और इनका लाभ तभी प्राप्त होता है जबकि कृषि में पहले पर्याप्त मात्रा में शक्ति का प्रयोग सम्भव हो जोकि मशीन से ही हो सकता है। आधुनिकीकरण के आलोचकों का यह कहना है कि इससे भारत जैसे अतिरेक श्रम शक्ति वाले देश में बेरोजगारी की सम्भावनाएँ और अधिक बढ़ जाती है।

आधुनिकीकरण के पक्ष में तर्क (Arguments for Modernisation)

1. आधुनिकीकरण एवं उत्पादकता (Modernisation and Productivity)

आधुनिकीकरण एवं उत्पादकता के बीच संबंध को प्रकट करने के लिए कई क्षेत्रीय अध्ययन किए गए है। लगभग सभी अध्ययनों का निष्कर्ष यही है कि आधुनिकीकरण उत्पादकता में वृद्धि करता है। आधुनिकीकरण तथा गैर यंत्रीकृत फार्म की उत्पादकता में लगभग 25 से 30 प्रतिशत का अन्तर होता है। मशीनों के प्रयोग से कृषि की, विभिन्न क्रियाओं जैसे जुताई, बुआई, उर्वरण, सिंचाई, कराई आदि का कार्य अधिक कुशलता से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए मानव शक्ति की सहायता से खेत में बीजारोपण और उर्वरकों के वितरण की तुलना में यह कार्य मशीनों की सहायता से अधिक कुशलता से सम्पन्न किया जा सकता है।

2. प्रति–इकाई कृषि उत्पादकता बढ़ने के कारण उत्पादन लागत घटती जाती है (Increase in Yield per unit gets translated in the lowering of the cost of production)

एक वाणिज्य बैंक ने इस सन्दर्भ में एक सर्वेक्षण किया है कि पशु शक्ति की तुलना में मशीन शक्ति द्वारा खेती की लागत कितनी होती है और निष्कर्ष पर पहुंची है, कि पहली क्रिया में लागत दूसरी क्रिया की तुलना में लगभग 50 प्रतिशत अधिक होती है। आधुनिकीकरण के कारण घटती हुई उत्पादन लागत को एक अन्य रूप में भी स्पष्ट किया जा सकता है। मशीन या तो कार्यरत रहती है या बेकार पड़ी रहती है। जब यह कार्य करती है तभी इसके लिए ईंधन, शक्ति या पूंजी के रूप में खर्चा करना पड़ता है। इसके विपरीत यदि पशु शक्ति किसी समय काम में नहीं आ रही है तो भी उसके खाने पर व्यय करना पड़ता है। चूँकि भारत के अधिकांश भागों में कृषि कार्य 6 या 7 महीने तक ही सीमित रहते है इसलिए किसानों कों बैलों की खुराक पर 5 या 6 महीने अनावश्यक व्यय करना पड़ता है।

3. आधुनिकीकरण से बहु–फसलों की क्रियाएँ संभव होती है (Modernisation makes adoption of multi-cropping practices possible)

एक मिश्रित हार्वेस्टर की सहायता से एक हैक्टेयर भूमि पर गेहूं की फसल को केवल 1.25 घण्टे में काटा जा सकता है और संग्रह के लिए साफ अनाज उपलब्ध हो जाता है। यदि इसी क्रिया को पशु शक्ति की सहायता से किया जाए तो इसके लिए 36 श्रम तथा 7 जोड़ी बैल दिनों की आवश्यकता होती है। इसके अलावा मनुष्य द्वारा फसलों की कटाई और सफाई की क्रियाओं में 15 दिन से भी अधिक समय लगता है और वह भी उस अवस्था में जबकि जलवायु, श्रम की पूर्ति आदि सामान्य हो। मशीनों की सहायता से फसलों की शीघ्र कटाई के कारण खेत जल्दी ही अगली फसल के लिए तैयार किया जा सकता है, जिससे बहु फसलों की सम्भावनाएँ बढ़ जाती है।

4. आधुनिकीकरण एवं रोजगार (Modernisation and Employment)

यह एक सामान्य धारणा है कि आधुनिकीकरण से बेरोजगारी बढ़ती है क्योंकि मशीन तेजी और कुशलता से कार्य करती है और मानव शक्ति का प्रतिस्थापित कर देती है। प्रो. राजकृष्ण ने 1968–69 और 1973–74 में गेहूँ के फार्मों पर किए गए अध्ययनों के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि मशीनी के प्रयोग के कारण उपरोक्त अवधि में श्रम का प्रयोग प्रति हैक्टेयर 557.7 घण्टे से घटकर 464.1 घण्टे रह गया है, अर्थात् श्रम प्रयोग में लगभग 16.5 प्रतिशत की कमी हुई है। इस अध्ययन है है कि मशीनों के उपयोग से फार्म की क्रियाओं के लिए श्रम घण्टों में कमी होती है।

लेकिन आधुनिकीकरण के रोजगार पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करते समय हमको इसके अप्रत्यक्ष प्रभावों का भी अध्ययन करना चाहिए। प्रत्यक्ष रूप से मशीन श्रम शक्ति को प्रतिस्थापित करती है। आधुनिकीकरण के अप्रत्यक्ष प्रभाव बहुत

महत्वपूर्ण है, जोकि निम्नलिखित है–

अ) आधुनिकीकरण से कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता दोनों में वृद्धि होती है उत्पादकता में होने वाली वृद्धि का प्रभाव आधुनिकीकरण के कारण श्रमिकों की संख्या में कमी के कारण प्रति संतुलित हो जाता है।

ब) कई अध्ययनों से इस बात की भी पुष्टि होती है कि ग्रामीण क्षेत्रों के में श्रमिकों की गरीबी के कारण वे जीवन निर्वाह के लिए किसी भी रोजगार को स्वीकार करने के लिए उद्यत रहते है, जिसके कारण अति रोजगार की अवस्था उत्पन्न होती है। जैसे ही श्रमिकों के आय के स्तर में वृद्धि होती है बच्चे और महिलाएँ काम पर आना बंद कर देते है जिसके परिणामस्वरूप कार्य करने के लिए उत्सुक लोगों की पूर्ति कम हो जाती। यदि हम इस बात को ध्यान में रखे कि ग्रामीण जनसंख्या का 57 प्रतिशत भाग 15 वर्ष से कम अथवा 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों से संबंधित है और 15 वर्ष से 60 वर्ष तक के आयु वर्ग में युवक केवल 23 प्रतिशत है, तो भारत से ग्रामीण श्रमिकों का कुल अनुपात का 34 प्रतिशत होना एक बड़ी उपलब्धि लगता है। यदि उत्तरकाशी की जनसंख्या का 64 प्रतिशत भाग कार्यशील जनसंख्या कहा जाता है तो इसका अर्थ यह है कि वहाँ गरीबी के कारण लोग किसी भी रोजगार के अवसर को प्राप्त करने के लिए तत्पर रहते है। इस प्रकार का अति–रोजगार सामाजिक रूप से अनुचित है। मशीनों के प्रयोग से इस स्थिति में संतुलन लाने का प्रयत्न किया जाता है।

स) कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिनमें श्रम की पूर्ति की दशा को देखते हुए मशीनों के प्रयोग के बारे में बातचीत ही नहीं की जा सकती। हार्वेस्टरों के गुण एवं दोषों का विश्लेषण करते हुए NCAER (National Council of Applied Economic Resaearch) के एक अध्ययन में कहा गया है कि ''कृषि क्रियाओं में फसल काटना सबसे अंतिम क्रिया है। कुशल कटाई के अभाव में उत्पादित फसल का एक बड़ा भाग उपभोग के लिए उपलब्ध नहीं होगा। प्रत्येक फसल की कटाई के लिए एक आदर्श समय होता हैं : कटाई कार्य उसी समय में पूरा हो जाना चाहिए। यदि कटाई कार्य के लिए पर्याप्त मात्रा की श्रम शक्ति उपलब्ध नहीं है तो मशीन के प्रयोग के अलवा कोई विकल्प नहीं है। फसलों की बुआई और कटाई के समय श्रम की कमी एक वास्तविकता है। इन कार्यों को मशीन के प्रयोग के द्वारा आसानी से सम्पन्न किया जा सकता है।

4. आधुनिकीकरण के फलस्वरूप फार्म से बाहर भी रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, मशीनों के निर्माण अतिरिक्त हिस्सों के वितरण, ईधन तथा चिकनाई, उपकरणों की मरम्मत आदि में काफी लोगों को रोजगार मिलता है। इस प्रकार यदि आधुनिकीकरण के प्रत्यक्ष प्रभावों

के कारण श्रम में बेरोजगारी उत्पन्न हो जाती हैं तो इसमें फार्म से बाहर अतिरिक्त रोजगार के अवसर उत्पन्न करके प्रतिसंतुलित कर दिया जाता है।

5. आधुनिकीकरण के अन्य धनात्मक सामाजिक आर्थिक प्रभाव (Other positive Socio-Economics Effects of Modernisation) मशीनो का ग्रामीण जीवन के स्वरूप को सुधारने में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान होता है। जब–जब एक ट्रैक्टर गाँव में जाता है वह तकनीकी क्रांति उत्पन्न करता है। इससे गाँवों के तकनीकी ज्ञान की मात्रा में अभिवृद्धि होती है और ग्रामीण औद्योगीकरण के लिए आधार तैयार होता है।

कृषि विकास में मशीन इसलिए भी उत्प्रेरक नहीं है क्योंकि देश के अधिकांश भागों में किसान केवल उतना ही उत्पादन करना चाहत हैं, जोकि उनकी जरूरतों के लिए पर्याप्त हो। किसान भूमि की उत्पादक शक्ति का पूर्ण उपयोग करना नहीं चाहते, लेकिन यदि एक किसान ट्रैक्टर के द्वारा खेती करता है तो उसे प्रतिवर्ष बैंक को 10,000 रुपए के ऋण व ब्याज के भुगतान 10,000 रूपए ईंधन चिकनाई, तथा कार्यगत व्यय आदि के भार को वहन करने के लिए अधिक उपज का उत्पादन करना पड़ेगा। विभिन्न राज्यों में ट्रैक्टरों के प्रयोग के ऑकड़ो से इस बात की पुष्टि होती है कि किसान ट्रैक्टरों की लागत को वहन करने में सफल हुए है।

आधुनिकीकरण के विपक्ष में तर्क या आधुनिकीकरण की सीमाएं (Arguments Against or Limitations of Modernisation)

आधुनिकीकरण के प्रमुख शेष अथवा सीमाएं निम्नलिखित है–

1. यह बेरोजगार को बढ़ावा देता है। हम इस प्रश्न पर पहले विस्तार से चर्चा कर चुके है और इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि यद्यपि आधुनिकीकरण के प्रत्यक्ष प्रभावों के कारण बेरोजगारी उत्पन्न होती है, लेकिन फार्म से बाहर उत्पन्न हुई रोजगार की नई 'सुविधाओं या अवसरों के कारण यह प्रभाव प्रतिसंतुलित हो जाता है।
2. छोटे आकार के खेतों पर कृषि उपकरणों और मशीन का प्रयोग सम्भव नहीं होता। यदि इनका प्रयोग किया जाये तो यह अमितव्ययी सिद्ध होता है। लेकिन यह दोष मशीनों का नहीं है इसके लिए इस प्रकार की फार्म मशीनरी का विकास और उत्पादन करना चाहिए, जोकि छोटे आकार के खेतों के लिए उपयुक्त हो। जापान में दो पहिये वाले ट्रैक्सों का प्रयोग शुरू कर दिया गया है जिसका छोटे आकार के खेतों पर कुशलता के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

3. यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि भारत की खनिज तेल की पूर्ति के लिए विदेशों पर बड़ी मात्रा में निर्भर रहना पड़ता है। यदि मशीनों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता है तो ईंधन की समस्या और गम्भीर हो जाएगी। लेकिन हाल ही में भारत ने देश के नये क्षेत्रों में क्रूड़ तेल की पूर्ति को बढ़ाने के सफल प्रयास किये है। इसके अतिरिक्त यदि देश अन्य वस्तुओं के निर्यातों में वृद्धि करने में सफल हो जाता है तो उसे खनिज तेल के आयात में अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

4. छोटे किसान अपनी सूक्ष्म बचतों में ऊँची कीमत वाली मशीनें खरीदने की क्षमता नहीं रखते है। इसलिए, भारतीय सन्दर्भ में किसनों की दुर्बल आर्थिक स्थिति के कारण मशीनों का उपयोग सम्भव नहीं हो सकेगा। लेकिन यदि हम इस तर्क को स्वीकार कर ले तो इसका अर्थ यह होगा कि हम नई तकनीक के लाभों को प्राप्त करने के इच्छुक नहीं है। नई तकनीक की सफलता बहुत बड़ी सीमा तक उत्कृष्ट कृषि आगतों के प्रयोग पर निर्भर करती हो।

5. यह तर्क भी प्रस्तुत किया जाता है कि भारत में कृषि मशीनरी के निर्माण की पर्याप्त क्षमता विद्यमान नहीं है तथा तकनीकी ज्ञान का भी अभाव है। लेकिन यह तर्क भी उचित नही है, क्योंकि योजनाकाल में देश के औद्योगीकरण के क्षेत्र में काफी प्रगति की है और तकनीकी ज्ञान का भी समुचित मात्रा में विकास हुआ है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते है भारत में वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पूर्णरूप से आधुनिकीकरण की अपनाना उचित नहीं होगा। लेकिन हम भविष्य में आधुनिकीकरण के बारे में नीति का निर्धारण अवश्य कर सकते है। यदि भारत भविष्य में कृषि उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि करना चाहता है तो उसे अभी से आंशिक आधुनिकीकरण की नीति को अपनाना होगा जिससे भविष्य में पूर्ण आधुनिकीकरण के लिए आधारभूत ढाँचे का निर्माण हो सके। भारत के समक्ष आधुनिकीकरण का कोई विकल्प नहीं सन् 2021–2022 में कृषि के अन्तर्गत प्रमुख फसलों का उत्पादन 315.7 मिलियन हेक्टेयर शुद्ध बोये गये क्षेत्र के लिए 100 मिलियन एन.पी. शक्ति की आवश्यकता व्यक्त की गयी।

कृषि का आधुनिकीकरण एवं तकनीक का चयन (Modernisation of Agriculture and Choice of Technology)

उपर्युक्त विवेचन में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि कृषि के आधुनिकीकरण का आशय मानव एवं पशु शक्ति को मशीन द्वारा प्रतिस्थापित करने से हैं। उदाहरण के लिए खेतों को टैक्टरों की सहायता से जोता जाता है। क्पत्रि (Souring Machine) की सहायता से बोआई एवं खाद डाला जाता है, फसल को संयुक्त लुनेए सहायता से काम और साफ किया जाता है, पम्पिंग सैटों की की सहायता से खेतों में पानी

दिया जाता है छिड़कने की मशीन (Sprayer) की सहायता से खेतों में कीटनाशक दवाइयाँ एवं जन्तु नाशक दवाइयों को छिड़का जाता है। आदि के इस प्रकार आधुनिकीकरण में खेत को साफ करने से लेकर उपज के विपणन तक के सभी काम मशीनों की सहायता से किये जाते है। हम यह भी स्पष्ट कर चुके है कि कृषि की नई तकनीक का आशय परम्परागत कम उपज देने वाले बीजों के अधिक उपज देने वाले बीजों के (HYV) द्वारा प्रतिस्थापित करने से है। नई तकनीक में केवल (HYV) बीजों का ही प्रयोग नहीं किया जाता बल्कि आगतों के एक समूह–बीज–उर्वरक–पानी का प्रयोग किया जाता है।

यद्यपि इस बात के विरुद्ध कोई तकनीको तर्क नहीं है कि नई तकनीकी का आशय कृषि के आधुनिकीकरण से होना चाहिए, लेकिन इस संबंध में कई महत्वपूर्ण आर्थिक तक प्रस्तुत किये जा सकते है कि नई तकनीक एवं आधुनिकीकरण को एक साथ अपनाया जाना चाहिए। जहाँ तक लागत का प्रश्न है, नई तकनीक परम्परागत तकनीक से कहीं अधिक महँगी हूँ। कृषक उसी दशा में आधुनिकीकरण के साथ नई तकनीक का प्रयोग करेगा जबकि उसे प्रीत हैक्टेयर अधिक उपज, प्रति–व्यक्ति घण्टे, प्रति–रुपये निवेश और लाभ की ऊँची दर प्राप्त होती है। नई तकनीक से कृषक जोखिम में कमी और लाभों में वृद्धि कर सकता है। उदाहरण के लिए अनिश्चित मानसून या भूतल सिंचाई की बजाय नल कूपों द्वारा, सिंचाई से अनिश्चितता में कमी और लाभों की मात्रा बढ़ जाती है। कई दशाओं में एक फसल के पकने और दूसरी की बोआई में लिए इतना कम समय अन्तराल होता है कि खेत की नई फसल तैयार करने के लिये ट्रैक्टर का उपयोग आवश्यक हो जाता है। इसलिए नई तकनीक के साथ कृषि के यंत्रीकरण का विचार बहुत तर्क संगत प्रतीत होता है। कई बार यह भी तर्क दिया जाता है कि श्रम की बजाय मशीन कम कठिनाई उपस्थित करती है। कृषि की नई तकनीक के साथ यंत्रीकरण के संबंध में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते हैः–

1. रोजगार तर्क (Employment Angument)

भारत की अपार जनसंख्या या मानव शक्ति को ध्यान में रखकर एक ऐसी व्यूहरचना को अपनाने की आवश्यकता है जो कि श्रम का प्रतिस्थापन नहीं करती हो, इसके बजाय इसकी सहायता से अर्थव्यवस्था में रोजगार के नये अवसर उत्पन्न होने चाहिए। सामान्यतया, ट्रैक्टर, संयुक्त हारवेस्टर्स तथा थ्रेशर श्रम का प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्थान करत हैं, लेकिन इस सम्बन्ध में किए विभिन्न अध्ययनों में विरोध देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए प्रो. हनुमन्थाराव ने पंजाब के सन्दर्भ में एक अध्ययन के दौरान बताया है कि यद्यपि ट्रेक्टर के प्रयोग से श्रम शक्ति का प्रत्यक्ष प्रतिस्थापन होता है, लेकिन इसके उपयोग से श्रम को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर उपलब्ध होते है, जिसके कारण ट्रैक्टर के उपयोग से रोजगार के उपर शुद्ध प्रभाव बहुत कम होता है। पंजाब के सन्दर्भ में ही एक अन्य अध्ययन में बिलिंगस एवं सिंह

ने बताया है कि 10 एकड़ से अधिक क्षेत्र वाले फार्म पर सिंचाई के उपकरणों के प्रयोग से श्रम की माँग बढ़ती है, जबकि ट्रेक्टर या गेहूँ काटने की मशीन के प्रयोग से इसकी माँग कम हो जाती है।

HYV तकनीक अपेक्षा सिंचाई एवं फसलों की गहनता से श्रम शक्ति की माँग में अधिक मात्रा में वृद्धि होती है। लेकिन जिन क्षेत्रों में नई तकनीक के साथ बदु फसलों का भी प्रयोग होता है वहाँ श्रम की माँग में वर्ष भर वृद्धि होती है। यह बात बहुत विडम्बना से परिपूर्ण है कि HYV तकनीक तथा कृषि के आधुनिकीकरण को एक साथ अपनाने पर रोजगार के अवसरों में सदैव वृद्धि नहीं होती है। ऐसे विकसित क्षेत्रों में जहाँ श्रम प्रधान बड़े फार्म स्थित है और मजदूरी की दर बहुत ऊँची है, तो वहाँ फसल गहनता में वृद्धि से फार्म की कार्य प्रणाली में आधुनिकीकरण की अधिक आवश्यकता पड़ती है। ऐसे क्षेत्रों में फार्म रोजगार की मात्रा में शुद्ध वृद्धि बहुत सूक्ष्म होगी। इसलिए भारत की श्रम प्रधान और पूँजी से स्वल्पतावाली अर्थव्यवस्था में इस प्रकार की भूमि उपयोग की प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता है जिसमें कि श्रम का अधिक उपयोग सम्भव हो सके।

2. जोत के आकार का तर्क (Size of Holding Argument)

अन्य विचारकों का मत है कि नई तकनीक के साथ कृषि के आधुनिकीकरण को अपनाने की दर जोतों के आकार से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होती है। भारत में जोतों का औसत आकार 2.0 हैक्टेयर है, जबकि यह संयुक्त राज्य अमेंरिका में 123 हैक्टयर तथा कनाड़ा में 188, हैक्टेयर है। जहाँ तक नई तकनीक को अपनाने का प्रश्न है, बड़े और छोटे आकार की जोतें दोनों ही इसको समान क्षमता से उपयोग में ला सकती है। लेकिन छोटे किसान जिनके वित्तीय साधन सीमित हैं। HYV तकनीकों का उपयोग नहीं कर पाते है। इसलिए नई तकनीक का प्रयोग केवल बड़ी जोतों के स्वामी ही कर पाते हैं। जिनकी संख्या हमारे देश में बहुत कम है। जब नई तकनीक के साथ आधुनिकीकरण के प्रश्न पर विचार करते है तो विदित होता है कि बड़े आकार की जोतों की प्रतियोगिता में छोटी आकार की जाते नही टिक पाती है। आधुनिकीकरण को अपनाने के लिए यह आवश्यक है कि जोत का आकार आर्थिक रूप से व्यवहार्य (Viable) होना चाहिए। छोटे आकार की जोतों पर भारी मशीनों जैसे 25 से 30 हार्सपॉअर के ट्रैक्टर, संयुक्त हारवेस्टर्स, थ्रेशर्स, बुलडोजर्स आदि का प्रयोग न केवल कठिन होता है अपितु अमितव्ययी भी होता है। छोटी जोतों के स्वामी नई तकनीक एवं आधुनिकीकरण की ऊँची लागत को वहन नहीं कर सकते।

3. वित्तीय तर्क (Finance Argument)

नई तकनीक एवं आधुनिकीकरण के परिणाम बहुत उत्साहवर्धक हो सकते है, लेकिन इस समस्या का अध्ययन भारत में वित्त की उपलब्धि के संदर्भ में करना होगा। अर्थशास्त्रियों एवं सामाजिक मानव–वैज्ञानिकों ने नई तकनीक एवं आधुनिकीकरण के असमान अंतर वैयक्तिक प्रभावों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। सामान्यतः यह तर्क

प्रस्तुत किया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में नई तकनीक एवं आधुनिकीकरण के लाभ बड़े किसान को ही प्राप्त हुए है, जिसके कारण बड़े किसान एव छोटे किसानों और भूमिहीन श्रमिकों के बीच आय की असमानताओं में अधिक वृद्धि हुई हैं। बड़े किसान को नई तकनीक के लाभ इसलिए प्राप्त नहीं हुए है क्योंकि उनके पास बड़े आकार की जोतें है, बल्कि इसलिए क्योंकि वे अधिक धनी हैं।

ग्रिफिन ने यह तथ्य उजागर किया है कि निर्धन देशों में श्रम एवं पूँजी के लिए साधन बाजार अपूर्ण हैं, क्योंकि दोनों ही साधन केवल बड़े किसानों को अधिक अनुकूल कीमतों पर उपलब्ध होते हैं। नई तकनीक का प्रयोग छोटे और बड़े किसान दोनों ही समान साथ कुशलता के साथ कर सकते हैं, लेकिन छोटे किसान व्यवहार में इसको नहीं अपना पाते है। इसका प्रमुख कारण यह है कि उनके पास वित्तीय साधनों का अभाव बना रहता है और इसके अतिरिक्त बड़े किसान उत्पादन को बढ़ाने के लिए आवश्यक आगतों जिसकी कि पूर्ति स्वल्प होती है अपने अधिकार में कर लेते है।

4. प्रादेशिक कारण (Regional Factors)

भारत एक विशाल देश है जोकि पूर्व से पश्चिम तक 3,000 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण तक 3,200 किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। प्रादेशिक भिन्नताओं के कारण देश के सभी क्षेत्रों में नई तकनीकों और आधुनिकीकरण की समान कुशलता के साथ लागू करना सम्भव नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों में साधनों की उपलब्धता में अन्तर होता है। नई तकनीक एवं आधुनिकीकरण उन क्षेत्रों के लिए उपयुक्त सिद्ध नहीं होता, जहाँ श्रम की बाहुल्यता और पूँजी का अभाव हुँ। नई तकनीक से उन क्षेत्रों में कृषि का विकास हो सकता है जहाँ श्रम की पूर्ति अल्प है तथा पूँजी के निवेश की मात्रा अधिक है। भारत में HYV तकनीक का प्रयोग पंजाब, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, आदि क्षेत्रो में किया गया है जहाँ भूमि श्रम अनुपात तथा मजदूरी की दर ऊँची है, और जहाँ संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इन क्षेत्रों में HYV तकनीक के उपयोग से पहले ही सिंचाई एवं फसलों की गहनता विद्यमान थी. यद्यपि HYV तकनीक को अपनाने के बाद इनमें भी विस्तार हुआ है।

5. कृषि आगतों की उपलब्धता (Availability of the Agricultural Inputs)

नई तकनीक की मौलिक तकनीकी विशेषता यह है कि इसमें बहुत सी कृषि आगतों का प्रयोग एक साथ या संयुक्त रूप से करना पड़ता है। नई कृषि आगतों का उत्पादन प्रायः कारखानों में होता है, जैसे कि रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक दवाइयाँ, पम्प, फार्म मशीनरी आदि। फार्म आगतों की उपलब्धि से सम्बन्धित दो समस्याएँ हैं

1) छन आगतों की पर्याप्त मात्रा में पूर्ति होनी चाहिए तथा।
2) उचित कीमतों पर आगतों की उपलब्धि।

जहाँ तक भूमि और श्रम के अतिरिक्त अन्य कृषि आगतों का प्रश्न है, तकनीकी आन्दोलन के दौरान इनकी पूर्ति अपर्याप्त रही है। रासायनिक खाद, ट्रेक्टर, हारवेस्टर्स, टिलर्स, थ्रेशर्स, पम्पिंग सेट, डीजल इन्जन आदि की पूर्ति इनकी मांग की तुलना में कम है। रासायनिक खाद के प्रयोग के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन भारत में सार्वजनिक सिंचाई प्रणाली पर्याप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था करने में असफल रही है। कुँए से सिंचाई की स्थिति भी अधिक अच्छी नहीं है। इसी प्रकार रासायनिक खाद की कृषि का आधुनिकीकरण एवं व्यवसायीकरण मांग की तुलना में इसकी पूर्ति बहुत कम है। भारत को रासायनिक खाद की पूर्ति के लिये विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है तथा इनके आयात में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ उपस्थित होती है। फार्म मशीनरी की उपलब्धि भी अपर्याप्त हैं। ट्रेक्टरीकरण की योजना के संदर्भ में आर. के. रथ का कहना है कि ''यद्यपि यह योजना केवल विद्यमान सिंचित क्षेत्रों तक ही सीमित है, लेकिन भविष्य में ट्रेक्टरों की कुल माँग की वर्तमान 52000 से बढ़ाकर 22 लाख तक किया जा सकता है।''

6. किसानों का व्यवहार (Farmers Attitude)

नई तकनीक एव यंत्रीकरण के सम्बन्ध में औसत भारतीय किसान के इनके प्रति व्यवहार के संदर्भ में अध्ययन किया जाना चाहिए। वास्तव में किसान को ही इन तकनीकों का अन्ततः उपयोग करना है। नई तकनीक की सबसे बड़ी सीमा यह है कि इसका प्रयोग कुछ क्षेत्रों या कुछ किसानों तक ही सीमित रहा है। पहाड़ी क्षेत्रों, राजस्थान के दूर दराज स्थित ग्रामीण क्षेत्रों, बिहार और मध्य प्रदेश के निर्धनता ग्रस्त इलाकों आदि में रहने वाले कृषकों को नई तकनीक के बारे में जानकारी भी है, वे अपर्याप्त ज्ञान अपर्याप्त वित्तीय साधनों तथा निवेश के जोखिम के कारण इस तकनीक का प्रयोग करने में समर्थ रहे हैं। इस सन्दर्भ में किये गये विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि नई तकनीक पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विभिन्न सिंचित क्षेत्रों में ही विशेष रूप से लागू हो सकी है।

कृषि आधुनिकीकरण

कृषि आधुनिकीकरण की हानियां (Disadvantages of Mechanisation) चौ. चरण सिंह के अनुसार कृषि आधुनिकीकरण तथा बड़े–बड़े फार्मों पर कृषि करना भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। कृषि का यंत्रीकरण अमेरिका और रूस से संभव है क्योंकि अमेंरिका में कृषि पर जनसंख्या का भार बहुत कम है। इसी प्रकार रूम में जहां कृषि का आधुनिकीकरण हो गया है वहां बड़े–बड़े फार्मों पर व्यक्तिगत रूप से खेती करना निषेध है इसके विपरित भारत में न तो रूस की तरह कृषि का राष्ट्रीयकरण हो सकता है और न ही अमेरिका जैसी स्थिति उत्पन्न की जा सकती है। भारतीय बैल सदा ही कृषि के आधारस्तम्भ रहेंगे। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, 'यदि भारत में बैल के स्थान पर ट्रैक्टरों से काम आरम्भ कर दिया जाए तो न केवल मनुष्य बेकार हो जायेगें वरना पशु सम्पत्ति का भी ह्रास होगा और भारतीय ग्राम्य अर्थव्यवस्था शोचनीय हो जायेगी।

ट्रैक्टरों का प्रयोग भारतीय कृषि के लिए लाभदायक सिंद्ध नहीं हो सकता। टैक्टर जमीन को बहुत गहरा खोदता है। अतः कुछ वर्षों बाद जमीन की उत्पादन शक्ति क्षीण हो जाएगी और बिना खाद व उर्वरक दिए उत्पादन घट जाएगा। अमेंरिका में भारत की अपेक्षा खेती बहुत समय से हो रही है। आज अमेंरिका की उत्पादन शक्ति इतनी कम हो गई है कि भरपुर मात्रा में खाद दिये बिना अधिक उत्पादन नहीं हो सकता। इसका अर्थ यह है कि यदि हम ट्रैक्टर का प्रयोग करेंगे तो वर्तमान में भले ही लाभ मिले परन्तु भविष्य अवश्य ही अंधकारमय है।

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि भारतीय कृषि की समस्या यंत्रीकरण से नहीं सुलझ सकती। कृषि की समस्याएँ तो सिंचाई तथा खाद की सुविधाएं बढ़ाने से सुलझेगी। यदि ये दोनों सुविधाएं भारतीय किसान को मिल जाएं तो उत्पादन बहुत बढ़ सकता है। हाल ही में हुई फसल प्रतियोगिता ने यह सिद्ध कर दिया है कि सिंचाई और खाद की सुविधा प्राप्त होने से उत्पादन दुगना, तिगुना तक किया जा सकता है। अतः उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषि अनुसंधान किया जाए, भूमि सुधार हो तथा ग्रामीण और कृषि विभाग के अफसरों के बीच सहकारिता और सद्भावना हो।

कृषि विभाग द्वारा उन्नतशील वैज्ञानिक यंत्रों को कृषि में प्रयोग में लाने के लिए अनेक प्रयत्न किए गए है। इन यंत्रों में लोहे के हल, गन्ने से रस निकालने वाले कोल्हू–लोहे की रहट, चारा काटने की मशीन, फसल बोने व काटने के यंत्र रबड़ के टायर की बैलगाड़ियॉ, खुरपी आदि मुख्य है। आजकल भारतीय ग्रामों में कुओं से पानी निकालना, अजाज पीसना, गन्ना और तिलहन पेरना आदि कार्यों में मशीनों का प्रयोग होने लगा है। तेल के इंजन और मोटरों का प्रयोग भी अधिकाधिक हो रहा है।

निष्कर्ष (Conclusion)

विदेशों में नई तकनीकों एवं आधुनिकीकरण के उपयोग से कृषि उत्पादन और उत्पादकता में जो असाधारण वृद्धि हुई है, उससे यह आशा बॅधती है कि भारत में भी इन विधियों के उपयोग से कृषि उत्पादकता में वृद्धि हो सकती है। नई तकनीक एवं आधुनिकीकरण को बड़े पैमाने पर इसलिए लागू नहीं किया जा सका है क्योंकि यह एक सामान्य भ्रॉन्ति है कि बड़े पैमाने पर आधुनिकीकरण के लिए जोतों का आकार बड़ा होना चाहिए। इस बात में कोई सन्देह नही है कि भारत में नयी तकनीक और आधुनिकीकरण को अपनाने में कई कठिनाईयाँ उपस्थित होती है, लेकिन हमको जितना आधुनिकीकरण आर्थिक और तकनीकी रूप से संभव है, उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। भारत में अधिकांश जोतों पर 28 से 35 हार्सपॉवर के ट्रेक्टर एक विलासिता की वस्तु हो सकती है, लेकिन 8 से 12 हॉर्सपावर के ट्रैक्टर या पावर टिलर के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है। भारत में जोतों के आकार एवं अपर्याप्त वित्त के कारण नई तकनीक एवं आधुनिकीकरण का प्रयोग सीमित रहा है। लेकिन इन दोनों बाधाओं को जोतों की चकबन्दी एवं साख की संस्थागत व्यवस्था

के द्वारा दूर किया जा सकता है और कुछ क्षेत्रों में दूर भी किया गया है। यह बात भी सत्य है कि हम भारत में पूँजी प्रधान विधियों का प्रयोग सीमित मात्रा में ही कर सकते है, लेकिन इस प्रकार की फार्म मशीनरी का अविष्कार किया जा सकता है जिसका प्रयोग छोटे आकार की जोतों पर अधिक श्रम शक्ति की सहायता से किया जा सकता हो। वास्तव में यंत्रीकरण में भारतीय कृषि के विकास की संभावनाएं निहित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. डॉ. बद्री विशााल त्रिपाठी, "भारतीय कृषि" (2008), किताब महल, इलाहबाद, ISBN:81-225-0400-0
2. डॉ. बी. एल. माथुर, "कृषि वित्त" (2010), अर्जुन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, ISBN: 978-81-8330-195-4
3. सांख्यिकी सर्वेक्षण, भारत (2021)
4. बंसल एस.सी. "भारत का भूगोल" मिनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
5. चौहान "भारत का भूगोल" रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ।
6. डॉ. अल्का गौतम "भारत का वृह्द भूगोल" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009।
7. प्रो. आर. सी. तिवारी "भारत का भूगोल" प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
8. माधुर एवं नारायण "संसाधन भूगोल" वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
9. डॉ. चतुर्भुज मामोरिया, डॉ. बी.एल.शर्मा "संसाधन एवं पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
10. अरविन्द कुमार, ''भारत का भूगोल'' पेरियार प्रकाशन, पटना।
11. डॉ. अल्का गौतम, ''संसाधन एवं पर्यावरण'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2007।
12. आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।
13. https://www.bspublications.com/books/1646455622-paryavaran-sanrakshan-evam-sansadhan-prabandhan-volume-1
14. डॉ पी के गुप्ता, कृषि अर्थशास्त्र, वृंदावन प्रकाशन आगरा, तृतीय संस्करण ISBN-978-81-8281-439-4

अध्याय - 6
भारत में उर्जा संसाधन

लेखिका

मीना ठाकरे

सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, छिन्दवाड़ा, प्रदेश राज्य, भारत

डॉ.सी.पी. राहंगडाले

कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपाट, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

अध्याय - 6

भारत में उर्जा संसाधन

मीना ठाकरे एवं डॉ. सी. पी. राहंगडाले

सारांशः

ऊर्जा संसाधन आधुनिक दुनिया में उपयोग किए जाने वाले सभी प्रकार के ईंधन हैं, या तो हीटिंग के लिए, विद्युत ऊर्जा के उत्पादन के लिए, या ऊर्जा रूपांतरण प्रक्रियाओं के अन्य रूपों के लिए। ऐसे संसाधन जिनका उपयोग ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए किया जाता है, ऊर्जा संसाधन कहलाते है। ऊर्जा के स्रोतों को दो भागों में बाँटा जा सकता है– नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत, अनवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोत। हमारे देश में व्यापारिक स्तर पर उपयोग किए जाने वाले तीन प्रमुख ऊर्जा संसाधन हैं–कोयला, खनिज तेल अथवा पेट्रोलियम तथा जलविद्युत, और परमाणु। इसके अतिरिक्त जीवाश्म प्राकृतिक गैस, परमाणु ऊर्जा, पवन चक्की, ज्वारीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा, भूगर्भिक ऊर्जा आदि भी देश की ऊर्जा आपूर्ति में कुछ योगदान करते हैं।

शब्दावलीः ऊर्जा संसाधन, ऊर्जा स्रोत, नवीकरणीय, अनवीकरणीय, प्राकृतिक।

प्रस्तावनाः

हमारे पर्यावरण में उपलब्ध हर वह वस्तु संसाधन कहलाती है जिसका इस्तेमाल हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कर सकते हैं, जिसे बनाने के लिये हमारे पास प्रौद्योगिकी है और जिसका इस्तेमाल सांस्कृतिक रूप से मान्य है। आज के समाज की अधिकांश गतिविधियों के लिये ऊर्जा अत्यंत आवश्यक है। इसके प्रयोग या उपभोग को सामान्यतः जीवन स्तर के सूचकांक के रूप में देखा जा सकता है। हम ऊर्जा को जलावन की लकड़ी, जीवाश्म ईंधन, एवं विद्युत के रूप में उपयोग करते हैं जिससे हमारा जीवन आरामदायक और सुविधाजनक बनता है।

संसाधन के प्रकार

संसाधन को विभिन्न आधारों पर विभिन्न प्रकारों में बाँटा जा सकता हैः–

- **उत्पत्ति के आधार परः** जैव और अजैव संसाधन।
- **समाप्यता के आधार परः** नवीकरण योग्य और अनवीकरण योग्य संसाधन।
- **स्वामित्व के आधार परः** व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संसाधन।

- **विकास के स्तर के आधार पर:** संभावी, विकसित भंडार और संचित कोष।

उत्पत्ति के आधार पर संसाधन के प्रकार

- **जैव संसाधन:** वैसे संसाधन जैव संसाधन कहलाते हैं जो जैव मंडल से मिलते हैं। उदाहरण–मनुष्य, वनस्पति, मछलियाँ, प्राणिजात, पशुधन, आदि।

जैव संसाधनों को जैव अर्थव्यवस्था के केंद्रों में से एक माना जाता है। एक ओर, ये रोजगार सृजन और व्यक्तियों और उद्योगों के लिए पर्याप्त आय के लिए जिम्मेदार हैं जो सामूहिक रूप से राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं। हालाँकि, दूसरी ओर, जैव संसाधनों का अत्यधिक दोहन पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न कर सकता है और पर्यावरण को नष्ट कर सकता है। इसी प्रकार, इन जैव संसाधनों के अनुचित उपयोग के प्रतिकूल सामाजिक और आर्थिक प्रभाव हो सकते हैं। इसके अलावा, जैव संसाधनों के उपयोग के कारण विभिन्न पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक प्रभावों भी देखने को मिलते है।

- **अजैव संसाधन:** वैसे संसाधन अजैव संसाधन कहलाते है जो निर्जीव पदार्थों से मिलते हैं। उदाहरण– मिट्टी, हवा, पानी, धातु, पत्थर, आदि।

अजैविक संसाधन निर्जीव प्राकृतिक संसाधन हैं जो पृथ्वी से आते हैं, जैसे खनिज, जल, वायु और भूमि। ये संसाधन मनुष्यों सहित जीवित जीवों के अस्तित्व और भलाई के लिए आवश्यक हैं। अजैविक संसाधनों को अक्सर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता हैरू नवीकरणीय, गैर–नवीकरणीय और प्रवाह संसाधन। नवीकरणीय अजैविक संसाधन वे हैं जिन्हें समय के साथ प्राकृतिक रूप से फिर से भर दिया जा सकता है, जैसे कि पानी और हवा। गैर–नवीकरणीय अजैविक संसाधन वे हैं जो परिमित हैं और जिनकी भरपाई नहीं की जा सकती है, जैसे कि जीवाश्म ईंधन और खनिज। प्रवाह संसाधन वे हैं जो स्वाभाविक रूप से होते हैं और ऊर्जा के लिए उपयोग किए जा सकते हैं, जैसे कि धूप और ज्वार। अजैविक संसाधन अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और हजारों वर्षों से मनुष्यों द्वारा उपयोग किए जाते रहे हैं। हालांकि, गैर–नवीकरणीय संसाधनों की कमी और अत्यधिक उपयोग हाल के वर्षों में एक प्रमुख चिंता का विषय बन गया है, जो इन संसाधनों के स्थायी प्रबंधन और संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

समाप्यता के आधार पर संसाधन के प्रकार

- **नवीकरण योग्य संसाधन:** कुछ संसाधन ऐसे होते हैं जिन्हें हम भौतिक, रासायनिक या यांत्रिक प्रक्रिया द्वारा नवीकृत या पुनः उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे संसाधन को नवीकरण योग्य संसाधन कहते हैं। उदाहरण– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल, जीव जंतु, आदि।

- **अनवीकरण योग्य संसाधनः** कुछ संसाधन ऐसे होते हैं जिन्हें हम किसी भी तरीके से नवीकृत या पुनः उत्पन्न नहीं कर सकते हैं। ऐसे संसाधन को अनीवकरण योग्य संसाधन कहते हैं। उदाहरण–जीवाष्म ईंधन, धातु, आदि। इन संसाधनों के निर्माण में लाखों वर्ष लग जाते हैं। इसलिए इनका नवीकरण करना असंभव होता है। इनमें से कुछ संसाधनों को पुनः चक्रीय किया जा सकता है, जैसे कि धातु। कुछ ऐसे संसाधन भी होते हैं जिनका पुनः चक्रीकरण नहीं किया जा सकता है, जैसे कि जीवाष्म ईंधन।

नवीकरणीय और अनवीकरणीय संसाधनों में अंतरः–

आधार	नवीकरणीय संसाधन	अनवीकरणीय संसाधन
रिक्तिकरण	अक्षय संसाधनों को समय के साथ समाप्त नहीं किया जा सकता है।	गैर–नवीकरणीय संसाधन समय के साथ समाप्त हो जाते हैं।
सूत्रों के अनुसार	नवीकरणीय संसाधनों में सूरज की रोशनी, पानी, हवा और गर्म झरनों और फ्यूमरोल जैसे भू–तापीय स्रोत भी शामिल हैं।	गैर–नवीकरणीय संसाधनों में कोयला और पेट्रोलियम जैसे जीवाश्म ईंधन शामिल हैं।
पर्यावरणीय प्रभाव	अधिकांश नवीकरणीय संसाधनों में कम कार्बन उत्सर्जन और कम कार्बन पदचिह्न होते हैं।	अधिकांश नवीकरणीय संसाधनों में कम कार्बन उत्सर्जन और कम कार्बन पदचिह्न होते हैं।
लागत	नवीकरणीय ऊर्जा की अग्रिम लागत अधिक है। उदाहरण के लिए, अक्षय ऊर्जा पर चलने वाली तकनीकों का उपयोग करके बिजली पैदा करना जीवाश्म ईंधन से पैदा करने की तुलना में महंगा है।	गैर–नवीकरणीय ऊर्जा की प्रारंभिक लागत तुलनात्मक रूप से कम होती है।
अवसंरचना आवश्यकताएँ	नवीकरणीय ऊर्जा के संचयन के लिए अवसंरचना निषेधात्मक रूप से महंगी है और अधिकांश देशों में आसानी से उपलब्ध नहीं है।	अधिकांश देशों में गैर–नवीकरणीय ऊर्जा के लिए लागत प्रभावी और सुलभ बुनियादी ढांचा उपलब्ध है।
क्षेत्र आवश्यकताएँ	एक बड़े भूमिध्अपतटीय क्षेत्र की आवश्यकता होती है, विशेष रूप से पवन फार्मों और सौर फार्मों के लिए।	तुलनात्मक रूप से कम क्षेत्र की आवश्यकताएं।

दिलचस्प बात यह है कि यूरेनियम जैसे कुछ संसाधनों को नवीकरणीय संसाधन के रूप में जाना जाता है। हालाँकि, यह अभी भी बहस का विषय है क्योंकि कई वैधानिक परिभाषाओं के अनुसार यूरेनियम वास्तव में एक नवीकरणीय संसाधन नहीं है।

स्वामित्व के आधार पर संसाधनों के प्रकार

- **व्यक्तिगत संसाधनः** वैसे संसाधन व्यक्तिगत संसाधन कहलाते हैं जिनका

स्वामित्व निजी व्यक्तियों के पास होता है। उदाहरण– किसी किसान की जमीन, घर, आदि।

- **सामुदायिक संसाधनः** वैसे संसाधन सामुदायिक संसाधन कहलाते हैं जिनका स्वामित्व समुदाय या समाज के पास होता है। उदाहरण– चारागाह, तालाब, पार्क, शमशान, कब्रिस्तान, आदि।
- **राष्ट्रीय संसाधनः** वैसे संसाधन राष्ट्रीय संसाधन कहलाते हैं जिनका स्वामित्व राष्ट्र के पास होता है। उदाहरण– सरकारी जमीन, सड़क, नहर, रेल, आदि।
- **अंतर्राष्ट्रीय संसाधनः** वैसे संसाधन अंतर्राष्ट्रीय संसाधन कहलाते हैं जिनका नियंत्रण अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा किया जाता है। इसे समझने के लिये समुद्री क्षेत्र का उदाहरण लेते हैं। किसी भी देश की तट रेखा से 200 किमी तक के समुद्री क्षेत्र पर ही उस देश का नियंत्रण होता है। उसके आगे के समुद्री क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय संसाधन की श्रेणी में आता है।

चित्र 1: संभावित संसाधन

विकास के स्तर के आधार पर संसाधन के प्रकार

- **संभावी संसाधनः** किसी भी देश या क्षेत्र में कुछ ऐसे संसाधन होते हैं जिनका उपयोग वर्तमान में नहीं हो रहा होता है। इन्हें संभावी संसाधन कहते हैं। उदाहरण–गुजरात और राजस्थान में उपलब्ध सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा।
- **विकसित संसाधनः** वैसे संसाधन विकसित संसाधन कहलाते हैं जिनका सर्वेक्षण हो चुका है और जिनके उपयोग की गुणवत्ता और मात्रा निर्धारित हो चुकी है।

- **भंडारः** कुछ ऐसे संसाधन होते हैं जो उपलब्ध तो हैं लेकिन उनके सही इस्तेमाल के लिये हमारे पास उचित टेक्नॉलोजी का अभाव है। ऐसे संसाधन को भंडार कहते हैं। उदाहरण– हाइड्रोजन ईंधन। अभी हमारे पास हाईड्रोजन ईंधन के इस्तेमाल लिये उचित टेक्नॉलोजी नहीं है।
- **संचित कोषः** यह भंडार का हिस्सा होता है। इसके उपयोग के लिये टेक्नॉलोजी तो मौजूद है लेकिन अभी उसका सही ढ़ंग से इस्तेमाल नहीं हो रहा है। उदाहरण–नदी के जल से पनबिजली परियोजना द्वारा बिजली निकाली जा सकती है। लेकिन वर्तमान में इसका इस्तेमाल सीमित पैमाने पर ही हो रहा है।

चित्र 2: संसाधन निर्माण

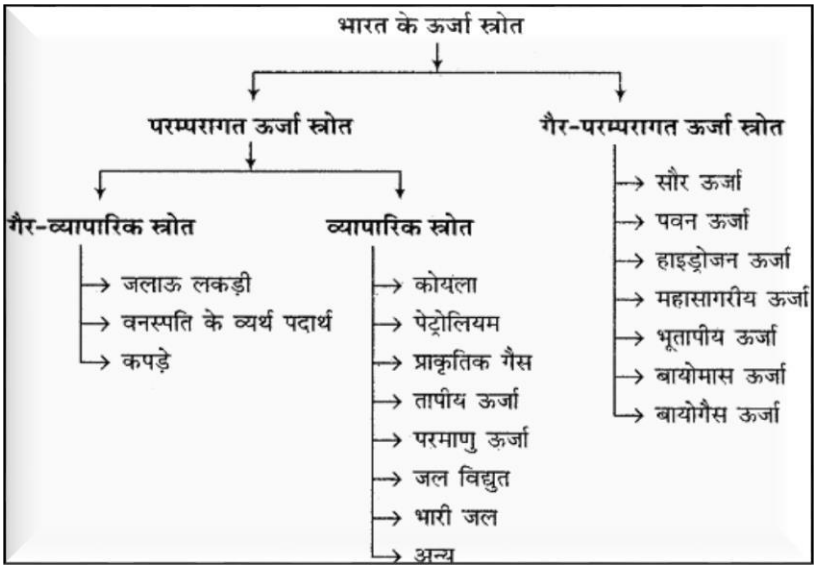

भारत में महत्वपूर्ण ऊर्जा संसाधनों का उत्पादन एवं वितरण प्रतिरूप निम्नवत है:

1. **कोयला (Coal):** यह औद्योगिक ईंधन के साथ–साथ विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चे माल का स्रोत भी है। कार्बन की घटती गुणवत्ता के अनुसार कोयले के प्रमुख प्रकार एन्थ्रासाइट (80-95%), बिटुमिनस (55-65%), लिग्नाइट (45-55%), पीट (35-45%) एवं केनाल है।

चित्र 3: कोयला खनन

1 अप्रैल, 2011 को किए गए सर्वेक्षण में कोयले की स्थिति 1,200 मी. गहराई तक कोयले के आधार पर भारतीय भू–विज्ञान सर्वेक्षण के अद्यतन आकलन में कोयले का भंडार 285.87 अरब टन है इसमें कोकिंग कोयला 33.47 अरब टन तथा नन कोकिंग कोयला 252.40 अरब टन है। देश में कोयले का समस्त उत्पादन का लगभग 77% भाग बिजली उत्पादन में खपत होता है।

भारत में आधुनिक ढंग से कोयला निकालने का प्रथम प्रयास पश्चिम बंगाल के रानीगंज कोयला क्षेत्र में किया गया। देश में प्राचीन काल की गोंडवाना शैलों में कुल कोयले का 98% भाग पाया जाता है, शेष 2% तृतीयक या टर्शियरी युगीन चट्टानों में मिलता है।

गोंडवाना युगीन चट्टानों का सबसे प्रमुख क्षेत्र पश्चिम बंगाल, झारखंड तथा ओडिशा राज्यों में विस्तृत है जहाँ से कुल उत्पादन का 76% कोयला प्राप्त होता है। मध्य प्रदेश तथा आंध्र प्रदेश गोंडवाना क्षेत्र के अन्य प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। गोंडवाना युगीन कोयला मुख्यतः बिटुमिनस प्रकार का हैं, जिसका उपयोग कोकिंग कोयला बनाकर देश के लौह–इस्पात के कारखानों में किया जाता है।

प्रायद्वीपीय भारत की नदी घाटियाँ कोयला के प्रमुख प्राप्ति स्थल है, जिनमें दामोदर नदी घाटी, सोन–महानदी–ब्राह्मणी नदी घाटी, वर्धा–गोदावरी–इंद्रावती नदी घाटी तथा कोयल–पंच–कान्हन नदी घाटी प्रमुख है। पश्चिम बंगाल का रानीगंज कोयला क्षेत्र ऊपरी दामोदर घाटी में है जो देश का सबसे महत्वपूर्ण एवं बड़ा कोयला क्षेत्र है।

इस क्षेत्र से देश का लगभग 35% कोयला प्राप्त होता है। झारखंड राज्य में झरिया, बोकारो, गिरिडीह, करनपुरा, रामगढ़ आदि क्षेत्रों से उत्तम कोटि का बिटुमिनस कोयला निकाला जाता है।

छत्तीसगढ़ का तातापानी–रामकोला कोयला क्षेत्र, ओडिशा का तलचर कोयला क्षेत्र (ब्राह्मणी नदी घाटी) व आंध्र प्रदेश का सिंगरेनी कोयला क्षेत्र (कृष्णा–गोदावरी नदी घाटी) भी प्रमुख कोयला उत्खनन क्षेत्र हैं।

टर्शियरी युगीन कोयला के सबसे प्रमुख क्षेत्र मालूम (आसाम), नेवेली (तमिलनाडु, लिग्नाइट कोयले के लिए प्रसिद्ध) तथा पलना (राजस्थान) हैं। भारत में लिग्नाइट का सर्वाधिक भंडार तमिलनाडु के मन्नारगुडी (19,500 मिलियन टन) में होने का अनुमान लगाया जाता है।

चित्र 4: शुध्द कोयला

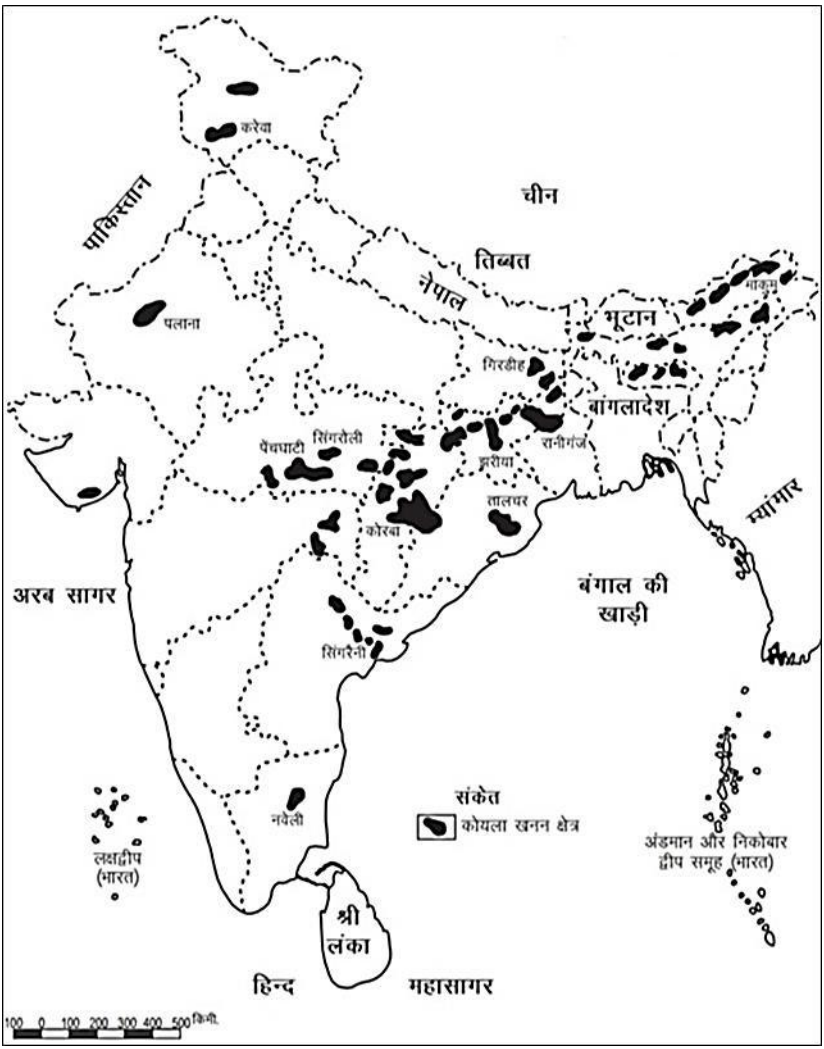

चित्र 5: भारत के नक्शे में कोयला क्षेत्र

2. खनिज तेल अथवा पेट्रोलियम (Mineral Oil or Petroleum)

तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ONGC) द्वारा 26 स्थलीय एवं सागरीय तेल संभावी बेसिनों का पता लगाया गया है। इसके अनुसार देश का कुल खनिज भंडार 1,750 लाख टन है। अन्तर्राष्ट्रीय भूगर्भिक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में खनिज तेल का भंडार 620 करोड़ टन है। देश के तीन प्रमुख क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ से खनिज तेल प्राप्त किया जा रहा है।

i) असम तेल क्षेत्र (Assam Oil Region)

यह देश का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्राचीन तेल क्षेत्र है। यहाँ के तेल क्षेत्रों में डिगबोई, नहरकटिया, हगरीजान–मोरान व सुरमा नदी घाटी प्रमुख है। हगरीजान–मोरान क्षेत्र में प्राकृतिक गैस भी पाई जाती है।

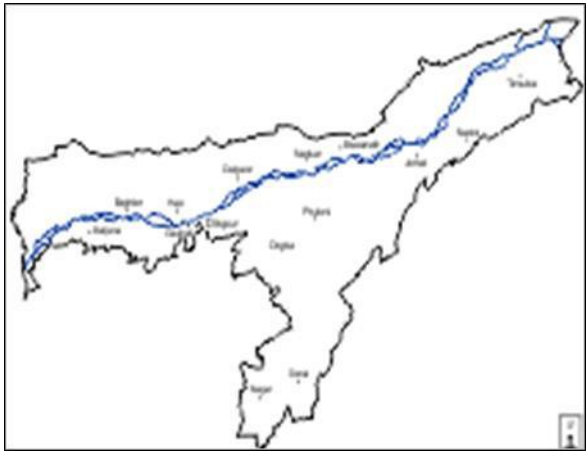

चित्र 6: असम तेल क्षेत्र

ii) गुजरात तेल क्षेत्र (Gujarat Oil Region)

गुजरात राज्य में खम्भात तथा अंकलेश्वर महत्वपूर्ण तेल क्षेत्र हैं। इसके अलावा नवगाँव, कोसाम्बा, ओल्पाद, ढीलका, मेहसाना, कलोल आदि स्थानों पर भी तेल क्षेत्र का विस्तार है। सौराष्ट्र में भावनगर से 45 किमी. दूर अलियाबेट द्वीप में भी तेल का पता लगाया जा चुका है।

iii) मुम्बई हाई क्षेत्र (Mumbai High Field)

मुम्बई तट से 176 किमी. दूर मुम्बई हाई क्षेत्र भी एक महत्वपूर्ण तेल क्षेत्र हैं जहाँ से 1976 ई. से ही तेल की प्राप्ति हो रही है। इस क्षेत्र के गंभीर सागरीय भाग से तेल निकालने के लिए जापान से 'सागर सम्राट' नामक जहाज मंगाया गया था। देश के कुल उत्पादन के 60% खनिज तेल की आपूर्ति इसी क्षेत्र से होती है।

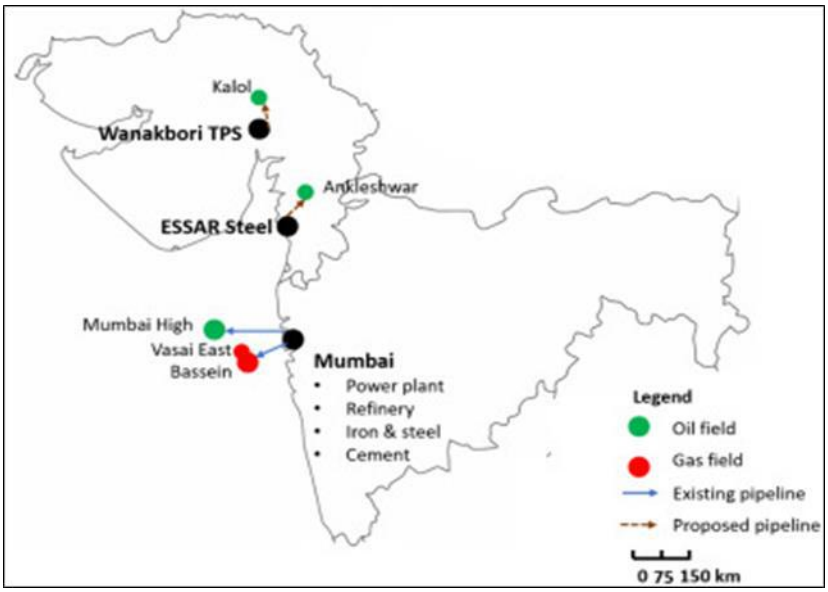

चित्र 7: गुजरात तेल क्षेत्र व मुम्बई हाई क्षेत्र

अपतटीय क्षेत्र खनन विकास एवं नियमन अधिनियम–1957 के अनुसार भारत के समुद्री क्षेत्र एवं महाद्वीपीय ढाल, अनन्य (EEZ) आर्थिक क्षेत्र एवं अन्य समुद्री क्षेत्रों में खनिज उत्खनन हेतु संपूर्ण शक्ति केन्द्रीय सरकार के पास है।

अपतटीय क्षेत्र के उत्पादित खनिज को राज्य के हिस्से में न जोड़कर अलग से अपतटीय क्षेत्र में दिखाया जाता है। अतः इसके उत्पादन को महाराष्ट्र के उत्पादन में शामिल नहीं किया जाता है। कच्चे तेल व प्राकृतिक गैस के उत्पादन में गुजरात का भारत में प्रथम स्थान है।

iv) वर्तमान में कृष्णा–गोदावरी नदी घाटी में 'रावा अपतट' से भी खनिज तेल का उत्खनन किया जा रहा है। राजस्थान के 'बाड़मेर' में केयर्न इनर्जी एवं ओएनजीसी के द्वारा संयुक्त रूप से 'मंगला' तेल क्षेत्र से वाणिज्यिक स्तर पर तेल उत्पादन प्रारंभ हो गया है।

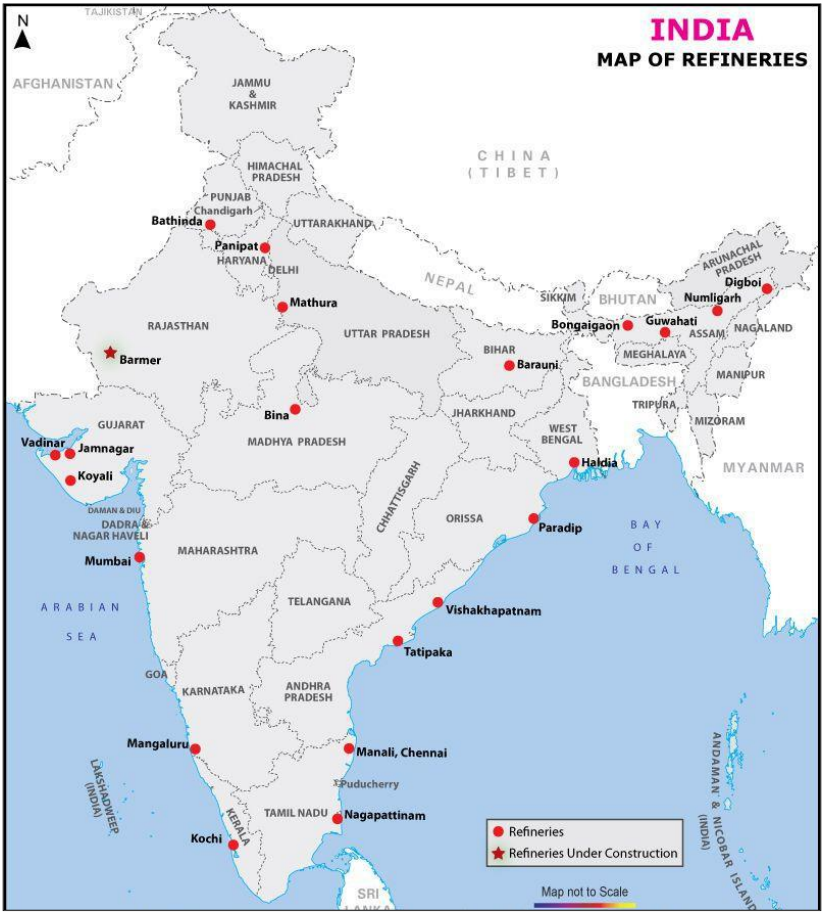

चित्र 8: भारत के नक्शे में खनिज तेल क्षेत्र

यह विगत दो दशकों में देश में तेल की सबसे बड़ी उपतटीय (On Shore) खोज है। इसके अलावा 'भाग्यम' व 'ऐश्वर्य' में भी तेल के प्रचुर भण्डार हैं। इन तीनों क्षेत्रों में संयुक्त रूप से निकासी योग्य तेल के भण्डार एक अरब बैरल आकलित किए गए है। मंगला क्षेत्र से अगले दो वर्षों में कुल स्वदेशी उत्पादन का 20 प्राप्त होगा।

मुम्बई हाई क्षेत्र प्राप्ति के अन्य संभावित क्षेत्रों का पता लगाने तथा उसके भंडारों के सर्वेक्षण के लिए 1956 ई. में 'तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम' (O-N-G-C-) की स्थापना की गई थी जबकि 1959 ई. में असम एवं अरूणाचल प्रदेश के तेल क्षेत्रों एवं भंडारों का पता लगाने तथा उनके विकास हेतु 'ऑयल इण्डिया लिमिटेड' (O-I-L-) का गठन किया गया।

ओएनजीसी ने पांचवीं पीढ़ी के अत्याधुनिक ड्रिल शिप 'बेल्फोर्ड डॉल्फिन' के द्वारा गहरे समुद्र में तेल की खोज के लिए 'सागर समृद्धि परियोजना' प्रारंभ किया है। यह समुद्र में 3,000 मी. की गहराई तक खुदाई करने में सक्षम है।

ओएनजीसी विदेश लिमिटेड (OVL) ने पूर्वी रूस के सखालीन द्वीप के तेल क्षेत्र में तेल एवं प्राकृतिक गैस के उत्पादन हेतु निवेश किया है जहाँ उसकी हिस्सेदारी 20% है। किसी भारतीय कंपनी का यह विदेश में सबसे बड़ा निवेश है। रूसी तेल क्षेत्र से पहला लदान अप्रैल, 2006 में प्रारंभ हो गया है।

3. प्राकृतिक गैस (Natural Gases)

प्राकृतिक गैस एक महत्वपूर्ण स्वच्छ ऊर्जा संसाधन है जो पेट्रोलियम के साथ–साथ एवं स्वतंत्र रूप से भी पाई जाती है। इसका प्रयोग उद्योगों में मशीनों को चलाने के लिए व विद्युत उत्पादन के लिए भी किया जाता है। रासायनिक उर्वरकों के निर्माण में भी इसका उपयोग किया जाता है। इसे पेट्रो रसायन उद्योग में एक औद्योगिक कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है।

कार्बन डाइऑक्साइड (CO_3) के कम उत्सर्जन के कारण प्राकृतिक गैस को पर्यावरण अनुकूल माना जाता है। इसलिए यह वर्तमान शताब्दी का ईंधन कहा जाता है। इसका परिवहन पाइप लाइन द्वारा कम लागत पर आसानी से दूर तक किया जा सकता है।

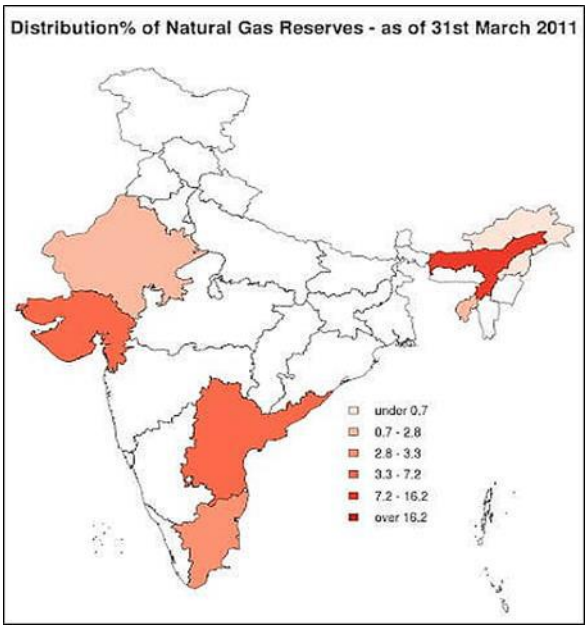

चित्र 9: प्राकृतिक गैस क्षेत्र

भारत में प्राकृतिक गैस को दो भागों में वर्गीकृत किया गया हैः–

i) घरेलू प्राकृतिक गैस

ii) आयातित LNG।

a) कंप्रेस्ट नेचुरल गैस (CNG)

प्राकृतिक गैस को वाहनों में प्रयोग करने के लिए 200–250 किग्रा. प्रति वर्ग सेमी. तक दबाया जाता है। इसलिए प्राकृतिक गैस के दबाए हुए रूप को कंप्रेस्ड नेचुरल गैस कहते हैं।

b) LNG (Liquefied Natural Gas)

मुख्यतः मीथेन निर्मित प्राकृतिक गैस होती है, जिसे भंडारण एवं परिवहन की सुविधा के दृष्टि से तरल रूप में परिवर्तित किया जाता है। LNG रंगहीन, गंधहीन एवं गैर विषैली होती है।

कृष्णा–गोदावरी बेसिन (के.जी. बेसिन)

आंध्र प्रदेश में यनम–काकीनाडा तट से 6 किमी. की दूरी एवं 5,061 मी. की गहराई पर प्राकृतिक गैस के नए भंडार मिले हैं। यह देश में प्राकृतिक गैस का अब तक का सबसे बड़ा भंडार है। निजी क्षेत्र की रिलांयस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (RIL) ने बंगाल की खाड़ी में स्थित कृष्णा–गोदावरी बेसिन (के.जी. बेसिन) के डी–6 ब्लॉक में 1 अप्रैल, 2009 से प्राकृतिक गैस का उत्पादन शुरू कर दिया।

रिलांयस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (RIL) को यह क्षेत्र नइ तेल खोज लाइसेंसिंग नीति के पहले दौर में आबंटित हुआ था। डी–6 ब्लॉक जब अपनी पूरी क्षमता से गैस का उत्पादन करेगा तब देश में गैस का घरेलू उत्पादन दोगुना हो जाएगा तथा इससे देश में गैस की मौजूदा आवश्यकता की 90 प्रतिशत भाग की पूर्ति हो जाएगी।

गहरे समुद्र से प्राप्त की गई इस गैस की काकीनाडा के समीप 'गाडीमोडा' गाँव में स्थापित केन्द्र से पाइप लाइन के माध्यम से देश के उर्वरक व विद्युत कम्पनियों गैस की आपूर्ति की जाएगी । नागार्जुन फर्टीलाइजर्स इसकी पहली ग्राहक व पहली ऐसी इकाई है जो बाजार आधारित कीमत पर मिलने वाले स्वच्छ ईंधन से चलेगी।

विदेशों में खोज (Looking Abroad)

म्यांमार के श्वे क्षेत्र में प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार का पता लगा है। इसका उत्पादन दिसंबर 2005 से प्रारंभ हो गया है। ओएनजीसी विदेश लिमिटेड (OVL) एवं भारतीय गैस प्राधिकरण लिमिटेड (GAIL) की भागीदारी इसमें क्रमशः 20% व 10% है दक्षिणी चीन सागर क्षेत्र में तेल व गैस की खोज हेतु भारत की ONGC तथा वियतनाम की कंपनी पेट्रो वियतनाम के बीच समझौता हुआ है।

भारत–रूस गैस हाइड्रेट सेन्टर (Indo & Russian Centre for Gas Hydrate)

समुद्र के तलहटी में लगभग 2 किमी. की गहराई पर गैस हाइड्रेट या क्लैथरैट (बर्फ में फंसी मीथेन गैस) होते हैं। विश्व में रूस एकमात्र देश है, जिसने साइबेरिया में गैस हाइडेरट से मीथेन गैस निकाला है।

भारत भी चेन्नई में रूस के सहयोग से गैस हाइड्रेट सेन्टर की स्थापना कर रहा है। गहरे समुद्र में इसके दोहन हेतु दोनों देशों के वैज्ञानिकों ने मिलकर 'रोसब' नामक रिमोट कंट्रोल यंत्र का विकास किया है।

संसाधनों का अंधाधुंध इस्तेमाल

- संसाधन का हमारे लिये बहुत महत्व है। संसाधनों के अंधाधुंध इस्तेमाल से कई समस्यॉ खड़ी हो रही हैं। कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं।
- कुछ संसाधन कुछ सीमित लोगों के हाथों में है। इससे वंचित लोगों को तकलीफ होती है।
- संसाधन के अंधाधुंध इस्तेमाल ने पूरी दुनिया में पर्यावरण की समस्या खड़ी कर दी है, जैसे कि ग्लोबल वार्मिंग, पारितंत्र पर खतरा, ओजोन लेयर मेंगसुराख, आदि।
- सतत् पोषणीय विकास के लिये संसाधन का समान रूप से वितरण और सही इस्तेमाल जरूरी है।

सतत् पोषणीय विकासः– ऐसे विकास को सतत् पोषणीय विकास कहते हैं, जब विकास होने के क्रम में पर्यावरण को नुकसान न पहुँचे और भविष्य की जरूरतों की अनदेखी न हो। संसाधनों के सही इस्तेमाल और सतत पोषणीय विकास के मुद्दे पर 1992 में रियो डे जेनेरो में अर्थ समिट का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में एक सौ राष्ट्राध्यक्ष शामिल हुए थे, जो एजेंडा 21 पर सहमत हुए थे। सतत् पोषणीय विकास और संसाधन का सही इस्तेमाल इस एजेंडा का मुख्य मुद्दा था। इस एजेंडा मे समान हितों, पारस्परिक जरूरतों और सम्मिलित जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए विश्व सहयोग की बात की गई है ताकि पर्यावरण की क्षति, गरीबी और रोगों से लड़ा जा सके।

ऊर्जा प्रबंधनः

ऊर्जा प्रबंधन के दो पहलू, ऊर्जा संरक्षण और मांग पक्ष प्रबंधन है। ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली की विशेषताओं के अंतर्गत ऊर्जा प्रबंधन कार्यों को सुव्यवस्थित करने के लिए एक ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली संगठनों के लिए एक व्यापक उपकरण होना चाहिए। इसे व्यवसायों को उनके ऊर्जा उपयोग का विश्लेषण करने, अपव्यय की पहचान करने और ऊर्जा में कमी के उपायों के कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान करने में मदद करनी चाहिए। अपनी पर्यावरणीय जिम्मेदारियों का प्रबंधन करते हुए पैसे की बचत करना

चाहिए। ऊर्जा प्रबंधन एक इमारत में उपयोग को संरक्षित करने के लिए ऊर्जा खपत को ट्रैक करने और अनुकूलित करने की प्रक्रिया है। ऊर्जा प्रबंधन की प्रक्रिया के कुछ चरण हैं– निरंतर डेटा एकत्र करना और उसका विश्लेषण करना। ऊर्जा दक्षता में सुधार के लिए उपकरण अनुसूचियों, निर्धारित बिंदुओं और प्रवाह दरों में अनुकूलन की पहचान करें।

ऊर्जा प्रबंधन का उद्देश्य पूरे संगठन में इष्टतम ऊर्जा खरीद और उपयोग को प्राप्त करना और बनाए रखना है तथा उत्पादन और गुणवत्ता को प्रभावित किए बिना ऊर्जा लागत/अपशिष्ट को कम करना, पर्यावरणीय प्रभावों को कम करना।

अतः ऊर्जा का प्रबंधन करने के लिए ट्यूब लाईट, बल्बों तथा अन्य उपकरणों पर जमी हुई धूल को नियमित रूप से साफ करें। हमेशा आईएसआई मुहर लगे बिजली उपकरणों और साधनों का प्रयोग करें। अपनी ट्यूब लाइट और बल्बों को ऐसी जगह लगाएँ जहाँ प्रकाश आने में दिक्कत न हो। ऊर्जा बचाने के लिए एलईडी बल्ब का प्रयोग करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. बंसल एस.सी. "भारत का भूगोल" मिनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
2. चौहान "भारत का भूगोल" रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ।
3. डॉ. अल्का गौतम "भारत का वृह्द भूगोल" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009।
4. प्रो. आर. सी. तिवारी "भारत का भूगोल" प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. माधुर एवं नारायण "संसाधन भूगोल" वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
6. डॉ. चतुर्भुज मामोरिया, डॉ. बी.एल.शर्मा "संसाधन एवं पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
7. अरविन्द कुमार, ''भारत का भूगोल'' पेरियार प्रकाशन, पटना।
8. डॉ. अल्का गौतम, ''संसाधन एवं पर्यावरण'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2007।
9. आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार।
10. डॉ. प्रमिला कुमार, डॉ. श्रीकमल शर्मा, ''मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2010।
11. डॉ. गायत्री प्रसाद, डॉ. राजेश नोटियाल, ''पर्यावरण भूगोल'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2012।
12. एस.डी. मौर्य ''संसाधन भूगोल'' इलाहबाद पुस्तक भवन, इलाहबाद।

13. हुसैन माजिद, ''भारत का भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
14. झामोरिया, डॉ. चतुर्भुज, ''भारत का भूगोल'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
15. खुल्लर डी.आर., ''भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
16. कौशिक एस.डी. ''संसाधन भूगोल'' प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद।
17. सिसौदिया डॉ. एम.एस. ''संसाधन भूगोल'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
18. हुसैन माजिद, ''भारत और विश्व का भूगोल'' टाटा मैक्ग्राहिल्स।
19. sscwill.in/2020/06/bharat-me-urja-sansadhan.html
20. https://www.bspublications.com/books/1646455622-paryavaran-sanrakshan-evam-sansadhan-prabandhan-volume-1
21. https://www.geojournal.net/uploads/archives/4-1-3-384.pdf
22. https://www.geojournal.net/uploads/archives/3-1-3-478.pdf
23. http://www.ijcspub.org/papers/IJCSP21D1016.pdf
24. http://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2107067.pdf
25. https://ijarsct.co.in/jan1.html

मानव अधिकार
नूतन प्रवृतियाँ एवं चुनौतियाँ

डॉ. बलीराम पवार डॉ. मनिता कौर विरदी डॉ. अभय विक्रम सिंह

Scanned with OKEN Scanner

मानव अधिकार नूतन प्रवृतियाँ एवं चुनौतियाँ

डॉ. बळीराम पवार
समाजशास्त्र विभागध्यक्ष,
महात्मा फुले कॉलेज किनगाव,
ता. अहमदपूर, जि. लातूर (महाराष्ट्र)

डॉ. मनिता कौर विरदी,
सहायक प्राध्यापक एवं विभागध्यक्ष,
राजनीति विज्ञान विभाग,
शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ,
जिला छिंदवाड़ा (म.प्र.)

डॉ. अभय विक्रम सिंह
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी बिहार

संस्कृती पब्लिकेशन, लातूर

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-960127-9-3

• **मानव अधिकार नूतन प्रवृतियाँ एवं चुनौतियाँ**

डॉ. बळीराम पवार, डॉ. मनिता कौर विरदी, डॉ. अभय विक्रम सिंह

© संपादक 2023

• **प्रकाशक**

संस्कृती पब्लिकेशन

गायकवाड निवास, गणेश नगर, जुना औसा रोड,
लातूर, ता. जि. लातूर - 413512.

मो नं - 9403163700

• **अक्षर मिलान**

श्री. विकास ढमाले, श्री. अनंत कोटीवाले

• **मुखपृष्ठ**

श्री. चंद्रकांत कांबळे

• **मुद्रक**

ज्योतीचंद्र ऑफसेट प्रिंटींग ॲन्ड बायडिंग,
एल.आय.सी. कॉलनी, लातूर.

• **प्रथम संस्करण : 1 दिसंबर 2023**

• **मुल्य 200/-**

नोट - सर्वाधिकार सुरक्षित. प्रकाशक और लेखक की लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन का कोई भी भाग फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल माध्यमों सहित किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनः प्रस्तुत, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

प्राक्कथन

मानव अधिकार की भावना का उदय सभ्यता के साथही हो गया था। भारत के प्राचीन ग्रंथोंमें मानवाधिकार की अवधारणा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। वैदिक युग में भी इसका आस्तित्वथा। मावनाधिकारों की अवधारणा मानव जाति की तार्किक क्षमता एवं संवेदनशील चेतना का परिणाम है। मावनाधिकार मनुष्य को प्राकृतिक रूप से प्राप्त ऐसे अधिकार है जो उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक होते है वे मानवाधिकार कहलाते है। मानव अधिकारों को मानव के व्यवहार संबंधी लक्षणों के कुछ मानकों के अनुसार नैतिक मानदंडों या सिंद्धातों के रूप में समझायाजा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने रंग,नस्ल, राष्ट्रीयता, धर्म, भाषा या अन्य आधारों के आधार पर भेदभाव के बिनाइन अधिकारों का प्रयोग करते है। संयुक्त राष्ट्र ने नागरिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों की व्यापक श्रेणियों के तहत अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किए जानेवाले विभिन्न मानवाधिकारों की एक श्रृंखला को स्वीकार किया है। 'मानव अधिकार' शब्द का उल्लेख 'संयुक्तराष्ट्र चार्टर' में है।

मानवाधिकार की अवधारणा अत्यंतव्यापक, महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है परन्तु वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विकसित और विकासशील देशों में इसके दोहरे मापदण्ड़ों ने समस्या को अधिक गंभीर बनाया है। मानवाधिकार की व्यापक संकल्पना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' पर आधारित हैं और सभी को बिना हस्तक्षेप के समान अवसर एवं समानता का दर्जा प्रदान करती हैं। भारतीय संविधान में प्रत्येक भारतीय नागरिकों को समान अधिकार दिए गए है। इस पुस्तक में मानवाधिकारों की नूतन प्रवत्तियों, चुनौतियों एवं सामधान हेतु सुझावों का प्रभावी तरीके से निरूपण करने का प्रयास किया गया है।

मानव अधिकारों के प्रति रूचि रखनेवाले बुद्धिजीवियों, लेखकों तथा अकादमिक क्षेत्र से जुड़े महानुभवों ने हमें जो रचनात्मक सहयोग प्रदान किया है उसके लिए हम उनका हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। हमें आपकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों का इंतजार रहेगा।

डॉ. बलीराम पवार **डॉ. मनिता कौर विरदी** **डॉ. अभय विक्रम सिंग**

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

1 मानवाधिकार और वैश्वीकरण के संदर्भ में नारीवादी दृष्टिकोण
डॉ. सुमन देवी

2 मानव अधिकार और भारतीय संविधान
डॉ. उषा नायक

3 मानव अधिकार : नूतन पृवत्तियां एवं चुनौतिया
डॉ. हेमलता

4 सामाजिक न्याय एवं मानवाधिकार के सन्दर्भ में भारतीय पुरुष समाज
डॉ. राजेश

5 वैश्वीकरण और मानवाधिकार का संरक्षण एवं विकास
डॉ. भूपेंद्र

6 महिलाओं के संवैधानिक एवं विधिक अधिकार : विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ. मनीता कौर विरदी

7 भारतीय मानवी हक्क वाहक घटक एवं विकास में बाधक आंतरिक घटक
डॉ. व्यंकट काशीनाथराव कदम

8 बाल–श्रम उन्मूलन से संबंधित विधियों का विश्लेषण : मानवाधिकार के संदर्भ में
डॉ. महेश प्रसाद

9 भारत में मानवाधिकार और दलित : एक अवलोकन
डॉ. सत्येन्द्र सिंह

10 भारत में मानव अधिकारों का सैद्धांतिक स्वरूपः एक विश्लेषण
डॉ. मंजुलता गर्ग, डॉ. पुनीत कुमार

11 भारत में नारीवादी विमर्श और मानवाधिकार
डॉ. मुहम्मद मुस्तकीम

12 शाश्वत विकास आणि मानवी अधिकार
प्रा. डॉ.सरस्वती दुर्गादास गिरी

13 भारतीय संविधान आणि मानवाधिकार
डॉ. आर. आर. सय्यद

14 जागतिकीकरणात स्त्रीवादाचे स्वरुप व स्त्रियांचे स्थान
प्रतिभा कृष्णराव आवंडकर थोरात

15 २० व्या शतकातील मुस्लिम स्त्रियाः विशेष संदर्भ शहाबानो पोटगी प्रकरण
डॉ. शोभा ववन वाईकर

Scanned with OKEN Scanner

6.
महिलाओं के संवैधानिक एवं विधिक अधिकार : विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. मनीता कौर विरदी
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय,
बिछुआ जिला छिंदवाड़ा (म.प्र)

सारांश

प्रत्येक नागरिक को समानता स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार देयागया है। महिला और पुरूष में किसी भी प्रकार का भेदभाव असंवैधानिक माना गया है। अर्वाचीन युग में जब एक ओर लैंगिक असमानता को नकारात्मक संदर्भो में निरूपित किया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर स्त्री पुरूषों के बीच अधिकाधिक समानता के सामाजिक और वैधानिक प्रयत्न किये जा रहे हैं। भारतीय संविधान में महिलाओं को पुरूषों के समान ही अधिकार मिले हैं। उनके लिये शिक्षा, व्यवसाय, राजनीति, आदिसभी क्षेत्र खुले हुए हैं। स्वतंत्रता से अब तक महिलाओं की उन्नति के लिये और समुचित न्याय दिलाने के लिये तरह–तरह के कानून सरकार ने बनाये हैं। हमारे संविधान के अन्तर्गत सभी स्त्री–पुरूष को बराबरी का, स्वतंत्रता का, शोषण से बचाव, धार्मिक स्वतंत्रता, शिक्षा व संस्कृति आदि सभी अधिकार समान रूप से प्रदान किये गये हैं ताकि उन्हें समानता के अधिकार से कोई भी वंचित न कर सके। महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक, सजग एव सशक्त बनाना आज महत्वपूर्ण मुददा है। उन्हें सशक्त बनाने का सबसे कारगर तरीका उन्हें उनके कानूनी अधिकारों की जानकारी देना है। ताकि वह जान सके कि कानून के द्वारा वे कौन–कौन से अधिकार प्राप्त कर सकती है। अत्याचार अन्याय एवं शोषण का मुकाबला कैसे कर सकती है।

पारिभाषिक शब्दावली : संवैधानिक अधिकार, वैधानिक, जागरूकता, अधिनियम

प्रस्तावनाः

वैदिक युगीन भारतीय स्त्री का इतिहास हमेंवेद, पुराण, उपनिषदों आदि से प्राप्त होता है। वैदिक समाज वर्णाश्रम व्यवस्थाओं की अत्यंत सरल व स्पष्ट मान्यताओं पर आधारित था। विद्वतजनों की ऐसी मान्यता है कि इस युग में नारी की स्थिति केवल सम्मान जनक ही नहीं अपितु गौरवपूर्णथी। वेदो में ऐसेअनेकसूक्त है जिनमेंविवाह के अनेक प्रकार, नियोग, सम्पत्ति का विभाजन,

Scanned with OKEN Scanner

अतिरिक्त लाभ, स्त्रीधन आदि पर प्रकाश डाला गया है जो स्त्री के
अधिकारों के साथ अर्थव्यवस्था में नारी के योगदान की जानकारी
कराते है।लेकिनमहिलाओं पर होनेवालेअत्याचारों को यदि देखें तो वैदिक
आधुनिककाल तक महिलाऐंकिसी न किसी रूप में चाहे धर्म के नाम पर
नाम पर या समाज के रीति–रिवाजों के नाम पर अत्याचार तथा
शिकारहोतीरहीहैं।

"सपना जन्मा और मर गया,
मधु ऋतु में हीबागझर गया
तिनके बिखरे हुए बटोरूँ या नव सृष्टिस जाऊँ में
राहकौन–सीजाऊँ में ?"

अटल बिहारी वाजपेयी की उक्तपंक्तियाँ भी पीडिता नारी के
उठ रहे अर्न्तद्वंद को उजागर करती हैं। जब नारी सभी जगह से
जाये तो उसके लिए हमारा संविधान उसका रक्षक बन नारी के जीने
मार्ग प्रशस्त करता है। संविधान भारत के अन्य नागरिकों के समान ही
को भी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय प्रदान करने की घोष
है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, और
रूप से विकास के समान अवसर प्रदान करने के लिये संविधान में कु
व्यवस्थाएँ की गई है।

भारतीय संविधान महिलाओं के लिए तीनतरीको से विशिष्टमं
है–प्रथमतः संविधान महिलाओं और पुरूषों में लैंगिक भेदभाव मिटाने
रखता है। द्वितीयतः संविधान की मान्यता है कि यदि महिलाओं को
रूप से प्रताडित किया गया एवं हीन समझा गया हैतो इस अन्याय को
करने के लिए संविधान, सरकार को महिलाओं के हित में विशेष प्रावधा
की अनुमतिदेता है तृतीयतः संविधान निहित रूप से यह उम्मीद रखता
सरकार सभी कमजोर वर्गो, जिसमें महिलाएँ भी शामिल है की स्थिति
के लिए विशेष प्रयत्न करेगी।

विश्लेषण :

भारतीय संविधान में महिलाओं और पुरूषों को समान अधिकार
है। इसकेअलावा महिलाओं की स्थिति पुरूषों के समकक्ष बनाने एव
विकास की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए है। भारतीय संवि
प्रत्येक भारतीय नागरिक को अध्याय 3 में समाविष्ट 6 मूल अधिकार प्रदा
है। वास्तवमें ये मूलभूत मानवीय तथा प्राकृतिक मूल्यों को अभिज्ञापित क
महिलाओं के लिए शिक्षा, व्यवसाय, राजनीति आदि सभी क्षेत्र खुले
स्वतंत्रता से अब तक महिलाओं की उन्नति के लिए और समुचित न्याय
के लिए तरह–तरह के कानून सरकार ने बनाये हैं।

महिलाओं के कानूनी अधिकार

1. कानून में समानता का अधिकार अनुच्छेद (14)

जाति, धर्म, लिंग, जन्मस्थान के अनुसार समानता का अधिकार अनुच्छेद 15 (1)

महिलाओं और बच्चों के हित में कुछविशेष अधिकार अनुच्छेद 15 (3)

नौकरी याउसकेअवसरों के लिए समानता का अधिकार अनुच्छेद 16

महिला पुरूष को समान जीवन जीने का अधिकार अनुच्छेद 39 (ए)

महिला को समान कार्य के लिए समान वेतन का अधिकार अनुच्छेद 39 (डी)

भारतीय समाज में फैली विभिन्न बुराईयों में दहेज प्रथा भी एक बड़ी बुराई है। दहेज आज की ज्वलन्त समस्या है। दहेज की विकराल समस्या ने समाज को संकट के कगार पर खड़ा कर दिया है। दहेज के बिना संबंध तय नहीं होते और यदि विवाह हो भी जाते है तो वे चिरस्थाई नहीं रह पाते। दहेज की कुप्रथा पर अंकुश लगाने के संबंध में सरकार की तरफ से भी प्रयास किए गए और इन्हीं प्रयासों का परिणाम है–दहेज प्रतिबंध अधिनियम 1961। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही दहेज ने एक कुरीति का रूप ले लिया था। प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1961 में संसद से एक अधिनियम पारित कराया जो 'दहेज प्रतिषेध अधिनियम, 1961' कहलाया। कानून की सहायता से पहली बार दहेज की कुरीति पर रोक लगाने की कोशिश भारत सरकार द्वारा की गयी थी। पहले इस कानून में बहुत सी कमियां थी जो धीरे–धीरे उजागर होने लगी थी इस लिए समय–समय पर इसमें कई संशोधन भी किए गए।

बाल–विवाह संबंधी अधिनियम को अंग्रेजी शासनकाल के दौरान सन् 1929 में अधिनियमित किया गयाथा। बाद में समय–समय पर इस अधिनियम में कई संशोधन किये गए। इस अधिनियम में 21 साल से कम उम्र के लड़के और 18 साल से कम उम्र की लड़की का विवाह बालविवाह कहलाता है। ऐसा करना कानूनी जुर्म है। बाल–विवाह अवरोध अधिनियम, 1929 तथा 1989 एक कानून है, जोकहता है– 21 साल से कम उम्र का लड़का और 18 साल से कम उम्र की लड़की की शादीकरता है, तोउसे 15 दिन की कैद या100 रूपये तक जुर्माना या कैद और जुर्माना दोनों हो सकते हैं। (धारा 3)

भारत सरकार ने कामकाजी नारियों की सहायता हेतु समय–सयम पर नियम एवं कानून बनाये है जिसका नाम पारिश्रमिक अधिनियम, 1976 बनाया, जिसके अनुसार–एक ही तरह के काम के लिए स्त्री और पुरूष को एक जैसा वेतन मिलना चाहिये। जिस काम पर पुरूषों की भर्ती किया जाए उस काम पर स्त्रियों को भर्तीहोने का भी हक है, अगरवे उस काम के काबिल है।यह वेतन या तनख्वाह कम से कम उतनी होनी चाहिये जितनी सरकार ने तय की हो। यानि, न्यूनतम मजदूरी मिलना चाहिये।

त्रिस्तरीय ग्राम पंचायतों और शहरी निकायों के सभी स्तरों पर उन्हें एक–तिहाई पद आरक्षित करने के लिये संविधान के अन्तर्गत 73वें 74वें संशोधन किये गये। जिसके परिणाम स्वरूप देश की त्रिस्तरीय पंचायतों में 80 लाख महिलाओं को जनप्रतिनिधि के रूप में राजनीति और विकास में भागीदारी के

Scanned with OKEN Scanner

अवसर प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त राजनीति के उच्चस्तरों पर अर्थात् स
और विधानमण्डलों में उन्हें एक तिहाई आरक्षण उपलब्ध कराने के लिये प्र
भी किए जा रहे हैं।

महिलाओं को गर्भावस्था व प्रसूति से संबंधित कुछ खास अधि
दियेगये है। यह प्रसूति सुविधा अधिनियम, 1961 कहलाता है। संविधान
अनुच्छेद 42 के तहत महिला सरकारी नौकरी में है या फिर किसी प्राइ
संस्था में काम करती है, उसे मैटरनिटीलीव लेने का हक है। इस के त
महिला को 12 हफ्ते की मैटर निटीलीव मिलती है। जिसे वह अपनी जरूरत
हिसाब से लेसकती है। इस दौरान महिला को पूरी तनख्वाह और भत्ता दि
जाता है। नौकरी के दौरान बच्चे के 18 साल होने तक कभी भी दोसाल
छुट्टी ले सकती है। मैटर निटीलीव के लिए कोई वंचित करता है तो
शिकायत कर सकती है। महिला कोर्ट जा सकती है। और दोषी को एक स
तक की सजा होसकती है।

घरेलू हिंसा से संरक्षण अधिनियम 2005 का उद्देश्य संविधान के त
गारंटीकृत महिलाओं के अधिकारों की अधिक प्रभावी सुरक्षा प्रदान करना है,
परिवार के भीरत होने वाली किसी भी प्रकार की हिंसा और इससे जुड़े
उसके प्रासंगिक किसी भी प्रकार के मामलों के लिए कड़ी सजा का प्रावध
रखता है।

राज्य के नीति निर्देशक सिंद्धातों (Directive Principles of sta
Policy) के अन्तर्गत महिलाओं की विकास और सुशासन के लिए प्रावधान
भारत के तहत महिलाओं के विभिन्न अधिकारों को कानूनों के माध्यम से ल
किया गया है। अनुच्छेद 39(क) यह निर्देश प्रदापन करता हे कि नागरि
पुरूषों और महिलाओं को समान रूप से आजीविका के पर्याप्त साधन
अधिकार है। अनुच्छेद 39(क) यह सुनिश्चित करता है कि पुरूषों और महिला
दोनों के लिए समान कार्य के लिए समान वेतन हो। इसी अनुसरण में संसद
समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976 अधिनियमित किया है, जो समान कार्य
लिए पुरूष और महिला श्रमिकों को समान पारिश्रमिक के भुगतान को वैधानि
अधिकार देता है। रणवीरसिंह बनाम भारत संघ, के मामलें में ,माननीय सुप्
कोर्ट ने माना कि समान कार्य के लिए समान वेतन एक संवैधानिक अधिकार
अनुच्छेद 39 क को संविधान में (42 वां संशोधन) अधिनियम 1976 के तह
शामिल किया गया हैं। इसी अनुसरण में कानूनी सेवा प्राधिकरण अधिनिय
1987 जिसके अन्तर्गत महिलाऐं मान्यता प्राप्त कानूनी सेवा प्राधिकरणों
निशुल्क विधिक सहायता पानें की हकदार है।

कार्यस्थल पर होने वाले यौन–उत्पीड़न के खिलाफ साल 1997
सुप्रीम कोर्ट ने कुछ निर्देश जारी किए थे। सुप्रीम कोर्ट के इन निर्देशों को
'विशाखा गाइड लाइन ' के रूप में जाना जाता हैं। इसे विशाखा और अ
बनाम राजस्थान सरकार और भारत सरकार मामलें के तौर पर भी जाना जा
है। इस फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि यौन–उत्पीड़न, संविधान

Scanned with OKEN Scanner

निहित मौलिक अधिकारों (अनुच्छेद 14,15 और 21)का उल्लंघन है। इसके साथ ही इसके कुछ मामलें स्वतंत्रता के अधिकार 19 (1) के उल्लंघन के तहत् भी आते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने विशाखा गाइड लाइन्स के तहत कार्यस्थल के मालिक के लिए ये जिम्मेदारी सुनिश्चित की थी कि किसी भी महिला को कार्यस्थल पर बंधक जैसा न महसूस हो, उसे कोई धमकायें नहीं। साल 1997 से लेकर 2013 तक दफ्तरों में विशाखा गाइडलाइन्स के आधार पर ही इन मामलों को देखा जाता रहा, लेकिन 2013 में 'सेक्सुअल हैरेसमेंट ऑफ वुमन एट वर्कप्लेस एक्ट' आया। जिसमें विशाखा गाइडलाइन्स के अनुरूप ही कार्यस्थल में महिलाओं के अधिकार को सुनिश्चित करने की बात कही गई, इसके साथ ही इसमें समानता, यौन उत्पीड़न से मुक्त कार्यस्थल बनाने का प्रावधान भी शामिल किया गया। इस एक्ट के तहत किसी भी महिला को कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के खिलाफ सिविल और क्रिमिनल दोनों ही तरह की कार्रवाई का सहारा लेने का अधिकार हैं। इस प्रकार कार्य स्थलों पर सुरक्षा के माध्यम से देश में महिला सशक्तिकरण की दिशा में विशाखा दिशा–निर्देशों का उल्लेखनीय महत्वहैं।

वैधानिक दृष्टि से स्त्रियों की स्थिति में बदलाव के लिए कईअधिकारों ,कानूनों का उल्लेख हैं, लेकिन चाहे जितने भी कानूनी प्रयास किये गये हो व्यवहारिक रूप में आज भी उनके साथ भेदभाव पूर्ण रवैया तथा उनका शोषण जारी हैं।

रूसो ने लिखा है कि "मनुष्य जन्ममुक्त रूप से लेता है लेकिनबाद में जंजीरों में जकड़ जाता हैं।" ऐसा प्रतीत होता है कि नारी जन्म लेने के लिए भी स्वतंत्र नहीं हैं। वैज्ञानिक अविष्कारों का सृजनात्मक पक्ष कितना उजला या धुँधला हैं–यह अलग विवाद का विषय है, किन्तु गर्भरूप शिशु का लिंग–निर्धारण नारी मात्र के लिए अत्यंत अन्याय परक सिद्ध हुआ है, यह संदेहहीन सत्य है।

कहने को तो संविधान में महिलाओं को पुरूषों के बराबर दर्जा प्राप्त है लेकिन वास्तविकता यह है कि कानून की नजर में महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की है। विवाह, तलाक, काम, सम्पत्ति में अधिकार, गुजारा भत्ता कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ बराबरी के नाम पर महिलाओं के साथ मजाक न किया गया हो। भारतीय दंड संहिता की धारा 125 के अनुसार तलाकशुदा महिला अपने पूर्व पति से गुजारा भत्ता हासिल कर सकती है। वास्तव में बहुत सी महिलाओं को बहुत कम गुजारा भत्ता मिल रहे है।

अकेले कानून के बूते महिलाओं की दुनिया को नहीं बदला जा सकता। दहेज और हिंसा से संबंधित कानून कड़े करने के बाद भी इनकी दर में कमी आने के बजाए बढ़ोतरी हो रही है, लेकिन यह भी कहा जा सकता है कि यदि ये कानून न बनते तो दहेज और हिंसा की घटनाओं में और भी बढ़ोत्तरी होती। कहने को तो हिंदु महिलाओं को संपत्ति में बराबरी का अधिकार दे दिया गया है,लेकिन इसके पीछे कई किंतु–परंतु लगे हुए है। महिलाओं के साथ स्वयं

Scanned with OKEN Scanner

अर्जित संपत्ति और पुश्तैनी संपत्ति में अंतर के आधार पर भेदभाव कि
है। हिंदु उत्तराधिकार अधिनियम की धारा 6 के अनुसार ल
माता–पिता की स्वयं अर्जित संपत्ति में बराबरी का हिस्सा मिल जाता
की वे एक परिवार की सदस्य हो, लेकिन पुश्तैनी या संयुक्त परिवार
में लडकियों की कोई हिस्सेदारी नहीं है। कानून के कारण महिलाओं
में सकारात्मक बदलाव न आने के अनेक कारण है। सर्वप्रथम पु
व्यवस्था पितृ सत्तात्मक समाज के पक्ष में खड़ी नजर आती है। दूसर
धाराएं धारदार नहीं है। भारी भरकम कानूनो के होते हुए महिलाओं
की भावना बढती जा रही है। वे सड़क और कार्यालय में तो असु
घर पर भी उन्हें पति के गुस्से का शिकार होना पड़ता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महिलाओं को बिना किसी
के अपने निर्णय स्वयंलेने के लिए सशक्त बनाना और उन्हें पुरूषों
माननाराष्ट्र की सर्वांगीण प्रगति के लिए अनिवार्य है। हमारा संविधान
नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के समानता के अधिकार की गारंटी
जिसके अनुसार यहांकिसी भी नागरिक के साथ रंग, धर्म, लिंग, क्षेत्र,
के आधार पर असमान व्यवहार करने की मनाही है। इसके बावजूद
लैंगिक भेदभाव लगातार चला आ रहा है। उन्हें सशक्तबनाने का सबसे
तरीका उन्हें उनके कानूनी अधिकारों की जानकारी देना है। ताकि वह
कि कानून के द्वारावे कौन–कौन से अधिकार प्राप्त कर सकती हैं
अन्याय एवं शोषण का मुकाबला कैसे कर सकती हैं। महिलाओं
सशक्त बनाया जाये कि वेअपने अधिकारों और उन्मुक्तियों का प्रयोग
सकें । निर्भीकता से अपना दावापेश कर सकें क्योंकि कोई भी
लोकतांत्रिक समाज महिलाओं को सशक्त किए बिना, विकास की
नहीं कर सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. महिलाओं के कानूनी अधिकार–मध्यप्रदेश मानवअधिकार
,पर्यावास भवन, भोपाल,
2. स्याल, शान्ति कुमार–महिलाओं के कानूनी धार्मिक एवं
अधिकार–आत्माराम एण्ड संस–दिल्ली, 2009
3. भाटी, कान्ता" महिला उत्पीड़न, दहेज प्रताड़ना तथा दहेज
पॉइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर (राजस्थान) 2007,
4. सक्सेना उपमा, महिला सशक्तिकरण सामाजिक वं संवैधानिक
अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2012
5. शर्मा, रमा एवं एम के मिश्रा, महिला विश्वकोश, अर्जुन
हाउस, नई दिल्ली, 2009,

Scanned with OKEN Scanner

6. बाबेल, डॉ. बसन्तीलाल ''महिला एवं बाल कानून'', सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद, 2003,
7. पारीक डॉ अम्बिकाप्राचीन भारत मे नारी,आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रब्यूटर्स,जयपुर,(राजस्थान),2009
8. शर्माप्रज्ञा–महिलालैंगिकअसमानता एवंअपराध,आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रब्यूटर्स, जयपुर, (राजस्थान), 2009
9. डॉसिंहनिशांत, महिला विधि,राधापब्लिकेशन्स,नई दिल्ली 2008
10. महिला एवं बाल कानून'' सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद, 2003
11. ओझा सुरेश ''महिला कानून'' सर्जना बिकानेर ,2009
12. राय ओ.पी, ''घरेलूहिंसा से महिला संरक्षणविधि,'' ओरियन्ट, लॉपब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, इलाहाबाद 2007
13. द्ववेदीराधे श्याम ''घरेलूहिंसा से महिला संरक्षण–2005 एवं नियम 2006,सुविधा लॉहाऊस प्रा.लि.,2007
14. https://www.jagran.com/news/national-sc-reject-an-plea-to-implement-vishakha-guidelines-
15. https://www.amarujala.com
16. https://www.indianconstitution.in
17. https://www.herzindagi.com
18. https://taxquru.in/corporate-law-women-india

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. बन्सीराम पवार एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद महाराष्ट्र से समाजशास्त्र में एमए किया है। मदुरई कामराज विश्वविद्यालय, मदुरई, तमिलनाडु से एम.फिल किया है। उन्होंने स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ से पीएचडी के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान में वह महात्मा फुले कॉलेज, किनगांव, लातूर, महाराष्ट्र में समाजशास्त्र विभाग के प्रमुख के रूप में कार्यरत हैं। उनके पास 23 वर्षों का शिक्षण अनुभव है और उन्होंने कई वर्षों तक राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी के रूप में काम किया है। इसके अलावा, वह ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक रूप से सक्रिय हैं और अपने सामाजिक कार्यों के लिए उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

उन्हें दो अंतरराष्ट्रीय और 5 राष्ट्रीय शैक्षणिक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्होंने 56 से अधिक अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं और 5 राष्ट्रीय स्तर की पुस्तकों का संपादन किया। उन्होंने मराठी समाजशास्त्र परिषद महाराष्ट्र के कोषाध्यक्ष के रूप में भी काम किया है। भारतीय समाजशास्त्र परिषद के सदस्य। हालाँकि, उन्होंने विभिन्न सम्मेलनों/सेमिनारों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं। उनके शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं और पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं।

डॉ. मनिता कौर विरदी, वर्तमान मे सहायक प्राध्यापक एवं विभागध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, जिला छिंदवाड़ा (म.प्र.) मे कार्यरत है। आपने डॉ. हरि सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आपके शोध का शीर्षक था "महिला प्रताड़ना संबंधित कानून के क्रियान्वयन मे परिवार परामर्श केंद्रो की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन, छिंदवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में", आपके शोध कार्य की अत्यधिक सराहना की गई है। आपने यूजीसी नेट भी उत्तीर्ण किया है। आपके राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शोध जर्नल में 25 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। आपने 15 से अधिक पुस्तकों मे अध्याय प्रकाशित किये हैं। आप समाज सेवा से भी जुड़े हुए हैं। आप विशगित मंच और नूंन संस्था की आजीवन सदस्य हैं. आपकी 2 पुस्तकें हैं (महिला सशक्तिकरण और बदलती तस्वीर खंड 1 और 2) आपकी दो और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकें आने वाली है। आप इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी ट्रेंड्स, एशिया पैसिफिक जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट, बी आधार, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड मैनेजमेंट स्टडीज, सोशल साइंस मैनेजमेंट वेलफेयर एसोसिएशन जबलपुर और संकल्प जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज कोलकाता (एसजेएमएस) के बोर्ड सदस्य हैं। आपके कई राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हैं। सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ महिला शिक्षाविद पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ पेपर प्रस्तुति पुरस्कार, शिक्षा क्षेत्र में योगदान आदि। आप राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों और सम्मेलनों में वक्ता/संसाधन व्यक्ति के रूप में रही है। आपने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों मे शोध पत्र भी प्रस्तुत किये हैं। मनरेगा के प्रभावी क्रियान्वयन मे पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका विषय पर लघु प्रोजेक्ट किया है। आप सोशल साइंस मेंजमेंट वेल्फेयर एसोसिएसन वोमेन सेल जबलपुर की स्टेट वॉइस प्रेसिडेंट है। आपने कई प्रशिक्षण कार्यक्रम/संकाय विकास कार्यक्रम/कार्यशालाएं/अन्य किये हैं। आपके पास कई पत्रिकाओं की आजीवन सदस्यता है। आप लगातार शिक्षा के क्षेत्र मै अग्रसर हो रही है।

डॉ. अभय विक्रम सिंह बिहार के मोतिहारी में स्थित महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग में सहायक प्रोफेसर के प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत हैं। डॉ. अभय विक्रम सिंह की प्रभावशाली शैक्षणिक यात्रा ढेर सारी योग्यताओं पर आधारित है। उन्होंने एम ए, एम.फिल. और पीएच.डी. की डिग्री राजनीति विज्ञान विषय में मेरठ के चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से प्राप्त की है। इसके अलावा, उन्होंने नई दिल्ली स्थित भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) द्वारा दी गई पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप को सफलतापूर्वक पूरा किया है। डॉ. सिंह की शैक्षणिक कुशलता मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा प्रायोजित एक प्रमुख अनुसंधान परियोजना में एक रिसर्च फेलो के रूप में उनकी भूमिका शामिल है।

शिक्षा के क्षेत्र में, डॉ. सिंह के 15 से अधिक शोध पत्रों, लेखों और ज्ञानवर्धक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों और सम्मेलनों में भाग लिया है और खुद को इस क्षेत्र में एक सम्मानित आवाज के रूप में स्थापित किया है। डॉ. अभय विक्रम सिंह की रुचि के महत्वपूर्ण क्षेत्र मैं गांधीवादी चिंतन एवं दर्शन, प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन और समकालीन राजनीतिक सिद्धांत आदि शामिल है।

Sanskruti Publication Latur

ISBN: 978-81-960127-9-3

9 788196 012793

Scanned with OKEN Scanner

Indexing and Abstracting in Following Databases

1. Bowker: A ProQuest Affiliate

2. Crossref

Peer Reviewed & Refereed

Effects of Globalization, Challenges & Opportunity

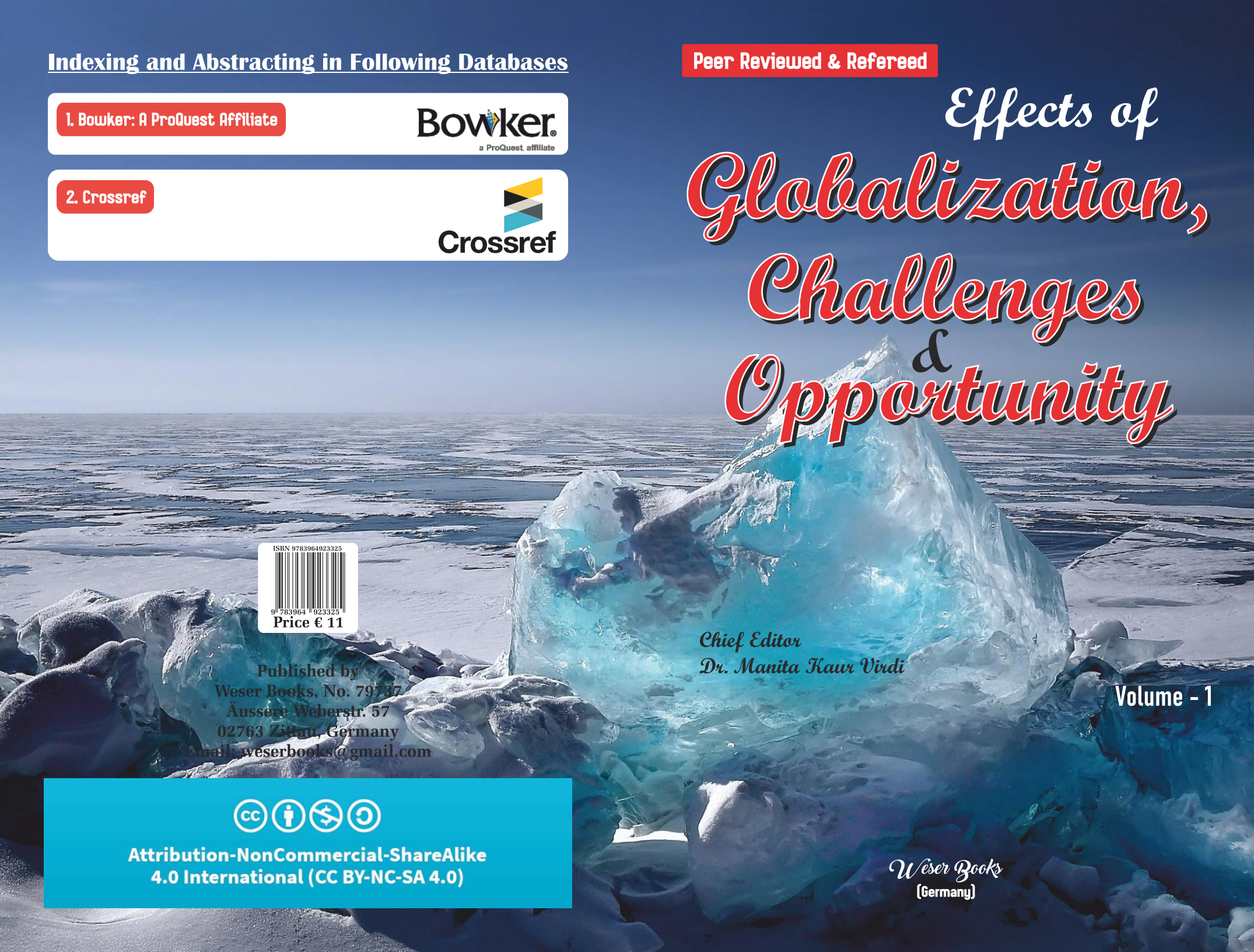

ISBN 9783964923325

Price € 11

Published by
Weser Books, No. 79737
Äussere Weberstr. 57
02763 Zittau, Germany
Email: weserbooks@gmail.com

Attribution-NonCommercial-ShareAlike
4.0 International (CC BY-NC-SA 4.0)

Chief Editor
Dr. Manita Kaur Virdi

Volume - 1

Weser Books
(Germany)

Effects of Globalization, Challenges & Opportunity

Volume - 1

Chief Editor

Dr. Manita Kaur Virdi
Head & Assistant Professor (Political Science), Govt. College Bichhua, Chhindwara, Madhya Pradesh, India

Weser Books

Published By: Weser Books

Weser Books, No. 79737
Äussere Weberstr. 57
02763 Zittau, Germany
Email: weserbooks@gmail.com

Chief Editor: Dr. Manita Kaur Virdi

The author/publisher has attempted to trace and acknowledge the materials reproduced in this publication and apologize if permission and acknowledgements to publish in this form have not been given. If any material has not been acknowledged please write and let us know so that we may rectify it.

© Weser Books

Publication Year: 2023

Pages: 89

ISBN: 978-3-96492-332-5

Price: € 11

Preface

Globalization is a process in which efforts are made to increase coordination in economic, cultural, political and technological relations between different countries and institutions around the world. Due to globalization, trade increases between countries, economic relations become stronger and latest technological and scientific developments take place in various fields. Along with this, there is an updated exchange of ideas, ideologies, roles and cultural beliefs between people. Globalization has also affected the Indian financial markets. Foreign investors have been provided the facility to invest in Indian capitalist markets. Indian banks have facilitated foreign investors to invest in their capitalist markets through various financial instruments. Along with this, foreign investors are being allowed to invest in Indian companies, which increases growth opportunities and strengthens the financial markets. The most visible effects of globalization are certainly affecting the economic world. Globalization has led to a rapid increase in trade and economic exchanges, but also to financial exchanges.

This acceleration in economic exchanges has led to strong global economic growth. This led to rapid global industrial growth that allowed the rapid development of many technologies and goods available to us today. It is a continuous process and one of the major factors governing modern society. In this book, the effects of globalization in various areas have been studied.

We express our heartfelt gratitude to the intellectuals, writers and academicians interested in globalization for the constructive contribution they have made to us. We look forward to your suggestions.

Dr. Manita Kaur Virdi

Contents

S. No.	Chapters	Page No.
1.	Effects of Globalization on Various Sectors *(Dr. Manita Kaur Virdi)*	01-14
2.	पर्यावरण और वैश्वीकरण *(मीना ठाकरे)*	15-36
3.	Globalization: Challenges and Opportunities *(Dr. Manita Kaur Virdi)*	37-51
4.	Invisible Battles: Mental Health Stigma in Medicine *(Rosemol Thamby and Dr. Ruby John)*	53-61
5.	भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव *(डॉ. मनीता कौर विरदी)*	63-76
6.	भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव *(डॉ. मनीता कौर विरदी)*	77-89

Chapter - 1
Effects of Globalization on Various Sectors

Author

Dr. Manita Kaur Virdi
Assistant Professor & Head Department of Political Science,
Government College Bichhua, Chhindwara, Madhya Pradesh,
India

Chapter - 1

Effects of Globalization on Various Sectors

Dr. Manita Kaur Virdi

Abstract

Information technology and telecommunication revolution has turned the whole universe into a village. One can stay connected and connected to the whole world even by living in a town or a remote area with adequate basic infrastructure. Globalization is a process by which a country's economy is linked to the world economy. This type of linkage is based on increased trade and a barrier-free flow of world technology and information. Globalization can be considered as a process of development in which people of social, economic and cultural exchange nation-states with artificial boundaries and controls are coming together as a single world society.

Globalization is an important factor in the competitive world, Which Mobilizes the cultural values of people on a global scale. Rapid technological progress has integrated countries. Globalization has a huge impact on the political, cultural, monetary and social life of countries. Due to globalization, there is a massive change in all aspects of human life, the distance between people, country and time is getting shorter. In place of national economy, national finance and national production, global trade, global finance and global production are emerging. Due to which the worldwide economy is taking the form that the event happening in one place affects other parts of the world. In the present chapter, the effects of globalization in various fields have been studied.

Keywords: Globalization, information, economy, competition

Introduction

Globalization is the process of growing, developing and expanding the business, services or technologies all through the world. It is the expansion of various businesses to the global markets throughout the world. It requires huge international investment to develop large multinational corporations for the worldwide economic integration. It is to increase the connectivity and interdependence of the businesses in the worldwide markets. In the last few

decades, globalization has taken the form of technological advancement which resulted in easier travel, communication, and other businesses on international level for the people. On one hand, where globalization has made easy access of technologies to the people, it has also decreased the opportunity of success by increasing competition.

According to stuyers hall-globalization can be seen in the sense of integration of cultures and communities into new places and times and making the world a real and more interconnected one.

According to Thomas Freidman-globalization is actually the integration of market economy and technology, in which there is a contraction of the world in a medium to small form, in which we all reach every corner of the world as quickly and corner of the world as quickly and cheaply as I was never possible before. Like all previous international systems, it is directly or indirectly giving shape to domestic politicians, economic policies and foreign relation of all regions.

Globalization had its impact on various sectors including Agricultural, Industrial, Financial, Health sector and many others. Globalization has both positive and negative effects. On an individual level, globalization affects both the standard of life and the quality of life. On a business level, globalization affects an organization's product life cycle and an organization's balance sheet. Globalization also affects how governments throughout the world create policies affecting areas such as monetary regulation and trade.

On an individual level, globalization has affected the standard of life and quality of life of individuals and families throughout the world. Standard of living is the level wealth, comfort, material goods, and necessities available to a certain socioeconomic class in a certain geographic area. Quality of life is the degree to which a person enjoys the important possibilities of his or her life. In many instances, quality of life has improved for those who live in developing nations. For many developing nations, globalization has led to an improvement in standard of living through improved roads and transportation, improved health care, and improved education due to the global expansion of corporations. However, globalization has had a negative effect on individuals who live in developed nations. This is due to the fact that corporations now have the option of establishing manufacturing operations in nations where manufacturing and production costs are less expensive. As a result, many manufacturing jobs leave developed nations and move to developing nations.

Globalization is associated with rapid and significant human changes. The movements of people from rural to urban areas have accelerated, and the growth of cities in the developing world especially is linked to substandard living for many. Family disruption and social and domestic violence are increasing.

The benefits of the effects of globalization in the Indian Industry are that many foreign companies set up industries in India, especially in the pharmaceutical, BPO, petroleum, manufacturing, and chemical sectors and this helped to provide employment to many people in the country.

Globalization economically involves the trading of goods, services, data, assets, technology and other work capital. Technological advancement in transportation has removed a barrier which was observed earlier. Jet engines, ships, container ships etc. are used for the supply of goods from one country to another. Growth in communication is also a major factor for the increase in globalisation. With the internet, mobile phones and other networking tools, it is easier for one to transmit and interact with different organizations.

There is no doubt that our country also has corporate globalisation. There is an evident impact of globalisation in India. Where it is the economic impact or socio-cultural impact, globalisation has affected every sector of the country. Globalisation is the reason due to which innovation and technology have been outspread across the globe. Many economists have stated globalisation as an astounding move towards liberalization. Globalisation has vast influence and impacts over monetary and economy of the nation. As it involves a huge exchange of capital, goods and services, it highly affects the financial status.

Globalization has brought benefits in developed countries as well as negative effects. The positive effects include a number of factors which are education, trade, technology, competition, investments and capital flows, employment, culture and organization structure. It would be rather difficult to discuss the extent of the positives that globalization has had on the world at large. But still, here are some of the positive effects of globalization and the positive impacts they have had on so many demographic segments of society.

Analysis

Globalization is not new. Since the start of civilization, people have traded goods with their neighbors. As cultures advanced, they were able to travel farther afield to trade their own goods for desirable products found elsewhere. The Silk Road, an ancient network of trade routes used between

Europe, North Africa, East Africa, Central Asia, South Asia, and the Far East, is an example of early globalization. For more than 1,500 years, Europeans traded glass and manufactured goods for Chinese silk and spices, contributing to a global economy in which both Europe and Asia became accustomed to goods from far away.

Sources: The dimensions of Globalization https://www.researchgate.net

The rate of globalization has increased in recent years, a result of rapid advancements in communication and transportation. Advances in communication enable businesses to identify opportunities for investment. At the same time, innovations in information technology enable immediate communication and the rapid transfer of financial assets across national borders. Improved fiscal policies within countries and international trade agreements between them also facilitate globalization. Political and economic stability facilitate globalization as well. The relative instability of many African nations is cited by experts as one of the reasons why Africa has not benefited from globalization as much as countries in Asia and Latin America.

Globalization provides businesses with a competitive advantage by allowing them to source raw materials where they are inexpensive. Globalization also gives organizations the opportunity to take advantage of lower labor costs in developing countries, while leveraging the technical expertise and experience of more developed economies. With globalization, different parts of a product may be made in different regions of the world. Globalization has long been used by the automotive industry, for instance, where different parts of a car may be manufactured in different countries.

Non-economists and the wide public expect the costs associated with globalization to outweigh the benefits, especially in the short-run. Less wealthy countries from those among the industrialized nations may not have the same highly-accentuated beneficial effect from globalization as more

wealthy countries, measured by GDP per capita, etc. Although free trade increases opportunities for international trade, it also increases the risk of failure for smaller companies that cannot compete globally. Additionally, free trade may drive up production and labor costs, including higher wages for a more skilled workforce, which again can lead to outsourcing jobs from countries with higher wages.

Foreign companies and businessmen have benefited greatly from the policies of globalization. At the same time, our exporters and other sections of foreign businessmen have benefited greatly. The eating and drinking sections of India can now consume a variety of foreign goods. They can open accounts with foreign banks, buy insurance policies from foreign companies and are now foreign companies and are now allowed to take money abroad and buy assets and set up companies.

In the changing global scenario, social values and beliefs, traditions and institutions are also changing, which we all have more or less experience. Obviously globalization strengthened the process of change, globalization can be considered as a multi-faceted presentation of various dimensions of human progress.in order to assess its effects, it is necessary that new social interactions should be explained.

The multidimensional process of globalization directly affected the economy including economy activities, but also deeply touched the interrelated aspects of society, state and culture. According to the *Black Bull Dictionary* of sociology, Globalization is the social life of different societies, from the political and commercial spheres to the fields of music, costume and mass media, has been affected very rapidly at the international level.

The culture/cultural aspect bear a deep resemblance to the life of a nation. The social aspect of globalization is essentially related to the standard of living, income, employment, culture and above all the nation's own identity. Socially people should not feel that their culture is being encroached upon. Culturally diverse nations with a rational and solid cultural foundation are generally not seen to have cultural deviations in the storm of globalization, although those nations do benefit from globalization by updating their culture.

Imperialism of cultural globalization scholars believe that not only politics and economy have been affected by globalization and technological development, but the entire cultural landscape is also in its grip.it points towards a new cultural imperialism, if at this rate the media spread foreign

culture here, and then our identity will be lost. Many of our disciplines have lost their identity in the race of cultural globalization.

According to Yogendra Singh India is undergoing rapid change in values, institutions and ideologies. Global Market and trade changed our way of life. Changed the pattern of consumption and cultural production through the market. Today Indian Society is taking the form of a consumption society. Electricity, network of roads, means of communication, food habits, clothes etc. Are all changing? The green Revolution has also tied the people of the village in this chain of change. Cultural globalization has been more than economic and political globalization.

In a transitional society like India, where neither the old beliefs have been completely destroyed nor the new beliefs have been fully established. In the middle of the dilemma, a society oscillating like a pendulum can neither be called completely modern nor archaic. Unable to muster the courage completely, in such a situation the issues of social change and development become irrelevant. Globalization affects not only the economy but also the social structure and politics.

In this era of globalization, due to liberalization, free market economy and prioritization of merit, the private sector started giving priority to practical knowledge over degree. Because of this, the ability to go abroad for education from higher education institutions of special importance or the arrival of foreign universities of special repute in India created a competitive environment in the field of higher and technical education. As a result, many private sector institutions opened technical, management and medical education institutions with attractive and spacious infrastructure .after 1991, there was a flood of such institutions in India. It can be said that numerically in all parts of the country, even in remote areas, the number of higher and technical educational institutions increased in quantitative terms, but qualitatively there was a decline in higher education.

There are many ways that globalization affects culture. Over the ages India has had an open approach to cultural influences and has been enriched because of this. The last few decades have seen major cultural changes leading to fears that our local cultures would be overtaken. Thus there are heated debates in our society not just about political and economic issues but also about changes in clothes, styles, music, films, languages, body language. The debate is not new and 19th century reformers and early nationalists also debated on culture and tradition. The issues today are in

some ways the same, in some ways different. What is perhaps different is the scale and intensity of change.

The intensive use and dependence on the internet, social media and other means of communication has made a deep impact on the language. Barber believes that today the boundaries of information, knowledge, entertainment etc. Are being broken and infotainment Tele sector has developed. As a result, the use of languages has been distorted, such as the use of 'K' instead of OK. apart from this, the number of languages in the world is also decreasing due to globalization, due to the movement of people, the language of one place mixes with the language of another place and forms a new form, as well as the language of communication on the internet has become concise and impure. The grammar and correctness of the established languages have been adversely affected. A mixture of many languages is also seen, such as English has been developed by mixing Hindi English, in which the mixed form of English and Hindi languages form is prevalent in practice.

Globalization affects different groups of women in different places in different ways. On the one hand it may create new opportunities for women to be forerunners in economic and social progress on the other it may take away job opportunities by providing cheaper avenues in the form of assembly line production or outsourcing. With the advent of global communication networks and cross-cultural exchange there seems to be a change in the status of women albeit not to a very large extent. Globalization has indeed promoted ideas and norms of equality for women that have brought about awareness and acted as a catalyst in their struggle for equitable rights and opportunities. However, Globalization may exacerbate gender inequality in a patriarchal society, especially in the developing world. In the economic realm it may lead to further marginalization of women in the informal labor sector or impoverishment through loss of traditional sources of income. According to a United Nations Development Fund for Women's report, over the past two decades the process of globalization has contributed to widening inequality within and among countries

Globalization has intensified interdependence and competition between economies in the world market. This is reflected in Interdependence in regard to trading in goods and services and in movement of capital & labor. As a result domestic economic developments are not determined entirely by domestic policies and market conditions. Rather, they are influenced by both domestic and international policies and economic conditions. Direction and depth of all economic activities in India is now governed largely by global Economy.

What should be India's attitude in this environment of growing globalization? At the outset it must be mentioned that opting out of globalization is not a viable choice. There are at present 1449 members in the World Trade Organization (WTO). The rest of the countries are waiting to join the WTO. China has recently been admitted as a member. What is need is to evolve an appropriate framework to wrest maximum benefits out of international trade and investment.

This framework should include

a) Making explicit the list of demands that India would like to make on the multilateral trade system.

b) Steps that India should take to realize the full potential from globalization.

With a view to move towards liberalizing the agricultural sector and promoting free and fair trade, India, a member nation of the World Trade organization (WTO) signed the Uruguay Round Agreements on 1st January 1995. The Agreement on Agriculture of the WTO, was the first multilateral agreement, meant to curb unfair practices in agricultural trade and set off the process of reforms in the agricultural sector. Indian agriculture has shown a slow average annual growth rate. It was 3.1 % during the decade 1980-1990 prior to liberalization of the economy. But since then the annual growth rates have declined consistently relative to annual growth rate of the population. Several factors were responsible for this fall in growth rate; lack of credit, inadequate irrigation cover, and indebtedness, continuing use of obsolete technology, improper use of inputs and decline in the public investments Since the non-agricultural sectors of the economy have been growing at a much faster rate than the agricultural sector, this has resulted in a declining share of agriculture in the total GDP. Although the share of agriculture in GDP declined rapidly, its share in employment declined at a much slower rate.

Globalization has had far-reaching effects on our lifestyle. It has led to faster access to technology, improved communication and innovation. Apart from playing an important role in bringing people of different cultures together, it has ushered a new era in the economic prosperity and has opened up vast channels of development. However, globalization has also created some areas of concern, and prominent among these is the impact that it has had on the environment. Globalization has featured extensively in the debates on environmentalism, and green activists have highlighted its far-reaching effects.

Activists have pointed out that globalization has led to an increase in the consumption of products, which has impacted the ecological cycle. Increased consumption leads to an increase in the production of goods, which in turn puts stress on the environment. Globalization has also led to an increase in the transportation of raw materials and food from one place to another. Earlier, people used to consume locally-grown food, but with globalization, people consume products that have been developed in foreign countries. The amount of fuel that is consumed in transporting these products has led to an increase in the pollution levels in the environment. It has also led to several other environmental concerns such as noise pollution and landscape intrusion. Transportation has also put a strain on the non-renewable sources of energy, such as gasoline. The gases that are emitted from the aircraft have led to the depletion of the ozone layer apart from increasing the greenhouse effect. The industrial waste that is generated as a result of production has been laden on ships and dumped in oceans. This has killed many underwater organisms and has deposited many harmful chemicals in the ocean. The damage caused to ecosystem from the oil that spilled from one of the leaking containers of British Petroleum in 2010 is just one of the examples of the threat globalization poses to the environment.

Due to globalization and industrialization, various chemicals have been thrown into the soils which have resulted into the growth of many noxious weeds and plants. This toxic waste has caused a lot of damage to plants by interfering in their genetic makeup. It has put pressure on the available land resources. In various parts of the world, mountains are being cut to make way for a passing tunnel or a highway. Vast barren lands have been encroached upon to pave way for new buildings. Various studies over the years, have found that plastic is one of the major toxic pollutants, as it is a non-biodegradable product. However, plastic is of immense use when it comes to packaging and preserving goods that are to be exported. This has led to increased use of plastic, causing widespread environmental pollution.

The growth of multinational corporations has led to the emergence of new global powers. Their power and influence is estimated form the fact that 20,000 multinational corporations spread around the world produce about a third of the world, they control 70 percent of world trade, and 80 percent of direct capital investment (FDI) is done by them. Goes the annual budget of each of them exceeds the budget of many budding, developing countries. in these countries. There is a competition to attract multinational corporations so that official direct capital investment can be done by them. Multinational corporations are operating all over the world. Their base may be in one country, but their aim is to earn maximum profit abroad.

Global integration in the fields of production, financing and commerce Multinational Corporation (MNCs) operating beyond the most visible national boundaries are increasingly affecting the global economy. Unlike standardist factory concentrated production, which was adopted on the basis of the protective policies of nation states, existing financial activity, which has been described as a characteristic of the post-standardist, is controlled by multinational corporations. With the failure of the initial international method and the subsequent global acceptance of a new liberal approach based on deconsolidation, privatization and liberalization, MNCs have virtual expanded in the last three decades.

In recent years we have been seeing that emerging local powers are trying to raise their issues at the global level, in order to put pressure on the nation state. Now the power and effectiveness of the nation state has decreased. Now global issues have been nationalized .many traditional rights of the state are going out of his hands. The coordination of areas like defense, communication and economic system etc. has started happening at the international level. Now the sovereignty of nation states has been associated with the larger political organization. Such organization includes the north Atlantic Treaty Organization (NATO), Organization of the Petroleum Exporting Countries (OPEC), United Nations Organization (UNO), International Monetary Fund (IMF), etc. The existence of the nation may be in danger by making a deal with these organizations.

Proposal of industrial policy in India and nationalization of imperial bank, life insurance, general insurance, commercial bank, coal mining etc. were the indicators of this trend. The concepts of mixed economy and welfare state were dominated not only in developed but also in developing countries like India, but soon this situation started changing. The stagnation in production and rapid rise in inflation led to the eclipse of a mixed economy.

This had both positive and negative effects for developing countries .one should take advantage of its positive effects, by carefully considering the negative aspects, its side effects have to be reduced. Education systems can play an important role in this task. The role of developing countries in tailoring international economic policies to suit their national interests and needs has become extremely limited. Today the developing countries were not only forced to adopt the process of globalization, but now they are also not left with the option to develop their own independent economic policies.

Conclusion

Foreign companies and businessmen have benefited a lot from the policies of globalization.at the same time, our exporters and other foreign business related section have benefited a lot. Globalization is playing a major role in the process of rapid integration between different countries.

The process of globalization has changed the social life of the industrial pattern of the global people and it has a great impact on the Indian business system. There has been globalization of economic, social and cultural structures. Earlier the process was slow. Today with the introduction of information technology, new ways of communication have made the world much smaller. Globalization has resulted in an increase in production.

MNCs have set up manufacturing plants all over the world.it has positive impact and India will remove many hurdles and adopt global policies to expand business at international level. India is gaining international recognition and getting stronger in the economic and political fields.

India has opened its industrial and service sector to foreign investment. The ideology of welfare state is getting affected. The middle class is expanding. The global judicial system is developing, due to the progress of the communication revolution; India has achieved the rate of rapid development.

References

1. Dubey Abhay Kumar. Globalization of India' vani Publication, New Delhi, 2007.
2. Jaiswal Ramakrishna. Globalization and world order, democracy review (Quarterly) Institute of constitutional and parliamentary studies, New Delhi, 2004.
3. Rangrajan Chakravarty. India new Dimension of Economics, Rajpal Publications New Delhi, 2002.
4. Sinha Sachidananda. The challenges of globalization, Vani Publication New Delhi, 2005.
5. India's ecological footprint, A Business, perspective GFN and CII New Delhi, 2008.
6. Dr. Dubey Yukta, Dr. Vandna Tiwari. Globalization and its impact on Developing Countries, research digests (Quarterly). Bilashpur, 2007.

7. Kumar Vijay. Impact of globalization on Indian urban families, Indian political science research journal (half yearly) Meerut, 2010.
8. Bhaduri Amit, Nayyar Deepak. Truth of liberalization, Rajkamal Publication, New Delhi, 2008.
9. Sinha Sachidananda, challenges of globalization, vani publication, New Delhi, 2005.
10. Chakravarty Rangrajan. New dimensions of economic policy of India, Rajpal publication, New Delhi, 2002.
11. Kabra Kamalnayan. Globalization: various dimensions of discourse and reality publication institute, New Delhi, 2005.
12. http://ncert.nic.in
13. https://hindi.indiawaterportal.org
14. http://www.footprintnetwork.org
15. https://hindi.theindianwire.com
16. https://www.hindilibraryindia.com
17. https://www.nationalgeographic.org
18. https://s3-2us-west amazonaws.com
19. https://www.environment.co.za

अध्याय – 2
पर्यावरण और वैश्वीकरण

लेखिका

मीना ठाकरे

सहायक प्राध्यापक, भूगोल शासकीय महाविद्यालय बिछुआ, जिला छिन्दवाडा, मध्य प्रदेश, भारत

अध्याय – 2

पर्यावरण और वैश्वीकरण

मीना ठाकरे

शोध सारांश

पर्यावरण वैश्वीकरण आर्थिक वैश्वीकरण से संबंधित है, क्योंकि वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास होता है। ऐसे पैमाने पर पर्यावरणीय प्रभाव, जो कई संगठनों और व्यक्तियों के लिए चिंता का विषय है। जबकि आर्थिक वैश्वीकरण के पर्यावरणीय प्रभाव हैं, उन प्रभावों को पर्यावरण वैश्वीकरण की अवधारणा के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। कुछ मामलों में, पर्यावरण वैश्वीकरण आर्थिक वैश्वीकरण के सीधे विरोध में है, खासकर जब उत्तरार्द्ध को व्यापार को प्रोत्साहित करने के रूप में वर्णित किया जाता है, और पूर्व में, पर्यावरण समर्थक पहल को बढ़ावा देने के रूप में जो व्यापार के लिए एक बाधा है। उस कारण से, एक पर्यावरण कार्यकर्ता आर्थिक वैश्वीकरण के विरोध में हो सकता है, लेकिन पर्यावरण वैश्वीकरण की वकालत कर सकता है। पर्यावरण वैश्वीकरण अंतर्राष्ट्रीय समन्वित प्रथाओं और नियमों को संदर्भित करता है। पर्यावरण वैश्वीकरण आमतौर पर गैर–सरकारी संगठनों और विकसित देशों की सरकारों द्वारा समर्थित है, लेकिन विकासशील देशों की सरकारों द्वारा विरोध किया जाता है, जो पर्यावरण–समर्थक पहलों को उनके बाधा के रूप में देखते हैं।

शब्दावलीः– पर्यावरण, वैश्वीकरण, पारिस्थितिकी, पारितंत्र।

प्रस्तावना

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिल कर हुआ है। "परि" जो हमारे चारों ओर है "आवरण" जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है, अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ होता है चारों ओर से घेरे हुए। पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत एक इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा पारितंत्रीय आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप, जीवन और जीविता को तय करते हैं। पर्यावरण वह है जो कि प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है हमारे चारों तरफ वह हमेशा व्याप्त होता है। सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय से निर्मित इकाई है। यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी के अन्दर समाहित होती है तथा हम मनुष्य अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण

को भी प्रभावित करते हैं। इस प्रकार एक जीवधारी और उसके पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रय संबंध भी होता है। पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े–मकोड़े, सभी जीव–जंतु और पेड़–पौधे आ जाते हैं और इसके साथ ही उनसे जुड़ी सारी जैव क्रियाएँ और प्रक्रियाएँ भी। अजैविक संघटकों में जीवनरहित तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रियाएँ आती हैं, जैसे: चट्टानें, पर्वत, नदी, हवा और जलवायु के तत्व सहित कई चीजे इत्यादि रहती है। वैश्वीकरण का तात्पर्य विश्व के विभिन्न समाजों और अर्थव्यस्थाओं के एकीकरण से है। यह उत्पादों, विचारों, दृष्टिकोणों, विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं आदि के आपसी विनिमय के परिणाम से उत्पन्न विचार है। इसके कारण विश्व में विभिन्न लोगों, क्षेत्रों एवं देशों के मध्य अन्तःनिर्भरता में वृद्धि होती है। वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है इसके राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आयाम है। यद्यपि वैश्वीकरण की उत्पत्ति के लिए सिर्फ कोई एक कारण उत्तरदायी नही है, फिर भी सूचना प्रौद्योगिकी एवं लोगों की सोच में विश्वव्यापी जुडाव का बढना महत्वपूर्ण कारण है।

वैश्वीकरण का इतिहास

"वैश्वीकरण" शब्द का उपयोग अर्थशास्त्रियों के द्वारा 1980 से किया जाता रहा है, हालाँकि 1960 के दशक में इसका उपयोग सामाजिक विज्ञान में किया जाता था, लेकिन 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध और 1990 तक इसकी अवधारणा लोकप्रिय नहीं हुई। वैश्वीकरण की सबसे पुरानी सैद्धांतिक अवधारणाओं को उद्यमी से मंत्री बने एक अमेरिकी–चार्ल्स तेज रसेल द्वारा लिखा गया जिन्होंने 1897 में शब्द 'कॉर्पोरेट दिग्गजों' की रचना की। वैश्वीकरण को एक सदियों लंबी प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो मानव जनसंख्या और सभ्यता के विकास पर नजर रखती है, जो पिछले 50 वर्षों में नाटकीय ढंग से त्वरित हुई है। वैश्वीकरण के प्रारंभिक रूप रोमन साम्राज्य, पार्थियन साम्राज्य और हान राजवंश, के समय में पाए जाते थे, जब चीन में शुरू हुआ रेशम मार्ग पार्थियन साम्राज्य की सीमा तक पहुँच गया और आगे रोम की तरफ बढ़ गया। इस्लामी स्वर्ण युग भी एक उदाहरण है, जब मुस्लिम अन्वेषकों और व्यापारियों ने पुरानी दुनिया (Old World) में प्रारंभिक वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थापना की जिसके परिणाम स्वरुप फसलों व्यापार, ज्ञान और प्रौद्योगिकी का वैश्वीकरण हुआ और बाद में मंगोल साम्राज्य के दौरान, जब रेशम मार्ग पर अपेक्षाकृत अधिक एकीकरण था। व्यापक संदर्भ में वैश्वीकरण की शुरुआत 16वीं शताब्दी के अंत से पहले हुई, यह स्पेन और विशेष रूप से पुर्तगाल में हुई। 16वीं शताब्दी में पुर्तगाल का वैश्विक विस्तार विशेष रूप से एक बड़े पैमाने पर महाद्वीपों, अर्थव्यवस्थाओं और संस्कृतियों से जुड़ा हुआ था। पुर्तगाल का अफ्रीका के अधिकांश तटों और भारतीय क्षेत्रों के साथ विस्तार और व्यापार वैश्वीकरण का पहला प्रमुख व्यापारिक रूप था। विश्व व्यापार, की एक लहर उपनिवेशवाद और सांस्कृतिकग्राह्यता दुनिया के सभी कोनों तक पहुँच गई। वैश्विक विस्तार 16वीं और 17वीं शताब्दियों में वैश्विक विस्तार यूरोपीय व्यापार

के प्रसार के माध्यम से जारी रहा जब पुर्तगाली और स्पैनिश साम्राज्य, अमेरिका, तक फैल गया और अंततः फ्रांस और ब्रिटेन तक पहुँचा। वैश्वीकरण ने दुनिया भर में संस्कृतियों, खासकर स्वदेशी संस्कृतियों पर एक जबरदस्त प्रभाव डाला।

17वीं सदी में वैश्वीकरण एक कारोबार बन गया जब डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई, जो पहली बहुराष्ट्रीय निगम कहलाती है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में उच्च जोखिम के कारण, डच ईस्ट इंडिया कंपनी दुनिया की पहली कम्पनी बन गई, जिसने स्टॉक के जारी शेयरों के माध्यम से कंपनियों के जोखिम और संयुक्त स्वामित्व को शेयर किया, यह वैश्वीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण शुरूआत रही। ब्रिटिश साम्राज्य (इतिहास में सबसे बड़ा साम्राज्य) को इसके पूर्ण आकार और शक्ति के कारण वैश्वीकरण का दर्जा मिला था। इस अवधि के दौरान ब्रिटेन के आदर्शों और संस्कृति को अन्य देशों पर थोपा गया। 19वीं सदी को कभी कभी "वैश्वीकरण का प्रथम युग" भी कहा जाता है। बहरहाल, कुछ लेखकों के अनुसार, वैश्वीकरण को जिस रूप में हम जानते हैं, उसकी वास्तविक शुरूआत 16वीं शताब्दी में पुर्तगाली विस्तारवाद के साथ हुई। यह वह काल था, जिसका वर्गीकरण यूरोपीय शाही शक्तियों, उनके उपनिवेशों और, बाद में, संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच तेजी से बढ़ते अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश के आधार पर किया गया। यही वह काल था, जब उप –सहारा अफ्रीका के क्षेत्र और प्रशांत द्वीप विश्व प्रणाली में शामिल हो गए। "वैश्वीकरण का प्रथम युग" के टूटने की शुरूआत 20वीं शताब्दी में प्रथम विश्व युद्ध के साथ हुई, और बाद में 1920 के दशक के अंत और 1930 के दशक की शुरुआत में स्वर्ण मानक संकट के दौरान यह ध्वस्त हो गया।

आधुनिक वैश्वीकरण

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वैश्वीकरण मुख्य रूप से अर्थशास्त्रीयों, व्यापारिक हितों और राजनीतिज्ञों के नियोजन का परिणाम है जिन्होंने संरक्षणवाद और अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण में गिरावट के मूल्य को पहचाना। उनके काम का नेतृत्व ब्रेटन वुड्स सम्मेलन और इस दौरान स्थापित हुई बहुत सी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने किया, जिनका उद्देश्य वैश्वीकरण की नवीनीकृत प्रक्रिया का निरीक्षण, इसको बढ़ावा देना और इसके विपरीत प्रभावों का प्रबन्धन करना था। इन संस्थाओं में पुनर्निर्माण और विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बैंक (विश्व बैंक) और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) शामिल हैं। वैश्वीकरण में तकनीक के आधुनिकीकरण के कारण यह सुविधा हुई, जिसने व्यापार और व्यापार वार्ता दौर की लागत को कम कर दिया, मूल रूप से शुल्क तथा व्यापार पर सामान्य समझौते (General Agreement on Tariffs and Trade) (GATT) के तत्वावधान के अन्तर्गत ऐसा हुआ है जिसके चलते कई समझौतों में मुक्त व्यापार पर से प्रतिबन्ध हटा दिया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अवरोधों में अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों GATT के माध्यम से लगातार कमी आई है। GATT के परिणामस्वरूप कई विशेष पहल की गईं और इसमें विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), जिसके लिए GATT आधार है, शामिल है।

मुक्त व्यापार का संवर्धन

- शुल्क में कमी या समाप्ति।
- शुल्क के साथ मुक्त व्यापार क्षेत्र का निर्माण।
- विशेष रूप से समुद्र नौवहन के लिए डिब्बाबन्दीकरण (containerization) के विकास के परिणामस्वरूप होने वाले परिवहन मूल्य में कमी।
- पूँजी नियन्त्रण (capital controls) में कमी या कटौती।
- स्थानीय व्यवसाय के लिए सब्सिडी में कटौती, उन्मूलन, या सम्मिश्रण।

मुक्त व्यापार पर प्रतिबन्ध

- कई राज्यों में बौद्धिक सम्पदा के हार्मोनीकरण कानून अधिक प्रतिबन्धों के साथ लागू हैं।
- बौद्धिक सम्पदा प्रतिबन्धों की पराराष्ट्रीय मान्यता (उदा. चीन से प्राप्त पेटेण्ट अमेरिका में मान्य होगा)।
- उरुग्वे वार्ता (Uruguay Round) (1984 से 1995) में एक सन्धि हुई, जिसके अनुसार WTO व्यापारिक विवादों में मध्यस्थता करेगा और व्यापार के लिए एक एकीकृत मंच उपलब्ध कराएगा। अन्य द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौते जिसमें मास्ट्रिच संधि और उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार समझौते (एन ऐ एफ टी ऐ) शामिल हैं, इसका लक्ष्य भी व्यापार के अवरोधों और मूल्यों को कम करना है।

वैश्वीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव

वैश्वीकरण का हमारी जीवन शैली पर दूरगामी प्रभाव पड़ा है। इसने प्रौद्योगिकी तक बेहतर पहुंच, संचार और नवाचार में सुधार किया है। विभिन्न संस्कृतियों के लोगों को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के अलावा, इसने आर्थिक समृद्धि में एक नए युग की शुरुआत की है और विकास के विशाल चैनल खोले हैं। हालाँकि, वैश्वीकरण ने चिंता के कुछ क्षेत्रों को भी बढ़ाया है, और इनमें से बहुत सा प्रभाव पर्यावरण पर पड़ा है। वैश्वीकरण ने पर्यावरणवाद पर बहस में बड़े पैमाने पर छापा है, और हरे रंग के कार्यकर्ताओं ने इसके दूरगामी प्रभावों पर प्रकाश डाला है।

कुछ एक्टिविस्ट्स ने बताया है कि वैश्वीकरण के कारण उत्पादों की खपत में वृद्धि हुई है, जिसने पारिस्थितिक चक्र को प्रभावित किया है। खपत बढ़ने से वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि होती है, जो बदले में पर्यावरण पर तनाव डालती है। वैश्वीकरण ने कच्चे माल और भोजन के परिवहन में एक स्थान से दूसरे स्थान तक वृद्धि की ओर भी अग्रसर किया है। पहले लोग स्थानीय रूप से उगाए जाने वाले भोजन का सेवन करते थे, लेकिन वैश्वीकरण के साथ, लोग उन उत्पादों का उपभोग करते हैं जो विदेशों में विकसित किए गए हैं। इन उत्पादों के परिवहन में खपत होने वाले

ईंधन की मात्रा से पर्यावरण में प्रदूषण के स्तर में वृद्धि हुई है। इसने ध्वनि प्रदूषण और परिदृश्य घुसपैठ जैसी कई अन्य पर्यावरणीय चिंताओं को भी जन्म दिया है। परिवहन ने ऊर्जा के गैर–नवीकरणीय स्रोतों, जैसे कि गैसोलीन पर भी दबाव डाला है। विमान से उत्सर्जित होने वाली गैसों ने ग्रीनहाउस प्रभाव को बढ़ाने के अलावा ओजोन परत की कमी को भी पूरा किया है। उत्पादन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाला औद्योगिक कचरा जहाजों पर लाद दिया गया है और महासागरों में डंप किया गया है। इसने बहुत सें पानी के नीचे के जीवों को मार दिया है और समुद्र में कई हानिकारक रसायनों को जमा किया है। 2010 में ब्रिटिश पेट्रोलियम के लीक हो रहे कंटेनरों में से तेल से निकलने वाले पारिस्थितिकी तंत्र को होने वाले नुकसान, पर्यावरण के लिए खतरे के वैश्वीकरण के उदाहरणों में से एक है।

वैश्वीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण, विभिन्न रसायनों को मिट्टी में फेंक दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप कई हानिकारक खरपतवारों और पौधों का विकास हुआ है। इस विषैले कचरे ने पौधों को उनके आनुवंशिक संरचना में हस्तक्षेप करके बहुत नुकसान पहुंचाया है। इसने उपलब्ध भूमि संसाधनों पर दबाव डाला है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में, एक सुरंग या राजमार्ग के लिए रास्ता बनाने के लिए पहाड़ों को काटा जा रहा है। नई इमारतों के लिए बड़े पैमाने पर बंजर भूमि को प्रशस्त किया गया है। जबकि मनुष्य इन नवाचारों के साथ सामंजस कर सकते हैं, इनका पर्यावरण पर दीर्घकालिक प्रभाव हो सकता है। इन वर्षों में विभिन्न अध्ययनों में पाया गया है कि प्लास्टिक प्रमुख विषैले प्रदूषकों में से एक है, क्योंकि यह एक गैर–बायोडिग्रेडेबल उत्पाद है। हालाँकि, प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग होता है, जब इसे निर्यात किए जाने वाले सामानों की पैकेजिंग और संरक्षण के लिए लाया जाता है। इससे प्लास्टिक का उपयोग बढ़ा है, जिससे व्यापक पर्यावरण प्रदूषण फैल रहा है। इसने हमारे जीवन में इतने बदलाव किए हैं कि इसे उलट देना बिल्कुल भी संभव नहीं है। समाधान प्रभावी तंत्र विकसित करने में निहित है जो इस बात की जांच कर सकता है कि यह पर्यावरण को किस हद तक प्रभावित कर सकता है। शोधकर्ताओं का विचार है कि इस समस्या का उत्तर समस्या में ही निहित है, अर्थात् वैश्वीकरण स्वयं एक बेहतर संरचना बनाने के लिए समर्थन दे सकता है जो आर्थिक रूप से व्यवहार्य और पर्यावरण के अनुकूल है। वैश्वीकरण प्रतिस्पर्धा के बारे में है, और अगर कुछ निजी स्वामित्व वाली कंपनियां पर्यावरण के अनुकूल होने का नेतृत्व कर सकती हैं, तो यह दूसरों को सूट का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

यह महत्वपूर्ण है कि हम पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाए रखने के लिए कुछ प्रयास करें। इस ग्रह पर मानव जाति का अस्तित्व पर्यावरण पर काफी हद तक निर्भर है कि हम अपने स्वयं के कार्यों के परिणामों की अनदेखी नहीं कर सकते। जबकि इस विषय पर बहुत बहस और चर्चा हो रही है, समय की आवश्यकता है कि प्रभावी नीतियों को लागू किया जाए और उन नीतियों को लागू किया जाए। जिन लोगों को हमने प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना है, उन पर यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी है कि पर्यावरण पर नुकसान की सीमा को कम किया जाए।

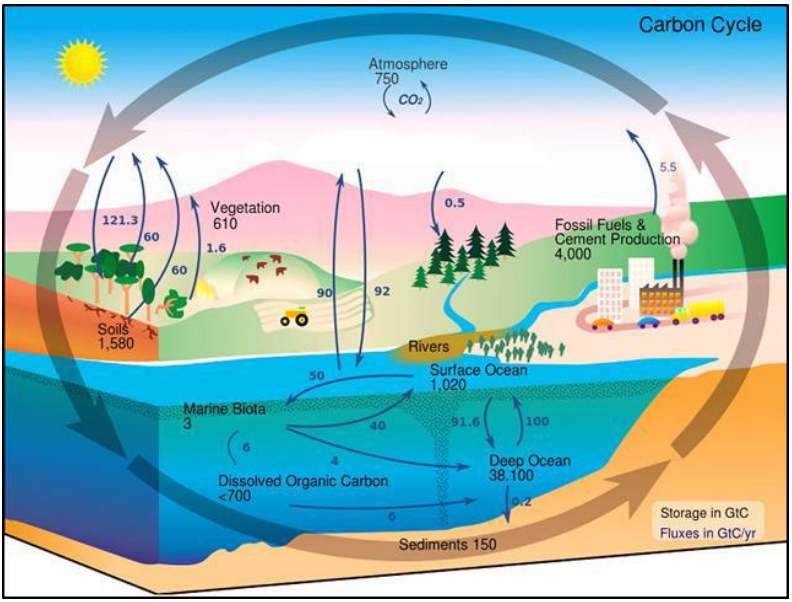

1992 वैश्वीकरण का सूत्रपात करने वाली नई आर्थिक नीतियों को पेश करते समय तत्कालीन केन्द्रीय वित्त मंत्री ने सुधारों के पर्यावरणीय आयामों पर दिल्ली में एक भाषण दिया था। उस भाषण में उनका मुख्य तर्क ये था कि पर्यावरण संरक्षण के लिये आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है जो उनकी नई नीतियों से हासिल हो जाएँगे। प्रश्न यह है कि दो दशक बाद उनका नुस्खा कारगर साबित हो पाया है या नहीं? मोटे तौर पर, 1991 से शुरू हुए आर्थिक वैश्वीकरण के निम्नलिखित प्रभाव रहे हैं।

1. अर्थव्यवस्था का तेजी से विकास सुनिश्चित करने के लिये बुनियादी ढाँचे और संसाधनों के दोहन की क्षमता में भारी इजाफा जरूरी था। इसके लिये सम्पन्न वर्ग द्वारा अन्धाधुन्ध उपभोग को बढ़ावा दिया गया। इस दौरान हमारी अर्थव्यवस्था माँग केन्द्रित रही है और इस बात पर कोई ध्यान नहीं देना चाहता कि कितनी माँग (और किस उद्देश्य से) जायज व वांछनीय मानी जा सकती है और उसके क्या परिणाम हो रहे हैं।

2. व्यापार (निर्यात व आयात) उदारीकरण के दो परिणाम रहे हैं: विदेशी मुद्रा जुटाने के लिये प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से दोहन तथा भारत में उपभोक्ता वस्तुओं व कचरे का बड़े पैमाने पर आयात (तेजी से बढ़ते घरेलू कचरे के अलावा)। इससे कचरे के निस्तारण और स्वास्थ्य के लिये गम्भीर समस्याएँ पैदा हुई हैं तथा वानिकी, मछुवाही, चरवाही, खेती, स्वास्थ्य व दस्तकारी से जुड़े परम्परागत रोजगारों पर बहुत बुरा असर पड़ा है।

3. पर्यावरणीय मानकों व नियमों में ढील दे दी गई है या उनके उल्लंघन को नजरअन्दाज कर दिया जा रहा है ताकि देशी और विदेशी, दोनों तरह की कम्पनियों को निवेश के लिये अनुकूल माहौल मिले।
4. अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेश के लिये खोल देने की वजह से ऐसी–ऐसी कम्पनियाँ भी भारत में चली आई हैं जिनका पर्यावरण पर बहुत बुरा ट्रैक रिकॉर्ड रहा है। ऊपर से उनके लिये पर्यावरण और सामाजिक समानता प्रावधानों को और कमजोर करने के लिये दबाव बनाया जा रहा है। घरेलू कम्पनियों के आकार और ताकत में भी जबर्दस्त इजाफा हुआ है और अब वे भी इसी तरह का दबाव बनाने लगी हैं।
5. विभिन्न क्षेत्रों के निजीकरण से उनके प्रदर्शन में कुछ हद तक सुधार तो आता है लेकिन यह व्यवस्था पर्यावरणीय मानकों की अवहेलना या उनमें ढील को भी बेलगाम छूट दे देती है।

यह सभी तथ्य सत्य होते तो अब तक देश के पर्यावरण की रक्षा के लिये हमारे पास बहुत सारे उपाय और कार्यक्रम होते। लेकिन सच ये है कि पर्यावरणीय संकट तो पहले से और ज्यादा गम्भीर हो गया है। हमने आगे दिखाया है कि यह वैश्वीकरण की प्रक्रिया का एक अपरिहार्य और अविभाज्य अंग है। जिस तरह यह सिद्धान्त गरीबों के लिये काम नहीं कर पाता कि अर्थव्यवस्था की विकास दर बढ़ने से तरक्की के लाभ एक दिन रिस–रिसकर गरीबों तक भी पहुँच जाएँगे (ट्रिकल डाउन सिद्धान्त) उसी तरह 'निवेश के लिये संसाधनों की आवश्यकता' का तर्क भी पर्यावरण की सेहत नहीं बचा सकता।

यहाँ ये स्पष्ट कर देना जरूरी है कि नीचे हमने कई क्षेत्रों और गतिविधियों की जो आलोचना की है उसका ये मतलब नहीं है कि हम उन व्यवसायों और गतिविधियों के खिलाफ हैं। हम ये नहीं कह रहे हैं कि खनन, फूलों की खेती, औद्योगिक मछुवाही, आयात और निर्यात आदि नहीं होना चाहिए। गौर करने वाली बात सिर्फ ये हैं कि न केवल हम ये सवाल उठाएँ कि हमें उनकी जरूरत है या नहीं, बल्कि ये भी पूछें कि हमें उनकी किस हद तक, किस मकसद के लिये और किन हालात में जरूरत है। ये ऐसे सवाल हैं जिनको फिलहाल पीछे धकेल दिया गया है। दूसरी बात ये है कि नीचे उल्लिखित बहुत सारे रुझान केवल वैश्वीकरण की मौजूदा मुहिम का ही नतीजा नहीं है। उनमें से बहुत सारे ऐसे हैं जो पिछले 5–6 दशकों में अपनाए गए 'विकास' का नतीजा हैं, वे अभिशासन, सामाजिक–आर्थिक असमानता व दूसरी मूलभूत समस्याओं का नतीजा है। वैश्वीकरण के इस दौर ने उन्हें न केवल और ज्यादा सघन कर दिया है बल्कि ऐसे नए–नए पहलू भी सामने ला दिये हैं जो भारत के पर्यावरण व समाज के लिये इस तरह के 'विकास' के खतरों को और ज्यादा बढ़ाते जा रहे हैं।

बुनियादी ढाँचा और माल: माँग ही सब कुछ है। दो अंकों की आर्थिक वृद्धि दर के एकमात्र लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए माँग ने एक ऐसे ईश्वर की हैसियत पा ली है जिस पर आप उंगली नहीं उठा सकते। बुनियादी ढाँचे या कच्चे माल या व्यावसायिक ऊर्जा की जरूरत मानव कल्याण और समानता के आदर्शों को ध्यान में रखकर तय नहीं हो रही है बल्कि इसको आर्थिक वृद्धि दर के लक्ष्यों को ध्यान में रखकर तय किया जा रहा है, यद्यपि इस वृद्धि दर का मानव कल्याण के साथ कोई अनिवार्य सहसम्बन्ध दिखाई नहीं देता। यही कारण है कि पिछले दो दशकों के दौरान नये बुनियादी ढाँचे (हाइवे, बन्दरगाह और हवाई अड्डे, शहरी बुनियादी ढाँचा और बिजली घर आदि) के निर्माण में बेतहाशा इजाफा हुआ है। नतीजा ये है कि बहुत सारी जमीन इन परियोजनाओं के पेट में चली गई है। ऐसी ज्यादातर जमीन जंगलों व तटों जैसे प्राकृतिक इलाकों की या खेतों और चरागाहों की थीं।

1993–94 और 2008–09 के बीच भारत के खनिज उत्पादन में 75 प्रतिशत इजाफा हुआ है। इसकी वजह से बहुत सारी वन भूमि को खानों में तब्दील कर दिया गया है। 1981 (जब वन भूमि के गैर–वन प्रयोग के लिये केन्द्र सरकार की मंजूरी को अनिवार्य घोषित किया गया था) के बाद अब तक लगभग 1.5 लाख हेक्टेयर वन भूमि को खानों में तब्दील किया जा चुका है। इन बदलावों के पर्यावरणीय एवं सामाजिक प्रभाव रोंगटे खड़े कर देने वाले रहे हैं। अरावली और शिवालिक पर्वत श्रृंखलाओं की चूना पत्थर और संगमरमर पहाड़ियों में विस्फोट गोवा, मध्य प्रदेश व उड़ीसा में लौह अयस्क अथवा बाक्साइट प्लेटोय पूर्वी भारत में भस्म कोयला मैदान और झारखंड की रेडियोधर्मी यूरेनियम पट्टी, ये सभी इस बात के साक्षी हैं कि आर्थिक 'विकास' किस तरह की तबाही को जन्म दे सकता है।

1991 से दुनिया की कुछ सबसे विशाल खनन कम्पनियाँ भारत में निवेश कर रही हैं। इनमें रियो टिंटो जिंक (ब्रिटेन), बीएचपी (ऑस्ट्रेलिया), एलकॉन (कनाडा), नॉर्स्क हाइड्रो (नार्वे), मेरीडियन (कनाडा), डी बीयर्स (दक्षिण अफ्रीका), रेथियोन (अमेरिका) और फेल्प्स डॉज (अमेरिका) आदि बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ शामिल हैं। इनमें से बहुत सारी कम्पनियों का पर्यावरणीय एवं सामाजिक रिकॉर्ड भारत की अपनी खनन कम्पनियों जैसा या उनसे भी बदतर रहा है।

नीतिगत बदलावों की दिशा इस लक्ष्य पर केन्द्रित रही है कि खनन कम्पनियों के लिये हालात ज्यादा से ज्यादा आसान हो जाएँ। मिसाल के तौर पर, 1996 में खनन कम्पनियों को अधिकतम 25 वर्ग किलोमीटर जमीन पट्टे पर दी जा सकती थी। अब यह सीमा 5,000 वर्ग किलोमीटर तक बढ़ा दी गई है। पहले से ज्यादा बड़े इलाकों को जनसुनवाई की शर्तों से बाहर कर दिया गया है। ऐसी ही कई दूसरी राहतें भी खनन कम्पनियों को दी गई हैं। 2008 की राष्ट्रीय खनिज नीति में तो यहाँ तक सुझाव दिया गया है कि पर्यावरणीय नियमन को कम्पनियों की मर्जी पर छोड़ दिया जाए। खनन क्षेत्र में नियमन का अभाव, जो कि भारत और दुनिया के लालच को पूरा करने के लिये चलाई जा रही माँग केन्द्रित अर्थव्यवस्था का अपरिहार्य परिणाम

है, को अवैध खनन के एक के बाद एक आए असंख्य रहस्योद्घाटनों में देखा जा सकता है। अकेले कर्नाटक में 2006 से 2009 के बीच अवैध खनन की 11,896 घटनाएँ सामने आई थीं। इसी दौरान आन्ध्र प्रदेश में ऐसी 35,411 घटनाएँ सामने आईं। सरकारी प्रोत्साहन की बदौलत 2003–04 के बाद भारत के निर्यात में सालाना 25 प्रतिशत से ज्यादा इजाफा हुआ है। 2011–12 में भारतीय निर्यात 300 अरब डॉलर तक पहुँच चुका था। अगर ये मान लिया जाए कि निर्यात कुछ हद तक वांछनीय या अनिवार्य है तो भी एक जिम्मेदारी भरी नीति में कम–से–कम निम्नलिखित सिद्धान्तों का समावेश होना चाहिए।

- देश के नागरिकों के लिये उन चीजों की कमी न पड़े जिनका निर्यात किया जा रहा है।
- निर्यात के लिये चीजों के खनन या निर्माण में पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ पद्धति का प्रयोग किया जाए।
- जिन क्षेत्रों से ऐसे संसाधन निकाले जा रहे हैं, वहाँ रहने वाले स्थानीय समुदायों के अधिकारों का सम्मान किया जाए।
- इन समुदायों को प्राथमिक लाभान्वितों की श्रेणी में रखा जाए।

वैश्वीकरण के दौर में निर्यात को बढ़ाने की झोंक में इन सारे सिद्धान्तों की जमकर अवहेलना की गई है। खनन की तरह समुद्री मछुवाही भी एक मुख्य लक्ष्य रही है। 1990–91 में समुद्री उत्पादों का निर्यात 1,39,419 टन था जो 2008–09 में 6,02,835 टन हो गया था। जहाँ पहले हम महज दर्जन भर देशों को थोड़े से उत्पाद भेजा करते थे वहीं अब हम 90 देशों को लगभग 475 तरह की चीजों का निर्यात करते हैं। दुनिया भर में मात्रा और मूल्य, दोनों लिहाज से भारत दूसरा सबसे बड़ा मछली की खेती करने वाला उत्पादक देश बन गया है।

एक अध्ययन से पता चला है कि आन्ध्र प्रदेश व तमिलनाडु में झींगा खेती की सामाजिक एवं पर्यावरणीय लागत उसकी आर्थिक आमदनी से 3.5 गुना ज्यादा बैठ रही है जैसे–जैसे नए–नए क्षेत्र झींगा की खेती के लिये तब्दील होते जाते हैं वैसे–वैसे स्थानीय समुदायों के आहार का मुख्य हिस्सा स्थानीय मछलियाँ, जैसे मुलेट (मुगीलीदाई) और पर्ल स्पॉट (एट्रोलस सुराटेंसिस) खत्म होता जाता है। 2008 में समुद्र से पकड़ी गई मछलियों की तादाद 30 लाख टन तक पहुँच गई थी और तटवर्ती पानी में (गहरे समुद्र में नहीं) अतिदोहन के लक्षण दिखाई देने लगे थे और कई प्रजातियों का अतिदोहन हो चुका था। दसवीं पंचवर्षीय योजना के मछुवाही कार्यबल की रिपोर्ट के अनुसार, ये समुद्र को 'खुली पहुँच वाले क्षेत्र' के रूप में इस्तेमाल करने का नतीजा है जहाँ परम्परागत मछुवाही समुदायों को कोई पट्टेदारी अधिकार नहीं दिए गए हैं। तकनीकी भी बदल चुकी है।

सरकर का दावा है कि नई नीतियों के तहत बड़े ऑपरेटरों को केवल गहरे समुद्र में ही मछली पकड़ने की इजाजत दी जाएगी जहाँ परम्परागत मछुवारे नहीं जाते। मगर अभी तक के अनुभव तो यही बताते हैं कि बड़े ट्रॉलर मालिक भी तट के आस–पास ही मछली पकड़ना ज्यादा सुगम और सस्ता मानते हैं। ऊपर से ये ट्रॉलर मछलियों के प्रजनन के मौसम में भी गैरकानूनी ढंग से मछलियाँ पकड़ने से बाज नहीं आते। इन्हीं कारणों से ट्रॉलर मालिकों और स्थानीय मछुवारों के बीच मारपीट की घटनाएँ आम हो गई हैं।

वैश्वीकरण और उदारीकरण

पिछले एक दशक के दौरान भारत औद्योगिक देशों से आने वाले खतरनाक और विषैले कचरे का एक बड़ा आयातक बन गया है। अब हम मोटे तौर पर 100 तरह का कचरा आयात करते हैं। इनमें से कुछ दर्जन चीजें बेहद खतरनाक हैं। धातु कचरे का आयात सालाना कई मिलियन टन तक पहुँच गया है। 1996–97 में कचरे की छीलन व पीवीसी (प्लास्टिक) कचरे का आयात लगभग 33 टन था जो 2008–09 में 12,224 टन तक जा पहुँचा था। प्लास्टिक कचरे का आयात 2003–04 में 1,01,313 टन था जो 2008–09 में 4,65,921 टन यानी चार गुने से भी ज्यादा हो चुका था। इस मामले में पेप्सिको और हिन्दुस्तान लीवर जैसे बड़े औद्योगिक घराने भी अक्सर जिम्मेदार दिखाई देते हैं। आयातित कचरे में एक बहुत बड़ा हिस्सा कम्प्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक उद्योग का रहा है और यह लगातार बढ़ता जा रहा है। कचरे से सम्बन्धित मुद्दों पर काम करने वाली संस्था टॉक्सिक्स लिंक की एक जाँच के मुताबिक, दिल्ली के रीसाइक्लिंग कारखानों में लगभग 70 प्रतिशत ई–कचरा औद्योगिक देशों द्वारा भारत में भेजा गया था।

उपभोक्तावाद और कचरा

भारत में आडम्बरपूर्ण उपभोग की मौजूदा लहर देश के मुट्ठी भर अमीर तबके में विदेशी उपभोक्ता वस्तुओं की भूख से पैदा हुई है। अस्सी के दशक में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने आयात क्षेत्र को खोलना शुरू किया था लेकिन उपभोक्तावाद को सबसे बड़ी सफलता तभी मिली जब आर्थिक 'सुधार' शुरू किए गए। विलासिता वस्तुओं या लग्जरी गुड्स के उत्पादन में जो भारी इजाफा हुआ है उससे पर्यावरणीय सन्तुलन पर गहरे असर पड़े हैं। इस प्रक्रिया में संसाधनों के खनन (खदानें, पेड़ों की कटाई) से उत्पादन (प्रदूषण, कामकाजी खतरे आदि) तक बहुत सारे दुष्परिणाम सामने आते हैं। दि एनर्जी रिसर्च इंस्टीट्यूट (टेरी) ने गैर–पुनर्नवीकरणीय पदार्थों (जैसे खनिज पदार्थ), औद्योगिक उपभोक्ता वस्तुओं (जिनमें रेफ्रिजरेटर और एयरकंडीशनर जैसे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाले उत्पाद शामिल हैं), वाहनों आदि के इस्तेमाल में तेज इजाफे का अध्ययन किया है। ये सारे नुकसान सिर्फ जनसंख्या वृद्धि का परिणाम नहीं है बल्कि सम्भवतः बदलती जीवनशैली का परिणाम ज्यादा हैं। अब उपभोक्ताओं की पसन्द–नापसन्द भी बदल रही है। पहले गैर–डिब्बाबन्द वस्तुओं की

माँग ज्यादा थी तो अब डिब्बाबन्द वस्तुओं की माँग बढ़ गई है। टेरी का अनुमान है कि 2047 तक डिब्बाबन्द या पैकेटों में आने वाली वस्तुओं की पैकिंग पर होने वाला कागज का उपभोग प्रतिवर्ष 13.5 किलोग्राम प्रति व्यक्ति तक पहुँच जाएगा जो 1997 में सालाना केवल 2.7 किलोग्राम था। इलेक्ट्रॉनिक कचरा केवल पिछले दो–ढाई दशकों की देन है। 2005 में 1,46,180 टन इलेक्ट्रॉनिक कचरा पैदा हो रहा था जो 2012 तक 8,00,000 टन तक जा पहुँचेगा। प्लास्टिक पदार्थ हमारे लोगों की जिन्दगी में कितनी गहरी पैठ बना चुके हैं इसका महज दो दशक पहले तक उसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता था। 1991 से अब तक हमारी विभिन्न प्रकार के प्लास्टिक पदार्थों की उत्पादन क्षमता 10 लाख टन से बढ़कर 50 लाख टन से भी काफी ऊपर जा चुकी है। 2000–01 तक भारत 5,400 टन प्लास्टिक कचरा प्रतिदिन और लगभग 20 लाख टन प्रतिवर्ष पैदा कर रहा था।

उपभोग असमानता

2007 में ग्रीनपीस इंडिया ने भारत में वायुमण्डलीय परिवर्तन के मुद्दों पर एक रिपोर्ट जारी की थी जिसमें बताया गया था कि भारत की आबादी का एक बहुत छोटा हिस्सा बेहिसाब कार्बन उत्सर्जन पैदा कर रहा है। अब तक यह बात इस हकीकत के पीछे छिपी हुई थी कि ज्यादातर भारतीय बहुत कम मात्रा में कार्बन उत्सर्जन पैदा कर रहे थे और इसकी वजह से औसत कार्बन उत्सर्जन काफी कम था। इस रिपोर्ट में पाया गया कि देश के सबसे अमीर लोग (ऐसे लोग जिनकी आमदनी 30,000 रुपये प्रतिमाह से ज्यादा है) सबसे निर्धन तबके (जिनकी आमदनी 3000 रुपये प्रतिमाह से कम है और जिनकी संख्या देश की आधी से ज्यादा आबादी बैठती है) के मुकाबले 4.5 गुना ज्यादा कार्बन उत्सर्जन पैदा कर रहे थे। 8000 रुपये माहवार से ज्यादा कमाने वाले 15 करोड़ भारतीय पहले ही 2.5 टन प्रति व्यक्ति की वार्षिक वैश्विक सीमा से ऊपर जा चुके हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि अगर हम वायुमण्डल में तापमान वृद्धि को 2 डिग्री से नीचे रोकना चाहते हैं तो हमें प्रति व्यक्ति उत्सर्जन स्तर को इससे ऊपर नहीं जाने देना चाहिए। सामान्य बत्तियाँ, पंखे और टेलीविजन सभी वर्गों में आम हैं (हालाँकि इनका भी अमीर परिवार ही ज्यादा इस्तेमाल करते हैं) लेकिन कई उपकरण – एयर कंडीशनर, बिजली के गीजर, वॉशिंग मशीन, बिजली या इलेक्ट्रॉनिक किचन उपकरण, डीवीडी प्लेयर्स, कम्प्यूटर आदि–ऐसे हैं जो मुख्य रूप से केवल अमीर परिवारों में ही दिखाई पड़ते हैं। दूसरी बात, जीवाश्म ईंधनों का इस्तेमाल करने वाले यातायात साधनों, जिनमें गैस से चलने वाले कारें और हवाई जहाज भी शामिल हैं, के इस्तेमाल में भारी इजाफा भी अमीर परिवार की उपभोग प्रवृत्ति की ही विशेषता है। कार्बन उत्सर्जन तो उपभोग असमानता का सिर्फ एक संकेतक है। अगर हम उन सारे उत्पादों और सेवाओं को भी जोड़ लें जो सबसे अमीर वर्गों के लोग इस्तेमाल करते हैं और ये देखें कि वे कितना कचरा पैदा करते हैं तो उनके व्यवहार का पर्यावरणीय प्रभाव सबसे निर्धन तबकों के पर्यावरणीय प्रभाव के मुकाबले और भी ज्यादा भयानक दिखाई पड़ेगा।

आन्तरिक उदारीकरण

दुनिया के तमाम औद्योगिक देशों में औद्योगिक व विकास परियोजनाओं से सम्बन्धित पर्यावरण मानक व नियंत्रण सख्त होते जा रहे हैं क्योंकि परियोजना प्राधिकरण और कॉरपोरेट घराने अपने दम पर पर्यावरणीय एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करने में नाकाम रहे हैं। भारत में यही प्रक्रिया उलटी दिशा में चल रही है। 1994 में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के अन्तर्गत एक अधिसूचना जारी की गई थी। इसके माध्यम से यह अनिवार्य किया गया था कि कुछ खास किस्म की परियोजनाओं के लिये पर्यावरण प्रभाव आकलन (ईआईए) अनिवार्य होगा। हालाँकि यह अधिसूचना भी काफी कमजोर थी और विभिन्न प्रकार की क्रियान्वयन विफलताओं का शिकार रही है लेकिन इसमें विकास नियोजन के लिये पर्यावरणीय संवेदनशीलता के प्रति एक हद तक प्रतिबद्धता जरूर दिखायी गई थी। हमारे उद्योगपति, नेता और बहुत सारे विकास अर्थशास्त्री इसे सिर्फ एक सिरदर्दी ही मानते रहे। लिहाजा भारत सरकार द्वारा बनाई गई एक समिति ने दलील दी कि इस पर्यावरणीय रुकावट पर अंकुश लगाया जाए और विश्व बैंक के पैसे से किये गये एक पर्यावरणीय आकलन में भी इस नियम तथा दूसरे प्रावधानों में सुधार (यानी उनको शिथिल करने) का सुझाव दिया गया। इस तरह, 2006 में गैर–सरकारी संस्थाओं के तमाम विरोध के बावजूद सरकार ने इस अधिसूचना को बदल दिया और औद्योगिक व विकास परियोजनाओं के लिये पर्यावरणीय मंजूरी लेना बेहद आसान बना दिया जबकि अनिवार्य जनसुनवाईयों के प्रावधान को कमजोर कर दिया। इस अधिसूचना में पर्यटन उद्योग को भी ऐसी परियोजनाओं की सूची से बाहर निकाल दिया गया जिनको पर्यावरणीय मंजूरी की जरूरत है जबकि बहुत सारे स्थानों पर यह उद्योग पूरी तरह बेलगाम साबित हो चुका है। इन बदलावों का कुल नतीजा ये रहा है कि बहुत सारी परियोजनाएँ बड़ी आसानी से पर्यावरणीय मंजूरी पा लेती हैं। इसके चलते केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के लिये आवेदनों की जाँच करना या उनके प्रभावों पर नजर रखना भी असम्भव हो गया है। 2009 तक पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की निगरानी में 6,000 से ज्यादा परियोजनाएँ थी और इस काम के लिये केवल 20 कर्मचारी थे। गौरतलब है कि पर्यावरणीय मंजूरी पा चुकी परियोजनाओं की 3–4 साल में केवल एक बार जाँच की जाती है। पर्यावरणीय नियमन पर वैश्वीकरण के प्रभावों को सबसे स्पष्ट रूप से तब समझा जा सकता है जब हम ये देखते हैं कि किस तरह वन संरक्षण अधिनियम, 1980 (जिसके तहत वन भूमि के गैर–वन प्रयोग सम्बन्धी सारे प्रस्तावों पर केन्द्र सरकार की अनुमति का प्रावधान किया गया था) वन सफाया अधिनियम बन चुका है। जैसा कि खनन परियोजनाओं के सम्बन्ध में पीछे जिक्र किया गया था, वैश्वीकरण के दौर में जंगलों के सफाये में बहुत ज्यादा तेजी आयी है। 1980–81 के बाद जितने जंगल काटे गए हैं उनमें से लगभग आधे 2001–02 के बाद ही कटे हैं।

1991 में तटीय नियमन क्षेत्र या कोस्टल रेग्यूलेशन जोन (सीआरजेड) अधिसूचना को पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के तहत ऐसी गतिविधियों पर नजर रखने के

लिये जारी किया गया था जो प्राकृतिक क्षेत्रों और आजीविकाओं के लिये नुकसानदेह हो सकती हैं। हालाँकि ये अधिसूचना मुकम्मल नहीं मानी जा सकती और ज्यादातर राज्य सरकारों द्वारा इसे अनमने ढंग से ही लागू किया गया है, फिर भी, इस अधिसूचना से बहुत सारे तटीय क्षेत्रों और वहाँ रहने वाले मछुवारों की आजीविकाओं को बचाने में मदद मिली है। यह अधिसूचना भी औद्योगिक और व्यावसायिक लॉबियों की आँख की किरकिरी बननी ही थी और लिहाजा उन्होंने सरकार पर दबाव डालकर मूल अधिसूचना में लगभग 20 बिन्दुओं पर रियायतें हासिल कर ही लीं। फलस्वरूप, 2005–06 में सरकार ने अधिसूचना को भी सिरे से बदलने का मन बना लिया और एक ऐसी व्यवस्था सुझायी जिसमें राज्य सरकारें ये तय कर सकती हैं कि तटों के आस–पास विभिन्न क्षेत्रों में किन चीजों को मंजूरी दी जा सकती है और किन चीजों को मंजूरी नहीं दी जा सकती। नागर समाज संगठन और मछुवाही समुदाय (नेशनल फिशवर्क्स फोरम जैसे नेटवर्कों के जरिए) ने इस प्रस्ताव की बहुत तीखी आलोचना की है क्योंकि यह व्यावसायिक और औद्योगिक स्वार्थों के सामने पूरी तरह घुटने टेक देने का उदाहरण है।

वैश्वीकरण और पर्यटन

वैश्वीकरण के युग में पर्यटन को जबर्दस्त बढ़ावा मिला है। घरेलू पर्यटकों की संख्या 1996 में 14 करोड़ थी जो 2007 में बढ़कर 52.7 करोड़ तक पहुँच चुकी थी। इसी दौरान विदेशी सैलानियों की संख्या भी 22.9 लाख से बढ़कर 50.8 लाख तक पहुँच गई थी। पहले भारत के कई इलाके सैर–सपाटे के लिये प्रतिबन्धित थे लेकिन अब उन्हें भी सैलानियों के लिये खोल दिया गया है। इनमें लद्दाख, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप और बहुत सारे उत्तर–पूर्वी क्षेत्र शामिल थे, जो पर्यावरणीय, सांस्कृतिक एवं रक्षा सम्बन्धी दृष्टि से बहुत संवेदनशील इलाके हैं। जिन इलाकों में वैश्वीकरण के पहले से ही सैर–सपाटे की खुली छूट थी वे बेलगाम पर्यटन गतिविधियों के बोझ से चरमराते जा रहे हैं। पर्यटन उद्योग द्वारा कानूनों की अवहेलना के सैकड़ों मामले सामने आ चुके हैं। उदाहरण के लिये, तटों पर बनने वाले पर्यटन रिजॉर्ट्स द्वारा सीआरजेड अधिसूचना की अवहेलना (केवल केरल में स्थित कोवलम बीच इलाके में ही इस अधिसूचना के उल्लंघन की 1500 से ज्यादा घटनाएँ प्रकाश में आ चुकी हैं)। कान्हा, बांधवगढ़, कार्बेट, पेरियार, रणथंभौर, बंदीपुर और नागरहोल जैसे बाघ संरक्षण क्षेत्र (टाइगर रिजर्व) एवं अन्य संरक्षित क्षेत्र रिजॉर्ट्स से घिर चुके हैं। ये रिजॉर्ट्स इन अभ्यारण्यों के कार्मिक बल और सुविधाओं पर बेहिसाब दबाव पैदा करते हैं, पर्यटन के दुष्परिणामों को रोकने के लिये बनाए गए नियमों की धज्जियाँ उड़ाते हैं और अभ्यारण्यों के रख–रखाव में कोई योगदान नहीं देते।

भारत के मध्य में स्थित विशाल भूभाग

जहाँ देश के सर्वाधिक संवेदनशील जनजतीय समुदाय और बढ़िया जंगल स्थित हैं– को खनन, इस्पात उद्योग व अन्य उद्योगों के लिये औद्योगिक घरानों को सौंपा

जा रहा है। क्योंकि आदिवासी प्रतिरोध और तथाकथित नक्सल अथवा माओवादी संगठनों की पकड़ के कारण इनमें से कोई भी योजना साकार नहीं हो पा रही है इसलिये राज्य सरकारें नक्सलवाद से लड़ने के नाम पर आदिवासी समुदाय को ही एक–दूसरे के खिलाफ लड़वाने लगी हैं। सलवा जुडूम (शान्तिपूर्ण शिकार) नामक इस मुहिम ने गृह युद्ध जैसी स्थिति पैदा कर दी है जिसमें सैकड़ों गाँवों को या तो जबरन खाली करवा दिया गया है या लोगों को खदेड़ दिया गया है। केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय की एक उच्चस्तरीय समिति ने अपनी ड्राफ्ट रिपोर्ट में बताया था कि एस्सार और टाटा जैसे विशाल औद्योगिक घराने "कोलम्बस के बाद से अब तक आदिवासी जमीनों पर हो रहे सबसे बड़े कैंजे की मुहिम में सबसे आगे हैं।" अन्तिम रिपोर्ट से इस वाक्यांश और विशेष औद्योगिक घरानों के नाम, दोनों बातों को हटा दिया गया था। इसी बीच फेडरेशन ऑफ इंडियन चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा 2009 में जारी की गई 'राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद' नामक रिपोर्ट में मध्य भारत को कम्पनियों द्वारा दोहन के लिये खोलने की वकालत की गई है। इसमें कहा गया है कि "विशाल खनिज भंडारों वाले इलाकों में फैल रहा माओवादी उग्रवाद जल्दी ही कई औद्योगिक निवेश योजनाओं को अस्त–व्यस्त कर सकता है। जब भारत को अपनी औद्योगिक मशीनरी को और तेज करना था और जब विदेशी कम्पनियाँ भी इस जश्न में शामिल होने आ रही हैं तभी नक्सलवादी गुट खनन और स्टील कम्पनियों के साथ दो–दो हाथ करने पर आमादा है जबकि ये कम्पनियाँ भारत की दीर्घकालिक प्रगति के लिये बहुत आवश्यक है। इस चिन्ता के पीछे एक वजह यह है कि औद्योगिक जगत तथा नक्सलवादियों के प्रभुत्व वाले जंगल एक–दूसरे के नजदीक आते जा रहे हैं। भारत के समृद्ध शहरी उपभोक्ता ऑटो, उपकरण और मकान खरीद रहे हैं तथा वे देश की सड़कों, पुलों और रेलमार्गों में सुधार चाहते हैं। भारतीय मेन्यूफेक्चरिंग को आगे बढ़ाने और उपभोक्ताओं को संतुष्टी देने के लिये देश को अधिक मात्रा में सीमेंट, स्टील और बिजली की जरूरत है। इस राष्ट्रीय चुनौती से निपटने के लिये एक अनुकूल सामाजिक व आर्थिक वातावरण की आवश्यकता है। इसके बावजूद नक्सलवादियों से टकराव जारी है। भारत के लौह अयस्क भंडारों का 23 प्रतिशत और कोयले के विशाल भंडार नक्सलवादी गतिविधियों का केन्द्र बन चुके छत्तीसगढ़ में ही स्थित है। राज्य सरकार ने टाटा स्टील और आर्सेलर मित्तल (एमपी), डी बीयर्स कंसॉलिडेटेड माइन्स, बीएचपी बिलिटन (बीएचपी) और रियो टिंटो (आरटीपी) के साथ अरबों डॉलर के समझौतों पर दस्तखत किये हैं। इसी तरह के सौदे दूसरी राज्य सरकारें भी कर चुकी हैं। इसके अलावा कैटरपिलर (सीएटी) जैसी अमेरिकी कम्पनियाँ भी पूर्वी भारत में सक्रिय खनन कम्पनियों को अपने औजार बेचना चाहती हैं।

असतत् विकास बनाम वैश्वीकरण

पिछले कुछ दशकों के दौरान हमने अपने पर्यावरण के साथ जैसा बर्ताव किया है, उसी की वजह से पर्यावरणवादी और सामाजिक कार्यकर्ता आगाह करने लगे हैं

कि हम 'विकास' के जिस रास्ते पर बढ़ रहे हैं वह टिकाऊ रास्ता नहीं है। प्रेक्षणों और अनुभवों पर आधारित इस निष्कर्ष की ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क (जीएफएन) तथा कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज (सीआईआई) द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट में भी पुष्टि हो चुकी है। 2008 में जारी किए गए इस वक्तव्य में कहा गया है कि–

- अमेरिका और चीन के बाद दुनिया में तीसरे सबसे बड़े पर्यावरणीय पदचिन्ह (प्रभाव) भारत के ही हैं।
- भारत में जितने प्राकृतिक संसाधनों की क्षमता है उसके मुकाबले वह लगभग दोगुना प्राकृतिक संसाधनों की खपत कर रहा है।
- पिछले चार दशकों के दौरान मनुष्य के उपभोग को बर्दाश्त करने की प्रकृति की क्षमता भारत में लगभग आधी ही रह गई है।

नब्बे के दशक के आखिर में किये गये एक अध्ययन में टेरी ने ये निष्कर्ष दिया था कि भारत की पर्यावरण लागतें कृषि उत्पादन में गिरावट, जंगलों के सफाये के कारण लकड़ी के मूल्य में गिरावट, जल व वायु प्रदूषण के कारण पैदा हो रही स्वास्थ्य लागतों तथा क्षीण होते जा रहे जल संसाधनों की वजह से पैदा हो रही पर्यावरण लागतें जीडीपी के 10 प्रतिशत से भी ऊपर जा चुकी है। इसके अलावा मिट्टी की उपजाऊ क्षमता में गिरावट के कारण भी सालाना 11 से 26 प्रतिशत तक कृषि उपज का नुकसान हो रहा है।

भारत के ऊर्जा परिदृश्य पर तैयार की गई एक रिपोर्ट में कुछ सकारात्मक विश्लेषण दिखाई देता है भारतीय अर्थव्यवस्था में निम्न कार्बन वृद्धि के कुछ बहुत शक्तिशाली पहलू दिखाई देते हैं जिनके चलते इसकी व्यापक ऊर्जा एवं CO_2 सघनता चीन से कम तथा अमेरिका के बराबर है। इसके बावजूद, रिपोर्ट का निष्कर्ष यही है कि इन सकारात्मक लक्षणों के बावजूद भारत टिकाऊ विकास की दिशा में किसी बढ़िया रास्ते पर कतई नहीं चल रहा है, यहाँ विकास बहुत असमान रहा है, बहुत बड़ी आबादी पीछे छूटती जा रही है। और अकुशल कोयला प्रौद्योगिकी व खस्ता वितरण प्रणाली पर आश्रित ऊर्जा क्षेत्र के कार्बन सघनता दुनिया में अभी भी सबसे ऊपरी पायदान पर आती है।

वायुमण्डलीय परिवर्तन का प्रभाव और प्रतिक्रिया

पर्यावरण के प्रति पूँजीवादी भारत के रवैये का एक उदाहरण 1980 के दशक में जब दक्षिण के देशों पर आर्थिक वैश्वीकरण थोपा जाने लगा था, तभी से ऐसे उत्सर्जनों में सबसे भारी इजाफा हुआ है जो धरती का तापमान बढ़ा रहे हैं और वायुमण्डलीय परिवर्तन के लिये जिम्मेदार है। फलस्वरूप, आने वाले समय में भारत को कई तरह के दुष्परिणामों का सामना करना पड़ेगा। बाइसवीं शताब्दी की शुरुआत तक समुद्री जलस्तर में एक मीटर तक का इजाफा हो चुका होगा जो लगभग 5,764 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल को पानी की चपेट में ले लेगा। इससे 70 लाख से ज्यादा लोग

विस्थापित होंगे। कुल वर्षा में तो इजाफा होगा लेकिन बहुत सारे इलाकों में बारिश के दिनों और मात्रा में गिरावट आ जाएगी जिससे ऐसे सूखे और बाढ़ की स्थितियाँ पैदा होंगी जो हमने आज तक कभी नहीं देखी है। इसके अलावा, तापमान में वृद्धि के कारण अनाज उत्पादन में भी गिरावट आ जाएगी (कुछ फसलों में 20 प्रतिशत तक की गिरावट)। समुद्री पानी के तापमान में आने वाले बदलावों से समुद्री की उत्पादकता पर असर पड़ेगा। समृद्ध मूँगा (कोरल) इलाके मरने लगेंगे और मछलियों की आवाजाही के रुझानों में बदलाव आ जाएँगे जिससे मछुवारों का जीना दूभर हो जाएगा।

बेशक वैश्विक धरातल पर भारत सरकार उत्तर के देशों से जवाबदेही और पहलकदमी की माँग करती रही है और ये एक जायज बात है लेकिन उसकी अपनी घरेलू नीतियाँ अभी भी बेहद कमजोर और फिसलन भरी दिखाई देती हैं। 2009 में भारत सरकार ने वायुमण्डलीय बदलाव की राष्ट्रीय कार्ययोजना (एनएपीसीसी) जारी की थी। इसमें सौर ऊर्जा पर जोर तथा उपयुक्त मिशनों का गठन करके ऊर्जा कुशलता का बन्दोबस्त करने जैसे कुछ सकारात्मक तत्व सुझाए गए हैं। लेकिन इसमें गम्भीर अवधारणात्मक और क्रियान्वयन सम्बन्धी समस्याएँ भी हैं (मसलन, सौर ऊर्जा पर तो जोर दिया गया है मगर दूसरी पुनर्नवीकरणीय ऊर्जाओं पर कोई ध्यान नहीं है, विकेन्द्रीकृत ऊर्जा उत्पादन पर जोर नहीं दिया गया है और ऊर्जा कुशलता में कई कड़ियाँ गायब है)। बहुत सारे दूसरे पहलू (जैसे टिकाऊ कृषि और पानी सम्बन्धी मिशन) अभी भी थकी हुई, बीते जमाने की रणनीतियों में खोए हुए हैं जिनमें कोई साहसिक, नए तरह की सोच दिखाई नहीं देती। पानी मिशन अभी भी बड़े बाँधों पर ही निर्भर है और उनकी भारी पर्यावरणीय एवं सामाजिक लागतों को लगातार नजरअन्दाज किया जा रहा है। खेती में रासायनिक उर्वरकों (जो भारत में लगभग 6 प्रतिशत वायुमण्डलीय उत्सर्जनों के लिये जिम्मेदार हैं) से जैविक खादों की तरफ कोई उल्लेखनीय बदलाव दिखाई नहीं दे रहा है (यह मिशन अभी भी केवल तैयारी के चरण में है)। इस आशय की असमानताओं का कोई जिक्र नहीं है कि भारत की आबादी के विभिन्न तबकों ने कितना वायुमण्डलीय क्षेत्र घेरा हुआ है और महाधनी तबका किस तरह के भद्दे उपभोक्तावादी आचरण में डूबा हुआ है। एनएपीसीसी का मसौदा तैयार किया जा चुका है और अलग–अलग मिशनों की तरह इसमें संशोधन भी हो रहे हैं लेकिन कुछ ही मिशन को छोड़कर न तो इसमें जनता की राय ली जा रही है और न ही किसी तरह की पारदर्शिता है।

विविध संकट: भोजन, पानी, आजीविका

भारत की आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा बहुत गम्भीर संकटों जैसे खाद्य असुरक्षा, पानी की कमी, अपर्याप्त ईंधन तथा असुरक्षित आजीविका से जूझ रहा है। ये सारे संकट वैश्वीकरण के मौजूदा चरण से पहले भी मौजूद थे और विकास के आधुनिक रूपों के आने से पहले भी उनकी आहट सुनाई पड़ने लगी थी लेकिन मौजूदा विकास और वैश्वीकरण को इन्हीं संकटों का इलाज बताकर तो लागू किया

गया था। परन्तु इलाज तो दूर की बात रही, इस इलाज ने तो इन संकटों को और बढ़ा दिया है और बहुत सारे इलाकों व समुदायों में इन्होंने विकराल रूप ले लिया है।

खाद्य असुरक्षा

हर रोज भूखे पेट सोने वाली आबादी का प्रतिशत 1990 के दशक में 24 प्रतिशत से गिरकर 2004–06 में 22 प्रतिशत रह गया था। ये बहुत मामूली गिरावट है। इसके साथ यह भी तथ्य है कि दुनिया में सबसे ज्यादा कुपोषित और भूखे लोग भारत में ही है। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के मुताबिक 2004–06 के दौरान यह संख्या 25.1 करोड़ यानी देश की आबादी का लगभग एक चौथाई थी। अभी भी हमारे पास काफी मात्रा में अनाज है, भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के भण्डारों में अभी भी अनाज भरा है। इसके बावजूद हर चौथा हिन्दुस्तानी भूखे पेट सोने को मजबूर है। हमारे यहाँ एक तबका ऐसा है जो अनाज खरीद ही नहीं सकता और सरकार की कल्याण योजनाएँ उस तक नहीं पहुँच पातीं। इक्कीसवीं सदी में खाद्य पदार्थों की कीमतों में चौंकाने वाले इजाफे से ये स्थिति और खराब हो गई है। जैसे–जैसे करोड़ों लोग प्राकृतिक संसाधनों तथा कृषि आधारित आजीविकाओं से वंचित होते जा रहे हैं और बाजार अर्थव्यवस्था पर आश्रित होते जा रहे हैं वैसे–वैसे भोजन केवल नकदी के जरिए ही उपलब्ध होने लगा है जो कि ऐसे लोगों के लिये एक बहुत दुर्लभ संसाधन है। परम्परागत अनाज (जैसे ज्वार) और दलहन अथवा जंगलों व जलाशयों और नदियों से मिलने वाले जंगली व अर्धजंगली आहार आदि परम्परागत पोषण स्रोतों की उपलब्धता में गिरावट आई है और उनकी कीमतें भी गरीबों की पहुँच से बाहर चली गई हैं (मसलन नब्बे के दशक की शुरुआत से दलहन की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में 26 प्रतिशत गिरावट आ चुकी है)।

जल असुरक्षा भी उतनी ही गम्भीर है। ग्रामीण और शहरी इलाकों के करोड़ों लोगों के लिये पीने का पर्याप्त पानी जुटाना एक दैनिक संघर्ष बना हुआ है। जलाशयों, नदियों व भूमिगत जलस्रोतों का कुप्रबन्धन, वर्षाजल को खींचने वाले कैचमेंट क्षेत्रों का क्षरण, बार–बार आने वाले सूखे, शहरों में आबादी की तेज वृद्धि, सतही और भूमिगत स्रोतों का प्रदूषण इसके सबसे प्रमुख कारण है। नीतियों की विफलता (जल संरक्षण व प्रबन्धन) तथा जल संसाधनों पर शक्तिशाली कम्पनियों व अमीर तबके का कैंजा इन समस्याओं की एक बड़ी जड़ में है (उदाहरण के लिये, देश के बहुत सारे भागों में स्थित कोका कोला के बॉटलिंग संयंत्रों ने स्थानीय समुदायों को सुरक्षित भूमिगत पानी से वंचित कर दिया है)।

भूमिगत पानी का संकट खासतौर से चिन्ता का विषय है। खेती और औद्योगिक व शहरी जरूरतों के लिये इसका दोहन देश के बहुत सारे भागों में इतने ऊँचे स्तर पर पहुँच गया है कि जमीनी जलस्रोत बहुत तेजी से गिरते जा रहे हैं। ग्रामीण भारत में आधे से ज्यादा भूमिगत जलखंडों में पानी की भरपाई उतनी तेजी से नहीं हो पा

रही है जितनी तेजी से पानी निकाला जा रहा है। देश के एक तिहाई जिलों में भूमिगत पानी पीने लायक नहीं है क्योंकि उसमें लोहा, फ्लोराइड, आर्सेनिक और खारापन बहुत ज्यादा है।

भारत में पानी का कुल प्रयोग (लगभग 750 अरब घन मीटर अभी भी उपलब्ध मात्रा (लगभग 1869 अरब घन मीटर) से कम ही है लेकिन 2025 के बाद यह कभी भी उपलब्ध स्तर को पार कर जाएगा और 2050 तक बहुत ऊँचे स्तर पर जा पहुँचेगा। यह स्थिति तब है जब हम सिर्फ मानवीय प्रयोग की बात करें। अगर हम प्राकृतिक इलाकों और दूसरी अन्य प्रजातियों के लिये भी पानी के तमाम इस्तेमालों के बारे में सोचें तो दरअसल हम पहले ही संकट में फँस चुके हैं।

और अन्त में आजीविका या रोजगार का संकट है। जैसे–जैसे प्रकृति का विखंडन और जल/जमीन का क्षरण तेज होता जाता है अथवा प्राकृतिक संसाधनों पर परम्परागत समुदायों की पहुँच घटती जाती है वैसे–वैसे वे समुदाय बेरोजगार होने लगते हैं जो पहले स्वरोजगारयुक्त (किसान, शिकारी–संग्राहक, मछुवारे, चरवाहे, दस्तकार आदि) हुआ करते थे। अभी तक ऐसे आजीविका और रोजगारों का कितना नुकसान हुआ है, इस बारे में कोई व्यापक अनुमान उपलब्ध नहीं है। यह अपने आप में इस बात का संकेत है कि इस मुद्दे की कितनी अनदेखी होती रही है।

सबसे बुरा असर घुमक्कड़ समुदायों पर पड़ा है। उनके मौसमी आवागमन के रास्ते अस्त–व्यस्त हो गए हैं, उनकी जीवन शैली व संस्कृतियाँ संकट में हैं या उनकी अवमानना हो रही है और नाना प्रभावों के चलते उनके अपने बच्चे उनसे छिटकते जा रहे हैं। राष्ट्रीय मानविकी सर्वेक्षण संस्थान (एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया) का अनुमान है कि भारत में कम–से–कम 276 गैर–चरवाहा घुमन्तू व्यवसाय हैं (शिकारी–संग्राहक और बहेलिये, मछुवारे, दस्तकार, बाजीगर और कथावाचक, ओझा आध्यात्मिक व धार्मिक कलाकार, सौदागर आदि)। इनमें से ज्यादातर खतरे में हैं। कुछ पहले ही खत्म हो चुके हैं या खत्म होते जा रहे हैं और इन व्यवसायों से जो लोग विस्थापित हुए हैं वे या तो असंगठित क्षेत्र में असुरक्षित, अपमानजनक, कम आमदनी वाली और शोषण भरी नौकरियाँ करने लगे हैं या बेरोजगार हो गए हैं। देश के तकरीबन चार करोड़ चरवाहा घुमन्तुओं में से ज्यादातर की भी कुछ ऐसी ही स्थिति है।

आर्थिक वैश्वीकरण: पर्यावरण पर प्रभाव पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को केन्द्र सरकार से मिलने वाला पैसा नब्बे के दशक की शुरुआत से लगातार बढ़ा है। इसके बावजूद कुल बजट में इसका हिस्सा एक प्रतिशत से काफी नीचे ही रहा है। बजट में उसका हिस्सा 2004–05 के बाद लगातार नीचे गिरता गया है और 2009–10 में तो ये 0.36 प्रतिशत था जो कि अभी तक कुल बजट का सबसे कम हिस्सा था। गौरतलब है कि इसी दौरान (1995–96 से 2009–10) कुल बजट पाँच गुना बढ़ चुका है जबकि पर्यावरण एवं वन मंत्रालय का बजट सिर्फ चार गुना बढ़ा है। बजट में

गैर–परम्परागत ऊर्जा स्रोतों जैसे दूसरे सम्बन्धित क्षेत्रों का हिस्सा भी कोई खास नहीं बढाया गया है।

भारत सरकार द्वारा कराए जाने वाले सालाना आर्थिक सर्वेक्षण में अर्थव्यवस्था के मुख्य रुझानों की समीक्षा की जाती है। नब्बे की दशक की शुरुआत से ही सर्वेक्षण में पर्यावरण पर एक खंड रहा है लेकिन वास्तव में यह केवल एक महत्त्वहीन हिस्सा होता है। 200 पन्ने की रिपोर्ट में इसे महज एक या दो पन्ने नसीब होते हैं। यद्यपि इसमें भी जंगल, जमीन और पानी तथा प्रदूषण के सवाल पर दयनीय तस्वीर ही दिखाई देती है, लेकिन इसे साल के मुख्य आर्थिक घटनाक्रमों से जोड़कर कभी नहीं देखा जाता है। उदाहरण के लिये, सर्वेक्षण के लेखक इस बात का विश्लेषण नहीं करते कि इन घटनाक्रमों का प्रभाव प्रकृति व पर्यावरण के लिये हानिकारक था या लाभदायक था। न ही भावी आर्थिक विकास के लिये पर्यावरणीय विखंडन के दुष्परिणामों की जाँच की जाती है। 'टिकाऊ विकास' के लक्ष्यों की बार–बार होने वाली घोषणाओं के बावजूद ये आंकने के लिये कोई कसौटी या संकेतक नहीं है कि हम इस लक्ष्य की तरफ कितना आगे बढ़ पाए हैं? क्या वैश्वीकरण से पर्यावरण को कतई लाभ नहीं हुआ है? निश्चय ही वैश्वीकरण से कई पर्यावरणीय लाभ भी मिले हैं! पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा, प्रदूषण नियंत्रण व कुशलता के क्षेत्र में नई–नई तकनीकें सामने आई हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स तथा संचार साधनों के प्रसार से सूचनाओं व विचारों का तेज आदान–प्रदान सम्भव हुआ है और बड़ी कम्पनियाँ पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित तकनीकों के लिये ज्यादा संसाधन जुटा सकती हैं। फिर भी इस आशय का कोई संकेत दिखाई नहीं देता कि वैश्वीकरण के ये लाभ इसके नुकसानों के बराबर हैं। अभी तक जो भी संकेत मिल रहे हैं– मात्रात्मक या गुणात्मक–वे सभी देश भर में बढ़ती पर्यावरणीय अस्थिरता और करोड़ों लोगों के लिये बढ़ती पर्यावरणीय असुरक्षा की ही कहानी कह रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा ये माना जा सकता है कि नई तकनीकियाँ पर्यावरणीय ध्वंस को कुछ समय के लिये पीछे धकेल देंगी और हमें नए हालात की तरफ बढ़ने, एक बिल्कुल अलग तरह के समाज में पहुँचने के लिये थोड़ा ज्यादा समय मिल जाएगा। लेकिन इस तरह का समाज कैसा होगा? आर्थिक वैश्वीकरण का क्या विकल्प है? यह सब देखना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भरुचा, ई. टेक्स्टबुक ऑफ एनवायरनमेन्टल स्टडीज, यूनिवर्सिटी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, इण्डिया 2005।
2. शर्मा, पी.डी. इकोलॉजी एण्ड एनवायरन्मेन्ट, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, इण्डिया 2004।
3. सिंह, ए. वोरहेविया डिफ्यूजारू एन ओवर–ऐक्सप्लॉयटेड प्लाण्ट ऑफ मेडिसिनल इमपॉरटेन्स इन रूरल एरियाज ऑफ ईस्टर्न उत्तर प्रदेश, करेण्ट साइन्स, 2007 खण्ड–93, अक–4. पृ. 446।

4. आई यू सी एन. आई यू सी एन रेड लिस्ट कटेगरीज, आई यू सी एन, इंग्लैण्ड 1994 डी।

5. ग्रूएनवाल्ड, डी.ए. अ फोकोलौडियन अनालिसिस ऑफ एंवयार्मेंटल एजुकेशनरू टुवर्ड्स द सोशियोलौगिकल चौलेंजेस ऑफ अर्थ चार्टर, करिकुलम इन्क्वायरी 2004।

6. हौल्षर, डेविड डब्ल्यू. कल्तिवैतिग द एकोलौगिकल कौनसाइंसरू इकोलौजिकल एजुकेशन पर स्मिथ, ओर्र बोवार्स.ष एम.ए. थीसिस, नॉर्थ टेक्सास विश्वविद्यालय, 2009।

7. मेलोन,ज्ञ. के.एच. पर्यावरण एक्टिविस्ट के रूप में पर्यावरण शिक्षा शोधार्थी, एंवयार्मेंटल एजुकेशन रिसर्च 1999।

8. पामर, जे.ए, 21वीं सदी में पर्यावरण शिक्षारू सिद्धांत, अभ्यास, प्रगति और वादा, राउतलेज 1998।

9. विज्ञान (ed.) पर्यावरण शिक्षा, विज्ञान 1997।

10. स्मिथ, जे.सी. एन्वायरमेंट एंड एजुकेशनरू अ व्यू ऑफ चंगिंग सीन, पर्यावरण शिक्षा शोध 2006।

11. रोथ, चार्ल्स ई. "ऑफ द मैरीगोराउंड एंड ऑन टू द एस्केलेटर." इन फ्रॉम औट टू एक्शन इन एंवयार्मेंटल एजुकेशन, विलियम बी. स्टाप द्वारा संशोधित, पीपी. 12–23 कोलंबस, ओएचरू SMEAC सूचना संदर्भ केन्द्र, 1978. एड (ईडी) 159 046।

12. नचिकेता नीरज. पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी अ डायनामिक एप्रोच, जी के पब्जिकेशन, 2019।

13. चतुर्भुज मामोरिया, बी.एल. शर्मा "संसाधन एवं पर्यावरण" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा 2015।

14. गौतम अल्का. ''संसाधन एवं पर्यावरण'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2007।

15. कुमार प्रमिला, श्रीकमल शर्मा. ''मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2010।

16. प्रसाद गायत्री, नोटियाल राजेश. ''पर्यावरण भूगोल'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद 2012।

17. गौतम अल्का. "भारत का वृहद भूगोल" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009।

18. https://geographyandyou.com

19. https://wikicareer.in/wiki/Environmental_globalization.

Chapter - 3
Globalization: Challenges and Opportunities

Author

Dr. Manita Kaur Virdi
Assistant Professor, Govt. College Bichhua, Chhindwara,
Madhya Pradesh, India

Chapter - 3

Globalization: Challenges and Opportunities

Dr. Manita Kaur Virdi

Abstract

Globalization refers to an open flow of information, technology, and goods among countries and consumers. This openness occurs through various relationships, from business, geopolitics and technology to travel, culture, and media. The world is getting smaller and companies need to understand what this means for the future of doing business. Companies that don't embrace globalization risk losing a competitive advantage, which allows other businesses to take over new opportunities in the global marketplace. Globalization allows companies to find lower-cost ways to produce their products. It also increases global competition, which drives prices down and creates a larger variety of choices for consumers. Lowered costs help people in both developing and already-developed countries live better on less money.

Globalization is a complex phenomenon. As such, it has a considerable influence on several areas of contemporary societies. Globalization has led to mass unemployment as multinational companies outsource their services.

Keywords: Globalization, technology, opportunities, advantage

Introduction

Globalization means the integration of economies and societies through the flow of information, ideas, technology, goods, services, capital, finance, and people. The true meaning of Globalization in a broad sense is connecting in all areas of human life. Globalization is an established part of the modern world, so most of us do not realize the benefits it brings to our everyday lives-such as easy access to a variety of different cuisines or new technologies developed by countries half a world away.

Even though globalization makes our lives better, it does bring some challenges as companies start to grow and expand across borders. Cultural differences around the world are undeniable. These differences create hurdles for businesses entering foreign markets and necessitate changes to

their daily business operations, whether it's employing workers in a new region or communicating the value of their product to a new audience.

The official definition of "globalization" is the process by which businesses or other organizations develop international influence or start operating on an international scale. Globalisation can simply be defined as the process of integration and interaction between different people, corporations and also governments worldwide. Technology advancement which has in turn advanced means of communication and transportation has helped in the growth of globalisation.

Globalization allows companies to find lower-cost ways to produce their products. It also increases global competition, which drives prices down and creates a larger variety of choices for consumers. Lowered costs help people in both developing and already-developed countries live better on less money. Businesses gain a great deal from globalization, including new customers and diverse revenue streams. Companies interested in these benefits look for flexible and innovative ways to grow their business overseas. Both the benefits and challenges of globalization change how a business operates in different ways. When companies decide to go global, they must be ready and willing to change internal processes. This helps to accommodate new markets and make their global workforce feel comfortable and accepted at work.

Analysis

It is the process by which other companies or organizations enhance their international reputation or start operating internationally. Globalization began thousands of years ago when people and companies bought and sold in distant lands. In the middle Ages, Central Asia was connected to China and Europe via the famous Silk Road. After World War II and the last two.

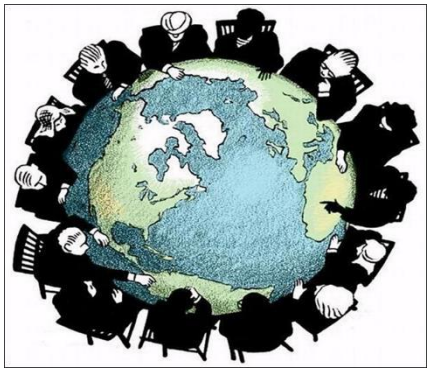

Source: https://www.goconqr.com

Decades, Governments of many countries have adopted Free-market economies. They have greatly increased their own production potential and created countless new opportunities for international trade and investment. New routes and means to transport goods have been discovered, which has allowed the people to expand their business easily and efficiently. The government has reduced all trade barriers and concluded new international agreements to promote trade in goods, services and investment. This profitable action has created opportunities for international trade. In foreign markets, companies with these new opportunities set up new factories and establish production and marketing relationships with foreign partners. Hence, Globalization is defined as an international industrial and financial enterprise.

Impact of Globalization in India the British Colonial rule had destroyed the self-sufficient economy of India and left India to be the poorest country. Our first Prime Minister gave preference to a mixed economy to boost the economic condition of the country. Public sectors were set up along with the private enterprises, but because of the socialistic model of the economy, the new strategy did not produce profitable results. Due to this, a number of public sectors became sick and the growth rates of production began to fall. During that time, the poverty of the people in India was increasing at an alarming rate and because of low domestic savings and acute balance of payment crisis; there was no adequate capital for investment. During that time of crisis, Prime Minister PV Narsimha Rao introduced the policy of liberalization, privatization to overcome the financial situation. India opened up to Globalization after the economic policy of 1991 came into force. Mounting debts and pressure from the International Monetary Fund drove the nation to go global. The process of Globalization has been an integral part of the recent economic growth of India. Globalization has played a very significant role in the growth of export, leading to the expansion of the job market in India. One of the major sectors of Globalization in India has been in the growth of outsourced IT and Business Process Outsourcing services. There has been an incredible increase in the number of skilled professionals in India employed by domestic and foreign companies to cater service to the customers globally, especially in the USA and Europe.

Emerging issue

In addition to designing a new international economic architecture, we also need to redefine the agenda of these institutions and to identify those issues which need to be addressed more effectively in the future. The potential list is too extensive to cover comprehensively today. Let me focus

on three which should be of particular importance to this audience: investment, telecommunications and corruption. Foreign direct investment has become perhaps the single most powerful force behind global economic integration.

In 1992, the worldwide sales of foreign affiliates of multinational companies reached an estimated $5.3 trillion dollars, over $700 billion more than total global exports of goods and services that year foreign direct investment has also spread new technologies and improved skill levels, especially in developing Countries.

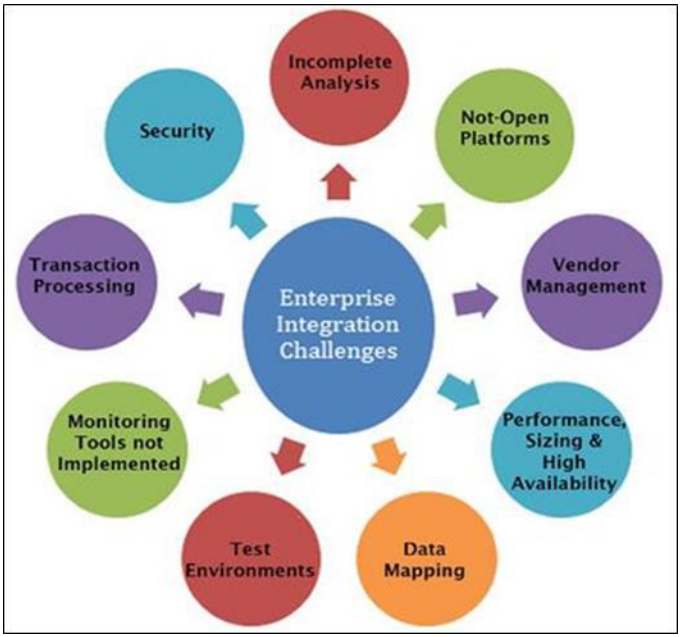

Source: https://www.cetrixcloudservices.com

In today's global marketplace, trade often follows investment, so host government regulations on foreign investment can have a major impact on trade flows. That is why we need improved international rules on investment. The inclusion of trade-related investment measures in the Uruguay Round Agreement was an important first step. The United States has taken the lead in pushing for a Multilateral Agreement on Investment in the OECD, which would establish a broad, multilateral framework for international investment.

The current revolution in telecommunications is another key factor in the accelerating pace of globalization. Increased competition and improved technology have led to a dramatic decline in communications costs. The real

cost of making a three-minute phone call from New York to London dropped 99 percent from the 1940s to 1990.

But to realize the full potential of recent advances in communication, we need to build a Global Information Infrastructure (GII). This new GII should be based on the five principles adopted by the International Telecommunications Union: private investment; market-driven competition; flexible regulatory systems; non-discriminatory access; and universal service. While considerable progress has been made in developing the GII over the past two years, much important work remains to be done. New international rules on telecommunications services are clearly required.

Challenges and Opportunities of globalization

This Asia Program event, co-sponsored with the Federation of Indian Chambers of Commerce, explored the dynamics of globalization in today's India, highlighting both opportunities and challenges through the distinct perspectives of the three speakers. With the unfolding process of globalization and the significant role of economic reforms in India, issues of inclusive and fair economic growth are extremely salient. The ability of economic reforms in the various areas of trade, investment, and services to simultaneously address the concerns of Indian society as well as both national and international private sector actors is becoming increasingly imperative to the achievement of sustainable and equitable economic growth in India.

Bharat Wakhlu provided a concise overview of the Indian economy's rapid progress since the implementation of key economic reforms in 1991. India's economic growth has increased from 5.2 percent in 1991 to 9 percent today, and foreign reserves have soared from US $2 billion to $200 billion, while the fiscal deficit and debt burden have significantly decreased. Wakhlu asserted that the five central challenges of globalization in India are governance, energy and resources, equity, security, and ecology. While the private sector in India wants the democratic process to be more efficient, particularly in infrastructure development, Wakhlu stresses that it is through empowering citizens with education and deepening the democratic system that infrastructure development will best be achieved. Environmental sustainability needs to be a priority for the private sector, particularly since "the effective use and management of energy will become paramount for the long-term success of the nation", especially because India has an energy-deficit. Furthermore, it is crucial that the creation of new wealth in India be accompanied by equitable distribution with the less-privileged.

Globalization has impacted people and communities across the globe and has significantly influenced sustainable development. Fueled by fast-paced changes in technology and the increased mobility of goods, services, capital and labour, over the past decades globalization has greatly change economics societies and the natural environment and has made our world interconnected than ever before. These trends have presented a wealth of opportunities. But globalization has also presented significant challenges, including an uneven distribution of its benefits and costs.

First mega-trend refers to the impact that production changes have had on labour markets, including through outsourcing and mechanization, which have spurred job losses, particularly in manufacturing sectors. These trends in labour markets are associated with higher rates of income inequality, which has increased in a majority of countries across the globe.

The second mega-trend is closely connected to the first, as it relates to the fast-moving development and advancement of new technologies, including in information and communications and artificial intelligence that have also affected the world of work. While these innovations can act as catalysts for sustainable development, countries that do not have access to them are at risk of being left behind.

Globalization and its effect on climate change is the third emerging mega-trend. The report highlights that many trends closely linked to globalization, including economic activity, lifestyle changes and urbanization, all have an impact on our environment and may contribute to climate change.

"The report of the Secretary-General emphasizes that globalization can be a powerful driver of economic growth, but to achieve sustainable development, globalization must work for all," Mr Liu said, stressing also that "global agreements can play a key role in strengthening the benefits of globalization".

Such global agreements are already in place with the 2030 Agenda for Sustainable Development, the Addis Ababa Action Agenda on Financing for Development and the Paris Agreement on climate change. Mr Liu described them as "a normative action plan to address many of the challenges associated with globalization".

The challenges of globalization

It's clear that globalization provides an abundance of benefits worldwide-but what are the disadvantages of globalization? Here are just a few.

1. Exploitation

American companies have been known to use cheap foreign sweatshop labor to make cheap American goods. Exploiting cheap markets and lax regulations in developing nations has caused pollution and suffering in those countries, even as profits soar abroad.

Dodd-Frank legislation passed in the United States now requires companies to be transparent about how they source their materials, but only about 10% of mines in eastern Congo have been declared conflict-free.

The outsourcing of labour also leaves a dearth of jobs in industrialized countries, where labour is more expensive. When the United States outsources manufacturing to cheaper competitors in foreign markets, domestic manufacturing labourers lose their jobs. Higher unemployment leads to discontent, strain on the social safety net, and lower tax revenue from income. Labourers whose skills are less relevant in a global marketplace will have a hard time adjusting to a world dominated by globalization.

2. High investment costs

Globalization presents challenges for multinational corporations in terms of capital investment and leadership. Setting up a business in a new country, especially a developing country, requires substantial upfront capital. The needed infrastructure may not be in place.

Roads, electrical grids, broadband internet, water, and sanitation may need to be upgraded or developed from scratch. It can also be difficult to find and retain managers with the requisite skills to add value to the company and work effectively within the local culture.

3. Confusing local systems

Multinational corporations also face the challenge of contending with different laws in different countries. Sometimes they must contend with different types of legal and banking systems entirely. Difficulty navigating these systems may lead to impediments in expanding to new countries and severe repercussions for missteps made.

4. Weak regulation

Fewer regulatory bodies exist for international business enterprises. Navigating the international markets can thus sometimes feel like the Wild West. Interconnected markets also mean that with a lack of regulation, if something goes wrong, the repercussions will resound globally. The global financial crisis, for example, hit many nations hard.

5. Immigration challenges

Increasing populations of immigrants and refugees present a challenge for industrialized nations. Though countries may wish to help, too large an influx puts a strain on resources and social structures. Countries find themselves limited in the aid they can provide without detriment to their own citizens.

6. Localized job loss

Globalization can contribute to a decline in job opportunities as companies move their production facilities overseas. Forbes reports that the move toward globalization has led to deindustrialization throughout the United States, which was once home to many more factories and auto plants. When American companies move their production to China and other countries with plentiful, cheap labour, American workers suffer under factory closures, layoffs, and skyrocketing unemployment rates where they live. According to the Economic Policy Institute, the U.S. trade deficit with China-that is, the amount by which our imports, which tend to cost U.S. jobs, exceed our exports, which tend to provide them-has lost the United States 3.4 million jobs since 2001.

The benefits of globalization

1. Increased flow of capital

The economic benefits of globalization to much of the world are hard to ignore. Increased trade to larger and more diverse markets results in greater revenues and increased gross domestic product (GDP). World GDP has grown from about $50 trillion in 2000 to about $75 trillion in 2016, primarily as a result of economic interdependence and the increased global trade it allows.

India, for example, is a country whose GDP has benefited immensely from globalization in the technology sector:

- The United States relies on India for half of its computer service imports.
- India has seen an increase in the value of its computer service exports from $11 billion in 1995 to almost $110 billion in 2015.
- Economic growth in India correlated substantially with this increase, averaging 6.5% a year during that time.

Globalization also means that businesses can realize greater profits by tapping into previously untouched markets and taking advantage of lower

local costs. By expanding into new countries, businesses reach markets that are hungry for their novel goods and eager to pay top dollar for them. They can achieve higher revenues in unsaturated markets while saving money via the lower cost structure that results from cheaper labour, rent, and materials.

2. Better products at lower prices

Global competition in the markets leads to both quality and affordability. As consumers realize they have a variety of options from all corners of the globe, they will choose to purchase the best and cheapest options, requiring companies to enhance quality and provide affordable prices if they wish to remain competitive. The outsourcing of work also contributes to lower prices, as many companies hire foreign labourers to do the work for lower pay.

3. Collaboration and Shared resources

Combining efforts and resources allows for more creativity and innovation to solve problems that affect people all around the globe. Conservation efforts and efforts to combat rising carbon emissions, for example, will require a concentrated global effort if they are to succeed. Nongovernmental organizations (NGOs) use a collaborative approach to address issues that are not confined within borders, such as child labour, human trafficking, and health care and disease prevention.

4. Cross-cultural exchange

Not all the positive effects of globalization take place at the scale of billions and trillions of dollars. Cross-cultural exchanges of ideas, food, music, media, and language are just as valuable.

Individuals who travel around the world for business or leisure and try different foods, listen to different music, read different books, their new knowledge helps develop stronger empathy and appreciation for people of other cultures.

5. Spread of knowledge and technology

Arguably one of the top advantages of globalization has been the rapid spread of technology worldwide. Google, Dell, and Microsoft, for example, all have offices on many continents. Developing countries often appeal to investors because of the huge potential for growth. The resulting advancements lead to results like the spread of motorized farm machinery in Southeast Asia, for instance, where there had previously only been manual labour.

NGOs also compile and spread knowledge. When medical professionals from around the world came together through Doctors without Borders, in cooperation with the World Health Organization, and worked to eradicate SARS in Vietnam, they prepared a "SARS kit" afterward and developed guidelines for dealing with the infection. They shared these materials worldwide to help hospitals deal with the illness.

6. Quick technological advances

For developing countries, especially, being able to skip the long technological development processes of industrialized countries brings rapid progress. For example, cell phones came quickly to the African continent, with cell phone use currently growing every year in sub-Saharan Africa and approaching 90% in countries such as South Africa.

The rapid adoption of mobile technology has spurred entrepreneurism in countries like Kenya. Where it is dangerous or difficult to travel, small business owners simply use their mobile phones to reach clients and contractors. Most Kenyans don't have access to banks or bank accounts, but they can use their phones to send and receive funds, using a text-based app since most mobile phones in the country are not smartphones. They can also use their phones to track the prices of crops and find out which markets will bring in more money.

Rapid technological advances have benefits other than economic ones. Pregnant women without access to traditional medical care can use their phones to keep in touch with midwives. The midwives, in turn, use their phones to connect to a system that doctors monitor at all hours. The infant mortality rate in Kenya, especially in its slums, is one of the top 65 in the world, but globalization has provided tools to help address some of the difficulty with pre-and postnatal care.

7. Increased household income

The European Centre for International Political Economy reports that globalization has helped reduce high inflation rates in western economies, so each dollar of consumer spending goes further. This development also has the effect of increasing real wages by lowering the cost of living. Additionally, competition on the global market means the prices of many items have declined, so purchases that were once unaffordable luxuries, such as laptops, cars, and washing machines, are now affordable for many people.

8. Increased open-mindedness and tolerance

It's easy for people to fear others whom they have never met. Foreigners come to seem completely unfamiliar under such conditions. But if people

have networked with others from elsewhere over the world, spoken with them about common problems, and partaken of their food and culture, they are better able to perceive their common humanity and treat these others as equals.

Benefits of globalization in many different ways

Globalization impacts businesses in many different ways. But those who decide to take on international expansion find several benefits, including:

1. Access to new cultures

Globalization makes it easier than ever to access foreign culture, including food, movies, music, and art. This free flow of people, goods, art, and information is the reason you can have Thai food delivered to your apartment as you listen to your favourite UK-based artist or stream a Bollywood movie.

2. The spread of technology and innovation

Many countries around the world remain constantly connected, so knowledge and technological advances travel quickly. Because knowledge also transfers so fast, this means that scientific advances made in Asia can be at work in the United States in a matter of days.

3. Lower costs for products

Globalization allows companies to find lower-cost ways to produce their products. It also increases global competition, which drives prices down and creates a larger variety of choices for consumers. Lowered costs help people in both developing and already-developed countries live better on less money.

4. Higher standards of living across the globe

Developing nations experience an improved standard of living-thanks to globalization. According to the World Bank, extreme poverty decreased by 35% since 1990. Further, the target of the first Millennium Development Goal was to cut the 1990 poverty rate in half by 2015. This was achieved five years ahead of schedule, in 2010. Across the globe, nearly 1.1 billion people have moved out of extreme poverty since that time.

5. Access to new markets

Businesses gain a great deal from globalization, including new customers and diverse revenue streams. Companies interested in these benefits look for flexible and innovative ways to grow their business

overseas. International Professional Employer Organizations (PEOs) make it easier than ever to employ workers in other countries quickly and compliantly. This means that, for many companies, there is no longer the need to establish a foreign entity to expand overseas.

6. Access to new talent

In addition to new markets, globalization allows companies to find new, specialized talent that is not available in their current market. For example, globalization gives companies the opportunity to explore tech talent in booming markets such as Berlin or Stockholm, rather than Silicon Valley. Again, International PEO allows companies to compliantly employ workers overseas, without having to establish a legal entity, making global hiring easier than ever.

Conclusion

The impact of Globalization has been both positive and negative on the entire world, but we can surely hope for more advancement in the global economy due to this process. Globalization had both desirable and undesirable consequences for India and the world. Even though it has accelerated progress in some countries, it has also widened the gap between the rich and the poor. Globalization has led to mass unemployment as multinational companies outsource their services. The three main changes that Globalization leads people to are the changes in their income as labourers, changes in prices, and household production-consumption. Undoubtedly, globalization has endowed several benefits to the world. But Globalization presents challenges for developed countries as well.

References

1. James F. Hoge Jr, Editor-James F, Jr. Hoge, Editor-Gideon Rose. Globalization: Challenge and Opportunity, Publisher Council on Foreign Relations, New York, 2022.
2. Biju MR. Politics Globalization and Insurgency: Trends and Challenges Publisher: Concept Publishing Company Pvt. Ltd, 2015.
3. Kumar Swapan. Globalization in India: New Frontiers and Emerging Challenges, Publisher: PHI Learning.
4. Kaur G, Dr. Harpreet. Politics of Globalization Galgotia Publishing Company, 2017.
5. Nandy Debasish. Globalization and Socio-Political Change: Problems and Prospects, Publisher: Blue Roan Publishing House, 2019.

6. Tendon Anupama. Challenges of Globalization, Atlantic Publishers & Distributors Pvt Ltd, 2014.
7. Kabra, Kamal Nayan. Bhumandlikaran Vichar Nitiyaan or Vikalp, Prakashan Sansthan, New Delhi, 2005.
8. Dubey Abhay Kumar. Bharat Ka Bhumandlikaran, Vani Prakashan, New Delhi, 2007.
9. Rajkishor. Vinash Ko Nimantran, Vani Prakashn New Delhi, 2000.
10. Sinha Sachidananda, Punaji Ka Antim Adhyaay, Vani Prakashn New Delhi, 2009.
11. Jain Niraj, Vaishvikaran Ya Punah Upniveshikkaran, Gargi Prakashan, 2002.
12. Singh Perm. Udarikaran Ki Tanashai, Radha Kamal Prakashn New Delhi, 2006.
13. Sinha Sachidananda, Bhumandalikaran Ki Chunotiyan, Vani Prakashn New Delhi, 2005.
14. Bhaduri, Amit, Deepak Nayyar. Udarikaran Ka Such, Rajkamal Prakashn New Delhi, 1996.
15. https://velocityglobal.com
16. https://www.vedantu.com
17. https://youmatter.world
18. https://www.mtholyoke.edugg
19. https://www.wilsoncenter.org
20. https://www.globalization-partners.co
21. https://www.globalization-partners.com
22. ttps://www.un.org

Chapter - 4
Invisible Battles: Mental Health Stigma in Medicine

Authors

Rosemol Thamby
Research Scholar, Department of Psychology, CMR University, Bangalore, Karnataka, India

Dr. Ruby John
Assistant Professor, Department of Psychology, CMR University, Bangalore, Karnataka, India

Chapter - 4

Invisible Battles: Mental Health Stigma in Medicine

Rosemol Thamby and Dr. Ruby John

Abstract

This chapter aims to shed light on the pervasive stigma that discourages doctors from seeking help for mental health issues. It explores the reasons behind this stigma and offers insights into how it can be overcome through education, support systems, and changes in the medical culture. The medical profession demands unwavering dedication, technical expertise and an unrelenting commitment to patient care. However, the relentless nature of healthcare, coupled with the expectation of professional invincibility, often leaves doctors vulnerable to mental health challenges. Psychiatrists seem even more marginalised than other medical colleagues in public debate about practice (Jorm *et al.*). "Psychiatrists appear to have developed either a psychotic fear of and/or a contempt for the media. Very few will go public on an issue in a proactive, voluntary basis. Psychiatrists tend to go public only as a last resort. Unquestionably psychiatrists have special problems, but they simply must be overcome" (Lamontagne, 1990). Also the strong tendency for doctors when writing or broadcasting in the popular media to be dominated by self-consciousness concerning their reputation among their peers, means their comments are often designed for consumption by fellow professionals and so pass straight over the heads of the general public (Washington Post, 25 June 1982).

Keywords: Doctors, mental health stigma, medicine, wellbeing, breaking the stigma, healthcare

Introduction

The practice of medicine is often characterized by dedication, compassion, and the relentless pursuit of healing. Physicians, nurses, and other healthcare professionals are entrusted with the well-being of countless patients, but who takes care of the healers? Within the hallowed halls of medicine, there exists an issue that remains largely hidden from public view- the pervasive stigma surrounding mental health. Mental health stigma in the

medical profession is akin to an invisible enemy, quietly but powerfully undermining the well-being of those tasked with the sacred duty of caring for others. This essay delves into the roots of this stigma, its profound consequences, and the promising steps being taken to combat it. The roots of mental health stigma in medicine are deeply entrenched in history and culture. The medical profession has long been characterized by a stoic resolve, an unspoken expectation of invincibility. The notion that physicians, in particular, should be impervious to the struggles that afflict their patients has created an atmosphere where vulnerability is perceived as weakness. This belief is not only unrealistic but also damaging, as it forces healthcare professionals to conceal their own mental health challenges.

Cultural and professional norms within the medical field further propagate this stigma. The culture of silence surrounding mental health has persisted for generations. Physicians are often reluctant to admit to experiencing psychological distress, fearing that it will reflect negatively on their competence or commitment to patient care. The result is a culture where suffering in silence is seen as virtuous, but this silence comes at a high cost.

Consequences of mental health stigma

The consequences of mental health stigma within the medical profession are profound and far-reaching. On a personal level, the stigma prevents healthcare professionals from seeking help when they need it most. The fear of being labelled as 'weak' or 'unfit' to practice medicine can lead to the suppression of mental health challenges. This suppression often exacerbates the problems, contributing to high levels of burnout, depression, and anxiety among doctors and nurses.

Furthermore, the impact of mental health stigma extends beyond the individual practitioner. When healthcare professionals do not receive the support they need for their mental well-being, patient care can suffer. Burnout and untreated mental health conditions can impair clinical judgment, decrease empathy, and even lead to medical errors. Thus, the stigma not only harms the providers but also compromises the quality of healthcare delivery.

Breaking down stigma

Efforts to break down the mental health stigma in medicine are gaining momentum. One of the most powerful tools in this battle is the sharing of personal narratives. Stories from physicians who have faced mental health challenges and sought help not only humanize the issue but also inspire others to seek assistance. These narratives bring to light the fact that mental health struggles are a part of the human experience, even for those in the medical

profession. Educational initiatives within medical schools and healthcare institutions are also addressing mental health stigma head-on. By integrating mental health awareness and support into curricula, future healthcare professionals are better prepared to recognize and address their own mental health needs, as well as those of their peers.

Invisible battles are being fought every day within the medical profession. These battles, though hidden, hold profound implications for the mental well-being of healthcare professionals and the quality of patient care. The mental health stigma that shrouds the medical field must be confronted and dismantled.

The concerns that doctors have about their careers if they admit to mental health struggles are deeply rooted in the unique culture and professional expectations within the medical field. While these concerns are understandable, they contribute to the stigma surrounding mental health in medicine and can have detrimental effects on the well-being of healthcare professionals.

Stigmatization and professional reputation

One of the primary concerns doctors have is that disclosing mental health issues may lead to stigmatization. They fear being perceived as "unfit" to practice medicine or that their professional reputation will be tarnished. The medical profession often places a premium on an image of competence and strength, and admitting vulnerability may seem at odds with this image.

This concern can lead to doctors concealing their struggles, which can exacerbate their mental health issues. They may delay seeking help until their condition worsens, making treatment more challenging. Furthermore, it perpetuates the idea that mental health challenges are a sign of weakness, adding to the overall stigma.

Licensing and credentialing

Doctors are often concerned that disclosing mental health issues may have repercussions on their medical licenses and credentials. This fear can deter doctors from seeking help or disclosing their mental health challenges, even when they are in desperate need. It creates a barrier to accessing treatment and support and perpetuates the culture of silence surrounding mental health.

Colleague and patient perception

Doctors worry about how their colleagues and patients will perceive them if they admit to mental health struggles. There is a concern that patients might

lose confidence in their abilities, or colleagues might treat them differently. These concerns can lead to isolation, as doctors may withdraw from their social and professional networks to avoid judgment. Isolation can worsen mental health conditions and make recovery more difficult.

Professional opportunities

Doctors may worry that disclosing mental health challenges could limit their career opportunities, such as advancement, leadership roles, or academic positions. They fear that their mental health history might be held against them when competing for positions or promotions.

This fear can deter doctors from pursuing career growth and development opportunities, hindering their professional advancement and potential contributions to healthcare.

Addressing these concerns and changing the perception of mental health in medicine is critical for several reasons:

Improved well-being: Doctors' mental health is intimately connected to their ability to provide high-quality care. By addressing mental health concerns early, doctors can lead healthier, more fulfilling lives, which can positively impact their patients and colleagues.

Reduced stigma: Open conversations about mental health struggles among doctors can reduce the stigma surrounding mental health issues in the medical field. When doctors are encouraged to seek help and share their experiences, it sends a powerful message that mental health challenges are common and treatable.

Safer patient care: Removing the barriers to seeking help for mental health issues ensures that doctors are better equipped to provide safe and effective patient care. Burnout and untreated mental health conditions can lead to medical errors and compromise patient safety.

Professional growth: Encouraging doctors to seek help when needed and providing a supportive environment can promote professional growth and leadership within the medical community.

Changing the narrative

In recent years, a growing number of doctors and healthcare professionals have chosen to break the silence surrounding mental health challenges by sharing their personal stories. These narratives, often candid and deeply personal, offer a glimpse into the hidden struggles that many doctors face. By sharing their experiences with conditions like depression, anxiety, burnout,

and PTSD, these physicians are challenging the prevailing culture of stoicism and invulnerability within medicine.

The act of sharing personal stories about mental health journeys is inherently vulnerable. It requires doctors to step out of their professional roles and disclose their own struggles, insecurities, and moments of crisis. This vulnerability, however, is where the power of storytelling lies.

Personal stories make doctors more relatable and human in the eyes of their colleagues, patients, and the general public. They remind us that behind the white coat and stethoscope are individuals who grapple with the same challenges as everyone else. These narratives challenge stereotypes and misconceptions about mental health. They dispel the myth that mental health challenges are a sign of weakness or incompetence and instead demonstrate that they can affect anyone, regardless of their profession or success.

Educational initiatives

The role of medical schools and training programs in addressing mental health stigma is pivotal in fostering a more supportive and empathetic healthcare culture. Here, we discuss the importance of these institutions in combating stigma and incorporating mental health education into medical curricula: Medical schools serve as the foundational learning environments for future healthcare professionals. To combat mental health stigma effectively, these institutions must prioritize awareness and education. This can begin by acknowledging the prevalence of mental health challenges within the medical community and recognizing the detrimental effects of stigma. Medical schools and training programs should offer accessible and confidential mental health resources to students. These resources may include counselling services, support groups and crisis intervention. When students know that help is readily available and non-judgmental, they are more likely to seek assistance when needed. Integrating mental health education into the medical curriculum is paramount. Future healthcare professionals should be educated about common mental health conditions, their signs and symptoms and the importance of early intervention. This education should be ongoing and not limited to a single course. Medical curriculum should incorporate training on recognizing and addressing mental health concerns in patients. This includes teaching students how to ask about mental health, provide support, and refer patients to appropriate resources. Faculty should also be educated on mental health topics and stigma reduction. They play a significant role in shaping the educational environment and modelling positive attitudes toward mental health.

Accessibility of mental health services

The accessibility of mental health services for doctors is a critical aspect of addressing mental health stigma and promoting well-being within the medical profession. Recognizing the unique barriers doctors face when seeking mental health services is essential. These barriers may include concerns about confidentiality, fear of professional repercussions, and the stigma associated with admitting vulnerability in a high-pressure profession. Doctors often worry about the confidentiality of their mental health records and whether seeking help will affect their medical licenses or careers.

Advocating for Improved Availability and Confidentiality. Telehealth platforms and anonymous hotlines provide doctors with opportunities to seek support without revealing their identities.

Mental health services should be designed to accommodate the demanding schedules of healthcare professionals. This may include offering evening or weekend appointments and providing access to emergency services when needed. Flexible scheduling ensures that doctors can access mental health support without compromising their clinical responsibilities.

Implementing peer support programs within healthcare institutions can be invaluable. These programs involve trained peers who can provide confidential, non-judgmental support to doctors facing mental health challenges.

Advocacy and policy changes

Healthcare organizations and professional bodies should advocate for changes in policies and regulations that address the specific needs of doctors seeking mental health services. This includes advocating for protections against discrimination and the removal of unnecessary barriers to seeking help.

When doctors prioritize their own mental health, they are more likely to experience reduced stress, burnout, and symptoms of mental health conditions. This leads to greater overall well-being and job satisfaction. Doctors who are mentally well are better equipped to provide high-quality patient care-They can maintain focus, empathy, and communication skills, ultimately improving patient outcomes and satisfaction. Mental well-being is closely tied to cognitive function. Doctors with better mental health are less likely to make medical errors due to fatigue, stress, or impaired judgment, leading to safer patient care. When doctors prioritize their mental health, they can collaborate more effectively with colleagues from various healthcare

disciplines. This collaboration improves care coordination and patient outcomes.

Culture transformation

Despite progress, mental health stigma still exists within the medical community. Continued efforts are necessary to transform the culture and attitudes towards mental health. This involves addressing ingrained beliefs about invincibility and perfection.

In conclusion, when doctors prioritize their own mental well-being, the benefits extend beyond their individual lives. The medical profession as a whole benefits from healthier, more resilient, and empathetic healthcare professionals. However, the ongoing need to dismantle mental health stigma within the medical community remains a pressing issue. Only through continued efforts in education, advocacy and support can we create a healthcare culture that truly values and prioritizes mental well-being for doctors and by extension, for the patients they serve.

References

1. Wijeratne C, Johnco C, Draper B, Earl JK. Doctors' reporting of mental health stigma and barriers to help-seeking. Occupational Medicine. 2021;71(8):366-374. https://doi.org/10.1093/occmed/kqab119
2. Wallace JE. Mental health and stigma in the medical profession. Health. 2012;16(1):3-18. https://doi.org/10.1177/1363459310371080
3. Bannatyne AJ, Jones C, Craig BM, Jones D, Forrest K. A systematic review of mental health interventions to reduce self-stigma in medical students and doctors. Frontiers in Medicine, 2023, 10. https://doi.org/10.3389/fmed.2023.1204274
4. Garelick A. Doctors' health: stigma and the professional discomfort in seeking help. The Psychiatrist. 2012;36(3):81-84. https://doi.org/10.1192/pb.bp.111.037903
5. Hassan T, Ahmed SO, White AC, Galbraith N. A postal survey of doctors' attitudes to becoming mentally ill. Clinical Medicine. 2009;9(4):327-332. https://doi.org/10.7861/clinmedicine.9-4-327
6. Persaud R. Psychiatrists suffer from stigma too. Psychiatric Bulletin. 2000;24(8):284-285. https://doi.org/10.1192/pb.24.8.284.

Chapter - 5
भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

Author

डॉ. मनीता कौर विरदी

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग,
शासकीय महाविद्यालय बिछुआ, जिला छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश, भारत

Chapter - 5

भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ. मनीता कौर विरदी

सारांश

भारत में 90 के दशक में वैश्वीकरण का प्रार्दुभाव हुआ। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया से उदारीकरण, बाजारीकरण की प्रक्रिया विकसित हुई। वैश्वीकरण की प्रक्रिया पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक करने की भावना में निहित है। वैश्वीकरण अपने स्वरूप में बहुआयामी प्रक्रिया है। जिसमें आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आयाम प्रमुख है। वैश्वीकरण का महिलाओं पर प्रभाव भिन्न होता है। जिसका कारण घर, समुदाय तथा समाज तीनों स्तरों पर पहले से मौजूद विषमताऐं है। राजनैतिक तथा आर्थिक सौदेबाजी की शक्ति का प्रभाव, संगठन सूचना प्राप्ति की कमी के कारण बदलावों का सामना करने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है। महिलाओं की स्थिति पर भूमण्डलीकरण की नीतियों का बुरा असर पड़ा है। पितृसत्तात्मक समाज में सर्वत्र विद्यमान पुरूष प्रधानता एवं वातावरण ने स्त्रियों और पुरूषों के बीच असमान शक्ति संबंध स्थापित किये हैं। वास्तविकता यह है कि भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं का वस्तुकरण तेजी से बढ़ा है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने महिलाओं को कई तरह से प्रभावित कर रही है। कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक प्रभाव पड़े है।

शब्दावलीः भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण, विश्वव्यापी

प्रस्तावना

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में परिवर्तन तेजी से हो रहा है। नित नये प्रचार के माध्यम, नई तकनीके सामने आ रही है जिनके चलते उत्पादन, प्रचार पद्धति एवं अनेक तरीके पुराने पड़ते जा रहे हैं। वर्तमान में विश्व के देश वैश्वीकरण की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे है। वैश्वीकरण के शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति आई है। वैश्वीकरण ने रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, व्यापार व उद्योग के क्षेत्र में अनेक सम्भावनाओं को जन्म दिया है। वैश्वीकरण के कारण मानव जीवन के सभी पक्षों में व्यापक परिवर्तन आ रहा है लोगों के मध्य, देश और काल की जो दूरियाँ थी वह कम होती जा रही हैं। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, राष्ट्रीय वित्त और राष्ट्रीय उत्पादन की जगह वैश्विक व्यापार, वैश्विक वित्त और वैश्विक उत्पादन का उदय हो रहा है।

जिससे विश्वव्यापी अर्थव्यवस्था रूप ले रही है कि एक स्थान पर होने वाली घटना का प्रभाव विश्व के अन्य भागों पर पड़ता है। उत्पादन की नई विधियों, आधारभूत संरचना के विकास और विश्वव्यापी संचार व्यवस्था से वैश्वीकरण की प्रक्रिया को गति मिल रही है।

भूमण्डलीकरण संसार को इतना करीब ले आया है, जितना यह पहले कभी नहीं था। संचार क्रांति ने इस प्रक्रिया को अधिक सुगमता प्रदान की है। हालाँकि, भूमण्डलवादी, परम्परावादी और विवर्तनवादी इसे बहुत अलग नजरिए से देखते हैं। भूमण्डलीकरण का वर्तमान स्वरूप यद्यपि पूँजीवादी प्रणाली की विजय की उद्घोषणा करता है, यह उसके विकास में एक महत्वपूर्ण चरण भी है। इसके द्वारा उत्पन्न की गई संपूर्ण संयोजकता और अन्तनिर्भरता के लिए, विश्व में व्यापार और पूँजी प्रवाह अभी तक विश्व के तीन क्षेत्रों में एकीकृत है– संयुक्त राज्य अमरिका, जापान और यूरोपियन संघ के देश। इसके अलावा भूमण्डलीकरण ने शेष विश्व पर विकसित विश्व की पकड़ की पुष्टि की है। उदारीकरण के माध्यम से राज्यों ने अपने समाजों को भूमण्डलीकृत विश्व से जोड़ा है। जबकि राष्ट्र–राज्य इस विकास के साथ अपने तरीके से पेश रहा है, उसके नीचे, बगल में और ऊपर नई संस्थाऐं हैं, जो सामने आई हैं। कुल मिलाकर भूमण्डलीकरण ने आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव डाला है। आज यह भूमण्डलीकरण विश्व में भी भलि–भाँति व्याप्त है, जबकि भारत ने उदारीकरण की नीति को अपनानकर संतोषजनक आर्थिक एवं व्यापार वृद्धि दर्ज की है।

आधुनिक सभ्यता ने पुरूषों और महिलाओं की उत्पादन क्षमताओं में उनके सामाजिक संबंधों और संस्थाओं में तथा उनके अपने आसपास की दुनिया के बारे में सोचने के तौर तरीकों में गहरा परिवर्तन लाया है। पिछले तीन दशकों में आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संरचनाऐं उभरी हैं। इन्होंने गहन रूप से राज्यों के स्थान और भूमिका को सीमित किया है। उत्तरोत्तर रूप से आज मानव जीवन उन घटनाओं द्वारा घनिष्ठ रूप से प्रभावित हो रहा है जो राष्ट्र राज्य की सीमा के बाहर है। प्रौद्योगिकी और सूचनातंत्र में परिवर्तनों ने आज तक सुपरिचित दूरी व समय की धारणाओं को ही मूलतः बदल डाला है। इन व्यापक परिवर्तनों को भूमण्डलीयकरण की संज्ञा से ज्ञापित किया जा रहा है। वैश्वीकरण का सबसे अधिक प्रभाव जहाँ हुआ वह है भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी संस्कृति का विकास ।

कोई भी समाज अपने विभिन्न समाजिक कारकों का वैश्वीकरण के प्रभावों से पूर्णतः अछूता होने या रहने का दावा नहीं कर सकता और जब यह तय है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया को रोका जाना संभव नहीं है तो आवश्यक है कि व्यवस्थातंत्र को कुछ इस तरह तैयार किया जाए कि सामाजिक संरचना और सामाजिक प्रक्रियाऐं वैश्वीकरण के लाभों को प्राप्त करने की अनुकूलता की स्थिति में हो।

विश्लेषण

विश्व अधिकाधिक एकीकृत होता जा रहा है। अधिक व्यापार खुलेपन के साथ जो शुरू हुआ वह बढ़ते वैश्विक आर्थिक एकीकरण और परस्पर निर्भरता में तब्दील हो रहा है, क्योंकि पूंजी की अंतर्राष्ट्रीय आवाजाही तेज हो गई है और जानकारी और भी अधिक सुलभ हो गई है। तकनीकि विकास तेजी से लोगों के सीखने, काम करने और संवाद करने के तरीके को बदल रहा है। समय के साथ–साथ भारत में महिलाओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा है। भारत में वैश्वीकरण के प्रभाव और वर्तमान में भारत में महिलाओं की स्थिति पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों को जानने की आवश्यकता है।

महिलाओं पर वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण ने विभिन्न देशों के निर्यात में वुद्धि की है और निर्यात क्षेत्रों मे मजदूरी बहुत अधिक है। अन्य क्षेत्रों की तुलना में और कई मामलों में महिलाओं को औपचारिक उद्योगिक क्षेत्रों में पुरूषों की तुलना में अधिक वेतन मिलता है। औसत मजदूरी में वृद्धि हुई साथ ही मजदूरी का बड़ हिस्सा महिलाओं को जाता हैं। वैश्वीकरण से महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़े है। वैश्वीकरण की सहायता से पारिवारिक आय में महिलाओं की सामाजिक पसंद को बड़ाते है। वैतनिक कार्य ने महिलाओं को आत्मविश्वास प्रदान करने के अलावा, उनकी सामाजिक पंसद और जीवन विकल्पों में भी वद्धि की है। उनका मनोबल बढ़ा रहें है। रोजगार के अवसर छोटे खेत जहां महिलाओं के काम की मांग अधिक है लेकिन उनकी मजदूरी अधिक है। वैश्वीकरण के कारण कृषि उत्पादन में संरचनात्मक परिवर्तन आ रहे है। महिलाओं पर वैश्वीकरण की बात करते समय हम सेवा क्षेत्र के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं कर सकते हे। वर्तमान में सेवा क्षेत्र सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जैसे डेटा प्रोसेसिंग सेक्टर, औद्योगिक निर्यात सेक्टर, एयरलाइंस, रेल्वे बैंक और बीमा कंपनियों में रोजगार की मांग बढ़ रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां पुरूष और महिलाओं के बीच बिना भेदभाव के नौकरी की पेशकश करती है। वैश्वीकरण ने भारत में पुरूषों और महिलाओं के लिए कई रास्ते खोल दिये है। महिलाओं के लिए नई नौकरियां उपलब्ध है और वेतन भी अधिक मिल रहा है। अवैश्वीकरण ने भारत में पितृसत्ता की संस्था को एक बड़ी चुनौति दी हैं महिलाओं ने अपने अधिकरों के लिए खड़ा होना शुरू कर दिया है।

अन्य सकारात्मक प्रभाव

- उच्च और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संभावनाएं उन महिलाओं के लिए संभव हो गई है जो उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से वहन कर सकती है।
- तकनीकि और अन्य उन्नत क्षेत्रों में रोजगार के रास्ते खुल गये हैं
- लैंगिक असमानताओं में कमी से सामाजिक–आर्थिक संदर्भ में महिला सशक्तिकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

- आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर संभावनाओं से अवगत कराया जा सकेगा।

वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव

- वैश्वीकरण के कारण खुली अर्थव्यवस्था की मांग बढ़ी हुई कीमतें महिलाओं की और से परिवर्तनों का अधिक सामना करती है। बढ़ते एकल परिवारों के साथ, वृद्ध महिलाओं का जीवन दयनीय हो गया है। कभी –कभी उन्हें अपने बाद के दिन वृद्धाश्रमों और अलगाव में बिताने पड़ते हैं ।
- महिलाओं के व्यवसायीकरण, रियलिटी शो के कारण लैंगिक हिंसा, छेडछाड़, उत्पीड़न, बलात्कार और दहेज आदि समस्याएं बढ़ रही हैं।

अन्य क्षेत्रों में प्रभाव

महिला और रोजगार

महिलाओं (विशेषकर दिहाड़ी कमाने वाले घरों की महिलाओं) को वृहद आर्थिक नीतियाँ कई प्रकार से प्रभावित करती हैं। अर्थव्यवस्था जिस तरह औपचारिक रोजगार से अनौपचारिक रोजगार तथा सार्वजनिक क्षेत्र से निजी क्षेत्र की ओर बढ़ रही हैं, वह विशेष रूप से हाशिए के रोजगार के स्त्रीकरण के लिए अनुकूल माहौल बनाता है। जिसमें रोजगार सर्वथा असुरक्षित और वेतन या पारिश्रमिक सबसे कम होता है और श्रम सम्बन्धी मानकों की कोई परवाह नहीं की जाती है। महिलाओं को ऐसे श्रम बाजार में उतरने के लिए बाध्य होना पड़ता है जहाँ काम की शर्तें उनके लिए सबसे ज्यादा अलाभकारी हैं। इसके पीछे यह कारण है कि उन पर अपनी पारिवारिक आय को न्यूनतम स्तर तक कायम रखने का दबाव होता है। ताकि उनके परिवार का जीवन निर्वाह हो सके।

महिला का अधिकांश श्रम अदृश्य ही रहता है और सरकारी अभिकरण उनके रोजमर्रा के कामों को काम में नहीं गिनते, जबकि महिलाओं के अवैतनिक और वैतनिक कार्य दोनों ही का देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। उदाहरण के लिए, ऊर्जा स्त्रोत, सफाई तथा जल आपूर्ति जैसी बुनियादी सुविधाओं तथा स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सेवाओं के मद में सरकारी अनुदान में कटौती सिर्फ पारिवारिक आय को ही कम नहीं करती है बल्कि यह महिलाओं पर विशेष भार डालता है, क्योंकि इस स्थिति में अपने घर–परिवार को ये सब सुविधाऐं सेवाऐं मुहैया कराने की जिम्मेदारी उन पर आ पड़ती है।

सुरक्षा के नाम पर महिला को गृहस्थी में सीमित रहना पड़े तो न केवल उसके श्रम का शोषण होता है, बल्कि उसकी गतिशीलता भी कम होती है। अतः आर्थिक समृद्धि को दिलाने वाले आंकड़ों से जरूरी नहीं कि महिला की हैसियत का पता चले। कुछ ऐसे मुद्दे हैं जो महिला की अधीनस्थता की सूचना देने हैं, उदाहरणार्थ लड़की के बदले लड़के की चाह, कन्या भ्रूण की हत्या इसी तरह शिक्षा एवं आय में

होने वाली वृद्धि से महिला के प्रति हिंसा बढ़ सकती है, जैसा कि शहरी माध्यम वर्ग में हम पाते हैं।

महिला श्रम का अनियमितीकरण बढ़ रहा है। इससे स्पष्ट संकेत मिल रहा है कि महिला श्रम का बढ़ते उपयोग का सीधा सा अर्थ श्रम–अनुबंध में निहित भारी असुरक्षा तथा कार्य स्थितियाँ और निकृष्ट पारिश्रमिक है। भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप श्रमबाजार में महिला के प्रवेश से जो विशेष स्थिति उत्पन्न हुई है, मीरा देसाई उसका बहुत ही स्पष्ट चित्रण करती हैं। देसाई के अनुसार जाति, धर्म, वर्ग एवं भाषा के आधार पर कार्यशील महिलाओं का विभाजन कुछ इस प्रकार किया गया। मजदूरी एवं बेगारी के लिये महिलाओं का व्यापक उपयोग महिलाओं के कार्य क्षेत्र में एक अन्य तत्व कष्टदायक है वेतन स्तर में असामनता उनके व्यवसायों में वास्तविक वेतन और दर्शाये गये वेतन में अंतर होता है। महिला और पुरूष को भी समान कार्य के लिये असमान वेतन दिया जाता है।

असंगठित क्षेत्र महिला रोजगार का सबसे बड़ा स्त्रोत हैं। जहाँ 94 प्रतिशत महिलाऐं रोजगार पा रही है, पर यह क्षेत्र की विदेशी पूँजी निवेश तथा व्यापार उदारीकरण, महिलाओं के लिए रोजगार अवसरों की उपलब्धता की दृष्टि से प्रभावित हो रहा है। भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप सामाजिक एवं सार्वजनिक आर्थिक क्षेत्र में सक्रिय होना भारतीय समाज की ही नहीं वरन् संपूर्ण विश्व की विशेषता है। सभी समाजवादी, पूँजीवादी देशों में कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत भारत से कहीं अधिक है। किन्तु वहाँ बेरोजगारी की समस्या इतनी विकट नहीं है, इसका कारण भारतीय आर्थिक, राजनीतिक संरचना एवं निर्णय में आधारभूत दोष है।

भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप पारम्परिक मूल्यों एवं परिपाटियाँ एवं प्रवृत्तियाँ, पूँजीवादी आर्थिक संयंत्र एवं उपभोक्ता के अनिवार्य कष्टों से प्रभावित महिला की भूमिका में सहसा दूरगामी परिवर्तन हुए। विगत स्थिति में महिला गृह एवं परिवार तक परिसीमित रखी गई, परिवर्तित संदर्भ में महिला पर गृह परिवार तथा कार्य स्थल, दोनों के दायित्वों को आरोपित कर दिया गया। शिक्षा का प्रसार के परिणामस्वरूप महिला की जिज्ञासा विवेक एवं आकांक्षाओं में क्षमता वृद्धि के अनुरूप सकारात्मक परिणाम अपेक्षित थे किंतु संक्रमणकाल में उपलब्ध अवसरों का संपूर्ण लाभ अभी महिलाओं को मिलना शेष है। अतिरिक्त दायित्व वृद्धि के बावजूद आवश्यक नहीं की महिला के अधिकारों में भी समानुपातिक रूप वृद्धि हुई है अतएव पारिवारिक एवं सामाजिक सहिष्णुता निर्वाह हेतु आवश्यक है कि पुरूष इस स्थिति को निरापद बनाने में पहल करें।

कृषि प्रसंस्करण उद्योगों में जनरल फूड्स नेस्ले, कोका कोला, पेप्सी तथा केलॉग जैसी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रवेश से महिला श्रमिक प्रभावित होंगी। क्योंकि इन उद्योगों में उनकी संख्या ज्यादा है। कृष्णमूर्ति के अनुसार आधुनिक प्रौद्योगिकी के आयात से महिलाओं को सुलभ निम्न कौशल वाली नौकरियों में कटौती होगी, तो

दूसरी ओर उन्हें कम दिहाड़ी या रोजगार करने या फिर समान वेतन पाने के लिए अधिक कठोर रोजगार करने के लिए बाध्य करेगा। वैश्वीकरण के दौर में बढ़ते मशीनीकरण और निर्माण उद्योग की बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आने से महिला मजदूरों के रोजगार पर बहुत गहरा असर पड़ा है। बुनियादी ढ़ाँचे की बड़ी परियोजनाओं में तेजी से वृद्धि के कारण मित्सुई, हुंडई, सैमसंग कंपनियों ने अपने पैर जमा लिये हैं। सिंधु मेनन ने लिखा है– नई प्रौद्योगिकी का उपयोग शुरू होते ही ज्ञान–कौशल और आजीविका के स्तर पर महिलाओं की छुट्टी होने लगती है।

श्रमिक विरोधी नीतियाँ, शहरी भारत की निर्धन महिलाओं को श्रम बाजार में अपने आपको स्वरोजगारियों के रूप में स्थापित करने के लिए बाध्य कर सकती हैं। व्यापार के उदारीकरण के साथ होने वाले अवमूल्यन के चलते निर्यातोन्मुखी उद्योगों में महिलाओं की मांग बढ़ने की संभावना हो सकती है। शहरी भारत के 945 रोजगार दफ्तरों में 2003 में 1.7 करोड़ महिलाओं के नाम दर्ज थे। जिसमें से 70 प्रतिशत से अधिक 10 वीं पास या उससे अधिक पढ़ी लिखी थीं। ये महिलायें भी पलायन के लिये मजबूर थी। किन्तु जिस प्रकार का रोजगार उन्हें मिलेगा वह असुरक्षित और निम्न वैतनिक होगा, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रायः महिलाओं को ऐसी कार्य स्थितियों में काम करना पड़ता है जो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

कुछ विशेष उत्पाद जिन्हें औपचारिक क्षेत्र बनाता है, उनके आयात के कारण रोजगार में कमी आएगी। उदाहरण के लिए रद्दी कागज तथा गोंद का आयात रद्दी कागज, कबाड़ चुनने वालों में मुख्यतः शहर की महिलाऐं और बच्चे होते हैं, जो अपनी जीविका रद्दी कागज, प्लास्टिक, टिन तथा अन्य तरह कबाड़ इकट्ठा करके चलाते है। वे इस कबाड़ को ठेकेदारों को बेचती हैं, जो पुनः इन्हें पेपर या प्लास्टिक मिलों का पुनर्प्रयोग के लिए बेच देते है। हाल ही में भारत रद्दी कागज का बड़े पैमाने पर आयात किया गया। जिससे रद्दी के दामों में मंदी आ गई परिणामस्वरूप उनकी आय आधी हो गई। इसी प्रकार सूडान से भारत में गोंद के आयात से पेड़ से एकत्र गोद का दाम 12 रू. प्रति किलो से घटकर 4 रू. प्रति किलो रह गया।

भूमण्डलीकरण से पहले के समय में महिलाओं की माँग थी कि अगर वह भी पुरूष की तरह एक नागरिक है तो उसके नागरिक होते भी वह सामाजिक जीवन में उसके पिछड़ जाती थी। वह एक अर्धनागरिक थी, क्योंकि वह न पहले दर्जे की उत्पादक थी और न ही पहले दर्जे की उपभोक्ता। भूमण्डलीकरण ने महिलाओं के लिए उत्पाद और उपभोक्ता होने का रास्ता खोजा है। भूमण्डलीकरण ने महिलाओं को सम्पूर्ण 'उत्पादक और सम्पूर्ण उपभोक्ता' बनाने का हक थमा दिया है। वह हक तो उसे बिना लड़े नहीं मिल सकता यह इशारा तो सिर्फ एक सम्भावना की तरफ है, जो पहले मौजूद नहीं था। श्रम बाजार में बड़े पैमाने पर महिला की भागीदारी से सम्भावना पैदा हुई है। आधुनिकता के इतिहास में पहले कभी महिलाएं इतनी संख्या में मजदूर के रूप में घर की दहलीज से बाहर नहीं निकली थीं।एक अप्रत्यक्ष परिवर्तन

यह दिखाई दे रहा है कि नौकरी या काम–धंधा दिलाने में ठेकेदारों/उपठेकेदारों तथा फुटकर काम कराने वालों की महत्ता बढ़ती जा रही है। जो महिलाऐं घरेलू क्षेत्र की निर्यातोन्मुखी लघु उत्पादन इकाईयों में दिहाडी में कार्यरत है या जो महिलाऐं अपने घरों में ही सुकून दर पर काम करती हैं इस तरह के बिचौलियों पर उनकी निर्भरता बढ़ती जा रही है इसके फलस्वरूप रोजगार और आय संबंधी असुरक्षा पैदा होती हैं। इस प्रकार, महिला श्रमिकों में शिक्षा और कुशलता के निम्न स्तर के कारण शक्ति और नियंत्रण की पितृसत्तात्मक ढाँचें में उनके लिए आवश्यक घरेलू उत्तरदायित्व के चलते महिला श्रमिकों को हाशिए में धकेलने की सामंतीकरण की प्रक्रिया में तेजी आयेगी।

भूमण्डलीकरण की आधारभूत विचारधारा में लैंगिक प्रश्नों के लिए कोई जगह नहीं बचती। बाजार चाहे जितना भी वर्गीय श्रेणीगत और लैंगिक तटस्थता का दावा क्यों न कर ले, उसमें कमजोर तथा गरीब निरन्तर हाशियाकरण के निर्यात के लिए अभिशप्त हैं। उदार मानसिकता वाला भूमंडलीकृत समाज आज भी ''महिला श्रम'' को महत्व नहीं देना चाहता। अतः महिला श्रम केवल गृहस्थी की सीमा में ही नही बल्कि बाहरी दुनिया में भी पहचान रहित है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने महिला श्रम के शोषण को और सूक्ष्म स्तर पर बढ़ा दिया है।

महिला और स्वास्थ्य

उदारीकरण तथा ज्यादा से ज्यादा लाभार्जन को मिली वैधता के इस नए वातावरण का सबसे दृश्य और प्रत्यक्ष प्रभाव स्वास्थ्य के क्षेत्र में पड़ा है। विश्व बैंक की रिपोर्ट में इसे रेखांकित किया गया कि भारत ने भले ही अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली हो लेकिन बच्चों के पोषण के मामले में वह अभी कोसों दूर है। मूलतः नवजात शिशु की पोषण संबंधी सही देखभाल का फलन है। जिसकी शुरूआत गर्भवती महिला के स्वास्थ्य, तर्कसंगत कार्यसमय, स्वच्छ पर्यावरण तथा पेशागत सुरक्षा से होती है। ढाँचागत समायोजन कार्यक्रम सम्बन्धी नीतियों के चलते महिलाओं के अधिकार को प्रभावित करने वाले अन्य क्षेत्रों की भाँति स्वास्थ्य क्षेत्र भी लागत लाभ विश्लेषण प्रभाव में आ गया है।

वर्ष 1992 से 97 तक चली पंचवर्षीय योजना ढाँचागत समायोजन कार्यक्रम के प्रभाव को समझने का अच्छा स्त्रोत हैं। आर्थिक विकास तथा बाजार प्रगुणता का दर्शन पूरे योजना दस्तावेज में प्रतिबिंबित होता है। सभी के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा सुगम, स्वीकार्य तथा वहनीय बनाने के लिए योजना में कई विकल्प थे।

नीतिगत विकल्पों में प्राथमिक सुरक्षा का बुनियादी ढाँचा जो कि निर्धनों के लिए एकमात्र ऐसी स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने वाली प्रणाली है जिसे वे वहन कर सकते हैं। उसका कहीं पता नहीं है। तरह–तरह के प्रलोभन और राहत प्रदान करके निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन देने का अर्थ धनाढ़य वर्ग के लाभ के लिए संसाधनों का दोहन करना हो जाता है।

भूमण्डलीकरण के दौर में स्त्री पुरूष की समानता की दुहाई देने वाले हमारे समाज में बीमार होने पर महिलाओं को गंभीर स्थिति में अस्पताल ले जाया जाता है। सरकारी रिकार्ड बताते हैं, कि पुरूषों की अपेक्षाकृत महिलाओं को अस्पताल कम लेकर जाते हैं। आज भी हमारे यहाँ प्रसव पूर्व सेवा शोचनीय दशा में है। महिला स्वास्थ्य के मूल सिद्धांतों का ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय नीतिगत निर्णयों के चलते क्षरण हुआ है जिन पर उत्तरी गोलार्द्ध के विकसित देशों के आर्थिक हित अत्याधिक हावी हैं। जनसंख्या तथा विकास पर 1994 में काहिरा में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने महिला स्वास्थ्य को सुरक्षित गर्भपात तथा जनन अधिकारों की ओर मोड़ा। आज से कुछ वर्षों पूर्व लड़कियाँ बोझ मानी जाती थीं और माता–पिता नवजात कन्याओं की हत्या गला दबाकर कर देते थे या फिर फेंक देते थे पर आज वैश्वीकरण व उदारीकरण के दौर में भी यह प्रथा कायम है पर कुछ अलग अंदाज में । जहाँ पहले कन्या की हत्या उसके जन्म के बाद की जाती थी, वहीं आज कन्या की हत्या मां के गर्भ में ही कर दी जाती है । सुप्रसिद्ध बंगला लेखक शरतचंद्र का कहना है कि मानव का मरना उतना दुखदायी नहीं होता जितना की मानवता की मौत। इसने बुनियादी ढाँचागत सुविधाओं के निर्माण में सर्वांगीण प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा केन्द्र, सामाजिक सुरक्षा और निवेश के मुद्दों को हाशिए में डाल दिया।

जनसंख्या नियंत्रण संबंधी उपाय अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक की शर्तों पर चलाये जाने वाले ढाँचागत समायोजन कार्यक्रम का अंग है। इनकी प्राप्ति के लिए परिवार नियोजन कार्य पर एकाकी ध्यान दिया जा रहा है। स्वास्थ्य मामलों में निजी क्षेत्रों पर बढ़ती निर्भरता के साथ दवाईयों के दाम भी खूब बढ़ रहे है। दवाईयों के दामों में वृद्धि हुई है। नई औषध नीति 1994 तथा 1995 की औषध मूल्य नियंत्रण संबंधी आदेश से दवा उद्योग को भारी रियाअतें मिली।

चिकित्सा व्यवसाय भी निगमित क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है। भारत की अग्रणी चिकित्सा संस्था अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) अब एस्कार्टस, अपोलो, वत्रा द्वारा चिकित्सा सुविधाओं के कारण बौना हो गया है। इस तरह के अस्पताल धनिकों के लिए प्रतिष्ठा के प्रतीक बन गए है।

भूमण्डलीकरण में वास्तविक शिकार महिलाऐं तथा कन्या होती हैं, जिनकी सबसे अधिक उपेक्षा हो रही है। इसका निवारण गरीबी और निरक्षता के मूल कारणों का समाधान, सुरक्षित पेयजल की उपलब्धि, स्वास्थ्य सुविधाऐं तथा पेशागत स्वास्थ्य खतरों से बचाव के लिए सुरक्षित पद्धतियाँ अपनाया जाना होगा। भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप आज तक स्वतंत्रता समानता एवं न्याय की प्राप्ति हेतु संघर्ष किये जा रहे हैं तो यह प्रश्न उठता है कि वे कौन से प्रमुख आधार हैं जिन्हें प्राथमिकता के आधार पर इंगित किया जा सकता है। सर्वाधिक प्रथम वरीयता आर्थिक आत्मनिर्भरता को, द्वितीय वरीयता घरेलू जीवन में महिलाओं को आदर एवं मान्यता, तृतीय वरीयता पुरूषों के दृष्टिकोण के सुधार के पक्ष में हो सकती है। स्पष्ट है आर्थिक रूप में

आत्मनिर्भर व्यक्ति शेष सभी अधिकार प्राप्त करने में सक्षम है। वह राजनीतिक, पारिवारिक, सामाजिक, स्वतंत्रता, सम्मान एवं मान्यता तथा पुरूष वर्ग के सकारात्मक दृष्टिकोण के अभाव में आर्थिक आत्मनिर्भरता भी पूर्ण नहीं हो सकती।

भूमण्डलीकरण का एक परिणाम यह भी है कि भूमंडलीय स्तर पर सक्रिय कंपनियों को राष्ट्रीय सरकारें नियंत्रित करने में असमर्थ साबित हो रही हैं। हालाँकि भूमण्डलीकरण की कीमत और उससे होने वाले लाभ का सभी देशों में समान वितरण नहीं हुआ है फिर भी यह दावा तो किया जा रहा है कि बढ़ते हुए भूमंडलीकरण से स्त्रियों और वंचितों को ज्यादा लाभ होगा ऐसे तथ्य दिये जा रहे हैं कि अब तक जो क्षेत्र पुरूषों द्वारा अधिकृत थे वे स्त्रियों को उपलब्ध हो रहे हैं।

तर्क यह है कि जमीन और पारंपरिक पूँजी का पुर्नवितरण उतना आसान नहीं, मगर ज्ञान के वितरण में तो कोई बाधा नहीं आनी चाहिए। स्त्री के पास यदि बाहरी जगत की पर्याप्त सूचना हो, उसको यथार्थ का ज्ञान हो तो उसे सत्ता से सीधी बातचीत और मोल–भाव की सुविधा मिलती है। वैश्वीकरण के युग में पत्नी का सामाजिक उत्सवों में पति के साथ जाना, पति के साथ या उसके पहले भोजन करना, रेस्त्रां एवं सिनेमा साथ–साथ जाना आदि पत्नी के साहचर्य भूमिका को दर्शाता है पति अब पत्नी को हीन, अधीनस्थ अश्रेष्ठ तुच्छ या कम विवेकी नहीं मानता बल्कि विकट परिस्थितियों में भी उसकी सलाह लेता है और उस पर विश्वास करता है।

महिला और शिक्षा

वृहत्तर विश्व समाज की भाँति भारतीय समाज के उत्पादक आधार का परिवर्तन अधिक से अधिक औद्योगिकोन्मुखी हो रहा है। इसलिए महिलाओं को शिक्षा का अधिकार मिलना आवश्यक है, ताकि वे एक उत्पादक, जननी और नागरिक के रूप में अपनी अलग–अलग भूमिकाओं को अदा करने के लिए तैयार हो सकें।

महिलाओं के लिए ऐसी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है जिससे उन्हें समानता प्राप्त हो सके। जिसके लिए महिलाओं को रोजगार–परक, व्यवसायिक तथा प्रौद्योगिकी प्रधान शिक्षा सुलभ बनाने की जरूरत को समझा गया। जिसमें उसे मौजूदा और उभरती प्रौद्योगिकी दोनों का ज्ञान मिल सकें, किन्तु शैक्षणिक पिरामिड का आधार बहुत संकीर्ण है। शहरी महिला साक्षरता की अपेक्षा ग्रामीण महिलाओं में साक्षरता लगभग आधी है।

विकास का दूसरा सूचकांक यह है कि शिक्षा तक महिलाओं की पहुँच कितनी है, जिसका आकलन शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सकल नामांकन में लड़कियों के नामांकन के अनुपात से किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में कक्षा में नामांकित लड़कियों की संख्या अगर 100 है तो कक्षा 05 तक आते–आते यह संख्या सिर्फ 40, कक्षा आठ में 18 कक्षा में 09 में से 12 वीं में से 01 रह जाती है। बढ़ते हुए भूमण्डलीकरण ने कथित सौंदर्य प्रतियोगिताओं को जुनूनी हद तक बढ़ावा दिया है।

इन प्रतियोगिताओं में भारत की महिलाओं को आगे लाने में भी वैश्वीकरण की सोच काम कर रही है। विश्व स्तर से गुजरती हुई सौंदर्य प्रतियोगितायें अब जिला स्तर, यहाँ तक कि विद्यालय स्तर पर भी आ गयी है। अरविन्द के अनुसार – इस पागलपन का लाभ वे निगम या संस्थाऐं कमा रही हैं जो ऐसे कार्यक्रम के द्वारा अपने उत्पादों का विज्ञापन करती हैं, लेकिन मानसिक स्तर पर इसका दुष्प्रभाव शहरी मध्यम वर्ग या निम्न मध्यम वर्ग की लड़कियों पर पड़ता है। भूमण्डीकरण ने स्त्री के सौन्दर्य की एक अधीनस्थ छवि बनायी तथा इसके संस्थागत इस्तेमाल को एक वैश्विक आयाम दिया।

कोई भी समाज अपने विभिन्न समाजिक कारकों का वैश्वीकरण के प्रभावों से पूर्णतः अछूता होने या रहने का दावा नहीं कर सकता और जब यह तय है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया को रोका जाना संभव नहीं है तो आवश्यक है कि व्यवस्थातंत्र को कुछ इस तरह तैयार किया जाए कि सामाजिक संरचना और सामाजिक प्रक्रियाऐं वैश्वीकरण के लाभों को प्राप्त करने की अनुकूलता की स्थिति में हो।

निष्कर्षः

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय महिलाओं की भूमिकाएं बदल रही है। वे पुरानी पंरपराओं की दुनिया से बाहर निकल रही हैं और स्वतंत्रता और अधिकारों के नए युग में प्रवेश कर रही हैं। आज के बदलते परिवेश में महिलाऐ जिस तरह से हर क्षेत्र में अपना मुकाम हासिल कर रही है वह समाज के लिए गर्व प्रशंसा का विषय है। समाज में महिला का एक ओर यदि श्रम का दोहन हो रहा है तो दूसरी ओर अर्थोपार्जन करती महिलाएं अपनी जरूरतों के बारे में मुखर होती जा रही है। वर्तमान युग के दवाबों के कारण परिवार का सफल संचालन मात्र पुरूष की आय से संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में मध्यम वर्ग की महिला रोजगार के क्षेत्र में सक्रिय हो रही है। परंतु वैश्वीकरण के दौर में महिलाओं को एक वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जाना महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसक घटनाओं का एक प्रमुख कारण है। विकासशील देशों के लिए इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हुए। इसके सकारात्मक प्रभावों से तो लाभ उठाना ही चाहिए नकारात्मक पक्षों पर सावधानी से विचार करके उसके दुष्प्रभावों को कम करना होगा।

संदर्भ सूची

1. राजपूत, डॉ. दिवाकर सिंह–वैश्विक परिदृश्य में भारत में उच्च शिक्षा की पुर्नसंरचना, राधाकमल मुखर्जीः चिन्तन परम्परा, (अर्द्धवार्षिक), समाज विज्ञान विकास संस्थान चान्दपुर (बिजनौर), उ.प्र., जुलाई–दिसम्बर 2007,
2. बुलबुल, डॉ. गार्गी–भूमण्डलीकरण और महिलाओं पर इसका प्रभाव (भारतीय महिलाओं) के संदर्भ में, राधाकमल मुखर्जीः चिन्तन परम्परा, (अर्द्धवार्षिक), समाज विज्ञान विकास संस्थान चान्दपुर (बिजनौर) उ.प्र., जनवरी–जून 2010,

3. कुमार, डॉ. अंचलेश–वैश्वीकरण बनाम उत्तराखंड तराई के बंगाली समुदाय की परिवार व्यवस्था, राधाकमल मुखर्जीः चिन्तन परम्परा, (अर्द्धवार्षिक), समाज विज्ञान विकास संस्थान चान्दपुर (बिजनौर) उ.प्र., जुलाई–दिसम्बर 2007

4. सिंह, के.पी. –विकासशील अर्थव्यवस्थाएं एवं भूमण्डलीकरण का संकट, राधाकमल मुखर्जीः चिंतन परम्परा (अर्द्धवार्षिक), समाज विज्ञान विकास संस्थानचांदपुर (बिजनौर), उ.प्र.,

5. सिन्हा, सच्चिदानंद–भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2005,

6. काबरा, कमलनयन–भूमण्डलीकरणः विमर्श और यथार्थ के विविध आयाम, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005

7. श्रीवास्तव, डॉ. बलजीत कुमार–भूमण्डलीकरण का हिन्दी सिनेमा पर प्रभाव, शोध धारा (त्रैमासिक) शैक्षणिक एवं अनुसंधान संस्थान उरई (जालौन), उ.प्र., वर्ष 2012,

8. यादव, डॉ. पूरणमल, डॉ. दिनेश चन्द्रभट्ट–वैश्वीकरणः एक समाजशास्त्रीय अवधारणा, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 2010,

9. सिंह, डॉ. आनंद प्रकाश–वैश्वीकरण का युवा जीवन पर प्रभाव, एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण, राधाकमल मुखर्जीः चिंतन परम्परा (अर्द्धवार्षिक), समाज विज्ञान विकास संस्थान चांदपुर (बिजनौर)

10. किशोर, डॉ. कौशल–वैश्वीकरण के युग में पारिवारिक संबंधों के परिवर्तनशील स्वरूप, राधाकमल मुखर्जीः चिन्तन परम्परा, (अर्द्धवार्षिक), समाज विज्ञान विकास संस्थान चान्दपुर (बिजनौर), उ.प्र., जुलाई–दिसम्बर 2008,

11. मिश्रा, गिरीश–नव उदारवाद की चहुँमुखी विफलता, नीतिमार्ग (पाक्षिक), भोपाल, 15 जनवरी 2013,

12. आर्य, साधना एवं अन्य (संपा.)–नारीवादी राजनीति–संघर्ष एवं मुद्दे, (जिनी लोकनीता–उदारीकरण का महिलाओं पर प्रभाव), हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2001,

13. भारती, सत्येन्द्र कुमार–महिला और वैश्वीकरण, राधाकमल, कमल मुखर्जीः चिंतन परम्परा (अर्द्धवार्षिक) समाज विज्ञान विकास संस्थान चांदपुर (बिजनौर), उ.प्र., जनवरी–जून 2012, वर्ष 14,

14. राय, ऋषिकेश–भूमण्डलीकरण एवं पितृ–सत्ता के नये रूप, वर्तमान साहित्य (मासिक) अलीगढ़, वर्ष–29, मार्च 2012,

15. खेतान, प्रभा–बाजार के बीच बाजार के खिलाफः भूमण्डलीकरण और स्त्री के प्रश्न, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007,
16. दुबे, डॉ. मुक्ता, डॉ वन्दना तिवारी–वैश्वीकरण और विकासशील देशों पर उसका प्रभाव, रिसर्च डाइजेस्ट (त्रैमासिक), बिलासपुर, अप्रैल जून 2007,
17. https://www.longdom.org/articles/impact-of-globalization-on-women.pdf
18. https://hindi.theindianwire.com
19. https://jankriti.com/gramin-mahila

Chapter - 6
भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव

Author

डॉ मनीता कौर विरदी

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग,
शासकीय महाविद्यालय बिछुआ, जिला छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश, भारत

Chapter - 6

भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ मनीता कौर विरदी

सारांश

वैश्वीकरण ने अंततः दुनिया को एक छोटा सा गाँव बना दिया है, भौगोलिक सीमाओं को धुंधला कर दिया है और प्रतिबंधों को हटा दिया है। समय के साथ, भारतीय अर्थव्यवस्था विकसित हुई है और इसमें पर्याप्त सुधार और व्यापार में त्वरित वृद्धि देखी गई है। वैश्वीकरण इस अध्ययन की रीढ़ है और वर्तमान युग को शाब्दिक रूप से समझने के लिए एक महत्वपूर्ण शब्द है, इसके अलावा, 'वैश्वीकरण' शब्द को समझने से भारत जैसे देश और उसके आर्थिक क्षेत्रों पर इसके प्रभावों का निरीक्षण करने में मदद मिलेगी। वैश्वीकरण को आम तौर पर अंतर्राष्ट्रीयकरण और उदारीकरण के साथ जोड़ा जाता है या इसके पर्यायवाची के रूप में समझा जाता है। वैश्वीकरण का आर्थिक परिप्रेक्ष्य इसे आर्थिक रूप से सुदृढ़ राष्ट्रों में रोजगार सृजनकर्ता के रूप में प्रकट करता है। दूसरी ओर, इसे गरीबी और पिछड़ी अर्थव्यवस्थाओं में फंसी आधी दुनिया को ऊपर उठाने का एक तंत्र भी माना जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह क्षेत्र न केवल देश का पेट भरता है बल्कि कई एशियाई, पश्चिमी और यूरोपीय देशों के लिए आशा की किरण भी है। यह न केवल खेती से सीधे जुड़े लोगों को रोजगार प्रदान करता है, बल्कि उन लोगों को भी रोजगार प्रदान करता है जो कृषि उपज के व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन का हिस्सा हैं और कृषि आधारित उद्योगों में भी काम करते हैं। वैश्वीकरण शब्द का तात्पर्य राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण से है। यह एक बहुआयामी पहलू है. यह कई रणनीतियों के संग्रह का परिणाम है जो दुनिया को अधिक परस्पर निर्भरता और एकीकरण की दिशा में बदलने के लिए निर्देशित हैं।

शब्दावली: वैश्वीकरण, अर्थव्यवस्था, भूमण्डलीकरण, आर्थिक विकास

प्रस्तावना

आजादी के बाद से भारत का विकास का एक लंबा इतिहास रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था के सर्वांगीण विकास में सभी आर्थिक क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। भारत कई दशकों से, यहां तक कि इसमें सदियां भी जोड़ लें, अपनी कृषि शक्ति के लिए जाना जाता है। भारत के पास न केवल प्राकृतिक संसाधनों का समृद्ध भंडार

और खेती के अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र है, बल्कि लंबे समय से किए जा रहे अथक प्रयासों से मिट्टी की सेवा करने वाले मानव संसाधन कौशल की शक्ति भी है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह क्षेत्र न केवल देश का पेट भरता है बल्कि कई एशियाई, पश्चिमी और यूरोपीय देशों के लिए आशा की किरण भी है। यह न केवल खेती से सीधे जुड़े लोगों को रोजगार प्रदान करता है, बल्कि उन लोगों को भी रोजगार प्रदान करता है जो कृषि उपज के व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन का हिस्सा हैं और कृषि आधारित उद्योगों में भी काम करते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था का अवलोकन करने से पहले इसकी संरचना को समझना बेहतर होगा। भारतीय अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्राथमिक क्षेत्र इस क्षेत्र में कृषि और इसकी संबद्ध गतिविधियों शामिल हैं जिनमें पोल्ट्री और डेयरी फार्म, मत्स्य पालन और अन्य शामिल हैं। पहले भारत का प्राथमिक क्षेत्र श्रम उन्मुख कार्य क्षेत्र हुआ करता था जो नए आर्थिक सुधारों और तकनीकी विकास के बाद श्रम और तकनीकी संयोजन के निश्रण में विकसित हो गया है। हालाँकि, यह तकनीकी प्रगति और सरकारी सहायता इस क्षेत्र में शामिल जनसंख्या के अधिभार को संतुलित करने में सक्षम नहीं है और जिसके कारण यह क्षेत्र अब तक विकास की किताबों में उल्लेखनीय नहीं रहा है। द्वितीयक क्षेत्र इस क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। इस क्षेत्र में सभी प्रकार की विनिर्माण इकाइयाँ शामिल हैं, चाहे वे छोटे, मध्यम या बड़े पैमाने के उद्द्योग हों। बड़े पैमाने के उद्योग इस्पात और लोहा, इंजीनियरिंग, उर्वरक और रासायनिक उत्पादन में अग्रणी हैं, जबकि लघु उद्योग जो इस क्षेत्र में शामिल कई परिवारों के लिए जीवन रेखा है, हथकरघा, कपड़े, कपास और सीमित कार्यबल की आवश्यकता वाले अन्य श्रम उन्मुख नौकरियों के लिए जाना जाता है। और पूंजी. यह क्षेत्र देश के सकल घरेलू उत्पादन मैं बहुत अधिक हिस्सेदारी रखता है। प्राथमिक क्षेत्र 7 अर्थव्यवस्था का संतुलित आकार जहां न केवल एक बल्कि सभी क्षेत्र देश के समग्र विकास में कुछ न कुछ महत्व रखते हैं। विश्व बैंक के अनुसार, वैश्वीकरण का तात्पर्य उपभोग वस्तुओं सहित सभी वस्तुओं पर आयात नियंत्रण को धीरे–धीरे समाप्त करना, आयात शुल्क की दर में कमी करना और सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का निजीकरण करना है।

भूमण्डलीकरण को सूचना, पूँजी व वस्तुओं के द्रुत प्रवाह में व्यक्त किया जाता है। ये उन जालों व अंतः क्रियाओं में फलित होते हैं, जो राष्ट्र–राज्यों द्वारा किसी भी प्रभावी प्रबोधन व नियंत्रण से परे होते हैं। ये ऐसी सामाजिक अतः क्रियाओं को जन्म देते हैं, जिनको भौगोलिक व सांस्कृतिक समीपता की शायद ही आवश्यकता पड़ती है। मोबाईल फोन, सेटेलाइट टेलीविजन और इंटरनेट जो इन प्रवाहों पर आधारित है। आकाशीय प्राधारों की ओर नहीं देखते जो कि अब तक संचार को जोड़ते थे। एडम स्मिथ (1723–1790) एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र के समरूपीकरण की अवधारणा का नेतृत्व किया। उन्होंने मुक्त व्यापार प्रवाह और व्यापार बाधाओं को दूर करने की

पुरजोर वकालत की। एडम स्मिथ के अनुसार अर्थशास्त्र और राजनीति में बहुत अंतर है। अर्थशास्त्र को श्रेष्ठ दर्जा प्राप्त है क्योंकि यह सरकारी हस्तक्षेप के बिना राष्ट्रों का संचालन कर सकता है। बाजार आपूर्ति और मांग के संतुलन द्वारा एक स्व–विनियमन तंत्र बन जाता है। इस प्रकार, संसाधनों का आवंटन दक्षता के साथ सुरक्षित हो रहा है। स्मिथ उदार बाजारों के प्रबल पक्षधर थे। उनके विचार के अनुसार उदारीकरण का शास्त्रीय दृष्टिकोण व्यक्ति के अधिकार की स्वतंत्रता पर निर्भर करता है। अहस्तक्षेप नीति स्मिथ के विचारों की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। यह बाजार एकीकरण के लिए टैरिफ और अन्य बाधाओं को खत्म करने के लिए उनके समर्थन का प्रतिनिधित्व करता है। बाजार में अदृश्य हाथ, अधिकतम सार्वजनिक लाभ पैदा करने में मदद करता है। लोग अपना स्वार्थ साधते हैं और इससे समग्र रूप से लाभ होता है। मुक्त व्यापार की उनकी रक्षा और आयात और निर्यात पर शुल्कों का उन्मूलन और विभिन्न राज्यों के बीच कम पूंजी प्रवाह पर प्रतिबंध आज के वैश्वीकरण की जड़ों को चिह्नित करता है।

वैश्वीकरण के कारण मानव जीवन के सभी पक्षों में व्यापक परिवर्तन आ रहा है लोगों के मध्य, देश और काल की जो दूरियाँ थी वह कम होती जा रही हैं। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, राष्ट्रीय वित्त और राष्ट्रीय उत्पादन की जगह वैश्विक व्यापार, वैश्विक वित्त और वैश्विक उत्पादन का उदय हो रहा है। जिससे विश्वव्यापी अर्थव्यवस्था रूप ले रही है कि एक स्थान पर होने वाली घटना का प्रभाव विश्व के अन्य भागों पर पड़ता है। उत्पादन की नई विधियों, आधारभूत संरचना के विकास और विश्वव्यापी संचार व्यवस्था से वैश्वीकरण की प्रक्रिया को गति मिल रही हैं।

व्यापार और आर्थिक विकास

अनुसंधान ने व्यापार, वैश्वीकरण और आर्थिक विकास के संबंध की जांच की है। शोधकर्ताओं का एक वर्ग इस राय पर आधारित है कि वस्तुओं का आयात स्थानीय उद्योगों के लिए हानिकारक हो सकता है। वस्तुओं के आयात से समान वस्तुओं का उत्पादन कम हो जाता है और इससे घरेलू उद्योग के उत्पादन में गिरावट आती है, जिससे समग्र अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है।

वैश्वीकरण शब्द का तात्पर्य राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण से है। यह एक बहुआयामी पहलू है. यह कई रणनीतियों के संग्रह का परिणाम है जो दुनिया को अधिक परस्पर निर्भरता और एकीकरण की दिशा में बदलने के लिए निर्देशित हैं। वैश्वीकरण सार्वभौमिक रूप से लोगों, निगमों और सरकारों के बीच बातचीत और मिलन का तरीका है।

क्रॉस कंट्री संस्कृति भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक है। इसने सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सहित देश के कई पहलुओं को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है। हालाँकि, आर्थिक एकीकरण ही मुख्य कारक है जो किसी देश की अर्थव्यवस्था को अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में अधिकतम योगदान देता है।

भारत में वैश्वीकरण के लाभ

रोजगार में वृद्धिः विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) के अवसर के साथ, उपलब्ध नई नौकरियों की संख्या में वृद्धि हुई है। भारत में निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र (ईपीजेड) केंद्र को शामिल करना हजारों लोगों को रोजगार देने में बहुत उपयोगी है। भारत में एक और अतिरिक्त कारक है। यह सुविधा पश्चिम की बड़ी कंपनियों को अन्य क्षेत्रों से कर्मचारियों को आउटसोर्स करने और अधिक रोजगार पैदा करने के लिए प्रेरित करती है।

मुआवजे में वृद्धिः वैश्वीकरण के बाद, विदेशी कंपनी द्वारा प्रदान किए जाने वाले कौशल और ज्ञान के कारण घरेलू कंपनियों की तुलना में मुआवजे का स्तर बढ़ गया है। यह अवसर प्रबंधन संरचना में बदलाव के रूप में भी उभरा। उच्च जीवन स्तरः वैश्वीकरण के प्रकोप के साथ, भारतीय अर्थव्यवस्था और व्यक्ति के जीवन स्तर में वृद्धि हुई है। यह परिवर्तन किसी व्यक्ति के क्रय व्यवहार से अधिसूचित होता है, विशेषकर उन लोगों के साथ जो विदेशी कंपनियों से जुड़े होते हैं। इसलिए, कई शहर व्यवसाय विकास के साथ–साथ बेहतर जीवन स्तर के दौर से गुजर रहे हैं।

जब हम वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में बात करते हैं, तो एक नाम हमारे दिमाग में आता है, वह है डॉ. मनमोहन सिंह। वह 1990 के दशक में वित्त मंत्री थे जब भारत में वैश्वीकरण पूरी तरह से लागू और अनुभव किया गया था। वह आर्थिक उदारीकरण प्रस्ताव तैयार करने वाले अग्रणी व्यक्ति थे। तब से, देश धीरे–धीरे दुनिया के सर्वोच्च आर्थिक नेताओं में से एक बनने के लिए आगे बढ़े है।

घरेलू कंपनियों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों की तुलना में ये आंकड़े प्रभावशाली हैं। क्यों? विदेशी कंपनियों द्वारा लाए गए ज्ञान और कौशल का स्तर स्पष्ट रूप से उन्नत है। इसके परिणामस्वरूप अंततः प्रबंधन संरचना में संशोधन हुआ। बेहतर जीवन स्तर और बेहतर क्रय शक्तिः वैश्वीकरण के देश पर पूरी तरह से प्रभाव पड़ने के बाद से भारतीय शहरों में धन सृजन में वृद्धि हुई है। आप व्यक्तियों, विशेषकर विदेशी संगठनों के तहत काम करने वालों की क्रय शक्ति में सुधार देख सकते हैं। इसके अलावा, घरेलू संगठन अपने कर्मचारियों को उच्च पुरस्कार देने के लिए प्रेरित होते हैं। इसलिए, कई शहर व्यावसायिक विकास के साथ–साथ बेहतर जीवन स्तर का अनुभव कर रहे हैं।

यह भूमण्डलीय वित्त बाजारों का एकीकरण ही है, जो अक्सर भूमण्डलीकरण का प्रमाण चिन्ह रहता है। इसमें संचार के नए तरीकों की मदद से होने वाले वित्तीय लेन–देन के नए रूप शामिल हैं। इसने राष्ट्रीय पूँजी बाजार को कमजोर करने और अंश मूल्यों, अन्तर्राष्ट्रीय बैंक ऋण अन्तर्राष्ट्रीय ब्रांड बाजार आदि में सीमा–पार के विनियमों में भीषण वृद्धि की ओर अभिमुख किया है।

नकारात्मक प्रभाव

अगर हम वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर चर्चा कर रहे हैं तो इसके नकारात्मक प्रभावों पर बात करना भी जरूरी है। अनौपचारिक क्षेत्र को जानबूझकर श्रम कानून में सूचीबद्ध नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए, अनौपचारिक श्रमिक 1948 फ़ैक्टरी अधिनियम पर विचार करने का विषय नहीं हैं। इस योजना में सामान्य कामकाजी परिस्थितियाँ, सुरक्षा और स्वास्थ्य, बाल श्रम पर प्रतिबंध, काम के घंटे आदि जैसे महत्वपूर्ण कारक शामिल हैं। इसके अलावा, वैश्वीकरण के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में खराब स्वास्थ्य, अपमानजनक कामकाजी परिस्थितियों और साथ ही बंधन पैदा हो गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था उस वैश्विक वित्तीय उथल–पुथल से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित नहीं हुई है जो 2007 में शुरू हुई थी। संकट काल के दौरान आरबीआई ने विकास दर को नियंत्रित करने और मुद्रास्फीति के दबाव को नियंत्रित करने की दृष्टि से जुलाई 2008 तक ब्याज दरों में वृद्धि की थी। हालाँकि, सितंबर 2008 में लेहमैन ब्रदर्स के पतन के साथ वैश्विक आर्थिक मंदी में वित्तीय संकट तेजी से बढ़ गया, जिसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर तत्काल प्रभाव पड़ा। ऋण प्रवाह तेजी से समाप्त हो गया और साथ ही मुद्रा बाजार की ब्याज दर 20 प्रतिशत तक बढ़ गई। यह विचार करना समझदारी होगी कि 1929 की महामंदी के बाद से वैश्विक आर्थिक संकट, वैश्विक पूंजीवाद का प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर अभी भी सामने आ रहा।

अर्थशास्त्र में, वैश्वीकरण को उस प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें व्यवसाय, संगठन और देश अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर काम करना शुरू करते हैं। वैश्वीकरण का प्रयोग अक्सर आर्थिक संदर्भ में किया जाता है, लेकिन यह राजनीति और संस्कृति को भी प्रभावित करता है और उससे भी प्रभावित होता है।

वैश्वीकरण एक विकास की प्रक्रिया मानी जा सकती है जिसमें सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक अदान–प्रदान राष्ट्र राज्य रूपी कृत्रिम सीमाओं एवं नियंत्रण के लोग एकल विश्व समाज के रूप में एकत्रित हो रहे हैं। वैश्वीकरण सरकारों की एक अत्याधिक बदली हुई भूमिका की भी माँग करता है। उच्च प्रतियोगी माहौल में कार्यरत निजी क्षेत्रों को प्रचालन के स्पष्ट नियमों, वृहत आर्थिक माहौल में स्थिरता, आयातों तक अप्रतिबंधित पहुँच, कुशल आर्थिक और सामाजिक अधोसंरचना की आवश्यकता है और इन सभी की राष्ट्रीय सरकारों से माँग की जाती है।

भूमण्डलीकरण शब्द का इस्तेमाल दो तरह से हुआ है। सकारात्मक अर्थो में इसे विश्व अर्थव्यवस्था में बढ़ रही एकीकरण (जुड़ाव) की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जाता है, वहीं अन्य लोग इसे नरकीय दण्ड के रूप में देखते हैं। स्पष्ट रूप में इसे विश्व अर्थव्यवस्था में बढ़ रहे आर्थिक खुलेपन बढ़ रही आर्थिक अर्न्तनिर्भरता एवं गहरे होते आर्थिक एकीकरण के साथ जुड़ी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता

है। आर्थिक खुलापन केवल व्यापार के प्रवाह, निवेश के प्रवाह, वित्त के प्रवाह तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सीमाओं के आर–पार सेवा, तकनीक, सूचना एवं विचारों के प्रवाह को भी आत्मसात करता है। सूचना तंत्र के प्रभावशाली एवं शक्तिशाली संजाल ने भूमण्डलीकरण की अवधारणा को एक मजबूत आधार दिया है। जिसके तहत एक निर्बाध विश्व की कल्पना साकार होती नज़र आती है। हालाँकि यह अवधारणा 20 वीं शताब्दी के आधुनिक बुद्धिजीवियों की बौद्धिक उपज है। इसी कारण यह नया शब्द, नये संदर्भों और नये विश्व (संचार साधनों से लैस) के लिए प्रयोग होने लगा।

आर्थिक एकीकरण राष्ट्रीय सीमाओं को वैसे ही खोल देता है, जैसे उदारीकरण ने आर्थिक कारोबार के लिए देश की सीमाओं को शिथिल कर दिया है। भूमण्डलीकरण को यदि हम माँग के दृष्टिकोण से देखें तो एक तरह से यह बाजार (वस्तुओं, सेवाओं, तकनीक, वित्तीय संपत्तियों यहाँ तक की धन का) एकीकरण है तथा जब इसे पूर्ति के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह एक तरह से उत्पादन का एकीकरण ही है।

जब यह तय हो चुका है कि भूमण्डलीकरण निरंतर चलती रहने वाली प्रक्रिया है, तब यह तय करना कठिन है कि यह प्रक्रिया कब आरंभ हुई। अधिकांश लोगों की धारणा है कि भूमण्डलीकरण की उत्पत्ति एशिया और अफ्रीका में, यूरोपीय देशों के साम्राज्यवाद विस्तार के साथ आरंभ हुई। कुछ अन्य लोगों का विचार है कि यातायात और संचार प्रौद्योगिकी संबंधी क्रांति के साथ 19वीं शताब्दी के मध्य अथवा 20वीं शताब्दी के आरंभ में भूमण्डलीकरण प्रारंभ हुआ। जबकि वास्तविकता यह है कि भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया का अनुभव 1970 के दशक में ही किया गया। इससे पूर्व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई क्रांति ने वैश्विकजनों को एक दूसरे के निकट ला दिया था जिसके महत्वपूर्ण सीमा चिन्हों को कुछ इस तरह से देखा जा सकता है– सन् 1965 में अन्तर्राष्ट्रीय तार संघ की स्थापना को प्रथम भूमण्डलीय नियंत्रक निकाय कहा जाता है।

पिछले दो दशकों में उदारीकरण (Liberalisation) और भूमण्डलीकरण (Globalization) ही ऐसे शब्द है जो विकास अर्थव्यवस्था की बातचीत के साथ–साथ राज्य और समाज पर ही हावी हो गए हैं। सरल शब्दों में, उदारीकरण का अर्थ है– देशों के बीच व्यापार, निवेश व पूँजी प्रवाहों को मुक्त कर देना। इसका निहितार्थ है व्यापार–प्रक्रियाओं का सरलीकरण यथा–माल व्यापार, विदेशी निवेश, सेवाओं का आदान–प्रदान आदि, ताकि ये देश बिना कठिनाई व्यापार कर सकें। यह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में मदद के लिए सरकार की कम हस्तक्षेपवादी और अधिक सहयोगी भूमिका पर जोर देता है।

भूमण्डलीकरण अपेक्षाकृत एक व्यापक शब्द है, जिसके दायरे में दृश्य घटनाओं की एक विस्तृत श्रेणी आती है। यह बहुराष्ट्रीय निगमों (MNCs) के तत्वावधान अथवा स्वामित्व में विभिन्न देशों में उत्पादन सुविधाओं के एकीकरण के साथ–साथ

उदारीकरण द्वारा मुहैया उत्पाद व वित्तीय बाजारों के एकीकरण की ओर भी इशारा करता है। सरल शब्दों में भूमण्डलीकरण का अर्थ है राष्ट्र–राज्यों की राजनीतिक सीमाओं के परे आर्थिक गतिविधियों का विस्तार। यह विभिन्न देशों के बीच आर्थिक खुलेपन को बढ़ाने तथा आर्थिक अन्योन्याश्रय पर जोर देता है। एक और शब्द जिसको हाल के वर्षो में लोकप्रियता मिली है, वो है निजीकरण (Privetization)। यह सरकारी स्वामित्व वाले उद्यमों में राज्यीय परिसंपत्तियों के विनिवेश की ओर संकेत करता है। ऐसा करके सार्वजनिक उद्यम का स्वामित्व निजी उद्यमी के पास चला जाता है। निजीकरण के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (PSU) के प्रबंधन में निजी भागीदारी की अनुमति होती है।

भूमण्डलीकरण संसार को इतना करीब ले आया है, जितना यह पहले कभी नहीं था। संचार क्रांति ने इस प्रक्रिया को अधिक सुगमता प्रदान की है। हालाँकि, भूमण्डलवादी, परम्परावादी और विवर्तनवादी इसे बहुत अलग नजरिए से देखते हैं। भूमण्डलीकरण का वर्तमान स्वरूप यद्यपि पूँजीवादी प्रणाली की विजय की उद्घोषणा करता है, यह उसके विकास में एक महत्वपूर्ण चरण भी है। इसके अलावा भूमण्डलीकरण ने शेष विश्व पर विकसित विश्व की पकड़ की पुष्टि की है। उदारीकरण के माध्यम से राज्यों ने अपने समाजों को भूमण्डलीकृत विश्व से जोड़ा है। जबकि राष्ट्र–राज्य इस विकास के साथ अपने तरीके से पेश रहा है, उसके नीचे, बगल में और ऊपर नई संस्थाऐं हैं, जो सामने आई हैं। कुल मिलाकर भूमण्डलीकरण ने आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव डाला है।

भूमंडलीयकरण की नीतियों से विदेशी कम्पनियों और व्यवसायियों को बहुत लाभ मिला है। साथ ही हमारी निर्यातकों तथा अन्य विदेशी व्यवसायियों से जुड़े तबकों को बहुत लाभ हुआ है। भारत के खाते–पीते तबके अब तरह–तरह की विदेशी वस्तुओं का उपभोग कर सकते हैं। वे विदेशी बैंकों में खाते खोल सकते हैं, विदेशी कंपनियों से बीमा पॉलिसियाँ खरीद सकते हैं और अब तो उन्हें विदेशों में पैसा ले जाने और परिसम्पत्तियाँ खरीदनें तथा कंपनियाँ स्थापित करने की छूट दे दी गई हैं। विदेशी कर्ज लगभग एक सौ बीस मिलियन डॉलर का आँकड़ा छू रहा है। विभिन्न तरहों के विदेशों से प्राप्त परंतु हमारे द्वारा बिना कमाये हुए संसाधनों के आधार पर विदेशी मुद्रा भंडार की तेजी से बढ़ने से हमारा धनी–मानी तबका और उनकी प्रतिनिधि सरकार अत्यंत गदगद हो गई है। इसे व्यवहारिक अर्थों में विवेचित करना आवश्यक है। भूमण्डलीकरण का दूसरा नाम हो सकता है, विश्व कारोबार का बहुउद्देशीय कम्पनियों द्वारा निर्धारण और नियंत्रण। इसमें एक बात बड़ी अजीब है, उत्पादन के सब साधनों को विश्व आर्थिक पटल पर आने–जाने और कारोबार करने की ऐसी आजादी मिल गयी है, मानो राष्ट्रीय सीमाऐं, कानून कायदे तथा नियमन अर्थहीन हो गये हैं। एक अर्थशास्त्री ने अभी एक किताब लिखी है जिसका शीर्षक है Imagine There is no Country अर्थात् कल्पना कीजिए कि अब दुनिया राष्ट्रविहीन हो गयी है, एक सीमित अर्थ में शब्दों की ओर आर्थिक राष्ट्रवाद या देशों की आर्थिक प्रभुसम्पन्नता

के घटने का यह एक उदाहरण है अथवा यह भी कहा जा सकता है कि अधिकांश देशों में राष्ट्रीय हित और कम्पनी हित को एक माना जाने लगा है।

जब कोई विकासशील अर्थव्यवस्था अपने राष्ट्र को विकास की तीव्र दर प्राप्त करने के लिए प्रयास प्रारंभ करती है तब उसे अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और एशिया विकास बैंक से आर्थिक सहयोग की सस्ती दरों पर ऋण की दरकार होती है। ऋण देने वाली संस्थाऐं सरकार की सामाजिक नीतियाँ, राजनीतिक व्यवस्था, निर्णय प्रक्रिया और अर्थव्यवस्था के ढाँचे का सांगोपांग अध्ययन करके उन राष्ट्रों को अपने व्यवस्थागत ढाँचे में परिवर्तन के लिए कुछ सुझाव और शर्तों के साथ ऋण देने की पेशकश करती हैं, चूँकि इन अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के मूल निर्धारक विकसित राष्ट्र होते हैं और अपरोक्ष रूप से ये वित्तीय संस्थाऐं उन विकसित राष्ट्रों के हितों का पोषण करने की जबावदेही भी रखते हैं। साथ ही वे वित्तीय संस्थाऐं ऋणग्राही राष्ट्रों के लिए कुछ सुधारात्मक कार्यक्रम लागू करने की बाध्यता रखती हैं, जैसे स्थानीय उद्योगों व्यवसायों को सरकार का संरक्षण हटाया जाना, शासकीय अनुदान नीतियों को शनैःशनै खत्म किया जाना कृषि और लघु उद्योगों को शासकीय संरक्षण खत्म करके मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था से प्रतियोगिता करने लायक सक्षम बनाना इत्यादि।

अर्न्तराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाऐं यदि किसी राष्ट्र को संरचनात्मक संमजन कार्यक्रमों को अपनाने के लिए बाध्य करती हैं, तो राष्ट्र इसे अपनी आर्थिक और सामाजिक सम्प्रभुता में दखलदांजी मानते हैं, जबकि राज्य समर्थित बैकिंग संस्थाऐं राज्य क्षेत्र के भीतर किसी भी ऋण चाहने वाले व्यक्ति पर अपनी अपेक्षाऐं आदि का सन्तुष्टिकारक समाधान प्राप्त होने पर ही वित्तीय सहायता प्रदान करते है। राज्य की नियामक संस्थाऐं तभी किसी उद्योग को अनापत्ति प्रमाणपत्र जारी करती हैं। जब वे उस उद्योग के लिए आवश्यक सामाजिक और नीतिगत दायित्वों का पालन करते है या उसकी वचनबद्धता दोहराते हैं। उदाहरण के लिए किसी लघु, मध्यम और वृहद स्तर के उद्योगों को आवंटित भूमि के एक निश्चित भाग को वृक्षों से अच्छादित करने की बाध्यता होती है, और ऐसा करके ही वे अपना उद्योग स्थापित कर पाते है। यदि अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाऐं राष्ट्रों से अपने सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के लिए यदि ऐसी वचन बद्धता की मांग करते हैं, तो राज्यों को इसमें आर्थिक महाशक्तियों की अप्रत्यक्ष दखलदांजी मानने से बचना चाहिए।

वैश्वीकरण पश्चिम की अपनी अन्यायी व्यवस्था की तुलना में आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुकाबलों पर तृतीय विश्व के और अधिक कष्टकारी तनाव कायम रखता है। भूमण्डलीय प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप न तो राष्ट्र और न ही राज्य गायब होने वाले हैं। शुरूआती तौर पर ऐसी कोई प्रतिस्थायी संरचना नहीं है, जो राष्ट्र राज्य से जुड़े हुऐ सभी परम्परागत कार्यों को संपन्न कर सके। इसी के साथ लोक राज्य संकेद्रित राष्ट्रवाद को पूर्णरूपेण छोड़ने को तैयार नहीं है, क्योंकि राष्ट्रवाद का

ऐतिहासिक रूप अंतः स्थापित और यह सांस्कृतिक रूप से अनुभव किया जाता है। फिर भी इसे नहीं समझा जा सकता, क्योंकि पहचान के लिए राज्य का विखंडन राष्ट्र–राज्य का प्रतिस्थायी नहीं हो सकता है। निष्ठा के अर्थ बदल रहे हैं और अनिवार्यतः परिणामस्वरूप विविध वफादारियाँ दृष्टिगोचर होंगी। निश्चित तौर पर यद्यपि राष्ट्र–राज्य गायब नहीं होगा, परंतु इस तरीके से नहीं होगा जैसा, ये अब है। नागरिकों की निष्ठा के स्वरूप और स्थितियों में बदलाव आएगा।

अस्सी के दशक में विश्व के बड़े हितों में संसाधनों के आवंटन में राज्य से विपणन की ओर एक प्रबल विचलन हुआ। इसी के साथ आई सूचना और संचार क्रांति जो विपणन की पक्षधर थी। उदारीकरण समर्थित विपणन की प्राथमिकता को भूमण्डलीकरण पूंजी द्वारा खुला समर्थन दिया गया। पारदेशीय उद्यम और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व बैंक अभिकरणों ने भी उदारीकरण की नीति का अनुसरण के लिए राज्यों पर अत्याधिक दबाव डाला। 1989 में पूर्वी यूरोप में समाजवादी शासनों के विध्वंस और 1991 में सोवियत संघ के विलय को विपणन की विजय के रूप में पुकारा गया और विपणन शक्तियों को और अधिक प्रोत्साहन मिला।

आधुनिक भूमण्डलीकरण बहुमुखी है। यह मात्र विश्व व्यापार नहीं है, जिसका विस्तार हुआ है, परन्तु इनमें शेयर बाजार में पूँजी निवेश भी बढ़ा है। अल्पकालीन निवेश और विदेशों में श्रमिकों का अप्रवास भी बढ़ा है। केवल 1990 के दशक में ही संसार के सकल (कुल) घरेलू उत्पाद (GDP) की तुलना में वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार में लगभग दुगुनी वृद्धि हुई। अर्थात् व्यापार में वृद्धि विश्व–उत्पाद से भी अधिक हुई। आंकड़ों के आधार पर यदि देखा जाए तो 1970 में विश्व उत्पाद का केवल 28 प्रतिशत आयात–निर्यात व्यापार से संबंद्ध था। परन्तु 1998 में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 45 प्रतिशत आयात–निर्यात होने लगा था। यह वृद्धि समस्त संसार में पाई गई–विकसित एवं विकासशील सभी देशों में। उदाहरण के लिए सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के प्रतिशत के रूप में कम आय वाले देशों का व्यापार 1970 के 12 प्रतिशत से बढ़कर 1998 में 46 प्रतिशत हो गया था।

वास्तव में मध्यम आय वाले देशों में प्रगति और भी अधिक एवं नाटकीय रही। इस अवधि में मध्यम आय वाले देशों में व्यापार में दुगुनी वृद्धि हुई। इसकी तुलना में, उच्च आय वाले देशों में, चाहे कुछ व्यापार में वृद्धि अवश्य हुई, फिर भी वह मध्यम आय वाले देशों के स्तर को प्राप्त नहीं कर सकी। आज पूँजी का जो प्रवाह है, उसने अतीत की तुलना में आर्थिक भूमण्डलीकरण को गुणवत्ता की दृष्टि से अधिक प्रभावी बना दिया है। हाल के अनुमान के अनुसार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अभूतपूर्व स्तर पर एक खरब अमरीकी डालर तक पहुँच गया है। इस संबंध में एक प्रमुख विशेषता यह रही कि बहुराष्ट्रीय निगमों की गतिविधियों का विस्तार हुआ। एक अनुमान के अनुसार संसार में लगभग 60,000 पंजीकृत कंपनियाँ हैं, जो समस्त संसार में फैली हुई हैं तथा अनेक आर्थिक गतिविधियों से सम्बद्ध हैं। परिणामस्वरूप विश्व की अर्थव्यवस्था

में बहुराष्ट्रीय निगम का एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरे हैं। इन बहुराष्ट्रीय निगमों में चोटी के 100 गैर वित्तीय निगम केवल विकसित देशों में आधारित हैं। मूल रूप से अन्तर्राष्ट्रीय उत्पाद में उनकी भूमिका प्रमुखतः इलेक्ट्रॉनिक, बिजली उपकरणों, मोटर वाहनों, पेट्रोलियम रसायन पदार्थो तथा दवाईयों के क्षेत्र में है। साथ ही विश्व भर में अनेक छोटी कंपनियों का उनके साथ विलय हुआ अथवा उन्होंने देशी कंपनियों को खरीद लिया इसके फलस्वरूप इन निगमों की उस क्षमता में भरपूर वृद्धि हुई है, जिसके द्वारा उन्होंने अन्तर्देशीय व्यापार को आत्मीय करके व्यापार करों और सीमा शुल्क की राष्ट्रीय नीतियों को अधीनस्थ कर लिया है।

पूँजी प्रवाह के अतिरिक्त लोगों के अप्रवास में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। एक अनुमान के अनुसार सन् 1990 से प्रतिवर्ष 20 से 30 लाख लोग विकसित देशों में जा रहे हैं। 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में 13 करोड़ से अधिक लोग अपने मूल देशों के बाहर निवास कर रहे हैं और उनके अप्रवास की गति 2 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रही है।

आज का भूमण्डलीकरण आर्थिक ही नहीं, सांस्कृतिक से सामरिक तक किसी भी तरह भूमण्डलीय वर्चस्व एकछत्रता स्थापित करने की प्रक्रिया है। मिशेले द क्लेयर द्वारा रचित ग्रंथ–Resource: The New Land Scape of Global Conflict के अनुसार भूमंडलीय प्रवक्ताओं को प्राकृतिक संसाधनों, तेल ही नहीं पानी तक में कब्जे के लिए भी युद्ध से परहेज नहीं है। भूमण्डलीकरण, निजीकरण और उदारीकरण के संजाल का ही नया चेहरा वैश्विक नवउदारीकरण, साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण है, जिसे पूँजीवादी साम्राज्यवाद सुनियोजित तरीके से अपनी पूरी सामर्थ्य और चतुराई से विश्व भर में बहुत लुभावने रूप में प्रचारित कर रहा है।

निष्कर्ष

भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण की शुरुआत ने भारतीय समाज को काफी हद तक बदल दिया। वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था एक दूसरे से संबंधित हो गए और अगली आर्थिक नीतियों पर इस परिवर्तन का सीधा प्रभाव दिखाई दिया। इसका उद्देश्य इस देश में व्यापार के अवसरों को बढावा देना, रोजगार पैदा करना और वैश्विक निवेश को आकर्षित करना था। भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण का प्रभाव इसकी संस्कृति पर भी देखा गया। अन्य समाजों और उनके मानदंडों के परिचय ने इस देश की संस्कृति में भी विभिन्न परिवर्तन लाए। पहले एक कृषि अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाने वाला भारत स्वतंत्रता के तुरंत बाद औद्योगिक, स्वास्थ्य, शिक्षा, रियल एस्टेट, आई.टी. जैसे अन्य क्षेत्रों में विकसित हुआ। भारतीय सरकारों के प्रयासों के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था का एक संतुलित स्वरूप सामने आया है, जहां न केवल एक बल्कि सभी क्षेत्र देश के समग्र विकास में कुछ न कुछ महत्व रखते हैं। शहरीकरण और वैश्वीकरण के बाद भारतीय समाज में भारी बदलाव आ रहा है। अर्थव्यवस्था के बुनियादी ढाँचे के निर्माण में आर्थिक नीतियों का सीधा

प्रभाव पड़ा है। सरकार द्वारा स्थापित और प्रशासित आर्थिक नीतियों ने भी समाज में बचत, रोजगार, आय और निवेश के नियोजन स्तर में आवश्यक भूमिका निभाई।

संदर्भ

1. श्रीवास्तव, डॉ. बलजीत कुमार भूमण्डलीकरण का हिन्दी सिनेमा पर प्रभाव :शोध धारा, (त्रैमासिक), शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान उरई (जालौन)।
2. सिंह, प्रेम उदारीकरण की तानाशाही, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. जैन, नीरज वैश्वीकरण या पुनः उपनिवेशीकरण, गार्गी प्रकाशन दिल्ली।
4. भादुड़ी, अमित एवं दीपक नय्यर उदारीकरण का सच, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. काबरा, कमलनयन भूमण्डलीकरणः विचार नीतियाँ और विकल्प, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
6. वोहरा, वंदना वैश्वीकरण में नागरिकता, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2007।
7. रंगराजन, चक्रवर्ती भारत की अर्थनीति नये आयाम, राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली, नवम्बर 2002।
8. https://shodhganga.inflibnet.ac.
9. https://education.nationalgeographic.org
10. https://www.vedantu.com/commerce
11. https://byjus.com/
12. https://www.toppr.com

PANDEMIC EFFECTS ON

HEALTH, SOCIETY, ENVIRONMENT & ECONOMY

Edited by
Dr. Farhat Mansoori
Dr. Syma Sirdeshmukh

PANDEMIC EFFECTS ON
HEALTH, SOCIETY, ENVIRONMENT & ECONOMY

PANDEMIC EFFECTS ON
HEALTH, SOCIETY, ENVIRONMENT & ECONOMY

Edited by
Dr. Farhat Mansoori, Dr. Syma Sirdeshmukh

red'shine
PUBLICATION
INDIA

PANDEMIC EFFECTS ON HEALTH, SOCIETY, ENVIRONMENT & ECONOMY

by: Dr. Farhat Mansoori, Dr. Syma Sirdeshmukh

■

RED'SHINE PUBLICATION PVT. LTD.
Headquarters (India): 88-90 REDMAC, Navamuvada,
Lunawada, India-389 230
Contact: +91 76988 26988
Registration no. GJ31D0000034

In Association with,
RED'MAC INTERNATIONAL PRESS & MEDIA. INC
India | Sweden | UK

■

Text © *Dr. Farhat Mansoori, Dr. Syms Sirdeshmukh*, 2022
Cover page ©RED'SHINE Studios, Inc, 2022

■

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or used in any form or by any means- photographic, electronic or mechanical, including photocopying, recording, taping, or information storage and retrieval systems- without the prior written permission of the author.

■

ISBN: 978-93-95456-46-3
ISBN-10: 93-95456-46-9
DIP: 18.10.9395456469
DOI: 10.25215/9395456469
Price: ₹ 400
October, 2022 (First Edition)

■

The views expressed by the authors in their articles, reviews etc. in this book are their own. The Editor, Publisher and owner are not responsible for them. All disputes concerning the publication shall be settled in the court at Lunawada.

■

www.redshine.co.in | info@redshine.in
Printed in India | Title ID: 9395456469

EDITORIAL

The novel coronavirus disease (COVID-19) has rapidly spread across the entire globe, thus threatening human civilization. In 2019, the infectious disease was initiated from Wuhan, China, leading the flare-up of the COVID-19 widespread to wagered the world socio-economic foundation. The terrifying characteristics of this pernicious disease have left an erratic impact on the world's today & tomorrow both. Now world has to face the increased epidemic challenges for societies, compelling them to experience unprecedented consequences in terms of transitory disclosures, travel confinements, and social distancing. The high COVID-19 susceptibility has imposed health challenges for the general population. The increasing COVID-19 fear has made the entire world bear Economical, psychological & physical challenges affecting the world's future.

The increasing uncertainty of pandemic has drastically altered the individual's way of living i.e., quality of life, severely affecting the socio-economic sustainability of global economies. Millions of enterprises face an existential threat. Nearly half of the world's 3.3 billion global workforce are at risk of losing their livelihoods. Without the means to earn an income during lockdowns, many are unable to get the basics for their families. For most, no income means no food, no education, no medical facilities or we can say No Life. With this Pandemic scenario all we can do is hope for a better brighter tomorrow

Now is the time for global solidarity and support, especially with the most vulnerable in our societies, particularly in the emerging and developing world. Only together can we overcome the intertwined health, education, social and economic impacts of the pandemic and prevent its escalation into a protracted humanity. We are committed to pooling our expertise and experience to support country in crisis response measures and make efforts to achieve the best of promising tomorrow.

Moved by the COVID-19 uncertainty, we proposed the topic "Pandemic Effects on Health, Society, Environment & Economy" in which new thoughts and insight had stimulated and incorporated in the COVID-19 context.

Perhaps, in response, several pioneers' studies heeded the call, thus supporting the intended development with their valuable contributions. All the writeups were successfully published, enriching the

literature and accelerating future possibilities toward the topic development.

Indeed, the chapters offer a different perspective of the impact of COVID-19 on the Health, Society, Environment & Economy research in the field of world development, growth and Safety.

Additionally, the chapters also highlighting study which showed that the feeling of helplessness, loneliness, and anxiety had changed the lifestyles while positively manifesting the symptoms of depression among the individuals. Also, during the COVID-19 widespread, the high pace of work intensifies the effect of stress, anxiety, and burnout in the health workers, ultimately damaging their quality of living.

We expect this will add value for the general public, professionals, and future researchers, thus inspiring them to improve their lives while valuably adding to the desired research. All these contributions will serve as a guide model for future researchers, making them challenge this complex phenomenon of COVID-19 psychology.

"Lets Reunite to Recover…!"

Dr. Farhat Mansoori

EDITORIAL COMMITTEE

Prof. Arvind Chauhan
Bhopal (M.P.)

Prof. Ravi Kumar
Dpt. of Physical Education, Guru Kashi University, Bhathinda (Panjab)

Dr. Archana Gour
(Assot. Prof.) Govt. College Narela, Bhopal (M.P.)

Dr. Rizwama Siddiqui
Asst. Prof. Education, S.S.J. University Almora, Uttarakhand

Dr. Gurpreet Singh
Entrepreneur Educationist, Motivational Speaker, Life & success coach, Delhi

Ms. Shazia Sirdeshmukh
Founder, Fusion Academy, Delhi

CONTENTS

SR.NO.	CHAPTER NAME AND AUTHOR(s)	PAGE NO.
1	THE ADVERSE EFFECTS OF COVID-19 ON PRIMARY EDUCATION IN SLUMS OF KOLHAPUR CITY **Mrs. Komal Oswal**	1
2	IMPACT OF COVID 19 ON INDIAN SOCIETY: A SOCIOLOGICAL STUDY **Mrs. Ashwini Padhye- Dharkar**	11
3	IMPACT OF COVID-19 ON TEACHING LEARNING PROCESS **Dr. Rizwana Siddiqui, Saroj Joshi**	22
4	CORONA PANDEMIC AND WORLD OF EDUCATION **Dr. Alok Kumar Singh**	28
5	COVID-19: AN UNSEEN ENEMY OF THE WORLD **Dr Neeta Kapoor**	39
6	IMPACT OF THE COVID-19 PANDEMIC ON EDUCATION WORLD **Dr. Hasitkumar Nagariya, Mr. Mahesh Kandalkar**	41
7	COVID-19 PANDEMIC AND REVITALISATION OF HIGHER EDUCATION IN INDIA **Anushree Pandey, Dr. Sapana Sharma Saraswat**	45
8	CORONA AND IT'S VACCINATION **Tabassum Qureshi**	52
9	EDUCATION AND COVID-19 IN INDIA: CHALLENGES AND IMPACTFUL EDUCATIONAL RECOURSE **Tamisha, Rajive Kumar**	56

SR.NO.	CHAPTER NAME AND AUTHOR(s)	PAGE NO.
10	CORONA WARRIOR **Humayun Khan Mohd Azimuudin Khan**	63
11	COVID 19- EMOTIONAL, PHYSICAL & PSYCHOLOGICAL IMPACT ON WOMEN **Booma V Halpeth**	69
12	ROLE OF NSS VOLUNTEERS DURING COVID-19 PANDEMIC **Dr. Archana Verma**	76
13	INITIATIVES TAKEN BY THE GOVERNMENT FOR THE AFFORDABILITY OF EDUCATION DURING COVID-19 IN INDIA **Sheetal Prajapati, Dr Narendra Kumar**	83
14	PANDEMIC LITERATURE VIS-À-VIS PEOPLE **Dr. Amit. Y. Kapoor**	91
15	CHALLENGES FACED IN ONLINE TEACHING LEARNING IN HIGHER EDUCATION DURING COVID-19 PANDEMIC **Shilpa Umesh Nimbre**	99
16	COVID-19 AND ITS IMPACT ON THE ENVIRONMENT **N. M. Patil, Tarun Sadanand Kuckian**	105
17	CORONA PANDEMIC AND EDUCATION WORLD **Dr. (Mrs.) Rizwana Siddiqui, Ms. Vandana**	112
18	COVID-19: FROM POSITIVE TO NEGATIVE TO POSITIVE AGAIN **Dr. Usha Masram**	122
19	CHALLENGES AND OPPORTUNITIES OF COVID-19 IN HIGHER EDUCATION SYSTEM **Anshu Mahlawat**	130

SR.NO.	CHAPTER NAME AND AUTHOR(s)	PAGE NO.
20	UNCOMMON LEARNING IN UNCERTAIN TIMES: AN ETHNOGRAPHY OF DIVERGENT LEARNING EXPERIENCES IN DISPARATE SOCIAL SEGMENTS DURING COVID-19 PANDEMIC IN KASHMIR **Saqib Abbas**	135
21	COVID-19: IMPACT ON MENTAL HEALTH AND IT'S MANAGEMENT **Dr. Tayaba Khatoon, Mariya Maaz Khan**	144
22	CORONA PANDEMIC AND ONLINE BUSINESS (E-COMMERCE) IN INDIA **Dr. Neelam Gandhi**	150
23	IMPACT OF CORONA PANDEMIC ON HIGHER EDUCATION **Dr. Indira Parmar, Dr. Dinesh Parmar**	157
24	IMPACT OF COVID- 19 PANDEMIC ON SOCIAL LIFE AND MENTAL HEALTH **M. T. Nikam**	161
25	CORONA PANDEMIC AND GLOBAL E-COMMERCE MARKET **Mukesh Kumar**	168
26	COVID-19 IMPACTS ON AIR QUALITY: A REVIEW **Sabahat Anjum Qureshi**	176
27	CORONA PANDEMIC AND EDUCATION **Prof. Umesh Kumar, Dr. (Prof.) C. B. Kumar**	184

CHAPTER 1
THE ADVERSE EFFECTS OF COVID-19 ON PRIMARY EDUCATION IN SLUMS OF KOLHAPUR CITY

Mrs. Komal Oswal
Assistant Professor, Department of Sociology,
Shivaji University, Kolhapur

Abstract:
The pandemic COVID-19 has created devastating effects. The severely affected is the education sector. This pandemic made the government to precisely think about sustainable development and more specifically sustainable education. In the corona crisis, the primary education in government sector has suffered a lot. The struggle starts with the unavailability of smart phones which was mandatory to study on online mode. The teaching learning experiences shared in the empirical data is also unsatisfactory. The online education apps and schemes of government did not reach the primary children in slum areas. The study is based on empirical data collected in Kolhapur city from the two slum areas. The overall picture is very vulnerable and which makes us rethink of sustainable education.

Introduction:

COVID-19 or Corona virus also known as Corona disease 2019 (COVID-19) is a deadly contagious virus caused by severe acute respiratory syndrome II. It is a novel severe acute respiratory syndrome corona virus. It is a new version of severe acute respiratory syndrome. So it is known as novel corona virus. SARS - COV is closely related to SARC-Cov-2. The first case was identified in Wuhan city of China, in December 2019. Hence, the disease is called COVID-19. In India, the first case is reported in Trissur, Kerala on 30th January, 2020. This one case was of a student returning from Wuhan. Slowly and gradually the infection started to spread in India, but at the global level too in same or the other way the transmission stared to increase. Though it is a virus which is a microorganism that is even smaller than bacterium which cannot grow itself, it needs a

living cell. This coronavirus transmitted at a faster rate and it has created a home in the world. The Corona virus prior thought to be an epidemic seen was termed as 'pandemic' by World Health Organization (WHO) on 11th March, 2020. It was termed as pandemic because a pandemic is an epidemic that has spread to multiple countries or continent across the world. Whereas it was thought an epidemic only till if it is restricted to a country, population or a region. It was declared as a Public Health Emergency of International concern.

The worst among all are tourism and education. Tourism will again hike soon after pandemic will slowed down but education has a long way to go. It has created revolutionary changes. India is a developing country in all spheres. Technology has not reached into villages of India. Network coverage is very poor in remote areas. Apart from technology, there are example of families who cannot afford to spend money on internet. In the time of corona crisis, education was held online and sudden change which was transformed from blackboard to online PPT'S or live sessions.

The pandemic had devastating effects but there are a few pros for education. One of the most important advantages is online learning. Overcomes geographical barriers even when a student cannot have the access to go to school one can easily access equalize education. Online learning also facilitates convenient, quick and on the go access. Another benefit is online learning can the accessible 24×7 numerous educational technology firms have leveraged the opportunity to offer lessons in an interactive and interacting way. Though this is a passive impact of the pandemic, the negative impact is for more. the worst effect has been caused on the examination earthier the educational institute have cancelled the areas as per the recent decision standard X exams are cancelled by state and central government if the exam are held they are held online and multiple choice questions and low vigilance too all this will build difficulties in future in building career. Next problem is online learning-a sudden shift to online learning without prior planning is a country like India were neither do we have a backbone for online learning nor the curriculum designed for such an online format. This has made the learning passive and leads to low attention span. One more problem is of digital divide which has soft and large proportion of students untouched to studies.

Apart from these problems students are missing their school life with their friends and an international relationship a bond is not present in this digitalized learning. A few technical subjects like engineering and medical cannot be taught online and absence of laboratory is a big loss to students.

Though Covid 19 has costed a lot to the education sector specifically but due to the pandemic the term Sustainable development is finally heard and felt to be taken into consideration. People and even governments have opened their eyes wide open.

Diksha as mentioned earlier has been one of initiative for digital education, in Maharashtra a campaign was run known as Diksha Abhyasmala Campaign, it was stated on 13thApril 2020 by MSCERT in collaboration with leadership for equity, diksha core teams are established at state level that co-ordinate the work of Abhyasmala around 29,500 academic and co-order contents are available on DIKSHA Maharashtra through contribution of teachers and content partner organization. The campaign has started with a total of 22 lakh students and teachers have used the content circulated via DIKSHA. Amongst these, 16.94 lakh were students from grade 1 to 10.

There are other initiatives undertaken by Balbharati for secondary education like E- learning application for 10th standard Bolki Bharti Audio book, E-Balbharati channel, E-books in PDF format for grade 1 to 12, virtual classrooms where teachers are unavailable for grade 9th and 10th in Marathi medium, etc. To build the capacity of teachers and officers in Maharashtra state there were initiatives undertaken by Maharashtra SCERT like BRP Program, Remedial program, cyber security, Avirat teacher training, spoken English, MOOC Samarth Prototype Program, etc.

The initiatives for primary school children undertaken by the Maharashtra government are as follows:

1) Story of the Day: - Apart from DIKSHA through which stories can be accessed, Pratham's 'Missed call do Aur Kahani Suno' is also shared by teachers with parents for the children to avail this service. The toll free number 08033094243 can be dialed by parents with a basic features phone or a smart phone or even a landline phone for age 0 to 14 years who will then receive a call with an audio story. After this a set of generic activities are shared with the parents via SMS daily that can be done by the children after listening to the stories. This imitative was started from 27nd April 2020

2) T.V Programme: - Currently, Gali Gali Sim Sim is being aired by DD Sahyadri at 10 am from Monday to Friday. The programmes is suitable for young children. (Preprimary to grade 2) and is being watched/viewed by over 11 lakh children's in the state. This has started from 20th April, 2020.

3) Radio Programmes: - A set of educational games and activities are also being broadcast through radio in one region of the state by Pratham in partnership with MSCERT. The program is being taken across the state from 1st May, 2020. .

4) Bookyboo: This program has been launched by the MSCERT in partnership with UNICEF. A story book for children on covid-19 has been adapted with WHO messages and has been developed in Hindi English and Marathi and in audio visual format for wider understanding. This programme has started from14th May 2020. Internet connectivity is needed for this programme.

There are other programs like career portal for guidance in causes for grade 9 to 12 whereas for capacity building of education functionalist to enhance enables the learning from home package to teachers and parents. (India report digital education June 2020)

Slums:

The word slum is usually described as informal settlements within cities that how inadequate housing and miserable living conditions. They are overcrowded, with so many people living together into very small spaces. Slums have been a part of history of almost all cities, particularly during the phase of urbanization and industrialization. Slums are generally the only type of settlement affordable and accessible to the poor in cities, where competition for land and profits is intense. The main reason for slum proliferation is rapid and non-inclusive patterns of urbanization catalysed by increasing rural migration to urban areas.

The urban population of India in the census of India, 2011 shows that the country stood at 377 million or 31.2% of the total population. It is estimated that by 2031, urban population is likely to rise to over 600 million, which is adding 225 million populations to the current existing population. The total number of towns and cities has also increased from 5,161 in 2001 to 7936 in 2011. A total of 65.49 million inhabitants living in 13.9 million households who have been enumerated in slums of 2613 cities based on 2011 census. It was 22.4% of the total slum population of all the slum reporting cities/

towns and 17.4% of the total urban population of all the states and Union Territories. There are several cities with more than 25% of population residing in slums. The slum population constitutes 2.4% of the total population residing in slums. The slum population constitutes 5.4% of the total population of the country. Exceptionally 4 states Union territories of India have not reported any slum that is Manipur, Daman and Diu, Dadra and Nagar Haveli and Lakshadweep. Maharashtra state has estimated 7723 slums, which accounts for about 23% of total slums in Urban India, which is followed by Andhra Pradesh and West Bengal. Among Maharashtra, total urban population of Kolhapur cit is 5, 49,236 and the slum population is 67,646 and total percentage of slum population is 12.32%. In case of literacy, Maharashtra is at the top rank of total literates of 8.8 million among the slum population. The gender wise literacy rates are 89.3% males in slum areas and 79.0% females respectively.

Objectives of Study:

The specific objectives of the present study are as follows:

i) To examine the challenges faced by primary school children during COVID 19 residing in slum areas.

Research Methods:

The researcher has adopted a descriptive research design. The universe of the research study is confined to two Slums that is Rajendra Nagar and Awachit Nagar of Kolhapur city only. the researcher enquired about the total number of slums in Kolhapur Municipal Corporation under Pradhan Mantri Aawas Yojana (PMAY) that is total 64 slums are there in Kolhapur city, amongst which the highest populated slum is Rajendra Nagar slum and the second most populated is Awachit Nagar slum. The researcher enquired in Kolhapur Municipal Corporation about the total number of primary schools in Kolhapur city which is about 259 which are run by the government and private both. From these 259 schools, there are 69 Municipality Schools.

Results and Discussions:

As it is obvious that there were lockdowns in the country and all the schools were shut offline and the mode opted was online school. Though the slum area are a part of the city but still they are

not availing all the facilities of the city culture. As the schools are online the challenges faced by the children residing in slum areas will be adverse.

It was observed by the researcher that only 20% respondent children did not had smart phone and it can be said in short they had no access to education. There are various platforms for online teaching learning like Zoom, Google meet, Microsoft teams, Cisco WebEx, etc. In private schools the teaching learning is conducted through these different platforms. But the researcher wanted to find out the situation in government schools, the following table will give us the idea.

Table no: 1 Platform used for teaching

Platform used for teaching	**Frequency**	**Percentage**
WhatsApp	32	64
Voice Call	7	15
Any other	2	5
Total	**50**	**100**

The following table makes it clear that the majority respondent children's platform used for teaching is WhatsApp that is 64% and 7% respondent children were of the opinion the teachers used voice call for guiding and in any other category is via SMS. Another question was cross questioned who guided them for WhatsApp app to be installed a majority respondent replied they already and WhatsApp and they and their parents knew about the use of the app and only a single respondent took the help of a teacher to install the app.

Teaching method online: - As per the previous table which shows that WhatsApp was the medium of instruction of online teaching in response to that question another question was asked of teaching method online.

Table no: 2 Teaching method online

Teaching method online	**Frequency**	**Percentage**
Audio	00	0
Video	01	2
WhatsApp Message	39	78
Any other	10	20
Total	**50**	**100**

From the above given table it depicts that the online teaching takes place on WhatsApp message that is 78% which means there is no actual teaching, the children are not taught by the teachers but are rather given homework to do without teaching. Subjects like mathematics, languages, science should be taught in some other way. In this way the future of the children is at stake. Only one respondent who studied in a private school responded that he received videos from the school and there were live classes also held. In any other category is the respondent children who do not have a smart phone.

Another question was asked whether the respondent children understand the concept or not. The responses obtained were as follows

Table no 3 Understand the concept

Understand the concept	**Frequency**	**Percentage**
Not Applicable	10	20
Yes	15	30
No	25	50
Total	**50**	**100**

One of the shocking responses obtained were the children do not understand the concept and the reason behind it was the children are not taught, they have been given textbooks from the school as they were given before pandemic but they are not taught by the teacher any of the concepts, they are expected to do self-study at home. Majority of the respondent children did not understand the concepts that are 50% and the respondent who answered that they do understand the concept had a sibling or a parent to teach at home.

This was the sub question asked which will prove that what the respondent children's take help from whom to understand the concepts.

Figure no: 4 If not understand, what do they do?

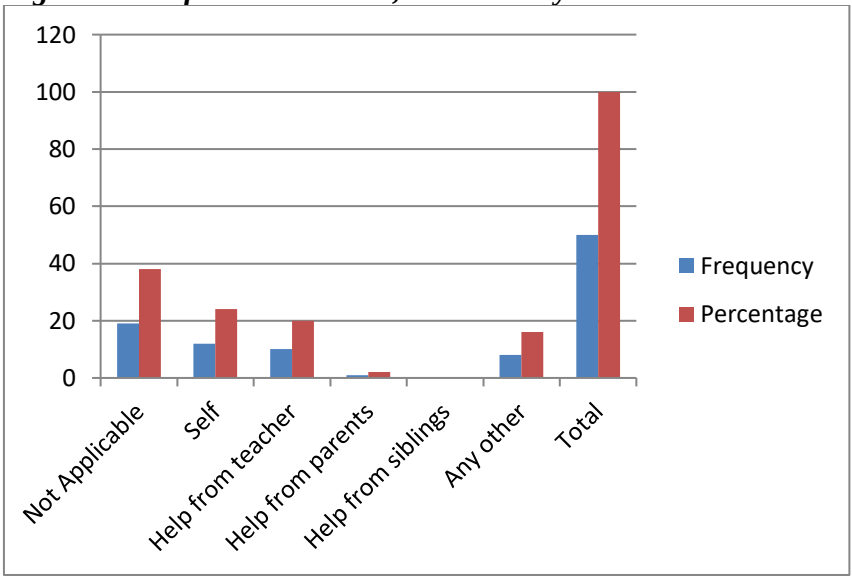

From the above figure it can be seen that majority of the respondents study by themselves and the others take help from teachers and parents and in any other category comes those who ask the neighbours or their friends.

Taking a look from the pandemic lens, the schools used online learning platform such as whatsapp messages. This literally means that there is no actual teaching done and only messages are forwarded to do the homework irrespective of conceptual clarity. The children responded that they many a times they did not understand the concepts clearly and if they asked to explain again there was either no response or the teaching was taken by their other elder family members or friends. From the above mentioned discussion it is clear that if the state of education in the government schools during the period of pandemic is such vulnerable than one can imagine the future state of the country. If for two consecutive basic primary years of a student's life is literally a haste, what kind of progress will be in the nation? We talk about sustainable development but this sight proves that sustainable education is still far away. As sustainable education is for the long term and overall development but in this pandemic though sustainable education is thought by the government authorities but the current scene of education does not guarantee long run effects.

References:

1. Kundu Protiva, Sonawane Shivani (2020): "Impact of COVID-19 on School Education in India: What are the Budgetary Implications?" State Disability Information and Resource Centre. (https://researchgate.net/publication/345317969
2. Pravat Kumar Jena: (2020) "Impact of Pandemic COVID-19 on education in India**"** International Journal of Current Research Vol. 12, Issue, 07, pp.12582-12586, July, 2020.
3. Di Pietro, G., Biagi, F., Costa P., Karpiński Z.,Mazza, J. (2020): " The likely impact of COVID-19 on education: Reflections based on the existing literature and recent international datasets"
4. Comfort R. Etor1, Usen F. Mbon1 &EkpenyongE. Ekanem (2013): "Primary Education as a Foundation for Qualitative Higher Education in Nigeria" Journal of International Education and Learning.
5. Emmanuel Raju, Anwesha Dutta, Sonja Ayeb-Karlsson (2021): "COVID-19 in India: Who are we leaving behind?" https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S2590061721000235
6. Magomedov I.A, Khaliev M S-U, Khubolov (2020): "The negative and positive impact of the pandemic on education" Journal of Physics: Conference Serieshttps://iopscience..org/article/10.1088/1742-6596/1691/1/012134/pdf
7. PokhrelSumitra and RoshanChhetri (2020): The "A Literature Review on Impact of COVID-19 Pandemic on Teaching and Learning" https://journals.sagepub.com/doi/full/10.1177/2347631120983481
8. Emmanuel Raju, Dutta Anwesha, Sonja Ayeb-Kaelsson (2021): The Author in "COVID- 19 in India: Who are we leaving behind?" https://www.researchgate.net/publication/273493004_Health_Status_and_Access_to_Health_Services_in_Indian_Slums
9. Pietro Di, G. Biagi, F. Costa P. Karpinski Z., Mazza, J. (2020): "The likely impact of COVID-19 on education: Reflections based on the existing literature and recent international datasets" https://publications.jrc.ec.europa.eu/repository/handle/JRC121071
10. https://www.thehindu.com/news/national/indias-first-coronavirus-infection-confirmed-in- kerala/article30691004.ece

11. https://www.policycircle.org/life downloaded 31/03/2022 15:35p.m.
12. https://en.unesco.org downloaded 31/03/2022 14:35 p.m.

CHAPTER 2
IMPACT OF COVID 19 ON INDIAN SOCIETY: A SOCIOLOGICAL STUDY

Mrs. Ashwini Padhye- Dharkar
Assistant Professor, Jhulelal Institute of Technology, Nagpur.

Abstract:
The article tries to figure out the correlation between pandemics and the lifestyle change. It is an exploratory article, different perspectives like –Feminism, Marxist View, and Subaltern perspective, have been taken into consideration. It mainly focuses on different perspectives to understand the ground zero reality.
The aim is to find the socio-economic and psychological impact of the COVID 19 pandemic and lockdown.

Keywords: *COVID 19, Lockdown, Impact of Pandemic, Marx, Feminism, Women, Lifestyle, Change.*

Introduction:

"The COVID 19 pandemic is a public health emergency- but it is far more. It is n economic crisis. A social crisis. And a human crisis that is fast becoming a human right crisis."

-Secretary- General of United Nations,
Antonio Gusterres.

The world has witnessed many pandemics in history. If we look back, influenza killed more people in two years than World War I & II cumulatively did in ten years. Spanish flue is fairly called as 'the mother of all pandemics' as researchers at US CDC.

It is essential to address the meaning of words we use in this article. An **outbreak** refers to the sudden occurrence of new disease or sudden increase in cases of existing disease in small area or within a small group of people. The word **epidemic** is derived from Greek (epi: upon, demos: people)when an outbreak spreads over a large area or involve many people , it is called epidemic.

Pandemic is also derived from Greek (Pan: all, demos: the people) a pandemic refers to an epidemic affecting a large geographical area, such as several countries across the globe affecting a large population.

If we try to find out the pandemics faced by human kind in past 100 years, the main will be as following-

1957-58: Asian Flu Pandemic (H2 N2 Virus)

H2N2 influenza, a virus started an outbreak in southern China and rapidly spread across the world. It took death toll of around 2 million. Fortunately, a vaccine was developed quickly, that helped ended the pandemic.

1961 Colera pandemic (Vibrio Cholera)

The 1961 pandemic started in Indonesia. This was seventh cholera pandemic. Even today there are 1.5 to 4 million cases of cholera are found, and up to 143000 deaths take place.

1968 Hongkong Fu Pandemic (H3 N2 Virus)

In July 1968 a Virus caused an outbreak in Hongkong and spread all over world estimated death toll is 1 million people.

1981 to ongoing HIV Pandemic-

In 1981, a new disease was identified that compromised an infected person's immune system, leaving it unable to fight infection. It called Acquired Immunodeficiency syndrome (AIDS) . It is estimated that over 32 million people have died because of AIDS.

2002-03 SARS Epidemic-

Severe Acute Respiratory Syndrome CORONA virus (SARS CoV)in Nov. 2002, a Novel CORONA virus strain started in Foshan, China which spread all over world, by July 2003 WHO declared SARS outbreak had been contained worldwide 774 deaths.

2009 Swine flu pandemic (H1N1 virus)

In March 2009, a virus emerged Maxico and started the pandemic. By April 2009, WHO declared its first ever "emergency of international concern" later in June, WHO declared the outbreak a pandemic.

2012 to outgoing Middle East Respiratory Syndrome Corona Virus (MERS CoV.)-

In April 2012, Jordon reported the cases of respiratory illness. 866 deaths, in twenty-seven countries.

2013-2016

West African Ebola Epidemic (Ebola Virus)

In Dec. 2013, First case of ebola occurred in Guinea. On 8th Aug. 2014, WHO declared a "Public health emergency of international concern. 11310 deaths about 40% case fatality."

2015-16 Zika Epidemic (Zika virus)

2015, Brazil origin of Zika virus Feb 2016, who declared "emergency of international concern". In Nov. 2016, WHO announced the end of Zika epidemic.

2018 to ongoing Kivu Ebola epidemic

August 2018, in Kivu DRC emerged this virus. In March 2019 WHO declared that outbreak had been controlled.

The COVID 19 Pandemic (SARS-CoV-2 Virus)

COVID 19 pandemic is more than 2 years old now. On 31 December 2019, Wuhan Municipal Health Commission, China, reported the first cluster of a new type of pneumonia cases and named it COVID 19. A novel coronavirus was identified. This was the beginning of the COVID 19 Pandemic. Due to its contagiousness, the disease spread like wildfire. The impact of the disease was not merely pain, suffering, and ultimately death of the patient, but this pandemic has done a lot to the world. The structure and social relations have been altered by it. It would be interesting to find out what researchers think about it.

According to David Arnold (Pandemic India: Corona virus and its uses in history), Epidemics and pandemics are not new to the world. There are two perspectives to understanding pandemics. One is historical, where pandemics are considered a re-occurring natural calamity. The other perspective-the "insurgent" perspective- believes that every pandemic is unique, and has a different impact on society.

If you see the history carefully, these pandemics have changed the financial structures, healthcare systems, governments, and course of life too. Every 100 years, one big pandemic occurs. In 1918, it was

Influenza, in 1974-Small pox, 1981- HIV AIDS, 1994-Surat plague, 2009-Swine flu; in 2020 it is COVID 19.

Although the bodily impact of this disease is the same on every human being, the effect is not the same. It varies according to gender, financial condition, and many other parameters.

According to the author of 'The "invisible" among the marginalized: Do gender and intersectionality matter in COVID 19 response?' written by Manisha Datta, Drishti Agarwal, and M. Shivkami, people- from the announcement of the first lockdown are facing many hardships. But the study of this impact should not be a general one. We need to study the problems faced by women (Gender-wise study) separately. 'All women', 'All marginalized people' –these types of words should be avoided. We need to have an intersectional approach to study the impact of COVID 19. Existing studies have often looked at diverse vulnerable population groups as "homogeneous units" which is an oversimplification of the situation. It also overlooks several layers and experiences of the impact, which is determined by the structure of power and social position. It results in missing out on the vulnerable, even among the marginalized from the ambit of uniform policy implementation.

Thus, an intersectional approach to studying the impact of COVID 19 is needed.

As per Lisa Bowleg, (We are not all in together: on COVID 19 Intersectionality and structural inequality) the term "We are all together in this" is not correct, as the phrase neglects an intersectional color and class blinding that function to obscure the structural inequalities that befall black and other marginalized who bear the harshest and most disproportionate brunt of COVID 19, and similar calamities.

In "Impact of COVID-19 pandemic on women: health, livelihood and domestic violence" written by Sana Malik, Khamsa Naeem, (2020) (Rep.) Sustainable development policy institute DOI-10.2307/resrep 24350, Pakistani researcher emphasized gender-based policy to overcome the vulnerabilities of women, and to protect them economically, psychologically and physically during post-pandemic period. Further, they add that there is an urgent need for a robust local government system to plan and deal with local issues and priorities at their doorstep.

The human rights perspective says (A virtual round table on COVID 19, and human rights watch researchers Joseph J Amon and

Margaret Wurth) the scale and severity of covid pandemic rise to the level of the public health threat that could justify restrictions on certain rights such as the imposition of quarantine or isolation limiting the freedom of movement. At the same time, careful attention to human rights such as non-discrimination, transparency, and respect for human dignity should be given, amidst the crisis.

Another article published by United Nations- "We are all in this together" says-

Protecting people's lives is the priority, and safeguarding livelihood is the way to do it. The virus is not discriminating against people, but its impact is doing so. Everybody has to be included in the decision-making process. The real threat is the virus, and not the people of any group, ethnicity, or race. Any one country is not able to beat the COVID 19 pandemic on its own. We have to work to be in a good position after the pandemic.

The Marxist perspective has a new angle to the story-

"Reading Marx in times of COVID 19" written by D. Raja in The Indian Express dated May 4, 2020, gives the quote by Engles "Engels pointed out "the poor districts in which the workers are crowded together are the breeding places of all those epidemics which from time to time afflict out towns. Cholera, typhus, typhoid fever, smallpox, and other ravaging diseases spared their germs in the pestilential air and the poisoned water of these working-class quarters"."

According to the author, the quote explains why the poor and migrant workers are facing unimaginable difficulties and becoming victims of the COVID19 pandemic.

The current pandemic has pushed the world economic order on a ventilator. One may assume that the pandemic is having a similar impact on everybody and that the government will take care of and fight for our concerns, but it is not the situation. Capitalists are more clever. In name of the fighting pandemic, capitalist governments are taking more control into their hands.

Reading Ambedkar in time of COVID-19, an article by Awanish Kumar, published in Economic and Political Weekly -on April 18, 2020, says that "Corona induced social distancing does not address the problem of deeper levels of distancing caused by "social isolation " and "social nausea"-two concepts used by Ambedkar"

American Journal of Economics 2020, 10(4)213-24, DOI:10.5923/jeconomics.20201004.2 The extend of COVID 19,

pandemic socio-economic impact of poverty: A global integrative multi-disciplinary review. "COVID 19 pandemic could return the poverty levels similar to those recorded 30 years ago."

The World Bank defines poverty as "an inability to achieve a minimum standard of living."(2018) consist of this fact, countries where there are a high number of people without a formal contract or depending on day-to-day self-employment; these people would suffer most in this pandemic.

COVID 19 risk to global food security David Laborde, Will Martin, Johan Swinnen, Rob Vos, Science, 31 July 2020, Vol.369, issue 6503, pp 500-502, Doi10.1126/Science.abc4765 says-

The pandemic has affected all four pillars of food security.

Availability (is the supply of food adequate?)

Access (can people obtain the food they need?)

Utilization (do people have enough intake of nutrients?)

Stability (Can people access food at all times?)

Food supply chain disruption, School closing under India's national lockdown resulted in a suspension of school feeding programs- one of the country's safety nets. Other safety nets are also affected, including community nutrition programs for pregnant women and lactating mothers. India has a patriarchal society. Women need to work harder than men to survive. They have an important role of care giver in family, which is considered as non economic activity. Due to covid this work has increased beyond limits.

Impact of Covid 19 on working women is more harmful. As the labor market is disrupted, women are losing jobs due to Covid pandemic. Domestic helpers are being fired to control the expenditure of family. According to U.N.WOMEN, Covid 19 has worsened the poverty globally.

“For last 22 years extreme poverty globally had been declining. Then came the covid 19 and with it, massive job loss shrinking economies and loss of livelihood particularly for women. Weakened social protection system has left many of poorest in society unprotected, with no safeguard to weather the storm.”

-Ginette Azcona, lead author of UN women’s latest report ‘From Insight to action’ and senior researcher and Data specialist.

Migrant Workers also faced many difficulties during lockdown. They are facing problems after the market is open. With no savings and low wages, they are suffering physically, mentally and economically.

It is safe to say that marginalized people, with no social security and savings, and poor strata of Indian society are hard hit by the secondary impact of Covid 19 Pandemic. Tribal people are not directly facing the disease, but secondary impact can be seen. Researchers are trying to figure out the actual situation and repercussions of this Pandemic.

Discussion:

Government of India's NDMA- (National Disaster Management Authority) on 24th March 2020, issued direction to pose various measures to avoid spread of Covid -19 Pandemic. This included nation wide locks down of 62 days with effect from 25th March 2020.During the lockdown only essential services and supplies and healthcare services were excluded. By 25th May 2020, the 62nd day of lockdown, India reported 138845 cases and 4021 deaths.

With the Lockdown GOI adopted the 'operation SHIELD' the acronym stands for-

S- Sealing of the immediate area from where cases were reported,
H- Home Quarantine
I- Isolation and Tracing of Contacts
E- Essential supplies delivered at doorstep
L- Local Sanitization and Disinfection
D- Door to door checking for symptomatic persons for isolation and Treatment. (26)(Dia.I)

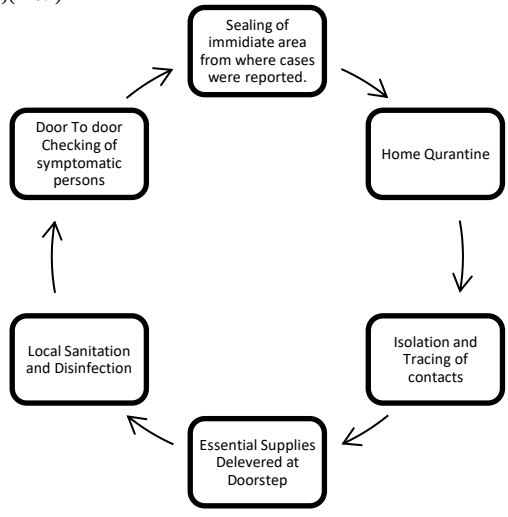

Graphical representation of SHIELD (Dia.I)

from COVID-19 pandemic. Across much of the world schools are closed where children are restricted to their homes. The associated uncertainty and anxiety is a real concern with disruptions to children's education as well as to their time with friends for exploration and play

Children are facing many hidden negative effects from COVID-19 pandemic. Across much of the world schools are closed where children are restricted to their homes. The associated uncertainty and anxiety is a real concern with disruptions to children's education as well as to their time with friends for exploration and play

Children are facing many hidden negative effects from COVID-19 pandemic. Across much of the world schools are closed where children are restricted to their homes. The associated uncertainty and anxiety is a real concern with disruptions to children's education as well as to their time with friends for exploration and play

Children are facing many hidden negative effects from COVID-19 pandemic. Across much of the world schools are closed where children are restricted to their homes. The associated uncertainty and anxiety is a real concern with disruptions to children's education as well as to their time with friends for exploration and play

Table 1

Various Phases of Lockdown and Unlock during Covid-19 Pandemic in India.(27)

Sr. No.	Phase	Start	End
1	Pre-Lockdown	1 Jan.2020	24 March 2020
2	Lockdown 1.0	25 March 2020	14 April 2020
3	Lockdown 2.0	15 April 2020	3 May 2020
4	Lockdown 3.0	4 May 2020	17 May 2020
5	Lockdown 4.0	18 May 2020	31 May 2020
6	Unlock 1.0	1 June 2020	30 June 2020
7	Unlock 2.0	1 July 2020	31 July 2020

(Dia. II)

References:

1. Amon, J., & Wurth, M. (2020). A Virtual Roundtable on COVID-19 and Human Rights with Human Rights Watch Researchers. *Health and Human Rights, 22*(1), 399-414. doi:10.2307/26923515

2. Basit, A. (2020). The COVID-19 Pandemic: An Opportunity for Terrorist Groups? *Counter Terrorist Trends and Analyses, 12*(3), 7-12. doi:10.2307/26915444.
3. Dutta, Manisha; Agarwal, Drishti; Shivkami, M The "invisible" among the marginalized: Do gender and intersectionality matter in the Covid-19 response?. Indian Journal of Medical Ethics, [S.l.], v. V, n. 4, p. 302-308, Aug. 2020. ISSN 0975-5691. Available at: <https://ijme.in/articles/the-invisible-among-the-marginalised-do-gender-and-intersectionality-matter-in-the-covid-19-response/>.Date accessed: 19 Mar. 2022.
4. Haleem, Abid & Javaid, Mohd & Vaishya, Raju. (2020). Effects of COVID 19 pandemic in daily life. Current Medicine Research and Practice. 10.1016/j.cmrp.2020.03.011.
5. Malik, S., & Naeem, K. (2020). (Rep). Sustainable Development Policy Institute. doi:10.2307/resrep24350
6. Wilson, David Sloan. (2000). Religious Groups and Homogeneous Merchant Groups as Adaptive Units: A Multilevel Evolutionary Perspective. Journal of Bioeconomics. 2. 271-273. 10.1023/A: 1012419901193.
7. Fort Worth Star-Telegram Collection, the University of Texas at Arlington Libraries. *Left to right, Margaret Phelan, Amon G. Carter, and Edwin T. Phillips*. (1951). Retrieved from https://library.uta.edu/digitalgallery/img/20102383
8. Book- 'The corona Virus: What you need to know about the global pandemic' by Dr. Swapneil Parikh, Maherra Desai,&Dr. Rajendra Parikh, published by Penguin Random House India.
9. Sonali Baliram Wakharde JSTOR "Impact of covid19 pandemic on women: health livelihood and domestic violence"
10. Economic and Political Weekly: Vol. 56, Issue No. 11, 13 Mar, 2021
11. "social worlds" A Dictionary of Sociology. . Retrieved February 28, 2022 from Encyclopedia.com: https://www.encyclopedia.com/social-sciences/dictionaries-thesauruses-pictures-and-press-releases/social-worlds
12. Nickerson, C. (2021, Oct 12). *Symbolic interactionism theory & examples*. Simply Psychology. www.simplypsychology.org/symbolic-interaction-theory.html

13. Article by Ginette Azcona https://www.unwomen.org/en/news/stories/2020/9/feature-covid-19-economic-impacts-on-women. Wednesday, 16 September 2020.
14. BROOKLINGS 'Why has Covid 19 been especially harmful for working women' by Nicole Bateman and Martha Ross(October 2020)
15. Reginal Lockdown Policies and Covid 19 Transmission In India by Arushi Kalra, Paul Novosad in EPW April2,2022 Vol. LVII No. 14.
16. "Reading Marx in times of Covid-19", by D. Raja, The Indian Express May4,2020
17. "We are all in this together" April 2020 United Nations.
18. Nicola Aksafi, Z. Soherabi C., Agha M.,& Agha R.,(2020) "he Socio-economic Implications of Corona Virus Pandemic".
19. Covid 19, Risk to global Food Security, Dravid Laborde, Will Martin, Johan Swinnen, Rob Vos.Science,31 July 2020, Vol.369, Issue 6503,PP500-502, DOI-10.1126/Science.abc4765
20. American Journal of Economics 2020, 10(4) 213-224 DOI: 10.5923 / j economics. 20201004.2
21. "We're Not All In This Together: On Covid-19, Intersectionality and Structural Inequility" by Lisa Bowleg, June 10,2020.
22. "The 'invisible' among the Marginalized: Do Gender and Intersectionality Matter in the Covid -19 Response?" Manisha Datta, Drishti Agarwal, M. Shivkami.
23. Amon.J.,& Wurth,M.,(2020) "A Virtual Roundtable…Health And Human Rights" 22(1)399-414. DOI:10.2307/26923515.
24. "Covid-19: Public Health is a Question of National Security," Kirti Kapoor, Shobha Suri (India)(2020) Challenges to Global governance amid the Covid-19 Pandemic(PP36-38Rep) Council on Foreign Relations DOI 10.2307/rep 24934.13.
25. Impact of covid-19 Pandemic on Women:Health livelihood & domestic violence." Sana Malik, Khamsa Naeem(2020)(Rep) Sustainable Development Policy Institute DOI: 10.2307/resrep 24350s
26. Kant S. 'The Covid 19 Pandemic: Impact on Primary and Secondary healthcare in India' Natimed J India 2020:33:193-194 DOI:10.4103/090-258X.316251

27. Soni P. ‘Effects of Covid -19 Lockdown Phases in India: an Atmospheric Perspective, Env. Dev. Sustain. 2021;23(8)12044-12055 DOI: 10.1007/s10668-020-01156-4 E Pub2021 Jan6 PMID-3342429;PMC77853.98

CHAPTER 3
IMPACT OF COVID-19 ON TEACHING LEARNING PROCESS

Dr. Rizwana Siddiqui
Assistant Professor, Faculty of Education Department, S.S.J University, Almora

Saroj Joshi
Assistant Professor, Guest faculty of Education Department, S.S.J. University, Almora

Abstract

Corona virus is affecting the whole world today. About 190 countries around the world have been affected by this and the economy is struggling badly, we are slowly moving towards a global recession. Due to this virus, how many countries there has been a situation of lockdown and curfew? Along with the industry, social, economic sector, another important sector is being badly affected by this virus, that of education, in a country with a large and dense population like India, the situation is still positive and the Prime Minister of India, respected Narendra Modi ji .To save the country from this epidemic, many concrete steps have been taken. Whether primary, secondary or higher education students are badly affected, for which solution at school level and big institutions like IITs, IIMs, central and state level universities have started online. Have tried our best to cooperate with our students by using the education system. But this work could not be completed completely in a young country like India, in which the number of students is so high, this situation is worrying. Its impact on higher education can be seen in almost every part. Students who are currently in the final year of higher education, especially technical and vocational education, their placement is not being done at the right time, the admission process of various types of educational and vocational courses is not on time, courses are not completed on time, internship. Due to all these reasons, students and their families have come in a state of mental stress. The Government of India and the

governments of all the states have taken several steps to get out of this problem. E-content is being provided to the students through various online mediums, as well as notes and other courses related to many apps and websites. Materials are being given free of cost, which is getting a lot of benefit Government, Institutions, Society, Industry, Leaders and students and parents themselves to make a united effort to overcome these problems of learning as well as to explore alternatives to examinations for which online projects, assignments can prove to be good options. They can be brought out of stress by giving projects, internships etc. It is also the responsibility of the parents to boost the morale of their children in this difficult time and motivate them for positivity.

Key words *- covid-19, teaching, learning, pandemic, online education.*

Introduction-

From time to time many epidemics have made their wrath in India. One of which is also an epidemic Covid-19. The effect of which has been seen in India in December 2019, but the first effect of this epidemic was revealed on 30 January 2020. Due to Corona, a situation of crisis has arisen in the whole of India. In such a situation, education has also not remained untouched by it. Teachers, students and curriculum, which are considered important parts of the teaching process, are the pivot of all three education. One cannot learn without books and the teacher himself, similarly the teacher cannot spread his knowledge without books and without the student.

The corona pandemic has badly affected the learning teaching process as students and teachers cannot formally enter the school due to the closure of the school. That's why the students are not able to meet the teacher directly and neither are the teachers able to impart knowledge directly to the students. In such a situation, the condition of the teaching-learning process is pathetic. Because of which the whole. The student and teacher society is suffering.

A hymn written in the Rigveda is as follows:

> **"Aa no bhadra kratvo yant, vishwatha"**
> Means that the welfare and wisdom of thoughts come from all sides for all of us.

Teaching learning is the biggest challenge before us today. By accepting this challenge and applying our knowledge continuously, we can overcome this challenge because teaching and learning are continuous processes. These are the processes which can uplift the world even in adverse circumstances. Therefore, it is imperative to keep them going uninterrupted. But the matter is of the present time when the corona virus is sitting ready to eat the people of India spreading its mouth like sursa.

Our India is a developing country, where the geographical conditions of different places are different and there are variations in the living conditions of the person according to the place. In such a situation, creating a uniform teaching-learning structure in the states is a challenging task in itself, but I believe that the teacher and the student should be optimistic. Due to the Corona virus epidemic, due to the instructions of the Central Government and the State Governments, the closure of schools, colleges, universities, etc. And at the same time there is an anticipated challenge before the teachers, learners and parents. This exercise of discussion and analysis on all those aspects helps us to set new goals and objectives in education and move forward in the difficult situation of this COVID-19 lockdown.

The corona pandemic has forced everyone to seriously consider learning tools and other resources for the learning process. The truth is that this odd situation is a good opportunity to assess your potential and opportunities and keep you alert for the new time. Educational institutions across the country have been closed for several months and parents are worried about their children's education. Most of the parents have forced their children to take online classes. But the student is not able to learn through online classes, only online classes have become the only means of fulfillment. These classes are having more impact only on the urban area. There are neither so many facilities nor internet network in the rural area, due to which the student is not able to learn anything. Due to the use of more mobiles and computers, the eyes of the students are also getting spoiled, due to which they have to look for the way to the hospital.

On the other hand we can say that we all Indians are optimistic in nature. We all do our work on the basis of this saying **"Param Sukham"**. Being optimistic is absolutely necessary for mankind because if there is hope, then there is breath. This leads to the

emergence of a positive attitude. For the first time, teachers, parents and students have thought about the purpose of education in a new way and raised some useful and relevant issues. This unprecedented situation has prepared them to pay serious attention, it is only fair that human curiosity is compelled to think about how, when everything will be fine, that is, the positive effect of this lockdown on our education system. How will it fall and how will positive changes be seen even after getting relief in this situation.

Teachers teaching in schools in many cities and metros of the country tell that they use online mediums for teaching work and helping our students to utilize the lockdown period through digital means. Regarding the schools established in rural areas and the teachers working in them, we have to think that there is no system of computer and internet, they also lack the primary materials of learning, along with this our present education system is suppressed by many weaknesses in which Inadequate infrastructure, lack of innovation, untrained teachers, uncontrolled examination centers and lack of proper evaluation system, etc. These weaknesses act as a hindrance in the situation of lockdown at the time of Kovid-19, the wall of China in front of the state and the country and the feet of Angad. Standing firm as.

At present, governments have directed their schools, colleges and universities to complete the teaching tasks through remote learning, distance learning, home learning, online learning, e-learning, webinars, etc. But some teachers and students say that it has proved to be impractical in some cases because most of the students do not have this facility and this online system is a big challenge for the future because the country is unable to afford the education through online medium and this education generates nobility among the students. This can also lead to division because if the network of the student goes missing from his computer while studying online, he will be able to take incomplete classes. Either will not be able to take the class at all, which can lead to a situation of inequality.

If we talk about today's India, then today's India is moving ahead in the technological world rather than in culture and culture. Today's generation is moving towards the present information technology by ignoring the old traditions, policies and customs.

In this adverse situation of COVID-19, we need to find strength in all our methodologies. Our goal is to make our strengths stronger. And find opportunities to reduce your weaknesses. Modern

generation should put more emphasis on e-learning as they are born in digital age and are familiar with computer, multimedia content and internet based activities at an early age. They like to be in online environment every now and then. Watch videos etc. on YouTube and like to connect through social media and speak the language of technology. This kind of generation needs to learn differently. We can attract the attention of the students by turning our classes towards e-learning.

If we look from an optimistic point of view, it would not be fair to say that the COVID-19 lockdown has given a constructive approach to the teachers. They can now create YouTube videos and materials such as PPT and articulate educational activities with their students through online mediums.

Most of the teachers are using video conferencing facilities like zoom, belugas meeting, Google meet etc. for online teaching. In this way he can continue the process of teaching advance during this lockdown period. Our India is still lagging behind many developing countries. Countries where more emphasis is being given on digital education, in those developed countries where eLearning is a popular tool, students have many facilities of various online mediums including Massive Open, MOOC etc. This tool helps teachers and students in their profession especially are helping. Learning while on the one hand enhances the autonomy of the students and on the other hand enables the students to acquire knowledge and skills based on the teachers.

If seen realistically, the teaching-learning process is a continuous process. In which students should always keep learning and teachers should always keep teaching. The period of COVID-19 lockdown is a period of doing something new creatively due to which teachers have to think and do in a new way. Only then the teacher's teaching work will be meaningful and the students will be able to achieve their goals appropriately, by awakening their inner self-knowledge in some innovative way and through some new techniques, students have to provide a new path in which society, state, nation But this crisis could not affect the education and our country should once again be honored with the title of Vishwaguru because if the students are not removed from such vortex by using the new education policy, then the future of the nation can be in grave danger. Is Somewhere in this, it becomes the full responsibility of all of us that at such a time, all of us should unite and provide proper

education to the students by taking the help of many online processes and contribute our bit for the benefit of the nation because in this war of Kovid-19, on one side all The doctors and policemen of India are risking their lives and performing their work efficiently, in such a situation how can we even the scholars back down because the teacher is known as a guide, guide, prophet etc. History is witness that the Gurus have made special contribution in nation building and even sacrificed their lives for the nation. Therefore, in the end, in my view, all of us together should not let the teaching process get affected in the odd circumstances of this covid-19 and move forward on our duty path so that our students and our nation can reach a strong peak and we can proudly We can say that we are true sons of Mother India.

Reference-

1. Bhagavad Geeta page number 210.
2. Rigveda page number 89.
3. world Health Organization (2020) corona virus (COVID-19) dashboard.
4. www.orfonline.org/research
5. http://hi.wikipedia.org
6. https://e-gyan-vigyan.com

CHAPTER 4
CORONA PANDEMIC AND WORLD OF EDUCATION

Dr. Alok Kumar Singh
Assistant Professor
Department of Hindi
Maa Mansha Devi Mahavidyalaya, Chandauli

Abstract
Most of the educational institutions in India have been following the traditional education system. Traditional methods provide for classroom study in the physical presence of the teacher and the students. For the past few years, some institutes are also pushing the opportunity for formal academic programs online. The Government of India had announced a lockdown before 25 March 2020 intending to control the infection of the corona epidemic. Almost every activity could have been possible with the help of digital media except only essential and health-related services. This stir forced all the educational institutions in the country to adopt online methods overnight. The danger of closure of educational institutions which were not ready to come on the digital platform was also clearly visible. Online learning has its benefits, but when it is adopted with due consideration and complete institutional preparation. In today's time, the whole world is plagued by an epidemic like Covid 19. Covid 19 has affected the entire life of mankind, due to which the education world has also been completely affected. The pandemic caused a complete shutdown of the education world by imposing a sudden lockdown, affecting the lives of millions of students. Online education was arranged so that the education system should not be completely disrupted for a long time. It presented both challenges and opportunities before the academic world. Teachers and students are trying to make online education successful. The place of the classroom has been replaced by home, and the desk, chair, board, pencil, etc. have been replaced by laptops and mobiles. The biggest problem is connectivity and electricity, especially the children living in backward rural areas are facing many challenges, for which solutions have to be found. It is true that while Covid 19 has given challenges, it has also given a new platform to carry on the activities

of the educational system through technology. At present, an online education system is our need, but it should not be considered a replacement for the formal education system. There are still many challenges facing the online education system because we are still in the learning stage. There are still some challenges in online learning, by finding solutions, online education can be made easy and simple to some extent.

Keywords: *Corona pandemic, online learning, education, technology etc.*

Due to the global spread of the coronavirus and infecting millions of people, almost every country has had to take a break in its education system. The scenario of the education system changed during the outbreak of Corona. In the Corona period, the sudden closure of educational institutions, and the introduction and prevalence of online classes, became the main reason for students affected by socio-economic factors to distance themselves from the educational process. Its impact can be seen in a developing country like India. In India too, in the event of a lockdown, schools were physically closed and replaced by online learning. It was a forced system where teaching got converted into a virtual mode. The priority of the government was to keep the health system smoothly and to keep as many citizens of the country as possible free from coronavirus infection. This was such a challenge for the government where they had to protect the body, mind, and health of the citizens from the virus and also continue with school and office activities. If the intensity of infection does not increase in the country and the economy should also remain smoothly, other options were explored along with masks, lockdown, and social distance in such extreme circumstances. In these circumstances, the decision to work from home was considered one of the most appropriate solutions among the available solutions. There should be no interference in the studies of the students so that education was continued in online mode from primary school to higher educational institutions. The situation was so dire that there was not only time to think and test much, not even to investigate whether online education was a better option or not. It was also not taken into account whether all the students would have the necessary gadgets and internet access for this. The defenses put in place to handle the faltering system may not have worked well for

all students. Most of the students studying in government schools have been seen prominently in the absence of online gadgets like smartphones or laptops. In times of pandemic, where parents are struggling for a living, it is impossible to mobilize resources for online learning. It was ensured that teaching continued during the Emergency but neither the teachers nor the students were prepared for such a teaching process. Efforts were on and the process of struggle was going on simultaneously. Billions of students not only in India but in the world have been badly affected by this system. The students who also had the facility online were also unhappy with this changing situation. Continuous sitting in front of a screen in a closed room and not having any physical interaction with outsiders emerged as factors of mental and emotional stress. Certainly, this arrangement came as a concern and challenge for both the teacher and the student as earlier in the school the presence of the students in front of the teacher was considered an important point i.e., the teaching process was prevalent in a face-to-face form. In some circumstances, there is also a provision for open school or distance education, but they also have their dimensions and limitations. In distance learning, students are provided with the facility to study anytime, anywhere, and at one's pace. Advances in technology and the introduction of e-learning have facilitated distance education. There is also the opportunity to have a physical meeting with the instructor for troubleshooting. Not every day, but some time frame is set where students can talk, discuss and communicate with their teacher.

Appropriate and relevant pedagogy in online learning also depends on how deep the teacher and students have access and expertise, in communication technology. There are a ton of educational tools and learning forums online right now, but is the use as straightforward as it claims? The answer is coming in no because teachers and students in the country and abroad are facing various kinds of problems. Murgtrot (2020) has pointed out problems such as affordability, flexibility, willingness to learn lifelong and educational policy in online learning. Access to digital equipment and the Internet has become an important issue. The inability of online learning tools by a large section of students puts a question mark on the success and popularity of online learning. Along with the unavailability of practical challenges, understanding the overall working style of online learning is also another important aspect. If both the parents are busy in their respective work areas then who and how can

properly explain the working method of digital devices to the students sitting at home? It is also not necessary that parents or siblings at home can also provide proper guidance regarding online learning (Dhavan, 2020). Before Corona, there was never any special discussion on how to study and teach online. This is probably the reason why there has been a lack of motivation towards it in the teaching community. Another important point that has come out of this whole process is towards the students who were already indifferent toward education. Students experiencing learning difficulties require relatively more supervision and guidance. Lack of physical consultation with teachers and the non-availability of tools at the time of teaching are both major factors in the declining level of educational understanding (Syntema, 2020). The assessment of the students has also been done online only. In the academic session 2020-21, there has been uncertainty and confusion among parents, teachers, and students. Experts from the education and technical world tried their best that the interest of the students should not be affected in any way. Giving the priority to health, the Government of India also postponed the board examinations of classes X and XII. There is no doubt that these publicly postponed examinations may have given students a sense of ease, but it is difficult to be sure how strong the validity and reliability of the internal assessment criteria would have been.

Along with education, the physical and mental activities of the students are also taken care of in schools. Now, along with education in online teaching, yoga, sports, painting, dance, and other creative work is also being done through e-learning. This has impaired the potential for social skills and awareness. There is a negative impact on the students socially, psychologically, and economically. Sitting in front of a screen for every single activity has also increased the risk of online abuse. Presentation of harmful and violent material to students has increased the incidence of crimes such as cyberbullying. Due to Corona, the compulsion to sit at home and participate in all activities while staying at home has left students relying on digital media. The problem is that students lack the proper knowledge and skills on how to securely access their knowledge online. Students of all ages are vulnerable. Despite being in the safe confines of homes, students have come under the ambit of digital menace which has become a matter of concern for society.

Along with the challenges and difficulties that have come during the time of the pandemic, online learning has also brought many opportunities. Working parents rarely got time to spend time with their children. Either the children were busy with their studies and means of leisure and or the parents used to come from their respective offices and get busy with the household chores. The children got an opportunity to work with their parents and spend effective time with them during the lockdown period. Both parents and students understood the process of online learning simultaneously. Sometimes the children were teaching the elders and sometimes they were exploring new techniques and methods for the older children. This search process was linked to all dimensions of the online platform. In the coming times, when there will be no corona epidemic and teaching online will also not be like this, this kind of exploration should continue. Provide students with additional resources and technical information to keep up with the latest technological developments. The creative aspects of teachers to overcome the limitations of virtual learning are undeniable. Teachers' readiness for effective teaching with each other's cooperation and innovative treatments was visible. In a short period, with dedication and hard work, parents and teachers have understood and adopted various tools to make online learning effective. The biggest organizations also offer free software to make the learning environment engaging and interactive. So that there is no financial burden on anyone and the learning process goes on smoothly. In times of crisis, teachers and students got an opportunity to read and teach in a transformative manner. The learning strategies and skills during this period will prove useful in future life and this spirit of learning should continue. Efforts should be maintained to strengthen the teaching process innovatively even in normal classroom teaching.

Coronavirus is a tragedy, which the whole society is currently battling. There is hardly any section of society that has not been affected by its influence. The year 2020 began with a rare epidemic in the century. During this, we saw that the health workers worked relentlessly at the forefront of saving human life from the coronavirus. Although this epidemic shook the economy and social sector, the central government and state governments intervened from time to time and took measures to control the epidemic. Through those measures, we have won this war to some extent, but every country is trying to make itself aware of these potential dangers, while

human priorities have changed after the coronavirus. Most countries of the world have the technology to avoid missiles, but there is no option to avoid viruses like Corona. All the developed countries of the world are finding themselves helpless in front of it. Our society has focused most of its attention and energy on improving facilities and producing them, rather than on how they are produced. Therefore, today most of society is dependent on other societies for the fulfillment of its basic needs. This time tells us that as a community we need to make ourselves self-reliant in some subjects, we cannot depend on others for every need of ours. Due to this disease, the families who were dependent on others for their cleanliness and food arrangements are getting more worried about it. In such times, education was also not untouched by it.

The Covid 19 lockdown had a huge impact on primary and secondary education. Earlier it seemed that this tragedy of Corona was for some time, but a long time of the children passed between the walls of the house. Everyone was very worried about the education of children due to the Corona epidemic. About 250 million children in India study in 15.5 lakh schools from class I to XII, of which 70% are government schools. To protect against Covid-19 around the world, gatherings of people have been banned anywhere, and apparently, schools and Anganwadis were also closed. After the closure of the schools, the children, their parents, teachers, administration, etc. started facing a new question how will the children learn now? Now how will we teach the children? Apart from this, there is another important question what will be the physical and mental impact of this lockdown on the children? The process of socialization has been the most affected by this whole tragedy, due to which there have been many upheavals in society, but senior citizens and children are the most affected by this tragedy. The child needs a free and dynamic environment in the early stages, he is confined to the walls of the house. Children imprisoned in homes, anyway, also struggled with many types of psychological pressures. It is an inhuman act to make these children sit in front of the screen for five hours wearing school clothes on it. It is the responsibility of the Child Rights Commission as well as the Ministry of Education to intervene in it and take appropriate decisions.

By making the children of primary and nursery who need other people to do many of their work, this education system is considering it as the fulfillment of its duty by making them sit in front of the

screen. Children who have gone to new classes and who are hearing the name of the school for the first time are all watching the school and classes online which is a really disturbing phenomenon. There has been a strong response from the government and non-government organizations. As the lockdown left most people confined to their homes, there was a storm of trying out the online medium. Some started teaching lessons using this medium, some started telling stories and some started playing math games. The one who used to roam around the parks and around fearlessly from all the troubles of childhood has been guarded by Covid-19. When the outbreak of Covid had just started, the schools were closed at the same time, but by the time of April, new e-mails and calls started coming from the schools that now the studies will be online. Today, when all the countries of the world are concerned about the mental health of their children, our education system is concerned about the employment and benefits of teachers. Elementary education is the most neglected sector in our education system because investment made in this sector takes time to yield results, but all the countries of the world pay attention to long-term investment in primary education because it is an area that lays the foundation for the future. But it does not seem to be happening in our country. The Covid 19 lockdown has had a massive impact on Indian higher education. The impact of the lockdown on Indian higher education is affecting the whole world today. About 190 countries around the world have been affected by this and the economy is struggling badly, we are slowly moving towards a global recession. Due to this virus, in how many countries there was a situation of lockdown and curfew? Industry, social, and economic sectors as well as other important higher education sectors are being badly affected by this virus. Be it primary, secondary, or higher education, the studies of students have been badly affected by the lockdown. Some big institutes like IITs, IIMs, and others have tried their best to support their students by using online learning systems but such institutes are few in number.

The Government of India and the governments of all the states have also taken many steps in this direction, providing e-content to the students through various online mediums. UGC and other regional boards are providing course-related notes and other material free of cost on many apps and websites, which is of great benefit. The education ministries of the states and the ministry of human resource and development at the center, which have been continuously

responding to higher education, seem to be not as serious about primary school children and their concerns as they are on other subjects. There can be many reasons for this, such as university and senior secondary students react to policies through many social media platforms, but students of primary classes can either express their views through their parents. Or through the teacher. The government should also make a comprehensive policy for schools so that those schools which are not able to bear the economic pressures get some help. Many schools will not be able to cope with the economic conditions associated with covid 19 for a long time. For them, the Human States, Ministry of Education, and Ministry of Human Resources should make some plans. This is a time that can be used to reform and innovate the entire education system. But the sad thing is that most of the constituents of education are using this time to find shortcuts that are unfortunate for future education. The government should seriously consider the mental health of children and try to reduce or stop this farce of online education.

There is a dire need for better education in lockdown. Education imparts life skills to the young generation and also inspires them to move ahead in life. Along with this, it also plays an important role in making the common people aware of their rights to good governance. Education can also prove to help achieve mature democracy and achieve the goal of minimum government and maximum governance. Educating women can prove to be the key to removing many social evils in India like the dowry system, female feticide, workplace harassment, etc. By educating women, they can also be made aware of their rights. Skill-based education can ensure the role of common people in India's economic, social and political development by skilling them. At the same time, education can also help people to create jobs. Resources are very limited at the global level and therefore their sustainable use is very necessary, for this purpose, the young generation can be taught the sustainable use of limited resources of education.

At one time the number of people infected with the Covid-19 virus was increasing continuously. There is hardly any country in the world that has been spared from the wrath of this pandemic. Despite all the projections, the inability of all countries to fight it is continuously visible. Countries that initially showed negligence are most affected by this epidemic today. The biggest question we face today is whether human civilization is prepared for such upcoming

crises. Some time ago, when we talked about the potential threats to human civilization, we were faced with the threat of climate change and nuclear weapons. Basic education not only makes us acquainted with the main concerns of education but also makes us aware of other dimensions of social life. Gandhiji believed that a person should get all kinds of education at the elementary level. He should have all kinds of experience from farming to woodworking, a person should have both practice and realization of labor only then he can understand the value of labor. Gandhiji always used to say that the villages of India should be self-sufficient for their basic needs. Today, when there is a shortage of various necessities all over the world and China is making unreasonable bargains to meet these needs. In such a situation, it is worth remembering Gandhiji, who insisted on developing the village as a republic. He believed that the basic needs of a person should be met in his own home.

Undoubtedly, Covid 19 has given challenges to the entire human society today and has also provided an opportunity to learn something new. We have to find solutions to these challenges only. Where there are problems, there are also solutions. The online learning method is the need of the hour. Technological nuances can be learned by gaining proficiency in online teaching methods. The process of teaching-learning should be made easy and simple so that the maximum number of students can be benefited. In particular, new sources should be found and developed for higher education so that students, researchers, and teachers can also be benefited. Perhaps by making some changes, new options can be found in the online education system and the Indian education system can be moved towards development. But we should also not forget that in a poor country like India and students living in backward areas, where students do not have enough food, how will the students there make arrangements for internet, smartphone, laptop, connectivity, etc? If online education is to be made attractive and profitable, then digital devices will have to be arranged for the backward and poor students of Indian society. Online education can be an effective teaching method in present times, but it cannot be a replacement for the classroom teaching method. It should be taken as an alternative education only. In the classroom teaching method, not only the education given to the students but an environment is given where the all-around development of the students can take place. Every tragedy and calamity teaches us something and this disaster also teaches us

that we should develop our country keeping in mind the needs and indigenous ideas of our people. This pandemic teaches us that our education system should be tailored to the needs of our society and community, and not just to meet global needs. It is time to review all those ideals and values and policy questions to see how useful they are to our society. Every situation brings a lesson, this pandemic has brought a lesson not only for India but for the whole world and that lesson is that as a society we need to be self-reliant for basic needs, and for this, we need an indigenous education system, which can teach us self-reliance.

The flexibility, accessibility, and easy-to-use, pedagogy of online learning coupled with lifelong teaching speak of its strengths, which is true to a large extent. If the rural households have good internet speed and the necessary equipment is easily available, then certainly education in remote areas can benefit more and more people with less institutional cost. At present, online learning has emerged as a panacea in times of crisis. If there is a change in education due to an epidemic or other reasons, then it is necessary to change the approach and policies of the government accordingly. The nature of teaching that has changed after Covid19 and March 2020 makes it clear that instructional objectives, pedagogical methods, and assessment methods must also change according to online learning. It cannot go according to the traditional method of teaching. The kind of online learning that has emerged due to Covid19 has been effective to some extent in the context of continuing education. In teaching, the help of changing circumstances and new resources is effective only when the adjustment is made with promptness. Educated people become the pillars of progress and development for the country.

References:

1. Balloran, I. T. (2020). Knowledge, Attitodes, Anxiety and Coping Strategies of Students Addressing COVID-19 Pandemic. Journal of Loss and Trauma
2. Bao, Wei. (2020) COVID-19 and online teaching in higher education: A case study of Peking University. Human behavior and emerging technologies
3. Dhawan, Shivani. (2020). Online Learning: A Panacea in the Time of COVID-19 Crisis. Journal of Educational Technology Systems

4. Goplani Mala and Gupta Akash (2020). Impact of Corona Virus- 2019 on Educational Institutions in India. The Online Journal of Distance Education and E-learning
5. Murgatrot, S. (2020). COVID-49 and Online Learning, Alberta, Canada.
6. Pokharel Sumitra and Chhetri Roshan (2024). A Literature Review on the Impact of COVID-19 Pandemic on Teaching and Learning. Higher Education for the Future
7. Sintema, Edgar John (2020). Effect of COVID-19 on the performance of Grade 12 students: applications for STEM education. Eurasia Journal of Mathematics, Science and Technology Education

CHAPTER 5

COVID-19: AN UNSEEN ENEMY OF THE WORLD

Dr. Neeta Kapoor

Assistant Professor, Human development and family studies, Institute of home science, Dr. B. R. Ambedkar University, Agra

Sparsh Kapoor

Student, ST. Peter's College, Agra.

Effect of corona – Such a pandemic period

On 28th of December 20190 scientist studying on virus in the Wuhan lab aur virus found a new type of virus in there microscopes. This type of virus seen before medical history . the scientist were shocked to see it because it's body some now matched to the SARS- corona virus which spread from China in the year 2002 - 2003. This virus is the new member of SARS coronavirus family. This virus is named as Novel corona virus, SARS- cov2, COVID- 19.

Scientist believe that the virus should have come from the wet market in Wuhan. In this market many animals such as dogs, snakes, rats etc.were being sold as food. Scientists believe that the covid-19 virus come from bats and snakes and from these animal the novel corona virus got transmitted in the humans.

After China it spread to Italy. On 4th of March 2020, it come to India. It also spread to the US, France, Spain, Iran, Germany, Japan etc. Celebrities like Kanika Kapoor, A Bollywood's singer; Boris Johnson the prime minister of UK; Prince Charles of wales; also got infected by the covid-19 . On 18th of March 2020 the total number of covid 19 patients all over India was 289 and the number of active causes were 236.

On 19th of March 2020 hournable prime minister Mr Narendra Modi addressed the nation about Covid -19. He requested the nation to remain in curfew. On 22 of March 2020, this curfew was named "Janta curfew". He also requested to nation to clap or ring Bell or

bang dishes for 5 mins. at 5:00 p.m of the doctors, health workers administrated staff and our cleanness staff.

Today's leter of the 'Janta curfew hournable prime minister again addressed the mission and announced a complete lock down in the nation for 21 days. On 3rd of April 2020 hournable prime minister addressed the nation for the 3rd time and requested the nation to switch off the lights of their houses and light the diyas ,candle, torch flashlight of there phones for a 9 minutes at 9:00 p.m. on 5th April 2020 to symbolized the nation unity agent the covid-19.

On 17th April 2020 that total number of covid-19 patient in India was 13387 and over 1200 people died. Many countries such as us, Brazil Russia and also the world health organisation (WHO) claim that hydroxy choroquine. A type of drug used to care malayria is care to covid- 19 patients. Some doctors in New York city, , tested plasma therapy on some patients of covid -19. In this therapy plasma containing antibodies which were produced in the body of patients who has been caused from covid-19 is injected in to the body of an active patients of covid-19 it was successful.

A park from vaccine and medication of the Novel corona virus the world has started the practice of social distancing in many countries around the globe help and family welfare of India named this practice as social vaccine.

On 18th April 2020 216 026 cases of covid-19 have been confirmed around the globe and 146 088 people have lost their lives but more than 13000 people have recovered.

At this time we should take some precaution such as:

- Drinking warm water.
- Maintain social distancing.
- Wash your hand frequently.
- Avoid touching eyes nose and mouth
- Wear an 14-95mark/serqical mark/Home made mark/gamcha /hankey etc.
- Finally stay home and sefe life.

so at the end I pray to the all might to protected the world from this devil named SARS-CoV-2 (Covid-19).

CHAPTER 6
IMPACT OF THE COVID-19 PANDEMIC ON EDUCATION WORLD

Dr. Hasitkumar Nagariya*
Assistant Professor
Department of BMS
Hasitkumar.nagariya@thesiacollege.com

Mr. Mahesh Kandalkar*
Assistant Professor
Department of BBI
Mahesh.Kandalkar@thesiacollege.com
**The S.I.A. College of Higher Education, Dombivli (E), Tal. Kalyan, Dist. Thane, M.S., India*

The COVID-19 pandemic has affected educational systems in entire world, leading to the near-total closures of schools, universities and colleges. Due to this various social and economic issues such as student debt, digital learning, food security, and homelessness as well as access to childcare, health care, housing, internet, and disability services crippled. Disadvantaged children and their families have suffered interrupted learning, compromised nutrition and childcare problems.

Academic integrity

Many institutions turned to commercial services to take over exam proctoring, but due to this problems of student privacy, surveillance and mental health have raised. The lack of interaction between students and teacher also led students to feel less passionate about the integrity of their work.

Indian Situation

India declared a countrywide lock-down of schools and colleges on 16 March, 2020. The University Grants Commission asked universities have postponed exams until 31 March, 2020. The

board exams conducted by CBSE and ICSE boards were postponed until 31 March, 2020 at first and then later until July ,2020.

Consequences of school closures

1) Online learning:

Many schools across the world began conducting classes via software such as Zoom, Google Classroom, Microsoft Teams and/ or Google Meet. A framework to guide an education response to the COVID-19 pandemic for distance learning has been created by The Organization for Economic Co-operation and Development .

2) Unequal access to technology:

Several measures were taken to grant that students and teachers can have access to open educational resources. Special website to provide webinars, tips for online teaching and resources for teachers is created by The International Council for Open and Distance Education .

3) Childcare:

During Pandemic due to closure of schools parents had to play dual role as a caretaker & supervisor of young children for distance learning which gave rise to work-family conflicts. It was a difficult task for working parents to maintain balance between office work and children education. In majority of cases where parents has to go out for job and children were alone at home, some of the issues arise were risky behaviors, influence of peer group and material abuse.

4) Women in the workforce:

Majority of working women has to left their jobs in order to take care of their children during closure of schools and virtual learning .In schools where part time attendance was required or fully online learning was implemented, working parents were left with two options either sending the students to childcare or stop working when the children were learning through virtual platform. However during pandemic finding a child care also was a big task for parents as everything was close down and even if it was available economically, it was not a feasible option for many parents.

5) Nutrition and food insecurity:

For intellectual development and educational performance of children Nutrition plays a vital role .Many children in world depend on free or subsidized meals at schools. During closure of schools majority of children deprived from nutritious food .Families from low income group qualify for school meals sponsored by federal government and subsidized meal at the state level. In order to fulfil this requirement of our society schools need to remain open amid the COVID-19 crisis to provide meals to children qualifying for free or subsidized rate meals.

6) Student learning outcomes:

Students learning process has impacted due to school closures to a greater extent. Schooling provides an environment for growth & Development of child which is not possible when schools are closed .Underprivileged learners having limited educational opportunities are the real victims of school closure. When schools are closed parents required to provide learning facilities at home which is difficult for parents with limited education and resources.

7) Impact on formal education

During pandemic formal education has undergone a sea level change where in the beginning students, faculty, administrators and institutions were in confusion state. Delayed commencement of study periods was one issue, digitalization of curriculum started rapidly. Online learning started to a greater extent.

Online learning platforms:

1) Coursera

Coursera saw 59% revenue growth year over year, largely due to a pandemic-induced boom in digital learning. Total registered users in 2020 grew 65% over 2019.

2) Zoom

During pandemic when schools were closed the most popular used platform was Zoom. In 2020 it experienced tremendous growth in their revenue which was four times more than in the year 2019.

3) Google Classroom

When the schools were closed down during the pandemic a need for virtual classroom was at the peak. Google classroom was

one among many options for schools. It is integrated with chrome books which were used by many schools before pandemic.

Conclusion:

Covid-19 impacted the entire world, Education system also seen 360 degree change in teaching learning process. Everything has gone online, no doubt it has its own benefits such as time saving, wide coverage and potential use of resources .At the same time it has its own limitations such as absenteeism, lack of attention, no interaction as well as lack of control and supervision.

References

1) https://en.unesco.org/themes/education-emergencies/-school-closures
2) https://prism.ucalgary.ca/handle/1880/112293
3) https://doi.org/10.3390%2Fsu132212403
4) https://www.unicef.org/india/press-releases/covid-19-schools-more-168-million-children-globally-have-been-completely-closed
5) https://doi.org/10.1080%2F13523260.2020.1761749
6) https://www.npr.org/2020/03/06/812462913/6-ways-universities-are-responding-to-coronavirus
7) https://en.unesco.org/news/how-plan-distance-learning-solutions-during-temporary-schools-closures
8) https://oer4covid.oeru.org/initiatives/capacity-development/
9) https://www.cnbc.com/2021/03/05/coursera-files-for-ipo-amid-online-learning-boom-.html
10) https://www.vox.com/recode/21726260/zoom-microsoft-teams-video-conferencing-post-pandemic-coronavirus
11) https://www.bloombergquint.com/business/google-widens-lead-in-education-market-as-students-rush-online

CHAPTER 7

COVID-19 PANDEMIC AND REVITALISATION OF HIGHER EDUCATION IN INDIA

Anushree Pandey
Asst. Pro. (Sociology), Naveen Govt. Girls College, Takhatpur

Dr. Sapana Sharma Saraswat
Asst. Pro. (Sociology), Govt. V.Y.T PG Auto. College, Durg

Abstract

The Covid-19 pandemic has brought sudden breakdown in all spheres of life. Its impact can be seen in every sector of society including economy, infrastructure, development, health, relationship, education, and social well-being. The Covid-19 pandemic caused great crisis to humanity that presented tremendous challenges for survival and also forced to re-examine and re-evaluate the current ongoing situation. The covid-19 pandemic has forced to shut educational institutions for the long run because of intermittent lockdowns during the first, second and third waves of covid-19. It has affected millions of students worldwide. In response to this disastrous situation, educational institutions adopted alternatives to regulate teaching-learning through online learning platforms. The Covid-19 has forced the education system to shift from classroom teaching learning to E-learning and this resulted in the most significant E-learning movement in the history of education. The stalwart step taken by the Government of India with the help of New Education Policy 2020 to digitalize the education system for providing equality and holistic education to all across boundaries to enhance the quality of the education system in India as per the global trend, has turned up against the clock. This alternative for educating youth outside the classroom ecosystem has various impacts on changing scenarios of Higher Education.

Keywords*: Covid-19, education system , E-learning, New education policy 2020.*

Introduction

The covid-19 pandemic has spread havoc worldwide causing massive disruption and suffering to humanity. It has created long-lasting impact on every sphere of life. It was in March 2020 when World Health Organisation declared covid-19 a disastrous pandemic that has devastated and affected every segment of the population in the most vulnerable situation. As fast-moving globalization and technological advancement have altered the way of life and facilitated global interconnectedness therefore it has also emerged as the way of disease dissemination. The impact of COVID-19 is not only confined to physical damage but also included economic, mental and social, and educational damage in daily lives. It has deaccelerated whole societal activities and intermittent lockdown during the consecutive waves of the pandemic has presented severe damage and uncertainties regarding human life. In this situation, academic Institutions have seen major destruction as the covid-19 pandemic has had a devastating impact on the educational sector. According to UNESCO report, Covid-19 has affected about 68 % of the total world's student population. The problem caused by the Covid-19 pandemic and continuous lockdown imposed several restrictions causing the shutdown of the whole country and bringing it to its knees and also put halt to academic activities like teaching, learning, and examination in the classroom. On 24th March 2020, the Government of India announced a complete lockdown as a precautionary step to combat this situation because of which around 32 crore students suffered the academic loss.(Ladegaam, 2021) Within this period of sudden blindfolded disaster several schools, colleges and universities adopted innovative alternative to face to face teaching and shifted to online digitalized learning and teaching. There can be seen a paradigm shift in the academic field to the adoption of online platforms for delivering education. E-learning has revitalized the whole education system during the span timing and became a panacea for this global pandemic. The adoption and inculcation of E-Learning by higher education institutions at the outset of the covid-19 pandemic to rapidly using technology to regulate academic activities and teaching-learning could be considered an exemplary step. It has

brought most significant revolution of digitalization within the education system . The switch to online education has been in line with prevention of loss of studies of students. Alchemising education with technology and formation of collaborative strategies helped students to grasp lectures far from institutions at their there own places with the help of various platforms like google meet, google classroom. Zoom, Youtube, Webex , Microsoft team, through the Government of India's digital initiative like MOOC's , SWAYAM, DIKSHA, EPGPATHSHALA etc.(Mandke et al., 2021) This pandemic has provided the opportunity to all the students to go beyond their curriculum and learn practically through virtual learning. The New Education Policy 2020 unveiled by ministry of human resource development has also promoted extensive technological teaching and learning and also focuses on digitalisation and dematerialisation of education system to fulfil the goal of sustainable development of quality education to all. The Post Covid has seen drastic change in education system prior to COVID situation, though education system turned backed to traditional face to face teachings but their way of imparting education is now more based on online experiences like many Univerisities and institutions launches online courses to accommodate the idea of Choice based credit system launched by NEP 2020 and also prepare youths to be more technology friendly.

Impact on Education system

The Covid-19 pandemic has erupted during march 2020. The sudden announcement of lockdowns and rapid dissemination of this lethal disease, break-down of health machinery has took toll on the world causing illness and disparity among people and has gravely wounded the whole world. It has effected around 285 million of student in India. This pandemic came during march ,the most crucial time for academic institution because of final examinations , end term examination and assessment, this sudden outbreak has hindered the academic activities which resulted into irreversible teaching and learning crisis.(Tari, n.d.). Though it has closed the door of institutions but opened the door for plethora of opportunities , innovation ,exploration and experimentation in field of education making it more global , accessible , interesting, sustainable and holistic. Many academic institutions has adopted and worked rigorously to implement alternative of traditional face to face

teaching and inculcated within their curriculum AI based teaching-learning using virtual platforms for educating students and their assessment. According to Survey report of Ministry of Human Resource Development , Government of India, conducted on higher education it was observed that there are 993 univeristies , 39931 colleges and 1072 stand alone which contributed to higher education but still most of the population are deprived of quality education. But COVID-19 has pushed the education system to steer up with technological advancement. This immediate move towards digitalisation of education system has opened the way for revitalisation of curriculum in India. (Ramakrishna, 2021). Some of important impacts of COVID-19 on higher education in India are pointed below:

1. **Digitalisation of Higher education in India**

   The outbreak of COVID 19 pandemic has forced to shut people in their houses and put halt to all the activities. This has directly compelled academic institutions to postpone all the classes, examination and research activities. To prevent academic loss of students institutions took initiative to adopt online learning using various virtual platforms like google meet, zoom, Webex, youtube, Microsoft team and created technology driven ecosystem for students. It has completely revolutionised higher education system in India. This step is also fostered by The Government of India by introducing and promoting MOOCS, SWAYAM etc.

2. **Modification in teaching and assessment pattern in Higher education**

   The adoption of technology and digitailsation of education system has brought sea through changes in teaching and assessment pattern in higher education. Now a shift from teacher-centric approach to student centric approach can be seen in academic institution. Digital education enhances interactivity and provide interconnectedness giving opportunity to connect with teachers and students and access multitude of e-contents all over the world. In India New Education Policy 2020 has also emphasised on student- centric approach of teaching learning for their enhancing critical thinking.

3. **Easy accessibility of study material**

   E-learnings has been introduced in higher education during pandemic times, has helped student to access classes and study

materials according to their need and time. It leads to more of personalised learning. This also opened ways to get courses from universities of all over the world according to demand and need of students. E-learnings has become boon for the students of rural areas who can not afford expensive courses.

Digital Initiative by The Government of India

During this Covid-19 UGC and MHRD has made various arrangements and efforts to accelerate digitalisation with online repository, e-books, e-contents, MOOCs etc. There are several efforts made of government to provide quality education to students through virtual medium ;- (*Ministry of Education Has Taken Several Initiatives to Ensure Studies of School Going Children during COVID-19 Pandemic – Education Minister*, n.d.)

1. **MOOC-SWAYAM**- It is the world's largest online free E-learning platform. The "Study Webs of Active Learning for Young spiring Minds" an integrated platform for online courses, using Information Communication Technology and covering school (9^{th} to 12^{th}) to post graduate level.
2. **EPG PATHSHALA-** E-books of the resources developed by NCERT, SCERT, SIE's etc. It provides contents for Post graduates level.
3. **NEPTEL**- The National Programme on Technology Enhanced Learning is a platform to provide e-learning through online web courses to various streams of education. The main aim of this platform is to enhance the quality of education.
4. **National Digital Library** – It is a project develop to framework of virtual repository of learning resources with a single-window search facility. It is a repository of e-contents on multiple discipline for all kind of users like students, researchers, librarians, teachers and differently abled users which is developed by IIT Kharagpur.
5. **E-yantra**- It is a project and initiative by IIT Bombay to create next generation embedded system. It has 380 labs and benefitted more than 2400 institutions.
6. The University Grants Commission and its Inter University Centres (IUC)- Informational and Library Network (INFLIBNET) and Consortium for educational Communication (CEC) are part of this network. These platforms can be accessed by teacher, students and researchers.

7. **E-Sodhsindhu** - is a collection of e-journals, e-journal archives and e-books on long-term access basis. It has 10,000+ e-journals, 31,35,000+ e-books. It provides access to qualitative electronic resources including full-text, bibliographic and factual databases to academic institutions at a lower rate of subscription.(Jena, n.d.)

Conclusion

The Covid-19 has caused severe damage to humanity and also lead to academic loss due to exponential increase in covid cases and lockdowns. But this has also helped to revitalise the higher education in India. The adoption of online platforms for creative virtual ecosystem with the help of technology has helped to transform education system as per the global standard. The digitalisation of education leads to student centric approach of teaching and learning which induces among them holistic, critical and analytical thinking. As we all know that 21st century is the century of advancement and technology driven giant superpowers, so it is need of an hour to upgrade the learning system for youth to train them for future challenges and opportunities. In this regard digital initiatives by the government of India is stepping stone to enhance the collaborative teaching and promote globalised learning. The New Education Policy 2020 has also supported the digitalisation of education system for providing quality , holistic, accessible and equity based knowledge to all .

Reference

- Jena, P. K. (n.d.). *Impact of Covid-19 on higher education in India*. 5.
- Ladegaam, S. (2021, March 26). *Multi-faceted impact of COVID-19 on higher education in India*. The Siasat Daily. https://www.siasat.com/multi-faceted-impact-of-covid-19-on-higher-education-in-india-2115668/
- Mandke, P. P. V., President, V., & University, N. (2021, April 8). Higher Education in the Post-Pandemic World. *Higher Education Digest*. https://www.highereducationdigest.com/higher-education-in-the-post-pandemic-world/
- *Ministry of Education has taken several initiatives to ensure studies of school going children during COVID-19 pandemic – Education Minister*. (n.d.). Retrieved July 31, 2022, from

https://pib.gov.in/pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1655697

- Ramakrishna, D. K. (2021). *IMPACT OF COVID-19 ON HIGHER EDUCATION IN INDIA*. *10*(3), 7.
- Tari, M. S. (n.d.). *IMPACT OF COVID ON HIGHER EDUCATION IN INDIA*. *5*, 6.

CHAPTER 8
CORONA AND IT'S VACCINATION

Tabassum Qureshi
Assistant Professor, Zoology
Shaskiya Mahavidyalaya Sondwa, Alirajpur (M.P.)

Abstract:
Corona is a contagious viral disease that primarily attacks our respiratory system, and the World Health Organization (WHO) declared Corona as a global pandemic on March 11,2020. Globally, 564,340,789 people have succumbed to the coronavirus disease so far. Recently various mutant versions of corona virus such as Alpha, Beta, Gamma, Delta, omicron etc . have been identified. At this time, in addition to the control measures to prevent corona infection, it is also necessary to pay attention to its treatment and vaccination so that our country will be able to get free from this epidemic as soon as possible. The vaccination programme for COVID-19 started in India on January 16, 2021. Two vaccines, namely Covishield and covaxin, had been approved for emergency use in India at the start of the programme.

Keywords: *COVID, Corona, pandemic, immune system, respiratory system, herd immunity, vaccination, mutant, booster dose.*

Corona virus pandemic has affected almost every corner of our lives. The pandemic has brought global economies to a standstill, changed the way we live, work and interact with our loved ones, and the new challenges have also arisen in front of the health systems of all countries. Governments around the world have been forced to implement measures that impose harsh restrictions on human activities, such as lockdowns, to prevent the spread of corona virus. We all know that corona virus disease (COVID-19) is an infectious disease caused by a newly discovered corona virus that primarily attacks our respiratory system , and the World Health Organization (WHO) declared Corona as a global

pandemic on March 11, 2020. Globally, 564,340,789 people have succumbed to the coronavirus disease so far.

Talking about the symptoms of COVID-19, it affects different people in different ways. When a person is infected with the virus, it takes an average of 5-6 days for symptoms to appear, although it can take up to 14 days. Most infected people experience only mild symptoms of the disease , such as fever, dry cough and fatigue, and can recover without being hospitalized. In some cases, symptoms such as pain, sore throat, diarrhea, conjunctivitis, headache, loss of taste or smell, skin rash, or discoloration of fingers or toes are seen, while in severe cases, difficulty in breathing, chest Symptoms such as pain are seen.

Recently, various mutant versions of the corona virus such as Alpha, Beta, Gamma, Delta ,omicron etc . have been identified. So, in such a situation, it is necessary to be alert and to always follow precautionary measure even if we are vaccinated. Thus, to prevent infection and slow transmission of COVID-19, we should all regularly wash our hands with soap and water or clean them with an alcohol-based hand rub. We should avoid people who cough or sneeze. A distance of 1 meter, i.e., two yards, should be maintained. We should avoid touching our faces. We should stay at home if we feel unwell. Smoking and other activities that weaken the lungs should be avoided. Physical distancing should be practiced by avoiding unnecessary travel and staying away from large groups of people.

At this time, in addition to the control measures to prevent corona infection, it is also necessary to pay attention to its treatment and vaccination so that our country will be able to get free from this epidemic as soon as possible. So let us know what vaccination means after all.

Vaccination is a process in which a vaccine is introduced into the body, which helps the immune system to develop protection and immunity from a disease. Many vaccines contain pathogenic organisms such as viruses in a weakened state or in a living or dead state; many vaccines contain proteins or toxins derived from the pathogenic organism. Which stimulate the body's immune system and T cells by catalyzing the production of antibodies and help prevent infectious disease. When a sufficiently large percentage of the population is vaccinated, herd immunity develops. Herd immunity protects people who may be immune and cannot get vaccinated

because even a weakened version will harm them. Now as far as developing immunity against the coronavirus disease (COVID-19) is concerned, a large population of India has developed natural immunity against the SARS-COV-2 virus at this time.

However, current evidence suggests that this immunity, which is created by the presence of antibodies, may not be effective for long time. In comparison, the immunity made by T-cells remains effective for a longer time. That is why, in a statement issued by the Ministry of Science and Technology, it has been said that long-term and reliable protection against the corona virus can be obtained only through vaccination. The effectiveness of vaccination has been extensively studied and verified, and vaccination remains the most effective way to prevent infectious diseases such as the coronavirus disease (COVID-19).

The vaccination programme for COVID-19 started in India on January 16, 2021. Two vaccines had been approved for emergency use in India at the start of the programme, one of which is Covaxin. Which has been developed by Hyderabad-based Bharat Biotech International Limited in collaboration with the Indian Council of Medical Research (ICMR) and the National Institute of Virology (NIV). developed from a whole-virion inactivated Vero cell-derived technology. They contain dormant viruses, which cannot infect a person but can still teach the immune system to create defense mechanisms against active viruses. These traditional vaccines have been in use for decades now. There are also vaccines for some other diseases that are manufactured by using the same technology. These diseases are seasonal influenza, rabies and polio. The other vaccine for corona is Covishield, which has been developed by Oxford-AstraZeneca and is being manufactured by Serum Institute of India (SII). Covishield has been prepared by using Viral Vector Platform, which is a completely different technology. A chimpanzee adenovirus – ChAdOx1 – has been modified to be able to carry the COVID-19 spike protein into cells of humans. Well, this cold virus is basically unable to infect the receiver but can very well teach the immune system to devise a mechanism against such viruses.

Covaxin and Covishield are both intramuscular vaccines. There is no difference between the two vaccines in terms of dosage. Both of these are two-dose vaccines, which are administered at an interval of 28 days. Both vaccines can be stored at 2-8 degrees celsius, which is the temperature of a home refrigerator. As most vaccines in India are

kept at the same temperature range, both the vaccines best suited for Indian conditions. It also makes transportation and storage of both the vaccines easier. Both the vaccines are being administered free of cost in government health establishments. Coming to the efficacy of Covaxin vs CoviShield, both the vaccines have shown satisfactory results since the start of inoculation in India. As per global reports, the effectiveness of Covashield vaccine is around 90% and as per interim Phase III trial results, Covaxin has around 81 As far as side effects are concerned, after the vaccination, you may experience pain at the injection site. Some people also have side effects such as headache, joint pain, and fever may be felt. These side effects do not last long and usually go away within a day or two.

In April 2021, the Indian government approved the Russian Gamelaya's Sputnik –V vaccine (distributed locally by Dr Reddy's Laboratories) as the third vaccine, which began use in May 2021. Biological E's Corbevax and Novovax-SII's Covovax are other vaccines which are being used in India. Along with these vaccines, such as Pfizer, Zydus Cadila's ZyCoV-D, Moderna's Spikevax and Johnson & Johnson's (J&J) Ad26.COV2.S are approved in India.

Now if we talk about the outcome of vaccination programme in India, then about 93% of the eligible population (12+) has received at least one shot, and 83% of the eligible population (12+) is fully vaccinated. Current focus of Indian Government is on a booster dose of corona vaccine. A booster dose is a third shot of a Covid-19 vaccine. It is also known as precautionary dose and administered nine months after the second dose was given. On April 10, the Indian government approved booster doses at private centres for those aged 18 years and above.

As we can see, during the COVID 19 outbreak, We must all adhere to lockdown. Many of us have lost family members, friend and relatives. So now it has become our huge responsibility to get vaccinated and make other aware of getting the corona vaccination. We also have to follow the precautionary measure to break the chain of the corona virus and eradicate it completely from the world.

Reference :

1. https://en.m.wikipedia.org/wiki/COVID-19_vaccination_in_India.
2. https://www.mohfw.gov.in/
3. https://www.nejm.org/coronavirus

CHAPTER 9
EDUCATION AND COVID-19 IN INDIA: CHALLENGES AND IMPACTFUL EDUCATIONAL RECOURSE

Tamisha
Research Scholar, Department of Education
Central University of Rajasthan, Bandarsindri, Ajmer
Email Id: tamisha120394@gmail.com

Rajive Kumar
Associate Professor, Department of Education
Department of Education, N.A.S. College, Meerut

Abstract
Most of the educational institutions in India are using traditional methods of teaching and learning. Although many institutes have started using blended teaching-learning methods still lots of them are still using traditional teaching-learning methods. The sudden outbreak of the covid-19 pandemic has shaken the whole world, it has halted all the activities in India, especially in the field of education. As schools and institutes shut down it has given the opportunity to Educational Institutes to move to a new method of teaching and learning. Covid-19 has largely affected students across the Nations, especially in India the shutting down of schools and suddenly a huge shift from traditional to digital classrooms has not only increased the inequality among the learners but also due to the digital divide many children have dropped out of the school, it is not just the absence of learning but due to closure of schools, students have a long-lasting effect on health and nutrition. It is very important for us to ensure inclusive education for all.

Keywords: *Covid-19, Education, Institutions,*

Introduction

Suddenly a virus named covid-19 came into the world and changed everything. Due to this many changes came to our world. The impact of the pandemic was so strong that all the

educational institutions had to be closed. Even when the government tried to open the school for a few grades, the number of infections increased, resulting in schools closing again. Though schools closed, students started attending online classes, it was a good attempt but there were many unprivileged students who didn't own the gadgets, and it became a huge problem for them. Teachers also have their expertise when it came to classroom teaching and the use of blackboard and interactive classroom teaching methods, some of them were really new to this technology and it was really difficult for them to adopt this new method. Those children who are from privileged backgrounds got help from their parents but those students who didn't have any literate person in the family felt helpless during this period.

Many students lost many opportunities. Most students' recruitment got hampered and their placement process was also affected. Many students had to return from overseas due to the pandemic, which affected both their work and education.

Impact of covid-19 on Education

There was a huge fear when covid came, many parents were afraid to send their children out of their homes parents were also concerned about how this pandemic will affect the studies of their children. Children were enjoying their time at home playing all day but after some time when online learning was introduced to students, it was a huge change for them. Annual status of education report 2021 analyses the impact of covid-19 on learning it showed that there was an increase in the dependency on private tuition and there was an absence of access to smartphones to make up for the loss of learning especially in the economically weaker section special attention is required.

A sudden change

There was a sudden transition from a traditional classroom experience to a completely digital experience. However, we are able to have video and audio calls but still, it's totally different. However, it is a huge challenge for teachers as it is much more difficult to keep students attention and it requires a lot more effort to keep the effectiveness of an online classroom as compared to the traditional classroom. Interacting with students and having one to one conversations with students is much easier in a traditional classroom

and also keeping discipline in the classroom is much easier in a traditional classroom as compared to online classes. Online teaching mode is flexible and much more comfortable for students however it may not be sufficient for some of the students as they are not able to gain as much experience as they were able to gain during their physical classes also digital classrooms cannot replace practical classes though it is a huge step in the field of education to have online classes still it cannot fully accomplish the goals of education.

Digital Learning cannot replace real education

Covid-19 breakout has disrupted everything, especially education and examination across the country, to make sure that students do not miss out on their studies the school shifted to online mode. Many students have been stuck to their screens as the pandemic forced their teaching-learning process to be migrated online. This has made a huge difference in the education system. National Sample Survey 2017-18 showed that less than 15% of rural Indian households have internet where as 42% of urban households have internet. This shift to the e-Learning system has a huge question that whether it has helped students to learn or not. It has created a huge difference between the privileged and privileged section of society and if it is good for their social and emotional well-being or not.

The way that students have an emotional connection with their teacher. Computer or smartphone cannot take place of a teacher, as much as a student can learn in an environment with his peers he cannot learn in isolation students need field work and also in NCF 2005, we have seen that children should learn from their environment but that is not possible when it comes to online learning, no matter how convenient it is for the student to learn from their home it can never replace classroom.

Advantages of online learning

Online classes have become the new normal and it is going to stay with us for a long time the greatest benefit of online education is that students can learn in the safety of their homes and also, they don't have to get up and travel long distances to reach their schools. They can learn whenever they want to and wherever they want, as recorded lectures are also available for learners to learn if they miss any class.

Flexibility and convenience are one of the most important aspects when it comes to online education.

Flexibility: Online education provides flexibility to both learners and educators as they can set their own pace of teaching and learning. It can provide a balance between work and study.

More opportunities: The internet has a lot to teach us, there is an infinite number of skills that students can learn. Many universities and higher education institutes have come forward with online programs.

Cost-effective: There is a lesser investment of money as compared to opening the school or Institute. When students learn in online mode, they have to spend less on study material.

Comfort: Students have the choice to learn at their own pace and in any environment that is comfortable for them.

Disadvantages of online learning

Sitting for long hours in front of a laptop is not beneficial for students' health. It is very difficult to grab the attention of young learners for a long time if they are sitting on laptops or smartphones, innovative activities and new teaching methods should be used to keep learners' attention. One of the biggest disadvantages is that students become isolated, they do not have an opportunity to socialize. As we learn best through real-life experiences and during online classes, they are not getting that.

Affordability and availability: Online education was once seen as an alternative to education but seeing the scenario in India it wasn't successful. Online education is for the privileged society as those from the economically weaker section are not able to afford it. Availability and affordability pose huge barriers to online education.

Long-time exposure to the internet: Long-time exposure to the internet in young children may decrease their analytical thinking. it can impede their development of the thinking process. If students are able to Google everything they will not start thinking on their own.

Isolation in children: Due to the pandemic everything is happening online so children are not having any physical contact with anybody which is increasing the levels of isolation.

Initiatives taken by the government

E-pgpathshala: Ministry of Human Resource Development took and initiative to provide e-content for students.

Swayam: It is an integrated platform for online learning.

Neat: To make learning more personalized and customize as per the learner, it uses artificial intelligence.

Pragyata: A guideline on digital education named Pragyata was released by the Ministry of Human Resource and Development.

National Program on Technology Enhanced Learning: It is a project initiated by MHRD. It started in 2003. The aim is to provide web courses in Engineering, Science, and Management. It was started in seven IITs and the Indian Institute of Science, Bangalore.

Way Forward

It will be very important for the government to enact various strategies so that students can recover from the loss they have suffered during the pandemic and school closures after they returned to school. Such as health authorities should work very effectively so that schools can reopen safely. Foundation literacy and numeracy of each child should be assessed so that they can learn what they have missed during the online classes. Personalized intervention for children should be initiated access to digital devices and connectivity should be e expanded for children. Evaluation should be created so that students can put their mind toward analyzing the question and then answer it instead of just learning.

Conclusion

There is a need to make education a common good and only digital innovation can help us reach there. Covid-19 has shown us that there is so much inequality in our society as the way it impacts the education between the rich and the poor. Due to the closure of the school, we have to devise various methods of online teaching and learning.

We should try to give the opportunity to the less privileged section of society. Academic timetables and various collaboration should be done between school and parents so that more flexible timing and education can reach a large number of students. Online education should be more effective, quality should be focused more so that students don't have to set in a monotonous classroom with long sessions. Online learning education should be more about motivating students to learn so that students can be curious to learn more rather than complete their syllabus.

References

1. Covid-19 impact on education—Southasiadisasters. Net issue no. 199, april 2022—India | reliefweb. (n.d.). Retrieved 13 July 2022, from https://reliefweb.int/report/india/covid-19-impact-education-southasiadisastersnet-issue-no-199-april-2022
2. Education during pandemic essay | essay on education during pandemic. (n.d.). BYJUS. Retrieved 13 July 2022, from https://byjus.com/kids-learning/education-during-pandemic-essay/
3. Education in India during Covid-19: Challenges faced and solutions for a post-pandemic era By: Mr Shekhar Mehta. (2021, November 11). Https://www.Outlookindia.Com/. https://www.outlookindia.com/website/story/opinion-education-in-india-during-covid-19-challenges-faced-and-solutions-for-a-post-pandemic-era/400485
4. Helping students in India make up for lost time. (n.d.). Retrieved 13 July 2022, from https://www.unicef.org/coronavirus/helping-students-india-make-lost-time
5. Impact of Covid-19 on school education in India. (n.d.-a). The Times of India. Retrieved 13 July 2022, from https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/theenchantedpen/impact-of-covid-19-on-school-education-in-india-32475/
6. Impact of covid-19 on school education in india: What are the budgetary implications? (n.d.-b). CBGA India. Retrieved 13 July 2022, from https://www.cbgaindia.org/policy-brief/impact-covid-19-school-education-india-budgetary-implications/
7. New approach for post-covid education. (n.d.). Drishti IAS. Retrieved 13 July 2022, from https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/new-approach-for-post-covid-education
8. Reimers, F. M. (2022). Learning from a pandemic. The impact of covid-19 on education around the world. In F. M. Reimers (Ed.), Primary and Secondary Education During Covid-19: Disruptions to Educational Opportunity During a Pandemic (pp. 1–37). Springer International Publishing. https://doi.org/10.1007/978-3-030-81500-4_1
9. Sathyan, S., & K., K. P. (2021). Byju's learning app in the covid-19 outbreak to analyze online education-a case study. International Journal of Case Studies in Business, IT, and

Education, 75–86. https://doi.org/10.47992/IJCSBE.2581.6942.0121

10. Shrestha, E. V., Sunhwa Lee, and Unika. (2021, August 23). How has education technology impacted student learning in India during COVID-19? Brookings. https://www.brookings.edu/blog/education-plus-development/2021/08/23/how-has-education-technology-impacted-student-learning-in-india-during-covid-19/
11. Standard, B. (2022, May 23). Education in India: Covid-19 pandemic's lessons not learnt, shows data. Business Standard India. https://www.business-standard.com/article/educatiaon/education-in-india-covid-19-pandemic-s-lessons-not-learnt-shows-data-122052300004_1.html
12. The impact of covid-19 on education – recommendations and opportunities for ukraine. (n.d.). [Text/HTML]. World Bank. Retrieved 13 July 2022, from https://www.worldbank.org/en/news/opinion/2021/04/02/the-impact-of-covid-19-on-education-recommendations-and-opportunities-for-ukraine
13. The impact of COVID-19 on school education and the road to recovery—KPMG India. (2021, October 29). KPMG. https://home.kpmg/in/en/home/insights/2021/10/nep-covid-19-school-education-assessments.html
14. Untitled. (n.d.). Retrieved 13 July 2022, from https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000380398
15. Why are people rushing to get this stylish new smartwatch? The health benefits are incredible. (n.d.). Retrieved 13 July 2022, from https://www.wristmate.in/pages/smartwatch

CHAPTER 10
CORONA WARRIOR

Humayun Khan Mohd Azimuudin Khan
Assistant Professor, Prof Ram Meghe College of Engineering & Management Badnera Amravvati, Maharashtra.

Abstract:
Every warrior is a god help — right from the corporation sweepers, the police personnel, the traders who have been feeding us non-stop with milk, meat, groceries, vegetables and fruits, the bank employees and staff of government departments, who have not stopped working, the media personnel who have been keeping us informed, the transporters, drivers, conductors, the hospital support staff, the nurses and of course the doctors and politicians, who have been on the field continuously and so many more. Many of them have lost lives or have lost their kith and kin but have moved on undaunted, in the service of society.

Keywords: *Covid-19, Pandemic, Corona warriors, hospital staff, tribute & awards.*

Introduction:

Corona warriors are called all doctors, health workers, police officers, sanitation workers and all those who have been involved in the fight against the corona virus or covid-19.[1] They especially include those who lost their lives in this struggle. The COVID-19 pandemic in India is a part of the worldwide pandemic of coronavirus disease 2019 (COVID-19) caused by severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2). As of 7 October 2022, according to Indian government figures, India has the second-highest number of confirmed cases in the world (after the United States of America) with 44,606,460 reported cases of COVID-19 infection and the third-highest number of COVID-19 deaths (after the United States and Brazil) at 528,754 deaths. In May 2022, the World Health Organization estimated 4.7 million excess

deaths, both directly and indirectly related to COVID-19 to have taken place in India.

Corona warriors in India:

Doctor:

According to the data released by the Indian Medical Association on 2 October 2020, at least 515 doctors have lost their lives while fighting the corona virus.[2] There have also been cases in many parts of the country where doctors were harassed and beaten up in some places by describing them as corona spreaders. An incident made headlines in the media, in which two doctors at the All India Institute of Medical Sciences Hospital in Bhopal, the capital of Madhya Pradesh, harassed policemen as spreading corona despite seeing their ID cards. He was badly beaten up while declaring so. One of the doctors had broken his hand and the other was injured. [3] In view of such incidents, the Government of India amended the Epidemic Diseases Act, 1897 on April 22, 2020, with a provision of imprisonment of up to seven years and A fine of up to Rs.500,000 was included.[4]

Heath worker:

According to the Trend Nurses Association of India data, as of August 2020, at least 20 nurses have lost their lives to the corona virus while 509 nurses have been ill at the time of reporting.[5]

Policeman:

As of June 2020, 788 policemen were reported to be suffering from corona virus. Whereas during this 300 victims became healthy and again joined the work. In the described round, 248 policemen were kept in institutional quarantine while 216 were in home quarantine. Many dead policemen have also been cremated with official honors.[6] Police officers are remembered for their many positive services during the spread of the corona virus around the world, while in many places the police have also been accused of beatings and misbehavior and some serious cases have come to light. A similar case happened in Stan Kollam town in Tuticorin district of Tamil Nadu state, India when a father and son were arrested for opening their mobile phone shop for an extended period of time during the government-imposed lockdown. Both were thrashed to death by police officers.[7] The state government arrested four police

officers and handed over their case to the country's Central Bureau of Investigation (CBI). This incident of police brutality has been dubbed by many media sources as the case of George Floyd of India due to the untimely death of the accused.[8] [9] [10] Similarly, in the country, there have been several incidents of police torturing migrant workers, doctors, street traders and other citizens, which were in the media headlines.[11]

Sweeper:

The cleaning staff has been rendering many essential services. These include cleaning of roads, disposal of waste, cleaning of water tanks, cleaning of unusable materials from human and laboratories, etc. For this, many times those people neither have a sanitizer nor do they have a face mask. The statistics of all these people are not available at present. It is quite difficult to estimate accurately the amount of bhangi or toilet-strewn sweepers. According to government figures, 182,000 people are associated with this profession, while according to human rights people, 770,000 people are associated with this profession.[12]

Death due to traffic:

Many traffic jammed people have also lost their lives due to this global epidemic in the era of corona virus. His life has been very difficult throughout this period. A very famous incident was that of taxi driver Arif Khan, who belonged to the area of Salempur in North-East Delhi. He used to work for a non-government organization. During the period of Corona, for six months, he was working day and night to transfer the patients of Corona and the dead suffering from it. Because of this, he was sleeping in Ambolinus instead of his house and had little relation with family. He eventually passed away on 14 October 2020.

Education reservation for the children of the suffering warriors:

The Government of India has announced to reserve five seats for the children of dead corona warriors in the central quota of every university in the country in MBBS and BDS courses during the academic year 2020-2021. Apart from this, many government and non-government institutions announced special concessions for these individuals. In Chandigarh University, 10 percent reduction in fees and 5 percent reservation has been announced for the children of Corona warriors.[14]

Tribute

The service of Corona warriors was appreciated across the country and their service was saluted. Among them, the song Himmat Na Haar of Indo-Tibetan Border Police constable Vikramjit Singh became very popular on the Internet.[15]

United States of America

By the end of 2020, the United States has become the most infected with the corona virus in the world. The American College of Emergencies reported the first two doctors' deaths from March-April 2020. These included the deaths of an emergency doctor, Frank Gabin, and an unnamed 40-year-old doctor. These doctors wore the same medical mask for a week, which had weakened their immune systems and infected them.[16]

President's honor and student spirit

President Donald Trump and First Lady Melania Trump presented Presidential Awards to several coronavirus warriors in April 2020. Among them were prizes for an Indian-origin student and two of her classmates, who were constantly sending greeting cards and cookies to doctors, nurses and fire workers.[17]

Public enthusiasm

People in California and Michigan are helping with medical procedures in a unique way. These doctors, nurses and medical staff are giving their luxury vans free of cost to use, so that they can enjoy the convenience and comfort of home and protect their families from infection. More than 15,000 people have participated in the campaign and till March 2020, more than 2,500 doctors, nurses and health workers have been given vans. These vehicles, priced around Rs 5 million to 10 million, also have facilities like kitchen, fridge, toilet, TV, bedroom, sofa. Their roof can also be raised. They are also called motorhomes, campers or caravans.[18]

Maharashtra educator gets award for novel teaching method in lockdown:

A Maharashtra teacher, who did not allow coronavirus-induced lockdown to come in the way of continuing his classes for his students in rural areas, has won recognition for his efforts that involved use of conference calls and storytelling. Balaji Baburao Jadhav (35), who hails from Sangavi village under Renapur tehsil of Latur district in

central Maharashtra, has been selected for the Honey Bee Network Creativity Inclusive Innovation Award 2020. He is a Zilla Parishad teacher at Vijayanagar in Maan tehsil of Satara district and won the award for his teaching through "conference call" method. Earlier, Ranjitsinh Disale, 32, who works as a teacher at the Zilla Parishad Primary School at Paritewadi in Solapur, won the Global Teacher Prize 2020 in recognition of his efforts to promote girls education and trigger a quick- response (QR) coded textbook revolution in India.

Conclusion

Corona warriors are the real super heroes of our world. The temples are closed but God xists in the form of corona warriors in this life taking situation. If a corona warrior does their best, they will win so the world will win. I am saluting all the Covid-19 warriors in the whole world. So i requesting you to support all Covid-19 warriors for our mother earth.

References:

1. https://www.thehindu.com/news/national/coronavirus-amit-shah-salutes-corona-warriors-says-entire-country-stands-with-them/article31494495.ece
2. https://science.thewire.in/health/ima-515-doctors-covid-19-deaths-india-health-workers/
3. https://www.ndtv.com/india-news/bhopal-cops-accused-of-assaulting-doctors-for-spreading-coronavirus-2209245
4. https://www.ucanews.com/news/india-passes-law-to-protect-corona-warriors/87814#
5. https://www.thehindu.com/news/national/coronavirus-20-trained-nurses-dead-509-infected-says-tnai/article32346557.ece
6. https://www.thehindu.com/news/cities/chennai/policeman-who-died-of-covid-19-honoured/article31864221.ece
7. https://scroll.in/latest/965618/tamil-nadu-father-son-die-after-alleged-police-torture-for-violating-lockdown-hc-seeks-report
8. https://www.ndtv.com/india-news/murder-charge-added-in-tamil-nadu-father-son-custody-deaths-case-sub-inspector-arrested-2255480
9. https://www.dw.com/en/george-floyds-of-india-outrage-mounts-over-police-custody-deaths/a-53991859
10. https://www.nationalheraldindia.com/india/india-george-floyd-moment-tamil-nadu-custodial-death-shocks-the-country

11. https://www.bbc.com/news/world-asia-india-52063286
12. https://www.downtoearth.org.in/blog/waste/sanitation-workers-on-covid-19-front-lines-how-to-save-the-warriors--71640
13. https://indianexpress.com/article/cities/delhi/delhi-ambulance-driver-covid-dead-6720214/
14. https://timesofindia.indiatimes.com/home/education/news/mbbs-bds-seat-reservations-fee-waivers-and-concessions-for-children-of-covid-warriors/articleshow/79368505.cms
15. https://www.youtube.com/watch?v=x2F_k3omXeM&list=UUuyRsHZILrU7ZDIAbGASHdA
16. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7350477/
17. https://www.bhaskar.com/international/news/donald-trump-news-update-us-president-trump-honours-ten-year-old-indian-american-girl-sravya-annappareddy-for-fighting-covid19-help-127314512.html
18. https://www.bhaskar.com/international/news/in-the-us-people-are-giving-50-lakh-to-one-crore-rupees-for-free-use-to-health-staff-luxury-van-127267650.html

CHAPTER 11
COVID 19- EMOTIONAL, PHYSICAL & PSYCHOLOGICAL IMPACT ON WOMEN

Booma V Halpeth,
Assistant Professor,
Department of Management Studies, The S.I.A College of Higher Education

Abstract
The covid 19 pandemic has turned the world upside down and every sphere of the world had been affected. The economy was reeling under pressure companies had to shift to new style of working, adapting to technology, education going for a toss, loss of jobs, reduction in income, loss of lives, domestic violence, etc. were some of the effects of the pandemic. Women were the most affected lot as they needed to manage family, work, children and keep everything under control. The objective of this article is to discuss and understand the impact of the pandemic on women at emotional, Physical and psychological well-being. The article focuses on the general aspects of women, society and in particular the impact of covid on women's well-being. It concludes that women have gone through a lot during this pandemic and have been subjected to hard work, isolation, stress, violence etc. and all these has affected her well-being. It is important for the family as well as the society to understand and support her in order for her to balance her roles and handle the uncertainty.

Keywords: *Covid, Pandemic, home maker, career women, emotional well being*

Introduction

Women are considered to be an embodiment of shakti. Shakti refers to the dynamic energy that is responsible for creation, conservation and annihilation of the Universe. It is believed that without Shakti the universe would not function. It is the shakti who stimulates the passive energy shiva in the form of consciousness[1]. Women who assume the role of creator, conserves

her family and protects them during difficult situations. Indian women today are assuming several roles beyond from being a wife and mother to an employee, entrepreneur. They represent the modern India. Women have to face extremities of being kept on a pedestal and worshipped as shakti on one end while being trampled down on the other end to handle the household chores and other responsibilities. In between these poles are the women who manage to break the stereotype and choose something of their choice.

A Woman may be a home maker or career oriented and both the roles are demanding as she is expected to multitask and manage her responsibilities. A career-oriented woman is expected to balance her work life, family and social life. In addition, she is expected to deliver best output in her personal and professional spheres. So, women need to ensure that her physical as well as mental health is good. The recent pandemic has thrown the lives of women out of gear and her routine has become topsy turvy. With the sudden change in the lifestyle the demand from the family as well as career has challenged the health of many women. Even the home makers have witnessed changes in their routine and were under tremendous pressure especially due to the online education. This chapter explores the impact of the pandemic on the physical, emotional and mental well-being of women.

Status of Women in the Society

The Indian Society is a patrilineal one wherein a man enjoys certain privileges which are beyond the reach for a woman. The Indian society has witnessed social transformation, modernization, urbanization and globalization. At the same time, these changes have brought in regional imbalances, class inequalities and gender disparities. All these have affected the status of women in the Indian society. Men are the decision makers and the role of women is to do tasks within the house. The tasks performed by women are never considered as labor and hence there is no payment for the same. Women are expected to perform these tasks and no special reward or consideration is given for the same.

On the other hand, working women are considered to be economically independent and enjoy a greater freedom is equally a myth as she need to juggle both her roles as a home maker and career woman. With no respite from the work at both the ends women needs to adjust and accommodate to the demands from both the roles.

The constant pressure to balance the requirements of different people combined with work pressure leaves her with no time for herself. Hence, she is under constant stress. Emotional upheavals due to tremendous pressure is a common symptom. This signifies the need for working on the mental, emotional and physical well-being of the women.

Women as the home maker

Women who chose to take care of the family and manage household responsibilities are called the home makers. These homemakers spend their time fulfilling the requirement of the family. The pandemic had given them the choice to spend time with their family but at the same time the never-ending demands of the family during the pandemic has taken a toll on their well-being. In many cases, with the husband and children being at home due to the lockdown had kept her occupied through the day. The children were attending online schools and spouses were working from home had kept their handful. In addition, with no domestic help she had to manage the daily household chores along with the added responsibility of home tutoring the children. Lack of me time, poor nutrition, work burden, fear of health, low income and uncertain future were some of the issues women were facing during this time. Also, lack of social interaction resulted in isolation. Emotional isolation was the greatest problem women had to undergo during the pandemic.

Women living in joint families too had to face several problems. Uncertainty of future, balancing household chores and children education, along with loss of income are some of the issues that were identified. In case of a joint family though there are other members to provide support with house hold work and sharing of responsibilities still there were problems as the resources need to be shared between the people and were often inadequate. Households with elderly people faced issues like safety of senior citizens, non-availability of medical support and increasing medical bills were cause of concern.

In case of Urban women, the issues were relating to the resources, health, income, children's education etc. on the other hand, the rural women were facing problems such as Loss of job, lack or decrease in income, adapting to new routine and in addition their lack of education or poor education made it difficult for them to offer

support to their children. The emerging online education was a challenge for rural women. In addition, they did not have the necessary resources like internet connectivity, mobile devices or a computer. Discontinuity in education among children is a common problem in rural areas. All these affected the women mentally and emotionally. Increasing domestic violence was also reported in many states. Access to support systems were not there and this resulted in women being subjected to harassment and physical abuse.

The Career Women

A working woman takes up the role of a home maker as well as a career woman. She needs to cater to the requirements of her family and manage the household responsibilities such as cooking, cleaning, maintaining etc. Added to this is her career responsibilities and if she is in higher level managerial positions then the demands of her role are high. A career woman often goes through feeling of guilt and helplessness when the demand from both ends drains her and leaves her with stress and emotional fatigue. In many cases, the relatives expect her presence in all occasions and also financial contribution. They observe the behavior of the children of the working woman and often the children are criticized for various reasons. The growing demands from both family and career gives little time for her to focus on herself.

The recent pandemic has added to the woes of the career woman. In cases where the option to work from home was possible, she had to work and balance the house as well. There was a thin line between home and office and she had to maintain her space in such a way that it didn't interfere with each other. The presence of the family around her gave her more time to spend with them. However, the flip side was she had to cater to the demands of family 24*7. In most of the households the consumption of items increased and especially women were trying their hands on cooking new dishes as she had time and did not have to travel out for work.

As the lockdown extended, the same interest became a burden and with the children around the house she had to manage their requirements along with her job. In addition, she had to take care of the role of the teacher as well and support the children with their education. With no support of tuition facilities and education going on online mode there was a need for constant monitoring of the children. If the kids were too young then adapting to online education

was difficult as they do not stay put in one place and getting them to sit and watch constantly the screen was not so easy. Similarly, another concern was the increasing screen time and control over the content that the children were watching. In case of parents with older children they too had issues in terms of uncertainty with regard to higher education and the impact of online learning on future opportunities.

The demand from work was also increasing as she had to meet deadlines, attend meetings, manage the team remotely. For a working woman the respite from daily demands was meeting up with colleagues and spend time with them but due to lockdown lack of face-to-face interaction left her with isolation. In addition, monitoring the subordinates in online mode was difficult. Working in the home environment was not similar to working from office as there was no privacy and exposing her family to outside world may not be a choice for many women.

There were several businesses where women had to go to office even during the pandemic like banks, hospitals, media etc. In these cases, the fear of the pandemic was higher as they were getting exposed to strangers and the possibility of getting infected was higher. In case of doctors the endless hours of work had taken a toll on mental and physical well-being. Similarly, for women from medical field, constant exposure to virus and protecting themselves and their family was a major concern. Secondly, due to extended hours of work and the lockdown they could not pay attention to their family especially children. Children of these professionals were the ones affected the most as they could not have the support of the mothers and the fear of the pandemic combined with shifting in the mode of education affected them.

The pandemic had a significant impact on career woman due to the dual role they were playing and also the emotional, mental and physical well - being were affected. One of the pressing reasons was the diminishing boundary between home and office. The domestic help was not available so she had to do all the work like cooking, cleaning, washing had to be done. Also, the working hours were extended. This affected her routine and, in many cases, though she had to work late but had to get up early as the children had their school in the morning also, they had to complete the household work before they begin the office. Lack of sleep, poor nutrition and no physical activity left her with poor health.

Impact on physical, mental and emotional well-being

Covid Pandemic has changed the lifestyles of many families globally. Work from home, online education being new norm it has changed the way we work. The shrinking boundary between work and home has added to the stress level of women. The growing demands from family members and work keeps her engaged leaving no time for her personal well-being or pursuing her interest. The additional work pressure along with isolation has affected her routine, health, and emotional well-being.

Studies have shown that women who engaged in less physical activity during the pandemic reported significantly lower mental health score, lower emotional and psychological well-being and higher level of anxiety and on the other hand women who engaged in physical activity had shown improved mental health scores.

In addition, the family support is also essential for women to overcome the stress. Sharing the work, helping women in household responsibility and giving her space and time is what she needs during this pandemic.

Conclusion and Suggestions:

The pandemic has changed the lives around the world. Adapting to the new normal is the norm. Work from home, Hybrid education, etc. are going to be there. Therefore, it is important that importance to women health and welfare to be given consideration.

Women either working or homemaker needs to be cared for and family need to share the responsibility and support her. It is imperative that a suitable environment, opportunity and support to be provided to her to reduce the stress she is undergoing.

The organization that is employing women employees should ensure there is a balance between work and family life. In case of jobs requiring longer working hours due consideration to be given to women personal life as well by offering flexible timings, rotational working hours, break time etc.

The HR department need to plan some measures to improve the well - being of their women employees. Arranging for stress management training, yoga, meditation etc. Providing financial support to women to enroll to such programs. Women employee inner circle to share problems and identify solution for the common issues can be thought of.

The covid pandemic is not yet over and the virus is going to be in the environment for long. The lifestyle changes may turn out to be permanent and it is important that as we embrace these changes, we need to ensure the Nari shakti the real power does not suffer. It is not enough we call her shakti and place her on a pedestal but it is equally important that we understand that the true power of hers can be realized when she feels that the people around her care for her and support her. We as a society should understand and ensure that the physical, emotional and psychological well-being of women are taken care of.

References:

1. Shakti: The Power of the Feminine, Jean Johnson. https://asiasociety.org/education/shakti-power-feminine
2. https://www.shethepeople.tv/top-stories/opinion/working-women-vs-homemaker/
3. https://www.sociologyguide.com/women-and-society/index.php
4. The Impact of COVID-19 on Women's PhysicalActivity Behavior and Mental Well-BeingCarl P. Nienhuis and Iris A. Lesser *Faculty of Health Sciences, Kinesiology, University of the Fraser Valley, International Journal of Environmental Research and Public Health 2020,17, 9036, doi:10.3390/ijerph 17239036www.mdpi.com/journal/ijerph
5. https://spb.psychopen.eu/index.php/spb/article/view/4347

CHAPTER 12
ROLE OF NSS VOLUNTEERS DURING COVID-19 PANDEMIC

Dr. Archana Verma
Assistant Professor, Department of English,
Govt. Swami Vivekanand College Sarangpur (Rajgarh)

ABSTRACT:
Youth is the backbone of a society and so they can improve society and resolve social issues. They can also shape the future of any society and make a difference in the lives of others through their vision and action plans. Social responsibility is connected with youth because they are the powerful positive energy source of any society. The main purpose of education is the holistic development of a person or to make a good citizen. Good citizenship requires knowledge of a society's main issues.

National Service Scheme (NSS) was launched in 1969, the birth centenary year of Mahatma Gandhi. NSS is an extension of the higher education system to orient the student/ youth towards community service while they are studying in educational institutions. It is being implemented by the Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India. NSS has its own identity which brings social responsibility. Social responsibility is an ethical framework in which an individual is obligated to work and support other individuals and organizations for the upliftment of society. An NSS volunteer places the 'community' before 'self'. The objective of this scheme is to bridge the gap between the school and college level students and society, especially villages/slums, as nearly 70% of the country's population lives in rural areas/slum masses.

Keywords: *epidemics, community, service, NSS volunteers.*

Introduction

The National Service Scheme (NSS) establishes a meaningful link between the campus and the community. Though NSS activities are performed almost throughout the year. But when

the whole of mankind is facing COVID-19: A social crisis, volunteers of NSS realize their responsibility. Coronavirus disease (COVID-19) is an infectious disease caused by the SARS-CoV-2 virus, identified in humans, which emerged in Wuhan, China in December 2019. Most people infected with the virus experience mild to moderate respiratory illness including fever, cough, and shortness of breath. In more severe cases, the infection can cause pneumonia, severe acute respiratory syndrome, and sometimes death.

This national call of duty is entirely different as volunteers directly work with the public during a crisis. NSS stands for and with people, regardless of whether or not it's a pandemic, The motto of the NSS is "Not me but you". It underlines that the welfare of an individual is ultimately dependent on the welfare of society as a whole. This expresses the essence of democratic living and upholds the need for selfless service and appreciation of the other's point of view and also a consideration for fellow human beings. The most important thing to do was through our social media platforms, NSS created and managed more than one campaign to educate, normalize, be aware and help different audiences on social media platforms. Since NSS couldn't reach helpless people physically so they changed their way of approaching to support society by following online training. Universities in several parts of the country have begun providing information on the origin, spread, and preventive measures to their NSS officers and volunteers. The NSS volunteers are involved in campaigning for fighting against covid-19 by drawing posters, writing articles, helping in the distribution of ration at the village level, and creating awareness and sharing correct and true information on COVID-19.

Activities during COVID-19 Pandemic

Faculty members and NSS volunteers were performing their duties while carrying out their responsibility effectively and efficiently by holding hands with the government of India on ways to protect people and prevent the spread of COVID-19. The coordinators had been given the responsibility to educate volunteers.

- To make general awareness about the COVID-19 pandemic, posters, PPTs, videos, etc. were created by NSS volunteers and shared with people daily. With the Prime Minister's appeal for 'JANTA CURFEW through a virtual pledge, the campaign initiated by NSS volunteers."Alone we can do so

little; together we can do so much" – Helen Keller following this quote volunteers came out together with a few students by contributing during this campaign. Use social media to help build awareness through posters, banners, poems, PPTs, etc which were shared on the official social media handles of the NSS unit via Facebook and Instagram.

- Another campaign to promote health and safety-it is an awareness-raising campaign that highlights how to help, prevent and manage safety and health, through multiple posts sharing some important protective and preventive measures that everyone should follow against COVID-19 (Coronavirus) to remain safe.
- Health awareness has been started by volunteers on two important topics. People frequently touch their eyes, nose, and mouth without even realizing it. Germs can get into the body through the eyes, nose, and mouth and make them sick. So people were taught about hand hygiene. To develop interest and help them remember the steps of proper hand washing, volunteers shared a poem in schools and colleges. Secondly, they also promote social distancing by explaining the danger factors, symptoms, signs, diagnosis, treatment, complications, and the methods of prevention and precautions to be taken by oneself.
- They also encourage people to wear face coverings at the workplace or public places to protect people. It prevents them from unknowingly spreading the disease. This is especially important because some people with COVID-19 never show symptoms, so the mask provides an extra layer to prevent respiratory droplets from traveling in the air and onto other people.
- To help the affected they promoted the PM CARES relief fund and asked people to donate, also supporting some organizations for collecting donations to assist the needy.
- Lockdown also affected the mental health of the people so indoor activities like yoga, painting, drawing, etc, and quiz competitions were conducted to help people learn. Volunteers talk over various issues and supply good information with the assistance of the NGOs/organizations working on it.
- Volunteers also help in verifying false news and rumors by asking people to send the news to volunteers so that they can

verify for them. They clarified all myths about COVID-19 through their campaign.

- To gain trust among healthcare workers, volunteers started a campaign to support our Corona Warriors by making videos. They understand and also realize healthcare workers that we all are together during this crisis also.
- Volunteers also have a moral responsibility to criticize violence against healthcare workers. Solving this problem of healthcare workers and for supporting them, volunteers raise awareness and build bridges between communities and healthcare workers, and activate people to call on the government to take legal action and started a campaign 'Stop Violence Against Corona Warriors', additionally shared the actions that may be taken against people who damage (physically or verbally) to any health care employee.
- NSS Unit started a campaign "Gratitude Towards Corona Warriors " the target of this campaign was to indicate respect and appreciation to the corona warriors and show them how grateful we are. The unsung heroes are thanked in numerous ways by our NSS volunteers. Volunteers created PowerPoint presentations and videos to make awareness concerning the role being played by corona warriors. Poems expressing their feelings for corona warriors volunteers were asked to make a note of many THANK LETTERS (CARDS) for the Corona Warriors and distribute them among those around their homes or in their localities.
- NSS additionally helped students stuck in different cities of India, by providing all of them with necessary data and notices, as well as asking partner NGOs for necessary support. All the NSS volunteers registered themselves on Aarogya Setu App. The 'Aarogya Setu For Me' Campaign by NSS volunteers to guide their relatives and friends was initiated. The units of the entire country organized webinars on the topics connected with COVID-19.
- On the Igot.gov.in App (A coaching module for management of COVID-19 named 'Integrated Government on-line training' (iGOT), the majority of the school members and NSS volunteers registered and completed their coaching on Basics of COVID-19. All dedicated volunteers of NSS used the social platform as a tool to find out and build Covid

appropriate behaviors, by registering on the iGOT platform The portal aimed to boost the capability building of front staff to handle the pandemic rapidly.

- The NSS expressed hope that an ample variety of masks would facilitate 'breaking the chain'—the foremost strategy to fight Covid-19. Thus the mask challenge was thrown at the volunteers, Volunteers, staying reception as a part of the imprisonment, were provided the know-how to create masks through online modules. Apart from creating masks, the NSS volunteers are active in numerous awareness programs and contact-tracing activities in association with the local administrations.
- Volunteers additionally visited ration outlets and created folks standing in queues to maintain safe distance norms. Volunteers created masks and distributed them. Village surveys were conducted to grasp their state of affairs throughout the COVID and supply them online and offline as per their requirements. Many people in remote areas are unaware of those things and they don't even have masks and sanitizers. Therefore the NSS volunteers, students, and workers came forward to spread awareness concerning this virus as well as distribute masks.
- A partnership between youth and The United Nations International Children's Emergency Fund has created volunteers trained to respond to COVID-19. The Yuvodaya initiative aims to channel youth in reaching marginalized teams and communities. It has trained the volunteers in social communication and community mobilization. Volunteers responded to the challenge by mobilizing communities, and door-to-door awareness.
- Due to the Covid-19 crisis, people returned to their homes in villages and cities. Volunteers tell them -If any migrants recently came to any community or village, kindly keep them off or self-quarantine for fourteen days. Make them aware of all precautions they should take to keep themselves and others safe from Covid-19. Support them if they require any assistance with their daily needs.
- To stick posters at public places such as workplaces, bus stops, railway stations schools, colleges, etc Distribute

leaflets/handouts like frequently asked questions or a pamphlet on Covid-19

- Police also utilized the service of volunteers to create awareness regarding Covid-19. NSS students used it effectively to enforce norms within the district. Police guide the NSS volunteers in performing their duty. This was a true learning experience.
- NSS volunteers of colleges and schools joined COVID-19 containment efforts, a joint initiative of the Health and Education Departments. Their services are going to be used for observance of symptomless patients as 80-83% of patients within the district belong to its class. They give support to people who are experiencing stress and depression by guiding them to professionals.
- Several laborers within the country were littered with lockdowns as a result of what they earned daily and at that point, no work was there which implies no earning for them. Some days they started moving toward their several native places, however, the general public transport was shut down so they were facing several issues. At this point, NSS units determined that they will facilitate the labor.

Conclusion

Thus volunteers promote key behaviors to be practiced by their peers and extended community members to stop the spread of the virus such as hand hygiene, respiratory hygiene, social distancing, stay-at-home, etc. Minimize panic and promote responsible behaviors. Support the local authorities in preparedness for containment just in case of any positive case and/or contact case and report/refer to suspect cases. Promote services available for girls and kids. Connect people to timely, accurate information from the Government, Unicef, WHO, and NCDC. Provide clear instructions about what to try and do if someone suspects. Communicate the facts from authoritative resources on how COVID-19 is spread and the way to avoid infection

NSS volunteers are making very valuable contributions to Society, besides developing their personalities. During the previous year, The importance of NSS was underlined in an Evaluation Study conducted through the Tata Institute of Social Sciences (TISS). In their Study Report, TISS concluded that NSS has been a well-

intentioned and ideologically motivated scheme of the government of India NSS is one of the best experiments within the field of youth and the planet. TISS recommended that NSS should be made mandatory for all public and personal funded universities, colleges and institutions and may be integrated as a part of the curriculum. The NSS volunteers are performing the role of mediator between the education system and also the community which is useful for nation-building. They develop their qualities of leadership, skills to become an organizer, and an administrator, and to achieve the multi-faceted development of their personality as a whole.

REFERENCES

1. National Service Scheme Manual, (2006) Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India, New Delhi. Available from: https://nss.gov.in/
2. World Health Organization.Coronavirus Disease (COVID-19) Outbreak: Rights Roles and Responsibilities of Health Workers, Including Key Considerations for Occupational Safety and Health. Available from: https://www.healthynewbornnetwork.org/hnn-content/uploads/who-rights-roles-respon-hw-covid-19.pdf
3. Centers for Disease Control and Prevention.Show Me the Science - Why Wash Your Hands? Available from https://ne-np.facebook.com/SurgeLaboratories/photos/people-frequently-touch-their-eyes-nose-and-mouth-with-dirty-hands-without-even-/3064514290484539/
4. anjac.org. Available from: https://sites.google.com/site/anjacorg/c0-curricular-activities/national-service-scheme
5. V Santhakumar, From an Institute of Social Work to a University of Social Sciences: The Evolution of TISS.Available from: https://practiceconnect.azimpremjiuniversity.edu.in/from-an-institute-of-social-work-to-a-university-of-social-sciences-the-evolution-of-tiss/
6. Letslocalise Blog,You Can Help!Available from: https://letslocalise.home.blog/2020/02/10/alone-we-can-do-so-little-together-we-can-do-so-much-helen-keller/

CHAPTER 13

INITIATIVES TAKEN BY THE GOVERNMENT FOR THE AFFORDABILITY OF EDUCATION DURING COVID-19 IN INDIA

Sheetal Prajapati
Research Scholar, Department of Education
Central University of Rajasthan, Bandarsindri, Ajmer

Dr Narendra Kumar
Assistant Professor, Department of Education
Central University of Rajasthan, Bandarsindri, Ajmer

Abstract

Covid-19 makes a disruptive change in modern life but our education system is affected a lot. And education is really important for the holistic development of a child. When a child develops in the right direction then society also develops, with society a nation also develops so education plays a crucial role in a student's life. But suddenly due to COVID-19, an immediate measure was taken by the government so that education can't stop. They introduce digital-based pedagogy in the classroom. Implementing & managing digital pedagogies in the classrooms is a really challenging task for a teacher. Only educational technology made this possible for online teaching & students assessment during the teaching-learning process. This is the best pedagogy during the COVID-19 pandemic. But this causes many health-related issues in learners as well as in educators also. In this paper, the researcher will discuss the initiatives taken by the government, & the challenges faced by teachers, students, & parents. Forcing the educational sector to adopt new technology as the teaching process savior will force it to rethink its strategies. Online-teaching pedagogies have been practically implemented during COVID-19. With the help of ICT, a teacher delivers quality content in an effective way but not as effective as offline pedagogies. There are some pros & cons of online pedagogy & also offline pedagogy

that researcher will discuss in this paper. Higher education & school education both are affected by COVID-19. The main problem involves poor electricity, particularly in remote areas, & confined web-connectivity.

Keywords: *Teaching-learning process, Affordability, Initiatives, COVID-19, Challenges*

Introduction

Nearly every aspect of life has been impacted by COVID-19, which has become a global crisis. The COVID-19 period has significantly impacted our education system. The online education system majorly affected the science subject at the school level. Because subjects like science majorly need laboratories to perform practicals. Due to this, teachers were unable to achieve learning objectives because each subject is having its own goal. According to the latest World Bank report on the effects of the COVID-19 pandemic on the education sector, particularly in developing nations, the majority of learners faced significant challenges when deciding to flip to & receive their education in online mode due to a range of internet connectivity & other obstacles. To make sure that the usability and information can be presented in an efficient manner and that educational objectives are met, teachers have had to go to remarkable extents and proceed to do so.

Majorly, Higher Educational Institutes & other colleges had a significant impact due to COVID-19 but schools are also influenced due to COVID-19. The COVID-19 has given us the chance to set the stage for the introduction of online teaching-learning. the lack of facilities, connectivity for online teaching-learning, teachers' limited experience with it, the communication gap, the unfavorable learning environment at home, fairness, and scholastic outstanding quality in higher learning. The availability of smartphones had become crucial for education, which compelled a transition to digital learning. The effects are extensive and will likely continue to have an even greater impact on learning in the upcoming era. Numerous colleges, higher education institutions, and schools have stopped offering in-person instruction. There is an urgent need to develop and put into practise new teaching and evaluation approaches. COVID-19 provides the exposure to introduce online teaching-learning processes in schools, colleges, & universities. Government has planned & introduced new

teaching platforms through which education remains continue in India & provide smartphones to the people who are living in remote areas. In order to learn and teach online, learners and their families are under additional financial pressure to purchase e-Learning tools like smartphones, tablets, and laptop computers as well as web-based-based devices and packages. Due to widespread technical innovation in most nations, the application of e-learning is truly a novel and forward-thinking strategy. Since

India is a vast country, most of the cities & remote areas do not have proper coverage of technological needs.

Digital-Based Pedagogy as a new pedagogy

Educational systems and teaching techniques were changed from face-to-face to online during the rising trend of COVID-19 & it is necessary to take immediate measures to continue education for the betterment of learners, society, & nation. The opening date of schools and colleges was delayed as the pandemic progressed, and virtual schools were established. The government was compelled by this change to quickly establish plans and operational support platforms for online schools. At the time of COVID-19, for the continuity of education digital initiatives were very important to be implemented. The (N-DEAR) National Digital Education Architecture and PM e-Vidya are two examples of the ministry's key transformation. Education comes under the concurrent list of the constitution. Majorly the schools were governed by states & Union Territory Governments. However, a multifaceted strategy has been adopted to guarantee that every learner has direct exposure to education going forward.

On May 17, 2020, the Atma Nirbhar Bharat Abhiyan launched a comprehensive programme called PM e-VIDYA, which combines all efforts pertaining to virtual, web, / on-air education to facilitate multi-mode access to education.

Initiatives taken by the government for education:

- The nation's digital facilities, DIKSHA (one nation, one digital platform), offers high-quality e-content for academics in states and Union territories. QR coded Textbooks are readily accessible on it for all grade levels. The DIKSHA platform has been adopted by 35 of the 36 states and Union

territories, and the content has been contextualized to meet local needs.

- Grades from first to grade twelfth each have their own Swayam Prabha TV channel (one class, one channel).
- Broadcasting, community radio, and the CBSE radio program Shiksha Vani are all frequently used.
- On the NIOS web page and YouTube, special e-content for the deaf and hard-of-hearing has been created using the Digitally Accessible Information System (DAISY).
- The NROER is a free repository for digital content. For a variety of school subjects, there are almost 17,500 electronic resources available for all grade levels.
- "Padhna Likhna Abhiyan (PLA)," a centralized sponsored adult education program, has been executed in 2020–21 with the explicit goal of providing literacy level to 57 lakh adult illiteracy in the age range of 15 and above. The program was extended until July 31, 2021.
- Additionally, the Ministry has launched a proactive initiative called "MANODARPAN" that includes a broad variety of activities to assist families, educators, and learners with their mental health and psychological wellbeing throughout the COVID-19 pandemic and further than that.

Challenges faced by teachers

Building a unified teaching method by effectively blended classroom learning with e-learning methods will help the quality delivery and pedagogical approaches in schools and higher education. The flawless integration of new tech into the current Indian education system, that is the greatest, diverse and expansive in the entire globe with more over 15 lakh schools and 50,000 higher education universities, is the main challenge facing EDTech policy changes at the nationwide level. Establishing quality assurance practices and standards for online education created and provided by HEIs in India as well as e-learning apps is also crucial. Numerous providers of e-learning offer numerous courses on the same topics with varying degrees of certification, teaching methods, and evaluation criteria. As a result, course quality may vary between various e-learning stations.

Curfews were fully implemented as the COVID-19 pandemic spread, and remote learning ended up to be the just option. This presented a number of difficulties that were difficult to overcome.

The only way to get around structural barriers to remote learning is with creativity and perseverance.

- In most of the places, internet coverage is a major issue. Some locals might not be familiar with how to download and install an app because they don't know much about smartphones or computers.
- Some of the teachers were also not familiar with innovative apps which they can use in the teaching-learning process.
- Teachers share websites, videos or e-content to the parents and other teachers through whatsapp. So, it is required to know how to use technology in teaching.
- Families in which smartphones are not usually allowed to the children, at that time they allow them to use, but teachers had to take all the responsibility.
- Teachers who knew about technology, for him/her also it was also a difficult task to create videos, upload videos, make worksheets & share online to the students & teachers.
- Trying to make the kids study at houses was a challenging task for a teacher.
- Engaging students in an activity through online mode is also a difficult task for a teacher.

Challenges faced by learners

As challenges were faced by teachers, students were also faced with many issues regarding their studies, health, & social issues. It is difficult for Indian students to adopt online learning.

- COVID-19 affects learners' academic performance because they face many difficulties teaching through new modes of teaching.
- Due to the geographic and temporal estimation of learners, online learning can be difficult. It was crucial to assess the level of students' learning difficulties because, if left untreated, they may result in pressure, depression, and severe mental health problems.
- The lack of physical activity, which can adversely affect mental learning.

Challenges faced by parents

Parents, educators, and pupils are all under a massive pressure and anxiety as a result of the Covid-19 pandemic. Families across the world have been affected by the Covid-19 pandemic.

- Parents are in a tough spot as homes serve as a child 's school, office, and living space all at once.
- Focusing on various facets of their child's holistic development was very challenging task for parents.
- Treatments based on mindful awareness may assist families and their kids manage their anxiety.
- We as a parent must learn to self-regulate, which entails calming the area of our brain that reacts to danger, in order to assist ourselves and our children in reducing stress.
- Insufficient workspaces and limited infrastructural facilities in the home environment

Conclusion

The ASER survey, which examined the condition of education in remote areas, was carried out in September 2021. 25 states and 3 Union Territories were represented in the survey, which included 76,706 households, 75,234 kids between the ages of 5 and 16 years, and educators and employees from 7,300 public schools. Students in corporate schools and those from greater social and economic condition families have more direct exposure to electronic devices and are more involved in routine learning programmes during COVID-19 than their peer group in public schools and from disadvantaged families during the pandemic outbreak school closures. Government agencies, and ministries of education in particular, cannot function in exclusion, as this pandemic has demonstrated. Given the multidisciplinary nature of electronic education initiatives, it is essential that ministries work closely with others.

References

1. Dhawan, S. (2020). Online Learning: A Panacea in the Time of COVID-19 Crisis. *Journal of Educational Technology Systems*, *49*(1), 5–22. https://doi.org/10.1177/00472395209340 18
2. Hussain, M., Ul-Allah, S., Binyameen, M., Jabran, K., & Farooq, M. (2022). COVID-19 and Higher Education in Agriculture Sector of Developing Countries: Impacts and Prospects. *Pedagogical Research*, 7(1), em0111. https://doi.org/10.29333/pr/11440

3. Joshi, A., Vinay, M., & Bhaskar, P. (2021). Impact of coronavirus pandemic on the Indian
4. education sector: Perspectives of teachers on online teaching and assessments. *Interactive*
5. *Technology and Smart Education*, *18*(2), 205–226.
6. https://doi.org/10.1108/ITSE-06-2020-0087
7. Khreisat, M.N. (2022). English Language Learning Strategies during COVID-19 in the Middle East: A Systematic Review. *Arab World English Journal*, 13 (1), 56-71. DOI: https://dx.doi.org/10.24093/awej/vol13no1.4
8. Lantsoght, E. O. L. et al. (2021), Challenges and Opportunities for Academic Parents During COVID-19. *Sec.E ducational Psychology.* https://doi.org/10.3389/fpsyg.2021.645734
9. Punjani, K. K., & Mahadevan, K. (2022). Transitioning to online learning in higher education: Influence of Awareness of COVID-19 and Self-Efficacy on Perceived Net Benefits and Intention. *Education and Information Technologies, 27*(1), 291–320. https://doi.org/10.1007/s10639-021-10665-2
10. Singh G. (2020). Unstable education system inducing mental stress in COVID-19 lockdown. *Open Access Maced Journal of Medical Science*, 8(T1), 248–249. doi: 10.3889/oamjms.2 020.5093.
11. Singh, G., & Quraishi, S. (2021). COVID-19 Lockdown: Challenges Faced by Indian Students. *Psychological Studies*, *66*(3), 303–307. https://doi.org/10.1007/s12646-021-00608-9
12. Vijayan, R. (2021). Teaching and Learning during the COVID-19 Pandemic: A Topic Modeling Study. *Educational Science*, 11, 347. https:// doi.org/10.3390/educsci11070347
13. Yu, H. M., Cho, Y. J., Kim, H. J., Kim, J. H., & Bae, J. H. (2021). A Mixed-Methods Study of Early Childhood Education and Care in South Korea: Policies and Practices During COVID-19, *Early Childhood Education Journal.* DOI:10.1007/s10643-021-01239-5
14. https://www.businesstoday.in/coronavirus/story/smartphones-in-rural-households-doubled-but-did-not-improve-childrens-access-to-online-education-report-312682-2021-11-18
15. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1744059
16. https://indiaeducationdiary.in/ministry-of-education-has-taken-several-initiatives-to-ensure-studies-of-school-going-children-during-covid-19-pandemic-education-minister/

17. https://www.ndtv.com/education/digital-initiatives-taken-in-education-during-pandemic-will-be-strengthened-institutionalised-moe
18. https://indiaeducationdiary.in/steps-taken-by-the-government-to-ensure-no-loss-of-education-during-covid/
19. https://government.economictimes.indiatimes.com/news/education/covid-19-pandemic-impact-and-strategies-for-education-sector-in-india/75173099
20. https://www.unicef.org/srilanka/stories/our-hero-teachers-many-challenges-overcoming-covid19
21. https://www.indiatoday.in/education-today/featurephilia/story/what-challenges-are-parents-facing-during-the-covid-19-pandemic-1749810-2020-12-15

CHAPTER 14
PANDEMIC LITERATURE VIS-À-VIS PEOPLE

Dr. Amit. Y. Kapoor
Head, Department of English,
Shree Jayendrapuri Arts & Science College,
Old National Highway No: 8,
BHARUCH (GUJARAT) – 392 001

Abstract
If we look closely, we can see that pandemics have had a significant impact on world history. The pandemics have an international influence and frequently go down in history as significant events. They frequently question the very tenets upon which civilizations are built as well as the viability of its material foundation. It's not the existence of bacteria and viruses that unites pandemics throughout time and space; rather, it's the pattern of human reaction. Pandemic outbreaks have ravaged countries, influenced the result of wars, and wiped-out entire populations throughout history. However, paradoxically, they have also paved the way for discoveries and advancements in the sciences, the economy, and political systems. Pandemic outbreaks have been closely examined through the lens of humanities in the realm of history. However, hardly any attention has been given to study the impact of these phenomena on behavioral social science and the branches of medicine. If history illustrates the effect of pandemics on whole communities, then literature gives us a more intimate view. Literature and the arts have always held a prominent place in helping to define who we are as human beings and in enriching our lives. In the present research article, the researcher has attempted to study how the essence life during pandemics has been encapsulated in fiction which include Daniel Defoe's *Journal of the Plague Year*, Jose Saramago's *Blindness*, Nicola Griffith's *Ammonite*, Emily Mandel's *Station Eleven*, Ling Ma's *Severance*, Rory Power's *Wilder Girls* and Lawrence Wright's *End of October*.

Index terms: *pandemics, literature, quarantine, ideologies, perceptions, people*

Introduction

The term *pandemic* was first noted in a document in 1660. The word is derived from the Latin word *pandemus*, which itself derives from the Greek word *pandemos*, which is composed of the words *pan*, which means *all, every, whole*, and *demos*, which means *people or population*. If we look closely, we can see that pandemics have had a significant impact on world history. The pandemics have an international influence and frequently go down in history as significant events. They frequently question the very tenets upon which civilizations are built as well as the viability of its material foundation. The human response, not the presence of bacteria and viruses, is what unites pandemics throughout time and space.

History of global pandemics

There has been a lengthy history of pandemics. There have been a very few phenomena that have had as much of an impact on communities and cultures as the pandemic outbreak has. Pandemic outbreaks have ravaged countries, influenced the result of wars, and wiped-out entire populations throughout history. However, paradoxically, they have also paved the way for discoveries and advancements in the sciences, the economy, and political systems. In the field of history, the humanities have been used to closely investigate pandemic outbreaks. The impact of these events on behavioral social science and the various fields of medicine, however, has received remarkably little consideration.

Pandemics have affected civilizations all over the world. The plagues mentioned in the holy texts that serve as the cornerstones of Abrahamic religions, beginning with the *Old Testament*, are perhaps the most well-known examples of plagues ever documented. Before the Israelites, who were being kept captive by the Pharaoh, the ruler of Egypt, were finally set free, the *Book of Exodus* Chapters 7 through 11 mention a series of ten plagues to strike the Egyptians. In Islamic tradition, Chapter 7 of the *Qur'an* mentions and describes similar calamities (*Surat Al-Arafa*, v. 133). *The Athenian Plague*, which began in Ethiopia during the Peloponnesian War and moved to Egypt and Greece, is the first global epidemic that is recorded. The other global pandemic holding historic importance is *the Antonine Plague* that occurred in Athens during 165 – 180 CE. In the middle of the sixth century CE, we come across *the Justinian Plague* that originated

in Ethiopia and then moved along the trading routes to Egypt and Central Asia. *The Black Death* was a global outbreak of bubonic plague that originated in China in 1334, arrived in Europe in 1347 CE, following the Silk route. Within 50 years of its reign, by 1400 CE, it reduced the global population from 450 million to below 350 million, killing as many as 150 million. *The Spanish flu* pandemic in the first decades of the twentieth century was the first true global pandemic and the first one that occurred in the setting of modern medicine, with specialties such as infectious diseases and epidemiology studying the nature of the illness and the course of the pandemic as it unfolded.

Pandemics vis-à-vis people

Literature offers a more personal perspective on pandemics than history does in terms of how they affect entire societies. The arts and literature have always played a significant role in defining who we are as people and in enhancing our lives. This becomes much more obvious in times of crisis, such as the present COVID-19 outbreak. Many writers, particularly novelists, have pondered the causes behind the rise in popularity of pandemic fiction. On the human mind, literature has an embalming effect. The article encourages readers to consider the impact of pandemics on particular people or the entire world community by going beyond the numbers of worldwide fatalities and the extent of their spread. Literature provides crucial insights into how individuals have handled the trauma and how to make sense of a world now in many ways beyond our control.

In the present research article, the researcher has attempted to study how the pandemic novelists have depicted the impact of the pandemics on the lives of people. He has selected seven novels written by novelists hailing from different nationalities to exemplify the same. These novels include Daniel Defoe's *Journal of the Plague Year*, Jose Saramago's *Blindness*, Nicola Griffith's *Ammonite*, Emily Mandel's *Station Eleven,* Ling Ma's *Severance,* Rory Power's *Wilder Girls* and Lawrence Wright's *End of October*. Let us critically examine each one of them.

Daniel Defoe's *Journal of the Plague Year*

The British author Daniel Defoe is credited with creating the first pandemic novel in *Journal of the Plague Year* (1772). The novel

is a first-person account of the Great Plague of London, a fatal bubonic plague that ravaged England in 1665. Defoe had only turned five at the time. Using his uncle Henry Foe's writings, Defoe recreates the dreadful period of history in the year 1772, or nearly sixty years after the so-called Black Death. After his name, the book was published with the initials H. F. The protagonist of the novel is named H.F., a saddler who lives in the Whitechapel district of East London. He depicts the horror and devastation wrought by the endemic. Defoe takes great pains to achieve the effect of verisimilitude, identifying specific neighborhoods, streets and even houses in which the events took place. Additionally, it provides tables of casualty figures and discusses the credibility of various accounts and anecdotes received by the narrator. Defoe's novel still has the power to unsettle especially when he writes about families forced into quarantine due to an infected family member.

Jose Saramago's *Blindness*

Jose Saramago, who won the Nobel Prize for literature in 1975, wrote the novel Blindness. The book's title implies that blindness is a contagious disease. The narrative starts with a driver of a car who becomes blind while stopped at a stop sign. He cries out for a ride back to his house. He is rescued by a man, but he simply drives him home before fleeing in his car. Blindness is contagious and spreads quickly. The contagious individuals are sequestered in an asylum. The miserable state of the sick persons is then made clear to the readers. The book then centers on seven unnamed individuals, including a doctor, his wife, a girl wearing dark glasses, and others. The apathy of power structures leads to panic among the blind as they face paucity of food, inhospitable and unhygienic living conditions. Being on brink of starvation, the seven characters escape the asylum and enter the city to seek refuge. But they are shocked to discover that everyone in the city has turned blind. Facing a lack of any type of support, the entire country plummets into utter despair only to be resurrected quite magically at the end.

Nicola Griffith's *Ammonite*

The British-American author Nicola Griffith's first book was the novel *Ammonite* (1992). Numerous literary accolades went to the novel. The novel tells the tale of a group of workers from the Settlement and Education Councils who go on an expedition to the

planet Jeep. A virus, once more known as Jeep, that was endemic to the planet has infected every man and the majority of women in the expedition. As a result, the planet is quarantined, and none of the expedition survivors have been permitted to leave. The fact that the *native* population on the planet is all female and appears to be descended from the initial colony is one of the planet's mysteries. Anthropologist Marghe Taishan, working at the Settlement and Education Councils is sent to Jeep not only to study the native cultures, but also to test a potential vaccine for the Jeep virus. She makes a journey across Jeep, living with several of its indigenous cultures. Shortly after the start of her journey, she is captured and enslaved by the nomadic Echraidhe, one of whose members, Uaithne, believes herself to be the Death Spirit, the chosen representative of the goddess of death destined to bring about an apocalypse. Escaping the Echraidhe and almost dying in the extreme winter, she reaches the quieter village of Ollfoss, where she joins a family and stops taking the vaccine, accepting the virus into her body and truly learning what it is like to be a native. The Company, believing the vaccine to have been a failure, destroys the space station orbiting Jeep, apparently isolating the people there.

Emily Mandel's *Station Eleven*

In her 2014 novel *Station Eleven*, American author Emily St. John Mandel imagines a swine flu pandemic that kills the majority of people on Earth. The compelling tale of a Hollywood star, his potential savior, and a wandering cast of performers risking everything for art and humanity is told in *Station Eleven*, which travels the dispersed outposts of the Great Lakes region. During a performance of *King Lear*, renowned actor Arthur Leander suffers a heart attack on stage. In the audience, Jeevan Chaudhary, a former paparazzi-turned-EMT, runs to the man's help. As the curtain closes, Kirsten Raymonde, a young actress, watches in horror as Jeevan does CPR on Arthur, but Arthur has already passed away. That same night, as Jeevan walks home from the theatre, a terrible flu begins to spread. Hospitals are flooded and Jeevan and his brother barricade themselves inside an apartment, watching out the window as cars clog the highways, gunshots ring out, and life disintegrates around them. Fifteen years later, Kirsten is an actress with the Traveling Symphony. Together, this small troupe moves between the settlements of an altered world, performing Shakespeare and music

for scattered communities of survivors. The novel can be looked upon as a novel of art, memory, and ambition, *Station Eleven* tells a story about the relationships that sustain us, the ephemeral nature of fame, and the beauty of the world as we know it.

Ling Ma's *Severance*

The apocalyptic novel *Severance* (2018) was written by Chinese-American author Ling Ma. Due to its foreknowledge of the current world catastrophe, it reappeared during the COVID-19 epidemic. Similar to the Corona virus, a flu-like virus breaks out in Shenzhen, a Chinese city that also happens to be the country's financial centre. Shen Fever is a virus that spreads across the globe, making its victims to act like zombies as they go about their daily lives until they gradually pass away from hunger, dehydration, fever, poor motor coordination, and ultimately death. The main character, Chinese American immigrant Candace Chen, is in her twenties and works as a production coordinator for a Manhattan-based publishing house. She is an expert at managing Bible production. Candace is one of the few remaining survivors, and one of the last people to leave New York, choosing to remain at her job in New York almost until the bitter end, as Shen Fever devastates the city around her.

Rory Power's *Wilder Girls*

British crime fiction author Rory Power is the author of the 2019 novel *Wilder Girls*. Three companions, Hetty, Byatt, and Reese, who attended the Raxter School for Girls on Raxter Island off the coast of Maine, recount their experiences in the book. Tox, a lethal virus, has infected the island. The Raxter School has been in quarantine for eighteen months. The virus is still a mystery. However, it begins to have an effect, first killing off the teachers one by one before moving on to the females. The island's conditions start to change quickly. At the Raxter School for Girls, only Hetty, Byatt, and Reese are still alive, and they are struggling to get by on decreasing supplies of food and water. Now, cut off from the rest of the world and left to fend for themselves on their island home, the girls don't dare wander outside the school's fence, where the Tox has made the woods wild and dangerous. They wait for the cure they were promised as the Tox seeps into everything. But when Byatt goes missing, Hetty will do anything to find her, even if it means breaking quarantine and braving the horrors that lie beyond the fence. And

when she does, Hetty learns that there's more to their story, to their life at Raxter, than she could have ever thought true.

Lawrence Wright's *End of October*

Lawrence Wright, a Pulitzer Prize winner, is the author of the 2020 novel *End of October*. The novel's pandemic is a brand-new influenza virus known as Kongoli flu. Hemorrhagic fever, one of the symptoms, first appears in a group of immunosuppressed, HIV-positive immigrants in an Indonesian refugee camp. Henry Parsons, a scientist at the World Health Organization, is the book's main character. He exposes his driver to the virus by going to the refugee camp. The afflicted driver visits the holy city of Mecca on a pilgrimage. He passes away there, which causes the infection to spread to Saudi Arabia. Henry asks the Saudi authorities to isolate the entire city of Mecca. Although for a little period, the quarantine is in place. The disease being an avian flu spreads far and wide across the world. Meanwhile, the quarantine in Mecca inflames existing global tensions. Iran attacks Saudi Arabia, claiming that it is holding Iranian citizens without cause. Russia and the USA use the ensuing conflict to begin a proxy war, with each superpower blaming the other for the spread of the virus. In strategic meetings, White House officials dismiss the virus as a distraction. It may or may not ever reach the USA, they reason, but the threat of war with Russia is absolutely concrete.

Conclusion

Thus, it may be said that a study of pandemic literature demonstrates significant variations in how people view and respond to modern health concerns. It encourages us to consider why societal, communal, and human reactions to these challenges change throughout time. We can better understand politics, socioeconomic systems, and interpersonal dynamics through the study of pandemic literature. Their epidemics have spread across continents and centuries. Epidemics have had a significant impact on human history throughout history in a variety of aspects, including demographics, culture, politics, economy, and biology. The first plague outbreak sparked debate on how humans and God relate to one another. The triumph of the Haitian revolution was influenced by yellow fever. The cholera epidemic revealed how the industrial revolution made it possible for the disease to spread among people. The global influenza

epidemic of 1918-1920 led to an outpouring of altruism and self-sacrifice.

References

1. Watts S.J. (1997) *Epidemics and History: Disease, power, and imperialism*. London: Yale University Press.
2. Diamond, Jared. (1997) *Guns, Germs and Steel: The Fates of Human Societies.* New York: W. W. Norton and Company.
3. Kiple, Kenneth (1999) *Plague, pox and pestilence.* US: Phoenix Illustrated.
4. Grigsby B.L. (2004) *Pestilence in Medieval and Early Modern English Literature*. London: Routledge.
5. Hays, J. N. (2005) *Epidemics and Pandemics: Their Impacts on Human History.* New York: ABC Clio Publishers.
6. Cooke J. (2009) *Legacies of Plague in Literature, Theory and Film*. UK: Palgrave Macmillan.
7. Crawford, R. (2014) *Plague and pestilence in literature and art.* Oxford: The Clarendon Press.
8. Hempel, Sandra. (2018) *The Atlas of Disease.* London: White Lion Publishing.

CHAPTER 15

CHALLENGES FACED IN ONLINE TEACHING LEARNING IN HIGHER EDUCATION DURING COVID-19 PANDEMIC

Shilpa Umesh Nimbre
Assistant Professor, Department of Information Technology and Mathematics
The S.I.A. College of higher Education, Dombivli, Maharashtra, India.

Abstract:
With the outbreak of Covid-19, many countries announced lockdown, which lead to shut down of commercial establishments as well as schools and colleges. The lockdown changed the working of Indian education system from traditional classroom teaching to online teaching. This paper focuses on various challenges faced by the student and teachers of higher education in online teaching learning during Covid-19 pandemic.

Keywords: *Covid-19, online teaching, higher education, challenges, teacher, student*

INTRODUCTION

In March 2020, WHO(World Health Organization) declared COVID -19 as a global pandemic. The virus spreads mainly between people who are in close contact with each other, which resulted in millions of death [1]. To avoid the spread of virus many countries announced a nationwide lockdown. Consequently, all commercial establishments including schools and colleges were shut down. And this led new ways of teaching online. Covid-19 pandemic has totally changed the working system of the Indian education sector. It was a challenge for academic institutions as well as students to shift from traditional to online learning.

But conducting online classes is itself was a great challenge for teachers who are habitual of conducting classroom teaching from many years. But as said change is inevitable , now teachers are taking help of many online platforms like google meet, zoom , Microsoft teams etc to conduct their lectures online. Course content is prepared using various tools like power point, prezi . Course content is shared through

many learning management systems. Students are getting habitual of attending the online lectures. Researcher surveyed the undergraduate students as well as teachers and tried to understand the challenges faced by them in online education during the COVID-19 pandemic.

METHODOLOGY

Research methodology was based upon survey. The online survey named "Challenges faced in Online teaching learning in higher education during COVID-19 pandemic' was conducted online using google form. The purpose of the survey is to find out the challenges faced by higher education teachers and students.

Data is collected in online mode through google form. The Whatsapp application was used to distribute questionnaire to teachers and students of higher education. A total of 89 questionnaires were collected and analyzed to find out results.

DATA ANALYSIS AND FINDINGS

Conducting online classes is itself a great challenge for teachers who are conducting classroom teaching from many years. The researcher studied various challenges faced by teachers as well as students during Covid-19. The questions and analysis of responses given by teachers as well students is given as follows:

1. Difficulty to adapt to online platform because of insufficient technical/software knowledge in the Initial phase of online teaching/learning

Usage of online platform for teaching/learning was new to many teachers and students. Many teachers are expected to record videos, present course content , use different tools to draw, write. And students are also able to access the content provided by teachers. So proper knowledge of software's and tools was necessary requirement. But are our teachers and students were ready for online platforms? So researcher asked respondents whether it was difficult to adopt to online platform because of lack of technical or software knowledge about using the online platform.

14.3% of the teacher respondents were strongly agreed, 42.9% of the respondents were agreed while 28.6% of the respondents were neither agreed nor disagreed. 7.1% of the respondents disagreed and 7.1% strongly disagreed that they faced difficulty to adapt to online platform because of insufficient technical/software knowledge.

29.3% of the student respondents were strongly agreed, 29.3% of the respondents were agreed while 33.3% of the respondents were neither agreed nor disagreed. 5.3% of the respondents disagreed and 2.7% strongly disagreed that they faced difficulty to adapt to online platform because of insufficient technical/software knowledge.

So majority of students as well as teacher faced difficulty in adapting online platform, but as time passed by teachers as well as students also responded that as they are becoming familiar with the various tools, software for online teaching, they seem it is easy now. And as a teachers they are exploring various ways to make their session interactive.

2. Preparation of course content

During traditional teaching teachers used books, blackboard but for online teaching there was a need of preparing online content. Researcher asked whether it was time consuming to prepare online content.

28.6% teacher respondent are strongly agreed with the question, 57.1% agreed, 7.1% are neither agreed nor disagreed and remaining 7.1% were strongly disagreed

But at the same time they know that developed online course content will be used in future and it will not consume time as previous time consumed in preparation of course content.

Even student had to prepare the material as a part of their project/assignments, access study material. 12% student respondent agreed, 9.3% agreed, 25.3% were neutral, 42.7% disagreed and 10.7% students strongly disagreed that they had any difficulties while preparing project documents, accessing study material because of poor computer knowledge. This shows that many students are having sufficient computer knowledge to prepare electronic content for their assigned work.

3. Problem of electricity/internet connectivity

Online teaching cannot be imagined without proper electricity and internet connectivity. Electricity cut down is major issue in rural area. Facilities that provide internet such as Wi-Fi, broadband connections are not installed as it is not required daily basis by the people in rural area. This was the major problem faced by teachers as well as students. So researcher asked about this issue.

As a response 21.4% teacher respondent strongly agreed , 64.3% agreed that they faced problem of electricity/internet connectivity. 7.1% disagreed and 7.1% strongly disagreed to the above question. 37.3% student respondent strongly agreed, 33.3% agreed, 24% were neutral and 5.3 % disagreed to the question.

So overall, majority of students and teachers faced the problem of electricity/internet connectivity during online teaching/learning.

4. Difficulty to reach students in remote area.

Many students had migrated to their hometown due to lockdown, and many of them were in a region where internet connectivity as well electricity was a problem. So researcher asked the respondent whether they faced any difficulty to reach students in remote area.

28.6% strongly agreed, 64.3% agreed and 7.1% strongly disagreed to the difficulty.

5. Difficulty to observe students attention, maintain student-teacher bonding.

The most crucial step to learning is paying attention. Everywhere whether in the classroom, while reading a textbook, practicing a skill for work, complete attention is absolutely critical. Also student-teacher bonding plays important roll in students development. Researcher asked our respondents whether they are able to observe students attention and maintain student- teacher bonding.

71.4% teacher respondent strongly agreed that it is difficult to observe student attention, 21.4% agreed while remaining 7.1% strongly disagreed.

About 26.7% student respondent strongly agreed, 36% agreed, 29.3% were neither agreed nor disagree, 5.3% disagreed, 2.7% strongly disagreed with the difficulty of maintaining student-teacher bonding/relationship.

28.6% teacher respondent strongly agreed, 50% agreed, 14.3% neither agreed nor disagreed , 7.1% strongly disagreed with the difficulty in maintaining student-teacher bonding.

So overall most of the teacher and students agreed that online teaching learning affected the student-teacher bonding.

6. Difficulty in teaching mathematical/numerical subjects

To teach mathematical problems blackboard/whiteboard plays a major role, as it is easy to write formulas and solve problems. Therefore researched asked respondents whether teachers are facing difficulty in teaching mathematical/numerical subjects.

42.9% teacher respondent strongly agreed, 42.9% agreed to the difficulty of teaching mathematical/numerical subject, 7.1% disagreed and 7.1% strongly disagreed

7. Online practical session/demonstration

Practical implementation of topic plays important role in understanding some concepts specially in technical subjects. But whether it is feasible to conduct online practical sessions for teacher as well as students? Because most of the them might not be having basic requirements such as desktop, hardware required to support installation of software ,etc. as per their technical subjects.

When asked about the handling of practical session/demonstration because of lack of practical aids like instruments, software's 21.4% teacher respondent strongly agreed, 57.1% agreed that they had difficulty in handling practical sessions, 7.1 % were neutral as well as disagree and strongly disagreed.

8. Evaluation of student's performance

Evaluation of student's performance must be done through various ways such as periodic exams, group discussion, attendance. So researcher asked respondents how difficult it was to evaluate student performance as well as whether the online tests and quizzes effectively evaluate the knowledge of students.

21.4% teacher respondent strongly agreed, 57.1% agreed that it was difficult to assess student performance, 14.3% disagreed while 7.1% strongly disagreed.

14.3% teachers strongly agreed, 35.7% agreed that online tests and quizzes effectively evaluate the knowledge of students, 28.6% were neutral, 7.1% disagreed, 14.3% strongly disagreed.

9. Health issues like backache, headache, eye related problems etc

Health issues were major concerns as many people started doing work online. Are teachers and students facing this problem too? Researcher asked about this to respondents.

21.4% teacher respondent strongly agreed, 64.3% agreed that they faced health issues like headache, backache, eye related problems, 7.1% neutral as well strongly agreed.

32% student respondent strongly agreed, 21.3% agreed, 25.3% neutral, 16% disagreed and 5.3% strongly disagreed with the question.

10. Better mode of teaching

When asked about which is the better mode of teaching, 50% of teacher respondent opted for offline and mixture offline/online each. 42.7% of student respondent like offline mode, 49.3% mixer of offline/online mode and only 8% liked online mode.

CONCLUSIONS

Lockdown during Covid-19 pandemic shifted the traditional classroom teaching to online teaching. Initially teacher as well as students faced problem while adopting to online education because of lack of technical skills , they are now becoming used to of the online teaching platforms. The major challenge was to teach students of remote area because of frequent electricity cut down, lack of internet facilities, mobile devices, even some times have to share the device with siblings. Also online teaching learning causing health issues among teachers and students. Instead of only online lectures, most teachers and students are preferring for hybrid of offline and online teaching for better teaching/learning experience.

REFERENCES

1. https://www.worldometers.info/coronavirus/
2. Lokanath Mishra ,Tushar Gupta , Abha Shree ,"Online teaching-learning in higher education during lockdown period of COVID-19 pandemic", International Journal of Educational Research Open , https://www.kaspersky.co.in
3. Chakraborty P, Mittal P, Gupta MS, Yadav S, Arora A. "Opinion of students on online education during the COVID-19 pandemic". Hum Behav & Emerg Tech. 2020;1–9.
4. Dr. Shabnam Gurung, "Challenges Faced By Teachers In Online Teaching During Covid- 19 Pandemic", The Online Journal of Distance Education and e-Learning, January 2021, Volume 9, Issue 1

CHAPTER 16
COVID-19 AND ITS IMPACT ON THE ENVIRONMENT

N. M. Patil
Assistant Professor, Department of Commerce, The S. I. A. College of Higher Education, Dombivli (E), Dist. Thane, Maharashtra State, India

Tarun Sadanand Kuckian
Assistant Professor, Department of Management Studies, The S. I. A. College of Higher Education, Dombivli (E), Dist. Thane, Maharashtra State, India

Abstract
Environmental degradation is one of the biggest problems, that the entire human race is facing today. In spite of all the efforts taken to restore environmental quality, we humans could not improve upon the situation. However, the COVID-19 pandemic has significantly recovered the quality of the environment owing to the restrictions on industrial, economic and other human-centered activities during lockdown. The present article deals with the effects of COVID-19 induced lockdown on the environment.

Keywords: *COVID-19, Environment, Pollution, Biodiversity, Waste*

Introduction:

In the Chinese city of Wuhan, an unusual phenomenon was noted in connection with the seafood market during the month of December 2019, which was immediately reported to the World Health Organization (WHO). The testified microorganism had been identified as a novel coronavirus named COVID-19 which soon spread to almost all parts of the world. W.H.O. declared it as a pandemic which directly or indirectly affected most of the life forms across the world. Depending on the severity of the situation, the governments of several countries adopted different measures like restrictions on travel, tourism and transport and imposed lockdown to limit the spread of the pandemic. Many cities and villages across the

globe were under lockdown for a period from some weeks to several months. The major sectors contributing to environmental degradation like industry and transportation were suspended for a certain period of time. Restrictions on human mobility was an effective strategy adopted to control the spread of disease. All these decisions had positive as well as negative effects on the environment.

Effects on Environmental Conditions:

The spread of coronavirus pandemic 2019 (COVID-19) all over the world had significantly influenced human lives. Though the situation of the pandemic was difficult to control, the positive side of it was that, it compelled us to reassess our lives and reorganize them in a way that has a minimum adverse impact on the environment. Though the physical world was affected due to the pandemic, some of its positive effects on the environment were also observed. With this background, the present study is aimed at exploring both positive and negative impacts of COVID-19 on the environment.

Sharp decline in air pollution:

Lockdown, during the period of the pandemic had caused an unparalleled reduction in economic activities and transport all over the world. Reduction in the release of air pollutants from thermal power plants, auto vehicles, wood burning, forest fires, oil refineries, industries and factories had significantly improved the quality of atmospheric air in cities and villages across the country. The air quality mainly improved due to the minimized number of auto vehicles being used and the closure of factories. The decline in the emission of various gases like Methane (CH4), Carbon dioxide ($CO_{2,}$), Chlorofluorocarbon (CFC), Nitrous Oxide (N_2O), etc. had reduced the greenhouse effect. Smog had given way to the clear skies in metro cities in the northern part of India.

Improvement in surface water quality:

Water pollution is a common phenomenon in most of the developing countries, where industrial effluent and domestic sewage are dumped into rivers without any treatment. As the major industrial sources of water pollution had shrunken during the lockdown, it had reduced the pollution load. Most of the rivers had reached a substantial level of purity because of the absence of industrial effluent being discharged into the water bodies. It is because of the decline in

tourist visits to the coastal areas, that water pollution in beach areas had also reduced in the coastal regions. As the amount of waste generation had reduced in many countries, it had resulted in low levels of water pollution. Less use of water in many industries resulted in reduction in the effluent and reduced the contamination of surface and groundwater. Thus, there was an improvement in surface water quality.

Declined energy demand:

The spread of COVID-19 in a short period of time had brought a reduction in industrial activities, traffic flow, and tourism. Thus, the energy demand collapsed everywhere. China, U.S.A., and Europe saw a significant reduction in energy demand. Subsequently, in India, it was because of the complete lockdown, that the demand for energy dropped by almost 30%. Limitations on economic activities reduced the global demand for energy as there was a drop in electricity needs. Declined travel activities had contributed to a substantial fall in demand for mineral oil with fewer auto vehicles on the road and a steep reduction in demand from the shipping industry. As airlines grounded their fleets across the world and almost all the countries had locked their airports, the jet fuel requirements fell drastically. Demand for coal, natural gas, mineral oil, and nuclear power had dropped substantially.

Reduction in Noise Pollution:

In India, the lockdown needed by Covid 19 pandemic was initially imposed from 25th March 2020 to 14th April 2020 (21 days). It was later extended periodically till 31st May 2020. The unlock mode took place in a phased manner with Unlock 1.0 extending from 1st June 2020 to 30th June 2020, Unlock 2.0 from 1st July 2020 to 31st July 2020, and so on. It is important to note that, during the lockdown stage and even in the initial phases of the unlocking stage, there were severe restrictions on the celebration of festivals and social functions including marriage and other large-scale gatherings. These restrictions were followed strictly in the Red Zones and to some extent with restrictive conditions in Orange Zones. Even during the unlock phases, the restrictions were lifted in a gradual manner. The cumulative effect of all these restrictions on economic and social activities was a reduction in noise pollution levels across the country. According to research conducted on the noise pollution during

Ganesh Chaturthi in Maharashtra, where the festival is celebrated with huge splendor, there was a significant reduction in the noise pollution levels in 2020 as compared to the previous years (2018 and 2019). This was owing to the absence of public festivities that is usually accompanied by loudspeakers and music systems, a limited number of people in a public celebration of festivals, and also a reduction in vehicular traffic.

The reduction in vehicular traffic immensely contributed to the reduction in noise pollution especially, in urban centers and crowded cities. The complete halt of industrial and commercial activities, vehicular traffic, international travel, and public gatherings helped bring down the level of noise disturbance. Several types of research studying the noise levels in pre and post-lockdown periods in major cities in India attest to this fact. The noise levels were reduced in industrial, commercial as well as residential zones during the lockdown phase when the restrictions were strictly imposed. However, this was a temporary interval owing to restricted road traffic during the lockdown period and was expected to revert to original levels during the unlock phases.

Restoration of ecology:

It is because of the less human interference in the natural environment during the lockdown, that plants could get good quality air and water. The amount of oxygen and nutrients were available sufficiently due to low levels of air and water pollution. It had resulted in the healthy growth of plants. Illegal cutting of trees in the forest area reduces the green cover of land, which is essential for maintaining the ecological balance of any area. Unlawful trade creates favorable conditions for the capture of living animals and carries them to the cities and markets, which increases the risk that pathogens spread to human beings. Restrictions on human movements during lockdown could slow down the rate of deforestation and stop the illegal wildlife trade.

Positive impact on aquatic life:

The covid 19 induced lockdown which led to a temporary pause on industrial and economic activities all over the world and significantly halted human interference in the form of tourism and fishing had an overall positive impact on aquatic life and marine ecology. The temporary lockdown enforced strictly by the

administration had led to improvement in the quality of river water and aquatic ecosystems. The major sources of river water pollution are untreated industrial sewage, heavy metal contamination, agricultural fertilizers, industrial effluent and domestic sewage, urban wastewater discharge etc. Several pieces of research conducted across the world and in India revealed that the cessation of industrial and economic activities had led to an improvement in river water quality due to the decrease in water pollution during the lockdown period. One remarkable case is of River Ganga which holds both spiritual and economic importance in the lives of Indians. Following the several weeks' lockdown, the water of River Ganga in the upper stretches was found to be fit for drinking, and the water in the middle and lower stretches fit for bathing. Several factors that resulted in this positive change include a reduction in the discharge of industrial effluent in the river body, increased rainfall in 2020, a decrease in electricity demand due to the shutting down of industrial and commercial operations affecting hydropower production and restrictions on religious activities including holy bathing in the river waters and halt in tourism. Similar studies conducted on other rivers in India like River Damodar, Gomti, Thirumanimuthar etc. conclude that water quality of these rivers had improved during the initial four phases of lockdown when industrial and other human activities were severely shortened. The major factors that were responsible for rejuvenating marine ecology and aquatic life during lockdown were reduction in water pollution, restriction and stoppage of human activities such as tourism, fishing and religious activities. This gave an opportunity to the aquatic environments to revive and rejuvenate. The hatching rate of the famous Olive Ridley Sea turtles on the beaches of Odisha also increased owing to restrictions on tourism and the absence of plastic debris at the nesting beaches.

Loss of biodiversity:

The pandemic has had a deep impact on efforts being made to stop behavior that is destructive to biodiversity. The inability to implement conservational measures had encouraged the loss of biodiversity. Illegal hunting, deforestation and fishing during lockdown had caused a loss of biodiversity in some places. National parks particularly in India reported incidents of clashes between wildlife hunters and forest guards. As the administrative officers were kept busy in emergency services, wild animals and birds were hunted

due to the nonappearance of monitoring. Unlawful fishing had surged in some parts of the world as regular fishing boats took undue advantage of the reduction in patrols.

Generation of plastic waste:

Personal Protective Equipment or PPEs include face masks, gloves, body protection gowns, shoes and head covers, face shields, goggles etc. These materials are usually made from polypropylene and other plastic-based materials. The disposal of the used PPE waste had become an environmental challenge owing to the non-degradable nature of the materials used to manufacture them. Segregation and effective disposal of PPE kits at the household level has been a difficult task for local administrations. The one-time use nature of these PPE kits meant that the quantity of discarded materials would be huge. With reference to water pollution, COVID-19 related waste disposal had added an altogether new challenge to the already existing problem of managing plastic waste in water bodies. Some of the local waterbodies had been flooded with tonnes of PPEs, face masks, gloves and other covid related waste. This may adversely affect the aquatic life forms in terms of entanglement of PPE litter and consumption of the harmful material by the marine organisms.

Conclusion

The present study concludes that the outbreak of COVID-19 had improved the environmental conditions in most of the places in the world. Reduction in carbon emission due to declined use of fossil fuel, increased cleanliness of water, enrichment of ecology, and low pollution levels were the positive effects of the pandemic, while loss of biodiversity in some places and generation of plastic were the negative effects of it. The COVID-19 induced lockdown has provided us an opportunity to rethink the human impact on the environment and make a commitment to follow the principles of sustainable development in our daily routine.

References:

1. Aravinthasamy P., Karunanidhi D., Shankar K., Subramani T., Setia Raj, Bhattacharya P. and Das Sayani. (2021) COVID-19 lockdown impacts on heavy metals and microbes in shallow groundwater and expected health risks in an industrial city of

South India, Environmental Nanotechnology, Monitoring and Management, Vol. 16, Pp. 1-9.

2. Chakraborty. B., Bera B, Adhikary P., Bhattacharjee S., Roy S., Saha S., Ghosh A., Sengupta D. and Shit P. (2021) Positive effects of COVID-19 lockdown on river water quality: Evidence from river Damodar, India, nature portfolio, Scientific reports, Pp.1-16.
3. Dennis R. (2020) Lockdown Effect: Threaded species of Birds Return Amid Lockdown, Icytales, April 20, 2020.
4. Kalawapudi K., Singh T.,Vijay R., Goyal N. and K. Rakesh (2021) Effects of COVID-19 Pandemic on festival celebrations and noise pollution levels, Noise Mapp. 8 (1), Pp.89-93
5. Loiwal M. (2020) World Environment Day: Lockdown helped migratory birds reach Bengal a month earlier, India Today, Jan. 5, 2020.
6. Mishra A., Das S., Singh D., Maurya A. (2021) Effect of COVID-19 lockdown on noise pollution levels in an Indian city: a case study of Kanpur, Environmental Science and Pollution Research, *28*(33), Pp.46007-46019.
7. Mvovo I. and Magagula H. (2022) Prevalence of Covid-19 personal protective equipment in aquatic systems and impact on associated fauna, Springer, Environment Systems and Decisions, Environ Syst Decis.
8. Singh V. and Mishra V. (2021) Environmental impacts of coronavirus disease (COVID-19), Bioresource Technology Reports 15, Pp. 1-7.
9. WHO (2021) Coronavirus Disease (COVID-19) Situation Report-197.

CHAPTER 17
CORONA PANDEMIC AND EDUCATION WORLD

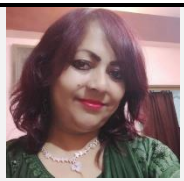

Dr. (Mrs.) Rizwana Siddiqui
Asst. Prof. at Dept of education Soban Singh Jeena University Almora Campus

Ms. Vandana
pre Ph.D. Scholar at Dept. of education Soban Singh Jeena University Almora Campus

Abstract

The impact of COVID-19 can be seen in every sphere of life. Especially when it comes to education; this is the biggest sector that has been adversely affected by this pandemic. It forced many great nations to enforce lockdown thereby bringing everything to an abrupt halt for a certain period of time. The teaching learning and evaluation methodologies have been completely altered by this pandemic. The digitalization of education became a necessity in order to provide seamless education. This paper would be discussing the problems faced by the students in India who are pursuing school and higher education during this pandemic. This paper also tries to find out the positive & negative impact it had on the teaching, learning and evaluation method & what steps our policymakers have taken in order to provide seamless education to the students who are pursuing school and higher education in India. Some suggestions have also been pointed out in this paper with regard to how we can further revolution in the teaching & learning process to improve the experience of both; teachers and learners during the pandemic.

Key words : *corona pandemic , online class , digital initiatives*

Introduction

On March 11, 2020 World Health Organization (WHO) declared Covid-19 as a pandemic. Covid-19 has affected more than 4.5 million peoples worldwide (WHO). In India, the first affected case of Covid-19 was detected on 30 January 2020

in the state of Kerala and the affected had a travel history from Wuhan, China (Wikipedia). In India, the first death was reported on March 12, 2020 and the nation observed Janta Curfew for a day on March 22, 2020. India again observed 14 hours Janta Curfew on March 24 to combat the Coronavirus pandemic and assess the country's ability to fight the virus. Then, the 1st phase of lockdown was announced by the Prime Minister on March 25, 2020 for 21 days. Monitoring the effects of the virus, Indian Government has been extending the lockdown period in different phases and the lockdown 5.0 was declared on April 30 which is effective from 1st June to 30th June 2020. In all the phases of lockdown starting from lockdown 1.0 to lockdown 5.0, the educational institutions throughout the nation have never got any relaxation to start their educational activities. This decision is affecting the various sectors in the country. The education sector is also affected by the lockdown which is a critical determinant of the economic future of the country. As per the directives of the government, all school, colleges and universities are closed. Whole education system is disrupted by the pandemic COVID-19. Thus, pandemic Covid-19 impacted significantly on the education sector. According to the UNESCO report, Covid-19 has affected nearly 68% of total world's student population as per the data taken during 1 week of June 2020. Outbreak of Covid-19 has impacted about 1.2 billion students and youths across the globe by school and university closures. Several other countries have also implemented localized closures impacting millions of additional learners. In India, more than 32 crores of students have been affected by the various restrictions and the nationwide lockdown for Covid-19 (Wikipedia). Most Governments around the world have temporarily closed educational institutions in an attempt to control the spread of the pandemic Covid-19. This worldwide closure has Governments around the world are making efforts to diminish the immediate impact of closure of educational institutions particularly for more vulnerable and disadvantaged communities and trying to facilitate the continuity of education for all using different digital modes of learning.

Objectives

The present study is focused on the following objectives

- Highlight the impact of covid -19 on school education
- Highlight the impact of covid -19 on higher education sector

- Twelve various emerging digital initiative of India for education
- Positive and negative impact of covid -19 on education

Methodology

Various reports of national and international agencies on Covid-19 pandemic are searched to collect data for current study. The information are collected from different authentic websites, journals and e-contents relating to impact of Covid-19 on educational system of India.

School education during corona pandemic

In order to raise the skills, best public policy tool available is going to school. School is a place where children can have fun and raise social awareness and social skills. The main motive of going school or being in school is that it enhances the ability of the child. Spending a relatively short period of time in school increases skills and ability. On the other side missing the school or not attending the school will have negative effect on the skill growth The closure of the schools has affected the structure of learning and schooling. Firstly, it affected the teaching and assessment methodologies. Online teaching methods are adopted by the few private schools that are handful in taking online classes. In those schools children are taking classes online. On the other side low-income private and government schools have complete closure and not having the access to e learning solution. It is disrupting the learning of students. Parents are facing various issues because of the change in teaching methodology.

With such challenges of distance learning , many children may drop out leaving little scope for return unless affirmative and immediate actions are taken. Most likely the increased economic insecurity , lack of social protection and reduced household income will push such children from poorer households to contribute to the family income, leaving their education aside .Even those who will continue their education once schools reopen may struggle to catch up their counterparts who have access to online learning . The two year gap in schooling will make the learning more difficult and less efficient in the coming years for such people which will eventually make them incompetent for the formal sector job. Despite continuing their education , they may not be able to meet the minimum threshold

required for employment in the formal sector and will in an informal sector only.

Even for those who can readily afford online learning facilities , the move was not as seamless as it appears to be. Online education has entailed a delayed learning process , lack of personalized attention , poor student-teacher relationship , and a lack of motivation among students. Apart from this , many people usually do not possess a healthy learning environment at home- a peaceful study area is a luxury for many. For instance , in 2017-2019, 25% of Indians were living in single room houses. How can a child learn if two or four adults occupy a single room? Thus school education in India during pandemic become a great challenge for everyone.

Higher education during corona pandemic

The shutdown of universities has also affected the student's learning in universities. In order to ensure the continuity in institutes and universities, one immediate measure is essential. To conduct the class smoothly, online teaching methodology is adopted. Learning management software and open-source digital learning solutions are adopted by the universities to run online classes. Higher education is a critical determinant of the economic future of the country and higher education sector has significantly affected by the pandemic as well. Many students from India enroll in universities abroad. Due to the global closure of the institutes and universities, it is expected that it will reduce the demand for the international higher education. The main concern which is coming in the mind of everyone is the effect of the pandemic on the rate of employment. Because of the current situation, graduates who have recently completed their graduation are fearing from the withdrawal of job offers from corporate. Teaching methodology in institutes and universities has also transformed due to the lockdown in India. It has been replaced the old chalk-talk model with the new technology. E-learning solutions are making teaching and learning possible in this situation but engagement is a big problem attached with the e learning. The policy makers are trying to solve the problem of engagement of students and tackling the digital divide. In order to manage the crisis in Indian education section, a multi-pronged strategy is necessary in the long term. An effective education and well rounded practices are needed in India to build the capacity of young minds in this time of crisis. To ensure the overall progress in India, It will drive employability, wellbeing,

health and productivity through the development of skills. Pandemic Covid-19 has severely affected the total educational system of India as well as the globe but some of the most impacted areas of higher education of India are as pointed below.

- Destabilized all educational activities:
- Mixed impact on Academic research & Professional Development
- Reduced employment opportunities
- Severely affected the educational assessment system

Digital initiative for education

- **DIKSHA**

In September 2017, the government introduced DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing), a national portal for school education, to offer school curriculum-based engaging learning materials to students, teachers, and parents. The portal supports >18 Indian languages and has been implemented by 35 states/UTs.

- **SWAYAM**

In 2017, the government launched Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds (SWAYAM) to offer an integrated platform for online courses at affordable costs to all citizens, especially the underprivileged section in the country.

- **SWAYAM PRABHA**

In 2017, SWAYAM PRABHA, a group of 34 DTH (Direct-to-Home) channels dedicated to broadcasting educational programmes 24x7, was introduced. The channels broadcast new content for a minimum of four hours every day, and this is repeated five times in the same day for students to select a convenient slot.

- **ePathshala Portal**

In 2015, the government launched the ePathshala portal to build a resource store for educational videos, audios, flipbooks, etc. Resources on the portal are available in Indian languages such as Hindi, English and Urdu and can be accessed via smartphones, laptops, desktops and tablets.

- **NISHTHA**

In FY21, the National Initiative for School Heads and Teachers' Holistic Advancement (NISHTHA) - Phase II was launched at the secondary level to tailor modules for online education. As per the Union Budget 2021-22, ~5.6 million teachers will be trained under the NISHTHA training programme in FY22.

- **Virtual Labs**

The Government of India introduced a pilot virtual lab in 2009 and the main one in 2010 to enable undergraduate and post-graduate students (pursuing science and engineering courses) remotely access the labs and enhance their study experience. The virtual labs offer students a Learning Management System and various study aides such as video lectures, web resources, self-evaluation and animated demonstrations

- **e-GyanKosh**

e-gyan khosh is a Digital Repository to store and share the digital learning resources which is developed by the Open and Distance Learning Institutions of India. Items in eGyanKosh are protected by copyright, with all rights reserved by Indira Gandhi National Open University (IGNOU).

- **Gyandarshan**

Gyandarshan is a web- based TV channel devoted to educational and developmental needs for Open and Distance Learner. A web-based TV channel devoted to educational and developmental needs of the society .

- **Gyandhara**

Gyandhara is an internet audio counseling service offered by IGNOU. It is a web radio where students can listen to the live discussions by the teachers and experts on the topic of the day and interact with them through telephone, e- mail and through chat mode.

- **e-Adhyayan**

e-adhyan (e-Books) is a platform that provides 700+ e-Books for the Post-Graduate courses. All the e-Books
are derived from e-PG Pathshala courses. It also facilitates play-list of video content e-Adhyayan (e-Books) is a platform that provides 700+

- **e-Pathya**

e-pathya (Offline Access) is one the verticals of e-PG Pathshala which is software driven course/content package that facilitates students pursuing higher education (PG level) in distance learning as well as campus learning mode. It also facilitates offline access

e-Pathya (Offline Access) is one the verticals of e-PG
National Digital Library of India (NDLI).
National Digital Library of India (NDLI)

NDLI is a repository of e-content on multiple disciplines for all kinds of users like students(of all levels), teachers, researchers, librarians, library users, professionals, differently-abled users and all other lifelong learners. It is a virtual repository of learning resources with a single-window search facility. It is also available to access through mobile apps.

Positive impact of covid -19 on education

The following points may be considered to be a positive impact

- Moved towards blended learning
- Rise in the use of learning management
- Enhance the use of soft copy of learning materials
- Improvement in collaborative work
- Rise in online meetings
- Enhance digital literacy

Negative impact of covid -19 on education

The education sector has suffered a great deal from the outbreak of covid 19. It has produced several negative impacts on education . some of which are as pointed out.

- Educational activity has been hindered
- Unprepared teachers/students for online education
- Reduced global employment opportunities
- Increased parents responsibility for educating their home
- Loss of nutrition due to school closure
- Provision to global education
- Payment of school fees, college fees have been delayed

Suggestions

- Digital divide should be reduced by fixing the internet gap in remote area and urban area which would facilitate students to learn digitally.
- Skilled teachers for e learning and online classes. Invest in teachers and provide them with continuous support to be able to provide e-learning and distance education to all their students during school closure and afterwards through a blended form of instruction.
- Develop a distance learning strategy for the most marginalized. To be more resilient in the face of another

systemic shock, contextualized strategies to promote distance learning are needed to ensure that the most marginalized children do not drop out and can continue learning.

- Methodology , certification, assessment parameters have to be revised and shall be modified according to the requirements of the current situation keeping in mind the quality benchmark'
- Improve data collection to guide targeted investments. Real time data needs to be collected through comprehensive monitoring.

Conclusion

The closure of schools, colleges and universities is interrupting the learning of students and also disrupting the internal assessment and public assessments for qualifications. The traditional method of teaching has been replaced by the online teaching. One side online teaching is providing opportunity to the students for learning another side there are various issues are attached with the new methodology of teaching. It is difficult to imagine colleges and university education without the use of digital resources which has provided different educational and academic information. However it is also necessary to understand that it shouldn't reinforce structures of power and inequality. It should not create digital divide between rich and poor. As we cannot expect in country like India to have availability of all required resources due to different socio-economic conditions in India. Online mode of learning can be the best mode of teaching Many digital initiatives were taken by the Indian government for students. Although with a many difficulties and challenges there are some positive and negative impact of corona pandemic in education. It is important that colleges and University understands the experience and issues of the students and prepare according the further and design the study pattern in such a way that all students benefits.

References

1- Bjorklund, A and K Salvanes (2011), "Education and Family Background: Mechanisms and Policies", in E Hanushek, S Machin and L Woessmann (eds), Handbook of the Economics of Education, Vol. 3.

2- Choudhary, R. (April 16, 2020). COVID-19 Pandemic: Impact and strategies for education sector in India. https://government.economictimes.indiatimes.com .
3- Dishtavo. (2020). Retrieved from Digital Integrated System for Holistic Teaching and Virtual Orientations: http://dishtavo.dhe.goa.gov.in/index.php.
4- Dr. Priyanka Dhoot. (2020). Impact of COVID-19 on Higher Education in India. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), 6-7.
5- Fredriksson, M., & Ihlen. (2018). Introduction: Public Relations and Social Theory 1. In Public Relations and Social Theory (pp. 1-16). Routledge.
6- Gopinath, M. (2020, june 10). Covid-19 crisis brings opportunity to expand the autonomy of public universities. The Indian Express.
7- Gopinathan, K. R. (2015 , April 19). Is online the way forward? The Hindu.
8- How Covid-19 pandemic has created spike in demand and popularity of e-learning. (2020, October 28). India Today.
9- Jena, P. K. (18-06-2020). Impact of COVID-19 on Higher Education in India. International Journal of Advance Education and Research, 77-81.
10- K.Ramachandran, C. a. (2020, April 14). Comment | Higher Education post-COVID-19. The Hindu.
11- Piopiunik, M, G Schwerdt, L Simon and L Woessman (2020), "Skills, signals, and employability: An experimental investigation", European Economic Review 123: 103374.
12- Shafi, Z. (2020, August 19). Impact of Covid-19 on Higher Education in India. The Indian Express.
13- Tarkar p. (2020). Impact Of Covid-19 Pandemic On Education System. International Journal of Advanced Science and Technology, pp. 3812-3814.
14- Tari, Amonkar. (5,Jan.2021). Impact of COVID on Higher Education in India. Educational Resurgence Journal, Volum2
15- UNICEF. (October 2021). India Case Study Situation Analysis on the Effects of and Responses to COVID-19 on the Education Sector in Asia
16- welfare, M. o. (10-09-2020, september Thursday). Revised SOP on preventive measures to be followed while conducting examinations to contain spread. Retrieved from Ministry of

health and family welfare Government of India: https://www.mohfw.gov.in

17- World Health Organization. (2020). WHO Director-General's opening remarks at the media briefing on COVID-19-11 March 2020. Geneva, Switzerland.

CHAPTER 18
COVID-19: FROM POSITIVE TO NEGATIVE TO POSITIVE AGAIN

Dr. Usha Masram
Assistant Professor (English)
Govt. Science College Jabalpur (MP)

ABSTRACT
The connotation of being "a positive person" in life has changed suddenly and sharply. Covid-19 has turned the world upside down. It is better to be called a "negative person" in medical terms that might decide our social status too. Our social life which depends on our overall wellness has gone for a toss since the day US president Donald Trump's tweet represented the status of the world: "Social distancing". He was bang on, but no, we are still socially connected, but physical distance is increasing by day. Mothers and dads are not kissing their children – a most disturbing phenomenon somewhere similar to the days when measles was the order of the day. Till the 1980s, we contracted it at least once and felt like an outcast for at least nine days. Today, the quarantine period is reduced from almost 20 days to 17 to 12 and now 10. History repeats itself. The Corona virus or COVID-19 is a disease based on an unknown virus. It seems that it started in China and has widely spread in almost all countries in the world. This pandemic situation is one of the widely spread diseases in recent history. However, there was influenza pandemic in 1918with the exact number of deaths still unknown. Some believe that the death toll would have been about 50–100 million people. A sociological analysis on COVID-19 is very important because there is a wing comprising dominant medical experts in the control and management of the disease. Naturally, anyone would think of a pandemic situation in very negative terms due to its emotional, socio-economic, environmental, political and cultural factors. However, it is also positive due to certain factors that help to reintegrate and reorganize the social system as a whole. The battle against Covid is long and hard but all is not lost. There are positive sides to the battle that need to be looked at too. These views might help us change our

outlook towards life and help us fight and possibly defeat the most feared disease at present, unless, of course, the symptoms are of very serious nature.

***Key Words**: disturbing phenomenon, quarantine, reintegrate, social distancing.*

When looked at generally, COVID-19 is a disease spreading through close human contacts in day-to-day social relationships. It is a virus and certain sections also consider this to be a man-made virus or biological weapon. There is no conclusive evidence on who made it or for what purpose. The majority of those directly affected are the elderly and a considerable number of people are dying. The percentage is changing from country to country. When the Indian scenario is analysed, the COVID-19 impacts will be the most painful here when compared to other countries. The social system prevailing in India is not simple in terms of managing the pandemic situation. It is very clear that any society which has a high social disparity may have to face the most negative impacts. The negative impacts towards the family, communities, nations, regions and the world push them backward in any sector or socio-economic and political spheres. Several elements which cause negative impacts can be identified as illnesses or COVID-19, pandemic situation, deaths, social distancing, curfew and the lock-down of the entire functional mechanism of a single society and the global network in production, trade, supply chain networks, transportation, social networking and political network. Therefore, this paper has given similar attention to the negative impacts of COVID-19 at the local, regional and global contexts based on the situations during pandemics.

The pandemic situation has spread as a global pandemic disease which is creating fear, stress, stigma, minimising social networks, etc. Health and medical systems, especially biomedical systems, have taken their maximum effort but the healthcare system itself is affected due to various conditions in nature. Thus, there are many deaths reported though the biomedical system has made an enormous effort. High rate of deaths due to various illnesses or complications of diseases occurring amongst the patients, especially the elderly who are affected by COVID-19. Impossible tasks and challenges to the medical staff, supporting staff, social workers and

health administrators at local, domestic and/or global levels. The World Health Organisation (WHO) is the primary entity followed by other United Nations (UN) agencies which are responsible during a regional and/or global pandemic situation. Some countries such as Italy, Spain, USA and China and a few other European countries are facing a much higher disintegration in all subsystems of society. Thus, the social system needs a complete reorganisation and integration to survive. Dismantling the family relationship and intimate relationships with relatives, neighbours, various communities, etc. These conditions may lead to interpersonal conflicts and domestic violence in the family. Losing the knowledge, experience, and services of the elderly would mean that the next generation would not be able to share them for their betterment. Downward trends of family economic conditions and several lower hierarchy social classes facing unbearable economic hardships due to lack of daily or monthly earnings. Though there are market accessibility and supply chain network even under the limitation of social mobility, they do not possess the purchasing power. Disruptions of schools, universities and vocational education segments where they have to seek certain optional strategies to cover up their educational goals. Especially, they may face some irreversible gaps in their education. All supply chain networks in the education field have been interrupted.

Some people may face various kinds of stress, social stigma and depression conditions due to the malfunction of the social system. Possible social conflicts or conflicts of interests in the subsystems and this may lead towards the social system. Some institutions and organisations may not possess sufficient capacities to find remedial solutions to fill the gaps and issues. Decline in religious belief systems and practices in all religions and people may not believe in superstitious powers, in god and other divine and invisible elements in society. If the government and its subordinate authorities face some inadequate workable decisions or binding decisions and poor policy applications, it may lead to political instability in society. These conflicts of interests may cause political changes in society. Social unrest, stress and social stigma amongst the family members due to their detachment from family as a result of local and international migration. This may get aggravated further through the suspension of continental air transportation under lock-down situations. Disruptions in the productions of primary and secondary items in the society.

Especially, issues in the production of primary items may lead to social unrest in society. Less demand and lack of proper supply chain networks may aggravate the existing unrest level.

There are many people who are losing their jobs and incomes in the formal and informal sectors in the society. Service providers' (supply chain networks) inability to continue the day-to-day supply of commodities and other services due to the lack of profit margins. It may lead to detachments from such entities or services, and some people may find alternative solutions. Thus, there may be some temporal decline in supply chains in society. People might depend on rumours and other informal channels of information if there is a chaotic condition in formation channels or the dissemination of information. Especially, if there are some loop halls in supply chain networks, these rumours may work rapidly with different social and economic impacts. Certain social classes may display their egoistic ideologies at the time of accumulating primary or essential goods and services. This may cause some negative attitudes amongst other social classes by creating conflict of interests. Global economic recession and increase in poverty level in society. This may lead to financial crises such as a decline in monetary values, share market values and businesses, changes in supply chain networks, and purchasing power of the people. The country has to take alternative action to maintain a stable economy. The developing countries and poor countries may get more loans and grants for their economy to survive. Thus, there will be more economic and political dependency in these countries. As a result of this condition, countries in the hegemonic circle may directly or indirectly fulfil their hidden agendas in the territories of such dependent countries. Being South Asian countries, there are certain common social and economic characteristics that need to be safeguarded during the pandemic situation. The pandemic situation will directly influence the Sustainable Development Goals (SDGs) defined to be achieved by 2030, since some countries may not allocate financial resources to meet the country-specific targets.

Positive impacts are relatively high and some impacts are short term and most others are long term. This situation depends on the early stage of April 2020 and the shape could change due to several global socio-economic and political factors. So far, COVID-19 is in a rapid spread tendency in most countries, and there are no sufficient health and socio-economic facilities, especially supply chain

networks to address the need structure of the pandemic situation in these countries. When the Indian scenario is analysed, the COVID-19 impacts will be the most painful here when compared to other countries. The social system prevailing in India is not simple in terms of managing the pandemic situation. It is very clear that any society which has a high social disparity may have to face the most negative impacts.

People are adapting to a pandemic situation, and they also understand what the ideal social behaviour is in a similar situation. This may include government pandemic management systems and policies. They learnt about social distancing and its rules, conditions and procedures. Especially, how painful it is but useful within the family and the community. Also, they adapt themselves to the situation whilst contemplating the difference between a normal situation and a pandemic situation. As a result of social integration, families and communities engage in a high level of social cohesion or social conscience to face the difficult situation. Hence, everyone is getting used to a common lifestyle, sharing and caring for others, especially the elderly people. The death of an elderly or chronically ill person results in a reorganisation or reunion of the family unit. Though it is not an easy task to bear the psycho-social factors, finally they come to certain common conclusions. Similarly, the government and regional organisations in the global context may reunite to face the pandemic situation. For example, the SARRC countries reunited over COVID-19 and set up financial allocations for supporting poorer nations. The recent SAARC video conference on Medical systems in any country will be improved to sustainable levels to face a pandemic situation. They will understand the existing gaps in these systems. Especially, many South and East Asian countries will focus on their indigenous medical systems and how it should be integrated with the biomedical system which shows poorer results. Their dominant authority may be challenged by indigenous medical practitioners due to the strength of the indigenous medical systems to treat COVID-19 patients.

The global hegemonic power would change and a new hegemonic power relation is taking its place without any brutal war conditions and much economic and social costs. This may help in improving supply chain values and efficiency in South Asian countries. The new hegemonic power may extend its supporting hands to the developing nations and poorer countries. Thus, there will

be a competition amongst China, USA and India to support regional countries in South East Asia. The new world order may be a novel experience to the countries and their people. At the beginning it will be optimistic as per the conflict theory in sociology. If it suits the supply chain system in these countries then the people may accept the new order. There will be many discoveries and innovations in all affected sectors or spheres at national, regional and global contexts. Most of these would be medical, environment, industry and socio-cultural related. These discoveries and innovations will help to manage the supply chain in South Asian countries.

The potentials would be in domestic production and services to maintain local traditional Life styles rather than adapting to modernity. People may repose their trust in many local-level trades and business firms rather than depending on the supermarket systems. These trends strengthen the supply chain network at national and regional levels. Perhaps, there may be some new trading opportunities too amongst regional countries. Domestic production could increase due to family or cottage level agricultural practices including other small-scale handicraft productions in society. This may reduce the market demand to some extent and it may also cause negative effects amongst international trades. As mentioned above, the pandemic situation may increase the level of innovations amongst the people. Some creative-minded people may introduce many effective and productive primary and secondary things, efficient ways and means of productions, low-cost productions, technological advancements, etc. These trends too may strengthen the supply chain network at national and regional levels. People may be attracted to traditional foods and consumption practices mainly based on the human family. Intergenerational social integrity will strengthen and be consolidated by youths. There will be a lesser demand for restaurants and hotel sector supply chains in each level such as national, regional and global due to the social and physical distance. Decline in defence expenditure at national and global levels and minimising the need or requirements in the arms race, especially in nuclear weaponry systems, at least on a temporary basis. Thus, war fear could be minimised in certain regions. This may in turn influence international terrorism and its supply chain networks.

New ideological constructions in many critical subject disciplines, such as medicine, economics, political science, sociology, psychology, robotic sciences, religious and humanistic

sciences. Hence, research and development activities will expand in every country. Developments in sociological tool-kits and social engineering skills to deliver efficient services through supply chain networks and management of patients and general public. People getting used to do some optional analysis and adapt to follow optimum use of resources, economising resources, and sustainable approaches to satisfy their need structure. These trends may reorganise the supply chain networks in national and regional levels. General public may develop some positive altitudes over the special duties performed by various essential services in society, especially, health workers, social workers, police and armed forces.

When these positive and negative impacts are considered, it is very clear that COVID-19 has caused more positive impacts to the nations, regions and the world, particularly to South Asian countries. However, some countries such as Italy, Spain, the USA, and China and several European countries have suffered a lot. Comparatively, these positive and negative impacts are valid for these countries too, irrespectively of the level of the spread of COVID-19. When these different domains are looked at, it becomes very clear that there are higher numbers of actions identified under social domains. It implies that COVID-19 is a pandemic situation and it has more critical aspects in the social domain which needs to be looked at through a sociological rather than administrative or political perspective. Furthermore, all responsible officers as well as the public could provide at least a minimum input. Especially, if the authorities focus on this COVID 19 recovery action plan, it will help protect the family, environment and the nation. Therefore, we need to have an attitudinal change towards a more sustainable control of the pandemic situation in our country. The insight will help to manage and control the COVID-19 pandemic situation in South Asian countries. If we are able to adapt to the situation as explained, this approach will help us to maintain a stable and sustainable development programme for these countries.

References

1. Knudsen M (2010) Surprised by method—functional method and systems theory. Forum Qual Soc Res Open Access J 11(3), Art. 12. http://www.qualitative-research.net/index.php/fqs/articlae/view/1556/3067

2. Luhmann N. *Social systems*. Stanford: Stanford University Press; 1995.
3. Parsons T. *The social system*. New York: Free Press; 1951. Parsons T (1951b) Toward a general theory of action. In: Shils EA (ed). Harvard University Press, Cambridge
4. World Bank (2020a) https://www.worldbank.org/en/news/press-release/2020/04/12/south-asia-must-act-now-to-lessen-covid-19-health-impacts
5. Rocher G. *Talcott parsons and American sociology*. London: Thomas Nelson and Sons Ltd.; 1972.

CHAPTER 19
CHALLENGES AND OPPORTUNITIES OF COVID-19 IN HIGHER EDUCATION SYSTEM

Anshu Mahlawat
Assistant Professor (Chemistry)
Department of Chemistry, Govt. P.G. College, Rajgarh, (Alwar)

ABSTRACT
We are living amidst potentially one of the hardest times of global education system. We were already experiencing a global learning crisis as many students were in universities and colleges but were not learning fundamental skills needed for life. And now COVID-19 crisis make it exacerbate. According to an international survey report more than 1.5 billion students all across the world affected by schools and universities closures due to covid-19 outbreak.[1] It challenge higher education institutions to carry on with teaching and learning during this socio-economic, cultural and health crisis and as well as on how to address the future. This crisis also gives us opportunities to reform education system. It making us realise that our traditional approach towards education and teaching-learning aspects needs an immense transformation. Our education system demands many paramount reforms like we need to promote global collaboration in higher education, use of technology in education, encourage distance learning programs and online learning. Our education needs to be more value bases and dedicated to producing knowledge and educating ethical empathetic students for sustainable democratic society.

Keywords: *COVID-19, Socio-economic, Pandemic, online learning, Higher-education.*

INTRODUCTION

The whole world is coping with an enormous global health crisis that is covid-19 pandemic. Covid-19 pandemic is an immensely infectious disease which is spreading due to SARS-COV-2 virus of corona family. This corona virus affects

mainly human respiratory system and its common symptoms are shortness of breath, fever, cough, loss sense of smell etc.[2-4] It spread primarily due to sneezing, physical contact and by touching contaminated surface.[5] Covid-19 pandemic outbreak first identified in Wuhan (China) in December 2019, But WHO declared it as pandemic on 11 march, 2020.[6,7] And as of June 2020 more than 6.41 million people in all over the world suffered by covid-19 pandemic and resulting in 380000 deaths. As there is no specific vaccine or treatment for covid-19, only avoiding physical contact, maintaining personal hygiene, use of mask are preventing measures.to stop transmission of disease.[8] Many countries had announced lockdown to prevent transmission of covid-19. The pandemic has caused global social and economic disruption. It has led to the postponement or cancellation of religious, political, sports and cultural events. Most of governments in different countries have temporally closed educational institution in an attempt to control the covid-19. As the days pass and there is no immediate solution to stop covid-19 outbreak, educational institutions closures will not only have a short term impact on learning and teaching for more than billions of learners but also engender far reaching economic and social consequences in education sector. But with the challenges there are also opportunities to reconstruct our education system and policies which is a burning demand of present educational scenario.

CHALLENGES

Under this pandemic threat as like other sectors education institutions and system also coping with their unique challenges. Among the various challenges some immediately noticeable challenges are as below:

1. With this constant threat to our lives major challenge for educational institutes is continuity of learning, teaching and research. Although in this crucial phase E- learning and use of technologies has become a ray of hope but there are many difficulties in this adaption which are facing by institutions like how the universities and colleges chose the right technologies and approaches for educating and engaging their student and educators who adapted themselves to this new scenario in very short period of time are also struggling to maintain the same depth of engagement with students as they could have in classroom setting. On other hand students are also struggling

with problems of poor internet connectivity, lack of resources of technology and not having proper knowledge of online learning platforms.

2. Another major concern for education system is unemployment. As according to some recent reports unemployment in India shout nearly up to 30% in April, 2020.[9] Students fear of withdrawal of job opportunities from corporates and public sectors because of economic impact of current situation.
3. Covid-19 pandemic push the whole world in an economic recession as all economic activities battered due to lockdowns in most of countries. This economic recession could impact higher education institutes in many ways, including reduction in employment, possible delays to pay institutions fees, deduction in educational and research funds by government and other funding authorities. Some reports claim that nearly 37.5 million students and 1.4 million faculty staff in India could be affected by this crisis.[10]
4. Closure of institutes' impact whole education system adversely in every context. As there is panic situation among students and educators due to uncertainty, anxiety and depression. They are also concern that how their campuses will ensure health safety norms when institutes reopen post lockdown.
5. There will be also a challenge in front of educational institutes that how they will ensure a quality and value based education to students in this technology based educational era.
6. Educational institutes are in dilemma at this time at how to start new sessions in between this constant threat to health as previous session degree exams and many competitive exams are on hold due to pandemic. They have to plan whole new strategies for exams.

OPPORTUNITIES

In spite of many challenges this crisis also has some positive impacts regarding higher education system. Covid-19 is driving a long overdue revolution in education system. Many innovative and dynamic methods have been evolved by education institutions. This pandemic gives an insight to all learners, educators and police makers to better understanding of our current education systems' vulnerabilities and shortcomings. In this crucial time online learning has come to rescue education institution and help them to maintain

continuity of teaching and learning. The adaptation of online learning in recent months has been unprecedented. Now educators are realizing that remote learning is just a baby step experiment in the long journey to offering online education. Some partnership sparked between universities and online service providers may continue beyond the pandemic. In this whole process we need to discover a right b bend between online and offline method of education. Radio and TV are also playing an important role in remote learning.

For students this is also opportunities to develop socio-emotional skills and learn more about how to contribute to society as a citizen. Students are participating as volunteers under various programs like NSS, NCC, scout etc. and reefing themselves as a responsible citizen of nation. NSS volunteers are spreading social awareness about the pandemic and they are helping people at possible levels on other hand NCC and scout volunteers are helping administration to maintain law & order.

In this pandemic period learner also have golden opportunities to expand their knowledge as many reputed universities and organizations are providing their courses and services at free of cost. It also gives new accreditation to global collaboration in education and research.

CONCLUSION

In conclusion it's the time to turn challenges into opportunities. With ensuring adequate response to the emerging challenges it is necessary that our educational institutions focus on quality, relevance and agility.

REFERENCES

1. Unicef Press Release; "Children at increased risk of harm online during global COVID-19 pandemic" 14 April, 2020.
2. Cascella M, Rajnik M, Cuomo A et al. "Evaluation and Treatment Coronavirus (COVID-19)." Statpearls Publishing, Treasure Island (FL), Jan, 2020.
3. Ahmad S, Hafeez A, Siddqui SA, Ahmad M and Mishra S, "A Review of COVID-19 (Coronavirus Disease-2019) Diagnosis, Treatment and Prevention" EJMO, 2020; 4(2): 116-125.
4. Wei-Jie, Zheng-Yi Ni, Yu Hu, Wen-hua Liang et al. "Clinical Characteristics of Coronavirus Disease 2019 in China." N Engl J Med. 2020; 382: 1708-1720.

5. Muhammad Adnan Shereen, Suliman Khan et al. “COVID-19 infection; Origin, Transmission and Characteristics of human coronavirus.” J. Adv. Res. Mar. 2020.
6. Hui DS, I Azhar E, Madani TA, Ntoumi F, Kock R, Dar O et al. The Continuing 2019-nCoV epidemic threat of novel coronaviruses to global health- The latest 2019 novel coronavirus outbreak in Wuhan, China. Int. J. Inf. Diseases, Feb. 2020, 91: 264-266.
7. Cucinotta D, Vanelli M, “WHO Declares COVID-19 a Pandemic.” Acta Biomed. Mar. 2020, 19; 91(1):157-160.
8. Harvard Health Publishing, “Preventing the spread of the coronavirus”, Mar. 2020.
9. Center for Monitoring Indian Economy (CMIE) Report, Apr., 2020
10. KPMG Report “Higher education in india and COVID-19 (impact on admission)”, Apr. 202

CHAPTER 20

UNCOMMON LEARNING IN UNCERTAIN TIMES: AN ETHNOGRAPHY OF DIVERGENT LEARNING EXPERIENCES IN DISPARATE SOCIAL SEGMENTS DURING COVID-19 PANDEMIC IN KASHMIR

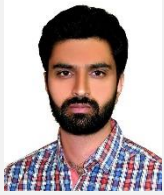

Syed Saqib Abbas
Lecturer, Anthropology, GDC Bijbehara, Anantnag, Kashmir

Keywords: *Covid-19, Pandemic, Social Disruption, Learning Strategies, Learning Outcomes, Social Disparity*

Introduction

The recent Covid-19 pandemic came as a severe shock to individuals and institutions positing a grave challenge to policy-makers and stakeholders alike in all walks of life. The traumatising effect of the pandemic on social fabric created major disruptions in social habitus, producing a unique situation which humanity had not faced in recent times. These disruptions affected social mobility and social resilience, partaking in the impairment of social institutions which stabilise human lives. However, not all lives were affected in equal measure during the pandemic; those who were more vulnerable were disproportionately affected, a fact which highlighted the continuing relevance of inequality in social reality. This research endeavours to use anthropological methods to understand the effect of pandemic on learning strategies and learning outcomes in divergent socio-economic segments in Kashmir, using multi-sited participant observation methods, in order to understand how class differences have affected coping mechanisms during covid-19 pandemic, among populations living in close proximity to each other, since education forms a key node and facet in contemporary everyday lives. We try to map the function of inequality, brought into sharp contrast by the pandemic, in the context of particular lifeworld of suburban Srinagar, through the prism of primary education. It is to be noted that before the pandemic, schools

were already faced with a year of closure due to the political upheaval in Kashmir since August 2019. COVID 19 Pandemic, therefore, didn't initiate crises like closures in Kashmir's academic environment and school ecosystem but it maximised the same.

1. The Social Context of Pandemic Disruptions

Ian Goldin, writing for World Economic Forum argues that COVID-19 is increasing multiple kinds of inequality. Apart from being a public health crisis, the COVID-19 pandemic has had a devastating impact on poverty levels and inequality. Women, alongside the poor, elderly, disabled and migrant populations, have borne the brunt of the fallout from the pandemic. Minorities have been hit harder and are recovering more slowly from the downturn. Goldin states that there are at least four ways the COVID-19 pandemic is increasing inequality:

1. Higher-paid workers are working from home while lower-paid blue-collar workers typically do not have this option.
2. A higher share of low-paid workers are in essential services such as nursing, policing, teaching, cleaning, refuse removal, and store attendants where they are more likely to come into contact with people who are infected.
3. Lower paid workers are more represented in the sectors that have suspended activities such as hotels, restaurants and tourism services.
4. The pandemic is increasing poverty and inequality between richer countries that can afford to bail out their firms and provide social safety nets, and poorer countries that do not have the capacity to do so.

Francisco Ferreira, from International Monetary Fund, elucidating upon inequality in the time of COVID-19 has tried to quantify the effects of the pandemic. He states that the severe impact of the COVID-19 pandemic is clearly seen in numbers: more than 3.1 million deaths and rising, 120 million people pushed into extreme poverty, and a massive global recession. As suffering and poverty have risen, some data show an increase in another extreme: the wealth of billionaires. The result is widening inequalities globally and erasure of hard-won reduction of socio-economic imbalances of previous decades, affecting almost all indices of human development and putting cold water on policy targets of poverty reduction across the world.

Following global trends, there has been an elaborate and sharp economic contraction in India, which suffered a great deal both in terms of mortality and economic performance- even before the massive second wave in 2021. Given its existing propensity to labour sensitivity and concomitant large inequalities, Indian economy suffered severely, undoing a lot of hard-work which had gone towards ameliorating hardships among India's vast population inflicted with poverty. Education, which was seen as an important vehicle to escape poverty, became a direct casualty of the pandemic, leading to blockages of avenues for poverty alleviation.

Human Rights Watch in its report on the effects of Pandemic has stated that there have been increased inequalities in children's right to Education due to the Covid-19 Pandemic. Decades of slow but steady progress in educating more children around the world abruptly ended in 2020. By April, an unprecedented 1.4 billion students were shut out of their pre-primary, primary, and secondary schools in more than 190 countries, in an effort to slow the spread of the novel coronavirus. As the pandemic persisted, schools in some countries or jurisdictions reopened for in-person teaching, or opened for some students, while elsewhere schools have remained closed ever since with learning to greater or lesser extent taking place online or otherwise remotely. In some places, there have been waves of schools opening only to close again. An estimated 90 per cent of the world's school-aged children have had their education disrupted by the pandemic.

Children, who tend to escape the more severe symptoms of Covid-19, nevertheless had to sacrifice the education to which they are entitled, and accept restrictions that often harmed their friendships and mental health, as part of public efforts to help protect the health and save lives of their families, friends, teachers, and those in their communities. Such adverse effects were more much more pronounced in vulnerable and weak communities. For instance in USA researchers found persistent achievement disparities across income levels and between white students and students of black and Hispanic heritage. School shutdowns could not only cause disproportionate learning losses for these students—compounding existing gaps—but also lead more of them to drop out.

Some recent studies have also highlighted adverse psychological effects due to pandemic lockdowns upon school-going children. A New Delhi-based rights group that included human rights

activists and a psychiatrist in a report released in November suggested the disruption caused by the August lockdown had a profound effect on children's lives. "There is no school, no routine or structure, no healthy recreation, and no sense of safety or predictability, which are essential for normal growth and emotional development," the report said, citing local mental health professionals' assessments that acute anxiety, panic attacks, suicidal tendencies and symptoms of post-traumatic stress were growing among children. Child psychologists say frequent disruptions in formal schooling, limited opportunities to socialize, and erratic schedules are leading to a rise in depression and behavioral issues among children.

Such studies have also been conducted among school-going children in Kashmir. Farhana Yaseen, a counsellor at the Child Guidance and Well-being Centre in Srinagar, said many children are suffering because of the extended shutdown of schools. "Many students are suffering from anxiety as they feel they have nothing 'left' in their lives after remaining confined but this situation has aggravated more due to the pandemic," said Yaseen. Since April, 124 mental health cases have been reported at the Child and Well-being Centre while 800 children have sought mental health counselling through telephone. "It is obvious that if we confine a child under extreme volatile environments, it is definitely going to hit them hard mentally," according to psychiatrist Yasir Rather.

2. An Ethnographic Account of Uncommon Schooling in Sub-Urban Srinagar

The research was undertaken over a period of three and a half months in the middle of 2021, from March, which is traditionally the time for reopening of schools after two month winter vacations in Kashmir, till middle of June, during an extended lockdown due to Covid-19 in Jammu and Kashmir's summer capital Srinagar. Two schools were carefully chosen based on the assumption that the lockdown had disparately affected the different socio-economic segments of the society. Both the schools were private English medium schools. Government schools were not included in the study so as to keep the semblance of similarity in syllabi and learning pedagogies for comparison between the studied schools. The schools are located in a radius of 5 kilometres in the western suburbs of Srinagar City in localities called Zainakote and Narabal. The primary access was through two parent-teacher meetings, in which the

researcher took brief interviews. Permissions were taken to attend online classes of the respective schools intermittently and teachers agreed to share the test results of the students regularly. Class 5 students from both schools were chosen for the study. For privacy purposes names of individuals and institutions are kept in initials. A follow up visit was done in late November 2021, by which time schools had reopened for regular offline classwork. For the sake of clarity the two lockdowns – one due to closure after scrapping of Article 370 in August 2019 and the other due to Covid-19 pandemic have been termed as political lockdown and pandemic lockdown respectively in this study. The parameters which were studied are briefly highlighted below:

2.1. Family's Socio-Economic Background

The socio-economic strata to which the students of School A (GMI, Narbal) belonged, ranged in the lower middle class. The total number of students in the school at the time of this research was 170, which had reduced to 65 by the time of a follow up visit in November. Many students had simply dropped out by the year end and gone mostly to government schools due to the inability to pay the cumulative school fees, which had accrued to a large sum during the pandemic. . Being in proximity to a major canal/flood channel of river Jehlum many children of the school belonged to families of fishermen. Other parents who sent their children to this school were labourers, farmers, and lower ranked private and government employees. While the average fees of the school is Rs. 350 per month, average salaries of teachers hover around Rs. 3500 per month. Almost all of the parents designated the affordability of the school as compared to other private schools of the area as the primary reason to send their children to the school. They also agreed that there was more accountability than the government schools where they could get their children educated for free. The aspiration and possibility of social mobility formed an important motivation for these parents for sending them to English-medium private schools.

On the other hand the socio-economic background of students going to School B (D International School, Zainakote) was mostly middle class to upper middle class. Located near a major national highway between Srinagar and Baramulla, the school had wide access with school buses plying to major routes in Srinagar, Budgam and Baramulla districts. Average fees of the students stood at Rs 4000 per

month including bus fees. The average salaries of the teachers were near about Rs 12000. The school had a growing roll of 1500 students. Well equipped with facilities, the school boasted of multiple swimming pools, auditorium, playground and affiliation with a prominent national cricket academy. Most of the parents we met at parent-teacher meetings were well-off professionals and businessmen. A few parents were from the families whose land was appropriated by the Ministry of Railways for the construction of a railway line between Baramulla and Banihal and which is supposed to be connected with National Railways by the end of year 2023. As a result of the windfall from the compensation they had decided to send their children to the best private school in the area, which happened to be School B.

2.2. Learning Strategies

When the lockdown due to Covid-19 started in 2020, schools in Kashmir were already closed for about a year due to the scrapping of Article 370. As a result lockdown in Kashmir was an extended one which merely aggravated the problems faced by the education sector. However, due to uncertain political conditions, only a few schools had initiated the concept of online learning at all when the political lockdown of August 2019 began. Most schools were waiting for the government directions to reopen schools, which was to come only seven months later. As such, when the Covid-19 lockdown was imposed, a few schools were already well-equipped and experienced to initiate online classes. Most of the schools, especially the ones catering to the lower income students were in disarray. It took them a while to figure out the mechanisms and potential problems related to online education.

The two schools which we have selected for our study had a similar experience. School A faced complete closure for the first four months from August till mid-December during the political lockdown and started an informal academy only with the onset of winter-vacations in which traditionally students across Kashmir receive tuition classes in informal tuition academies. Many new informal academies were started this time as community classes which had a marked effect on learning during the pandemic lockdown as well. Since all students of School A belonged to a close-knit community in the two kms radius around the school, the academy started by the

teachers of the school ensured that almost all students had access to learning during the political lockdown in winter.

A similar phenomenon was repeated during the pandemic lockdown, when students in School A, which had limited access to smartphones, were made to switch to these community classes by school teachers due to the failure of online classes. School B had a much better experience of online classes. Firstly, there was no possibility of community classes like School A, because the catchment area from where students and teachers come to the school is spread out over a vast distance. In one case for instance there was a 50 km distance between the houses of two students who lived on opposite sides of the school.

School A had a learning gap due to the issues of accessibility of smartphones in the first couple of months of the pandemic lockdown. This was soon rectified through the scrapping of online mode of learning and replaced by the localised community- based face to face learning. Teachers went door to door to the houses of students to convince their parents to send them to informal academies opened by them in order to finish the syllabus. Many parents were apprehensive at first due to the on-going fear about being infected by covid-19. However once the academy started, parents decided to send the children anyway, so that their children don't lag behind other children in their studies.

School B had a streamlined online learning system. Teachers were properly trained to use the latest technologies and applications for online learning like Google Classes and Zoom. Younger teachers were especially adept at using the new technologies like Zoom and the various features, like the digital whiteboard, that these offered. This streamlined system included timely monitoring of the learning processes by supervising in-charges who made sure that the pedagogical goals of the school were properly followed by the teachers. Teachers recalled that the teaching and learning experience during the pandemic lockdown was much better than that of the political lockdown because 3g connectivity was curtailed during the preceding lockdown and online teaching was done through the much slower 2g internet connection. This comparison motivated the teachers to better utilise the seamless 3g connectivity for teaching. We found that the attendance of students online in school B was invariably above 90%, often touching 100%. This showed that students had wide access to smartphones and internet in School B.

2.3. Discussion

Overall the biggest surprise from this study was the number of students who dropped out in School A. 105 out of 170 students had dropped out by the end of the year, even though teachers had worked hard in informal classes which was depicted in the results of regular and annual exams. It was difficult to assess whether all the dropped out children had re-joined other schools, although we were able to locate many in the local government primary school and knew, by word of mouth, that a few had joined other private schools. The main issue was the inability to pay the fees which had accumulated during the two lockdowns. This led to a big crisis in the school as salaries of teachers went unpaid. Many teachers had to leave the school and find alternative sources of income. The few who remained to cater to the remaining students had to wait for months in order to receive their salaries. School B didn't face the problem of student retention at all, although the school management did lay-off a few teachers for financial reasons. Apart from that we found that since the parents of the students of School B were well-educated, there was an element of parental guidance and home-schooling experience which was rather lacking in School A. We utilised the regular test results from both schools and found that there was only a marginal depreciation in the marks of the students. This cannot be construed as a fact that the lockdowns and online learning had no impact on learning outcomes. Rather it may be due to the leniency of teachers towards students who recognised that this was no ordinary schooling, rather this was uncommon schooling in uncertain times.

3. Conclusion

We found a marked difference in the learning strategies, experiences and outcomes between the two cases. Even though the distance between the two schools is only about 5 kms, there was a marked class-difference between the two cases in that School A catered to the socio-economic strata of lower middle class fishermen, labourers, farmers, and lower ranked private and government employees. While the children of School A faced access problems by way of lack of smartphones, children of School B had wider access to resources and internet connectivity. Children of School A had to rely upon community classes which was not the case among children of School B. On the other hand children of School B had more personalised learning, there was availability of tutors and in two cases

almost a home-schooling experience. Our ethnography clearly suggests that the pandemic affected different socio-economic classes differently, and each had their own coping mechanisms to deal with it. Although we found no marked difference in learning outcomes between the two, large-scale drop-out rate in schools catering to lower classes clearly highlights that the pressure on such classes was immensely more.

References

1. Ferreira, Francisco. (2021). *Inequality in the Time of COVID-19*, IMF
2. Goldin, Ian. (2020). *COVID-19 is Increasing Multiple Kinds of Inequality*, World Economic Forum Human Rights Watch, *Pandemic's Dire Global Impact on Education* (2021)
3. Bhat, Naseer Ahmad. (2020). *Education in Kashmir: Scenario Within Double Lockdown*, PalArch's Journal of Archaeology of Egypt
4. Ed. Levinson, Bradley et al. (2015). *A Companion to the Anthropology of Education*, Wiley Blackwell
5. Ed. Hodges, David Julian. (2009). *The Anthropology of Education: Classical Readings*, University Readers
6. Jagannnath, Rekha. (2021). *Impact of COVID-19 on Indian Economy*, Notion Press
7. Moustafa, Ahmed. (2021). *Mental Health Effects of COVID-19*, Academic Press

CHAPTER 21

COVID-19: IMPACT ON MENTAL HEALTH AND IT'S MANAGEMENT

Dr. Tayaba Khatoon

Professor, Sociology, Govt college Narela Bhopal

Mariya Maaz Khan

T.F.I Fellow, Pune, Maharashtra,

ABSTRACT

People all across the world are learning about the severe auto respiratory syndrome corona virus (SARS-CoV-2), its symptoms, and the measures they may take to protect themselves from becoming infected. However, there have been no investigations on how this pandemic affects people's psychological well-being. This initiative's emphasis on the epidemiological, clinical, transmission and management components of COVID-19 may help reduce concerns about mental health and reduce stigma. Alterations in human behaviour can have a significant impact on aspects of pandemic dynamics such as pandemic severity, transmission, disease flow, and outcome. When dealing with a crisis, it helps to have a better understanding of how things have been in the past. In this issue of Perspectives, we take a close look at how the COVID-19 pandemic has affected people's minds.

Keywords: *COVID-19, Mental Health, Pandemic, SARS-CoV-2, Stigma*

INTRODUCTION

W.H.O. officially declared the pandemic on March 11, 2020. Individuals and society alike are affected by pandemics, which induce worry, stress, stigma, and xenophobia. The

dynamics of an pandemic, including its intensity, flux, and repercussions, are influenced by the conduct of individuals acting as a unit of society or community[1]. As the SARS-CoV-2 virus spread rapidly through human contact, regional lockdowns were put in place to prevent the sickness from spreading further. People stayed at home to help break the transmission chain because to social isolation, school, job, and amusement venue closures[2]. However, the people's social and mental health has unquestionably been damaged by the restrictive restrictions. board.[3]

Governments are urged to implement measures for mental health treatment when citizens are advised to stay indoors and avoid contact with others due to an outbreak of an infectious disease. Professor Tiago Correa wrote in an editorial that preparations are being made throughout the world to deal with the COVID-19 pandemic, which may have far-reaching consequences for the treatment of various diseases, including mental health[4]. Because of individual differences in upbringing, career, and social standing, it is hard to make broad statements about people's mental health. [5]

A person's mental health might be negatively impacted by quarantine and self-isolation. Isolation from loved ones, the loss of freedom, boredom and uncertainty all these situations contribute to mental health decline, according to an analysis in The Lancet[6]. An individual and society level solution is needed to combat this. Children and adults alike are feeling conflicted about the state of the world right now. Their health may be jeopardised if they are exposed to a situation or environment that they are unfamiliar with or have never experienced before[7].

TEENS AND CHILDREN ARE AT RISK

Without ready access to teachers, classmates, and co-workers, children may go to their parents or guardians for guidance on how to handle the COVID-19 pandemic. The effects of stress on kids and grownups are not the same. A child's mental health can be negatively impacted in the short and long term by factors such as anxiety, restlessness, social isolation, and abuse. Some of the most frequent behavioural changes in children include[8:]

- Excessive sobbing and bizarre conduct.
- Depression or anxiety symptoms that have worsened.
- Inability to focus and pay attention.

- Activity changes or avoidances they had previously taken part in.
- Headache and pains all throughout the body, without warning.
- A shift in eating patterns.

Parents should keep cool, address the issue calmly, and react peacfully to all questions of their child overcome the undesirable behaviours. Parents should talk to their kids about the COVID-19 pandemic because it's essential, and now is a great time to provide them some comforting facts and information. Make it a point to encourage these kids to do things that are good for them, including playing active games inside or engaging in other forms of mental or physical stimulation. This will feel them that they are secure at home. There are several ways parents may aid their children with their education at home. Children pick up on their parents' tension and worry, so it's important for parents to display less of it around the house. Stress and anxiety can be alleviated by parents participating in healthful activities with their children[9].

ELDERLY AND DISABLED PEOPLE AT RISK

There are several reasons why the elderly are more susceptible to COVID-19 outbreaks, including weakening immune systems and being away from family and friends owing to their busy schedules. Even healthy persons over the age of 60 are more susceptible to getting Covid-19, which can cause a serious and sometimes fatal illness.[10]

Because of the spread of COVID-19, aged and disabled people may suffer greatly from the psychological effects of physical isolation. When elderly and handicapped people are isolated from their loved ones, their mental health might suffer. This can cause them to feel anxious, distressed, and in a difficult situation. Self-isolation among the elderly, who are reliant on the younger generation for their basic needs, can do significant harm to the family unit. People in nursing homes who are elderly or handicapped may suffer from severe mental health issues. However, the mere act of making a phone call to a loved one might provide comfort to the elderly during a pandemic. COVID-19, a common antidepressant, has been proven to aggravate stress, anxiety, and depression in the elderly.

There may be changes in the conduct of elderly relatives that family member's observe[11], such as irritability and screaming, changes in sleeping and eating patterns, or emotional outbursts.

It is recommended that family members periodically check on elderly persons in their homes and nursing institutions, according to WHO guidelines. Talk to the elder members of the family and, if feasible, share some of their daily routines with the younger members of the family[12].

HEALTH WORKERS AT RISK

In the fight against the COVID-19 pandemic, doctors, nurses, and paramedicals may be more susceptible to acquiring mental health problems. In addition to the stress of working long hours and dealing with patients in precarious conditions healthcare workers' mental health can be harmed by their colleagues' deaths after contracting COVID-19, the lack of available protective equipment and supplies, the high patient load and lack of effective COVID-19 medicine. As the pandemic spreads, health care workers' ability to do their duties may deteriorate. Workers in the medical field should take brief breaks throughout the day so that they can deal with emergencies in calm and collected manner[5].

THE DUAL BURDEN :SOCIAL STIGMATIZATION

People who have just been freed from quarantine are more likely to be stigmatised and to feel a range of emotions. Many feelings might arise upon a person's return to regular life after being quarantined. The newly healed may need to keep their relatives at arm's length for their own safety. The impacts of this kind of socialising can be both quick and long lasting, and can be felt by people of all ages.

Those in the medical field, despite their noble mission to save lives and safeguard society, may feel lonely in their profession, changes in family behaviour, and stigma if they are suspected of having cytomegalovirus (CMV)-19[6]. They may also feel hopeless if friends or loved ones worry they may contact the disease from them, even if they have been tested and found to be asymptomatic[5].

Knowledge of the mental health effects of the current pandemic across age groups is crucial for preventing and mitigating the COVID-19 pandemic.

TAKE HOME MESSAGE

- It is not solely on the government or frontline employees to take responsibility in a pandemic emergency. Apart from them, political leaders, the media, and, most importantly, citizens must take responsibility and play an active role in combating the pandemic and its associated stigma.
- Researching the COVID-19 pandemic's clinical aspects, transmission patterns, and management are all crucial, But it's just as important to understand how this affects people's psyches.
- Family time, exercise, sports, and a regular routine may all assist to alleviate mental health difficulties. Taking breaks from social media as well as conventional media can also be beneficial.
- In the current scenario, public awareness initiatives concentrating on mental health need to be implemented immediately. Unchecked stigma can lead to severe psychological co morbidities, including the risk of mental disease and suicidality. To deal with the pandemic, society needed to be strong and unified.

REFERENCES

1. An expert explains: how to help older people through the COVID-19 pandemic. World Economic Forum. 2020. https://www.weforum.org/agenda/2020/03/coronavirus-covid-19-elderly-older-people-health-risk/. Accessed May 3, 2020.
2. Armitage R, Nellums LB. COVID-19 and the consequences of isolating the elderly. Lancet Public Heal. 2020;2667(20): 30061. https://doi.org/10.1016/S2468-2667(20)30061-X. Acce ssed May 3, 2020.
3. Concerns for the mental health of children and adolescents during the coronavirus pandemic. European Child & Adolescent Psychiatry. 2020. https://www.escap.eu/index/coro navirus-and-mental-health/. Accessed May 3, 2020.
4. Correia T. SARS-CoV-2 pandemics: the lack of critical reflection addressing short- and long-term challenges. Int J Health Plann Manage. 2020;35:1-4. https://doi.org/10.1002/h pm.2977. Accessed May 3, 2020.
5. How to protect older people from the coronavirus. The New York Times. 2020. https://www.nytimes.com/2020/03/

14/health/coronavirus-elderly-protection.html. Accessed May 3, 2020.

6. Javed B, Sarwer A, Soto EB, Mashwani Z-R. Is Pakistan's response to coronavirus (SARS-CoV-2) adequate to prevent an outbreak? Front Med. 2020;7:1-4. ttps://doi.org/10.3389/fmed. 2020.00158. Accessed May 3, 2020.
7. Liu JJ, Bao Y, Huang X, Shi J, Lu L. Mental health considerations for children quarantined because of COVID-19. Lancet Child Adolesc Heal. 2020;4(5):347-349. https://doi.org/10.1016/S2352-4642(20)30096-1. Accessed May 3, 2020.
8. Looking after your mental health during the Coronavirus outbreak. Mental Health Foundation. 2020. https://www.mentalhealth.org.uk/publications/looking-after-your-mental-health-during-coronavirus-outbreak. Accessed May 3, 2020.
9. Mental health and coping during COVID-19. Centers for Disease Control and Prevention. 2020. https://www.cdc.gov/coronavirus/2019-ncov/about/coping.html. Accessed May 3, 2020.
10. Moukaddam N, Shah A. Psychiatrists beware! The impact of COVID-19 and pandemics on mental health. Psychiatric Times. 2020. https://www.psychiatrictimes.com/psychiatrists-beware-impact-coronavirus-pandemics-mental-health. Accessed May 3, 2020.
11. WHO warning on lockdown mental health. Euobserver. 2020. https://euobserver.com/coronavirus/147903. Accessed May 3, 2020.
12. Yao H, Chen J-H, Xu Y-F. Patients with mental health disorders in the COVID-19 pandemic. Lancet Psychiatry. 2020; 7(4):e21. https://doi.org/10.1016/S2215-0366(20)30090-0. Accessed May 3, 2020.

CHAPTER 22
CORONA PANDEMIC AND ONLINE BUSINESS (E-COMMERCE) IN INDIA

Dr. Neelam Gandhi
Assistant Professor (Commerce),
St. Thomas College, Bhilai, Chhattisgarh

ABSTRACT
The retail industry is one of the pillars of the Indian economy, contributing around 10% of its GDP. However, it has become more challenging for customers to visit stores and shop in this era of epidemics; as a result, they are more likely to turn to internet shopping. Consumers choose to purchase while staying at home to avoid the outbreak. Consumers acknowledged in a survey that even while overall spending fell over the final three months of 2020, they did more online shopping. Customers prefer shopping online purely for convenience. 90% of people still shop online, according to a Business Today poll conducted on June 24, 2020. Statista . com – According to a survey on Indian online shopping behavior conducted in May 2020, about 29% of respondents said that they purchased online several times due to Pendemic. Cnbctv18.com/India- In view of the corona virus pandemic and persistent concerns 85% of Indian consumers prefer online shopping over physical shopping, (SAYS PIPLSAY CONSUMER CONFIDENCE TRACER).

KEY WORDS *Online Shopping, Offline Shopping, Consumer Preferences, Medium of Shopping, Internet, Consumer Satisfaction, e-commerce, Covid-19, Pandemic.*

INTRODUCTION

The global economy has been significantly impacted by the Covid-19 outbreak. A fragile global economy was initially hit by the epidemic in the first few weeks of 2020. The majority of countries had to impose stringent lockdowns, and some of them did so again in reaction to the second wave that arrived over the winter.

The economy stopped working. Due to the temporary shutdown of businesses and industries, the output of goods and services reduced. There were substantial disruptions to supply lines. In parallel with the supply shock, there was a contraction on the demand side. Business closures resulted in job and income losses for many people. Additionally, the overall effective demand fell.

In other words, the supply and demand fell independently, synchronously, and globally during the economic crisis brought on by the epidemic. The shocks to the real economy have an impact on the financial and external sectors. Finally, the pandemic has transformed from a health catastrophe into a major economic issue.

The epidemic brought about significant issues for the Indian economy, much like it did for the world economy.

ONLINE BUSINESS (e-commerce)-

E-business, often known as online business, refers to commercial activities conducted over the internet. In 1996, the word "e-business" was first used. Electronic business is referred to as e-business. As a result, the buyer and vendor are not meet personally. We can shop from home and find excellent offers without having to leave our actual location. . We now find it simple to shop thanks to e-commerce.

Social media, product content, return and exchange policies, product descriptions, vendor information, delivery dates, shipping costs, web series or movies, product price, and traditional advertising are just a few of the variables that have an impact on the adoption and usage of e-commerce.

ADVANTAGES OF ONLINE SHOPPING

Business companies have shifted from the conventional method of selling items to the electronic method due to the quick development of technology. The internet is the primary means of conducting business for organisations.

1. Online shopping saves time
2. Online shopping saves money
3. Online tracking
4. Convenience of Shopping at home.
5. Wide variety / range of products are available.
6. Good discounts / lower prices.

EFFECT OF CORONA PANDEMIC ON ONLINE BUSINESS (e-commerce) IN INDIA

"The Indian eCommerce industry (sic) has witnessed a huge upsurge due to COVID-19 and there is substantial room for future growth," said Phil Pomford, managing director of Asia Pacific, Worldpay from FIS.

The COVID pandemic problem has forced a lot of small businesses to revaluate their decades-old conventional business structures or face going out of business forever. New and established technologies are now a part of every firm toolkit, and forward-thinking businesses are addressing the talent concerns brought on by these developing digital business skill sets.

In order to avoid having to interact directly with people, there has been a surge in online purchasing and the use of the internet for e-commerce. The shift from traditional currency to digital services has resulted in increased consumer use and transaction patterns.

In particular, the second wave of the virus in the spring of 2021 had a significant impact on India. the largest GDP fall in the country's history, however this may still underestimate the damage done to the finances of the poorest households.

India was badly impacted by the outbreak, particularly during the second wave of the virus in the spring of 2021. the largest GDP decrease in the country's history; however, this may still be an underestimate of the financial harm done to the poorest households.

India has quickly embraced online shopping and electronic payment systems, leading to the creation of new programmes, websites, and other services. It is essential for all stakeholders to comprehend the elements that affect customers' decision to keep using e-commerce platforms after the COVID-19 pandemics.

DESCRIPTION OF ONLINE BUSINESS FEATURES DURING PANDEMICS

According to many reports released between 2020 and 2022, the following are the key characteristics of online business in India during a pandemic: -

Only China and the US have a larger online consumer base than India, which will have 140 million e-retailers by 2020.

The coronavirus epidemic's effect on consumer demand will cause India's e-commerce business to grow by 84 percent to $111 billion by 2024,

According to the poll, mobile shopping would drive a 21% annual growth in India's e-commerce industry over the next four years. The majority of online payments in 2020 were made with credit cards (15%), debit cards (15%), and digital wallets (40%) respectively.

India's retail market contrasted in the fiscal year ending in March 2021: the whole retail market shrank by 5%, while the GDP shrank by 7.3% as a result of widespread lockdowns. Despite a multitooth shutdown, the e-retail market increased by 5% to reach $38 billion. This was a result of Covid-19, which led to a rise in the usage of internet channels.

India's e-retail penetration received a significant boost through Covid-19, which caused it to grow by 12 months to reach roughly 4.6% in FY21. This surge was much more pronounced in metro areas, where one in three people conducted at least one online purchase in the previous year. With one in two residents purchasing online at least once last year, Bengaluru set the pace. According to international e-retail marketplaces, growth should continue, sustaining at levels higher than those before the Covid-19 pandemic, though lower than peak levels.

"The India e-retail market is expected to grow at 25%–30% annually over the next five years to reach $120–140 billion by FY26, which is higher than Modern Trade. Small-town India will fuel this growth, accounting for four of every five new shoppers. During the pandemic, reverse migration from metro cities further accelerated growth in smaller towns. In addition to small towns, women and older shoppers continue to increase the e-retail base."

DISADVANTAGES OF ONLINE SHOPPING

The main factor behind e-success commerce's is its usability. Although purchasing a goods online is quick and simple, some people prefer to utilise this technology sparingly. Before purchasing a product in a store, they view the internet as a way to learn more about it. Others worry about developing an addiction to online buying.
The following are the main drawbacks of online shopping:-

1. Frauds in online shopping
2. Delay in delivery
3. Lack of product touch and feel while shopping online

SUGGESTION TO IMPROVE THE DRAWBACK OF ONLINE SHOPPING

1. Online shopping is easy but it can be made more secure.
2. More privacy should be implemented.
3. Product displayed sometimes differs with the product supplied. It should be improved.

CONCLUSION

Now a day people in India, like Western Countries are showing greater interest towards online shopping. Online shopping becoming more popular day by day with increase in the usage of World Wide Web known as www. Having access to online shopping has truly revolutionized and influenced our society as a whole. This use of technology has opened new doors and opportunities that enable for a more convenient lifestyle today.

Due to the coronavirus outbreak, which has afflicted the entire world, people have been forced to stay at home. Consumer perceptions of online shopping have shifted as a result of the numerous lockdowns that were put in place during the early stages of the pandemic. The e-commerce market in India saw a seismic upheaval as a result of the epidemic, which raised the sector's potential for 2021.

Consumers are increasingly choosing online marketplaces over traditional brick-and-mortar businesses, supermarkets, and shopping centres for the purchase of goods ranging from basic necessities to branded goods.

Social isolation has been used for a very long time to inhibit the spread of a highly contagious disease, despite the fact that it may seem novel. Customers are consequently less inclined to venture outside to acquire needs, which fuels a continual flow of online sales.

This prompted a number of businesses and small shops to move online, which aided in the industry's further expansion. It has also been reported that on various e-commerce platforms, the number of first-time buyers who had previously been put off from shopping online has dramatically increased

As is correctly noted, some people may find optimism even in the most dire situations. The virus outbreak caused the Indian e-commerce industry to undergo a sea change. According to a study, Indian e-commerce would increase from $30 billion in 2017 to $200 billion in 2026.

Continuing its upward growth trend, India is anticipated to surpass the US in 2034 to become the second-largest E-commerce market worldwide.

References

1. Agarwal G.K., Research Statistics, SahityaBhavan Publication, 2004
2. Rao K. B., Research methodology in Commerce and Management, 2004
3. Dr. Lalvaniya M.M., Social Research, First Edit Ramaswari V.S., Marketing Management (Global perspective Indian consent), Third Edition, Macmillan ,2006
4. Arun Kumar, Marketing Management, First Edition, vilas publication house,2006
5. Ramaswari V.S., Marketing Management (Global perspective Indian consent), Third Edition, Macmillan ,2006
6. Kiotier Philip, Marketing Management (A South Asian Perspective), Twelth Edition, 2007
7. Chunavalla S.A., Foundations of Advertising (Theory and practice) Seventh Edition, Himalaya publishing house,2008
8. Goyal S.N., Principles of Management, First Edition, Sahitya Bhawan Publication, 2009
9. SS Kothari C.R., Research Methodology, Second Edition, New Age International Publishers, 2009.
10. Statista . com
11. Business Today survey (24/06/2020)
12. www.mospi.nic.in
13. https://www.businesstoday.in
14. https://blogs.worldbank.org
15. https://www.indianretailer.com
16. Home / Article / Technology / Innovation / Effect of the pandemic on the indian e-commerce industry,Effect of the Pandemic on the Indian E-Commerce Industry,Technology & e-commerce, March 22, 2021
17. Online Shopping Behavior during COVID-19 Pandemic: An Indian Perspective June 2021SSRN Electronic Journal,DO I:10.2139/ssrn.3874348

18. Authors: Amit Ranjan, Indian Institute of Information Technology Allahabad Madhvendra Misra, Indian Institute of Information Technology Allahabad
19. Jitendra Yadav, K L University
20. https://www.business-standard.com
21. Indian e-commerce to grow 84% in 4 years, helped by Covid-19 impact: Study
22. Authors
23. Arpan Sheth, Global Capability Leader, Vector Solutions Group, Mumbai
24. Shyam Unnikrishnan, Partner, Bengaluru
25. Manan Bhasin, Partner, Mumbai
26. Abhishek Raj, Associate Partner, Mumbai
27. https://accountlearning.com , Advantages and Disadvantages of Online Shopping

CHAPTER 23
IMPACT OF CORONA PANDEMIC ON HIGHER EDUCATION

Dr. Indira Parmar
Asst. Prof English Govt College kukshi

Dr. Dinesh Parmar
Associate prof English, Govt PG College Barwani

Abstract

Corona is a demon and it has changed our lives. Corona 19 was reported from Wuhan in late December 2019 it was declared a pandemic by the who on 11th March 2020. Disease Corona brought a major change in the society. It left millions of children orphan. We have lost many frontline workers and doctors. It was a curse to the human kind. People believe that epidemics and pandemic come after every hundred years. It continues for five years.

Keywords- *covid-19, on line learning, research, e-content,*

Corona has a great impact on higher education as well . Due to covid-19 our generation is forced to study online. Online education has its own advantages and disadvantages. Online higher education was a substitute of offline higher education. Students start indulging in other activities in online studies. Students get less knowledge in online studies. Offline higher education gives more exposure two students is forest technical higher education is concerned. We have observed that students studying abroad in Ukraine Russia , China and Philippines studied online medical education during Corona pandemic. Students who got admission in China did not get much recognition who studied medical higher

education during Corona pandemic because they studied in online mode.

Universities are confronting financial challenges. Covid-19 pandemic has disrupted business as usual for colleges and universities. Many countries including India his faced lockdown and curfew due to Corona. IIT, IIM are providing notes, assignments etc online to students. Are talking to parents in guiding students online. Students are more in number in India in comparison to other countries. Students are provided e content students studying higher education their result of last year was not declared but they have to get admission in next year. Search students were under stress and mental tension due to log down. Students of Higher education in last year whose placement was due. Their placement is disturbed by Corona. Due to log down companies are closed. Students supposed to pursue internship are under stress due to Corona. Ruth Watkins former President, University of Utah observes:

"Alone we can do very little, but together we can do a lot. That is Helen keller's wisdom not mine. The leader's job is to inspire, motivate, help, create the conditions where everyone can succeed. "

One Important aspect of higher education was games and entertainment with companions. They could not participate in these activities.

University students feel that covid 19 has led to learning loss . Such loss stems from five men sources: the digital divide, slow governance at government institutions, free existing capacity deficits, and week online teaching learning content. The higher education sector must be financially supported by government funds and banks for a one-time covid driven capital, expenditure in digital infrastructure, training and transition. Implementation of national education policy must be accelerated from 15 years 5 years. The university system is shocked and accelerating the time table will bring innovation financing and diversity to overcome the challenges for teachers and students.

Policy, society and technology explores the impact of the novel coronavirus for global mobility in the field of international higher education.

The pendomic that shattered around the world has also battered education system in developing and developed countries. University are distinctive in that there students are both old enough to handle the

rigours off online work and technology savvy enough to navigate new platforms . Right now apps like zoom, Webex are popular.

We need academic corporation and multilateral assistance to overcome the difficulties caused by the pandemic and contribute to the common good. Covid 19 does not differentiate between borders gender or socio economic class and the requires a global response. All of us need to work together to find solutions that allow us to face this pendomic. It is not an individual effort. Solidarity was embedded in higher education and universities could facilitate the sharing of knowledge through open courses, joint research and new creative innovative teaching methods and educational alternatives. We need new tools and ways to spread knowledge. we must provide technical and financial support universities need as well as psychological assistance for students and faculty.

That the current crisis must be an opportunity to transform Universities in terms of quality and equality. We find the negative impact of the virus on international exchange programs of students and professors. The research activities was hampered.

Over 19 has widely influenced research. The research institutions and university's need to carefully design and implement the research management guidelines. The research areas that require physical laboratories may need to worry think there working models and carefully plan and prioritise there experiments. A survey was made in Egypt. Comparison of grades between 30076 business students who completed FS to face course in spring 2019 and 30072 students completed via distance learning mode in spring 2020. During the log down t test was conducted to compare grades of wizards course work final exam for 2 groups. Chi-square test was used to compare grade distribution for both groups the effect of gender credit hours age CGPA was assessed. The results suggested that there was no statistically significant difference in students grades distance learning or e-Learning was not poor comparatively.

The social dimension in compasses the creation of an inclusive environment in higher education that generates equity and diversity and is beneficial to the needs of local inhabitants. A social dimension refers to ensuring equity of access, participation and accomplishment of Higher Education with a special focus on students, disadvantaged vulnerable groups.

Provide vast professional training for academic and administrative staff in online and hybrid teaching. Develop students

digital competencies for digital learning. Provide accessible and user friendly counselling and guidance for students so is to find suitable solutions for academy health and career challenges.

Provide interactive support to professors and pupils. Adapt assessment and grading to online teaching and learning. Government must develop e content accessible to the students. E- Contents must be prepared by professors, academicians and experts. Higher education institutes must provide technology training to teaching staff.

References-

- The impact of covid-19 on higher education: a review of emerging evidence.
- Global higher education star scholars.org.
- covid- 19 is sparking www.weforum org
- The effect of covid-19 www.ncbi,nlm,nih.gov
- Covid-19 and Higher Education www.un org.

CHAPTER 24

IMPACT OF COVID- 19 PANDEMIC ON SOCIAL LIFE AND MENTAL HEALTH

M. T. Nikam
Professor, H.O.D. Department of Zoology
Shri Shivaji Science and Art's College Chikhli (443201)
Dist- Buldana, Maharashtra.

Abstract
COVID- 19 affected most of the societies, indirectly social lives in India and all over the world. In order to explore the various impacts of Corona virus pandemic in social life, various research papers have reviewed. The spread of COVID- 19 was threatable in such a way that World Health Organization (WHO) declared it as a pandemic. Social lives of peoples are variously affected by such a disease. During COVID- 19, there was only a way to escape from its effect were the rules which have to be followed by the peoples as precautions. In this regard, Indian government started taking a strong stand against this pandemic attack in the mid of March 2020. The whole country was under the lockdown period which was extended till May 2020. There were certain exceptions at that time which were challenges like that most of the peoples cooperated but not all and such peoples were responsible for spreading of this pandemic. The aim of this study is to determine the various impact of COVID- 19 pandemic in social life and mental health like mental stress, travelling rules, closures of schools, colleges and universities, closures of markets and shopping malls, scarcity of foods and lots of such problems. The study revealed that variously instructions of governments were followed by the societies, to avoid the risk of threat.

Keywords*: COVID- 19; stress; pandemic; impact; Mental Health; precautions; Societies.*

Introduction

The COVID- 19 has led to the severe exposure of humans to stressful conditions. Various strategies to control the spread of the virus were implemented in India and in other countries also. The Corona virus was a type of Severe Acute Respiratory

Syndrome (SARS) and it called as SARS-CoV-2. Patient with the infection of COVID-19 shows symptoms of infection including fever, chills, cough, myalgia, nausea, coryza, sore throat, breathing difficulties, vomiting and diarrhea. This article has focused on that the identification of social effects of the pandemic on the society habiting in a particular area, amongst peoples including children, youth and elders and professionals, how they did fights with Corona. It was designated by the World Health Organization (WHO) on 11th February 2020 as Corona virus disease- 19 (abbreviated "COVID-19") and officially declared it as a pandemic on 11th March 2020 (WHO, 2020). Emergency protocols were implemented in India to control the spread of the virus which resulted in restriction on all non – essential public movements (Saha et al., 2020).

In India, there were highest infection rates of COVID- 19 in the cases (Gupta et al. 2020). In India everyone has experienced closure of educational institutions, sports, cinemas, mall, hotel and restaurants, only shops for daily needs were opened. Particularly, school closures may have been especially damaging the young youth of India and whole of the world due to lockdown periods (Patra and Patro, 2020). Students have faced difficult situations in their academic lives, like high cost of internet facilities, limited access to digital resources, decrease in income of family and the only way of online- learning due to lockdown conditions.

Moreover, 1.5 billion students were deprived from basic education across the world (Lee, 2020). Changed life patterns, daily activities including lack of outdoor activities, social distancing, disturbed sleeping habits have affected the mental health of the students (Cao et al., 2020). There was a wide gap between the aspirations of government's policies and their uses in online education at the grassroots level (Chaturvedi et al., 2021). Vigorously impacts noted in certain ways such as the weakness of online teaching infrastructure, the limited exposure of teachers to online teaching, the information gap, non-conductive environment for learning at home, equity and academic excellence in terms of higher education. The emerging of psychological problems triggered by COVID-19 particularly in children has been extensively highlighted and emphasized (Dalton et al., 2020). This article evaluates the impact of the COVID-19 pandemic on social life and mental health and the solutions which have to be taken into consideration across the world. The challenges and opportunities of online and continuing education

during the COVID-19 pandemic was a great challenge to social peoples and students.

Impact of COVID- 19 Pandemic on Social Life-

Millions of peoples in all places have faced such an extensible threat. Nearly half of the world's 3.3 billion global workface were at the risk of lose their livelihoods at that time; especially workers particularly more vulnerable, because of the lack of social protection, all facilities, money and lack of access to quality health care. Without any type of income during lockdowns, many people were unable to feed themselves and their families. For most of the peoples, it was a big challenge for finding any source for food. The online learning, distance and continuing education have become a challenge for this unprecedented global pandemic, despite the challenges posed to both educators and the learners (Pokhrel and Chhetri, 2021).

Impact of COVID- 19 on Mental Health-

COVID- 19 was a novel disease especially for children. It was characterized by harmful viral pneumonia like symptoms. As a result of the pandemic, the health professionals who were overworked suffered high level of psychophysical stress (Mohindra et al., 2020). In order to reduce anxiety and depression symptoms widespread among the population, the World Health Organization 2019 and the Centers for Disease Control and Prevention 2020 proposed specific guidelines on the correct use of health protection with the aim to minimize the distress associated with health-care professions. Most of the older patients became severely affected and died due to cardiovascular infection. Lots of peoples have generated new diseases as a result of COVID- 19 pandemic, indirectly the effect was on the mental health (WHO, 2020). The pandemic has been affected the entire food system and the result was that the costly food items. Millions of agricultural workers, self employed regularly faced scarcity of foods, malnutrition and poor health. Society at any where suffered from a lack of safety and labour protection as well as other types of abuse. Pregnant mothers were faced a lots of difficulties and lack of good caring facilities due to lockdown situations. With low and irregular incomes and lack of social support, many of them scared from such situations.

The COVID-19 pandemic was linked to exceptionally high levels of psychological distress among students (Gao et al., 2020).

The spread of COVID- 19 severely threatened the public health situation and greatly affected the global economy. The result of all those situations was that labour displacement, business closures, school and colleges closures and stock crashes (Chinnazzi at al., 2020). Since the start of the lockdown during COVID- 19 pandemic, entry bans, quarantine conditions as well as shutting off travelling such limitations have been implemented for citizens in several countries in most affected areas (Sohrabi et al., 2020). In analyzing the psychological impact of the quarantine, the importance for individuals to feel integral part of the society emerged. Experts of public health believed that social distancing was the better solution to prevent the spread of the Corona virus. However, although it could not possible to predict the duration of the pandemic, we know very well the serious impact of those measures on the society, on relationships and interactions, in particular on the empathic process (Saladino et al., 2020).

Discussion

The outbreak of COVID- 19 has greatly affected the lives of all parts of the society. One of the difficult loss during this pandemic was the closure of educational institutions to slow the transmission of Corona virus from one person to another. Various government agencies imposed measures such as social distancing and restrictions on travel but they did take into account the health implications. Social distancing involved staying away from people to avoid the spread of pandemic and also the peoples obeyed these rules and ultimately it has forced peoples to do work from home, to minimize their needs, to avoid contacting and travelling, social gathering for any purpose. But social peoples have faced lots of difficulties following such rules and restrictions.

The aim of this study is to find out the impact of COVID- 19 on the education, societies and on their social lives and to find out what precautions taken up by governmental and non- governmental agencies and unfortunately by peoples. The findings indicated that limited facilities for the societies and restrictions on travelling due to affected situations. The impact of different factors among the students was a stressful, sleeping habits, social interaction and their daily fitness routines significantly affected their health conditions (Chaturvedi et al., 2021). There are certain limitations to study the

effects of COVID- 19 pandemic vigorously. It was done from observations of the research papers related about the Corona virus.

Conclusion

The study on the impact of COVID- 19 on social life and mental health concludes that pandemic was severely impacted the lives of individuals as a whole. No one could skip from such threatable conditions. Every human have faced difficulties in the way of life, directly or indirectly; especially old aged peoples were greatly affected. They did not have the potency to accommodate with infectious condition and adult peoples also have faced lots of difficult situations by shutting down of schools, shopping malls & travelling. Special impact of lockdown was faced by poor peoples in India; also peoples belonging to poor families lost their jobs, temporary works for which they migrated across their villages to cities and the result was that, scarcity of foods, shelter and everything which required for living to normal person. COVID- 19 disease given a mental stress among the peoples and created several other issues. So there is a need to create and use of new strategies by governments to improve all the facilities for poor social peoples and also educating students which can be greatly affect their lives, their surviving in the world.

The side effects of COVID- 19 pandemic we are still under the effect of Corona and stresses originated from it. Still today there are some new cases of Corona are found in India which indicating the extensibility of such pandemic. There is a requirement of good opportunities for the social peoples and the young ones. Since, the evolution of the pandemic is uncertain and the effects on mental health may be long term, it is important to study the most effective ways to introduce general awareness about such viral diseases at school level, city level and thereby reduce fear and consequently burden of psychological problems.

References

Cao, W., Fang, Z. and Hou, G. (2020). The psychological impact of the COVID- 19 epidemic on college students in China. *Psychiatry Research* 287: 112934. https://doi.org/10.1016/j.psychres .2020. 112934.

Chinazzi, M., Davis, J.T., […], and Vespignani, A. (2020). The effect of travel restrictions on the spread of the 2019 novel Corona virus (COVID- 19) outbreak. Science 368, pp. 395- 400.

Chaturvedi, K., Vishwakarma, D.K. and Singh N. (2021). COVID-19 and its impact on education, social life and mental health of student's: A survey. *National Centre for Biotechnology Information*; https://www.researchgate.net/publication/347935769.

CSTS (2020). Immediate Psychological Responses and Associated Factors during the Initial Stage of the 2019 Coronavirus Disease (COVID-19) Epidemic among the General Population in China. *Int. J. Environ. Res. Pub Health* 17:1729. doi: 10.3390/ijerph17051729.

Dalton, L., Rapa, E. and Stein, A. (2020). Protecting the psychological health of children through effective communication about COVID-19. *Lancet Child Adolesc Health*; 4(5):346–7.

Gao, J., Zheng, P.,Jia, Y., Chen, H., Mao, Y.,Chen, S., Wang, Y., Fu, H. and Dai, J. (2020). Mental health problems and social media exposure during COVID-19 outbreak. *PLoS ONE* 2020, 15, e0231924.

Lee, J. (2020). Reflections features mental health effects of school closues during COVID- 19. *The Lancet Child & Adolescent health;* 4: 421. doi:10.1016/52352-4642(2020)30109.

Mohindra, R. R. R., Suri, V., Bhalla, A., and Singh, S. M. (2020). Issues relevant to mental health promotion in frontline health care providers managing quarantined/isolated COVID19 patients. *Asian J. Psych.* 51:102084. doi: 10. 1016/j.ajp.2020.102084

Patra, S and Patro, B.K. (2020). COVID- 19 and adolescent mental health in India. *Psychiatry Res*. 293: 113429. doi:10.1016/jp sychres.2020.113429.

Pokhrel, S. and Chhatri, R. (2021). A literature review on impact of COVID- 19 on teaching and learning. *Higher Education for the Future*; 8(1); pp: 133- 141.

Saha, J., Barman, B., and Chouhan, P. (2020). Lockdown for COVID- 19 and its impact on community mobility in India: An analysis of the COVID- 19 community. *Mobility Reports*, 2020.

Sohrabi, C., Alsafi, Z., […], and Agha, R. (2020). World Health Organization declares global emergency: A review of the 2019 novel Corona virus (COVID- 19), *International Journal of Surgery (London, England)*; 77:217.

Saladino, V., Algeri, D. and Auriemma, V. (2020). The psychological and social impact of Covid-19: new perspectives of well – being. *Frontiers in Psychology*; www.frontiersin.org; Vol.11; doi: 10.3389/fpsyg.2020.577684.

World Health Organization (2019). Emergency Global Supply Chain System (COVID-19) Catalogue. Available online at: https://www.who.int/publications/ i/item/emergency-global-supply-chain-system-(covid-19)-catalogue (accessed June 10, 2020).

WHO Director- General's opening remarks at the media briefing on COVID-19- 11th March. *World Health Organization.* www.who.Org.

CHAPTER 25
CORONA PANDEMIC AND GLOBAL E- COMMERCE MARKET

Mukesh Kumar
Assistant Professor, Department of Business Administration, Dronacharya College of Education, Kangra (H.P.)

INTRODUCTION

Electronic commerce, commonly known as E-commerce or e-commerce, is trading in products or services conducted via computer networks such as the Internet. Electronic commerce draws on technologies such as mobile commerce, electronic funds transfer, supply chain management, Internet marketing, online transaction processing, electronic data interchange (EDI), inventory management systems, and automated data collection systems. Modern electronic commerce typically uses the World Wide Web at least at one point in the transaction's life-cycle, although it may encompass a wider range of technologies such as e-mail, mobile devices, social media, and telephones as well. Electronic commerce is generally considered to be the sales aspect of e-business. It also consists of the exchange of data to facilitate the financing and payment aspects of business transactions. This is an effective and efficient way of communicating within an organization and one of the most effective and useful ways of conducting business. It is a Market entry strategy where the company may or may not have a physical presence. COVID-19 has been exceptionally different from what we have ever witnessed. As the world was forced into complete shutdown, it's safe to say that e-commerce was the saving grace, helping millions of people stay home and procure. *"Customers want to avoid stepping out unless it's very critical. We are helping customers who are stuck in that situation, and we are able to play a small part in helping (cater) to their needs,"* – Gopal Pillai, Vice President for Seller Services at Amazon India.

Covid 19/Corona Pandemic

WHO declared Coronavirus disease 2019 (COVID-19) as a global pandemic on 11 March 2020. World Health Organisation

(WHO) declared Covid-19 a global pandemic which is inflicting two kinds of shocks on countries: a health shock and an economic shock. Both of these shocks leads to country on darkside. The first case of covid-19 was first reported in Wuhan, china ion December 2019. The novel coronavirus variant causes the disease. Since the first outbreak of covid-19 in china, the disease has rapidly spread across the world, thereby infecting millions of persons besides causing several deaths and economic disruptions (Leite, Lindsay, & Kumar, 2020).

It is an airborne disease that is rapidly transmitted from one individual to another. It causes mild conditions and can result in more severe illness, causing acute breathing difficulties. Its symptoms in humans entail respiratory symptoms such as fever, cough, and shortness of breath. It can result in pneumonia, a severe acute respiratory syndrome that can easily result in death. Several restrictions were implemented globally towards minimizing its spread, such as social distancing, washing hands, using sanitizer, covering the mouth while coughing, and wearing surgical masks The Covid -19 has created not only a health crisis but also an economic one and a Covid-19 recession is now a reality. This has triggered fears of a deep and prolonged global recession. On April 2, 2020 the World bank President David Malpass in his statement said that beyond the health impact from the Covid -19 pandemic ,we are expecting a major global recession and On 9th April chief of IMF, Kristalina Georgieva said that the year 2020 could see the worst global economic fallout since the Great Depression in the 1930s.

Impact on Covid 19 Pandemic on E –Commerce Market

E-Commerce is getting increasingly popular since the outbreak of the coronavirus disease 2019 (hereafter, Covid 19) pandemic. Due to lockdown policy, also known as 'stay-at-home orders', people have not been permitted to leave the house with the exception of getting daily exercise, going grocery shopping and making "essential" trips. Thus, ,do their shopping while avoiding possible Covid 19 infection, consumers started to purchase items online. As a result, EC market has been growing dramatically all over the world. But the opportunity in form of increased customer or sale brings many challenges which need to be addressed at same time.

Positive impact of Pandemic on E commerce market

1. Global post crisis rise in e-commerce sales: Covid 19 pandemic forces e commerce companies and retail companies to

change their business process with more strategic preparation and advancement. Risk of further business closures from COVID-related disruptions, in addition to the inherent financial fragility of business, paints a grim forecast for many businesses still open. Or is this just an opinion based on a lack of data? The below chart we see a distinct upward jog in total global retail sales from 2019-2020, giving a strong boost to a steady 8% growth in retail e commerce sales worldwide forecast through 2024.This shows us an increase in online retail sales as a result of the paradigm shift that COVID disruptions have brought to business.

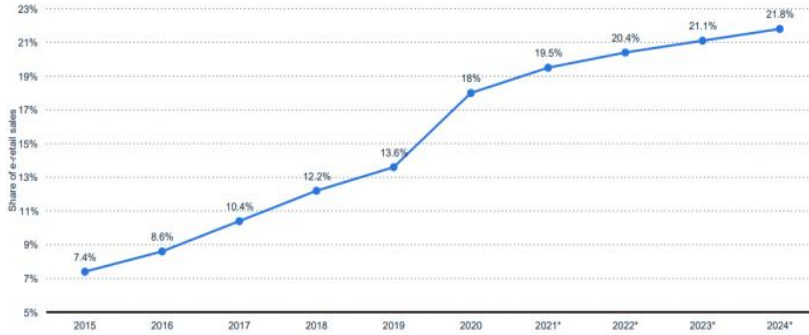

CHART 1 : e-commerce Share of Total Global Retail Sales 2015-2024 (Source : International Trade Administration)

2. Pandemic impact to global consumer behavior: Governments in different countries placed lot of Pandemic-related business restrictions that prevented in-person activities crept across the world's regions, business turned to the pandemic-proof e-commerce sales channels for basic survival. Hence Online, global consumers could not stop purchasing through their favorite websites (44% of global digital purchases) and online marketplaces (47% of global digital purchases). It leads to further rise in online transactions worldwide.

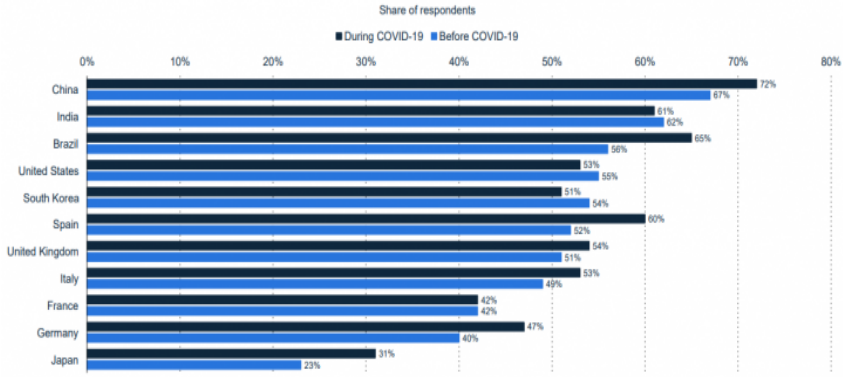

CHART 2 : Share of B2B Companies Selling Through e-commerce Before and During the Pandemic, By Country 2020 (Source : International Trade Administration)

The above chart shows a forecast rise in 19% of worldwide ecommerce revenue between pre-and-post COVID-19 timeframes in 2020. Food & Personal Care products show the maximum growth with a forecast increase of 26% of revenue as a result of consumer shift to online sales channels.

3. **Impact of Pandemic on Global Small B2B:** The COVID pandemic impacted business activities around the globe, creating opportunities for some countries where business was once lost. There were many countries where actual pace of business before pandemic was slow or in deep trouble. Small B2B companies in the United Kingdom and Brazil for example had significant increases in online revenue from their pre-COVID online sales figures.

4. **Pandemic boosted Global Cross border Revenue:** COVID pandemic-related business restrictions have forced a global business paradigm shift towards the digital economy. Hence, result in sales diversification online and growth in cross border sale figures. The impact to global ecommerce revenues the pandemic has had, adding an additional 19% sales growth for 2020, and additional 22% sales growth to the existing 9% and 12% regular forecast sales growth rates, respectively. Which is great indicator for global financial health.

5. **Pandemic leads to cross media marketing:** Cross promotion is usually known as a marketing promotion in which you promote your product with other's business products, often similar to

yours. It is also similar to cross media marketing. Pandemic mobilise the product to those countries which were in situation of great need. Through this business will be on flow and mutual benefit as a result.

Negative impact of Pandemic on E commerce market

The covid-19 pandemic has led to globally implementing strict measures such as social distancing, lockdowns, and baring international flights, largely affecting the retail industry. Social distancing, lockdowns, self-isolation and travel restrictions have forced the retail industry to decrease its workforce and manufacturing. The restrictions led to a significant decrease in the market value of the retail sector however, the covid-19 pandemic has negatively impacted the sector, reducing their creation, challenging their survival, and limiting their growth. Since the pandemic outbreak, business registrations have greatly been decreasing over the past months. Most startups have faced several challenges due to the pandemic since they are more vulnerable than the existing business due to the shock brought by the crisis. According to eMarketer, while worldwide retail sales are expected to decrease by 3% in 2020, retail EC sales are predicted to increase by 28% .E Commerce business is expected to mitigate the negative effects of Covid 19 on international trade.

1. **Pandemic and Impact on Workforce:** The pandemic has of course, led to some changes in e commerce companies workforce. Many companies relocate their staff, fire some people, reduce their salaries and many more companies did not adjust their staff etc. As a whole the pandemic create lot of problems to workforce globally.
2. **Impact on brick and mortal retailers:** Many brick and mortal retailers had to drastically change their business if they wanted to avoid go out of business. So many new practices introduced during the pandemic. Big players survive their self due to financial reserve, approach to modern technologies, good customer base but many business shut down due to financial crunch and not capable to change as per situation demanded.
3. **Pandemic leads to Disrupted supply chain**: Pandemic situation create panic all around the globe hence lead to disturbance to supply side in all countries. Limited operations due to lockdown, managing inventory, and overall lack of employees makes situation more worst.

4. **Shifted strategies of business:** Pandemic conditions forces business to adopt new strategies which can affectively deals with pandemic challenges. Businesses tend to improve or change personlisation, site search and Omni channel. The strategic vision has also shifted due to Covid-19. Most of the companies focus on the digital part of their business by adjusting assortment, investing in new e commerce software or focusing more on online marketing channels. Business need to execute their strategies and act faster.
5. **Financial consequences:** Despite all the bad things happening due to the outbreak of the coronavirus, financially it was not bad for many e commerce companies. Many of companies show their profit margin very well but their budget for the activities goes higher which further resulted to more demand of financial resources it put extra pressure on companies financial requirements.

Industry impact and Business disruption due to Covid 19 pandemic

- **U**PI payment and digital transaction platform gain 50% new users e.g. Phone Pe , DTH recharge and bills payments are recording all time high.
- Buying and selling online market place records substantial decline in traffic e.g. OLX usage drop due to non essential nature of the service.
- More focus on continuous technological advancements so that business can be ready to face any technological emergency and shift in future.
- The tone of marketing communication during current scenario changed. Now the companies start meaningful and positive conversations with the user.
- Companies now provide value adds through product offerings.
- Adapting marketing strategy and changing marketing mix. Strategy to be more humane.
- The subscription led entertainment industry is growing e.g. OTT offering, Bollywood classics and movies.

Conclusion

Online purchase is a long-term tendency that will likely persist long after the epidemic has gone, making internet buying even more

enticing as a consequence of the COVID-19 constraints. In order to fully capitalise on this opportunity, businesses must provide consumers with openness, flexibility, and simple-to-use omni-channel solutions. E-commerce will continue to grow in 2022, with no indication of slowing down. Many businesses, both brick-and-mortar and online, are now competing with each other. If e-commerce enterprises want to stand out from their competitors, they must anticipate the next big trend. It might be difficult to stay on top of the constantly shifting landscape of this profession, but those who do so will be rewarded handsomely. When compared to a year ago, the e-commerce world seems almost unrecognizably different. As a result of the epidemic, internet shopping has risen to prominence and has become a requirement for many firms. An estimated 19% of in-store retail transactions were made online in February of this year. After a year, it had risen to about 35%.

References

1. IMF (2020), "Policy responses to Covid-19", International Monetary Fund, Washington DC. https://www.imf.org/en/Topics/imf-and-covid19/Policy-Responses-to-COVID-19#I
2. Emarketer (2020). Global E-commerce 2020 Report. January.
3. ITA (International Trade Administration) (2019). COVID-19 Business Impact Survey. May.
4. https://www.ey.com/en_in/covid-19/ecommerce-during-covid-19-preparing-for-now-next-a nd-beyond
5. "India's e-commerce penetration will double to 11 per cent by 2024: Goldman Sachs", The Economic Times, Jul 27, 2020, https://economictimes.indiatimes.com/industry/services/retail/indias-e-commercepenetration-will-double-to-11-per-cent-by-2024-goldman sachs/articleshow/77190652.cms
6. Impact of COVID Pandemic on eCommerce, Sept 2021 https://www.trade.gov/impact-covid-pandemic-ecommerce
7. Debnath Burman and Dr. Artee Aggrawal, "Factors affecting buying behaviour in E-commerce in India: A review of literature", International Journal of Business Quantitative Economics and Applied Management Research, Volume 2, Issue 2, July 2015
8. Sheth Jagdish, "Business of business is more than business: Managing during the Covid crisis", Industrial Marketing Management, Volume 88, July 2020, Pages 261-264

9. McKinsey & Company (2020a). Consumer sentiment and behavior continue to reflect the uncertainty of the COVID-19 crisis. July.
10. OECD (2020a). Policy Responses to Coronavirus (COVID-19). Connecting Businesses and Consumers During COVID-19: Trade in Parcels. July.

CHAPTER 26
COVID-19 IMPACTS ON AIR QUALITY: A REVIEW

Sabahat Anjum Qureshi
Assistant Professor (Department of Chemistry)
Govt College Chourai Dist. Chhindwara M.P.

SUMMARY

Due to the pandemic COVID-19, almost every big and small city and village of the countries like China, Taiwan, Italy, USA, France, Spain, Turkey, Iran, Germany, S Korea, U.K, India, Australia and many more, is under partial or total lockdown for a long period of time ranging from a few weeks up to a few months.

The major sectors contributing to air pollution are Automobiles, transport, industries, power plants, construction activities, biomass burning, road dust resuspension and residential activities. But during Covid-19 lockdown, all transport services – road, air and rail were restricted with exceptions for essential services. Educational institutions, industrial establishments and hospitality services were also restricted during lockdown. Consequently, air quality improvement has been seen in many towns and cities across the world.

INTRODUCTION

The Corona virus (Covid-19 virus) was first reported in December, 2019, in Wuhan, China. It was first called novel coronavirus infected pneumonia (NCIP) (Wang et al. 2020). Later on WHO named this new virus as the 2019 novel coronavirus (2019-nCoV) (Lu et al. 2020a, b) and announced this virus as a global pandemic (Zhang et al. 2020). The Coronavirus Study Group (CSG) named this virus as severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARSCoV-2) (Gorbalenya et al. 2020).

The SARS-CoV-2 can affect the respiratory tract from nose to lungs (Wölfel et al. 2020). This virus can transmit from human-to-human and human-to-animal (Graham and Baric 2010). Mucous of the infected person is the most likely tool of transmission of the virus into the air and can enter into a host body through nose and mouth. .

Vomiting, diarrhea, fatigue and high fever may develop with severe inflammation as a primary symptoms of the virus (Dong et al. 2020). This virus can cause inflammation in lungs, resulting in cough and difficulty in breathing by reducing the function of alveoli.

This disease has affected health and economy of the world drastically. Millions of people have already been died from this infection while millions are still facing the post covid illness. According to WHO, till 8th of Aug, 2022 around 6.42 millions deaths have been reported due to COVID-19 worldwide. COVID-19 is the second largest pandemic of the twenty-first century in human history after the Middle East Respiratory Syndrome (MERS) (Zowalaty and Järhult 2020).

Change in Air Quality during Covid-19 Lockdown

Millions of people die every year due to polluted air, smog and soot particles therefore, these all are called slow killers. According to WHO reports air pollution kills 7 million people every year worldwide. Covid-19 lockdown seem to have a number of positive effects on the environment across the world. Due to lockdown and a significant slowdown of social and industrial activities air and water qualities have improved worldwide.

As companies, industries and transportation have closed down during pandemic due to lockdown, it has brought a sudden decrease in greenhouse gases like CO_2,NO_2 and SO_2 (sulpher dioxide). Transport sectors that is vehicles and aviation industries contribute almost 72% and 11% in emission of green house gases respectively. Studies suggest levels of air pollution in New York city has reduced by nearly 50% . About 50% reduction in N_2O (Nitrous oxide)and CO (Carbon mono-oxide) is estimated due to shutdown of heavy industries in China. The European environmental agency suggested that emission of NO_2 is reduced from 30-60% in many European cities. Levels of NO_2 and PM2.5 reduced by almost 70% in Delhi NCR during lockdown period.

PM2.5

The most dangerous air pollutant PM2.5 (Particulate matter 2.5) is group-1 carcinogen. PM2.5 can cause respiratory problems , heart attack and even death. According to WHO report every year more than 4 million deaths occur due to PM2.5 causing heart disases, strokes, lung cancer and other respiratory infections (WHO 2019).

The baseline emission of PM2.5 in various cities of the world is 100 µg/ $m^{3.}$ But after lockdown due to Covid-19 the level of PM2.5 has decreased drastically and thousands of lives have been saved from hazardous effects of PM2.5. Table-1

S.No.	City	Average PM2.5 during lockdown 2020 µg/m3	Reduction compared to 2019	Lockdown period
1.	Delhi India	32.8	-60%	March23-Apr13
2.	London UK	16.2	-9%	March23-Apr13
3.	New York City US	4.4	-25%	March23-Apr13
4.	Lahore Pakistan	25	-63%	March23-Apr13
5.	Seoul South Korea	24.1	-54%	March23-Apr13
6.	Wuhan China	35.1	-44%	Feb26-march18

Table 1- Comparision in PM2.5 levels in the most polluted cities of the world during lockdown period.

NO_2

Nitrogen dioxide is a toxic gas Automobiles are the main source of NO_2 (Nitrogen peroxide). NO_2 can cause several respiratory diseases. It also causes acid rain.. More concentration of NO_2 in environment than 200µg/m3 can cause respiratory tract infections. Due to Covid lockdown , concentration of NO_2 in air has dropped drastically from 5.6 µg/m3 to 0.2 µg/m3 (Otmani et al 2020). According to European environmental agency EEA NO_2 emission dropped from 30-60% in various European cities like Barcelona ,Millan ,Madrid, Rome and Paris during lockdown. Studies suggest that NO_2 emissions declined by 20-30% in China, Italy and France , by 30% in the USA and by 40-50% in India during Covid-19 lockdown period. Fig-1 & 2.

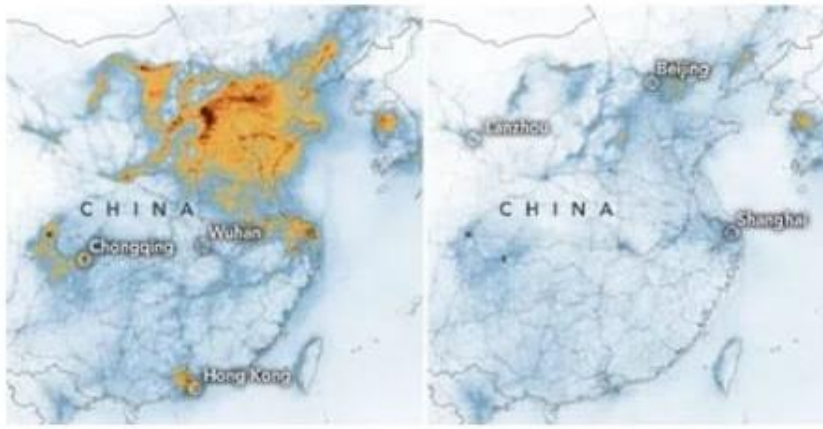

Fig-1: A dramatic dop off in levels of NO_2 over China before and during Covid-19 lockdown (NASA)

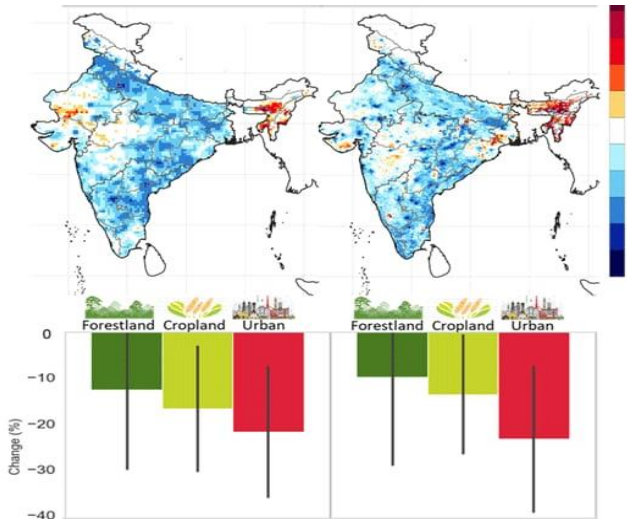

Fig-2: Percentage change in NO2 concentration during Covid-19 lockdown in INDIA.

CO_2

CO_2 is main greenhouse gas therefore ,related to global warming. Due to less consumption of fossil fuels i.e coal and petroleum during covid lockdown CO_2 emission has reduced as transport and vehicles were restricted globally. According to UK based climate science and policy website carbon brief emission of CO_2 in China has reduced up to 25% during Covid-19 lockdown.

According to a study done by Le Quere et al (2020) daily global CO_2 emission has decreased by 17% on the average while some countries showed a decrease up to 26%. Le Quere et al analyzed global CO_2 emission from 69 countries, including 85% of the world population and 97% of global CO_2 emissions compared to time April 2020 and April 2019. Their studies also suggest that if lockdown restrictions would continue an annual global emission decrease of up to 7% could be achieved i.e lockdown was efficient to offset global warming. Fig-3

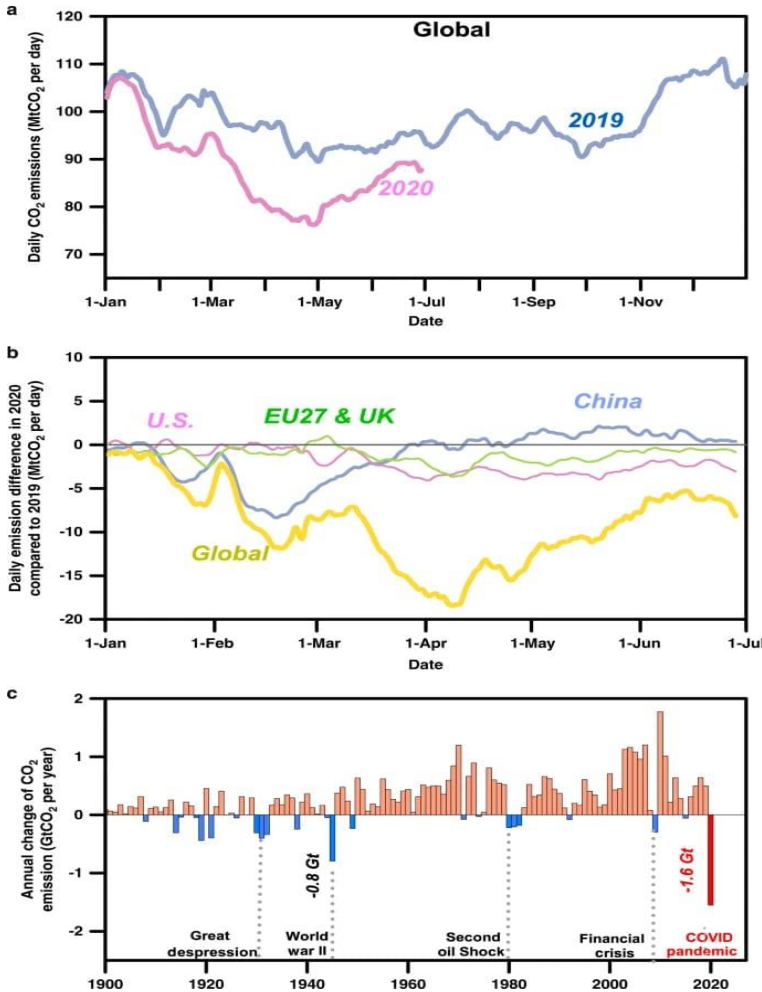

Fig-3: Change in CO_2 concentration during Covid-19 lockdown globally.

CONCLUSION

Coronavirus lockdowns across the world seem to have a number of positive effects on the air quality. Millions of the people have been stayed in their homes but the natural world outside has continued to rumble on and the natural world is benefiting from our absence.

Drastic quarantine measures implemented by the government authorities across the world resulted in a significant change in environment which is a good sign for the deadly global environmental crises, e.g. emission of greenhouse gases and ozone layer depletion. But these positive impacts of pandemic on environment are temporary and unsustainable. The international community must focus on the impacts of climate change and commit for taking efforts on environmental issues for healthy and safe future. The unwanted pandemic taught a lesson to us that if we protect the environment, environment will protect us.

References-

1. Impact of lockdown on air quality, CPCB, M/o Environment, Forest and Climate Change, Govt. of India. http://www.indiaenvironmentportal.org.in/files/file/Impact-Of-Lockdown-On-AirQuality.pdf
2. Website of World Health Organisation. Https://www.who.int/emergencies/diseases/novel-coronavirus-2019
3. The Indian Express, dated 08 May, 2020. https://indianexpress.com/article/opinion/web-edits/rediscovering-sustainabledevelopment-through-a-covid-19-lockdown-lens-6399986/
4. Achakulwisut, P., Brauer, M., Hystad, P., & Anenberg, S. C. (2019). Global, national, and urban burdens of paediatric asthma incidence attributable to ambient NO2 pollution: Estimates from global datasets. The Lancet Planetary Health, 3(4), e166–e178. https ://doi.org/10.1016/S2542 -5196(19)30046 -4.
5. Ahmed, W., Angel, N., Edson, J., Bibby, K., Bivins, A., O'Brien, J. W., et al. (2020). First confirmed detection of SARS-CoV-2 in untreated wastewater in Australia: A proof of concept for the wastewater surveillance of COVID-19 in the community. Science of The Total Environment, 138764. https ://doi. org/10.1016/j.scito tenv.2020.13876 4.

6. Allegrante, J. P., Auld, M. E., & Natarajan, S. (2020). Preventing COVID-19 and Its Sequela: “There Is No Magic Bullet... It’s Just Behaviors”. American Journal of Preventive Medicine. https ://doi. org/10.1016%2Fj.amepr e.2020.05.004
7. Carrión, D., Kaali, S., Kinney, P. L., Owusu-Agyei, S., Chillrud, S., Yawson, A. K., et al. (2019). Examining the relationship between household air pollution and infant microbial nasal carriage in a Ghanaian cohort. Environment international, 133, 105150. https ://doi.org/10.1016/j.envin t.2019.10515 0.
8. Bauwens, M., Compernolle, S., Stavrakou, T., Müller, J. F., Van Gent, J., Eskes, H., et al. (2020). Impact of coronavirus outbreak on NO2 pollution assessed using TROPOMI and OMI observations. Geophysical Research Letters, 47(11), e2020GL087978. https ://doi.org/10.1029/2020G L0879 78.
9. Budd, L., & Ison, S. (2020). Responsible transport: A post-COVID agenda for transport policy and practice. Transportation Research Interdisciplinary Perspectives, 6, 100151. https ://doi.org/10.1016%2Fj. trip.2020.10015 1.
10. ESA. (2020b). Retrieved June 3, 2020 from http://www.esa .int/ESA_Multi media /Image s/2020/04/Deser ted_Venet ian_ lagoo n.
11. Zambrano-Monserrate, M. A., Ruano, M. A., & Sanchez-Alcalde, L. (2020). Indirect effects of COVID-19 on the environment. Science of The Total Environment, 728, 138813. https ://doi.org/10.1016/j.scito tenv.2020.13881 3.
12. WHO. (2020a). Air pollution. Retrieved July 23, 2020 from https ://www.who.int/healt h-topic s/air-pollu tion#tab=tab_1.
13. WHO. (2020b). Rolling updates on coronavirus disease (COVID-19). Retrieved July 23, 2020 from https :// www.who.int/emerg encie s/disea ses/novel -coron aviru s-2019/event s-as-they-happe n.
14. WHO. (2020c). Statement on the second meeting of the International Health Regulations (2005) Emergency Committee regarding the outbreak of novel coronavirus (2019-nCoV). Retrieved July 23, 2020 from https ://www.who.int/news-room/detai l/30-01-2020-state ment-on-the-secon d-meeti ng-of-the-inter natio nal-healt h-regul ation s-(2005)-emerg ency-commi ttee-regar ding-the-outbr eak-of-novel –corona virus-(2019-ncov).

15. Sharif, S., Ikram, A., Khurshid, A., Salman, M., Mehmood, N., Arshad, Y., et al. (2020). Detection of SARS-Coronavirus-2 in wastewater, using the existing environmental surveillance network: An epidemiological gateway to an early warning for COVID-19 in communities. medRxiv. https ://doi. org/10.11 01/2020.06.03.20121 426.
16. Paital, B. (2020). Nurture to nature via COVID-19, a self-regenerating environmental strategy of environment in global context. Science of The Total Environment, 729, 139088. https ://doi.org/10.1016/j.scito tenv.2020.139088.

CHAPTER 27
CORONA PANDEMIC AND EDUCATION

Prof. Umesh Kumar
Director at IIMT, Greater Noida, UP, India

Dr. (Prof.) C. B. Kumar
Head Training & Asst. Prof at IIMT, Greater Noida, UP, India

Abstract:
COVID- 19 has changed education for learners of all periods. primary data design educational losses at numerous situations and corroborate the increased anxiety and depression associated with the changes, but there aren't yet data on long- term issues. Guidance from oversight associations regarding the safety of new delivery modalities for education have been snappily forged. It's no surprise that the socioeconomic gaps and gaps for special learners have widened. The medical profession and other professions that educate by incrementally graduated externships are also oppressively affected and have had to make drastic changes. COVID-19 has affected all of us, to age group of the societies, education system, Educator, faculty, Businessman and Entrepreneur. The study investigated the impact of COVID-19 period on education systems, Educators and institutions. There were overall impact on an educational system like loss of human resources, investment for developing the online system for smart classes and providing the data and information using the technology. Although there were challenges for the educators, schools, institutes and the government regarding online education and the plans of implementing e- learning system. Where majority of people claimed that, our institutions developed new assessment measures, especially for online exams, for all courses in all faculties/departments.

Keywords: *COVID-19, societies, educator, faculty, education*

Introduction

Education has been a very most important drive key to measure development changes over time period and between in the countries. Its effects range from poverty and inequality reductions to paving the way for sustained economic growth Other benefits of education include higher wages, social mobility, useful life skills, improved discipline and willingness to change. Coronavirus affects the education system in the world. seminaries, sodalities, and universities are closed to control the spread of the coronavirus. School check brings difficulties for scholars, preceptors, and parents. So, distance literacy was a result to continue the education system. This chapter aims to review the impact of the COVID- 19 epidemic on the education system in developing countries. During closures, educational institutions design class, prepare tutoring- literacy strategies for post-coronavirus. The educational institutions design strategies to recover lost literacy, and return scholars to academy when seminaries renew. Coronavirus has been impacting the face- to- face education system of developing countries. thus, developing countries should enhance broadcast tutoring, online tutoring, and virtual class architectures.

In India, around 250 million students were affected due to academic closures at the onset of lockdown due to COVID- 19. The epidemic posed several challenges in public and private seminaries which included an anticipated rise in dropouts, learning losses, and increase in digital peak. The epidemic also called into question the readiness of the systems, including preceptors to address such a extremity and sustainability of private seminaries. still, COVID- 19 also acted as a catalyst for digital relinquishment in academy education. With seminaries continuing in numerous countries, it's important that a careful strategy is erected in to smoothen the transition of children back to academy after further than 15 months of home- grounded literacy. This transition has to consider the literacy losses which had happed over the former time as well take a futuristic approach to make a flexible system which can repel any unborn shocks. The pandemic period has prompted a shift of education from offline to online education and also this is likely to further impact these trends in the future.

Digital Education during the Pandemic

As it is seen that COVID-19 has affected the world and its life globally and generated various issues and livelihood problems. The People of the world have been forced to accept the lockdown and uncertainty of the situation. It was a healing heart disaster and many people lost their life of their family, friends, relatives, near and ones. Beyond the everything its impacted on human life was very hard, the pandemic has disrupted the access and educational organisation and to education as well. The research data says that more than 168 million school-going students and children across the world have been by forced to stay at home and suffered as their schools have been closed for over a year and this was where digital education during the pandemic has shown the importance to help in connectivity and imparting education online.

Digital education: The new alternative

The unknown situation has handed an occasion to discover new and alternate ways of tutoring. Children from privileged classes had access to digital bias. They remained in touch with their preceptors, classmates, and the academy, and were suitable to continue their education. The same isn't true for depressed and vulnerable children. Their access to to digital education is limited or missing due to fiscal extremity. When the mode of literacy and tutoring went virtual, some children kept learning by watching education channels on TV etc. Academic facilitators of Smile Foundation also went to homes of scholars and took classes there, with strict adherence to COVID guidelines. When the relaxation was blazoned by the government, some children from pastoral areas were suitable to start attending cluster classes along with digital classes.

In Tamil Nadu, for case, scholars of government seminaries tend to follow rote literacy rather of conception- grounded literacy. But during COVID- 19, the preceptors have created WhatsApp groups to circulate the syllabus and content. Learning vids are also participated on these groups. This is also true for seminaries(private and government) in numerous other countries.

This system has had a positive impact on numerous scholars. They were suitable to concentrate more due to conception- grounded videotape literacy. In a way, digital education has helped children come out from the pattern of rote literacy to conception- grounded literacy.

Online platforms in Pandemic were helpful while schools and universities are closed

In the environment of necessary closures, different forms of online education and education coffers should be mobilised. Countries should use their being online distance courses whenever possible, encourage education technology companies to make their coffers freely available, diversify the modes of delivery depending on age and capacity, and encourage schoolteacher collaboration. While tertiary education institutions are largely used to delivering online courses and have a rich bank of online accoutrements, this is less totally true in primary and secondary education.

- **Use being online literacy platforms and visual accoutrements.** Distance online platforms may formerly have class courses and coffers in different digital format (textbook, videotape lectures, etc.), generally with a bank of affiliated exercises. generally preceptors can elect lectures and exercises their scholars should watch and do, and tutor them through dispatches and coetaneous classes. Where platforms don't live, open educational coffers could be also used.
- **Develop new online tutoring platforms (virtual classrooms).** preceptors can ever educate their scholars while they're at home, using colorful platforms Some "virtual classroom " services formerly live within countries and have been stationed in China and Singapore at scale in the environment of the nimbus extremity, be they public or private,
- **Partner with private educational platforms.** One difficulty with being coffers is that their massive use isn't always possible contemporaneously. Some private sector platforms have formerly made their coffers and services freely available to some seminaries to expand countries ' response capacity
- **Unite internationally to mutualise being online educational coffers.** While countries and occasionally regions within countries have different classes, they tend to educate analogous subjects and could consider rephrasing and using foreign digital coffers aligned with their class.
- **Use all electronic medium.** Some aged electronic means similar as streaming assignments on television is more applicable for veritably youthful scholars or in some surrounds where structure lags before.
- **Give preceptors with digital literacy openings.** Countries

may give or grease preceptors with online schoolteacher training coffers on how to educate online(e.g. ITA) but also with online cooperative platforms that allow them to partake their coffers and give and admit peer feedback.

Challenges of implementation

Digital collaboration and learning system in an online environment was a challenge to deliver education. As per guidance and instruction of the govt. policy school were closed which signifies the way to develop the system and should be digitally advanced to face the challenges.

- ***Balance digital learning(online) and Classroom(offline).*** Simply it can be by replacing the schooling hours in online lectures mode. The shift can be offered to the students in different hours by choice to motivate students and join the session enthusiastically. Lectures can be shortened and combined with non-digital learning activities to make the students happy and have a joyful session.
- ***Emotional management required to balance mind and health.*** The context of the virus and schools, colleges and universities were closed and this was affecting the students as well as their mind power, thinking , creativity and their potential too. Technological resources played a very important role to find a way to provide connection, interaction, and support whilst learning is happening, particularly in a time of uncertainty.
- ***Access to devices.*** In this pandemic students were more likely to have access to smartphones than to laptops at home, because of closing of the colleges and universities. Electronic devices played a very important to the Educators/Governments.
- ***Manage access to device connectivity and IT system capabilities.*** It is very important to have a connectivity of the devices and digital revolution to all students connected at the same time may be a problem in some places, and access to IT system may be guided, controlled monitored to provide good access control to all the students, professionals, administrators and teachers.

Resources and Capacity building views for future for education system.

- ***Secured digital systems for taking exam from home.*** One likely disruption will be for high stake exams (university

entrance exams, Semester exams, school board exams etc.), which often require no access to the other resources and strict system for the examinee.

- ***Explore different time for digital classroom.*** It is very important to schedule different schedule and time for digital class room as per interest and availability of the students The need to explore how students can learn from remote and different places. This different times schedule may help countries better understand the potential of digital skilling and learning enhancement solutions and bring communities, homes, and schools closer together. As usual it is seen that students are used to have a busy school timetable and workload, but this new solutions may help and explore to provide students with various learning opportunities by being given more autonomy. This system should be balanced under appropriate guidance to keep them engaged and learning.
- ***Empower teachers to make them digitally competent and advanced.*** Digitally enhancing capabilities to the teachers will have the opportunity to identify and use of different digital learning solutions, and also to understand how technology can be used for the digital learning system for the students and professional too. Teachers/professional need to be encouraged, Motivated and also to think creatively about their role and responsibilities as facilitators of student learning.

One India Education Policy may be helpful in any national future disaster

- One Board System (School /College/Technical Educational/ Higher Education) in the country
- One Syllabus, Examination Pattern and academic session in the country
- Unlocking digital technology to deliver education as a part of education system
- Improving Class Teaching methods digitally
- Final/Board Examination (MCQ) may be online for fast/easy evaluation
- Partial Digital Lab for the better learning and reducing cost of infrastructure

References:

1. https://data.unicef.org/topic/education/covid-19/
2. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC8445757/
3. https://www.smilefoundationindia.org/blog/digital-education-during-the-pandemic/
4. https://www.google.co.in/books/edition/Primary_and_Secondary_Education_During_C/CQpDEAAAQBAJ?hl=en&gbpv=1&dq=the+effect+of+covid-19+on+education&printsec=frontcover
5. https://www.google.co.in/books/edition/COVID_19_and_Education/2IAwEAAAQBAJ?hl=en&gbpv=1&dq=the+effect+of+covid-19+on+education&printsec=frontcover

ABOUT THE EDITORS

Dr. Farhat Mansoori
(M.A, Net, Ph. D in Sociology)

Working as Assistant Professor, Government College Bichhua, District Chhindwara (M.P.) A P.hd holder from Barkat Ullah University, Bhopal. She has been associated with education industry having More than 11 year's of teaching Experience, Published 6 Book Chapter and 26 Research Papers in National and international journal's.She has been witnessed several National & international Conference. She has also added value to education department by her well crafted presentation, Work shop, 100 plus qwiz.

Mo. No 7000463635
Email: farhat.man87@gmail.com

Dr. Syma Sirdeshmukh
(B.A, B. P. Ed, M. P. Ed, M. Phil, Ph. D)

One of the pioneer name in the field of women sports. For last two decades she is Contributing in Physical Education department .During her sports journey She has participated in 3 inter university and 4 national Sports. She has been associated with many colleges also currently working as a Sports Officer, Government College Barghat, Seoni (M.P.) She has secured her doctorate in Physical Education from Madhav University Pindwara Rajasthan. Her Research papers had published by reputed National & International Journals. She has always been a part of Webinars, FDP, Work shops and 100+ quiz. With her scholar academic front and wide work experience she has graced several National and international Conferences. She is a true example of flame and fire as since 20 years she has been associated with Akashwani Chhindwara as an announcer

Mo. No. +918770123031
Email: samavee.sirdeshmukh@gmail.com

₹ 400/-
eBook

red'shine PUBLICATION INDIA

RED'SHINE PUBLICATION PVT. LTD.
88-90 REDMAC, Navamuvada,
Lunawada, Gujarat-389230
Website: www.redshine.co.in
Email: info@redshine.in
Helpline: 0-76988 26988

ISBN 978-93-954564-6-3

Available on
kindle amazon goodreads Google Books

स्वास्थ्य, समाज, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर महामारी का प्रभाव

डॉ. सायमा सरदेशमुख
डॉ. फरहत मंसूरी

स्वास्थ्य, समाज, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर महामारी का प्रभाव

स्वास्थ्य, समाज, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर महामारी का प्रभाव

डॉ. सायमा सरदेशमुख
डॉ. फरहत मंसूरी

red'shine
PUBLICATION
INDIA

SVAASTHY, SAMAAJ, PARYAAVARAN AUR ARTHAVYAVASTHA PAR MAHAAMAAREE KA PRABHAAV

by: Dr. Syma Sirdeshmukh, Dr. Farhat Mansoori

■

RED'SHINE PUBLICATION PVT. LTD.
Headquarters (India): 88-90 REDMAC, Navamuvada,
Lunawada, India-389 230
Contact: +91 76988 26988
Registration no. GJ31D0000034

In Association with,
RED'MAC INTERNATIONAL PRESS & MEDIA. INC
India | Sweden | UK

■

Text © *Editors*, 2022
Cover page ©RED'SHINE Studios, Inc, 2022

■

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or used in any form or by any means- photographic, electronic or mechanical, including photocopying, recording, taping, or information storage and retrieval systems- without the prior written permission of the author.

■

ISBN: 978-93-95456-41-8
ISBN-10: 93-95456-41-8
DIP: 18.10.9395456418
DOI: 10.25215/9395456418
Price: ₹ 450
December, 2022 (First Edition)

■

The views expressed by the authors in their articles, reviews etc. in this book are their own. The Editor, Publisher and owner are not responsible for them. All disputes concerning the publication shall be settled in the court at Lunawada.

■

www.redshine.co.in | info@redshine.in
Printed in India | Title ID: 9395456418

संपादकीय

नोबल कोराना वायरस (कोविड – 19) जिसकी शुरुआत 2019 को चीन के वुहान से हुई, जिसने पूरी दुनिया को धीरे–धीरे अपनी चपेट में लिया और महामारी का रुप ले लिया। मानव जीवन पर संकट की तरह मंडराने वाली इस बीमारी ने आम आदमी के लिए स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं को चुनौती दी, परिणाम ये हुआ की एक बड़ी आबादी जिसमें बुजुर्ग, युवा और बच्चे सभी सम्मिलित थे उन्हें हमने खो दिया और ये डर हम सबमें ऐसा समाया की पूरी दुनिया आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक रुप से टूट गई। आज भी जिसका सामना कमोबेश सारी दुनिया कर रही है।

कोरोना वायरस ने समय – समय पर अपना रंग बदला और दुनिया को बेरंग करता गया, कोई भी क्षेत्र इससे अछुता नही रहा, इसका प्रकोप इतना था कि दुनिया ठहर सी गई, ये दौर था लॉकडाउन का। मूलभूत सुविधा के लिए अधिकाश जनता तरस गई – रोजी – रोटी छिंन गई, भूखो मरने की नौबत आ गई शिक्षा से विद्यार्थी वंचित हो गए और चिकित्सा सुविधा मुँह चिड़ाने लगी।

महामारी का आघात मानव की जीवन शैली पर सबसे अधिक दिखा लाखो की तादाद में लोगों की नौकरियाँ चली गई, कारोबार बंद हो गए। कहर बरसा सबसे अधिक रोज कमा कर खाने वालो की जिन्दगी पर। आर्थिक संकट, डर, तनाव और आक्रोश की स्थिति ने समाज की जड़े हिला दी, आज भी समाज इससे जूझ रहा है।

ये वक्त है एक जुट होने का आपस में सहयोग करने का, मिलकर सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, स्वास्थ्य और शिक्षा पर पड़े महामारी के प्रभावों को दूर करने का। आईये अपने अनुभव धैर्य और ज्ञान से देश को इस संकट से निकालने के लिए प्रयास करें, और एक बेहतर कल के निर्माण के आधार स्तंभ बने।

कोविड – 19 के प्रभावों से अनिश्चितता भरे जीवन को देखते हुए हमने "स्वास्थ्य, समाज, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर महामारी का प्रभाव" विषय पर नए विचारों को आमंत्रित किया और उसे एक पुस्तक का रुप दिया। पुस्तक में सभी लेखकों ने स्वास्थ्य, समाज, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर कोरोना वायरस के प्रभावों और रोकथाम पर नया एवं प्रभावी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। विषय से संबंधित मनोवैज्ञानिक पहलु पर भी बखूबी प्रकाश डाला जिसमें असाहयता, अकेलापन और चिंता की भावना से जो तनाव और अवसाद ने जन्म लिया है और जो आज के दौर की सबसे बड़ी समस्या और चुनौती है, इस अध्याय मे शामिल है।

हमे विश्वास है कि ये किताब आम जनता, नौकरी पेशा, कारोबारी सहित शोधकर्ताओं के लिए मील का पत्थर साबित होगी एवं जीवन शैली को बदलने और बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करेगी। बूक चेप्टर में तकरीबन 30 अध्याय को शामिल किया गया है जिन्होंने शीर्षक को न्यायोचित बनाया है। अंत में इस किताब को

अस्तित्व में लाने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से जिन महानुभावों ने सहयोग प्रदान किया है मैं उन सभी को हृदय से आभार एवं धन्यवाद देती हूँ।

चलों फिर से बुलंदियों को पाने के लिए .....!

डॉ0 सायमा सरदेशमुख

संपादकीय समिति

प्रोफ़ेसर सी.डी. अगाशे,

डीन डिपार्टमेंट ऑफ़ फिजिकल एजुकेशन,पं0 रवि शंकर शुक्ला युनिवर्सिटी रायपुर,(छ.ग.)

प्रोफेसर.आर. पी.यादव,

भूगोल ,शासकीय महाविद्यालय बिछुआ, जिला – छिंदवाड़ा(मध्य प्रदेश)

प्रोफ़ेसर शशांक शेखर ठाकुर,

समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल।

डॉ. महेंद्र कुमार पटेल,

सहायक प्राध्यापक (विधि), शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बीना, जिला सागर मप्र – 470113

सबाहत अंजुम कुरेशी ,

सहायक प्राध्यापक,शासकीय महाविद्यालय चौरई जिला छिंदवाड़ा मध्य प्रदेश

श्रीमती नूतन दुबे

(सहायक प्राध्यापिका), भिलाई मैत्री कॉलेज, रिसाली, भिलाई, जिला : दुर्ग (छ. ग)

विषय-सूची

अध्याय संख्या	अध्याय का नाम और लेखक का नाम	पृष्ठ सं।
1	कोरोना महामारी और खेल **डॉ. सायमा सरदेषमुख**	1
2	कोरोना महामारी और सायबर अपराध **डॉ. फरहत मंसूरी**	5
3	कोरोना महामारी और सामाजिक परिवर्तन: एक समाजशास्त्रीय विवेचन **डॉ. उषा किरण तिवारी**	10
4	कोरोना महामारी में कोरोना वारीयर्स की भूमिका एवं मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव **विकास बाजपेई**	14
5	कोरोना महामारी मेरी नजर में **डॉ. प्रताप सिंह गोदरे**	25
6	कोरोना महामारी और भारतीय अर्थव्यवस्था **डॉ. कुसुम चन्द्राकर**	30
7	वैश्वीकरण व कोविड-19 **डॉ. संदीप कुमार पाण्डेय**	38
8	कोरोना महामारी एवं मानव का जोखिमपूर्ण व्यवहार **गोपाल सिंह, डॉ. रिजवाना सिद्दीकी**	42
9	कोरोना महामारी और शिक्षा जगत **दीपा देवी**	47
10	कोरोना महामारी एवं शिक्षा जगत **श्रीमती नूतन दुबे**	52
11	कोविड़-19 के दौर में ऑनलाइन शिक्षा की जरूरत और चुनौतियाँ **डॉ. संगीता कुँभारे**	56

अध्याय संख्या	अध्याय का नाम और लेखक का नाम	पृष्ठ सं।
12	कोरोना महामारी राजनीतिक चुनौतियाँ और भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम **डॉ. सविता यादव**	64
13	कोविड-19 और पर्यावरण **डॉ. अर्चना सेन**	69
14	कोरोना का शिक्षा जगत पर प्रभाव **घनश्याम दत्त शर्मा**	74
15	कोरोना काल और मानव-प्रकृति में अंतर्सम्बंध: एक अध्ययन **प्रो. गुलशेर अहमद, डॉ. नियाज अहमद अन्सारी**	80
16	कोरोना महामारी, कानून और न्यायपालिका **डॉ. महेंद्र कुमार पटेल**	86
17	कोविड-19 महामारी पर एक व्यापक अध्ययन: भारत में स्कूली शिक्षा पर प्रभाव **डॉ. शीला सालवी**	90
18	कोविड-19 के दौरान प्रभावित समाज पर सामाजिक-कल्याणकारी युवा नेतृत्व की जिम्मेदारी **खुशबू राठौर, डॉ. क्षमा त्रिपाठी**	98
19	कोरोना वायरस वैश्विक महामारी- 2019 **डॉ. सविता**	104
20	कोरोना महामारी का भारतीय राजनीति पर प्रभाव **चन्द्रशेखर उसरेठे**	107
21	कोरोना महामारी में कोरोना योद्धाओं की भूमिका **श्रीमती सी.दीपलक्ष्मी राव**	111
22	कोरोना महामारी और व्यापार नैतिकता **श्रीमती शोभा प्रजापति**	115
23	कोविड-19 और सामाजिक व्यवहार **डॉ. ध्रुव कुमार दीक्षित**	121

अध्याय संख्या	अध्याय का नाम और लेखक का नाम	पृष्ठ सं।
24	कोरोना संकट उपरांत भारत में गरीबी उन्मूलन की दशा एवं दिशा **डॉ. अब्दुल हक, प्रो. ललिता गोरे**	127
25	कोरोना महामारी एवं तनाव **डॉ. हर्षा चचाने**	134
26	कोविड-19 महामारी एवं ऑनलाइन शिक्षण पद्धति **डॉ. सपना शर्मा सारस्वत, श्रीमती ललिता साहू**	140
27	भारत में कोरोना महामारी का प्रभाव (अर्थव्यवस्था के विशेष परिपेक्ष्य) **डॉ. राजेश मौर्य**	150
28	वैश्विक स्तर पर कोरोना महामारी का शिक्षा पर प्रभाव एवं ऑनलाइन शिक्षण का अध्ययन **डॉ. रिज़वाना सिद्दीक़ी**	161
29	कोरोना और सामाजिक चुनौतियाँ **डॉ. शाहीन शेख**	167
30	कोरोना महामारीत युवकांचे योगदान **डॉ. चंदशेखर आत्माराम भगत**	174

अध्याय १

कोरोना महामारी और खेल

डॉ. सायमा सरदेषमुख
क्रीड़ा अधिकारी, शासकीय महाविद्यालय बरघाट जिला- सिवनी (म0प्र0)

वर्ष 2019 के अंत में चीन के वुहान से कोरोना वायरस ने जन्म लिया और धीरे – धीरे पूरी दुनिया में पैर पसार लिया, इस बीमारी ने ऐसा कोहराम मचाया की डब्ल्यू. एच. ओ.ने इसे महामारी का नाम दे दिया। इस वबा से कोई भी क्षेत्र अछुता नही रहा, तो खेल जगत इससे कैसे बचता। खेल जगत पर भी इसके काले बादल मंडराने लगे, खिलाड़ियों को मैदान से दूर होना पड़ा। इस महामारी ने हर जगह आंतक फैलाया हुआ था मानो मौत का ताडंव चल रहा हो, हर इंसान घबरायां हुआ था। इस माहौल में भी बेशक खेल बंद हो गये थे पर खिलाड़ियों को उनकी फीटनेस का फायदा मिला। पूरी दुनिया ने शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग के महत्व को माना। महामारी के दौरान और उसके बाद उसके प्रभाव जैसे तनाव अवसाद को दूर करने के लिए लोग शारीरिक शिक्षा की शरण में आए।

मूख्य शब्द – कोरोना, कोविड – 19, महामारी, शारीरिक शिक्षा, खेल, स्वास्थ, तनाव

प्रस्तावना –

कोविड – 19 का प्रकोप खेलों पर भी दिखा। मैदान सूने और अस्पताल भरे दिखाई दिये। प्राचीन परिभाषा "जितने ज्यादा मैदान होगे उतने कम अस्पताल होगे।" अक्षरशः सत्य होती दिखाई दी। आज इस अध्याय मे हम खेल के महत्व और खिलाड़ियों की बात करेगे। कोरोना महामारी के कारण जिन्दगी ठहर सी गई थी दो वर्ष सिर्फ कैलेन्डर पर ही बदले। खिलाड़ियों को इसका खामयाजा सबसे ज्यादा हुआ है, बेशक ये स्थितियाँ फिर से सुधरेगी, पर कुछ खिलाड़ियों ने तो अच्छे प्रदर्शन के सपने के साथ ही सन्यास ले लिया इस बात को हम आप को ऐसे बताते है विभिन्न खेलों के राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिता को सुरक्षा की दृष्टि से स्थगित किया या रद्द कर दिया गया। ओलंपिक जैसी प्रतियोगिता को स्थगित करना पड़ा। भारत में आईपीएल टी – 20 लीग को स्थगित कर दिया गया तो कही फुटबॉल, टेनिस, बैडमिंटन सहित अन्य कई खेलों पर भी कोरोना की मार पड़ी। खिलाड़ी अपना अभ्यास प्रतियोगिताओं के लिए करते है जिन्हे उम्मीद थी कि ये इन सालों में मेंडल

ला सकते है वो अधुरी रह गई, कोरोना महामारी का प्रभाव सामूहिक खेलों पर भी पड़ा सोशल डिस्टेन्स खिलाड़ियों में दिखा।

खेलों का महत्व

- खेल शरीर को स्वस्थ एवं स्फुर्तीमय बनाए रखने में मदद करता है।
- खेल एकाग्रता को बढ़ाता है।
- खेल तनाव अवसाद को दूर करने में मदद करता है।
- खेल जीवन में प्रसन्नता एवं उत्सह का संचार करता है।
- खेल से टीम भावना का विकास होता है।
- खेल धैर्य और साहस का विकास करता है।
- सृजनात्मकता एवं कल्पना शक्ति को खेलों से बढ़ावा मिलता है।
- खेलं प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ता है।

कोविड – 19 का खेलों पर प्रभाव –

कोरोना महामारी का खेलों पर इतना दुष्प्रभाव हुआ कि उसने खिलाड़ियों को मैदान से ही दूर कर दिया। पूरी दुनिया में खेल प्रतियोगिता सुरक्षा की दृष्टि से स्थगित या रद्द कर दी गई। आईये एक नजर डालते है ऐसी प्रतियोंगिताओं पर जो महामारी के कारण स्थगित या रद्द कर दी गई–

क्रिकेट

क्र0	प्रतियोगिता	आयोजन स्थल	दिनांक	स्थिति
1	भारत दक्षिण अफ्रीका वनडे सीरिज	लखनऊ एवं कोलकाता	15–18 मार्च	स्थगित
2	चार देशों की वनडे सीरिज (महिला)	चीयांग मेई	3 से 4 अप्रैल	रद्द
3	ऑस्टेलिया न्यूजीलैन्ड सीरिज	सीडनी, होबर्ट	15–20 मार्च	रद्द
4	आईपीएल	भारत	29 मार्च	स्थगित
5	ऑस्टेलिया महिला वन डे टी–20 सीरिज	दक्षिण अफ्रीका		रद्द
6	इरानी कप सहित भारतीय सीरिज	भारत		रद्द

तीरंदाजी

1	विश्वकप	शंघाई	4–10 मई	रद्द

एथेलेटिक्स

1	वर्ल्ड इनडोर चैम्पियनशिप	नानजींग	13–15 मार्च	स्थगित

मुक्केबाजी

1	अमेरिका ओलंपिक क्वालीफायर	ब्यूनस एरेस	26 मार्च 3 अप्रैल	स्थगित
2	विश्वकप	कोलोन	17–20 जून	रद्द

निशाने बाजी

1	विश्वकप	नई दिल्ली	15–26 मार्च	स्थगित
2	ओलंपिक टैस्ट इवेन्ट	टोकियो	16–26 अप्रैल	रद्द

कुश्ती

1	यूरोपियन ओलंपिक क्वालीफाइग	बूडापेस्ट	19 – 20 मार्च	स्थगित
2	ओलंपिक क्वालीफाइग	बूल्गारिया	30 अप्रैल से 3 मई	स्थगित
3	एशियाई ओलंपिक क्वालीफाइग	चीन	27 –29 मार्च	स्थगित

टेनिस

1	एटीपी टूर	–	12 मार्च	रद्द
2	आईटीएफ इवेन्ट	–	12 मार्च	स्थगित
3	फेड कप फाइनल	बूडापेस्ट	14–19 अप्रैल	स्थगित

हॉकी

1	एफआईएच प्रो लीग	चीन	14–15 मार्च	स्थगित

उपरोक्त तालिका अनुसार विभिन्न महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अंतर्राट्रीय प्रतियोगिताओं को सुरक्षा की दृष्टि से रद्द या स्थगित किया गया था, साथ ही कुछ खेल प्रतियोगिता ऐसी भी हुई जिसमें स्टेडियम में सिर्फ खिलाड़ियों ने दर्शको की अनुपस्थिति में खेला। खेल को दर्शको ने टेलीविजन पर ही देखा। खेलों के नियमों में भी तबदीली की गई खिलाड़ियों का हाथ मिलाना, एक साथ मिल कर खेल के दौरान जश्न मनाना जैसी गतिविधियों पर प्रतिबंद लगा दिया।

निष्कर्ष

मनुष्य के जीवन को स्वस्थ्य रखने और मस्तिष्क को विकसीत करने के लिए खेलों की विशेष भूमिका होती है, इसे जानते सब है पर मानते बहुत कम लोग

थे। कोरोना महामारी के समय शारीरिक शिक्षा, खेल, और योग के महत्व को सभी ने माना भी और इसकी आवश्यकता को समझा। खेलों की विशेषता है कि वो स्वस्थ रखता है और तनाव को दूर करता है। कोविड – 19 का प्रकोप सबसे अधिक मनुष्य के फेफड़ो पर हुआ था इस बात से सभी परीचित है, खेल, शारीरिक शिक्षा और योग से जुड़े लोगों के फेफड़े अन्य लोगों की तुलना में मजबूत होते है इसी वजह से कोरोना का कम असर खिलाड़ियों पर देखा गया। लॉकडाउन के समय जब पूरी दूनिया तनाव और अवसाद के दौर से गुजर रही थी तब ध्यान ने जो खेलों का ही अंग है इससे बाहर आने में मदद की। अब पूरी दूनिया को सोचना होगा की स्वस्थ रहने के लिए किसी न किसी रुप में खेलों या शारीरिक शिक्षा से जुड़ना ही होगा।

संदर्भ :–

1. कंवर आर. सी. (1996) शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त एवं इतिहास, अमित पब्लिकेशन्स नागपुर।
2. प्रो. भाटिया एम. एम. डॉ. मंगल एस. के. (1997) खेल–मनोविज्ञान, प्रकाश ब्रदर्स पब्लिकेशन लुधियाना।
3. कमलेश एम. एल. संगराल एम. एस. (1997) शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त एवं इतिहास, प्रकाश ब्रदर्स पब्लिकेशन लुधियाना।
4. https://www.amarujala.com

अध्याय २

कोरोना महामारी और सायबर अपराध

डॉ. फरहत मंसूरी
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शासकीय महाविधालय बिछुआ जिला छिंदवाड़ा म.प्र.

डब्ल्यू एच ओ ने कोरोना महामारी को कोविड-19 का नाम दिया है, नोबेल कोरोना वायरस के कारण 22 मार्च 2020 को जनता कर्फ्यू और बाद में लॉकडाउन लग गया था | इस लॉकडाउन का प्रभाव संपूर्ण समाज या यह कहना उचित रहेगा पूर्ण भारत की अर्थव्यवस्था पर पड़ा था और पढ़ रहा है | कोरोना महामारी ने कई युवाओं के सामने आर्थिक समस्या उत्पन्न कर दी है, समाज में बहुत सारे व्यक्तियों के सामने रोजगार की समस्या आ गई है, साथ ही कुछ लोगों को नौकरी जाने का तनाव भी झेलना पड़ रहा है| बेरोजगारी के कारण एंजाइटी के मरीज दिन ब दिन बढ़ रहे हैं , साथ ही साइबर क्राइम की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है | साइबर क्राइम (Cyber Crime) यूं तो अन्य अपराधों की तरह हर समय घटित होते हैं, लेकिन कोरोना (Coronavirus) कालखंड में जब दुनिया भर में लोग 'स्टे एट होम' या फिर कहें कि घरों में ही कैद थे तब वे सबसे ज्यादा साइबर क्राइम का शिकार हुए। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। सामान्य अपराधों की तुलना में साइबर अपराध ज्यादा दर्ज हुए। इनमें बैंक ठगी से लेकर सोशल मीडिया पर महामारी के नाम से पैसा मांगने के मामले भी शामिल हैं।

मुख्य शब्द :- लॉकडाउन, कोरोना महामारी, बेरोजगारी, डब्ल्यू. एच. ओ. सायबर अपराध |

प्रस्तावना –

कोरोना काल में बहुत अधिक लोग सायबर क्राइम का शिकार हुए हैं | साइबर क्राइम कई प्रकार के हैं और ये सभी घटित भी हो रहे होंगे, लेकिन सबसे ज्यादा लोगों को फिशिंग का शिकार बनाया जाता है। यह अपराध देखने में भले ही छोटा लगता हो, लेकिन यह बहुत बड़ा साइबर क्राइम है। यदि हम कोरोना काल की बात करें तो यह तनाव और अभाव का समय था। महामारी को लेकर लोगों के मन में खौफ था। छोटी-छोटी चीजों के अभाव से लोग जूझ रहे थे। इसी की आड़ में साइबर अपराधियों ने फिशिंग अटैक को बढ़ाया। इस तरह के मामलों को डर और लालच दिखाकर अंजाम दिया जाता है। इसी डर और लालच के कारण लोग ऑनलाइन धोखाधड़ी का शिकार हुए हैं|

सायबर अपराध -

कंप्यूटर के द्वारा अंजाम दिए जाने वाले अपराध को सायबर अपराध कहा जाता है| अवैध उद्देश्यों के लिए एक उपकरण के रूप में कंप्यूटर का उपयोग करना सायबर अपराध **है**, जैसे: धोखाधड़ी, बाल पोर्नोग्राफ़ी, बौद्धिक संपदा की तस्करी, व्यक्तिगत जानकारी की चोरी या गोपनीयता पर आक्रमण| इस साइबर क्राइम को जो अंजाम देते हैं उन्हें Cybercriminals कहा जाता है | साइबर अपराध एक ऐसा अपराध है जिस में कंप्यूटर और नेटवर्क शामिल है। किसी भी कंप्यूटर का अपराधिक स्थान पर मिलना या कंप्यूटर से कोई अपराध करना कंप्यूटर अपराध कहलाता है। कंप्यूटर अपराध मे नेटवर्क शामिल नही होता है। किसी की निजी जानकारी को प्राप्त करना और उसका गलत इस्तेमाल करना। किसी की भी निजी जानकारी कंप्यूटर से निकाल लेना या चोरी कर लेना भी साइबर अपराध है। कंप्यूटर अपराध भी कई प्रकार से किये जाते है जैसे कि जानकारी चोरी करना, जानकारी मिटाना, जानकारी मे फेर बदल करना, किसी की जानकारी को किसी और को देना या कंप्यूटर के भागो को चोरी करना या नष्ट करना।

सायबर अपराध के प्रकार

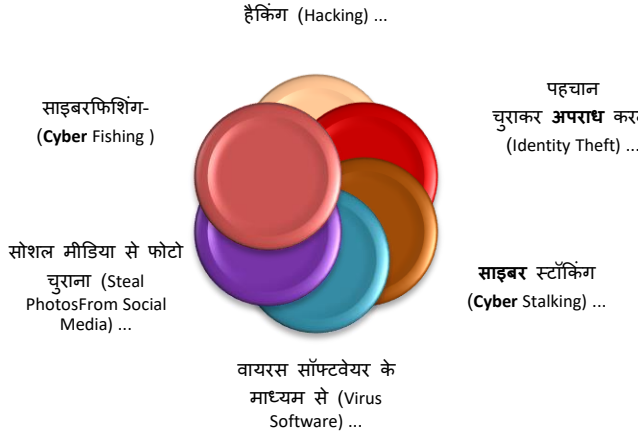

1. **हैकिंग (Hacking)** - किसी की भी निजी जानकारी को हैक करना जैसे की उपयोगकर्ता नाम या पासवर्ड और फिर उसमे फेर बदल करना हैकिंग कहलाता है|
2. **पहचान चुराकर अपराध करना** – जब व्यक्ति अपनी पहचान नही बताता है और नकली आई.डी के माध्यम से आपसे सम्पर्क कर के आप से धोखा देता है |
3. **साइबर स्टॉकिंग -साइबर** स्टॉकिंग एक प्रकार से ऑनलाइन उत्पीड़न है | जिस में एक व्यक्ति को ऑनलाइन मेसेज या ई.मेल्स के ज़रिये उत्पीड़ित किया जाता हैं|
4. **वायरस सॉफ्टवेयर के माध्यम से** - साइबर अपराधी कुछ ऐसे सॉफ्टवेयर आपके कम्प्युटर पर भेजते हैं जिसमें वायरस छिपे हो सकते हैं, इनमें वायरस, वर्म, टार्जन हॉर्स, लॉजिक हॉर्स आदि वायरस शामिल हैं, यह आपके कंप्यूटर को काफी नुकसान पंहुचा सकते हैं|
5. **सोशल मीडिया से फोटो चुराना** – सायबर अपराध का एक प्रकार सोशल मीडिया से फोटो चुरा कर व्यक्ति को ब्लैकमेल करना भी है |

6. **साइबर फिशिंग-** - किसी के पास स्पैम ईमेल भेजना ताकी वो अपनी निजी जानकारी दे और उस जानकारी से उसका नुकसान हो सके। यह ईमेल आकार्षित होते है।

इन समस्त अपराधों में कोरोना काल में वृद्धि देखी गई है |

सायबर अपराध के कारण

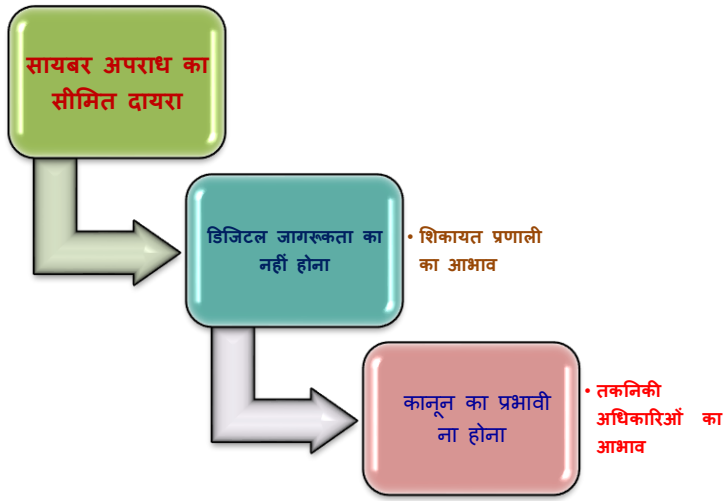

कोरोना महामारी और सायबर अपराध

क्रमांक	वर्ष	अपराध के आंकड़े
1	2018	27,248
2	2019	44735
3	2020	50,035

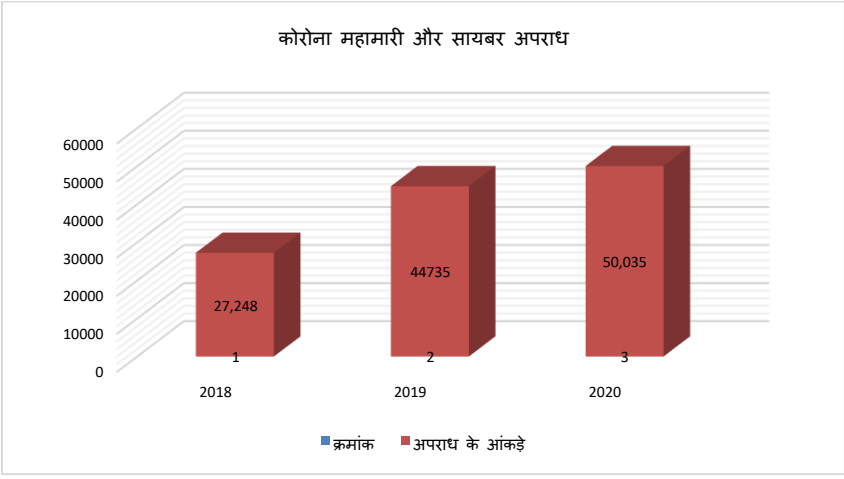

कोरोना महामारी के चलते भारत में 2020 में साइबर अपराध के 50,035 मामले दर्ज किए गए थे जो उसके पिछले वर्ष दर्ज मामलों की तुलना में 11.8 फीसदी अधिक है. साथ ही 'सोशल मीडिया पर फर्जी सूचना' के 578 मामले सामने आए. यह जानकारी आधिकारिक आंकड़ों से मिली.राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों के अनुसार, देश में साइबर अपराध की दर (प्रति एक लाख की आबादी पर घटनाएं) 2019 में 3.3 फीसदी से बढ़कर 2020 में 3.7 फीसदी हो गई. आंकड़ों के मुताबिक, देश में 2019 में साइबर अपराध के मामलों की संख्या 44,735 थी, जबकि 2018 में यह संख्या 27,248 थी |

सायबर अपराध से बचने के उपाय –

- अपना आई. डी. पासवर्ड बदलते रहें
- जीमेल आई.डी. पासवर्ड कही भी लिख कर ना रखें
- लॉगिन यूजरनेम और पासवर्ड भी गोपनीय रखे।
- मोबाइल या कंप्यूटर किसी दूसरे व्यक्ति को बेचने से पहले Google Account मे जाकर अपनी आईडी Remove जरूर करें।
- मोबाइल फोन और लैपटॉप में Antivirus रखें जो समय समय पर ऑटोमैटिक वायरस को नष्ट करता रहता है।
- अनजान मैसेज लिंक या मोबाइल पर आए नोटिफिकेशन पर बिना जानकारी के क्लिक ना करे उसे remove कर दे।
- मनी ट्रांसफर एप जैसे SBI नेटबैंकिंग, Phone Pay, Google Pay व अन्य जो भी आप उपयोग करते हो काम होने पर तुरंत Logout करे।

निष्कर्ष –

कोरोना महामारी ने सम्पूर्ण विश्व में तबाही मचाई थी | इस महामारी से कोई भी पहलु अछुता नहीं था | कोरोना महामारी के कारण जहाँ सारी दुनियाँ घर की चार दिवारी में कैद हो के रह गई थी और सभी लोग (work from Home) अर्थात अपना काम घर से कर रहे थे तब ऑनलाइन धोखाधड़ी ने समाज में तेजी से अपने पैर पसारे ,हालाँकि ऑनलाइन धोखाधड़ी कोई नई बात नही हैं ,परन्तु कोरोना काल तनाव और अभाव का समय था | इसी कारण आम जनता सायबर अपराध का अधिक शिकार हुई | कोरोना महामारी के चलते भारत में 2020 में साइबर अपराध के 50,035 मामले दर्ज किए गए थे जो उसके पिछले वर्ष दर्ज मामलों की तुलना में 11.8 फीसदी अधिक है.| महामारी के समय अफवाहों का भी एक दौर चला था जिस के कारण आम जनता को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था | सायबर अपराध से बचने के लिए व्यक्ति को अधिक सजग होने की आवश्कता है |

संदर्भ –

- फातिमा, तलत ,2018 , " इन्टरनेट विधि एवं सायबर अपराध," ईस्टर्न बुक कंपनी ,लखनऊ
- मिश्र, जय प्रकाश ,"सायबर विधि (एक परिचय)," सेंट्रल ला पब्लिकेशन्स.
- रतन, दीपक, जैदी, एम.एच , " ऑनलाइन सायबर क्राइम (सायबर फ्राड) ," एलिया लॉ एजेंसी , लखनऊ .
- https://hindi.webdunia.com/coronavirus/cyber-crime-
- https://www.jagran.com/news/national-cyber-crime

अध्याय ३

कोरोना महामारी और सामाजिक परिवर्तन: एक समाजशास्त्रीय विवेचन

डॉ. उषा किरण तिवारी
विभागाध्यक्ष, (समाजशास्त्र), बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रस्तावना

कोरोना महामारी ने एक साथ संपूर्ण विश्व के समक्ष अनेक सामाजिक, राजनैतिक, भावनात्मक, शैक्षणिक इत्यादि चुनौतियां उपस्थित कर दी, जिसका सामना विभिन्न देशों ने अपने - अपने तरीके से किया। कुछ उसमें अत्यधिक सफल रहे, कुछ मात्र सफल और कुछ नाम मात्र सफल। किंतु इतना तय है इस प्रक्रिया में बहुत से सामाजिक मानदंड और मान्यताएं बदल गई, और हम समाजशास्त्री अच्छी तरह से जानते और विश्वास करते हैं कि इस समाज में जो इकाई या प्रक्रिया एक बार बदल जाती है, वह भले ही शीघ्र ही पुनः परिवर्तित हो जाए किंतु कभी भी मूल रूप में वापस नहीं आती। चक्रीय परिवर्तन अवश्य घटित होता है, किंतु जिस प्रकार समुद्र में ज्वार- भाटा के दौरान आती-जाती लहरें प्रत्येक बार नवीन होकर लौटती हैं, उसी प्रकार समाज में भी प्रत्येक इकाई परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरने के पश्चात कुछ न कुछ नवीन अंश अवश्य ग्रहण करती है।

परिवर्तित सामाजिक व्यवहार

कोरोना महामारी के कारण और इसके दौरान भारतीय सामाजिक व्यवहार में बहुत अधिक सीमा तक परिवर्तन आया। पहला ही शब्द जो कोरोना महामारी के दौरान व्यवहार में अत्यंत प्रचलित हुआ, वह था – "सोशल डिस्टेंसिंग" अर्थात सामाजिक दूरी जो सामाजिक दृष्टि से अत्यंत आपत्तिजनक था। बाद में इसके स्थान पर Physical distancing अर्थात शारीरिक दूरी प्रयुक्त होने लगा। परन्तु पहले ही सोशल डिस्टेंसिंग बहुतायत से प्रयुक्त होने लगा था और लोगों के इसके प्रयोग की आदत हो गई थी इसलिए Physical distancing का प्रयोग काफी कम हुआ। शब्द अपने अर्थ और विशेषतः प्रचलित अर्थ का प्रभाव रखते ही हैं ,परिणाम यह हुआ आम जनता ने मित्रों से, पड़ोसियों से, परिवार जनों से सामाजिक दूरी बना ली, जिसकी प्रथम लॉक डाउन के दौरान उन्हें आदत हो चुकी थी। साथ ही इसे स्वेच्छा से, आवश्यकतानुसार या इच्छा अनुसार व्यवहार में समाहित कर लिया। बहुत बार तो ऐसा भी देखा गया कि वर्षों से मित्र और पड़ोसी रहे लोग, जो बेरोकटोक एक दूसरे के घर पर कभी भी आते जाते थे, कोरोनाकाल में जरूरत होने पर मदद तो दूर बात करने से भी हिचकिचाने लगे। एक दूसरे के घर वर्षों से

घर की चाबी रखने वाले पड़ोसी चाबी रखने से मना करने लगे कि कहीं चाबी के साथ-साथ घर में कोरोनावायरस ना प्रवेश कर जाए। कोरोना हो जाने पर पड़ोसियों से फोन करने से भी कतराने लगे कि कहीं किसी प्रकार की सहायता ना मांग ली जाए और उन्हें उनसे मिलने जाना पड़े, जिन्हे वे वर्षों से जानते थे। जाहिर सी बात है कि अपवादस्वरूप कोरोना योद्धाओं ने खतरे उठाकर भी जनता की मदद की और मानवता का परिचय दिया।

न्यू नार्मल

कोरोना काल के दौरान ही "न्यू नार्मल" की एक नई संकल्पना सामने आई, जिसने पुराने सारे समीकरण ध्वस्त कर दिए। हाथ मिलाना, गले मिलना छोड़कर लोग नमस्ते करने लगे, कोहनी जोड़ने लगे या फिर जुबानी अभिवादन से काम चलाने लगे। प्रत्यक्ष संपर्क से बचने की प्रक्रिया के दौरान मोबाइल का उपयोग बढ़ा और रिश्ते मोबाइल पर निभने लगे। सम्मिलित वीडियो बनाकर भेज देना और ऑनलाइन पार्टी में शामिल होना आम बात हो गई, जो कि पहले कोई सोच भी नहीं सकता था। "वर्क फ्रॉम होम" की परंपरा ने प्रथम बार जनमानस मैं अपनी पहचान बनाई जो पहले सिर्फ कुछ चुनिंदा व्यवसायों तक सीमित थी। जहाँ पहले विद्यार्थियों को मोबाइल के लिए डांट पड़ती थी, अब हर वक्त मोबाइल का उपयोग करना उनकी आवश्यकता बन गई।

मांगलिक परिवेश का बदलता वातावरण

शादियों में सीमित मेहमान संख्या ने शादियों के गूगल मीट, ज़ूम या किसी अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म द्वारा सीधे प्रसारण की नवीन परिपाटी शुरू की, जो लोगों को काफी पसंद भी आई और सुविधाजनक भी। इससे न सिर्फ लोगों के व्यय में कमी आई अपितु मेहमान नवाजी के अतिशय कठिन भार से भी मुक्ति मिल गई। अब तो स्थिति यह है कि अतिथि या मेहमान संख्या पर कोई प्रतिबंध ना होने के बावजूद लोग सीमित अतिथियों को आमंत्रित करने को वरीयता देने लगे हैं। बहुत से लोग तो यह भी कहने लगे हैं कि लॉकडाउन में जिसने भी शादी कर ली उसने अच्छा किया, कम खर्च में ही काम बन गया। अब तो बहुत सारे लोगों को बुलाना पड़ेगा, वरना लोग नाराज हो जाएंगे। इसी के साथ ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जो आज भी प्राचीन रीति-रिवाजों को अधिक मान्यता देते हुए तथाकथित सामाजिकता में विश्वास प्रदर्शित करने के लिए अधिकाधिक संख्या में अतिथियों को बुलाना पसंद करते हैं।

शोक प्रसंगो में बदलता वातावरण

एक ओर मांगलिक समारोहों में व्यक्तियों की कम उपस्थिति ने अधिकांश लोगों सहज किया, वहीं परिवार में किसी की मृत्यु होने लोग जानबूझकर वहाँ जाने से कतराने लगे। इसका सबसे प्रमुख कारण था, कोरोना वायरस के कारणों के प्रति अतिशय संशय। कितने लोग तो अपने प्रिय जनों के अंतिम समय में भी उनसे नहीं मिल पाए, और बहुतों ने कोरोना वायरस के डर से मिलने की कोशिश भी नहीं की। अति तो तब हो गई जब अंतिम संस्कार संपन्न होने के बाद मृतक के नजदीक रहे लोगों जैसे पत्नी और बच्चों से

भी परिवारजनों ने कुछ निश्चित समय तक दूरी बनाकर रखी। कोरोना महामारी के पूर्व शोक समाचार जहां संबंधों के मध्य की दूरियां भुलाकर एक दूसरे को सांत्वना देने का प्रयास करते थे, कोरोना के डर ने इस अति प्राचीन परंपरा की मूल भावना को छिन्न - भिन्न कर दिया। कई बार यह भी देखा गया कि कोरोना से मृत्यु या बीमारी की अवस्था में परिवार जनों ने तो दूरी बना ली, किन्तु मित्रों और पड़ोसियों ने काफी साथ दिया। इसका विपरीत भी हुआ अर्थात वर्षों पुराने मित्रों तथा पड़ोसियों ने दूरियां बना ली जबकि परिवार जनों ने भरपूर साथ दिया। वस्तुतः कोरोना महामारी ने लोगों के शारीरिक स्वास्थ्य से कहीं अधिक मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाला। जो लोग शरीर से स्वस्थ रहें और लंबे समय तक कोरोना महामारी के शिकार होने से बचे रहे, वे भी मानसिक रूप से अनेक संशयों , भ्रमों गलत सूचनाओं और मानसिक तनाव के शिकार बने। और यह होना स्वाभाविक भी था, क्योंकि कोरोना महामारी के आए दो वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो चुका है पर अभी तक अनेकों प्रश्न विवादित तथा अनसुलझे ही है, जैसे कोरोना की शुरुआत कैसे हुई? कोरोना वायरस किन कारणों से फैलता है? कोरोना से बचने में मास्क प्रभावी है या नहीं? टीकों की वास्तविक भूमिका कितनी प्रतिशत है? इत्यादि इत्यादि।

क्योंकि ऐसा देखा गया कि जहाँ एक कमरे में दस लोग एक साथ रहते थे, उनमें से कुछ को कोरोना हुआ, कुछ को नहीं हुआ। दूसरी तरफ वृहद् बंगलों में रहने वाले और अनेक सावधानियां बरतने वाले सर्वसुविधायुक्त राजनेताओं, विख्यात व्यक्तियों को भी कोरोना हो गया। हमेशा मास्क पहनने वाले को कोरोना हुआ पर कभी-कभी मास्क पहनने वाले को कोरोना नहीं हुआ। लोग यह सारे सवाल आपस में ही बहस करते और जवाब तय करते रहे क्योंकि आधिकारिक जवाब जैसे डब्ल्यू.एच.ओ. के बयान बार-बार बदल रहे थे।

बदलता पारिवारिक परिवेश

कोरोना महामारी के आगमन के बाद पारिवारिक परिवेश में भी काफी बदलाव आया। परिवारों में पहले से ही जिस सकारात्मकता या नकारात्मकता की प्रधानता थी, उसी प्रवृत्ति में अतिशय वृद्धि हुई। अर्थात जहां पहले से ही पारिवारिक सदस्यों के मध्य प्रेम एवं सौहार्द उपस्थित था, वहां अधिक समय तक एक साथ रहने के कारण उसमें वृद्धि हुई और उनके पारस्परिक संबंध अत्यंत घनिष्ठ हुए। वहीं दूसरी ओर जहां पहले से ही संबंधों में नकारात्मकता या उदासीनता मौजूद थी , कोरोना काल में लॉकडाउन और "वर्क फ्रॉम होम" के कारण साथ रहने की मजबूरी उपस्थित हुई और उनके बीच आपसी दुराव, वैमनस्य खुलकर सामने आए। जो उनके स्वयं के लिए, परिवार के लिए तथा परिवार संस्था के भविष्य के लिए अच्छे साबित नहीं हुए। जो झगड़े, बहस, विवाद, तकरार दूर-दूर तक रहने के कारण स्वयं ही टल जाते थे, साथ रहने पर खुलकर सामने आने लगे। जो कमियां अधिक समय तक अलग - अलग रहने के कारण छिप जाती थीं या नजरअंदाज कर दी जाती थीं, वे पूरे समय तक साथ रहने के कारण प्रत्यक्ष दिखने लगी और महसूस की जाने लगीं। जिसने पारिवारिक सदस्यों के मध्य कटुता बढ़ाने का काम ही किया। संक्षेप में कहें तो मेरे आकलन के अनुसार कोरोना महामारी के प्रभावों के कारण परिवार संस्था

में सकारात्मक परिवर्तन कम हुए नकारात्मक अधिक। या यूं कहें तो शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी की जो सच्चाई परतों तले दबी हुई थी वह अब प्रत्यक्ष दिखने लगी।

निष्कर्ष

कोरोना महामारी से गुजरने के दौरान सबसे बड़ी समस्या अनिश्चितता की थी, जिसने बहुत बड़ी मात्रा में तनाव को जन्म दिया। क्योंकि किसी को भी यह ज्ञात नहीं था कि यह महामारी कब तक चलने वाली है और इससे कब तक मुक्ति मिलेगी ? वस्तुतः कोरोना महामारी अभी पूर्णरूपेण समाप्त नहीं हुई है, किंतु चूँकि लगभग सभी आयु वर्ग के लिए टीके उपलब्ध हैं तथा बहुसंख्यक जनता टीके के एक या दो या बूस्टर डोज ले चुकी है इसलिए लोगों के मन में कोरोनावायरस के प्रति जो भय, संशय और अनिश्चितता थी, वह काफी हद तक समाप्त हो चुकी है । तकनीकी शब्दों में कहें तो विश्व के अधिकांश देशों में हर्ड इम्युनिटी (Herd immunity) निर्मित हो चुकी है, इसीलिए कोरोना महामारी इतनी भयानक प्रतीत नहीं हो रही, जितनी 2019 और 2020 के वर्षों में प्रतीत हो रही थी, किंतु इस दौरान समाज में जो परिवर्तन आ चुके हैं उन्हें वापस लौटाना असंभव प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Maciver, R.M. & Page C.H. (1962). Society; An Introductory Analysis. MacMilan
- Tripathi, B.D. (1990). Society: Today and Tomorrow. Himalaya Publishing House, Bombay

अध्याय ४

कोरोना महामारी में कोरोना वारीयर्स की भूमिका एवं मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव

विकास बाजपेई
शोधार्थी, समाजकार्य विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

विगत दो वर्षो में पूरी दुनियाँ में चर्चा एवं शोध का केंद्र बिन्दु कोरोना बना रहा। जिसका कहर अभी तक थमा नही है आए दिन कोरोना **संक्रमण** के नए मामले प्रकाश में आ रहें हैं। जिससे बहुत सारी जानकारी लोगों के पास है परंतु आज भी इसके उत्पत्ति के कारणों और जन्म स्थान पर कोई पुख्ता जानकारी नहीं मिल पाई या यह भी कह सकते हैं, की विश्व समुदाय इस पर बोलने से परहेज करता रहा। ज्ञातव्य है कि इस वायरस ने मानव इतिहास में सबसे अधिक तबाही मचाई अभी तक लगभग 53.7 करोड़ लोग विश्व में इससे संक्रमित हुये। जिनमे से 63.1 लाख लोगों को अपनी जान गवानी पड़ी। यदि विश्व स्वास्थ्य संगठन के आकड़ों को सत्य माना जाए तो भारत में लगभग 47 लाख लोगों की मौत का कारण कोरोना को माना है। जिस पर भारत की ओर से आपत्ति दर्ज की गयी। नबम्बर 2019 में चीन के बुहान प्रांत में इसके संक्रामण के मामले सामने आए लेकिन इसे सामान्य निमोनिया बताकर सूचनाओं को गोपनीय रखा गया देखते ही देखते यह वायरस दुनियाँ के लगभग सभी देशों तक जंगल की आग जैसे फैल गया। तब विश्व समुदाय के दबाव को देखते हुये विश्व स्वास्थ्य संगठन को 11 मार्च 2020 को इसे महामारी घोषित करना पड़ा। जिसे डबल्यू.एच.ओ.एच ने कोरोना वायरस बीमारी को कोविड-19 नाम दिया। जिसके पश्चात पूरी दुनियाँ में बंद (Lock down) कि व्यवस्था लागू करनी पड़ी। विशेषज्ञों का मानना था कि कोरोना की रफ्तार पर अंकुश लगाने का एक मात्र विकल्प यही है। जिसके बाद सभी अंतराष्ट्रीय आवागमन, व्यापार पर पाबंदी लगा दी गयी। वैज्ञानिको का सारा ध्यान इसके प्रसार के कारणों एवं उपचार के तरीकों का अध्ययन करने पर रहा जिसके परिणाम स्वरूप यह तथ्य सामने आए कि कोरोना वायरस का प्रसार मनुष्य -से – मनुष्य में हो रहा है। आनन फानन मे सभी राष्ट्रों ने अपने नागरिकों से **सामाजिक दूरी** बनाने के लिए अपील कि गयी। जिससे भारत में कुछ हद तक स्थितियों को नियंत्रण में रखने में सफलता मिली। सामाजिक दूरी शब्द प्रयोग विद्वानो ने अनुचित माना और सामाजिक दूरी के स्थान पर **शारीरिक दूरी** शब्द को तर्क संगत मानते हुये प्रयोग किया जाने लगा।

मुख्य शब्द- **कोरोना, वारीयर्स, महामारी, वायरस, शारीरिक दूरी, लॉक डाउन**

कोरोना वायरस – वर्तमान में जिस वायरस ने सम्पूर्ण विश्व में मानव अस्तित्व को खतरे में डाल दिया। वैज्ञानिकों उसे कोरोना कहा। कोरोना वायरस अनेक प्रकार के वायरसों का एक समूह है जो स्तनधारियों जानवरों और पक्षियों में रोग उत्पन्न करता है। यह एक **आर.एन.ए.** वायरस है। जिसके वंशानुक्रम पर अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो गया कि यह **सार्स कोरोनावायरस** जिसका संक्रमण वर्ष 2002-03 में दक्षिणी चीन में फैला था सीधा संबंध नॉवेल कोरोना वायरस 2019 से पाया है। क्योंकि वैज्ञानिको का मानना कि दोनों वायरसों में 70 प्रतिशत से अधिक जीनोम अनुक्रम समान प्राप्त हुये है। जो यह पुष्टि करता है। **कोरोना वायरस** सार्स कोरोनावायरस के वंश का है। जिसने भयंकर तबाही मचाई और सम्पूर्ण विश्व को अपने चंगुल में लेकर एक वैश्विक महामारी का रूप ले लिया। इसलिए इस महामारी को वैज्ञानिकों ने (2019-nCoV) नाम रख दिया बाद में 11 फरवरी, 2020 को टैक्सोनोमी ऑफ वायरसेज की इंटरनैशनल कमिटी ने इसका नाम (**severe acute respiratory syndrome corona virus 2**) या SARS-CoV2 दिया। जिससे 2002 में SARS-CoV फैला था। आधिकारिक तौर पर किसी महामारी के नाम को रखने का अधिकार विश्व स्वस्थ्य संगठन को है। जिसने SARS-CoV-2 के स्थान पर COVID-19 को अधिक तर्क संगत माना। चुकी COVID-19 संक्षिप्त रूप है। सरल और सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करता है। इसका पूरा नाम है Corona virus diseases-2019 रखा गया है जो SARS-CoV2 वायरस से होती है।

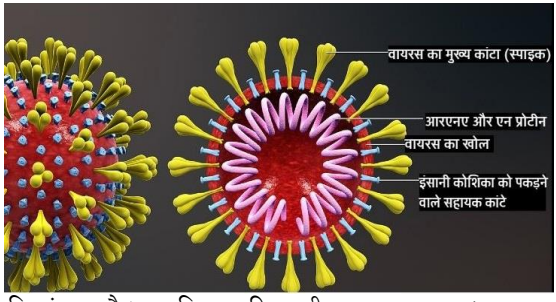

कोरोना शब्द का अर्थ – शब्द कोरोना एक लैटिन भाषा का शब्द है जिसका समानार्थी शब्द crown है। क्राउन का आशय मुकुट या ताज से लगाया जाता है। इस वायरस को कोरोना या क्राउन कहने के पीछे का तर्क इस वायरस कि संरचना है। इस विषाणु की बाहरी सतह पर क्राउन (**स्पाइक्स** spikes = नोकदार संरचना) जैसी संरचना की श्रृंखला का होना ही इसे कोरोना नाम देता है।

कोरोना वायरस के वैरियंट- विद्वानो का मानना है कि केवल सात कोरोना वायरस ऐसे हैं जो मनुष्य को बीमार करते हैं। जिनमें चार कोरोना वायरस की वजह से मनुष्यों में आम सर्दी जुकाम की समस्या होती है। जिनके नाम क्रमशः

1. 229E– Alpha corona virus.
2. NL63 - alpha corona virus
3. OC43– beta corona virus.
4. HKU1– beta corona virus.

तथा तीन कोरोना वायरस इंसान में फेफड़े का गंभीर संक्रमण पैदा करते है जो क्रमशः

5. **MERS- CoV**- Middle East Respiratory Syndrome-corona virus
6. **SARS-CoV**- Severe- Acute Respiratory Syndrome- corona virus
7. **2019nCOV)** और मौजूदा COVID-19।

कोरोना संक्रमण के लक्षण – प्रोफेसर विल्सन के अनुसार, कोविड-19 से संक्रमित लोगों को चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है। प्रथम श्रेणी में वे लोग होते हैं, जिनमें लक्षण नहीं दिखता है। द्वितीय श्रेणी जिनमें श्वसन नली के ऊपरी हिस्से में संक्रमण होता है। इसमें लोगों को बुखार, कफ, सिरदर्द या कंजक्टीवाइटिस (आंख संबंधी बीमारी) के लक्षण होते हैं। इन लक्षणों वाले लोग संक्रमण के वाहक होते हैं लेकिन उन्हें इसकी जानकारी नहीं होती है। तीसरी श्रेणी में कोविड-19 पॉजिटिव लोग होते हैं, जिनमें निमोनिया जैसे लक्षण होते हैं और उन्हें अस्पताल में रहना होता है। चौथी श्रेणी में निमोनिया जैसी बीमारी का गंभीर रूप दिखता है।

समान्यतया कोरोना संक्रमित व्यक्ति में निम्न लक्षण दिख सकते है जो निम्न प्रकार है।

1. बुखार व थकान, सर दर्द , दस्त।
2. लगातार खांसी आना।
3. गंध और स्वाद का पता न चलना, भ्रम जैसी स्थिति।
4. सांस लेने में तकलीफ होना।
5. गंभीर संक्रमण में निमोनिया, किडनी का फेल होना शामिल है, जिससे व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है।

कोरोना संक्रमण से बचाव – कोरोना एक खतरनाक वायरस है। जो कई बार जानलेवा हो सकता है। इसलिए सतर्कता ही बचाव है। निम्नलिखित बातों का अनुसरण कर के संक्रमण के खतरे को कम किया जा सकता है।

- अति आवश्यक कार्य होने पर ही घर से बाहर निकले।
- अनिवार्य रूप से मास्क पहने एक बार इस्तेमाल किये गये मास्क को दुबारा न पहने और उसको सुरक्षित रूप से डिस्पोज़ करें।
- बाहर निकलने पर शारीरिक दूरी (1 मीटर /3 फिट) का पालन करें।
- हाँथो को साबुन से 20 सेकेंड तक दिन में कई बार धोएँ अगर पानी और साबुन उपलब्ध न हो तो एल्कोहल आधारित सेनीटाइजर से हाँथो को सेनीटाइज करें।
- बार- बार चेहरे आँखों को छूने की आदत से बचें।
- प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए खान पान की अच्छी आदतों को अपनी दिनचर्या में सम्मिलित करें।

- सुबह गरम पानी का सेवन करें।
- अपनी दिन चर्या में शारीरिक गतिविधि / योग / व्यायाम को सम्मिलित करें।
- फल एवं सब्जियों को अच्छे से धुलने के बाद ही इस्तेमाल करें।
- घरों के डोर हैंडेल, टीवी, एसी रिमोड के रिमोट आदि को प्रतिदिन विसंक्रमित (Disinfected) करते रहना चाहिये।
- अगर स्वास्थ्य संबन्धित कोई भी लक्षण दिखाई दे तो तुरंत आइसोलेशन के साथ चिकित्सक के परामर्श से औषधि लेना आरंभ करे एवं तत्काल कोरोना परिक्षण (rTpcr) या एंटीजेन परिक्षण कराएं।

अगर परीक्षण पॉज़िटिव आये तो लोगों को स्वतः आईसोलेशन मे रहना चाहिए। आईसोलेशन से हमारा आशय एकलवास से है। जिस व्यक्ति को यह संदेह है कि वह संक्रमित व्यक्ति के संपर्क मे आया है, उनमें संक्रमण के लक्षण दिखने में कुछ समय लगता है ऐसी स्थिति में व्यक्ति को चाहिए कि वह लोगों से खुद को अलग रखे। जिससे अन्य व्यक्तियों में संक्रमण फैलने से रोका जा सके।

Quarantine क्वारंटाइन शब्द का उद्भव वेनशियन भाषा के शब्द क्वारंटेना (quarantena) से है। जिसका अर्थ 40 दिन होता है। कोरोना महामारी के दौरान अत्यधिक प्रचलित शब्द बन गया। लेकिन इसका इतिहास काफी प्राचीन है। क्वारंटाइन उन लोगों पर लगाए गए उस प्रतिबंध को कहा जाता है। जिनसे किसी रोग के फैलने का खतरा होता है। ऐसे में लोगों को एक निश्चित जगह पर बंद कर दिया जाता था। और इस अवधि के दौरान उन्हें किसी से भी मिलने-जुलने, बाहर निकलने तक की अनुमति नहीं होती थी। इस प्रकार का प्रतिबंध संचारी रोग से ग्रसित लोगों पर लागू होता था। सचारी रोग का अर्थ एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में होने वाली बीमारी। इसको मेडिकल आइसोलेशन या कॉर्डन सेनिटायर भी कहा जाता है। यदि ऐसे लोगों को अगर बाहर आम लोगों की तरह ही खुला छोड़ दिया जाए तो ये हजारों लोगों तक उस बीमारी का प्रसार कर सकते हैं। ऐसे में क्वारंटाइन सावधानी के तौर पर किसी मरीज पर लगाया गया प्रतिबंध भी है।

कोरोना संक्रमण का उपचार- अभी तक कोरोना की कोई कारगर दवाई नही बन पाई है। लेकिन रोग प्रतिरोध क्षमता को बढ़ाकर इसका इलाज किया गया जिससे करोड़ो लोग स्वस्थ हुये है। वैज्ञानिको के अथक परिश्रम के पश्चात भारत में कोविड शील्ड तथा को-वैक्सीन नाम की दो वैक्सीन बनाने मे सफलता प्राप्त कर ली साथ ही साथ 100 करोड़ से ज्यादा लोगों को वैक्सीनेटेड करने का कीर्तिमान भी स्थापति किया है। दुनियाँ के अन्य देशो में भी स्पूत्नीक-वी, मॉडार्ना वैक्सीन आदि बनाने में सफलता प्राप्त की है। वैसे जितनी भी वैक्सीन अभी तक बनी है उनके सकारात्मक प्रभाव समाने आए जिनसे बहुत हद तक लोगों को सुरक्षा की अनुभूति हुई। लेकिन कोई भी वैक्सीन यह दावा नही करती कि यह संक्रमण को रोकने में सक्षम है। लेकिन बहुत हद तक यह सुरक्षा जरूर प्रदान करती है। अभी भी लोग संक्रमित हो रहे है। लेकिन संक्रमण की गंभीरता कम देखी गयी है। इसलिए वैक्सीनेशन करना आवश्यक है।

कोरोना महमारी का मानव के स्वास्थ्य पर प्रभाव – कोरोना ने जैसे-जैसे दुनियाँ में पाँव पसारना शुरू किया सम्पूर्ण सामाजिक ताने-बाने को बदल कर रख दिया। लोगों में भय इस कदर घर कर गया इंसान-इंसान से डरने लगा लोग एक दूसरे को संदेह की नज़रों से देखते हुये नज़र आए क्योंकि सब कुछ इतनी जल्दी-जल्दी हो रहा था कि आम जनता को समझ में ही नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना है। पूरे देश में अफवाहों की हवा फैली हुयी थी तरह तरह की खबरे लोगों तक पहुँच रही थी। जिससे लोग और ज्यादा भ्रमित होकर भयभीत हो रहे थे। जिसका प्रभाव सबसे अधिक मानव के मस्तिष्क अर्थात मानसिक स्वास्थ्य पर देखा गया।

क्योंकि दिसंबर 2019 तक जब कहीं से कोरोना की कोई जानकारी लोगों तक आती तो उसे लोग बहुत हल्के में लेते हुये नजर आए। लोग उसका मज़ाक उड़ाते सोशल मीडिया पर उसके मीम बनाए जाते और उसे लोगों तक साझा किया जाता। सरकारों के बहुत से नेताओं ने इस पर जुमले बाजी करते हुये लोगों को गुमराह करने का काम किया और इसे राजनैतिक मुद्दा बनाकर मौजूदा सरकार पर दवाब बनाना शुरू किया। लेकिन 21 मार्च 2020 के जनता कर्फ्यू के तुरंत बाद से 21 दिनों के लॉक डाउन की घोषणा ने लोगों को एक दम से घरों में रहने के लिए विवश किया। क्योंकि लॉक डाउन के नियमो का पालन सख्ती से किए जाने के निर्देश भारत सरकार की ओर से जारी किए गए। अब चारों ओर सन्नाटा न सड़कों पर कोई दिखता था न ही कोई बाज़ार रौशन हो रहा। सड़क पर पुलिस कर्मी जो लॉक डाउन के अनुपालन के लिए तैनात किए गए थे नज़र आते महोल्लों कि गलियों में पुलिस कि गाड़ी के हुटर या एम्ब्युलेन्स के सायरन कि आवास ही सुनाई देती थी। सब के सब डरे हुये की अब आगे क्या होगा। अब लोगों को लग रहा था। कि 21 दिन के बाद स्थिति पुनः पूर्ववत हो जाएगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। रोज लगातार संक्रमितों की संख्या बढ़ती जा रही थी। अस्पतालों में जब बेड कि कमी का अहसास हुआ तो वैकल्पिक व्यवस्था के रूप स्टेडियम, विद्यालयों, होटलों को रोगियों के लिए अस्पताल के रूप मे प्रयोग किए जाने लगा यातायात के सभी साधन बंद कर दिये गए। जो जहां था वहीं रह गया लोगों की आमदनी के सारे स्त्रोत बंद हो चुके थे। सबसे ज्यादा तनाव का समाना भारत के उस गरीब तबके के लोगों पर था। जिनके घर चूल्हे तभी जलते है जब वह शाम को काम से घर आते हैं। ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है। एक ओर कोरोना से जान का खतरा सता रहा था। तो दूसरे ओर भुखमरी का भय की बिना कमाएं कब तक वह घर पर रह कर खा सकते हैं। इस बात का अनुमान बहुत ही जल्दी सरकारों को लग गया और अपने स्तर पर हर जरूरी कदम उनके द्वारा उठाए गए। लोगों से घरों मे रहने की अपील की गयी। क्योंकि मानव इतिहास में इस प्रकार की महामारी का अनुभव न तो सरकारों के पास था न ही वैज्ञानिकों के पास और न ही आम नागरिकों के पास सभी लोग लगातार प्रयास कर रहे थे कि किस प्रकार स्थिति को सामान्य किया जाए। दूसरी ओर लॉक डाउन की अवधि लगातार बढ़ाई जाने लगी जिससे लोगों का धैर्य अब जवाब देने लगा लोग अब सड़कों पर निकलने लगे हजारों किलोमीटर पैदल सइकिल रिक्शा टेम्पो टॅक्सी जो भी साधन सुलभ हुआ उससे अपने घरों के लिए निकल पड़े। इस स्थिति से निपटने के लिए राज्यों की एक जाइंट मीटिंग में निर्णय लिया गया की सभी राज्यों के लोगों को उनके घरों तक सुरक्षित पहुंचाना सुनिश्चित

किया गया। साथ ही जरूरी अवश्यक सामाग्री जिसमे दवाएं, खाने कि बस्तुओं का वितरण जरूरत मंद लोगों तक आरंभ किया।

कोरोना काल में लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। जिसमें रक्त चाप, मधुमेह, हृदय रोग, किडनी, मानसिक रोगों से ग्रसित लोगों को आवश्यक चिकत्सीय सलाह और उपचार न मिल पाने से उनके स्वास्थ्य पर गंभीर विपरीत प्रभाव पड़े। जिससे बहुत से लोगों ने अपनी जानें भी खोई। चुकि प्रथम कोरोना लहर का सबसे ज्यादा प्रभाव बुजुर्गों पर देखा गया। इस दौरान घर मे रहे लोग जो कोरोना संक्रमण से बच गए। उनमें होम सिकनेस, चिंता, तनाव, एकाकीपन, रक्त चाप, अवसाद, आक्रामकता जैसी मानसिक समस्याओं का समाना करना पड़ा। जो लोग संक्रमित हुये उनमे शारीरिक दुर्बलता, प्रतिरोधक क्षमता में कमी, फेफड़ों में संक्रमण, किडनी , बालों का गिरना (गंजापन) प्रमुख रूप से देखी गयी।

कोरोना से पूरी दुनियाँ में इतने अधिक लोगों कि मृत्यु हुयी कि वैज्ञानिको का सारा ध्यान कोरोना के एंटिटोड बनाने पर था परंतु वायरस कि प्रकृति मे लगातार बदलाव के कारण यह संभव नहीं हो पाया। जिसके बाद वैक्सीन बनाने की कवायत आरंभ हुयी और बहुत कम समय मे ही वैक्सीन बनाने मे सफलता प्राप्त हुयी। यह पहली बार हुआ जब किसी वैक्सीन का प्रयोगशाला परीक्षण और मानव परीक्षण (**ह्यूमन ट्राइल**) को एक साथ करने का दावा किया गया। सबसे पहले टिकाकरण 60 वर्ष से ऊपर आयु के लोगों और फ्रंटलाइन स्वास्थ्य कर्मचारियों को वरीयता दी गयी।

कोरोना वैक्सीन से लोगों में सुरक्षा कि भावना बढ़ी और धीरे धीरे लोगों के अंदर से भय कम हुआ। लेकिन यह सब त्वरित गति से किया गया। जिससे कोरोना जैसी महामारी पर अंकुश लगाया जा सके। अभी भी वैज्ञानिक कोरोना के दीर्घ कालीन प्रभाव का अध्ययन कर रहे है साथ ही वैक्सीन के दीर्घकालीन परिणाम क्या होंगे यह भी शोध का विषय बना हुआ है।

कोरोना महामारी मे कोरोना वारीयर्स कि भूमिका- कोरोना महामारी में जब सारा देश या कह सकते पूरी दुनियाँ में बंद कर दिया गया उस समय भी बहुत सारे लोग जो अपने जीवन कि चिंता किये बिना लगातार देश कि सेवा में लगे हुये थे। ऐसे लोगों को सम्मान देने के लिए ही उन्हे **कोरोना वारीयर्स** के सम्मान से नवाजा गया। ऐसे लोगों को कोरोना यौद्धा कहा गया। जिनमें प्रमुख रूप सभी चिकित्सक, स्वस्थ्य कर्मी, स्वछता दूत, पोलिस के अधिकारी एवं कर्मचारी, मीडिया कर्मी, स्वयंसेवी कार्यकर्ता, यातायात के कर्मचारी जो महामारी के दौरान अपना सर्वस्व समर्पित करके देश कि सेवा मे लगे।

1-**चिकित्सक एवं स्वास्थ्य कर्मी** –सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी और जीवन का खतरा चिकित्सक और स्वास्थ्य कर्मियों पर रहा। जिस गति से देश में कोरोना फैल रहा था। उसमें में किसी का भी बच पाना संभव नहीं था और न ही कोरोना के उपचार कि औषधि किसी भी डॉक्टर्स के पास उपलब्ध थी। ऐसी दवाबपूर्ण स्थिति के समय भी डॉक्टर्स ने हिम्मत से काम लेते हुये इससे निपटने का अदम्य साहस दिखाया। अपने परिवारों से दूर दिन रात और लगातार निगरानी और अनुप्रयोग के बाद कोरोना से निपटने मे सफलता प्राप्त हुई। जिससे लोग स्वस्थ्य होने लगे। इस दौरान देश मे हजारों डॉक्टर्स कोरोना कि चपेट में आए और अपनी जान गंवाई। अस्पतालों को विसंक्रमित एवं स्वछता कि ज़िम्मेदारी स्वछता कर्मीयों के

कंधों पर थी। उनके भी संक्रमित होने का खतरा कम नहीं था ऐसी स्थिति में जो स्वास्थ्य कर्मी सेवा दे रहे उन्हे 15 दिन ड्यूटि के बाद **क्वारंटाइन** रहने के निर्देश दिये गए। उन्होने पूरी निष्ठा के साथ अपने कार्य को बिना भय के अंजाम दिया। डॉक्टर्स के सहयोग में नर्स और पैरामेडिकल स्टाफ ने भी कंधा से कंधा मिला कर काम किया जिससे कोरोना महामारी पर कुछ हद तक नियंत्रण प्राप्त हुआ। जिससे व्यवस्थाओं को पुनः सुचारु रूप से निर्बाधित रूप से चलाये रखा गया।

पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी – लॉक डाउन के नियमो का अनुपालन एवं शांति व्यवस्था, निगरानी, आवश्यक समान आपूर्ति कि ज़िम्मेदारी पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारीयों पर थी। जिससे बहुत से पोलिस कर्मी संक्रमित हुये फिर भी निर्बाध रूप से कोरोना काल में राष्ट्र कि सेवा में समर्पित रहने से ही उन्हे कोरोना योद्धा माना गया।

मीडिया कर्मी- जानकारी ही बचाव है इस उक्ति को चरित्रार्थ करते हुये संकट काल में भी मीडिया ने अपनी अहम भूमिका निभाई देश मे कोरोना के संक्रमण कि गति, संक्रमण, मृत्यु , स्वस्थ्य हुये लोगों कि संख्या, अस्पतालों में बेड कि उपलब्धता, विश्व के अन्य देशो की स्थिति, शोध पर पैनी नजर बनाए रखने के साथ लोगों कि स्थितियाँ को आमजन तक पहुँचाने में अहम किरदार निभाया। यह कार्य भी बहुत जोखिमपूर्ण रहा क्योंकि जिसमें अनेक फील्ड रिपोर्टर संक्रमित हुये और अपनी जान से हांथ धोना पड़ा।

यातायात एवं परिवहन कर्मी – अचानक लॉक डाउन के पश्चात पूरे देश में अफरा तफरी का वातावरण बना हुआ था। ऐसे में करोड़ों प्रावासी मजदूरों को उनके घरों तक पहुंचाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। क्योंकि यह स्पष्ट हो चुका था कि कोरोना मनुष्य से मनुष्य में फैल रहा है। इस स्थिति में भी परिवहन एवं यातायात कर्मियों ने यातायात के साधनो को विसंक्रमित कर लोगों के लिए उपलब्ध कराया जो एक साहसिक कार्य माना गया।

स्वयं सेवी कार्यकर्ता – चारो ओर जब हाहाकार मचा हुआ था। व्यवस्थाएं दम तोड़ रही थी ऐसी स्थिति में व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से चलाने में पूरा देश एकजुट होकर काम करते हुये नज़र आया। हर व्यक्ति अपने स्तर पर जरूरत मंद लोगों कि हर संभव सेवा करने में लग गया। उस समय स्वयं सेवी कार्यकर्ताओं ने सरकार के साथ कंधे कंधा मिलाकर लोगो तक भोजन, पानी, दवाई, तथा दैनिक जरूरत कि वस्तुओं कि आपूर्ति पहुचना। लोगों को जानकारी देना , लोगों को मानसिक संबल देना। आदि कार्यों बिना किसी स्वार्थ के किया ऐसे समर्पण की सराहना करते हुये स्वयं सेवी कार्यकर्ताओं को भी करोना योद्धा मानकर सम्मान दिया गया।

सुरक्षा संबधी उपकरण तैयार करने वाले लोग- कोरोना काल में भारत में स्वास्थ्य विभाग के लोगों के पास सुरक्षा उपकरण की भारी कमी थी। इस स्थिति में भारत के अलग अलग हिस्सों से कुछ ऐसे नागरिक भी सामने आए जिन लोगों ने खुद से मास्क और सेनेटाइज़र तैयार किए और प्रशासन को मुहैया कराया। यह एक छोटी मदद ज़रूर हो सकती है। लेकिन इस मुश्किल घड़ी में उनका यह कार्य भारत के लोगों पर एहसान ही है।

बैंककर्मी- कोरोना काल में भारत के किसी भी नागरिक को किसी भी तरह से परेशानी न होने पाए पैसे की तंगी न हो इसके लिए बैंक कर्मियों ने अपना जीवन संकट में डाल कर ऐसे मुश्किल वक्त में भी अपनी ड्यूटी निभाई, इनके योगदान को कभी भुला नहीं जा सकता।

कोरोना योद्धाओं के अनुभव – इस अध्याय के लेखन को सार्थकता तभी प्राप्त हो सकती है। जब इस संकटकाल मे जिन कोरोना योद्धाओं ने स्थिति को बहुत बारीकी से अवलोकन किया और बार-बार संक्रमित होने के पश्चात भी अपने कर्तव्यों को पूरी ईमानदारी के साथ निभाते रहे। उनकी कहानी सभी तक पहुंचनी चाहिए। इसी प्रयास में इस अध्याय मे कुछ कहनियों को भी सम्मिलित किया जा रहा है।

कहानी #1- पहली कहानी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के चिकित्सा संस्थान के सर सुंदर चिकित्सालय के मेडिसिन विभाग मे कार्यरत वरिष्ठ परामर्शदाता राकेश सिंह जी की है। जो लंबे समय से आनुवांशिक एवं दुर्लभ रोग हीमोहिलिया सेंटर पर कार्यरत हैं।"कोरोना की पहली और दूसरी लहर दोनों में मैं प्रभावित रहा, कोरोना की पहली लहर में होम क्वारेंटाइन रहा, पहली लहर में कुछ विशेष दिक्कत नहीं हुई, डॉ क़े सलाह का अनुसरण और कोरोना क़े गाइड लाइन का सख़्ती से पालन करते हुए इससे उबरने में कामयाबी मिली। अस्पताल की नौकरी होने की वजह से कोरोना संक्रमण का खतरा ज्यादा रहता है, दूसरी लहर आते ही हीमोफिलिया मरीजों की सेवा और अपने कार्य में संलग्न रहते हुए किसी अनजाने कोरोना संक्रमित मरीज से दूसरी बार संक्रमण हुआ, दूसरी लहर में संक्रमित होने पर ऑक्सीज़न सेचुरेसन 80 आने पर अपने विभाग क़े प्रो. ललित प्रशांत मीणा क़े निर्देशानुसार अस्पताल में दो दिन भर्ती रहा, थोड़े आराम होने पर घर पर 10 दिन तक क्वारेंटाइन रहा और डॉ क़े बताई हुई दवाओं क़े सेवन क़े बाद धीरे धीरे स्वास्थ्य लाभ ले सका। बीमारी क़े ठीक होने पर कुछ समस्याए उत्पन्न हुई, कई दिनों तक कमजोरी का महसूस होना, दो महीने तक खाने क़े स्वाद और गंध की अनुभूति नहीं हुई, कुछ महीनों तक याददास्त की समस्या रही, जैसे कुछ मित्रो का चेहरा याद आना लेकिन उनका नाम भूल जाना। किसी जगह का नाम भूलना लेकिन धीरे धीरे भूलने की समस्या समाप्त हो गई; कोरोना की दूसरी लहर में मैंने अपने बहुत से करीबी रिश्तेदारों और मित्रों को खो दिया, जिनकी कमी पुरे जीवन भर महसूस होती रहेगी"

कहानी # 2- डॉ. श्याम सिंह की है जो वर्तमान में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय वर्धा के समाज कार्य विभाग में अतिथि प्राध्यापक तथा युवा समाज सेवी है।"कोरोना की महामारी से लगभग हर कोई प्रभावित हुआ। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो किसी न किसी रूप में प्रभावित न हुआ हो। मेरी कोरोना से पहली

मुलाकात पहली लहर में उस समय हुई जब मैं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में पीएचडी सबमिट करने गया था। लगातार सर्दी-जुखाम होने के कारण मैंने अपना टेस्ट करवाया तो मेरी रिपोर्ट पॉजिटिव आई और मैं होम कोरोंनटाइन हो गया। मैंने इस बीमारी को एक आम बीमारी के रूप में लिया और बिलकुल भी पैनिक नहीं हुआ । मुझे कोई विशेष समस्या तो नहीं हुई लेकिन थोड़ी बहुत कमजोरी महसूस हुई । मैंने खान-पान पर ज्यादा ध्यान दिया और जल्दी ही रिकवर हो गया । इस प्रकार कोरोना की पहली लहर का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा और फिर से मेरी जीवनचर्या पहले की तरह चलने लगी लेकिन कोरोना की दूसरी लहर ने बहुत बुरी तरह से प्रभावित किया । दूसरी लहर में मेरा पूरा परिवार इसकी चपेट में था और मैं भी परिवार के सदस्यों की देखभाल के दौरान दूसरी बार पॉजिटिव हुआ लेकिन इस बार स्थिति काफी ख़राब थी । मैं थोडा सा डरा हुआ महसूस कर रहा था लेकिन मैं ज्यादा पैनिक नहीं हुआ क्योंकि मुझे परिवार को संभालना था । मेरे पूरे परिवार में लगभग 14-15 लोग पॉजिटिव थे और 3-4 सदस्यों के लंग्स में संक्रमण बढ़ गया था, यहां तक की मेरी बड़ी माता जी का ऑक्सीजन लेवल कम होता गया जिस कारण उन्हें हॉस्पिटल में एडमिट करवाना पड़ा। बहुत प्रयास करने के बावजूद भी हम बड़ी माता जी को बचा नहीं पाए क्योंकि उन्हें समय से आईसीयू और वेंटिलेटर नहीं मिल पाया । बड़ी माता जी 20 दिन ऑक्सीजन पर रहीं और जिंदगी मौत से जूझती रहीं । जीवन में मैंने अपने आपको इतना असहाय कभी नहीं पाया जितना उस समय महसूस कर रहा था ।

इस तरह से कोरोना की दूसरी लहर में चारों तरफ बस पैनिक का माहौल था । रोज किसी न किसी अपने के मरने की खबर आती थी । दूसरी लहर में मैं खुद कई बार पैनिक हुआ और डरा भी । पूरे घर में डर का माहौल था लेकिन फिर भी हम लोग परिवार के सदस्यों को बचाने में लगे हुए थे । दूसरी लहर में मैंने अपने सामाजिक कर्तव्यों का भी निर्वहन किया । मैं कई स्वयं सहायता समूहों से जुड़ा हुआ था और दिन-रात लोगों की मदद करने में लगे रहते थे, फिर चाहे किसी को अस्पताल में एडमिट करवाना हो, बेड दिलवाना हो, ब्लड की जरुरत हो या ऑक्सीजन की जरुरत हो, हर तरह की यथासंभव मदद करने का प्रयास कर रहे थे । हमारे सामूहिक प्रयासों से हजारों लोगों की जानें बच पाई । इसके साथ ही साथ मैं ऑनलाइन लोगों की काउंसलिंग भी कर रहा था ताकि लोग पैनिक न हों । लगभग मैंने कोरोना काल में 60 से ज्यादा लोगों की काउंसलिंग की और उन्हें पैनिक होने से बचाया । दूसरी लहर में जिस वक़्त मैं पॉजिटिवथा उस समय घर वालों के मना करने के बावजूद भी मैं रात भर जगकर लोगों की मदद कर रहा था ।

इस प्रकार कोरोना की दूसरी लहर ने मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित किया और मैंने कई सारे अपनों को खो दिया । आज भी जब भी उस मई के महीने का जिक्र आता है तो सहम सा जाता हूं । मेरे घर में एक-दो सदस्य जिनके लंग्स में इन्फेक्शन था उनका ट्रीटमेंट अभी भी चल रहा ।"

कहानी # 3 – तीसरी कहानी साहिल मधुकर जी की है । जो लंबे समय से समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत है । आप महिला

हिंसा, जेंडर संवेदीकरण, शिशु एवं मातृत्व स्वास्थ्य मुद्दे पर करोना काल में निर्भीकता से डटे रहे। कोरोना काल में आप **टाटा ट्रस्ट** में कार्यरत थे "कोरोना की पहली और दूसरी लहर दोनों में, मैं संक्रमित नही हुआ, कोरोना की पहली लहर में जब पूरा देश घर में था। उस समय भी मैं नवजात शिशु स्वास्थ्य की देखभाल शारीरिक दूरी बनाकर कोरोना के गाइड लाइन को देखते हुए कर रहा था , पहली लहर में कुछ विशेष दिक्कत नहीं हुई, ऐसा लगा ही नहीं की कभी बीमार हूं ऐसा इसलिए भी हो सकता है की मैं नियमित काढ़ा और गर्म पानी पिता था और बचाव करता था और कोरोना क़े गाइड लाइन का सख़्ती से पालन करता था। दूसरी लहर में लोगों को मरते देख डर तो लगता था। लेकिन मैं पॉजिटिव कभी नहीं हुआ साथ वैक्सीन के दोनो डोज ले लिया था तो डर कम था। लेकिन फिर भी अपने और अपने परिवार के साथ हम सब करोना को कभी भी हल्के में नहीं लिए जो भी परहेज था करते रहे और लोगों को भी जागरूक करते रहे और मेरे फिल्ड में नवजात शिशु के देखभाल के साथ परिवार को भी जागरूक करते रहे। इसी दौरान प्रवासी मजदूर एक साथ भरी संख्या में निकल पड़े जिससे उनको भोजन पानी साधन संसाधन की किल्लतों का सामना पड रहा था उस समय कई सामाजिक संस्थाओं के सामूहिक प्रयास के द्वारा उन को भोजन के पैकेट, पानी, बिस्किट आदी उपलब्ध कराने में दिन रात लगा रहा जिससे लोग अपने घरों तक सुरक्षित पहुँच गए "

संदर्भ

1. CDC (2020-02-11). "Coronavirus Disease 2019 (COVID-19)". Centers for Disease Control and Prevention (अंग्रेज़ी में). मूल से 14 मई 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2020-05-17.
2. "Inter-Agency Standing Committee Guidelines on Mental Health and Psychosocial support" (PDF). MH Innovation. मूल से 31 March 2020 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 28 March 2020.
3. "OECD". read.oecd-ilibrary.org. मूल से 15 मई 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2020-05-07.
4. "ICN COVID-19 Update: New guidance on mental health and psychosocial support will help to alleviate effects of stress on hard-pressed staff". ICN - International Council of Nurses (अंग्रेज़ी में). मूल से 28 March 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 March 2020.
5. "Emergency Responders: Tips for taking care of yourself". emergency.cdc.gov (अंग्रेज़ी में). 10 January 2020. मूल से 27 March 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 March 2020.

6. “जानें, SARS-CoV2 को क्यों मिला COVID-19 नाम” नवभारतटाइम्स.कॉम. https://navbharattimes.indiatimes.com/education/gk-update/why-is-it-called-coronavirus-how-it-got-name-covid-19/articleshow/74790165.cms
7. सिंह राहुल तनवर, “क्वारंटाइन का अर्थ और मतलब” https://thesi mplehelp .com /qu ara ntine-meaning-in-hindi/
8. “Coronavirus से जब जीत तो इसको मतभूलना”, अभिगमन तिथि 28 March 2020. https://www.ichowk.in/society/coronavirus-lockdown-frontline-warriors-like-policemen-doctors-nurses-media-personals-should-always-be-remembered/story/1/17371.html
9. "quarantine" noun Merriam Webster definition Archived 2020-03-12 at the Wayback Machine www.merriam-webster.com, accessed 27 January 2020
10. Mayer, Johanna (4 September 2018). "The Origin of The Word 'Quarantine'". मूल से 15 मार्च 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 March 2020.
11. "Coronavirus". Centers for Disease Control and Prevention (CDC). February 2020. मूल से 5 फ़रवरी 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 फ़रवरी 2020
12. "Statement on the meeting of the International Health Regulations (2005) Emergency Committee regarding the outbreak of novel coronavirus (2019-nCoV) on 23 January 2020". World Health Organization (WHO). मूल से 24 जनवरी 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 जनवरी 2020.

अध्याय ५

कोरोना महामारी मेरी नजर में

डॉ. प्रताप सिंह गोदरे
पीएच.डी., समाजशास्त्र, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

शोध सारांश
हम भारत के लोग जब अपने अतीत में झांकते है तो हम यह पाते है की 18वीं सदी और उसके पूर्व हमने अनेकों महामारियों का सामना किया और मेडिकल स्त्रोतों के अभाव में अपने समूचे परिवारों को इसकी भेंट चढ़ा दी इसके पश्चात् वर्तमान समय में भी कोरोना नामक महामारी के भ्रामक परिणाम हम आज भी झेल रहे है यह विश्वस्तर की महामारी समूचे विश्व की मानव समाज के लिऐ अभिशाप साबित हुई हैं। महामारी ने शासनतंत्र को आर्थिक रूप से अस्तव्यस्त कर दिया जिसकी प्रतिपूर्ति के लिए कई वर्षो तक शासनतंत्र को प्रयास करने होंगे। इस महामारी में जन–जन को अपने बेहतर स्वास्थ्य के लिए जागरूक होना पड़ा जिन्होंने इसमें लापरवाही की वे महामारी की चपेट में आकर काल के ग्रास बन गये।

कुंजी शब्द – कोरोना महामारी, सामाजिक चुनौतियॉ, भारतीय अर्थव्यवस्था, डॉकडाउन, चिकित्सा, शासनतंत्र

प्रस्तावना

हम भारत के लोग जब अपने अतीत में झांकते है तो 18वीं सदी और उसके पूर्व हमने अनेकों महामारियों का सामना किया और उसमें अपने समूचे परिवार को महामारियों की भेंट चढ़ा चुके है इसके पश्चात 19वी सदी, 20वी सदी और 21वीं सदी में हमारे भारतवासियों को कोरोना नामक एक विध्वंशकाल रूपी महामारी में काल का ग्रास बनना पड़ा। वर्तमान युग की ये सबसे बड़ी विश्व स्तर की महामारी के रूप में समूचे विश्व के लिए घातक सिद्ध हुई न सिर्फ अपने भारत देश बाकी समूचे विश्व के मानव समाज के लिए महाविनाशक कालजयी कोरोना नामक महामारी ने हमारी मानव समाज में अनेकों परिवारों में अपने सहोदर परिजनों, माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई–बहन, पति–पत्नि सहित अनेकों परिवारों को उजाड़ दिया जो हमारी मानव समाज के लिए एक कालचक्र निर्मित कर गयी है।

वैश्विक स्तर पर हो या केवल भारत के संदर्भ में महामारियों ने अपना एक अलग ही प्रभाव लोगों पर छोड़ा है जिसका भुगतान प्रांरभ से लेकर वर्तमान समय में भी लोगों को करना पड़ रहा है। देश–विदेशों में काफी समय पूर्व से ही कई महामारियों ने जैसे प्लेग, स्पेनिश फ्लू और वर्तमान समय में कोरोना महामारी ने अपनी जड़े फैलाएँ हुऐ है जिसका भयंकर प्रभाव हुआ आज भी लोगों में शारीरिक और मानसिक रूप में देख सकते है। इस कोरोना महामारी में हजारो, लाखों लोगों की मौतों ने देश–विदेश में एक हलचल मचा रखी है, इतनी सावधानियां बरतने के बाद भी लोगों में कही न कही, कुछ न कुछ इसके भ्रामक परिणाम देखने, सुनने को मिलते है। कोरोना महामारी से जुड़े नये शब्दों को सुनने से ही एक अलग भय का माहौल बनता है, इसका इतना संक्रमित प्रभाव जिसने परिवार के लोगों को ही छुआछूत जैसी समस्यायों को सामने लाकर खड़ा कर दिया है।

कोरोना महामारी के सामान्य लक्षण

- सांस लेने में तकलीफ
- बोलने मे तकलीफ/अस्पष्टता/भ्रम
- छाती में दर्द
- बुखार
- कफ
- भकावट
- गंध और स्वाद का महसूस न होना
- गले में खराब होना
- सिर दर्द/शारीरिक दर्द
- डायरिया
- त्वचा पर दानें
- ऑखे लाल होना

शारीरिक अंगों में संक्रमण

- फेफड़े
- हृदय संबंधी
- मानसिक भ्रम (मस्तिष्क रोग)
- रक्त का थक्का जमना
- शरीर के अंगों में सूजन
- किड़नी में प्रभाव

कोरोना शब्दावली

1. आइसोलेशन – संक्रमित व्यक्ति को अन्य लोगों से दूर रखना।

2. क्वारंटीन	–	संक्रमित बीमारी से ग्रसित व्यक्ति को अलग रखना।
3. हॉटस्पॉट	–	ऐसे क्षेत्र जो 80 प्रतिशत पॉजीटिव है, संक्रमण स्तर अधिक है तथा चार दिन से कम समय में दुगुने केस हो, वह हॉटस्पॉट घोषित है।

वैश्विक महामारियॉं

➢	प्लेग	–	1855
➢	स्पेनिश फ्लू	–	1918
➢	एशियन फ्लू	–	1917
➢	सार्स	–	2003
➢	एच 1 एन 1	–	2009
➢	बर्ड फ्लू	–	2018
➢	स्वाइन फ्लू	–	2019
➢	कोरोना	–	2019–20

कोरोना महामारी की रोकथाम हेतु लॉंच एप्लीकेशन

1.	गूगल	–	गूगल डॉट कॉम/कोविड 19
2.	इंस्टाग्राम	–	इंस्टाग्राम फीड
3.	व्हाट्सअप	–	व्हाट्सअप चैट बॉक्स
4.	फेसबुक	–	कोरोनावायरस इनफोरमेशन सेंटर
5.	पंजाब राज्य	–	कोवा पंजाब
6.	सिंगापुर	–	ट्रेस टूगेदर एप
7.	चीन	–	क्लोस कॉन्टेक्ट डिटेक्टर
8.	ब्रिटेन	–	सी 19
9.	द. कोरिया	–	कोरोना मैप एप
10.	आरोग्य सेतु एप	–	भारत के नेशनल इनफोरमेटिक सेंटर की महानिदेशक नीता वर्मा के अनुसार यह एप्लीकेशन कोविड 19 के संक्रमण के प्रसार के जोखिम का आंकलन करने एवं आवश्यक होने पर एकांतवास सुनिश्चित करने पर मदद करेगा।

सामाजिक चुनौतियॉं

इस कोरोना महामारी ने हमें अनेकों चुनौतियो से जुझने का खुलकर अवसर दिया समूचे भारतवासियों को रोजगार धंधे से वंचित होना पड़ा आर्थिक समस्याओं से

ग्रसित होना पड़ा अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए एक विकराल समस्या का सामना करना पड़ा। विद्यार्थियों को शिक्षा से वंचित होना पड़ा ऐसी अनेक समस्याओं से ग्रासित भारतवासियों को अपनी समस्याओं से निजात पाने के लिए कई वर्षों तक संघर्ष करना होगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था

भारतवासियों के लिए इस महामारी ने शासनतंत्र को आर्थिक रूप से अस्त–व्यस्त कर दिया जिसकी प्रतिपूर्ति के लिए वर्षों तक शासनतंत्र को प्रयास करने होंगें। महामारी काल में व्यापार जगत को भारी क्षति उठाना पड़ा। लॉकडाउन जैसे शासन के आदेशों के पालन में समूचा व्यापार जगत जड़ हो गया। मानव समाज मे इस महामारी ने भारतवासियों की भरण–पोषण, खानपान व्यवस्थाओं को हमारे अनेकों स्वयंसेवी संघठनों ने अपना नैतिक कर्तव्य मानकर जनसेवा का अभूतपूर्व परिचय दिया। लॉकडाउन के आदेशों के कारण ऑनलाइन व्यापार भी प्रभावित होकर स्थगित हो गया। जब भी कोई महामारी आती है तो असमाजिक तत्वों निर्दोष जनता को फर्जी तरीके से साईबर अपराधों के द्वारा लूटने का असफल प्रयास करते है। और ऐसे ही अनेक साईबर अपराध इस महामारी के दौरान घटित हुऐ है।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव

इस महामारी के जन–जन को अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जागरूक होना पड़ा और जिन्होंने इसमें लापरवाही की वे महामारी की चपेट में आकर काल के ग्रास बन गये। इस भीषण महामारी काल में हमारे चिकित्सा नर्सेस, व स्वास्थ्यकर्मी लोगों का सराहनीय योगदान रहा जिन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुऐ मानव समाज के प्राणों की रक्षा की इसके लिए हम चिकित्सक वर्ग, नर्सेस, व स्वास्थकर्मी वर्ग के प्रति गौरवान्वित है। समूचे भारत में इस महामारी के काल में लॉकडाउन की स्थिति में जन–जन में परस्पर आत्मिक प्रेम, सद्भाव, सहयोग जैसी उदारता हमारे भीतर जाग्रत हुई जो हमारे लिए अत्यंत गर्व की बात है। महामारी काल में प्रत्येक भारतवासी मानसिक तनाव से ग्रासित रहा है। हमारा भारत धर्मनिरपेक्ष होने के साथ साथ धार्मिक क्रिया प्रधान देश होने से महामारी काल में हमारे समाज धार्मिक उत्सव, अनुष्ठान, सामूहिक पूजा–ध्यान कार्यक्रम से हमें वंचित होना पड़ा। महामारी काल में लॉकडाउन की स्थिति में खेलों पर प्रतिबंध रहा किन्तु जनसमाज में व्यक्तिगत तौर पर लोगों ने अपने घरों में व्यायाम व योग के लिए सुनहरा अवसर पाया। युवा–वर्ग और राजनैतिक वर्ग इस दौरान निष्क्रिय रहा

निष्कर्ष

कोरोना महामारी से समूचे विश्व और प्रत्येक देश के शासनतंत्र को अपनी कमजोरियों का अहसास हुआ और सत्ताजगत में उन कमजोरियों को दूर करने के प्रयास किऐ गये जो भविष्य के लिए एक अच्छा संकेत है। शासनतंत्र, राजनेता, दल,

आमजगत सभी के बहुआयामी सुविधाजनक अच्छी चिकित्सा व्यवस्था के प्रति जागरूक होना पड़ा जो एक विकासशील देश के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

सुझाव

कोरोना महामारी से शासनतंत्र को चिकित्सा जगत से लेकर जन–जन के हितों की रक्षा के लिए संपूर्ण शासकीय विभागों में सुधार और परिवर्तन लाने के लिए बाध्य होना पड़ा जो राष्ट्रहित में अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा विश्वस्तर या भारत देश को भविष्य में आने वाली समस्याओं को हल करने हेतु कोरोना महामारी ने एक उदाहरण के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया है। इससे हमें भविष्य में आने वाली समस्याओं के प्रति पहले से ही तैयार होकर स्वयं तथा देश–विदेश को सचेत होने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

संदर्भ

1. ऐमिलि, के : द इंटरनेशनल जनरल ऑफ ऑक्यूपेशनल एंड एनवायरमेंटल मेडिसिन, 5 फरवरी 2020
2. लेनसेट पत्रिका : हेल्थ मैगजीन लेख प्रकाशन, 27 अप्रैल 2022
3. श्रीवास्तव, अभिलाष : अमर उजाला, 31 मई 2021
4. गैलघर, जैम्स : स्वास्थ्य और विज्ञान, बीबीसी न्यूज, 16 मार्च 2020
5. केंडोला, अरोन : हाउ डू कोरोनावायरस इफेक्ट द बॉडी, 28 जनवरी 2021
6. बेंगोचिया जोस ए : इंबो मोलीक्यूलर मेडिसिन, ऑनलाइन प्रकाशन लेख, 15 जून 2020
7. शुक्ला, अमित : कोरोना से लड़ाई, 3 जून 2020
8. वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन : कोविड 19 के लक्षण, 12 नवंबर 2020

अध्याय ६

कोरोना महामारी और भारतीय अर्थव्यवस्था

डॉ. कुसुम चन्द्राकर
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शासकीय नवीन महाविद्यालय, गुढ़ियारी, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

2020 की शुरूआत एक ऐसी महामारी से हुई, जिसकी कल्पना हमने अपने जीवन में कभी नही की थी। विश्व को अपनी चपेट में लेने वाली इस कोरोना महामारी ने देश की अर्थव्यवस्था को ही खतरे में डाल दिया। भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था होने के कारण इसका प्रभाव हर क्षेत्र में देखा गया। उपलब्ध जानकारी के आधार पर कृषि, उद्योग, व्यापार, पर्यटन, अनौपचारिक क्षेत्र, वित्तीय बाजार व समस्त आर्थिक क्षेत्रों पर पड़ने वाले कोरोना महामारी के इस प्रभाव को हमने प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रों के रूप में, अध्ययन किया है। इससे यह ज्ञात हुआ कि अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्र असमान रूप से प्रभावित हुआ है। कोविड–19 के इस प्रसार को रोकने के लिए लॉकडाउन और सोशल– डिस्टेंसिंग जैसे प्रयासों से फैक्ट्री, ऑफिस, मॉल, व्यवसाय सब बंद हुए। इससे घरेलू–आपूर्ति, उत्पादन–श्रृंखला व माँग भी अत्यधिक प्रभावित होने के चलते आर्थिक– वृद्धि दर में भारी गिरावट दर्ज हुई। इस स्थिति से निपटने के लिए सरकार ने कई उपायों व घोषनाए की, जिसमें– खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, कर चुकाने की अवधि में वृद्धि, गरीबों को मूफ्त में अनाज शामिल है। देश में उत्पन्न आर्थिक–परिदृश्य के आधार पर एक सुव्यवस्थित ढंग से राजकोषीय और मौद्रिक सहायता भी दी गई। इस तरह से सरकार ने, नियंत्रण, राजकोषीय, वित्तीय व दीर्घकालिक ढांचागत सूधारों के चार स्तंभो वाली अनुठी रणनीति अपनाई। इस अध्ययन में, हमने कोरोना महामारी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव व सुधार के संभव प्रयास पर प्रकाश डाला है।

सूचक शब्दः कोविड–19, महामारी, सोशल–डिस्टेंस, लॉकडाउन, आर्थिक ढांचा, अर्थव्यवस्था, अनौपचारिक क्षेत्र, वित्तीय तंत्र।

परिचयः–

दूनिया की जीवित आबादी ने अपने जीवनकाल में इतनी भयावह महामारी पहले कभी नही देखी होगी, जो उसे कोविड–19 के रूप में देखने को मिली। चीन

के बुहान शहर से निकली यह बीमारी इतनी जल्दी सम्पूर्ण विश्व को अपनी गिरफ्त में ले लेगी इसका अंदाजा शायद ही किसी को रहा होगा। वैश्वीकरण का यह एक नकारात्मक पहलू ही है, कि अब किसी एक देश की बीमारी उस देश–विदेश तक सीमित न रहकर पूरे विश्व के लिए महामारी बन जाती है। इस महामारी के कारण भारत और सभी देशों की व्यवस्था खराब हो गई।

भारत में 24 मार्च 2020 को लॉकडाउन लागू कर दिया गया । भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का ये एक ऐतिहासिक कदम था। देश के नागरिकों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हूए पूरे देश में पूर्ण रूप से लॉकडाउन लगाया गया। जिससे पूरे देश की अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा।

कोविड–19 से बचाव के लिए किए गए लॉकडाउन से जहॉ एक ओर प्रकृति ने खुलकर साँस ली, पर्यावरण प्रदूषण कम हुआ वहीं दूसरी ओर अर्थव्यवस्था की विकास की रफ्तार कम हुई। इस समय दो समस्याएं विकराल हुई। पहली कोविड–19 के संक्रमण को रोकने और दूसरी ओर अर्थव्यवस्था को विकास के मार्ग पर वापस लाना। लॉकडाउन से सबसे ज्यादा प्रभावित श्रमिक हुए। ये श्रमिक रहने एवं खाने के लिए सैंकड़ों किलोमीटर चलकर अपने घर लौटने को बाध्य हुए। इससे अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हुई साथ ही कोविड–19 का संक्रमण बढ़ा।

कोविड–19 की अब वैक्सीन बन गई है और देश के सभी लोगों को लग रही है जिससे लोग संक्रमण से बच रहे है। लेकिन पूर्णव्यवस्था एक चुनौती बनी हुई है।

कोरोना महामारी का अर्थव्यवस्था पर प्रभावः–

कोरोना वायरस ने न केवल भारत की बल्कि दूनिया की सभी अर्थव्यवस्था की हालत खराब कर दी है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार कोरोना महामारी का, भारत की इकॉनामी पर बड़ा असर पड़ा । वर्ल्ड बैंक की एक रिपोर्ट में यह उल्लेख है कि यह महामारी ऐसे वक्त में आई, जब वित्तीय क्षेत्र पर, दबाव के कारण पहले से ही भारतीय अर्थव्यवस्था सुस्ती की मार झेल रही थी। कोरोना महामारी के कारण इस पर और दबाव बढ़ा।

दरअसल, कोरोना महामारी के कारण देशभर में लॉकडाउन की गई। सभी फैक्ट्री, ऑफिस, मॉल, व्यवसाय आदि सब बंद हुए। घरेलू आपूर्ति और मांग प्रभावित होने के चलते आर्थिक वृद्धि दर प्रभावित हुई। वही जोखिम बढ़ने से घरेलू निवेश में सुधार में भी देरी की संभावना रही। ऐसे में, अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर में पहुंच गई। विश्व बैंक ने आगाह किया कि इस महामारी की वजह से भारत ही नही बल्कि समूचा दक्षिण–एशिया गरीबी उन्मूलन से मिले फायदे को गंवा सकता है। इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन ने कहा था कि कोरोना महामारी सिर्फ एक वैश्विक संकट नही रहा बल्कि ये एक बड़ा लेबर मार्केट और आर्थिक संकट भी बना रहा जिसनें लोगों को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया। लाखों लोग अपना रोजगार खो दिये।दूनिया भर में बचत और राजपत्र के रूप में जमा अरबों खरबों स्वाहा हो गया ।

लॉकडाउन का सबसे ज्यादा असर अनौपचारिक क्षेत्र पर पड़ा।ये क्षेत्र लॉकडाउन के दौरान काम नही कर पाये, कच्चा माल नही खरीद सके, बनाया हुआ माल बाजार में बेच नही पाए, तो उनकी कमाई बंद हो गई।

वर्तमान युग एक आर्थिक युग है अतएव कोरोना महामारी के कारण किसी भी क्षेत्र पर पड़ने वाले चोट अंततः अर्थव्यवस्था पर ही आती है। यदि हम अर्थव्यवस्था के घटकों की बात करे तो भारतीय अर्थवयवस्था को प्रमुखतः तीन क्षेत्रों में बांटा जा सकता है– प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र और तृतीयक क्षेत्र। प्राथमिक क्षेत्र के अतंर्गत वे गतिविधियां आती है जिसमें प्राकृतिक साधनों का प्रयोग करते हुए उत्पादन किया जाता है। जैसे–कृषि, पशुपालन, बागवानी आदि। द्वितीयक क्षेत्र के अंतर्गत वे आर्थिक क्रियाएं आती है जहां प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के द्वारा अन्य रूपों में बदला जाता है। जैसे– मैन्यूफैक्चरिंग गतिविधियां। तृतीयक क्षेत्र में सभी प्रकार की सेवाएं आती है। अर्थव्यवस्था के सतत् और संतुलित विकास में ये तीनों क्षेत्रों की परस्पर निर्भरता रही है। इस कारण अर्थव्यवस्था पर कोरोना महामारी के प्रभाव का विश्लेषण अब हम अर्थव्यवस्था के इस तीनों क्षेत्रों के अनुसार देखेंगे।

प्राथमिक क्षेत्र पर प्रभावः–

प्राथमिक क्षेत्र की सबसे बड़ी गतिविधि कृषि है। कोरोना संकट के कारण जब भारत में 24 मार्च 2020 से 03 मई 2020 तक पूर्ण रूप से लॉकडाउन रहा। इस दौरान हाट, बाजार, खाद्य प्रसंस्करण संयंत्र आदि बंद रहने और परिवहन साधनों की आवाजाही बाधित रहने के कारण किसान स्थानीय स्तर पर फल, सब्जियाँ और उपज बेचने को मजबूर हुए। जिससे उन्हे काफी नुकसान उठाना पड़ा। वही दूसरी ओर सभी प्रकार के समारोहों का आयोजन पर प्रतिबंध और मंदिर बंद रहने के कारण फूलों की खेती करने वालों को भी नुकसान हुआ। यही हाल दूध और पोल्ट्री उत्पादों का भी रहा। लॉकडाउन के शुरूआती दौर में होटल, रेस्त्राँ, चाय–कॉफी हाउस, आइसक्रीम पाइंट, बिरयानी हाउस, मिष्ठान भंडार, टी–स्टाल, ढाबे, स्ट्रीट फूड की दूकाने आदि बंद रहने और शादी समारोहों में भीड़ पर प्रतिबंध के कारण इन उत्पादों की माँग में अप्रत्याशित कमी आई, जिससे इनके दाम काफी नीचे आ गए। इस बीच ऐसे भी मामले देखने को मिले जहां उचित कीमत न मिलने से, किसानों ने दूध सड़कों पर बहा दिया और सब्जियाँ खेत से तोड़ी ही नही और तोड़ी भी उसे विरोध स्वरूप सड़कों पर बिखरा दी। हालांकि लॉकडाउन की घोषणा के समय लोगों के बीच खाद्य वस्तुओं के भंडारण की होड़ भी दिखी और बिचौलियों, दुकानदारों ने दाम ऊँचे करके मुनाफा भी खूब काटा, पर हमेशा की भांति इस माहौल में भी असली अन्नदाता नुकसान में ही रहा।

यद्यपि अच्छे मानसून के चलते अन्य क्षेत्रों के मुकाबले कृषि क्षेत्र ने अच्छा प्रदर्शन किया और वर्ष 2020–21 में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर गतवर्ष की अवधि 3 प्रतिशत कें मुकाबले 3.4 प्रतिशत रही, पर खाद्यान्न (गेहूँ, मक्का आदि) सस्ता हो जाने से किसान की आय में कमी के कारण उसकी खर्च करने की क्षमता घटी और

ग्रामीण माँग कम रही। यद्यपि लाखों प्रवासीय रिश्तेदारों की घर वापसी ने ग्रामीण उपभोग में कुछ इजाफा जरूर किया, पर टिकाऊ उपभोग वस्तुओं की माँग मध्यम ही रही।

द्वितीयक क्षेत्र पर प्रभावः–

कोरोना संकट का सबसे ज्यादा असर मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र पर दिखाई दिया। मार्च 2020 में पूर्ण लॉकडाउन की घोषणा के साथ ही औद्योगिक गतिविधियां बंद हो जाने से श्रमिकों का गाँवों की ओर जो पलायन शुरू हुआ, उससे लगा मानों शहरों का अपना कोई वजूद ही नही है। दूर–दूर के गाँवों से आहिस्ता–आहिस्ता कितने लोग शहर आ गये थे, इसका अंदाजा सड़कों और रेलवे स्टेशनों पर उमड़े जन–सैलाब से सहज लगाया ही जा सकता था। कोरोना की मार छोटे–बड़े सभी उद्योगों पर पड़ी। भारी उद्योगों में सबसे अधिक प्रभावित होने वाले क्षेत्र– धातु और खनन, सीमेंट, ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल, शीतल पेल, माल ढुलाई एवं लॉजिस्टिक्स और तेल एवं गैस रहे।

राष्ट्रीय सांख्यिकी (NSO) द्वारा जारी आँकड़ों के अनुसार वर्ष 2020 के दौरान मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र में संकुचन 39.3 प्रतिशत रहा जबकि विगत वर्ष में इसमें 3 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई थी। इसी अवधि में धातु और खनन गतिविधियों में 23.1 प्रतिशत और निर्माण गतिविधि में 50.3 की गिरावट दर्ज हुई, जिसके फलस्वरूप सीमेंट उत्पादन में 38.3 प्रतिशत और स्टील उपभोग में 56.8 प्रतिशत की कमी देखने को मिली। मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र की सुस्ती आयात–निर्यात में गिरावट के रूप में भी परिलक्षित हुई।

तृतीयक क्षेत्र (सेवा क्षेत्र) पर प्रभावः–

सेवा क्षेत्र के अंतर्गत कोरोना संकट का सबसे अधिक असर होटल, खानपान, पर्यटन और विमानन क्षेत्र पर पड़ा। एन एस ओ के आँकड़ों के अनुसार होटल, खानपान, ट्रेड, पर्यटन, संचार और प्रसारण जैसी सेवाओं में समेकित आधार पर 47 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई। चूँकि मार्च 2020 के पूर्वधि तक कोविड–19 महामारी दूनिया के कई देशों में फैल चूकी थी और यह संपर्क से फैलने वाली बीमारी थी। अतएव विदेशों से संपर्क को काटने के खातिर अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों पर पाबंदी लगाई गई ।

वहीं, पर्यटन में सबसे बड़ा योगदान धार्मिक स्थलों के दर्शनार्थ किये जाने वाले भ्रमण की है। धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल बंद रहने और कारोबारी यात्राओं में कमी के कारण होटल उद्योग और टैक्सी सेवाएं भी आधी हो गई। उन्हें आमदनी तो दूर, रखरखाव कर पाना भी मुश्किल हो गया।

बैंकिंग और बीमा, सेवा क्षेत्र की बड़ी गतिविधियां है जो कोरोना से प्रभावित हुई है। कोविड–19 के कारण व्यवसायिक गतिविधियां सुस्त हो गई और नई परियोजनाओं को टाला जाने लगा, जिससे बैंक ऋण की माँग में अप्रत्याशित कमी

आई। वहीं, कारोबार ठप्प होने और वेतन में कटौती व जॉब लॉस के कारण लोगों की ऋण चुकाने की क्षमता भी प्रभावित हुई, जिससे नए एनपीए का खतरा और भी अधिक बढ़ गया।

विशेषज्ञों, अर्थशास्त्रियों और नीति निर्माताओं के अनुसार कोरोना काल में उत्पन्न स्थिति के अनुसार अर्थव्यवस्था में कुछ परिणाम देखा गया–

परिणाम	उपाय (सुधार के प्रयास)
→ बेरोजगारी में तीव्र बढ़त।	→ वित्तीय एवं आर्थिक विशेषज्ञों की कमेटी का गठन।
→ आपूर्ति श्रृंखलाओं पर तनाव।	→ सरकारी निवेश को बढ़ावा।
→ सरकारी आय में कमी।	→ नियमों में शिथिलता।
→ पर्यटन उद्योग का पतन।	→ स्वदेशी उद्योग को बढ़ावा।
→ अतिथ्य उद्योग का पतन।	→ कृषिगत उत्पादन को बढ़ावा।
→ उपभोक्ता गतिविधियों में कमी।	→ घरों से काम करने की व्यवस्था।
→ लोगों की नौकरी खोने के कारण आय का नुकसान।	→ खाद्य सुरक्षा।
→ औद्योगिक मांग और उत्पादन गतिविधियों में मंदी।	→ राहत पैकेज की सुविधा।
→ कच्चे तेल की वैश्विक कीमत में तेजी से गिरावट।	→ कर चुकाने की सीमा बढ़ानां
→ वैश्विक बंद के कारण आयात–निर्यात में गिरावट।	→ आत्मनिर्भर भारत अभियान को बढ़ावा।

कोरोना काल में भारतीय अर्थव्यवस्था के सुधार हेतु संभव प्रयासः–

'सौ साल में एक बार' भारी कहर ढाने वाले इस तरह के गंभीर संकट से निपटने के लिए भारत ने अत्यंत परिपक्वता दिखाते हुए, जो विभिन्न नीतिगत कदम उठाए उससे विभिन्न देशों को अनेक महत्वपूर्ण सबक भी मिला। भारत के ये नीतिगत कदम दीर्घकालीक लाभों पर फोकस करने के महत्वपूर्ण फायदों को दर्शाता है। भारत ने नियंत्रण, राजकोषीय, वित्तीय और दीर्घकालीक ढांचागत सुधारों के चार स्तंभों वाली अनुठी रणनीति अपनाई।

देश में उभरते हूए आर्थिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हूए, सुव्यवस्थित ढंग से , राजकोषीय और मौद्रिक सहायता भी दी गई। इसके साथ ही इस दौरान क्रमिक रूप से अनलॉक करते समय संबंधित सरकारी उपायों के राजकोषीय प्रभावों और कर्जो, की निरंतरता को भी ध्यान मे रखते हूए लॉकडाउन के दौरान सर्वाधिक असुरक्षित पाए गए लोगों को आवश्यक सहायता दी गई साथ ही विभिन्न वस्तुओं के

उपभोग एंव निवेश को काफी बढ़ावा मिला। अनुकुल मौद्रिक नीति से पर्याप्त तरलता सुनिश्चित हुई। इसी तरह मौद्रिक नीति के कदमों का लाभ प्रदान करते समय कर्जदारों को अस्थायी मोहलत के जरिए तत्काल राहत प्रदान की गई।

भारत सरकार ने इस स्थिति से निपटने के लिए कई उपायों की घोषणा भी की– जिसमें खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और राज्यों के लिए अतिरिक्त धन और कर चुकाने की समय सीमा बढ़ाना, गरीबों के लिए कई तरह के आर्थिक राहत उपायों की घोषणा की गई, जो कुल 1,70,000 करोड़ से अधिक थे। भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी कई उपायों की घोषणा की जो देश की वित्तिय प्रणाली को 3,74,000 करोड़ उपलब्ध कराऐ। साथ ही भारतीय रिज़र्व बैंक अर्थव्यवस्था को पुनर्जिवित करने के लिए ब्याज दरों में कमी की। प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम एक संबोधन में 'आत्म–निर्भर भारत अभियान' की घोषणा की। इसमें समग्र आर्थिक पैकेज के रूप में 20 लाख करोड़ का पैकेज घोषित किया गया, यह भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 10 प्रतिशत था। इसके अलावा एक प्रोत्साहन पैकेज, जिसमें बैंक ऋण पर क्रेडिट गारंटी और गरीबों को मुफ्त अनाज भी शामिल है।

विश्व बैंक द्वारा वैश्विक अर्थव्यवस्था में होने वाले विकास को लेकर जारी रिपोर्ट ग्लोबल इकोनॉमी प्रॉस्पेक्ट्स से पता चलता है कि वर्ष 2021–22 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी में होने वाली विकास की दर करीब 8.3 प्रतिशत रहा, वहीं वर्ष 2020 में यह दर– 7.3 प्रतिशत था। जो इस बात का सबूत है कि भारतीय अर्थव्यवस्था एक बार फिर से पटरी पर लौट रही है, विश्व बैंक के अनुसार भारत ने इंफ्रास्ट्रक्चर, ग्रामीण विकास और स्वास्थ्य पर ज्यादा खर्च किया है। साथ ही, सेवाओं और मैन्यूफैक्चरिंग में उम्मीद से ज्यादा तेज गति से रिकवरी होने का फायदा भी भारत को मिला। वही वर्ष 2022–23 में जीडीपी विकास दर के 7.5 प्रतिशत रहने की संभावना भी जताई गई है, जबकि वर्ष 2023–24 में इसके 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है यदि अपने पड़ोसी देशों से तुलना करे तो भारत की जीडीपी विकास दर काफी अच्छी है।

तालिका–1: सकल घरेलू उत्पाद तथा विकास दर

वर्ष	सकल घरेलू उत्पाद जीडीपी विकास दर (प्रतिशत)	वर्ष	सकल घरेलू उत्पाद जीडीपी विकास दर (प्रतिशत)
2011-12	6.7	2017-18	7.17
2012-13	5.46	2018-19	6.18
2013-14	6.39	2019-20	4.78
2014-15	7.41	2020-21	-7.3
2015-16	8.0	2021-22	8.3
2016-17	8.17	2022-23 (E-S)	8.0

स्रोतः https://www.researchgate.net

संभावनाओं के नये द्वारः–

कोरोना महामारी ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपने तमाम नकारात्मक प्रभावों के बावजूद कुछ नई संभावनाएं और नए अवसर पैदा किए है। इसने जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के अधिकतम उपयोग के द्वार खोले है। आज 'वर्क फ्रोम होम' एक पसंदीदा संकल्पना बनकर उभरी है। इससे ऑफिस और उससे जुड़ी आधारभूत सुविधाओं तथा परिवहन पर होने वाले खर्च में कमी आएगी और कंपनियों के मार्जिन में सुधार होगा।

कोरोना के कारण ऑनलाइन बिजनेस, जिसका हमारी जीडीपी में करीब 10 प्रतिशत योगदान है कि संभावनाओं को पंख लग गये। इस समय पैकेज उपभोक्ता वस्तुओं की माँग में रफ्तार पकड़ी है, इस संकट ने डिजिटल भुगतान की मुहिम को भी बल दिया। मार्जिन में कमी से जूझ रही टेलीकॉम कंपनियों के लिए भी यह एक वरदान सिद्ध हुआ और इस दौरान डेटा–खपत में उल्लेखनीय इजाफा हुआ। घर, ऑफिस, मॉल्स और अन्य सार्वजनिक स्थलों के सैनिटाइजेशन की जरूरत से केमिकल क्षेत्र एकाएक चहक उठा जिससे गंदगी से होने वाली बीमारियां और उस पर होने वाला खर्च होता है।

निष्कर्षः–

कुल मिलाकर, हम एक निर्णायक परिवर्तन की संक्रांति पर है। सारी दूनिया के विपरीत, भारत में कोविड–19 महामारी के मामलों में गिरावट आई है। इस समय हमारे लिए इस गिरावट का लाभ उठाना और कड़ी मेहनत से अर्जित सफलता के आधार पर आगे बढ़ना महत्वपूर्ण है। हांलाकि, देश के कुछ हिस्सों में संक्रमण के मामले फिर से सुनाई दे रहे है। इसके लिए हमें सतर्क, दृढ़ और तैयार रहने की जरूरत है। कोविड युद्ध अभी भी जारी है। 2020 की लड़ाई हमने जीती है, लेकिन इसके लिए जीवन, जीविका और आर्थिक गतिविधियों के मामले में काफी अधिक कीमत चुकानी पड़ी है। कोविड–19 सार्वजनिक सेवाओं सहित सभी सेवाओं की चौथी औद्योगिक क्रांति है। आत्मनिर्भर भारत मिशन के जरिए दी जा रही आवश्यक सहायता के बल पर अर्थव्यवस्था बड़ी मजबूती के साथ बेहतरी के मार्ग पर अग्रसर हो गई है। इसके अलावा भारत सरकार को लगातार विकास की गति का अवलोकन करने की आवश्यकता है, साथ ही कोरोना महामारी जैसी बीमारियों की पहचान, प्रभाव, प्रसार एवं रोकथाम पर जनजागरण, चर्चा–परिचर्चा, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा निरंतर की जानी चाहिए ताकि ऐसे महामारियों का विध्वंसात्मक परिणाम आगे ना हो।

संदर्भ ग्रंथः–

(1) सोलंकी राकेश कुमार 2020, आत्मनिर्भर भारत, रोजगार और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव, Juni Khyat, Vol-10, Issue-7, No.-14, July 2020

(2) प्रधान अनूप 2020, कोरोना आर्थिक, सामाजिक चुनौतियां एवं आर्थिक विकास पर परिदृश्य, Juni Khyat, Vol-10, Issue-7, No.-14, July 2020

(3) सेठी, पाण्डेय 2021, कोविड–19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, Journal of Ravishankar University (Part-A: Social- Science), 27(1), PP:84-88, DOI: https://do;.org/10.5228/JRUA, 2021-27.1.11

(4) ठाकुर एस.के. एवं रेनू मौर्य 2020, प्रभाव, Juni Khyat, Vol-10, Issue-7, No.-14, July 2020

(5) Carisson- Szlezak, Martin Reevas and Paul Swartz "What coronavirus means for the Global Economy" BCG Henderson Institute, https://hbr.org/2020/03/what-coronavirus-could-mean-for-the-global-economy

(6) Kapur, Dev and Subramanian, Arving (2020), "How coronavirus crisis can be converted to opportunity to fundamentally strengthen Indian economy", Indian Express, April 3, 2020

(7) Sengupta, Rajeswari and Harsh Vardhan (2020a), "The pandemic and the package", Ideas for India, 4 June. https://www.ideasforindia.in/topics/macroeconomics/the-pandemic-and-the-package.html

(8) https://www.researchgate.net/publication/340137009- impact of corona virus- covid-19 on Indian economy

(9) cronicleindia.in/hindi/articles/impact-of-covid-19-on-the-economy-and-solutions

(10) मीना, कैलाश चन्द्र, 2021, 'कोविड–19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव', International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS) ISSN: 2581-9925, Volume 03, No. 02(IV), April-June, 2021, PP: 185-188

अध्याय ७

वैश्वीकरण व कोविड-19

डॉ. संदीप कुमार पाण्डेय
व्याख्याता - समाजशास्त्र, एस.आई. आई. कॉलेज रोशनपुर (उत्तराखण्ड)

वैश्वीकरण का अर्थ स्थानीय व क्षेत्रीय वस्तुओं, घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया से है। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकि, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है। वैश्वीकरण का उपयोग अक्सर आर्थिक वैश्वीकरण के संदर्भ में. किया जाता है अर्थात व्यापार, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश एवं प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अर्न्तराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एकीकरण ।

1990 के दशक की शुरुआत में विश्व अर्थव्यवस्था से वैश्वीकरण में प्रदेश किया। यह घटना कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी में तेजी से सुधार, पर बाजारों के खुलने और अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार आर्थिक एकीकरण से प्रेरित थी। भारत में प्राचीन काल से ही गहरे एवं लम्बे समय तक चलने वाले विदेशी व्यापारिक सम्बंध रहे हैं। इन सभी व्यापारिक सम्बंधो के साथ–साथ विदेशों में भारतीय प्रौद्योगिकी का प्रसार भारत में विदेशी प्रौद्योगिकी को अपनाना दोनों ही शामिल थे एवं हम धातुओं में भारत–रोमन और भारत – अरब व्यापार से प्रारम्भ करते हैं, जहाँ प्रौद्योगिकी पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है। सामान्य युग की शुरुआत से पहले प्राचीन दक्षिण भारत में उच्च गुणवत्ता वाले'वूट्ज स्टील'' बनाने की तकनीक विकसित की गई थी। इस स्टील का व्यापार प्राचीन यूरोप, चीन, अरब दुनिया और मध्य पूर्व में किया जाता था और इसे दुनिया के बेहतरीन स्टील'' के रूप में जाना जाता था । इन क्षेत्रों में समय के साथ भारतीय तकनीकों को अपनाया गया और उनमें सुधार भी किया गया।

140 ईस्वी तक भारतीयों ने चीन से रेशम उत्पादन की तकनीकि का अधिग्रहण कर चुका था समय के साथ भारत में रेशम निर्मित असम की सिल्क मेखला चादरें एवं बनारस की सड़िया लोकप्रिय होने लगी । आज भारत व चीन विश्व के सबसे बड़े रेशम उत्पादक राष्ट्र हैं, दोनों देशों का वैश्विक उत्पादन लगभग 60% है। बाद की शताब्दियों में मध्य एशियाई तुर्को ने भारत में राज्य स्थापित किए मुगल राजवंश ने भारत व मध्य एशिया के बीच एक प्रमुख व्यापारिक सम्बंध स्थापित किया। इन सम्पर्कों के कारण ही भारत में एक प्रौद्योगिकी '**कालीन निर्माण**' की परम्परा का विकास हुआ । रेशम की भांति कालीन निर्माण से सम्बंधित व्यवसाय

वाराणसी (बनारस), जयपुर, अमृतसर व श्रीनगर में तेजी से फैल गया ।वर्तमान में भारत कालीन निर्यात के क्षेत्र में प्रथम स्थान पर है।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की स्थापना के साथ पिछले व्यापारिक संबंधों को समाप्त कर दिया गया और भारत में दो शताब्दियों के शोषणकारी व्यापारिक व्यवस्था में प्रवेश किया । वहाँ से निर्मित वस्तुओं का आयात करते हुए ब्रिटेन को कच्चे माल का निर्यात किया ।

स्वतंत्रता के पश्चात दो शताब्दियों के उपनिवेशवाद से आहत, भारत ने एक आर्थिक नीति का पालन किया जिसने विदेशी व्यापार पर आत्मनिर्भरता पर जोर दिया । इसने स्वदेशी ऑटो मोबाइल, फार्मास्युटिकव और अन्तरिक्ष उद्योगों के विकास की अनुमति दे दी लेकिन नवीनतम तकनीकों के अधिग्रहण और विदेशी पूंजी व बाजारों तक पहुँच को भी बाधित किया। लेकिन 1980 के दशक के उत्तरार्ध में भारत से विदेशी पूंजी के लिए अपनी सीमाएं खोल दी और संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) के साथ विशेष रूप से गहरे व्यापारिक सम्बंध और श्रम सम्बंधों में प्रवेश किया। जैसाकि मध्य एशिया, पूर्वी एशिया और यूरोप के साथ पिछले युगों में किया था ।

कोविड –19 का आगमन– कोरोना वायरस (covid–19) SARS-COV-2 वायरस के कारण होने वाला संक्रामक रोग है। जिसे इन्सनों में पहले कभी भी नहीं देखा गया था । Covid-19 में 'co' है – कोरोना के लिए, VI' है वायरस के लिए और '19' है. 2019 वर्ष के लिए । कोरोना वायरस आमतौर पर इन्सानो के श्वसन तंत्र (साइनस, नाक की नली व कष्ठ) को प्रभावित करता है। नवम्बर 2019 में यह वायरस चीन की वुहान प्रयोगशाला से निकलकर बहुत ही कम समय में अधिकांश देशों को अपने संक्रमण से कुप्रभावित करना प्रारम्भ कर दिया ।

भारत में कोविड–19 का पहला मामला 30 जनवरी 2020 को केरल मे मिला। बहुत ही कम समय में कोरोना के मामलों में तेजी से वृद्धि होने लगी । अंततः इस वैश्विक महामारी से बचने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 24 मार्च 2020 को 21 दिनों का सम्पूर्ण लाकडाउन की घोषणा कर दी। 15 अप्रैल को प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र को सम्बोधित हुए कहा कि मानवता की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लॉकडाउन के बिस्तार की जरूरत है और लॉकडाउन को बढ़ा दिया गया ।

आर्थिक चुनौतियाँ :– विश्वव्यापी महामारी कोविड –19 से दुनिया भर में ना सिर्फ मानव जीवन को भीषण नुकसान हुआ है बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य, खाद्य प्रणालियों और कामकाजी दुनिया के लिए एक अभूतपूर्व चुनौती पैदा कर दिया । देखते ही देखते एक स्वास्थ्य आघात के रूप में जो शुरू हुआ वह अब वैश्विक आर्थिक संकट में बदल गया और एक वैश्विक प्रणालीगत आर्थिक जोखिम बन गया क्योंकि इसने दुनिया के लगभग सभी अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित किया, चाहे वे कितनी ही छोटी या बड़ी क्यों न हो।

कोविड –19 के संक्रमण को रोकने के लिए लॉकडाउन और सोशल डिस्टेसिंग जैसे प्रयासों से औद्योगिक उत्पादन प्रभावित हुआ एवं बेरोजगारी के

साथ–साथ सार्वजनिक खर्च में भारी कटौती हुई। कच्चे माल की उपलब्धता उत्पादन और तैयार उत्पादों के वितरण की श्रृंखला भी प्रभावित हुई, जिसे पुनः प्रारम्भ करने में अभी कुछ समय लग सकता है। कोविड–19 का कुप्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ा । विकासशील और बिकसित देशों की अर्थव्यवस्थाएँ इसके कारण लाचार हो गई। भारत में विदेशी निवेश के द्वारा अर्थव्यवस्था मजबूत करने की कोशिशों में भी कमी आई है। विदेशी कम्पनियों के पास निवेश करने के लिए पर्याप्त धन नहीं रहा।

कोविंड –19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव– कोविड–19 महामारी का कुप्रभाव भारत की आर्थिक गतिविधियों के साथ–साथ मानव जीवन की समस्त जीवन शैली पर भी पड़ा । इसका प्रभाव लगभग सभी क्षेत्रों पर प्रतिकूल एवं नुकसान दायक रहा क्योंकि घरेलू मांग और निर्यात में कुछ उल्लेखनीय अपवादों के साथ तेजी से गिरावट आई। कृषि भारत की रीढ़ है क्योकि भारत की लगभग 72% आबादी कृषि पर पूरी तरह आश्रित है। ऐसे में कोविड–19 के प्रभाव के कारण फलों, सब्जियों, दूध एवं रसद सामग्री के रुकने के कारण लॉकडाउन के कारण भारी आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ा।

हमारे सकल घरेलू उत्पाद में विमानन क्षेत्र एवं पर्यटन का योगदान क्रमशः 2.4% और 9.2% है। वित्तीय वर्ष 2018–19 में लगभग 43 मिलियन लोगों की सेवा की। विमानन और पर्याटन उद्योग पहले से ही कोविड–19 से सर्वाधिक प्रभावित थे। इसके परिणामस्वरूप लगभग 85 अरब रुपये का नुकसान उठाना पड़ा ।

दवा उद्योग कोविड महामारी के प्रारम्भिक दौर से ही बेहतर स्तर पर कार्य कर रहा था क्योंकि भारत विश्व वैश्विक स्तर पर जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा उत्पादक है। महामारी के कारण चीन से आयातित कच्चे माल की कीमतो में हाल ही में वृद्धि हुई। सामाजिक इरी के कारण आयात पर भारी निर्भरता, बाधित आपूर्ति श्रृंखला और उद्योग में श्रम की अनुपलब्धता के कारण जेनेरिक दवाए सबसे अधिक प्रभावित हुई। साथ ही देश के लिए पर्याप्त मात्रा में सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण दवाओ, उपकरणों और पीपीई किट के निर्यात पर सरकार द्वारा लगाए, घरेलू प्रतिबंधों के कारण दवा उद्योग और संघर्ष कर रहा है। इन दवाओं की बढ़ती मांग के साथ–साथ पहुंच में बाधा चीजों को कठिन बना रहे है।दवा कंपनीयों पर वित्तीय तनाव को कम कसा, कर छुट और श्रम बल की कमी को दूर करना ऐसे का समय मे अलग – अलग कारक हो सकते हैं।

भारतीय तेल और गैस उद्योग वैश्विक संदर्भ में काफी महत्वपूर्ण है– यह केवल यूएसए और चीन के बाद तीसरा सबसे बड़ा उपभोगता है वैश्विक तेल भाग का 5.2ः योगदान देता है। देश भर में पूर्ण लॉकडाउन में परिवहन ईधन (तेल और गैस क्षेत्र में 2/3 मांग के लिए (लेखाकनं) की मांग को धीमा कर दिया क्योंकि ऑटो और औद्योगिक विनिर्माण में गिरावट आई । कोविड –19 के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था पर आजादी के बाद सबसे ज्यादा मंदी आई।

निष्कर्ष.

कोरोना वायरस ने न केवल भारत की बल्कि दुनिया की अर्थव्यवस्था पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है। विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना वायरस के कारण भारत की अर्थव्यवस्था पर बड़ा असर पड़ा है। कोरोना से भारत की आर्थिक वृद्धि दर में गिरावट आयी है। भारत सरकार को लगातार विकास की गति का अवलोकन करने की आवश्यकता है, साथ ही चीन पर निर्भर भारतीय उद्योगों को आवश्यक समर्थन एवं सहायता प्रदान करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ–

1– http://www.allresearhjournal.com
2- https://www.covid-19India.org
3- www.drishtias.com

अध्याय ८

कोरोना महामारी एवं मानव का जोखिमपूर्ण व्यवहार

गोपाल सिंह
एस0एस0जे0 कैम्पस, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा

डॉ. रिजवाना सिद्दीकी
सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा संकाय, एस0एस0जे0 विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा

सारांश–
एक ऐसी बीमारी जिसने मनुष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला, जिससे केवल एक देश ही नहीं पूरा विश्व प्रभावित हुआ। कोरोना महामारी के नाम से जाना गया। इस बीमारी की शुरूआत चीन के हुब्रेही के वुहान शहर से प्रारंभ हुई, तथा जिससे पूरा विश्व प्रभावित हुआ जोखिमपूर्ण व्यवहार एक ऐसा व्यवहार है।जिसमें मानव किसी भी कार्य को करने के लिए जोखिम उठाता है तथा उसे अपने जीवन का हिस्सा बना लेते हैं। कोरोना महामारी के समय भी मानव ने जोखिम उठाते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया। जिसमें मुख्य भूमिका स्वास्थ्य विभाग तथा पुलिस प्रशासन की रही इन्होंने बिना अपनी परवाह किए हर तरह का जोखिम उठाते हुए स्वयं और देश को इस बीमारी से निकालने का प्रयास किया।

मुख्य शब्द– कोरोना, महामारी, मानव, जोखिमपूर्ण व्यवहार, W.H.O., स्वाइन फ्लू, कोविड–19

प्रस्तावना–

एक ऐसी बीमारी जिससे पूरा विश्व प्रभावित हुआ, महामारी के नाम से जाना जाता है। इस महामारी को कोविड–19 के नाम से जाना जाता है। महामारी एक ऐसी बीमारी है जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति को छूने से, श्वास लेने से फैले तो उसे महामारी की संज्ञा दी जाती है। अगर इस महामारी पर नियंत्रण नहीं किया

गया तो धीरे–धीरे यह एक देश से दूसरे देश मे फैलते हुए पूरे विश्व में फैल जाएगी। विश्व में बहुत सी ऐसी बिमारी आयी, जिन्होंने महामारी का रूप लिया।

महामारी कब और किसके द्वारा घोषित किया जाता है?–

जब कोई बीमारी छुआछूत के द्वारा एक देश से दूसरे देश में या एक स्थान से दूसरे स्थान पर फैलने लगे तब उसे महामारी घोषित कर दिया जाता है। क्योंकि इस महामारी से केवल एक गांव, शहर राज्य या देश ही प्रभावित नहीं होता बल्कि पूरा विश्व प्रभावित होता है। जब पूरा विश्व इस संक्रमित बीमारी से प्रभावित होने लगे तो डब्ल्यू. एच. ओ. के द्वारा इसे महामारी घोषित कर दिया जाता है। किसी बीमारी को महामारी के रूप में कब घोषित करना है, और कब नहीं करना है, इसके बारे में निर्णय WHO ही लेती है। WHO को विश्व स्वास्थ्य संगठन के नाम से जाना जाता है। जिस प्रकार WHO ने 2009 में स्वाइन फ्लू को महामारी घोषित किया। उसी प्रकार 2019 में WHO ने कोरोना या कोविड–19 को एक महामारी के रूप में घोषित किया।

क्या है कोविड–19?–

कोरोना वायरस जिसकी शुरूआत 2019 में चीन के हुब्रेही के शहर वुहान प्रान्त के सीफूड और पोल्ट्री बाजार में दिखाई दी थी। जिसका परिणाम आज पूरा विश्व उठा रहा है। इस बीमारी ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। इस बीमारी की वजह से चीन ने वुहान शहर से सभी आवागमन बंद कर दिए। बाद में जब यह बीमारी पूरे विश्व में पैर पसारने लगी तो सभी देशों ने एक दूसरे से आवागमन को पूरी तरह बंद कर दिया।

कोरोना महामारी के लक्षण–

कोरोना वायरस से पीड़ित व्यक्ति में यह लक्षण 2 से 14 दिन के अंतराल में दिखाई देने लग जाता है। ये लक्षण सौम्य तथा सामान्य होते है जिस कारण इनकी उपेक्षा की जा सकती है। कुछ व्यक्ति कोरोना से संक्रमित तो हो जाते हैं लेकिन उसमें किसी प्रकार को कोई लक्षण दिखाई नहीं देता। इस बीमारी के मुख्य लक्षणों में बुखार आना, थकान महसूस होना, सूखी खांसी होना, नाक का बंद हो जाना, नाक बहना गले में खराश होना आदि हैं।

कैसे फैलता है कोरोना–

यह बीमारी एक बीमार का दूसरे स्वस्थ व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलता है। कोरोना किसी व्यक्ति को छूने से, श्वास लेने से, छींकने से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के अंदर प्रवेश कर जाता है। कोरोना वायरस अन्य वायरसों की तुलना में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में काफी तेजी से फैलता है। प्रारम्भ में कोरोना वायरस ने सबसे पहले बुर्जुग लोगों को प्रभावित किया। युवाओं के मुकाबले युवा लोगों की जानें

ज्यादा कोरोना वायरस के कारण गई। अगर किसी व्यक्ति की इम्यूनिटी सिस्टम कमजोर है तो वह व्यक्ति भी इस बीमारी से बच नहीं पाया।

भारत में कोरोना वायरस–

भारत में साल 2020 को कोई भी व्यक्ति भुला नहीं सकता, क्योंकि इस 2020 ने पूरे भारत को एकदम से डरा के रख दिया था। भारत में कोरोना वायरस का पहला मामला 30 जनवरी 2020 को दक्षिण भारत के केरल में दिखाई दिया था। इस वायरस से प्रथम संक्रमित महिला थी जिसकी उम्र मात्र 20 साल थी जो कि चीन के वुहान शहर से ही भारत लौटी थी। यह महिला 3 साल से वुहान शहर में चिकित्सा की पढ़ाई कर रही थी। वुहान ही वह शहर था जहाँ पर 21 दिसम्बर 2019 को कोरोना वायरस का प्रथम मामला सामने आया था। जिस समय वह युवती भारत आयी उस समय उसकी थर्मल स्क्रीनिंग की गयी। जिसमें वह पूरी तरह से स्वस्थ थी। बीजिंग में स्थित भारतीय दूतावास से एक एडवाइजरी के जरिए उन्हें अपना मेडिकल टेस्ट कराने की सलाह दी गयी। इस मेडिकल टेस्ट में यह पॉजिटिव पायी गयी। उन्हें दुबारा से अस्पताल में भर्ती करा दिया गया।

जोखिम पूर्ण व्यवहार–

जोखिम एक सामान्य एवं प्रमुख शब्दों में से एक है। मनुष्य इस संसार में पैदा होने से लेकर मृत्यु तक जोखिम उठाता रहता है। एक मां जब अपने बच्चे को जन्म दे रही होती है, वह उस वक्त भी जोखिम की स्थिति में होती है। मानव के जीवन में दिन–प्रतिदिन इसका उपयोग बढ़ता जा रहा है और जोखिम उठाने का प्रयास भी कर रहा है। एक बहुत ही लोकप्रिय अंग्रेजी कहावत है कि 'नो रिस्क नोगेन।' प्रायः यह देखा गया है कि जो व्यक्ति ज्यादा जोखिम उठाते हैं या अपने आप को हमेशा कठिन परिस्थिति में डालते हैं प्रायः सफलता को प्राप्त करते हैं।

यह कहना भी गलत नहीं होगा कि जोखिम शब्द वह खतरनाक शब्द है, जिसे किसी व्यक्ति द्वारा स्वेच्छा से या अनिच्छा से उन कठिन परिस्थिति में डाल दिया जाता है जिन्हें वह प्राप्त करने का प्रयास करता है तथा उसे प्राप्त करने के लिये जोखिम पूर्ण व्यवहार को अपनाता है। सामान्य शब्दों में कहा जा सकता है कि जोखिम किसी व्यक्ति को कठिन परिस्थिति में डालने से है।

जोखिम पूर्ण व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक किशोरावस्था में जोखिम पूर्ण व्यवहार को कोई एक कारक प्रभावित नहीं करता। जिस प्रकार किसी व्यक्ति के शरीर को उसके सारे पक्ष प्रभावित करते हैं ठीक उसी प्रकार से जोखिम पूर्ण व्यवहार को भी कई कारक मिलकर प्रभावित करते हैं। ये कारक ही जोखिमपूर्ण व्यवहार को प्रेरणा प्रदान करते हैं और उसे आगे बढ़ाने में सहायता करते हैं। ये कारक निम्नलिखित हैं–

- शारीरिक कारक

- मानसिक कारक
- वैयक्तिक कारक
- पारिवारिक कारक
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक
- आर्थिक एवं राजनैतिक कारक

कोरोना महामारी तथा मानव का जोखिमपूर्ण व्यवहार–

कोरोना महामारी ने मनुष्य के जीवन को काफी प्रभावित किया। मानव के जीवन के साथ–साथ देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था भी बहुत बुरी तरह प्रभावित हो गयी। मानव का व्यवहार भी इस महामारी से अछूता नहीं रह सका। इस महामारी ने मनुष्य के जीवन को झकझोर कर रख दिया। जिस समय विश्व में इस कोरोना महामारी ने अपना पैर पसार रखा था। उस समय मनुष्य के जीवन में इसका खौफ बैठ गया था। इस महामारी के कारण लोगों ने अपने आप को घरों में कैद कर लिया था। उसके व्यवहार में तरह–तरह के परिवर्तन आने लगे थे।

मानव व्यवहार में यह परिवर्तन स्वैच्छिक भी था तथा अनैच्छिक भी था। जिस प्रकार मानव के जीवन में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं, ठीक उसी प्रकार कोरोना महामारी ने भी मनुष्य के जीवन में परिवर्तन लाने प्रारम्भ कर दिए थे। इस कोरोना महामारी के कारण मनुष्य जोखिम उठाने से भी पीछे नहीं रहा। कोरोना महामारी में विशेशकर स्वास्थ्य विभाग तथा पुलिस प्रशासन ने हर समय, हर पल जोखिम उठाते हुए अपनी भूमिका को निभाया है। जहाँ एक तरफ स्वास्थ्य कर्मी अपने जीवन को दाँव पर लगा कर लोगों की जिंदगी बचा रहे थे, वहीं दूसरी तरफ पुलिस प्रशासन भी जोखिम उठाते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रही थी। स्वास्थ्य विभाग और पुलिस प्रशासन ने हर तरह से जोखिम को उठाते हुए लोगों के जीवन को बचाया है।

जहाँ एक तरफ डॉक्टर और पुलिसकर्मी अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे थे वहीं दूसरी तरफ वे अपने परिवार से भी दूर हो गए थे। जिस कारण इस जोखिम भरे अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते–करते उनका व्यवहार भी परिवर्तित हो रहा था। वे कई–कई दिन तक अपने परिवार से नहीं मिल पा रहे थे। जो लोग अपने घर से दूर रहकर नौकरी कर रहे थे। कोरोना महामारी ने उनके हाथ से उनकी रोजी–रोटी भी छीन ली थी। वे लोग अपने घरों को लौटने का मजबूर हो गए थे। घर जाने के लिए उनके पास साधन नहीं थे। हर जगह लॉकडाउन लगा हुआ था। इन सबके बावजूद मानव अपने घर लौटना चाहता था। वह लॉकडाउन तथा महामारी की परवाह किए बगैर अपने जान का जोखिम उठा वे अपने घरों को पैदल ही चलकर लौटने लगे। इस प्रकार कोरोना महामारी ने मानव को जोखिम उठाने के लिए मजबूर कर दिया था।

निष्कर्ष–

विश्व में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक मानव का जीवन विभिन्न–विभिन्न महामारियों से प्रभावित हुआ है। विश्व में प्लैग, हैजा, जैसी बहुत सी महामारियाँ आयी और समय रहते उसका समाधान भी ढूँढ़ा गया। जिस प्रकार प्लैग, हैजा, जैसी महामारियॉ आयी वैसी ही 2019 में कोरोना महामारी आयी। कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को अपनी जद में जकड़ कर रख लिया। जिसके कारण मानव जोखिम भी उठाने लग गया। कोरोना महामारी से लड़ने के लिए लोगों ने जोखिम उठाते हुए अपने अपने व्यवहार को भी उसके अनुसार ढालने का प्रयास करने लगे। तथा काफी सफल भी हुए। कोरोना जैसी भयावह बीमारी से निपटने के लिए स्वास्थ्य विभाग तथा पुलिस प्रशासन ने हर तरह का जोखिम उठाया। उन्होंने इस भयावह बीमारी से बाहर आने में लोगों की मदद की।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

- केसारा एवं मकराना. (2020). माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच जोखिम लेने वाले व्यवहार का अध्ययन, इंटरनेशनल जनरल ऑफ इण्डियन साइकोलॉजी.पृ0 सं0 1869–1875.
- Ben, J. D., Kogen, N. & Wallach, M. A. (1962). Group Influences on Individual Risk- Taking. *Journals of Abnormal and Social Psychology*, 65(2). 75-86.
- Dull, K. & Sudesh. (2017). A Study of Risk taking Behaviour among Adolescents in Relation to their type of Education Stream. *Electronic Interdisplinary International Journal*. 424-431.
- Sahi, K. S. (2022). Understanding Gender Difference in the Attitudes Towards Finanacial Risk taking. *International Journal of Indian Culture and Business Management*, 25(2). 139-158.
- Tsai, C. I. & Zeng, Y. (2021). Risky but Alluring Severe Covid-19 Pnademic influences increases risk taking. *Journl of Experimental Psychology: Applied*, 27(4). 679-694.
- Wikipedia. (2022). www.wikipedia.com
- Webdunia. (2022). Hindi.webdunia.com/corona

अध्याय ९

कोरोना महामारी और शिक्षा जगत

दीपा देवी

पूर्व छात्रा (नेट क्वालिफाइड) एस एस जे कैंपस अल्मोड़ा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

सारांश –

संपूर्ण इतिहास से ज्ञात होता है कि विश्व में समय समय पर असंख्य महामारियाँ फैली रहती है जैसे चेचक, एच आई वी, 2009 का फ्लू इसी प्रकार से एक बीमारी जिसने विश्व के अधिकतम देशों के लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है जिसे कोरोना महामारी नाम दिया गया है। इस बीमारी की शुरुआत चीन के हुबेई प्रांत की राजधानी वुहान से हुई थी। जिसने पूरे विश्व को प्रभावित किया है लोगों के जीवन को इस महामारी ने पूर्ण तरह तबाह कर दिया जिसमें शिक्षा जगत भी बहुत प्रभावित हुआ है। बच्चों की शिक्षा में बहुत बड़ा व्यवधान पड़ गया और स्कूलों का बंद होना अधिकतर बच्चों की शिक्षा प्रक्रिया का बंद होना था क्योंकि सभी बच्चों के पास शिक्षा के अन्य साधन उपलब्ध नहीं थे।

मुख्य शब्द - कोरोना, महामारी, शिक्षा ,जगत।

प्रस्तावना –

कोरोनावायरस को शुरुआती दिनों में एक बीमारी के रूप में देखा गया धीरे-धीरे यह बीमारी एक दूसरे के संपर्क में आने से फैलने लगी और इसने अपना खौफ पूरे विश्व में फैला दिया तब इसे एक महामारी के रूप में घोषित किया गया एक दूसरे के संपर्क में आने से फैलने वाली बीमारी होने के कारण पूरे विश्व में सार्वजनिक संस्थान बंद करने पड़े इसी दौरान शिक्षा जगत भी खासा प्रभावित हुआ और सभी प्रकार के शिक्षण संस्थान भी बंद कर दिए गए इस वायरस का इतना प्रभाव बढ़ा कि कोई अछूता न रह पाया।

महामारी क्या होती है -

महामारी की सामान्य शब्दों में व्याख्या की जाए तो यह एक ऐसी बीमारी होती है जो छुआछूत सांसों के संपर्क में आने से फैलने लगती है यह बीमारी किसी एक स्थान या सीमित क्षेत्र में ना फैल कर पूरे विश्व में धीरे-धीरे अपने पैर पसारने लगती है। तो इसे महामारी का नाम दे दिया जाता है। ऐसी बीमारियों पर नियंत्रण रख पाना मुश्किल हो जाता है। जिन्हें महामारी घोषित कर दिया जाता है। वर्तमान में कोरोना

ने महामारी बनकर पूरे विश्व को प्रभावित किया है कोरोना वायरस से पहले भी प्लेग, हैजा और चेचक जैसी बीमारियों को महामारी घोषित किया जा चुका है।

महामारी कौन घोषित करता है –

किसी बीमारी के महामारी होने की घोषणा उसके कारण होने वाली मौतों और पीड़ितों की संख्या पर निर्भर करता है तभी WHO (वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन) द्वारा किसी बीमारी को महामारी घोषित किया जाता है। इसी प्रकार से कोरोनावायरस भी 100 से अधिक देशों में फैल चुका है इस जानलेवा वायरस को तेजी से फैलते देख विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यू एच ओ ने इसे पेंडेमिक यानी महामारी घोषित कर दिया गया है इसी प्रकार साल 1961 से लेकर 1975 तक हैजा महामारी और 1974 में चेचक महामारी फैली थी।

क्या है कोरोना वायरस -

कोरोना वायरस दुनिया भर में आम वायरस का एक बड़ा परिवार है । वह सामान्य सर्दी से कोविड-19 तक श्वास संक्रमण का कारण बनते हैं कोरोना वायरस कई प्रकार के हैं। जैसे गंभीर तीव्र स्वसन सिंड्रोम (SARS) और मध्य पूर्व स्वसन सिंड्रोम (SERS) लेकिन सबसे ज्यादा प्रभावित इस कोविड-19 कोरोना वायरस ने किया है इस नए कोरोना वायरस का अधिकारिक नाम SARS COV-2 है।

कोरोना महामारी के लक्षण –

कोविड-19 कई तरीकों से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है । छींकने या खांसी से सांस की बूंदों में हवा के माध्यम से फेफड़ों में जाता है यह सीधे संपर्क के माध्यम से फैल सकता है जैसे कि हाथ मिलाने इत्यादि से यह लक्षण कोरोना से पीड़ित व्यक्ति में 2 से 14 दिन के अंतराल में दिखाई देने लगते हैं।

कोरोना का भारत में प्रभाव –

भारत में कोरोना का पहला केस (मरीज) 30 जनवरी 2020 को दक्षिण भारतीय राज्य केरल में मिला जो मेडिकल की पढ़ाई करने वाली 20 साल की एक लड़की थी। यह भारत में कोरोना वायरस से पॉजिटिव पाए जाने वाली पहली मरीज थी कोरोना वायरस ने धीरे-धीरे पूरे भारत में अपने पांव पसार दिए और पूरे देश में 24 मार्च 2020 को पहली बार लॉकडाउन लगा दिया गया था । जिससे पूरे भारत के लोग पूरी तरह प्रभावित हुए सभी के सरकारी और गैर सरकारी व्यवसाय बंद कर दिए गए आर्थिक रूप से लोगों को काफी परेशानियां होने लगी लोगों की रोजी-रोटी छिन गई बीमारी के साथ-साथ लोगों को रोजी रोटी के लिए भी मरना पड़ा सबसे बड़ा प्रभाव शिक्षा जगत पर देखने को मिला देश में लॉकडाउन के साथ-साथ शिक्षण संस्थान भी बंद हो गए थे पर सभी संस्थान खुलने के बाद भी शिक्षण संस्थानों का खुल मुश्किल हो गया था शिक्षा पूरी तरह रुक गई थी।

शिक्षा -

शिक्षा जगत के बारे में जानने से पहले हम शिक्षा क्या है यह जान लेते हैं। व्यक्ति जीवन पर्यन्त शिक्षा ग्रहण करते रहता है ।जीवन से अनुभव से ,अनुकरण से ,पर्यावरण से ,परिवार से, पास पड़ोस से ,समाज से , सभी से वह शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो स्वतंत्रता के चयन के लिए चेतना विकसित करती है । एम के गांधी के द्वारा शिक्षा का प्रथम उद्देश्य स्वावलंबन को माना है प्राचीन भारतीय दर्शन की भांति " सा विद्या या विमुक्ततो" गांधी जी की शिक्षा का आदर्श था।

"रविंद्र नाथ टैगोर जी के अनुसार" शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक के जन्मजात शक्तियों का विकास कर उसके व्यक्तित्व का चहुमुखी तथा सर्वांगीण विकास करना है।

शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक –

शिक्षा को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं। शारीरिक कारक, मानसिक कारक, बौद्धिक कारक, सांस्कृतिक और नैतिक कारक, पर्यावरणीय कारक, परिवार, पास पड़ोस, विद्यालय और खेल मंडली इत्यादि। इन्हीं के अंतर्गत यह कोरोना महामारी भी आता है जिसके कारण वर्तमान काल में शिक्षा अत्यधिक प्रभावित हुई है।

शिक्षा जगत –

शिक्षा का प्रारंभ मनुष्य के पैदा होने से होता है और मृत्यु तक चलते रहता है लेकिन जो औपचारिक शिक्षा का प्रारंभ है उसका एक निश्चित समय वह स्थान होता है इसी प्रकार भारत या विश्व में शिक्षा का प्रारंभ प्राथमिक से उच्च स्तर की ओर होता है जिसके लिए अनेक प्रकार के शिक्षण संस्थानों का निर्माण किया गया है प्राचीन काल से ही शिक्षा की व्यवस्था का प्रावधान किया जाता था पर वर्तमान मै शिक्षा की सुविधाएं बढ़ गई हैं लेकिन कोरोना काल में यह शिक्षा व्यवस्था पूर्ण तरह प्रभावित हो गई है। कोरोना काल में सभी शिक्षण संस्थान बंद कर दिए गए और शिक्षा व्यवस्था को ऑनलाइन मोड पर चलाया गया जिसके अंतर्गत अधिकांश बच्चों की पहुंच शिक्षा व्यवस्था तक नहीं हो पाई इसी कारण शिक्षा व्यवस्था रुक सी गई है।

कोरोना महामारी और शिक्षा जगत –

कोरोना महामारी ने हम सभी को बहुत प्रभावित किया मनुष्य जाति के जीवन का कोई भी पक्ष इसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा शिक्षा जगत भी इसी महामारी से जूझ रहा है शिक्षा जगत में भी इस महामारी ने तबाही मचा दी थी इस महामारी ने मनुष्य के जीवन में जिन भी क्षेत्रों को प्रभावित किया उनमें से एक है शिक्षा जगत कोविड - 19 के कारण स्कूलों के बंद होने से बच्चे असमान रूप से प्रभावित हुए क्योंकि महामारी के दौरान सभी बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर साधन या पहुंच नहीं थी । लाखों बच्चों के लिए स्कूलों का बंद होना शिक्षा में अस्थाई तौर पर व्यवधान भर नहीं बल्कि अचानक से इसका अंत हो जाना था ह्यूमन राइट्स वॉच ने 17 मई 2021 को जारी एक रिपोर्ट में कहा कि "सरकारो को कोविड-19 महामारी से हुए अभूतपूर्व व्यवधान के कारण सभी की शिक्षा का नुकसान की भरपाई के लिए

तुरंत कदम उठाने चाहिए क्योंकि जब लॉकडाउन लगा था ।तो स्कूल कॉलेज बंद होने के कारण शिक्षा को अधिकांश क्षेत्रों में ऑनलाइन कर दिया गया जिसका शिक्षा पर बहुत प्रभाव पड़ा। कोरोना महामारी का शिक्षा जगत पर प्रभाव - जब कोविड-19 के कारण स्कूल कॉलेज बंद होने से अधिकांश शिक्षण संस्थानों में ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था की थी। तो उससे काफी हद तक बच्चों को शिक्षा में सहायता मिली थी। जिससे बच्चे अपनी शिक्षा प्रक्रिया से जुड़े रहे लेकिन इस ऑनलाइन शिक्षा का बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक व सकारात्मक दोनों ही तरह का प्रभाव पड़ा था जो निम्न प्रकार है ।

सकारात्मक प्रभाव –

जब लॉकडाउन लग गया था उस समय शिक्षा व्यवस्था ने ऑनलाइन मोड रूप धारण किया तो अधिकांश बच्चों को अपनी शिक्षा सुचारु रुप से चलाएं रखने में काफी मदद मिली और सरकार ने भी बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षा का प्रावधान किया और उसके निश्चित समय पर प्रसारण के द्वारा बच्चों को काफी हद तक मदद मिली और अधिकांश बच्चे अपनी शिक्षा के पथ पर अग्रसर रहे।

नकारात्मक प्रभाव –

ऑनलाइन शिक्षा के सकारात्मक प्रभाव के विपरीत नकारात्मक प्रभाव अधिक पढ़ें ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत बच्चों ने शिक्षा व्यवस्था को वास्तविकता से नहीं लिया सभी बच्चों के पास ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने के साधन व पहुंच नहीं थी जिससे वह अपनी शिक्षा को क्रमबद्ध रखते और जिन बच्चों के पास ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था थी उन्होंने भी इसका सही तरीके से प्रयोग नहीं किया ऑनलाइन शिक्षा ने बच्चों को शिक्षा की सुविधा कम शिक्षा से भटका अधिक दिया जिससे माता-पिता के जीवन में अधिक परेशानियां आई ऑनलाइन शिक्षा में बच्चे इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस मैं उलझ कर रह गए ऑनलाइन शिक्षा के थमने का तो नाम ही नहीं है अब भी चली जा रही है स्कूल नाम के खुले हैं लॉकडाउन में ऑनलाइन शिक्षा के बाद अब बच्चों को इन इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस की एक गंदी आदत सी पड़ गई है अब बच्चे किताबों से अधिक इन इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस के ऊपर निर्भर होते हुए दिख रहे हैं।

निष्कर्ष –

संसार में प्राचीन काल से ही अनेक प्रकार के प्रकोपो ने मनुष्य जीवन को प्रभावित किया इसमें से एक यह कोरोना महामारी का प्रकोप भी है इस कोरोना महामारी का प्रभाव शिक्षा जगत पर भी बहुत पड़ा व्यक्ति ने कोरोना मैं भी शिक्षा को क्रमबद्ध बनाए रखने के लिए काफी प्रयास किए कुछ हद तक इन प्रयासों में मनुष्य सफल हुआ और कुछ हद तक इसका नकारात्मक प्रभाव ही पड़ा कुल मिलाकर कोरोना महामारी ने शिक्षा जगत को भी अछूता नहीं छोड़ा सभी क्षेत्रों की तरह शैक्षिक क्षेत्र में भी उतल- पुथल मची हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Deepawali.co.in/list-pande…Google.com/amp/s/wwwa…

- https://www.hrw.org 2021/
- Philosophical and sociological basis of education page no 196 ,210 and 232. Dr. Dinesh Kumar. Editor Nidesalaya Adhayan evam prakashan Uttarakhand Open University Haldwani, Nainital. Taigor Rabindra nath, together.study.org.
- Web dunia-bharat s app for daily news.
- Wikipedia. (2022) www.wikipedia.com

अध्याय १०

कोरोना महामारी एवं शिक्षा जगत

श्रीमती नूतन दुबे
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय), भिलाई मैत्री महाविद्यालय, रिसाली, भिलाई (छ.ग.)

प्रस्तावना

कोविड–19 के नाम से जानने वाले इस वायरस ने पूरे विश्व में व्यवस्था को अस्त व्यस्त कर दिया। इसका पूरा नाम कोरोना वायरस है जो चीन से शुरू होने वाले इस वायरस ने करोड़ों लोगों की जान ले ली। शिक्षा जगत में अनेक परिस्थितियों का सामन करना पड़ा। शिक्षकों और छात्रों व पूरी शिक्षक शिक्षण व्यवस्था में बड़ी चुनौतियॉ सामने आ गई कि स्कूल कॉलेज बंद होने पर भी बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए ऑनलाइन क्लास की व्यवस्था की आने वाले व्यक्ति को अन्य व्यक्ति के संपर्क से दूर रखा जाता है और उसका ईलाज करवाया जाता है।

कोरोना वायरसः–

कोरोना वायरस एक भयंकर संक्रमण है जो कि एक–दूसरो के संपर्क में आने से फैलता है। यह वायरस साल 2019 में चीन देश से शुरू हुआ था। चीन में सवंमित पहला केस 8 नवंबर को सामने आया और चीन समेत यह संक्रमण पूरे विश्व में फैल गया। कोरोना वायरस से संबंधित तथा वर्ष 2019 में इसकी उत्पत्ति होने के कारण इस वायरस को संक्षिप्त नाम कोविड–19 रखा गया। पहले इसे चीनी वायरस का भी नाम दिया गया। लेकिन WHO के अनुसार इसका नाम कोविड–19 रखा गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वायरस का नाम किसी भी देश के नाम से नहीं रखा जाना चाहिए।

खांसना, छीकना, सर्दी, बुखार, गंध व स्वाद का आभास न होना कोविड–19 के लक्षणों में से है यदि व्यक्ति को सांस लेने में भी परेशानी है तो वह कोरोना की जॉच करवाना आवश्यक है। यदि जांच में पॉजिटिव आने पर उसे किया जाता है। ताकि उसके संपर्क में अन्य व्यक्ति न आये। और अन्य व्यक्ति पर संपर्क से वायरस न फैले।

कोरोना वायरस और शिक्षा जगत

कोविड–19 की महामारी ने शैक्षिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्तर को अत्यंत प्रभावित किया है। कोविड–19 के प्रभाव के कारण सरकार के द्वारा

समय–समय पर स्थिति को देखते हुए लॉकडाउन किया गया जिससे स्कूल, कॉलेज को भी पूर्णता बंद किया गया और ऑनलाइन क्लास की व्यवस्था की गई और छात्रों को शिक्षा प्रदान किया गया। ऑनलाइन क्लास में भी बहुत शिक्षक और छात्रों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा नेटवर्क की समस्या और जिसके पास एंडरॉयड फोन नहीं है वे छात्र कैसे ऑनलाइन क्लास कर सकते है और कोरोना महामारी की वजह से आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण एंडरॉइड फोन बच्चों के दिला पाना भी एक समस्या है जिस बच्चों के पास एंडरॉइड फोन था पर गॉव में रहने वाले बच्चों को नेटवर्क समस्या के कारण बच्चे ऑनलाइन क्लास में जुड़ नहीं पाते थे। शिक्षा व्यवस्था के सामने शिक्षकों के लिए ऑनलाइन क्लास होना बड़ी चुनौती थी पर शिक्षकों के द्वारा बच्चों को शिक्षा देने के लिए बहुत ही लगन के साथ जितने हो सके बच्चों को ऑनलाइन क्लास को जोड़कर बच्चो को उचित शिक्षा दी गई। और सरकार के दिशा–निर्देश के अनुसार परीक्षाओं को भी ऑनलाइन किया गया।

कोविड–19 के कारण विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं को निरस्त किया गया। इस महामारी के कारण प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्रों को विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ा न कोई वैंकेसी आई और जो वैकेंसी आई थी उसका भी परीक्षाओं को निरस्त किया गया। ऐसे में बेरोजगार व्यक्ति बेरोजगार ही रह गया। इस कोरोना महामारी ने पूरी शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया है। नए सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को भी आगे मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। भविष्य में शिक्षा प्रणाली को पुनः उचित स्तर पर लाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने पड़ेगे। कोविड–19 के कारण उत्पन्न यह स्थिति विद्यार्थियों के मनोबल को तथा पढ़ाई हेतु उनके लगन को ठेस पहुॅचा रही है। इस समय यह आवश्यकता है कि अभिभावक अपने बच्चों के घर पर पढ़ाई करने के लिए प्रेरित करे ताकि शिक्षा के प्रति उनकी रूचि में कमी ना आए। साथ ही विद्यार्थी दूरसंचार के माध्यम से अपने साथियों से आपस में पढ़ाई से संबंधित चर्चा करें।

कोरोना महामारी का शिक्षण–व्यवस्था पर प्रभाव

कोरोना महामारी का शिक्षण–व्यवस्था पर गहारा प्रभाव पड़ा है। स्कूल कॉलेजों के बंद होने पर बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर साधन या पहुॅच नहीं थी। कोरोना महामारी के कारण दूरस्थ शिक्षा यानी ऑनलाईन शिक्षा के अनुसार कि सभी के पास इंटरनेट सेवा उपकरण उपलब्ध होगे जिसके मदद से विद्यार्थी ऑनलाईन पढ़ाई कर सकते है पर ऐसा नहीं है क्योंकि सभी के पास ऑनलाइन षिक्षा के लिए नेटवर्क या एंडरॉइड फोन, लैपटॉप या कम्प्यूटर उपलब्ध हो । क्योंकि महामारी के कारण आर्थिक स्थिति भी बिगड़ा हुआ था ऐसे में सुविधा उपलब्ध करवाना भी अभिभावक के लिए समस्या थी और जिसके पास साधन उपलब्ध था वे विद्यार्थी अलग अलग राज्यों, गॉवो के भी हो सकते है ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा को लेकर अगर इसी आकलन पर कि सभी छात्रों के पास इसके संसाधन होगे, तो

इसका बुरा प्रभाव लगभग सभी उच्च शिक्षा संस्थानों पर पड़ेगा क्योंकि ज्यादातर छात्र जो लॉकडाउन के बाद अपने घर लौट गए, उनके पास इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं होने के कारण ऑनलाइन क्लास की सुविधा से वंचित रह गए।

नेशनल सैंपल सर्वे के शिक्षा से जुड़े 75वें चरण के ऑकड़े बताते है कि देश में केवल 24 प्रतिशत घरों में ही इंटरनेट की सुविधा है इनमें से 42 फीसदी शहरी क्षेत्रों के केवल 15 प्रतिशत घरों में इंटरनेट की सुविधा है। हीं देश के केवल 11 प्रतिशत घरों में कम्प्यूटर है। आज स्मार्टफोन, लैपटॉप, टीवी आदि को आपस में साझाा करने के विकल्प भी आजमाए जा रहे है, लेकिन अगर एक भी छात्र ऑनलाइन शिक्षा में नहीं जुड़ पाता है तो वह शिक्षा से वंचित हो जायेग। ऑनलाइन शिक्षा के लंबी अवधि के समाधान के लिए राज्यों और केन्द्र सरकार को चाहिए कि वह सभी शिक्षण संस्थानों को अच्छी इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराएं। देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों को इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराने वाली योजना भारत नेट 2011 से चल रही है लेकिन आखिरी छोर तक इंटरनेट की सेवा न पहुँच पाने से ये योजना भी अधर में ही लटकी होती है, और इसे प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए, तब ग्रामीण समुदायों के छात्रों अच्छी नेटवर्क सुविधा से जोड़ सकेगी और छात्रों को शिक्षा प्रदान की जा सकेगी।

उच्च शिक्षा के सभी फैकल्टी सदस्यों को उपलब्धि संसाधनों से भी काम चलाना होगा ताकि वे अपने सभी छात्रों से लगातार संपर्क में रहें और छात्रों को इस कोरोना काल में पढ़ाई के लिए प्रेरित करते रहें। ये आपदा एक अवसर बन सकती है अगर हम उच्च शिक्षा देने के लिए नई परिकल्पनाओं पर काम कर सकें। शिक्षा को लेकर पारंपरिक सोच को हटाकर अध्ययन अध्यापन और समीक्षा के नए तरीकें अपनाएं हमेशा के लिए नहीं, परंतु इस कोरोना महामारी में ऐसा हो सकता है।

कोरोना वायरस के दौरान शिक्षा–प्रणाली में बदलावः–

भविष्य में शिक्षा–प्रणाली को पुनः उचित स्तर पर लानेके लिए महत्वपूर्ण कदम उटाना जरूरी है। कोविड–19 के कारण बच्चों के मनोबल तथा पढ़ाई हेतु लगन को ठेस पहुँचा रही है इस समय आवयकता है कि अभिभावक बच्चों के घर पर पढ़ने के लिए प्रेरित करें ताकि शिक्षा के प्रति उनकी रूचि रहें।

कोरोना वायरस के दौरान शिक्षा प्रणाली में जरूरी बदलाव की आवश्यकता है

बिजली की आपूर्ति

शिक्षकों और छात्रों के डिजिटल माध्यम से जुड़ना,

इंटरनेट कनेक्टिविटी बहुत जरूरी हैं,

जो छात्र कम आय वाले परिवार से है उन्हें दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम मे शामिल किया जाए।

डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्मो का पता लगाने की आवश्यकता है।

निष्कर्षः–

कोरोना महामारी के समय में शिक्षा जगत में राष्ट्रीय स्तर पर एडुकेट सुधार होना आवश्यक है जो वर्तमान भारतीय शिक्षा–प्रणाली में प्रौद्यागिकी का समावेश है। संकट के इस समय में शैक्षिक अभ्यास की आवश्यकता है। ऑनलाइन क्लास में हानि के साथ कुछ फायदे भी हुए है। क्लास अटेंड करने से लेकर एग्जाम देने तक हर काम ऑनलाइन करने से छोटे–छोटे बच्चे भी टेक्नालॉजी में आगे बढ़ने लगे है। कोरोना महामारी के चलते शिक्षा में बड़ा बदलाव आया है इस महामारी के समय सरकार के दिशा–निर्देश के अनुसार ऑनलाइन शिक्षा को शिक्षकों द्वारा लगन के साथ बच्चों को शिक्षा प्रदान किया गया। शिक्षक और छात्रों को ऑनलाइन क्लास के दौरान नेटवर्क और अनेक कठिनाईयों का सामना करके भी शिक्षा को सुचारू रूप से संचालित किया गया। शिक्षकों के द्वारा बच्चों के ऑनलाइन शिक्षा द्वारा प्रेरित भी किया गया।

संदर्भ ग्रंथ

1. राय एवं राय (2021), महामारी का शिक्षा व्यवस्था पर असर https;//www.prabhatkhabar.com
2. परवीन (2020), कोरोना महामारी और शिक्षा https;//www.amarujala.com
3. वाडिया लीना (2020), कोविड 19 के दौर में ऑनलाईन षिक्षा की जरूरत और चुनौतियॉ https;//www.orfonline.org

अध्याय ११

कोविड़-19 के दौर में ऑनलाइन शिक्षा की जरूरत और चुनौतियाँ

डॉ. संगीता कुँभारे
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) पण्डित दीनदयाल उपाध्याय, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

सारांश
विश्व में कोरोना महामारी के संकट से लड़ने और देश की आंतरिक स्थिति बनाए रखने और इसे अच्छा करने के लिए भारत ने खुद को आत्मनिर्भर भारत बनाने का फैसला किया है। कोरोना काल में आपदा को अवसर में बदलने के लिए प्रधानमंत्री ने देश वासियों से आव्हान किया है। संकट की इस घड़ी में सभी को आत्मनिर्भर बन राष्ट्र की सेवा और तरक्की में हर किसी को योगदान देने की अपील की है। देश आत्मनिर्भर होगा तभी इस संकट की घड़ी में हम राष्ट्र को तरक्की के लिये आगे खड़ा कर सकते हैं। इस संकट की घड़ी में कोरोना महामारी का शिक्षा जगत पर गंभीर वैश्विक प्रभाव पड़ा कोविड–19 के कारण शिक्षा ओर शैक्षिक प्रणालियों को प्रभावित किया है। कोरोना महामारी में वृद्धि से विश्व की सरकारों ने अस्थायी रूप से शिक्षण संस्थाओं को बंद करने का निर्णय लिया था। 30 सितम्बर 2020 तक महामारी के कारण लगभग 1.077 बिलियन विद्याथी वर्तमान में स्कूल बंद होने के कारण प्रभावित हुये है। कोविड़–19 की महामारी में लॉकडाउन का असर देश की लगभग 61.6 प्रतिशत आबादी पर पड़ा।

उद्देश्य एवं शोध

कोविड़–19 महामारी का सबसे अधिक प्रभाव शिक्षा पर पड़ा। कोविड़ के कारण स्कूलों के बंद होने से बच्चे असमान रूप से प्रभावित हुये क्योंकि महामारी के दौरान सभी बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर और साधन पहुंच नहीं पाये। लाखों छात्रों के लिए स्कूलों का बंद होना उनकी शिक्षा में अस्थायी तौर पर व्यवधान उत्पन्न हो गया था।

हमारे देश की सरकार ने निर्णय लिया की कोविड़–19 महामारी से हुए अभूतपूर्ण व्यवधान के कारण बच्चों की शिक्षा के नुकसान की भरपाई के लिए तुरन्त कदम उठाने चाहिए।

ऑनलाइन शिक्षा ही समय की मांग थी। वर्चुअल पढाई बच्चों और टीचर्स के लिए नई प्रैक्टिस बनकर उभरी आनलाइन शिक्षा को कोरोना काल में एक मजबूरी के रूप में देखा जा रहा है। हम यह कह सकते हैं कि यह समय की मांग है महामारी के दौरान शारीरिक दूरी बनाए रखने की स्थिति में आनलाइन शिक्षा ही सही एवं ठीक रही है। इसकी फिजिकल स्कूल और क्लास से कोई तुलना नहीं है। सीखने के स्तर पर आनलाइन शिक्षा स्कूली कक्षा की जगह नहीं ले सकती है।

कोरोना काल में यदि एक भी बच्चा आनलाइन शिक्षा से वंचित रह जाता है तो पढाई का ये माध्यम अन्यायपूर्ण होगा केन्द्र और राज्य सरकारों को ये प्रतिबद्धता दिखानी चाहिए कि वो आगे चलकर सभी शिक्षण संस्थानों को ब्रांडबैंड सेवा और आनलाइन शिक्षा के लिए उचित सुविधाये उपलब्ध करायेगी। 24 मार्च को कोविड़–19 की रोकथाम के लिए जब देश भर में लॉकडाउन लागू किया गया तो, उसके तुरंत बाद राज्यों की सरकारों ने स्कूली शिक्षा को आनलाइन करने का प्रावधान शुरू कर दिया इसमें एन.जी.ओ. फाण्उडेशन और निजी क्षेत्र की तकनीकी शिक्षा वाली कम्पनियों को भी भागीदार बनाया गया। इन सब ने मिलकर शिक्षा प्रदान करने के लिए संवाद के सभी उपलब्ध माध्यमों का इस्तेमाल शुरू किया। इसमें टी.वी., रेडियों प्रसारण, व्हाटसऐप और एस.एम.एस. ग्रुप और प्रिंट मीडिया का भी सहारा लिया गया कई संगठनों ने तो नए अकादमिक वर्ष के लिए किताबें भी वितरित कर दी। स्कूली शिक्षा की तुलना में देखे तो उच्च शिक्षा का क्षेत्र इस नई चुनौती से निपटने के लिए बहुत ही कम तैयार था। इस विषय पर विशेषज्ञ जैसे कि आई.आई.टी. बाम्बे के प्रोफेसर सहाना मूर्ति का ये मानना है कि आमने सामने की पढ़ाई से अचानक ऑनलाइन माध्यम में स्थानांतरित होने से शिक्षा प्रदान करने का स्वरूप विल्कुल बदल गया है। इस ऑनलाइन शिक्षा को आपातकालीन रिमोट टीचिंग कहा जा रहा है।

कोविड़–19 महामारी अपने साथ ऐसा भयावह संकट लेकर आई है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी इस महामारी ने विश्व की अर्थव्यवस्था को भी क्षत विक्षत कर दिया है किन्तु इतिहास गवाह है कि संकट कितना भी गहरा रहा हो मनुष्य ने अपने हौसले के दम पर हर संकट पर विजय पाई है। भारत सरकार की और से इस महामारी से निपटने के लिए त्वरित और निर्णायक कदम उठाए गए।

हम सब जानते है कि आपदा की स्थिति में लिए जाने वाले निर्णय कभी स्थिर नहीं होते है सुधार की स्थिति और गति के आधार पर उठाए कदमों का आकलन करके इनमें अपेक्षित बदलाव सबसे महत्वपूर्ण यह होता है कि ऐसी वर्तमान संस्थाओं और तत्रों की तत्काल पहचान की जाए जिन्हें सहायता कार्य में लगाया जाना है।

महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा

कोविड़–19 महामारी ने हर किसी के जीवन को प्रभावित किया है और मानव जीवन ने आशावादी रूख अपनाते हुए इस संकट की घड़ी में भी अवसरों की तलाश करने की कोशिश को जारी रखा है।

लगभग एक साल से बच्चों के स्कूल बंद पड़े है। और ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। आनलाइन शिक्षा के लिए कम्प्यूटर, लैपटाप या स्मार्ट फोन की उपलब्धता जरूरी है।

हमें ऐसी योजनाओं की जरूरत है जो बच्चों तक शिक्षा के सभी जरूरी संसाधन उपलब्ध करा पाए। सभी बच्चों तक एक समान और गुणवतापूर्ण शिक्षा पहुंचाने के लिए एक संस्थागत व्यवस्था की जरूरत है ताकि शिक्षा में आने वाली बाधाओं को संबोधित करते हुए उन पर समयानुसार उचित कदम उठाया जा सके।

नई शिक्षा नीति 2020 में सरकार द्वारा विश्वास जताया जा रहा है कि आने वाले वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेगे। उम्मीद करते है कि शिक्षा को नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए सभी जरूरी मूलभूत संसाधनों की पहुंच को सुनिश्चत किया जाएगा।

ऑनलाइन एजूकेशन और इमरजेंसी ऑनलाइन रिमोट एजूकेशन में बहुत फर्क है। ऑनलाइन शिक्षा अच्छी तरह से अनुसंधान के बाद अभ्यास में लाई जा रही है। बहुत से देशों में शिक्षा का ये माध्यम कई दशकों से इस्तेमाल किया जा रहा है ताकि पाठ्यक्रम को ऑनलाइन उपलब्ध कराया जा सके। इसके मुकाबले भारत के उच्च शिक्षण संस्थाओं में इस ऑनलाइन उपलब्धता काफी कम है। अब अगर यूनिवर्सिटी और कॉलेज आने वाले सेमेस्टर से ऑनलाइन क्लास शुरू करते है तो उन्हें इस ऑनलाइन एजुकेशन और नियमित ऑनलाइन पढ़ाई के अंतर को ध्यान में रखकर अपनी तैयारी करनी होगी क्योंकि अगर देश मे कोविड–19 के मरीजों की तादाद बढ़ती रही तो उच्च शिक्षण संस्थाओं को भी स्कूलों की तरह नियमित पढ़ाई शुरू करनी होगी।

कोविड–19 की महामारी फैलने से पहले देश के लगभग 40 हजार उच्च शिक्षा संस्थानों में से अधिकतर के पास ऑनलाइन पाठ्यक्रम शुरू करने की अनुमति नहीं थी। इसीलिए जब केन्द्र और राज्य सरकारों ने इन संस्थानों को ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से अपने छात्रों को पढ़ाई कराने का आमंत्रण दिया, तो ये संस्थान इसके लिए तैयार नहीं थे।

देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों को इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराने वाली योजना भारत नेट 2011 से चल रही है लेकिन आखिरी छोर तक इंटरनेट की सेवा ने पहुंच पाने से ये योजना भी अधर में ही लटकी है जब भी ये योजना पूरी तरह कार्यान्वित होती है और इसे प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए तब ये ग्रामीण समुदायों और छात्रों को अच्छी ब्रॉडबैंड सेवा से जोड़ सकेगी।

भारत सरकार द्वारा जारी नई शिक्षा नीति–2020 का एक महत्वपूर्ण भाग हो गया है सरकार इस दिशां में नई शिक्षा नीति के माध्यम से केई महत्वपूर्ण बदलाव के साथ–साथ तकनीकि विकास को गति प्रदान करेगी जिससे देश के कोने–काने के विद्यार्थियों को लाभ पहुंचेगा।

ऑनलाइन शिक्षा को अपनाने में भारत के उच्च शिक्षण संस्थान (HEI)

भारत का उच्च शिक्षा का सेक्टर, ऑनलाइन शिक्षा के पाठयक्रम को अपनाने में बहुत सुस्त रहा हैं, इसलिए अचानक से ऑनलाइन पढ़ाई की जरूरत सामने खड़ी हुई, तो ये सेक्टर पूरी तरह से इसके लिए तैयार नहीं दिख रहा है, 30 जनवरी 2020 तक देश के केवल सात उच्च शिक्षण संस्थान ऐसे थे जिन्होंने यूजीसी (UGC) की 2018 गाइडलाइन्स के अनुसार ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध कराने की अनुमति ली हुई थी, कोविड–19 की महामारी फैलने से पहले देश के लगभग 40 हजार उच्च शिक्षा संस्थानों में से अधिकतर के पास ऑनलाइन पाठ्यक्रम शुरू करने की अनुमति नहीं थी, इसीलिए, जब केन्द्र और राज्य सरकारों ने इन संस्थानों को ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से अपने छात्रों को पढ़ाई कराने का आमंत्रण दिया, तो ये संस्थान इसके लिए तैयार नहीं थे, ये तो मई महीने के मध्य में जाकर वित्त मंत्री ने एलान किया था कि देश की नेशनल इंस्टीट्यूशन रैंकिंग फ्रेमवर्क (NIRF) के तहत टॉप के 100 शिक्षण संस्थानों को स्वतः ही ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम करने की अनुमति मिल जाएगी, लेकिन, सरकार के इस कदम से छात्रों के एक छोटे से वर्ग को ही लाभ होगा,

कोविड–19 की महामारी फैलने से पहले देश के लगभग 40 हजार उच्च शिक्षा संस्थानों में से अधिकतर के पास ऑनलाइन पाठयक्रम शुरू करने की अनुमति नहीं थी, इसीलिए, जब केंद्र और राज्य सरकारों ने इन संस्थानों को ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से अपने छात्रों को पढ़ाई कराने का आमंत्रण दिया, तो ये संस्थान इसके लिए तैयार नहीं थे।

लॉकडाउन लगने के बस दो दिन बाद ही, यूजीसी ने सरकार के ICT यानी सूचना और प्रौद्योगिकी तकनीक पर आधारित संसाधनों के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में पहल की एक लिस्ट जारी की थी, यूजीसी का कहना था कि इसके माध्यम से छात्र, लॉकडाउन के दौरान मुफ्त में पढ़ाई जारी रख सकते हैं, इसमें स्वयं (SWAYAM) ओर नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी जैसे विकल्पों का जिक्र किया गया था, हाल ही में छात्रों को सेकेंड डिग्री की शुरूवात की अनुमति भी दे दी गई हैं, जिसे वो अपने नियमित डिग्री कोर्स के साथ साथ ऑनलाइन या ओपन ओर दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं, हालांकि, ये शानदार प्रयत्न हैं, जिनसे छात्रों को कोविड–19 की महामारी के बाद भी बहुत लाभ होगा, लेकिन ऑनलाइन उच्च शिक्षा की बात करें तो अभी ये बहुत देर से और कुछ ही छात्रों के लाभों के लिए उठाए गए कदम हैं।

ऑनलाइन शिक्षा की ओर बढ़ने की अधूरी तैयारी

और अधिक ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध कराने की राह में जो प्रमुख चुनौतियां हैं, उनमें से एक ये हैं कि पढ़ाने वाले अधिकतर फैकल्टी के सदस्यों को इसके लिए प्रशिक्षित नहीं किया गया हैं, और इसीलिए वो ऑनलाइन कक्षाएं चलाने के लिए

तैयार नहीं हैं, पूरी तरह से ऑनलाइन कोर्स की योजना बनाने और इसकी तैयारी के लिए छह से नौ महिने लग सकते हैं, इन्हें कोविड–19 महामारी के दौरान कुछ हफ्तों में ही तैयार नहीं किया जा सकता, ऑनलाइन शिक्षा को अपनाने की पहल करने वाले संस्थानों और फैकल्टी के सदस्यों को अपने सहकर्मियों को इसे अपनाने में काफी मदद करने की जरूरत होगी फिर चाहे वो अपने ही संस्थान हों या शिक्षण समुदाय के अन्य सदस्य हों ओआरएफ (ORF) द्वारा इस विषय में आयोजित वेबिनार में मानव संसाधन विकास मंत्रालय में नई शिक्षा नीति की ओएसडी (OSD) डॉक्टर शकीला शम्सू ने इस बात पर काफी जोर दिया था, आमतोर पर फैकल्टी के सदस्य, अपने कोर्स के दूसरे या तीसरे सत्र में जाकर ऑनलाइन शिक्षा देने को लेकर सहज हो पाते हैं, ऐसे में उन्हें इसकी शुरूआत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए उन्हें तकनीक क्षेत्र से अनुभवी शिक्षक सहायकों के माध्यम से मदद दी जानी चाहिए, अभी तक भारत ने इस विकल्प को नहीं अपनाया हैं, जबकि विदेशों के विश्वविद्यालयों में टीचिंग असिस्टेंट (TAS) का उपयोग व्यापक स्तर पर ही रहा हैं, ये शिक्षण सहयोगी, छात्रों के लिए चैट रूम और सहकर्मियों से सीखने के सत्र भी आयोजित करते हैं, जो शिक्षा प्राप्त करने में बहुत लाभप्रद होते हैं।

अभी भी ऑनलाइन शिक्षा को बहुत से फैकल्टी सदस्य सामने की तालीम के मुकाबले मानते हैं, इसमें कोई दो राय नहीं कि कैम्पस को पूरी तरह ऑनलाइन से स्थानांतरित कर पाना संभव नहीं हैं, खासतौर से अगर किसी को दोनों में से एक को चुनने का विकल्प दिया जाए तो, अगर ऑनलाइन कोर्स को निर्देश के उच्च माध्यमों जैसे कि ऑडियो–विडियों क्लिप के आधार पर तैयार किया जाए, तो उससे ऑनलाइन शिक्षा को बहुत उपयोगी बनाया जा सकता हैं, इससे नियमित यूनिवर्सिटी शिक्षा को काफी मदद मिलेगी, ये बात कोर्सेरा, एडेक्स और अन्य ऑनलाइन पाठयक्रमों से साबित की है, नए सत्र की शुरुआत में देरी से उच्च शिक्षण संस्थानों और फैकल्टी को ये अवसर मिला हैं कि वो उच्च गुणवत्ता के ऑनलाइन कोर्स तैयार कर लें।

हाल ही में आईआईटी बॉम्बे ने ऑनलाइन शिक्षा के खुद से बढ़ावा देने वाले कोर्स लॉन्च किए हैं, जिनसे कॉलेज के शिक्षक लाभ उठा सकते हैं, ऐसे और अधिक संसाधन तैयार करने आवश्यक हैं, और इन्हें ऑनलाइन शिक्षा के विस्तार के लिए अधिक से अधिक इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

जैसा कि आईआईटी बैंगलोर के प्राफेसर वी श्रीधर ने ओआरएफ वेबिनार में कहा था, ऑनलाइन कोर्स के विस्तार के पीछे एक आर्थिक तर्क भी हैं, ऑनलाइन शिक्षा के तमाम प्लेटफॉर्म की कामयाबी इसकी मिसाल हैं, ऑनलाइन कोर्स बहुत कम खर्चीले होते हैं, और इन प्लेटफॉर्म पर बहुत से कॉलेज और यूनिवर्सिटी से ज्यादा छात्र पढ़ाई करते हैं, भारत के लिए अच्छा ये होगा कि वो इस महामारी से मिले अवसर का लाभ उठाकर ऑनलाइन शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाए, ताकि देश के शिक्षण संस्थान इस आपदा द्वारा दिए गए लंबी अवधि के अवसर को पहचानकर

उसका लाभ उठाएं, हाल ही में आईआईटी बॉम्बे ने ऑनलाइन शिक्षा के खुद से बढ़ावा देने वाले कोर्स लॉन्च किए हैं, जिनसे कॉलेज के शिक्षक लाभ उठा सकते हैं, ऐसे और अधिक संसाधन तैयार करने आवश्यक हैं, और इन्हें ऑनलाइन शिक्षा के विस्तार के लिए अधिक से अधिक इस्तेमाल किया जाना चाहिए, खासतौर से भारतीय भाषाओं में।

उपलब्धता की चुनौतियां

महामारी के दौरान दूरस्थ शिक्षा यानी ऑनलाइन एजुकेशन को लेकर सारी परिचर्चाएं इस बुनियाद पर आधारित हैं कि सभी छात्रों के पास इंटरनेट सेवा हैं, और सभी के पास ऑनलाइन पढ़ाई के लिए उपकरण यानी लैपटॉप या कंप्यूटर मौजूद हैं, जिसकी मदद से वो ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते हैं, पर दुर्भाग्य की बात ये हैं कि ये बात स्कूल के स्तर पर भी गलत हैं और उच्च शिक्षा के स्तर पर भी स्कूलों में जहां स्थानीय समुदायों के ही छात्र आमतौर पर पढ़ाई करते हैं, वहीं, उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले छात्र दूर दराज से भी आते हैं, ये अलग अलग राज्यों के छात्र भी हो सकते हैं और ग्रामीण इलाकों के रहने वाले भी हो सकते हैं, ऐसे में, ऑनलाइन शिक्षा को लेकर अगर इसी आकलन पर भी सभी छात्रों के पास इसके संसाधन होंगे, तो इसका बुरा प्रभाव लगभग सभी उच्च शिक्षा संस्थानों पर पड़ेगा, क्योंकि ज्यादातर छात्र, जो लॉकडाउन के बाद अपने घर लौट गए, उनके पास इंटरनेट की पर्याप्त सुविधा नहीं थी, नेशनल सैंपल सर्वे के शिक्षा से जुड़े 75 वें चरण के आंकड़े बताते हैं कि देश में केवल 24 प्रतिशत घरों में ही इंटरनेट की सुविधा हैं, इनमें से 42 फीसदी शहरी क्षेत्रों में हैं तो ग्रामीण क्षेत्रों के केवल 15 प्रतिशत घरों में इंटरनेट की सुविधा हैं, वहीं देश के केवल 11 प्रतिशत घरों में कम्प्यूटर हैं, 23 प्रतिशत शहरी घरों में कम्प्यूटर हैं, तो गांवों में केवल 4.4 प्रतिशत घरों में कम्प्यूटर है।, इसमें स्मार्टफोन को शामिल नहीं किया गया हैं आईएएमएआई (IAMAI) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत में इस समय 50 करोड़ इंटरनेट यूजर हैं, इनमें से 43.3 करोड़ यूजर 12 साल की आयु से ज्यादा के हैं, और 65 प्रतिशत पुरूष हैं, ग्रामीण और शहरी, पुरूषों और महिलाओं के बीच के इस डिजिटल अंतर को अन्य बड़े विश्वविद्यालयों के सर्वे भी सही बताते हैं, जैसे कि हैदराबाद यूनिवर्सिटी के एक सर्वे के अनुसार केवल 37 प्रतिशत छात्रों ने कहा कि वो ऑनलाइन कक्षाएं ले सकते हैं, वही 90 प्रतिशत छात्रों ने क्लास में लेक्चर लेने को तरजीह देने की बात कही, यहां तक कि देश के बड़े तकनीकी संस्थानों यानी की आईआईटी के दस प्रतिशत या इससे भी अधिक छात्रों ने कहा कि वो स्टडी मैटीरियल को डाउनलोड नहीं कर सकते हैं, या वो ऑनलाइन क्लास नहीं ले सकते हैं, छात्रों ने इसकी वजह कभी तो कनेक्टिविटी और कभी अपर्याप्त डेटा प्लान बताई।

देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों को इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराने वाली योजना भारत नेट 2011 से चल रही है, लेकिन आखिरी छोर तक इंटरनेट की सेवा न पहुंच पाने से योजना भी अधर में ही लटकी है, जब भी ये योजना पूरी तरह

कार्यान्वित होती है, और इसे प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए, तब ये ग्रामीण समुदायों और छात्रों को अच्छी ब्रॉडबैंक सेवा से जोड़ सकेगी।

रैकिंग एजेंसी क्वाक्वारेली सायमंड्स (QS) के एक ताजा सर्वे को उनके क्षेत्रीय निदेशक डॉक्टर अश्विन फर्नांडिस ने ORF के वेबिनार में प्रस्तुत किया था, इस सर्वे में दिखाया गया था कि इसमें शामिल 7500 से अधिक छात्रों में से 72.6 प्रतिशत, इंटरनेट के इस्तेमाल के लिए मोबाइल फोन हॉट स्टॉप का इस्तेमाल करते हैं, यूनेस्को इंटरनेट सुविधा के इस माध्यम को खराब तकनीक का कहता है, केवल 15.87 प्रतिशत छात्रों के पास ब्रॉडबैंड की सुविधा थी, मगर इन छात्रों ने बताया कि उनके ब्रॉडबैंक में भी कनेक्टिविटी की समस्याएं आती थीं, कभी बिजली नहीं रहती थी और कभी सिग्नल नहीं होता था, और जो छात्र मोबाइल हॉट स्पॉट का इस्तेमाल इंटरनेट के लिए कर रहे थे, उनमें से लगभग 97 प्रतिशत को खराब कनेक्टिविटी या सिग्नल न मिलने की चुनौतियां झेलनी पड़ रही थीं, अब अगर हम इन आंकड़ों को इस बात से जोड़ कर देखें कि केवल 30 प्रतिशत भारतीय आबादी के पास ही स्मार्टफोन है, तो आपको पता चलेगा कि देश की कुल आबादी का बेहद छोटा सा हिस्सा स्मार्टफोन इस्तेमाल करता है, सबसे अच्छी पहुंच वाली तकनीक यानी टीवी चैनल का इस्तेमाल शिक्षा के लिए करना भी एक समाधान नहीं हैं, क्योंकि देश के केवल 67 प्रतिशत घरों में ही टीवी है।

आज स्मार्टफोन, लैपटॉप, टीवी वगैरह को आपस में साझा करने के विकल्प भी आजमाए जा रहे हैं, लेकिन, अगर एक छात्र भी ऑनलाइन शिक्षा के दायरे से बाहर रह जाता है, तो ये उसके साथ नाइंसाफी होगी, ऑनलाइन शिक्षा के लंबी अवधि के समाधान के लिए राज्यों और केन्द्र की सरकारों को चाहिए कि वो सभी शिक्षण संस्थाओं को अच्छी ब्रॉडबैंड सेवा और ऑनलाइन पढ़ाई के लिए लैपटॉप और कंम्पयूटर उलब्ध कराए देश की 2.5 लाख ग्राम पंचायतों को इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराने वाली योजना भारत नेट 2011 से चल रही है, लेकिन, आखिरी छोर तक इंटरनेट की सेवा न पहुंच पाने से ये योजना भी अधर में लटकी है, जब भी ये योजना पूरी तरह कार्यान्वित होती है, और इसे प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए, तब ये ग्रामीण समुदायों और छात्रों को अच्छी ब्रॉडबैंक सेवा से जोड़ सकेगी, तब इसका इस्तेमाल न सिर्फ शिक्षा के लिए हो सकेगा, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं, कृषि और रोजगार के अन्य माध्यमों में भी ये लोगों की मदद कर सकेगी।

तब तक उच्च शिक्षा के सभी फैकल्टी सदस्यों को उपलब्ध संसाधनों से भी काम चलाना होगा, ताकि वो अपने सभी छात्रों से लगातार संपर्क में रहें और अपनी चतुराई से इन छात्रों को इस कोरोना काल में पढ़ाई के लिए प्रेरित करते रहें, ये आपदा एक अवसर बन सकती है, अगर हम उच्च शिक्षा देने के लिए नई परिकल्पनाओं पर काम कर सकें, शिक्षा को लेकर पारंपरिक सोच को परे हटाकर अध्ययन, अध्यापन और समीक्षा के नए तरीके अपनाएं, हमेशा के लिए नहीं, तो कम से कम इस अवधि में तो ऐसा हो ही सकती है।

निष्कर्ष

इस लेख में वर्तमान शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह डिजिटल लर्निंग की तरफ स्थानांतरित करने में कोविड़–19 महामारी की भूमिका व इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है। कोविड़–19 महामारी ने बच्चों के दैनिक जीवन को बांधित कर दिया है। इस महामारी के कारण सभी शिक्षण संस्थानों और परीक्षाओं को स्थगित करना पड़ा है तथा इसके कारण बहुत से बच्चे शिक्षा तंत्र से बाहर हो गए हैं। बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो यह सुनिश्चित करने के लिये स्कूलों द्वारा पढ़ाई को ऑनलाइन मोड़ पर स्थानांतरित कर दिया गया।

वर्तमान में जब इस महामारी से पठन–पाठन की प्रक्रिया को ऑनलाइन मोड़ में ले जाने के लिये विवश किया है। ऐसे में शिक्षा क्षेत्र को एक अभूतपूर्व चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। जहां कई छात्र अपना अधिकांश समय मोबाइल या कम्प्यूटर स्क्रीन के सामने बिताते है। वही कई अन्य छात्र इंटरनेट या स्मार्टफोन जैसे उपकरणों की अनुपलब्धता या इससे जुड़ी अन्य चुनौतियों के कारण पढ़ाई में पिछड रहे है। हांलाकि वर्ष 2017–18 के राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण के आकड़ों के अनुसार देश के मात्र 15 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध थी।

संदर्भ ग्रंथ

1. दैनिक समाचार पत्र
2. https:/wws or fonline.org>Research
3. https://www patrika.com.>opinion
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 : मानव संसाधन विकास मंत्रालय : भारत सरकार

अध्याय १२

कोरोना महामारी राजनीतिक चुनौतियाँ और भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम

डॉ. सविता यादव

सहायक प्रध्यापक {राजनीति विज्ञान}, शासकीय महाविद्यालय सोयतकलॉ ज़िला आगर मालवा मप्र, 4,चितावद रोड साजन नगर कैलाश दाल मिल के पास इन्दौर

लोकतांत्रिक व्यवस्था की नैतिक श्रेष्ठता लोकहित सुनिश्चित करने में सत्ता की जवाबदेही पर आधारित है। वहीं लोकतांत्रिक वैधता चुनावी प्रक्रिया से संबद्ध है, जो लोगों द्वारा अपनी इच्छा की अभिव्यक्ति को संभव बनाती है। एक गतिशील लोकतंत्र के इन आधारभूत अनिवार्य तत्वों को महामारी के इस दौर में कसौटी पर कसा जा रहा है। अकाट्य मेडिकल साक्ष्य और अतीत के अनुभव बिना किसी संदेह के यही स्थापित करते हैं कि चुनावी प्रक्रिया में उमड़ी भीड़ कोविड सुपर स्प्रेडर साबित हुई।

वैज्ञानिक साक्ष्य यही दर्शाते हैं कि वायरस के प्रभावित करने की क्षमता केवल उसकी प्रकृति या भयावहता पर ही नहीं, बल्कि वायरस और मानव समाज की अंत:क्रिया पर भी निर्भर करती है। कतिपय अध्ययन इसकी पुष्टि करते हैं कि मात्र आठ प्रतिशत लोगों ने ही कोविड की दूसरी लहर के दौरान 60 से 80 प्रतिशत लोगों को संक्रमित किया था। उसकी तुलना में ओमिक्रोन और भी संक्रामक माना जा रहा है कि वह चार से आठ हफ्तों के दौरान चरम पर पहुंचकर महामारी को बड़े पैमाने पर बढ़ा देगा। कुछ रपट बता रही हैं कि संक्रमण दर को दर्शाने वाली आर वैल्यू दूसरी लहर के चरम को भी पार कर गई है। देश के तमाम जिलों में संक्रमण दर पहले ही 10 प्रतिशत से ऊपर जा चुकी है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री चेता चुके हैं कि तीसरी लहर के दौरान संक्रमण के मामले पूर्व में अपने चरम के तीन से चार गुना बढ़ सकते हैं। ये एक राष्ट्रव्यापी स्वास्थ्य आपदा के स्पष्ट संकेत हैं। ऐसे मुश्किल वक्त में हमें कड़े विकल्प भी अपनाने होंगे।

समयबद्ध चुनाव राजनीतिक लोकतंत्र का एक अहम अवयव है। वहीं नागरिकों का स्वास्थ्य एवं जीवन की सुरक्षा और भी अनिवार्य तत्व है। वर्तमान परिदृश्य में इनमें टकराव होता प्रतीत हो रहा है। ऐसा इसलिए, क्योंकि व्यावहारिक हकीकत यही है कि चुनावों के दौरान कोविड अनुशासन के अनुपालन से ही वायरस का संक्रमण रोक पाना संभव नहीं होगा। कड़े फैसले कभी आसान नहीं होते, परंतु प्राय: ऐसे निर्णय आवश्यक होते हैं। तर्क दिया जाता है कि चुनावों को टालने से लोकतांत्रिक प्रक्रिया को झटका लगता है। हालांकि हमने यह भी देखा कि जुलाई 2020 में कोविड के कारण 31 देशों में विभिन्न स्तर पर चुनाव अस्थायी रूप से टाल दिए गए।

भारत के मामले में यही दलील दी गई कि चुनाव टालना चुनाव आयोग के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। यह संविधान संशोधन से ही किया जा सकता है। उसके लिए व्यापक राजनीतिक सहमति आवश्यक होती है, जो कि दुर्लभ है। इससे राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ति में संवैधानिक लचीलेपन का सवाल उठता है कि अप्रत्याशित स्थितियों में किस प्रकार प्रतिक्रिया दी जाए। वैसे आपातकालीन राष्ट्रीय चिंताओं से निपटने के लिए समय-समय पर संविधान संशोधन का सहारा लिया गया है। ऐसे में संविधान में 'भयावह राष्ट्रीय मेडिकल आपातकाल' के आलोक में संशोधन कर राज्य विधानसभाओं के कार्यकाल में अस्थायी विस्तार की शक्ति संसद या चुनाव आयोग को दी जाए।

राजनीतिक नैतिकता यही मांग करती है कि हम अनुभव से सीखें और राजनीतिक लाभ को लेकर गलत विकल्पों और महत्वाकांक्षा से विलग रहें। कुछ राज्यों ने कोरोना से निपटने के लिए स्थानीय प्रतिबंधों के अलावा नाइटकर्फ़्यू और वीकेंड कर्फ़्यू जैसे विकल्प अपनाए हैं, जो स्पष्ट रूप से वर्तमान स्थिति में विधानसभा चुनावों के आयोजन से बिल्कुल असंगत हैं। एक ओर लाकडाउन और दूसरी ओर चुनावी गतिविधियों की अनुमति एक प्रकार का प्रहसन ही है, जो हमारे नेताओं की मंशा पर सवाल खड़े करता है।

असाधारण परिस्थितियों और लाखों नागरिकों की सेहत पर मंडराते हुए खतरे को देखते हुए लोगों के मन में सवाल उठ सकता है कि क्या सुप्रीम कोर्ट इस पर स्वत: संज्ञान लेगा? अदालत ने अतीत में इससे भी कम विकट स्थितियों में राष्ट्रीय मूड को देखते हुए चुनावों के स्थगन को लेकर अपना हस्तक्षेप किया है। जरा विचार कीजिए कि लोगों की सेहत और जीवन की रक्षा के लिए चुनावों को कुछ समय के लिए टालना लोगों की भलाई के लिए कोई भारी कीमत है या इससे हमारा लोकतंत्र खतरे में पड़ जाएगा।

इसके उलट विरूपित चुनावी प्रक्रिया एक विश्वसनीय लोकतंत्र के रूप में हमारी साख पर सवाल खड़े करेगी। मतदाता इसके पात्र हैं कि वे ऐसे परिवेश में मतदान करें जिसमें उन्हें किसी बीमारी के चंगुल में फंसने का कोई डर न रहे। वर्तमान परिदृश्य में जो स्थितियां हैं वे सरकार-चुनाव आयोग द्वारा भयमुक्त स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव की पूर्व निर्धारित गारंटी सुनिश्चित नहीं कर सकतीं। इसके लिए सक्षम चुनावी प्रबंधन से लेकर आवश्यक मेडिकल प्रोटोकाल का पालन अपरिहार्य होगा। चूंकि चुनावी प्रक्रिया के जोर पकड़ने में अब चंद दिन ही शेष रह गए हैं तो आवश्यक स्वास्थ्य प्रोटोकाल को लागू करने के किसी उद्देश्यपूर्ण तंत्र का अभाव स्पष्ट दिखता है।

साध्य और साधन के बीच संतुलन साधना हमारे लोकतांत्रिक संस्थानों के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। लोगों को यह जानने का अधिकार है कि चुनाव आयोग और सुप्रीम कोर्ट नागरिकों के स्वास्थ्य और जीवन के मूल अधिकार और भयमुक्त एवं स्वतंत्र-निष्पक्ष चुनाव में कैसे तालमेल बिठाएंगे? वहीं नागरिकों की संरक्षक के रूप में राष्ट्रीय सरकार जीवन के अधिकार जैसे प्रमुख संवैधानिक मूल्य से क्यों विमुख हो रही है? यह चुनौतीपूर्ण समय 'सार्वजनिक जीवन और राजनीतिक व्यवहार के अलग ढांचे' की मांग करता है तो मानवीय स्वास्थ्य को मूल लोकतांत्रिक मूल्य के रूप में देखते हुए चुनावों के समय को लेकर मंथन किया जा सकता है।

इस समय की विकराल चुनौती के मद्देनजर यह हमारा दायित्व है कि हम व्यापक संवैधानिक लक्ष्यों विशेषकर जीवन के मूल अधिकार के संदर्भ में राष्ट्रीय आकांक्षा पर विचार करें। एक राष्ट्र के रूप में इस स्थिति में अंतर्निहित मुश्किलों से पार पाने की हमारी क्षमताओं को लेकर इसमें राजनीतिक नेतृत्व की परीक्षा के साथ-साथ एक तार्किक लोकतंत्र की हमारी सीमाएं भी परिभाषित होंगी।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय कोविड महामारी और भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कोविड-19 को महामारी घोषित किया।11 सितम्बर 2020 तक दुनिया भर में 215 देश और प्रान्त इस महामारी से प्रभावित हुए हैं। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, दुनिया भर में 9 लाख 5 हज़ार से अधिक मौतों के साथ 2 करोड़ 79 लाख से अधिक पुष्ट मामले हैं। कोरोना के मामलों में मृत्यु दर 3.2 प्रतिशत है।

भारत में 11 सितम्बर 2020 तक कुल 45 लाख 62 हज़ार 414 मामलों की पुष्टि की गई और 76,271 लोगों की मौत हुई तथा मृत्यु दर 1.67 प्रतिशत है। अब तक 35 लाख 42 हज़ार 663 (77.65 प्रतिशत) मरीज़ स्वस्थ हो चुके हैं। संक्रमण के सबसे ज्यादा मामले और मौतें मुख्य रूप से महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, बिहार, तेलंगाना, ओडिशा, असम, केरल और गुजरात में हुई हैं। इन सभी राज्यों में एक लाख से अधिक मामले सामने आए हैं। कोविड-19 के प्रबंधन में सरकार और पूरे सामाजिक सहयोग के हमारे मिले-जुले प्रयासों से, भारत संक्रमण के मामलों और इससे होने वाली मौतों की संख्या सीमित करने में सक्षम रहा है। भारत में प्रति 10 लाख की आबादी पर 3 हज़ार 328 मामले सामने आये, वहीं प्रति 10 लाख की आबादी पर 55 मौते हुई हैं, जो कि दुनिया में समान रूप से प्रभावित देशों की तुलना में सबसे न्यूनतम में से एक है।

एक बार जब कोई व्यक्ति किसी संक्रमण के संपर्क में आता है, तो बीमारी 1 से 14 दिनों के बीच कभी भी विकसित हो सकती है। कोविड के मुख्य लक्षण बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई हैं। हमारे देश में लगभग 92 प्रतिशत मामलों में हल्के संक्रमण होने की सूचना है। वहीं मात्र केवल 5.8 प्रतिशत रोगियों को ऑक्सीजन थैरेपी की ज़रूरत होती है, जबकि 1.7 प्रतिशत मामलों में यह बीमारी काफी गंभीर हो सकती है जिन्हें गहन देखभाल की आवश्यकता पड़ती है।

. भारत में इस प्रकोप की बढ़ती हुई तीव्रता ने समय रहते बचाव, सक्रियता, श्रेणीबद्ध, पूर्ण सरकार, समाज आधारित दृष्टिकोण के लिए आह्वान किया और संक्रमण को रोकने, जीवन को बचाने एवं महामारी के प्रभाव को कम करने के लिए एक व्यापक रणनीति बनायी।**. भारत सरकार ने उच्चतम स्तर की राजनीतिक प्रतिबद्धता के साथ कोविड-19 को चुनौती दी है।** राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन, सरकार द्वारा लिया गया एक साहसिक निर्णय था, जिसकी शुरुआत माननीय प्रधानमंत्री के आह्वान पर विशाल जनसमूह द्वारा स्वयं लगाए गए जनता कर्फ्यू के माध्यम से हुई थी।

भारत में कोविड-19 प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर 29 मार्च 2020 को 11 अधिकार प्राप्त समूहों का गठन किया है। (i) चिकित्सा आपातकालीन योजना, (ii) अस्पतालों की उपलब्धता, आइसोलेशन (अलगाव) और क्वारंटीन (संगरोध सुविधा), बीमारी से संबंधित मुद्दों की निगरानी और परीक्षण, (iii) आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करना, (iv) मानव संसाधन और

क्षमता निर्माण में वृद्धि, (v) आपूर्ति श्रृंखला और रसद प्रबंधन, (vi) निजी क्षेत्र के साथ समन्वय, (vii) आर्थिक और कल्याणकारी उपाय, (viii) सूचना, संचार और सार्वजनिक जागरूकता, (ix) प्रौद्योगिकी और डेटा प्रबंधन, (x) लोक शिकायत और (xi) लॉकडाउन से संबंधित रणनीतिक मुद्दे। हाल ही में 10 सितंबर को इन समूहों को जरूरत और उभरते परिदृश्य के आधार पर पुनर्गठित किया गया

17 जनवरी 2020 को पहला यात्रा परामर्श जारी किया गया

लॉकडाउन से पहले भारत सरकार ने चीन के वुहान से और डायमंड प्रिंसेस क्रूज़ शिप द्वारा जापान, ईरान, इटली और मलेशिया से भारतीय नागरिकों को निकाला था। 11 सितंबर, 2020 तक वंदे भारत मिशन के तहत, कुल 12 लाख 69 हज़ार 172 यात्रियों को भारत वापस लाया गया है।

इसके अलावा, गहन चिकित्सा पर्यवेक्षण के तहत गंभीर मामलों के प्रबंधन के लिए रेमेडीसविर, कॉन्सवेसेंट प्लाज्मा और टोसीलिज़ुमाब का उपयोग भी चिकित्सीय जांच के लिए किया जा रहा है।

कोविड और गैर-कोविड दोनों स्वास्थ्य मुद्दों के लिए गुणवत्ता उपचार की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए, दूर दराज के क्षेत्रों में, टेलीमेडिसिन के उपयोग को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया गया है। ई-संजीवनी जैसे वेब-आधारित व्यापक टेलीमेडिसिन समाधान का उपयोग 23 राज्यों में किया जा रहा है ताकि ग्रामीण क्षेत्रों और पृथक (आइसोलेटेड) समुदायों में भी विशेष स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को जन-जन तक पहुंचाया जा सके।

दवाओं को फिर से तैयार करने के तेरह नैदानिक परीक्षण और आधुनिक चिकित्सा दृष्टिकोण का उपयोग करके पारंपरिक ज्ञान का दोहन, कोविड-19 रोगियों के लिए चिकित्सीय विकल्पों के एक पोर्टफोलियो का निर्माण कर रहे हैं। अश्वगंधा का एक रोग निरोधी परीक्षण और गुडुची, पिप्पली और यष्टिमधु के तीन परीक्षण जारी हैं और जड़ी बूटी आधारित आयुष दवा (आयुष -64) मध्यम बीमार कोविड-19 रोगियों को देने की योजना बनाई गई है

कोविड-19 बायोरिपोज़िटरीज़ की स्थापना भी की गई है, जिन्होंने 40,000 से अधिक नमूने एकत्र किए हैं, जो शोधकर्ताओं और चिकित्सा उद्योग को निदान, चिकित्सा और टीका विकसित करने के लिए उपलब्ध कराये गए हैं।

राज्यों से अनुरोध किया गया है कि वे अपनी तैयारियों, विशेष रूप से व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण-पीपीई के स्टॉक का आकलन करें और उसकी खरीद करें। केंद्र सरकार ने 11 सितम्बर 2020 तक राज्यों को 1 करोड़ 39 लाख पीपीई किट और 3 करोड़ 43 लाख एन-95 मास्क की आपूर्ति कर चुका है।

र्मास्यूटिकल्स विभाग ने हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन दवा का उत्पादन कई गुना बढ़ा दिया है। 11 सितम्बर 2020 तक स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को 10 करोड़ 84 लाख हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन टैबलेट उपलब्ध कराएं हैं। भारत ने इसे 140 से अधिक देशों को निर्यात भी किया है।

ऐसे कई उदाहरण हैं, जब स्वास्थ्य सेवाकर्मियों को अपने कर्तव्यों के निर्वहन के दौरान उत्पीड़न, हिंसा, धमकी और जीवन के लिए खतरे का सामना करना पड़ा। इसे दूर करने और उनके प्रयासों का

समर्थन करने के लिए, भारत सरकार ने 22 अप्रैल 2020 को महामारी रोग (संशोधन) अध्यादेश, 2020 को लागू किया।

29 लाख 15 हज़ार लोगों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पंजीकरण कराया है। इसमें 5 हज़ार 699 डॉक्टर, 86 हज़ार 18 आयुष प्रोफेशनल, 4 हज़ार 102 नर्स, 9 सौ 63 एलाइड हेल्थ प्रोफेशनल, 5 हज़ार 881 अग्रिम मोर्चे के कार्यकर्ता, 2 लाख 70 हज़ार 736 स्वयंसेवक और 25 लाख 42 हज़ार 892 अन्य प्रतिभागी शामिल हैं। आईजीओटी- दीक्षा मंच पर लगभग 18 लाख 96 हज़ार पाठ्यक्रम पूर्ण किए गए हैं। चिकित्सा और गैर-चिकित्सा कर्मियों के लिए प्रशिक्षण संसाधन भी स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध कराए गए हैं।

शहरी, अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में संक्रमण के व्यापक प्रसार के कारण अब हम यात्रा संबंधी मामलों की देख-रेख से आगे बढ़कर समूहों और बड़ी संख्या में हुए संक्रमण की निगरानी की ओर बढ़ रहे हैं। इसके लिए बड़े पैमाने पर रुग्णता और मृत्यु दर को रोकने के लिए लोगों की भागीदारी के साथ-साथ सरकार के ठोस प्रयास की आवश्यकता होगी। हमें पूर्ववर्ती रूप से महत्वपूर्ण प्रजनन मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, टीके से बचाव योग्य रोगों, गैर-संचारी रोगों, तपेदिक, वेक्टर जनित रोगों जैसे काला अजार और मलेरिया के प्रबंधन में प्राप्त सफलता को भी बनाए रखना है। इसलिए गैर-कोविड आवश्यक सेवाओं के प्रबंधन पर भी काफ़ी ज़ोर है।

लोगों के मार्गदर्शन के लिए प्रारंभिक दिनों में एक समर्पित कॉल सेंटर और हेल्पलाइन 1075 शुरू किया गया था, जिसका उपयोग नागरिकों द्वारा बहुत प्रभावी ढंग से और नियमित रूप से किया जा रहा है। इस हेल्पलाइन पर अब तक कुल 41.4 लाख कॉल प्राप्त किए जा चुके हैं।

जैव प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, सीएसआईआर और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग ने शैक्षणिक, अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं, उद्योग, स्टार्टअप और गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से कोविड-19 के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी समाधानों की पूरी श्रृंखला का प्रभावी प्रबंधन किया है। इन समाधानों में वायरस के व्यवहार, संचरण और प्रभाव, महामारी का गणितीय प्रतिरूपण और वैश्विक स्तर के वेंटिलेटर, डायग्नोस्टिक किट, वैक्सीन, चिकित्सा, वायरस रोधी कोटिंग्स, कीटाणुनाशक, पीपीई, मास्क, मोबाइल परीक्षण बूथ जैसे बुनियादी वैज्ञानिक अध्ययन और अस्पतालों, कृत्रिम बुद्धि आधारित उपकरण, और सूचना का जन-जन तक प्रसार शामिल हैं।

कोविड से बचने के लिए अपने संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में जागरूकता पैदा करने के लिए आप सभी का समर्थन महत्वपूर्ण है। मास्क लगाना और चेहरा ढंकना, बार-बार हाथ धोना, श्वसन शिष्टाचार, और सामाजिक टीके के रूप में 2 गज़ की दूरी जैसे सामान्य सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों का जिम्मेदार तरीके से अभ्यास करने से कोरोना वायरस को नियंत्रित करने और ख़त्म करने में मदद मिलेगी।

सन्दर्भ

1 https://pib.gov> pressreleasePage

2. m.jagran,com

अध्याय १३

कोविड-19 और पर्यावरण

डॉ. अर्चना सेन
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र), शासकीय महाविद्यालय, पृथ्वीपुर निवाड़ी, (म.प्र.)

सार
वर्तमान में पूरे विश्व में कोरोना वायरस के खतरे का हड़कंप मचा हुआ है। 2019 के अंत में चीन के बुहान शहर में पहचाने गये कोविड–19 कोरोना वायरस एक संक्रामक रोग को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा एक महामारी घोषित किया गया है। कोरोना वायरस के कारण विश्व के सभी देशों को इसके प्रभाव और इसे फैलने से रोकने के लिए लॉकडाउन की घोषणा की गई थी, जिसमें सभी देशों की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति को प्रभावित करने के साथ–साथ पर्यावरण को भी प्रभावित किया है। कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन पर्यावरण के लिए वरदान साबित हुआ है, जिसके कारण बढ़े स्तर पर जल, थल और वायु प्रदूषण में गिरावट देखी गई। इस अध्ययन में कोरोना वायरस के कारण पर्यावरण की गुणवत्ता पर होने वाले प्रभाव पर चर्चा की गई।

की बर्ड– कोविड–19, वायु प्रदूषण, पर्यावरण।

प्रस्तावना

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है परि+आवरण जिसका अर्थ परि और आवरण घेरा अर्थात् हमें चारों ओर से घेरने वाला पर्यावरण ही है। यह संसार पंच तत्वों से मिलकर बना है पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश और यही तत्व प्राणी के जीवन के आधार है यदि यह स्वस्थ रहेंगे तो व्यक्ति के जीवन का अस्तित्व भी बना रहेगा, क्योंकि मनुष्य और प्रकृति एक–दूसरे के अभिन्न अंग है मानव का संबंध पर्यावरण से प्राचीन परम्पराओं, लोक जीवन और कलाओं ने समृद्ध किया है। इस संदर्भ में देखा जाए तो भारतीय हिन्दू जीवन–शैली में प्रकृति संरक्षण संबंधी दिनचर्या शामिल थी, जिसके उदाहरण हमें वेद, उपनिशद और पुराण में, मिलते है। ये ग्रन्थ हमें प्रकृति का मूल्य सिखाते है।[1] परन्तु आज के मानव ने तकनीकि एवं विज्ञान कौशल में इतनी उन्नति कर ली है कि वह अपनी आवश्यकताओं के अनुसार पर्यावरण से छेड़छाड़ करने लगा है। बढ़ती हुई जनसंख्या, बढ़ती लालसाऐं, बढ़ती

आवश्यताऐं एवं आधुनिक जीवन–शैली तथा बढ़ते भौतिकवादी दृष्टिकोण आदि के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण ढंग से अंधाधुंध विदोहन किया जाने लगा जिसका परिणाम सर्वविदित है। प्रकृति में होने वाले अवांछनीय परिवर्तन पर्यावरण प्रदूषण के अभिशाप का परिणाम ही है कि पर्यावरण का मूल रूप अब नष्टप्राय है इसीलिए आज विभिन्न रोगों का शिकार संचेतन और संवेदनशील मानव हो रहा है। नये–नये तरीकों से जितने ज्यादा रोगों का इलाज किया जाता है उतने ही अलग–अलग रूप में अधिकाधिक रोग फैलते जा रहे है जिसका मुख्य कारण पर्यावरण से व्यापक छेड़छाड़ है।

वहीं अब कोरोना वायरस का प्रकोप सारे विश्व में हाहाकार मचा रहा है। दिसम्बर 2019 में चीन से निमोनिया के मामलों से सामने आये थे महामारी को भी वुहान में समुद्री भोजन और लाइव पशु बाजार के साथ जोड़ा गया। जब से यह बीमारी आस–पास के अन्य मनुष्यों में फैल गई है जो अब विश्व स्तर पर लाखों लोगों को संक्रमित कर चुकी है अनंत काल से इंसान जानवरों को मार कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता आ रहा है जिसके कारण तो कई प्रजातियाँ तो विलुप्त भी हो गई। मगर बार–बार कोरोना वायरस जैसी लाइलाज महामारी का लौटना, लगता है मानों प्रकृति इंसान के अति उपयोग का बदला ले रही है। महामारी को ऐसे बीमारी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कि सभ्यताऐं उजाड़ने की और लाखों लोगों की जान लेने की क्षमता रखती है। अधिकतर महामारी जेनेटिक होती है जो जानवरों से इंसानों में फैलती है और इसकी सबसे बड़ी वजह है इंसानों और जानवरों की विभिन्न प्रजातियों के बीच सम्पर्क का बढ़ना है।

प्रकृति हमें कोरोना वायरस महामारी और जलवायु संकट के जरिए एक संदेश भेज रही है कई प्रमुख वैज्ञानिकों का कहना है कि कोविड–19 का प्रकोप एक स्पष्ट चेतावनी है जो यह बताता है कि वन्यजीवों में घातक बीमारियाँ मौजूद है और मनुष्य आग से खेलने का काम कर रहा है हार्वड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ के डायरेक्टर हाउस बर्नस्टीन ने कहा – 'ये लोगों की गलतफहमी है कि स्वास्थ्य का पर्यावरण से कुछ लेना देना नहीं है जबकि हमारा स्वास्थ्य पूरी तरह से जलवायु, प्रकृति और अन्य जीवों पर निर्भर करता है। 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम अपनी एक रिपोर्ट में इस बात की पुष्टि भी कर चुका है कि मनुष्यों में हर चार महीने में एक नई संक्रामक बीमारी सामने आती है इसके बावजूद इंसान यह भूलता जा रहा है कि जैव–विविधता को चोट पहुँचाना कितना खतरनाक हो सकता है।

विश्व पर्यावरण दिवस प्रतिवर्ष 5 जून को मनाया जाता है। इसकी घोषणा सर्वप्रथम स्टॉकहॉम अन्तर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन 1972 में की गयी इसी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) का गठन किया गया जिसका उद्देश्य विकासशील देशों को पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक तकनीकि एवं पूंजी देना था लेकिन इन 40–50 वर्गों में पूरे विश्वभर में हमने हो हल्ला ज्यादा मचाया, सम्मेलनों में प्रस्ताव ज्यादा पास किये, संधियों पर हस्ताक्षर ज्यादा हुए, किन्तु पर्यावरण संरक्षण का काम उस गति से नहीं किया जिस गति से हमने उसका अवक्रमण किया आज

यह स्वीकार करना गलत नहीं होगा कि प्रतिवर्श विश्वभर में इस दिवस को मनाते–मनाते पूरी दुनियॉ में पर्यावरण सुधारने के बजाय बिगड़ता ही चला गया।

प्रकृति ईश्वर का वरदान है और मनुष्य ने इसके साथ बहुत खिलवाड़ किया है। गंगा–यमुना आदि पवित्र नदियों को गंदे नाले में बदल दिया है। इंसान ने जलीय जीवों, जानवरों और पक्षियों के रहने का अधिकार छीन लिया है परन्तु प्रकृति बता रही है कि मैं ही प्रत्यक्ष हूँ और मैं ही प्रमाण हूँ क्योंकि लॉकडाउन के समय मनुष्य घरों में बंद रहने के लिए मजबूर थे और पक्षी खुले वातावरण में चहचहा रहे थे कई जानवर सड़कों पर घूमते नजर आ रहे थे इन सबके बीच प्रकृति ने एक बार फिर अपना रास्ता खोज लिया है मनुष्य ने किस हद तक दूसरे जीवों की दुनियाँ पर कब्जा जमा लिया था।

कोविड–19 ने पूरी दुनियाँ में कई विकट चुनौतियाँ पैदा की है कोरोना वायरस के कारण विश्व के कई देशों में लॉकडाउन था पूरी दुनिया थम सी गई थी उद्योग धंधे, सिनेमा, शॉपिंग मॉल्स, स्कूल–कॉलेज बंद है सड़कों पर गाड़ियॉ और लोंगों का यात्रा करना बंद था राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय हवाई सेवा, रेल यातायात सभी ठप्प थे देशभर में बंदी की घोषणा के बाद हर कोई अपने घरों तक सीमित हो चुका था, जिसका असर अब पर्यावरण पर देखने को मिल रहा है। इसके कारण कार्बन डाईऑक्साइड या ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में भारी कमी आई है। सेंटर फॉर इंटरनेशनल क्लाइमेट रिसर्च के अनुसार कोरोना वायरस महामारी के कारण विश्व कार्बन डाईऑक्साइड उज्सर्जन में 0.3 से लेकर 1.2 फीसदी की कमी आएगी। यूरोप में Co_2 का उत्सर्जन 24 फीसदी तक कम हो जाएगा इसकी वजह इटली, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, स्पेन आदि देशों में लॉकडाउन के कारण आर्थिक गतिविधियाँ बंद है। चीन में महामारी के फैलने के कारण Co_2 के उत्सर्जन में 25 फीसदी तक भी कमीं होगी और बिजली की मांग में भी 9 फीसदी की कमीं आएगी।

यूरोपीय अंतरिक्ष एजेन्सी (ई.एस.ए) की एक रिपोर्ट के अनुसार मुम्बई और दिल्ली में पिछले साल की इसी अवधि की तुलना में Co_2 की लगभग 40 से 50 प्रतिशत की महत्वपूर्ण कमी देखी गई है। नासा के मार्शल स्पेस फ्लाइट सेंटर के एक विश्वविद्यालय के अंतरिक्ष अनुसंधान संघ (यू.एस.आर.ए.) के मनोवैज्ञानिक पवन गुप्ता ने कहा ''हमें पता था कि लॉकडाउन के दौरान हम कई स्थानों पर वायुमण्डलीय संरचना में परिवर्तन देखेंगे। लेकिन मैंने इस साल के समय में भारत–गंगा के मैदान में एरोसोल के मूल्यों को इतना कम नहीं देखा।'' एरोसोल छोटे हवाई कण होते है जो दृश्यता को कम करते है और मनुष्यों में फेफड़े और ह्दय को नुकसान पहुँचा सकते है।

लॉकडाउन के कारण गंगा और यमुना जैसी तमाम नदियाँ और झील व अन्य जल स्त्रोत की गुणवत्ता में काफी सुधार देखा गया। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट में भी गंगा का जल 50 प्रतिशत और यमुना नदी का जल 30 प्रतिशत तक साफ होने की बात कही गई है।

सच कहा जाए तो प्रकृति ने लॉकडाउन के द्वारा सारे विश्व को एक सकारात्मक संदेश देने का प्रयत्न किया है यदि इस संदेश को समझेंगे तो पायेंगे कि विश्व के अधिकांश शहरों की हवा स्वच्छ हुई है हर समय धुएँ से काला रहने वाला महानगरों का आसमान नीला दिखाई देने लगा है और आकाश में तारे चमकने लगे है कई दशकों के बाद जालंधर से हिमालय की बर्फीली चोटियों के मनोरम दृष्य दिखाई दिये और महानगरों में वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण में भारी गिरावट आई है। नदियों के स्वच्छ जल और कछुओं का समुद्र किनारे पर लोटना देखकर सभी कोरोना को धन्यवाद कर रहे थे 'थैक्स टू कोरोना' कह रहे थे परन्तु कोरोना के प्रकोप से खुद को बचाने में भी मनुष्य लगा हुआ था सभी लोगों को कोरोना से बचने के लिए मास्क अनिवार्य किया गया है तथा डॉक्टर पी.पी.ई. किट का दस्तानों का इकोफ्रेंडली होना आवश्यक है तथा इनमें केमिकल्स का कितना उपयोग किया गया है कि इनको डिस्पोज करने पर यह पर्यावरण को नुकसान न पहुँचायें। ऐसा ही कुछ पी.पी.ई किट के साथ भी होता है पी.पी.ई. किट का उपयोग एक बार करने पर उसे जला दिया जाता है उसका दोबारा उपयोग नही किया जा सकता और न ही पुर्नचक्रण। पी.पी.ई. किट वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए प्लास्टिक की बनाई जाती है। इसलिए इसे खुले में फेंकने पर पर्यावरण पर खतरा भी बढ़ जाता है। सार्वजनिक स्थानों या खुले में तथा विभिन्न जल स्त्रोंतों के पास फेंका गया ये कचड़ा बारिश के बाद जलाशयों से होता हुआ समुद्र तक जाएगा पर्यावरणविदों का मानना है कि इससे न केवल समुद्री जीवन को बल्कि वन्यजीवों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। अतः हमें पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ही इन वस्तुओं का उपयोग करें, कपड़े के बने हुए मास्क ही पहने तथा इन्हें सार्वजनिक स्थानों पर न फेंके। हमें इस प्रकार की महामारी से लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए लेकिन यह तैयारी पर्यावरण को ध्यान में रखकर होना चाहिए जिसके लिए हमें अपनी जीवन शैली को भी पर्यावरण के अनुकूल बनाने की आवश्यकता है।

इतिहास में ऐसे कई उदाहण देखे गये हैं कि जब–जब ऐसी भयानक महामारियाँ आई है तब–तब पर्यावरण ने सकारात्मक करवट ली है कोरोना संक्रमण काल में प्राकृतिक सौन्दर्य के अद्भुत नजारे एवं स्वच्छ वातावरण भले ही क्षणिक हो परन्तु हमें इससे सीख लेनी चाहिए क्योंकि जब संक्रमण का खतरा पूरी तरह से खत्म हो जाएगा तब भी पर्यावरण की यही स्थिति बरकरार रहेगी इसके लिए मनुश्य को अपनी जीवन शैली एवं विकास प्रक्रिया के तौर–तरीकों को बदलने की आवश्यता है। कोरोना महामारी से उत्पन्न अल्पकालिक पर्यावरणीय सुधार से हमें बहुत अधिक खुश होने की जरूरत नहीं है बल्कि मनुष्य और प्रकृति के अंर्तसंबंधों को नये सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है। पर्यावरणविद और प्रकृति से प्रेम करने वालों का कहना है कि कोरोना वायरस के कारण किये गये लॉकडाउन से जिस तरह से सारी दुनियाँ में सकारात्मक प्रभाव देखें गए हैं उसके आधार पर हर साल अलग–अलग शहरों में एक ठोस रणनीति बनाकर कम से कम 15 दिन का लॉकडाउन करके प्रकृ ति के संतुलन को बनाये रखने में मदद की जा सकती है। पर्यावरण के सबसे बड़े

संरक्षक लोग ही हो सकते है अतः प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण के प्रति अपनी भूमिका समझनी होगी पर्यावरण के प्रति लोगों में जन–जागृति पैदा कर पर्यावरण के खतरे को टाला जा सकता है इसलिए क्रांतिकारी जागरण आवश्यक है हम अपने आने वाले कल के लिए पर्यावरण से खिलवाड़ करना बंद करे और अपने आप को बदले, तभी हमारा पर्यावरण स्वच्छ रहेगा और हमें भी स्वस्थ एवं सुखी रखेगा।

संदर्भ–ग्रन्थ सूची

1. प्रेमलता तिवारी, पर्यावरण और स्वास्थ्य, दिव्यशोध समीक्षा, 2014
2. Malvika Ranjan, "Living in Harmon with nature" Massage of Ancient history spirituals, Texas's
3. राष्ट्रीय सहारा, 03 अप्रेल 2020
4. चाणक्य अगस्त, 2011
5. इंटरनेट

अध्याय १४

कोरोना का शिक्षा जगत पर प्रभाव

घनश्याम दत्त शर्मा
सहायक आचार्य, रसायन शास्त्र, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, थानागाजी, अलवर, राजस्थान

परिचय

आज हम जिस वातावरण में जीवन की कल्पना कर रहे है, क्या वह आज वास्तव में ही बहुत गंभीरता से सोचने वाला बिन्दु नहीं है? आज चारों ओर जिस किसी से भी चर्चा की जाती है, वह केवल कोरोना से भयभीत हुआ प्रतित होता है। क्या आज हमें इस विषय पर गहनता से नहीं सोचना चाहिए ? क्या आज मानवता के मूल्य इतने गौंण हो चुके है कि हम किसी को ऐसी महामारी के समय में उचित सलाह देना भी गुना समझने लगे हैं ? क्यों आज एक बुद्धिजीवी वर्ग समाज में एक सकारात्मक सोच एवं नई ऊर्जा की तरंग का संचार करना भूल रहा है ? आज भी हमारे समाज की आँखें टकटकी लगायें हुए इस वर्ग को ही निहारती है। आज भी शिक्षक समुदाय की जिम्मेंदारी है कि कोरोना जैसी परिस्थितियों में समाज के प्रत्येक वर्ग तक सकारात्मक सोच एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को पहुचाए। कोरोना एवं इसके प्रभावों का अध्ययन विस्तार से अद्योलिखित बिन्दुओं के आधार पर किया गया है।

कोरोना परिचय

1. **वायरस क्या है**—वायरस अकोशिकीय अतिसूक्ष्म जीव है जो केवल जीवित कोशिका में ही अपना गुणन करता है। वायरस न्यूक्लिक अम्ल एवं प्रोटिन से मिलकर बना होता है। वायरस केवल जीवित शरीर में ही जीवित रह पाता है जीवित शरीर से बाहर केवल ये मृत अवस्था में ही पाये जाते है। वायरस सामान्यतः इतना सूक्ष्म होता है कि इसे नग्न आँखों से देख पाना सम्भव नहीं है। इसका आकार मानव शरीर के बाल से भी 900 गुना छोटा होता है। इसीलिए इस प्रकार के वायरस को देखने हेतु एक उच्च स्तर के सूक्ष्मदर्शी की आवश्यकता होती है।
2. **इसकी उत्पत्ति कहां से हुई**—कोरोना नया वायरस नहीं है यह वायरस पहले से ही ज्ञात है परन्तु इसका विश्व स्तर पर मानवता पर व्यापक प्रभाव वर्ष 2019 से दिखा है जिसके कारण इसकी विश्व स्तर पर पहचान हुई है। इतिहास की दृष्टि से इस वायरस की उत्पत्ति तो लगभग 100 वर्ष पुरानी है।

इस वायरस को 1930 में एक मुर्गी में देखा गया था। जिसके के कारण मुर्गी के श्वसन तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव दिखायी दिये। आगे चलकर इस वायरस का प्रभाव अन्य श्रेणी के कुछ जानवरों पर देखा गया। मानव जाति पर इसका प्रभाव पहली बार सन् 1960 में दिखायी दिया। इस वायरस से प्रभावित व्यक्ति को सर्दी की समस्या से झुझता हुआ देखा गया। वर्तमान में तो आप सभी इस से भलि–भाँति परिचित हो ही चुके हो कि किस प्रकार यह वायरस वर्ष 2019 में चीन (वुहान प्रान्त) से विकराल रूप लेता हुआ आज सम्पूर्ण विश्व को अपने भयावह रूप से किस तरह से आतंकित किया हुआ है।

3. **कोरोना वायरस (COVID-19) क्या है–**विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना का नाम कोविड–19 (COVID-19) रखा है,जहां 'CO' का अर्थ है कोरोना (CORONA), 'VI' का अर्थ है वायरस (VIRUS), 'D' का अर्थ है डिसिस (Disease) और '19' का अर्थ है वर्ष 2019 अर्थात् जिस वर्ष यह बिमारी पैदा हुई है। यह वायरस 2019 में चीन के वुहान शहर से समस्त विश्व में बहुत तीव्र गति से प्रसार कर गया।

4. **कोरोना नाम क्यों दिया गया–**कोरोना शब्द का लैटिन भाषा में मतलब होता है क्राउन या मुकुट। यह वायरस गोल है और इसकी सतह पर सूर्य के करॉना की तरह प्रोटीन की स्टेन्स यानी शाखाएं उगी हुई हैं जो हर दिशा में फैलती हुई महसूस होती हैं ठीक जैसी कि सूर्य की आभा की किरणें। इसी कारण इसका नाम कोरोना रखा गया है।

5. कोरोना के लक्षण

- बुखार।
- सर्दी और खासी।
- गले में खरास।
- सांस लेने में परेशानी (सबसे प्रमुख)।
- मांसपेशियों में जकड़न।
- लंबे समय तक थकान।

कोरोना का शिक्षा जगत पर प्रभाव–

कोरोना के कारण शिक्षा जगत पर बहुत ही ज्यादा प्रभाव पड़ा है। इसका अध्ययन हम अलग–अलग शिक्षा स्तरों के साथ करेंगे।

(क) उच्च शिक्षा।
(ख) माध्यमिक शिक्षा।
(ग) प्राथमिक शिक्षा।
(क) उच्च शिक्षा–

उच्च शिक्षा पर कोरोना का बहुत घातक प्रभाव देखने को मिला है। विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में कोरोना संक्रमण के कारण स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की परीक्षाओं का आयोजन नहीं हो सका तथा उनको उच्च कक्षाओं में प्रमोट किया गया। उच्च शिक्षा में केवल स्नातक अंतिम वर्ष एवं स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध के विद्यार्थियों की परीक्षाएं ही करवायी जा सकी है। स्नातक प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रक्रिया समय पर सम्पन्न नहीं होने कारण नया सत्र देर से प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार से नये सत्र में विद्यार्थियों का अध्ययन का कार्य कक्षा–कक्ष के स्थान पर ऑन लाइन शुरू किया गया। उच्च शिक्षा में ऑन लाइन शिक्षण व्यवस्था एक नया कदम था। इसको अमल मे लाने एवं विद्यार्थियों को समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण करवाने के लिए विभिन्न ऑन लाइन प्लेट फार्म के जरिए शिक्षण कार्य करवाया गया। कोरोना का उच्च शिक्षा पर प्रभाव का विस्तार से वर्णन निम्नानुसार है–

कोरोना महामारी का प्रभाव ना केवल मानव स्वास्थ्य पर पड़ा है अपितु इसका समग्र प्रभाव देखने को मिला है। इसने कुछ क्षेत्रों को प्रत्यक्ष तो कुछ को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। इस कड़ी में शिक्षा जगत भी अछुता नहीं रहा है। शिक्षा जगत को भी इसने पूर्ण रूप से अपने आघोश में समेट लिया है। यदि यहां बात कि जाये उच्च शिक्षा के बारे में तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जहां विद्यार्थियों के जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव इस मोड़ से प्रारम्भ होता है वहीं पर ऐसा अंधकार छाया की किसी दिशा में कोई प्रकाश पुंज ही नहीं दिखाई दिया।

प्रारम्भ में ऐसा प्रतित हुआ कि बहुत अल्प समयावधि में सब कुछ पुनः ठीक हो जायेगा पर नियति को तो कुछ और ही मंजूर था जो भविष्य के अंधकार में छीपा हुआ किसी को छद्म आभास भी नहीं होने देती। उच्च शिक्षा अध्ययन हेतु विद्यार्थी महाविद्यालय में गुणवता पूर्ण शिक्षा पाने की अभिलाषा के साथ तथा अपने सपनों को साकार करने के लिए दृढ़संकल्पित हो कर आता है। शिक्षा के इसी पायदान से उसके जीवन का वास्तविक मार्ग प्रशस्त होता है। यहां उसको नई दिशा मिलती है जिसके परिणाम स्वरूप वह अपने सुनहरे भविष्य का निर्माण कर पाता है लेकिन जब इस शिक्षा जगत को ही किसी विशेष परिस्थिति ने जकड़ लिया हो तो फिर बच्चों के सपनों को साकार करके उनकों मूर्त रूप देना एक कल्पना मात्र ही होगा। परन्तु इस कोरोना जैसी विषम परिस्थितियों में भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखते हुए उनके पाठ्यक्रम को समय पर पूर्ण कराने हेतु ऑन लाइन मोड को अपनाया गया। उच्च शिक्षा में समय–समय पर ऐसे तो अनेको नवाचार होते ही रहते है परन्तु विषम परिस्थितियों में ऑन लाइन प्लेटफार्म से शिक्षा को गॉव–गॉव एवं ढ़ाणी–ढ़ाणी में रहने वाले शिक्षार्थी तक पहुँचाना अपने आप में एक अनोखी मिसाल है वो भी जब लाखों शिक्षार्थी कोरोना के चलते अपने विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के परिसरों से अपनी सुरक्षा हेतु अपने–अपने घरों पर चले गये थे।

यह वह समय था जब दोनों ही समूह (शिक्षक एवं शिक्षार्थी) प्रशिक्षण के अभाव में तकनिकी–माध्यम से शिक्षण एवं अधिगम करने के लिए झूझ रहे थे। लेकिन इन विषम परिस्थितियों में भी शिक्षण को सुचारु बनाये रखना अपने आप में उच्च

शिक्षा में एक अभिनव अवधारणा थी। इस प्रकार से इस शिक्षण व्यवस्था में शिक्षक की जितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी उससे कहीं ज्यादा शिक्षार्थियों की भी जिम्मेदारी बनती थी कि वह इस ऑन लाइन प्लेटफार्म शिक्षण से अधिगम को अधिकाधिक महत्त्व दे। यह आईसीटी समर्थित शिक्षण व्यवस्था उतनी आसान नहीं है क्योंकि इसमें सहयोगी अधिगम, रचनात्मक अधिगम सीखने और कंप्यूटर–सहायक–अधिगम की गुंजाइश है। इस शिक्षण के लिए कठोर प्रयासों, सही दृष्टिकोण, अच्छे बजट और इसके सफल क्रियान्वयन के लिए उच्च प्रेरित शिक्षकों और छात्रों की आवश्यकता है।

ऑनलाइन प्लेटफार्म शिक्षण की समस्याः– इस प्रकार के शिक्षण हेतु पूर्व में तकनिकी प्रशिक्षण का अभाव होने के कारण शिक्षक को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ा।

1 अध्यापक को पूर्व में किसी भी प्रकार के ऑनलाइन शिक्षण का अनुभव नहीं होने के कारण बिना किसी पर्याप्त तैयारी के इस प्रकार के प्लेटफार्म पर शिक्षण करवाना, स्वयं को ज्वार के खिलाफ तैरना जैसा है।
2 नई विधि और तकनिकी सीखने के लिए उत्साह की कमी है।
3 विषय वस्तु की गुणवत्ता के बारे में कोई आश्वस्त नहीं।
4 तकनिकी प्रशिक्षण के अभाव के कारण शिक्षकों को कम रूचिकर लगना।
5 शिक्षार्थियों को उचित प्रतिपुष्टि का अभाव।
6 शिक्षक को यह ज्ञात न होना कि शिक्षार्थियों को किस स्तर तक अधिगम हुआ।

शिक्षार्थियों को निम्न समस्याओं का समाना करना पड़ा–

1 विद्यार्थियों के पास उच्च गुणवत्ता युक्त मोबाइल एवं लेपटॉप का उपलब्ध न होना।
2 सुदूर गॉवों एवं अनेक पहाड़ी इलाकों में जहां पर इंटरनेट कनेक्टिविटी सही से नहीं आने के कारण शिक्षार्थी के द्वारा ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से शिक्षण अधिगम सम्पन्न नहीं हो पाता है।
3 विद्यार्थियों के द्वारा ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के अलावा इंटरनेट के माध्यम से अन्य अनुपयोगी कार्यों में ऑनलाइन गतिविधियों के द्वारा अपना समय नष्ट करना।
4 इंटरनेट के माध्यम से अनुपयोगी गतिविधियों में लिप्त होने के कारण विद्यार्थियों का मानसिक संतुलन का खराब होना स्वभाविक है जो शिक्षा को विद्यार्थियों से दूर करता है।
5 अत्याधिक समय तक लेपटॉप या मोबाइल के संपर्क में होने के कारण बच्चों को धीरे–धीरे इनका आदि होना भी एक बड़ी समस्या है।
6 लम्बे समय तक ऑनलाइन अध्ययन करने से नेत्रों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

7 शिक्षक–विद्यार्थी संवाद के अभाव में शिक्षा किसी भी प्रकार से पूर्ण नहीं होती है अतः विद्यार्थियों में उस स्तर की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव होता है जो कक्षा–कक्ष अध्ययन –अधिगम में होता है।

ऑनलाइन प्लेटफार्म शिक्षण का लाभ –

1 ऑनलाइन शिक्षा का मुख्य फायदा है समय की बचत– इस प्रकार के शिक्षण में शिक्षक अपने अनुसार ऑनलाइन वीडियों बना कर विद्यार्थियों को साझा कर सकता है। इसमें समय की पाबंदी नहीं होती है।

2 यदि कोई शिक्षक ऑनलाइन मोड पर लाइव अध्ययन करवाना चाहता है तो वह किसी ऑन लाइन एप के माध्यम से अपने समय के मुताबिक दिन में कई बार शिक्षा दे सकता है।

3 टेक्नोलॉजी के प्रति जागरूक होना– शिक्षक एवं विद्यार्थी सभी अलग– अलग तरह की टेक्नोलॉजी के प्रति जागरूक हो रहे हैं। टेक्नोलॉजी का उपयोग करना सीख रहे हैं।

4 इस प्रकार की शिक्षा पद्धति का लाभ उन विद्यार्थियों को भी हो रहा जो किसी कारण वश विश्वविद्यालय या महाविद्यालय आने में असमर्थ होते हैं।

5 इस शिक्षण व्यवस्था से छात्राओं की सुरक्षा से संबंधित समस्याओं का निराकरण होता है।

6 ऑन लाइन उपलब्ध विभिन्न पोर्टलों के माध्यम से एक ही विषय वस्तु के अनेक वीडियों विभिन्न शिक्षकों द्वारा तैयार किये हुये होते हैं जिनकी मदद से विद्यार्थियों को अधिक ज्ञानार्जन मे सहायता मिलती है तथा विषय वस्तु भी अच्छे से समझ में आती है।

निष्कर्षः–

निश्चित तौर पर यह कहा जा सकता है कि कोरोना महामारी के दौरान शिक्षकों व विद्यार्थियों के बीच ऑनलाइन शिक्षा के प्रति सामंजस्य स्थापित किया है एवं उनको जोड़ कर रखा है। साथ ही टेक्नोलॉजी के माध्यम से आज हमारे देश में महामारी के चलते शिक्षा का नुकसान ना करके बच्चों तक टेक्नॉलजी के जरिए शिक्षा पहुंचाई जा रही है।

(ब)माध्यमिक शिक्षा– कोरोना काल में माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था चौपट हो गयी। सत्र 2019–2020 में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं की परीक्षा अंतिम चरण में थी परन्तु सम्पन्न नहीं हो पायी। नया सत्र प्रारम्भ होने पर वर्ष पर्यन्त विद्यालयों को कोरोना संक्रमण के कारण खोले बगेर ही पाठ्यक्रम को कम करते हुए ऑन लाइन मोड पर पूर्ण करवाया गया। सत्रांत में बोर्ड कक्षाओं हेतु विद्यालयों को कुछ समयान्तराल के लिए खोला गया। जब परीक्षा हेतु समय सारणी बनने लगी पुनः इस वायरस की द्वितीय लहर ने अपने पॉव पसारना प्रारम्भ कर दिया तथा फिर

से सत्र 2020–2021 में विद्यार्थियों की परीक्षा सम्पन्न नहीं हो सकी। शिक्षण व्यवस्था को सुचारू रखने के लिए माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षण करवाना चुनौती पूर्ण कार्य था। कक्षा–10 एवं 12 के विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था हेतु इतने परिपक्व नहीं होते हैं कि वे इस प्रकार की शिक्षण व्यवस्था से बहुत अधिक अधिगम कर सके। ऑनलाइन शिक्षण हेतु मोबाइल एवं लेपटॉप आदि की पूर्ण व्यवस्था नहीं होती है जिसके कारण शिक्षण अधिगम पूर्ण लक्ष्य को प्राप्त नहीं होता है। इसलिए इस प्रकार की शिक्षण व्यवस्था माध्यमिक स्तर पर बहुत कम कारगर होती है।

(स) प्राथमिक शिक्षा–प्राथमिक स्तर का विद्यार्थी केवल कक्षा–कक्ष शिक्षण के द्वारा ही अधिगम कर सकता है। इस स्तर पर ऑन लाइन शिक्षण व्यवस्था का प्रारूप शिक्षण–अधिगम हेतु कारगर नहीं है फिर भी इस स्तर के शिक्षार्थियों को वर्ष पर्यन्त ऑन लाइन मोड पर शिक्षा प्रदान करने का कार्य हमारे अनुभवी शिक्षकों द्वारा करवाया गया। इस स्तर का विद्यार्थी केवल मोबाइल एवं लेपटॉप आदि उपकरणों को मनोरंजन मात्र का साधन मानता है साथ ही इन उपकरणों का हानिकारक प्रभाव भी इन बालकों पर अधिक पड़ता है। इसलिए कोरोना काल में इस स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवस्था का सबसे बड़ा नुकसान हुआ है। लगभग दो सत्रों की शिक्षा का नुकसान होने के कारण विद्यार्थियों को पुनः नये सिरे से सीखने की आवश्यकता होगी। प्राथमिक कक्षाओं के ऐसे विद्यार्थी जो कक्षा–1 में ही प्रवेश लिए होंगे उनका तो शिक्षा एवं विद्यालय से सही से सम्बन्ध भी नहीं जुड़ा उससे पहले ही वे शिक्षा से बहुत दूर हो गये। ऐसे विद्यार्थियों को पुनः विद्यालय से जोड़ना एक बड़ी चुनौती होंगी।

अध्याय १५

कोरोना काल और मानव-प्रकृति में अंतर्सम्बंध: एक अध्ययन

प्रो. गुलशेर अहमद
सहा. प्राध्यापक: अर्थशास्त्र, शास. संजय गांधी स्वशासी पी.जी. महाविद्यालय,सीधी (म. प्र.)

डॉ. नियाज अहमद अन्सारी
सहा. प्राध्यापक: राजनीति विज्ञान, शासकीय आदर्श महाविद्यालय,उमरिया (म. प्र.)

सारांश–
विश्व के पर्यावरणविदों, वैज्ञानिकों और समाज सुधारकों की सर्वसम्मत राय है कि आज मानव वनो की अंधाधुंध कटाई, विभिन्न प्रदूषणों एवं जैवविविधता को समाप्त करने के दुष्परिणामस्वरूप उस घातक अवस्था में पहुँच गया है जिसमें विश्व के पर्यावरण में असंतुलन उत्पन्न हो गया है। इससे प्राणिजगत का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। पर्यावरण के क्षरण से प्रकृति की उत्पादकता एवं रौनक पर विपरीत प्रभाव को कम करने के लिए हमें व्यावहारिक उपाय करने होंगें। सरकारों के साथ–साथ आमजन को भी अपनी जीवन शैली एवं स्वार्थपरक आदतें बदलनी होंगी जिससे कि हमारा विकास चक्र और अर्थव्यवस्था रूके बिना हम अपने वनों और पर्यावरण को सुरक्षित बनाए रख सकें। इससे ही धरती पर सभी जीव–जंतुओ एवं वनस्पति का अस्तित्व अक्षुण्य रह सकेगा और पर्यटन उद्योग मजबूत होने से भारतीय अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी।

आज जरूरत है तो प्रकृति की पुकार सुनकर निष्क्रियता रूपी निद्रा त्यागने की। प्रकृति से हमें प्राकृतिक आपदाओं, जैसे–सूखा, बाढ़, अकाल, अम्लीय वर्षा, चक्रवात, अनियमित मौसम, सार्स एवं कोरोना जैसी नई–नई बीमारियों के रूप में बार–बार चेतावनियाँ भी मिल रही हैं। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा है , ***" प्रकृति में हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की विराट क्षमताएं हैं, किंतु लालच की श्रृंखलाओं की पूर्ति की नहीं।"*** हमें पैदलदूरी चलने योग्य मार्ग पर वाहन का उपयोग एवं बिजली के उपकरणों का अनावश्यक प्रयोग से बचना होगा। यथासंभव साइकिल,

वृक्षारोपण, सौर ऊर्जा का अधिकतम प्रयोग करते हुए न्यूनतम कागज, बिजली, पानी आदि के प्रयोग के चलन को बढ़ावा देकर आदर्श नागरिक होने का प्रमाण प्रस्तुत होगा, तभी हम वायुमंडल के विभिन्न प्रदूषणों के दुष्प्रभावों से अपने पर्यावरण, जंगलों और प्रकृति की सुंदरता एवं जैव विविधता को बचा सकते हैं। अतः कोरोना काल में मानव और प्रकृति के अंतर्सम्बंधों की समीक्षा पर्यावरण क्षरण के दुष्प्रभावो और पर्यावरण सुरक्षा से जनसुरक्षा के उपायों की चर्चा करना आवश्यक है।

कुन्जी शब्द– पर्यावरण, जैवविविधता, कोरोना काल, मानव–प्रकृति अंतर्सम्बंध, अहिंसा परमो धर्मः।

आज विश्वभर के पर्यावरणविदों, वैज्ञानिकों और समाज सुधारकों की सर्वसम्मत राय है कि आज मानव वनो की अंधाधुंध कटाई, विभिन्न प्रदूषणों एवं जैवविविधता को समाप्त करने के दुष्परिणामस्वरूप उस घातक अवस्था में पहुँच गया है जिसमें विश्व के पर्यावरण में असंतुलन उत्पन्न हो गया है। इससे प्राणिजगत का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। यदि मानव द्वारा इसी तरह तीव्रगति से महानगरों को बसाकर प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन, जीवश्म ईंधनों का प्रयोग, विलासितापूर्ण जीवन शैली को अपनाता रहेगा तो पर्यावरण में भी अप्रत्याशित व अकल्पनीय बदलाव हमें भोगना पड़ रहे हैं, जैसे–पृथ्वी के वायुमंडल के तापमान में वृद्धि, जैवविविधता रूपी पृथ्वी की सुन्दरता में कमी आना, विभिन्न प्रदूषणों, सूखा, मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव आदि। अतः पर्यावरण के क्षरण से प्रकृति की उत्पादकता एवं रौनक पर विपरीत प्रभाव को कम करने के लिए हमें व्यावहारिक उपाय करने होंगें। इसलिए संयुक्त राष्ट्र को लोगों में जागरूकता और जिम्मेदारी विकसित करने हेतु पर्यावरण दिवस मनाने हेतु संकल्पित होना पडा है। इससे प्रेरित होकर अधिकतर देश रचनात्मक आयोजनों के माध्यम से इस पुनीत कार्य में सक्रिय रहकर यथासंभव प्रयास जारी रखें हुए हैं। विश्वस्तर पर सदियों से वैज्ञानिक, पर्यावरणविद, समाज सुधारक, दर्शनशास्त्री आदि लगातार चिंतित एवं सक्रिय बने रहे है कि किस प्रकार मानव सभ्यता और भावी पीढ़ियो के लिए जैवविविधता को सुरक्षित बनाए जा सके। इससे हमारे पर्यटन उद्योग और विदेशी व्यापार मजबूत होने से भारतीय अर्थव्यवस्था भी सशक्त हो सकेगी।।

फ्रांसीसी समाजशास्त्री **रूसो** ने मानव समाज से ***'प्रकृति की और लौटो'*** का आव्हान करते हुए अपनी पुस्तक '***सोशल कान्ट्रेक्ट***' में लिखा है, ***" मानव प्रकृति की गोद में रहकर ही उसकी ममता की छाया और आशीर्वाद पा सकता है, उससे विद्रोह करके अलग–थलग रहकर नहीं। प्रकृति के सानिध्य में ही मानवीय जीवन शांत, सुखी, स्थिर एवं अनंतकालीन बन सकता है।*** [1] अतः हमें सरकारों के साथ–साथ आमजन को भी अपनी जीवन शैली एवं स्वार्थपरक आदतें बदलनी होंगी जिससे कि हमारा विकास चक्र रूके बिना हम अपने वनों और पर्यावरण को सुरक्षित बनाए रख सकें। इससे ही धरती पर सभी जीव–जंतुओ एवं वनस्पति का अस्तित्व अक्षुण्य रह

सकेगा। ये लक्ष्य प्राप्त करना इतना दुष्कर नही है कि मानव समाज निराश बना रहे , क्योंकि पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान चिरकाल से ही हमारी धरतीमाता अर्थात् प्रकृति में ही निहित रहे हैं।

आज जरूरत है तो प्रकृति की पुकार सुनकर निक्रियता रूपी निद्रा त्यागने की। प्रकृति से हमें प्राकृतिक आपदाओं, जैसे–सूखा, बाढ़, अकाल, अम्लीय वर्षा, चक्रवात, अनियमित मौसम, सार्स एवं कोरोना जैसी नई–नई बीमारियों के रूप में बार–बार चेतावनियाँ मिल रही हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा है, ***" प्रकृति में हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की विराट क्षमताएं हैं , किंतु लालच की श्रृंखलाओं की पूर्ति की नहीं।"*** [2]

उल्लेखनीय है कि ***स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर रिपोर्ट (2019)*** में भी को विश्व में स्वास्थ्य संबंधी सभी खतरों से होनेवाली मौतों का 5 वां सबसे बड़ा कारण वायु प्रदूषण को माना गया है। विश्व में वायु प्रदूषण से हानेवाली 25 प्रतिषत मृत्यु भारत में ही होती हैं। [3] यह भयावह करनेवाले आंकडें सिद्ध करते है कि अब हमें प्रकृति में निहित समाधानकारक उपायों पर कार्य करना होगा, तभी हमारे ***अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस (22 मई),विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) और ओजोन संरक्षण दिवस (16 सितम्बर)*** आदि के आयोजन सफल और सार्थक होगें। वन एवं जैवविविधता की सम्पन्नता के मामले में विश्व स्तर पर भारत का 12वां स्थान होने के नाते हमारी पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान अपनी वसुंधरा में समाहित समाधान की खोज करने की आवश्यकता और हमारी जिम्मेदारी भी है। अतः उत्तर कोरोना काल में मानव और प्रकृति के अंतर्सम्बंधों की समीक्षा पर्यावरण क्षरण के दुष्प्रभावों, पर्यावरण सुरक्षा से जनसुरक्षा के उपायों आदि निम्नवत बिन्दुओं में करना समीचीन होगा–

पर्यावरण क्षरण के दुष्प्रभाव :–

1. हमारे विलासितापूर्ण रहन–सहन से वायु एवं ध्वनि प्रदूषण में लगातार वृद्धि हो रही है। पर्यावरण प्रदूषण के विविधि रूपों एवं हमारी बढ़ती विलासितापूर्ण जीवन शैली से उत्पन्न समस्याओं के निदानार्थ उपायों को जानने हेतु विश्व स्तर पर प्रथम प्रयास सन् 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में मानवीय पर्यावरण पर ***स्टाकहोम सम्मेलन*** से प्रारंभ हुए हैं। यह सम्मेलन 5 से 16 जून 1972 तक चला था। इसलिए स्टाकहोम सम्मेलन को ***'शुद्ध वायु एवं स्वच्छ वातावरण के अधिकारों का मैग्नाकार्टा'*** कहा जाता है। तभी से हर साल 5 जून को ***विश्व पर्यावरण दिवस*** मनाया जा रहा है। [3]

2. तापीय बिजलीघरों एवं औद्योगीकरण में प्रयुक्त कोयला, पेट्रोलियम पदार्थों एवं आज विश्वभर में प्रतिवर्ष 4 अरब टन ईंधन की खपत विभिन्न कार्यों में हो रही है जिससे वायुमंडल में लगभग 4 प्रतिशत कार्बन डाई आक्साइड की वृद्धि भी हुई है जिसके दुष्परिणामस्वरूप पिछले दशक की तुलना में भूमंडल के सामान्य तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि मानव समाज सहन कर रहा है।

3. 'क्योटो घोषणापत्र ' के अनुसार विभिन्न देशों ने 2008 से 2012 तक ग्रीनहाउस गैसों को 1990 तक के स्तर पर लाने हेतु 5 प्रतिशत कम उत्सर्जन करने का संकल्प लिया गया था। इस दिशा में कुछ कार्य अवश्य हुआ है जो उत्साहजनक तो है, किंतु संतोषजनक नहीं। वायु प्रदूषण हेतु मुख्य रूप से ग्रीन हाउस गैसों की वृद्धि उत्तरदायी होती है। इन गैसों में सर्वप्रमुख हैं– ***कार्बन डाईऑक्साइड, मीथेन, क्लोरोफ्लोरो कार्बन एवं नाइट्रस आक्साइड। ये गैसें वायु प्रदूषण में वृद्धि करने में क्रमशः 60, 20, 14 एवं 6 प्रतिशत योगदान देती है।*** [4] पृथ्वी पर बढ़ती गर्मी , औद्योगिक इकाईयों और वाहनों का धुएं से जहां एक ओर पक्षियों और पशुओं की अकाल मौत हो रही है, वहीं दूसरी ओर पेड़–पौधों एवं जीव–जंतु की दर्जनों प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं।

4. महानगरों में सीमेंट निर्माण, उर्वरक, रंग, कागज, पेट्रो कैमीकल्स आदि की औद्योगिक इकाईयों विभिन्न धातुकर्मी उपक्रमों से सीसा, क्रोमियम, निकिल, आर्सेनिक, जस्ता एवं रेडियो एक्टिव तत्व भी प्रयुक्त होने से स्थिति बद से बदतर हो रही है जिससे साधारणजन दमा, बैचेनी, हृदयाघात, एलर्जी, त्वचा और श्वांस संबंधी बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। आम आदमी की कमाई का बड़ा हिस्सा विभिन्न स्वास्थ्य परीक्षणों एवं मंहगी दवाईओं पर खर्च हो रहा है।

5. वनों का लगातार नष्ट होना भी शुद्ध वायु ,जैव विविधता एवं स्वच्छ वातावरण में कमी आने के लिए उत्तरदायी है। महानगरों में जनसंख्या वृद्धि एवं शहरीकरण के प्रसार से आवासीय परिसरों के निर्माण हेतु आसपास के वनों की अंधाधुंध कटाई और रेत उत्खनन जारी है। जबकि हमें पेड़–पौधे से जहाँ प्रकाश संश्लेषण क्रिया द्वारा वायुमंडल की कार्बन डाइ ऑक्साइड का विघटन कर ऑक्सीजन छोड़ी जाने से कार्बन डाइ ऑक्साइड को नियंत्रित रखने में मदद मिलती है।

पर्यावरण सुरक्षा हेतु मौलिक सुझाव :–

1. अहिंसा परमो धर्मः का हमें सही रूप में आचरण करते हुए पशु–पक्षियों के अनावश्यक शिकार एवं वध करने की मानवीय क्रूरता से बचने का प्रण लेकर हमें अपनी हरी–भरी प्रकृति रूपी माता का पुनः श्रृंगार करना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए। इस प्रकार मानवीय समाज सत्मार्ग पर वापस आ सकता है और तभी हम विज्ञान का सच्चे अर्थ में दर्शन कर सकते हैं। महात्मा गांधी के प्रमुख अनुयायी एवं अमरीकी अश्वेत नेता ***जूनियर मार्टिन लूथर किंग*** का यह कथन उल्लेखनीय है, ***"आज के विनाशकारी युग में हमारे सामने दो ही रास्ते हैं–या तो हम अहिंसा को अपना लें, या फिर अपने अस्तित्व को ही मिट जाने दें।"*** [5]

2. भारत में जीवाश्म ईंधन कम प्रयोग करने हेतु ***सीएनजी*** अर्थात कम्प्रेसिव नेचुरल गैस, बायो डीजल एवं सौर बैटरी चलित वाहनों के उपयोग को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इस दिशा में प्रचलित वाहनों में सीसारहित पेट्रोल के प्रयोग को बढावा देकर भी राहत मिल सकती है। म. प्र. के बैतूल जिले के ***बांचा गांव*** के सभी ग्रामीणों ने आदर्श एवं अनुकरणीय कार्य करके उदाहरण प्रस्तुत किया है।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून 2019 को बांचा गांव देश का पहला सोलर किचन गांव घोषित किया गया है। [6]

3. महानगरों सहित छोटे शहरो में भी हमें विवाह, दीपावली एवं अन्य शुभ अवसरों पर वायु प्रदूषण को बढानेवाले हानिकारक पटाखों तथा आतिशबाजी के प्रयोग से बचने हेतु अत्यधिक संयम बरतना होगा। इससे न केवल हमारी फिजूलखर्ची में कमी आयेगी, बल्कि वायु प्रदूषण जनित स्वांस और त्वचा रोगों को कम किया जा सकेगा। बड़े संयंत्रों को महानगरों से हटाकर कम आबादी के क्षेत्रों में स्थानांतरित करके भी महानगरों के व्याप्त पर्यावरणीय समस्याओं के दुष्प्रभावों को कम करना होगा। इस हेतु जैवविविधता के संरक्षण हेतु सतत् स्वप्रेरित प्रयासों से अपनी प्रकृति रूपी माता की नारजगी को दूर किया जा सकता है।

4. जो व्यक्ति एवं देश प्रकृति विरोधी, अवैध एवं आत्मघाती गतिविधियों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भागीदार हैं, अब उन्हे अपने स्तर से ही अपना कर्त्तव्य इस प्राश्चित के साथ प्रारंभ करना होगा कि वह शेष वनों को संरक्षित रखेंगे एवं अनावश्यक वृक्षों की कटाई नहीं करेगें।

5. अब हम सब अनावश्यक बिजली, जीवाश्म ईंधन, भौतिक एवं रासायनिक वस्तुओं आदि के प्रयोग से बचने हेतु अपने परिवार, मित्रों, रिश्तेदारों और पड़ासियों को भी पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताते हुए अपना–अपना योगदान दे सके।

निष्कर्ष :–

पर्यावरण में आ रहे उक्त क्षरण से उत्पन्न्न समस्याओं का समाधान हमें अपनी वनों में समाहित बिखरी हुई समाधान रूपी उपर्युक्त संभावनाओं की विवेचना के आधार पर खोजना है। अतः हमें अपनी जीवन शैली, सोच व आदतें बदलनी होंगी जिससे हमारा जीवन निरोगी एवं सुखी बन सके। अब हमें एक अनुशासित एवं संयमित जीवन जीने की जरूरत है। मानवीय जीवन में आजादी एवं अनुशासन की महत्ता प्रतिपादित करते हुए महात्मा गांधी जी ने स्पष्ट कहा है– ***" अनुशासन केवल फौज के लिए ही नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र के लिए भी आवश्यक है, क्योंकि ये सृष्टि ही अनुशासन पर चलती है। जिस प्रकार सूर्य,चन्द्रमां,तारे,समुद्र,पशु–पक्षी, ग्रह–नक्षत्र आदि अनुशासन के पथ पर चलते हुए ही अपनी–अपनी मर्यादा पर कायम रहते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने सभी कामों में अनुशासन का पालन करना चाहिए।"*** [7] अब हमें पैदलदूरी चलने योग्य मार्ग पर वाहन का उपयोग एवं बिजली के उपकरणों का अनावश्यक प्रयोग से बचना होगा। यथासंभव साइकिल, वृक्षारोपण, सौर ऊर्जा का अधिकतम प्रयोग करते हुए न्यूनतम कागज, बिजली, पानी आदि के प्रयोग के चलन को बढ़ावा देकर आदर्श नागरिक होने का प्रमाण प्रस्तुत होगा, तभी हम वायुमंडल के विभिन्न प्रदूषणों के दुष्प्रभावों से अपने पर्यावरण, जंगलों और प्रकृति की सुंदरता एवं जैव विविधता को बचा सकते हैं। ये पंक्तियां हमारी प्रेरणास्त्रोत हो सकती हैं– ***वन से पर्यावरण और पर्यावरण से ही रहेंगे हम।*** **आओ इन्हे बचाने उठाएं अब नित्य नए कदम।।**

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इस विश्वव्यापी पर्यापरण समस्या का समाधान प्रत्येक व्यक्ति को अपना परम कर्त्तव्य मानकर खोजना होगा, तभी इससे हमें ***कोविड–19*** जैसी बीमारियों के प्रकोप से निजात मिल पायेगी। प्रकृति से हमें प्राकृतिक आपदाओं, जैसे–सूखा, बाढ़, अकाल, अम्लीय वर्षा, चक्रवात, अनियमित मौसम, नई–नई बीमारियों आदि के रूप में बार–बार चेतावनियाँ मिल रही हैं कि अभी हमारे पास ज्यादा समय नहीं है कि जानबूझकर विलम्ब किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. मेहता एवं खन्ना, राजनीति विज्ञान, 2010, एस. बी. पी. डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा, पृ.–723
2.. गाबा, ओम प्रकाश , भारतीय राजनीतिक विचारक, 2017, मयूर पेपरबैक्स प्रकाशन, नोएडा, पृ.–287
3. सम–सामयिक घटनाचक्र, वार्षिक अंक–2022 , एलन गंज, इलाहाबाद, पृ.–22
4. निबंध मंथन (अतिरिक्तांक) , 2019 , मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद , पृ.–283
5. गाबा, ओम प्रकाश , भारतीय राजनीतिक विचारक, 2017, मयूर पेपरबैक्स प्रकाशन, नोएडा , पृ.–287
6. प्रतियोगिता दर्पण, फरवरी 2022, उपकार प्रकाशन, आगरा ,पृ.–116
7. गांधी जी की सूक्तियां, हिन्द पाकेट बुक्स, 2008 , नई दिल्ली, पेज–12

अध्याय १६

कोरोना महामारी, कानून और न्यायपालिका

डॉ. महेंद्र कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक (विधि) शासकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय बीना, जिला-सागर म. प्र.

सारांश–
कोरोनावायरस नें संपूर्ण भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व को सोचने पर विवश कर दिया है कि हम 21वीं सदी में कहां खड़े हैं। महामारी के दौरान हमारी न्यायपालिका ने भी अपनी भूमिका का निर्वहन किया है भारतीय कानून जो पहले से ही स्थापित है उनके अंतर्गत भी प्रक्रियात्मक कार्यवाही की गई।विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं अन्य एजेंसियों ने भी अपनी भूमिका का निर्वहन किया है। महामारी ने अनेक व्यक्तियों को असमय ही काल कवलित कर दिया है, इसमें सामाजिक व्यवहार भी प्रभावित हुआ है।

कुन्जी शब्द *–आपदा प्रबंधन अधिनियम, कोरोना महामारी, विश्व स्वास्थ्य संगठन, भारतीय दंड संहिता, उच्चतम न्यायालय।*

प्रस्तावना–

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना महामारी को वैश्विक महामारी घोषित कर संपूर्ण विश्व को सचेत किया,जिससे अनेक देशों ने सतर्कता से जनता कर्फ्यू लाकडाउन एवं अन्य कदम उठाए इसमें जांच, स्क्रीनिंग,अफवाह,सुरक्षा निर्देश आदेश जारी कर शासन प्रशासन ने अपनी भूमिका का निर्वहन किया है।हमारे बेहाल स्वास्थ्य ढांचे और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं पर इस असमय आई महामारी ने बहुत अधिक दबाव डाला है। न्यायपालिका ने भी अपनी समय–समय पर अपने निर्णयों के माध्यम से निर्देश जारी कर अपनी भूमिका का उचित निर्वहन किया है।महामारी के नियमों और प्रक्रियाओं को नियमित पुनर्विलोकन किया जाना भी एक महत्वपूर्ण कारक रहा है।

अंतर्वस्तु –

नवम्बर 2019 को एक नई वायरस जनित बीमारी ने जन्म लिया जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 11 मई 2019 को विश्वव्यापी महामारी घोषित किया, इसका नाम कोरोना वायरस या नोवल कोविड –19 है। इस बीमारी ने सम्पूर्ण विश्व को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। इस अप्रत्याशित घटनाक्रम ने सम्पूर्ण विश्व को सोचने

पर विवश कर दिया कि हम विकसित होने के स्थान पर किस मुहाने पर आकर खड़े हो गए। विश्व में अपने अपने देशों में विधि, अध्यादेश,नियम, विनियमन अधिसूचना और उपविधियां प्रवृत करनी पड़ी। विधि में यथावश्यक संशोधन किए गए, न्यायपालिका को अपनी ओर से दिशा निर्देश जारी करने पड़े।

भारत सहित अनेक देशों में महामारी से लाखों व्यक्तित्वों की मृत्यु हो गई। वायरस इतना घातक है कि सम्पूर्ण विश्व के देशों में जनता कर्फ्यू जैसे कदम से शुरुआत कर लाकडाउन घोषित कर इस भयावहता को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया। हमारे देश ने इसके शुरुआती दौर में 25

मार्च 2020 को ही लाकडाउन घोषित किया जो चरणबद्ध तरीके से 30 मई 2020 तक रहा । समस्त प्रशासनिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक पारिवारिक एवं संसदीय गतिविधियों पर सम्पूर्णतः रोक रही।

कोविड 19 एक ऐसा जानलेवा वायरस है जो मनुष्य के श्वसन तंत्र को प्रभावित कर फेफड़ों पर हमला कर व्यक्ति की सांस को अवरुद्ध कर देता है। संक्रमित व्यक्ति के खांसने, छींकने से यह वायरस हवा में फैलता है एवं जो मनुष्य इसके सम्पर्क में आता है,वह संक्रमित हो जाता है। इसलिए मास्क लगाने एवं हाथों को बार–बार साबुन से या सैनीटाईजर से 20 सेकेण्ड तक धोना एवं सामाजिक दूरी रखना ही इसकी रोकथाम का माध्यम है। वैक्सीन ही इसका एकमात्र समाधान है, वर्तमान में कई कंपनियों की वैक्सीन बाजार में उपलब्ध है तथा भारत सहित दुनिया की अधिकतम जनसंख्या को प्रथम डोस लग चुका है इसकी अन्य दवाईयां भी अनुसंधान के चरण में होकर बाजार में आपातकाल में उपयोग हेतु उपलब्ध है।

महामारी और कानूनी प्रावधान –

कोविड 19 महामारी से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के प्रावधानों के अधीन गृह मंत्रालय के आदेश क्रमांक 40–3/2020 डी एम 1 (ए) 25/03/2020 घोषित एक विशेष कर्फ्यू के रूप में है। 18 सूत्रीय यह दिशा निर्देशों का उल्लघंन करेगा वह भारतीय दंड संहिता,1860 की धारा 188 के अधीन अभियोजित करने के अतिरिक्त आपदा प्रबंधन अधिनियम की धारा 51–60 के प्रावधानों की प्रक्रियात्मक कार्यवाही का सामना करने का दायी रहेगा।

महामारी अधिनियम,1897 इस दौर में स्वतः ही प्रवृत्त हो गया इसमें कुल 3 धाराएं हैं इसके उल्लंघन पर भी भारतीय दंड संहिता की धारा 188 की कार्रवाई ही निर्देशित है उसकी धारा 2 में यह उल्लेख है कि खतरनाक महामारी के विशेष उपाय करने और विनियमित करने की राज्य सरकार में शक्ति निहित है एवं धारा 2क में केंद्र सरकार की शक्ति निहित है धारा 4 में लोक सेवकों विधिक संरक्षण प्रदान किया गया है जो कानून के क्रियान्वयन कर्तव्यस्थ हैं।

इसी तरह भारतीय दंड संहिता,1860 की धारा 271 का उपयोग भी इसी समय हुआ जिसमें प्रावधान है जो क्वॉरेंटाइन के नियम की अवज्ञा शीर्षक से है जो इस प्रकार है कि किसी जलयान को करंतीन की स्थिति में रखे जाने या करंतीन

की स्थिति वाले जलयानो का किनारे से या अन्य जलयानो से समागम में विनियमित करने के, या ऐसे स्थानों के जहां कोई संक्रामक रोग फैल रहा है और अन्य स्थानों के बीच समागम विनियमित करने के लिए सरकार द्वारा बनाए गए और प्रख्यापित किसी नियम को जानते हुए अवज्ञा करेगा वह छह माह तक के कारावास और जुर्माने सहित या दोनों से दंडित किए जाने का प्रावधान है। मार्च 2020 के मध्य में स्वास्थ्य कर्मियों पर हमले के परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार ने महामारी संशोधन अधिनियम,2020 जारी किया। इस कानून के द्वारा भी कोविड 19 को रोकने में सहायता प्रदान की।

महामारी और न्यायपालिका –

उच्चतम न्यायालय द्वारा स्वप्रेरणा से याचिका (सिविल) क्रमांक 1/ 2020 इनरी कोंटाजियन आफ कोविड–19 वायरस इन प्रिजनर्स के मामले में कोविड–19 के फैलाव को देखते हुए देश भर में कारागार में कैद कैदियों के बीच सामाजिक दूरी बनाए रखने की आवश्यकता पर केंद्रीय एवं राज्य सरकार से उत्तर मांगा गया एवं कई दिशा–निर्देश पर अंतरिम आदेश जारी किए गए। जेलों में भीड़ को कम करने का एवं कोविड से बचाव के अनेक अंतरिम आदेश भी जारी किए गए वीडियो कांफ्रेंसिंग सुनवाई को भी प्रोत्साहित किया गया, तथा स्थगनादेशों, अंतरिम जमानतों की तिथि को भी आगे बढ़ाया गया तथा न्यायपालिका की तमाम औपचारिकताएं को पूरी किए बिना जैसे शारीरिक सुनवाई, अधिवक्ता एवं न्यायधीशों का गाऊन पहनना आदि से छूट प्रदान की गई।इस महामारी ने भारतीय न्यायपालिका के आधारभूत ढांचे को मजबूत करने का अवसर प्रदत्त किया है। अक्टूबर 2021 में गांधी जयंती के अवसर पर कानूनी जागरूकता का शुभारंभ के अवसर पर उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायामूर्ति एन वी रमना ने अपने संबोधन में कहा कि कोरोना काल में न्यायपालिका के समक्ष कठिनाइयां और चुनौतियां उत्पन्न की है। रिक्त पदों पर नियुक्ति की अनुशंसा को सरकार ने मानकर नियुक्ति की हैं। मद्रास हाई कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि कोरोना वायरस की दूसरी लहर के लिए चुनाव आयोग उत्तरदायी है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कोविड से मरीजों की मौतें एक आपराधिक कृत्य और नरसंहार से कम नहीं। उच्चतम न्यायालय ने स्वतः संज्ञान लेते हुए एक मामले पर सुनवाई करते हुए भी महामारी के दौरान आवश्यक आपूर्ति और सेवाओं का पुनर्वितरण के बारे में केन्द्र सरकार से उतर मांगा। दिल्ली उच्च न्यायालय ने अपने समक्ष फाइल याचिका जो संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत चिकित्सा बुनियादी ढांचे के उत्पादन एवं आवंटन पर टिप्पणी करते हुए राज्य सरकार को दिशा–निर्देश देकर आक्सीजन का कोटा तय करने को कहा। गुजरात उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को कोविड परीक्षण परिणामों और आक्सीजन को लेकर राज्य सरकार को कड़ी कार्यवाही की चेतावनी दी। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने कोविड की तात्कालिक स्थिति पर आपत्ति जता कर याद दिलाया कि अनुच्छेद 21

के निर्वचन में जीवन के अधिकार में जीवन के अधिकार में स्वास्थ्य का अधिकार भी सम्मिलित है।

न्यायपालिका ने अपनी भूमिका का निर्वहन कर एक बार फिर यह स्थापित किया है कि वह मानवीय अधिकारों के प्रति सजग, सतर्क एवं उदारवादी दृष्टिकोण ही अपनाती रही है। संसद एवं विधानमंडल ने इस विषम परिस्थिति में कानून और अधिसूचना के माध्यम से बोलते हुए आदेश जारी कर कोविड से निपटने का भागीरथी प्रयास किया है। न्यायपालिका और अन्य दूसरी एजेंसियों को आपसी समन्वय के साथ ऐसी महामारी से निपटने के प्रयास करना चाहिए। नागरिकों के मौलिक अधिकारों की सजग प्रहरी होने के नाते न्यायपालिका से यह आशा तो की ही जा सकती है कि वह अपने मानवीय संवेदना का ध्यान रखकर न्याय प्रदान करे।

संदर्भ–

1- https://www.amarujala.com
2- https://www.bbc.com
3- https://epaper.bhaskerhindi.com
4- https://www-livelaw.in.news
5- https://www.legalserviceindia.com
6- https://main.sci.gov.in
7. https://mha.gov.in
8. पाटिल नरेश एवं मेघावी मेंश्रामः मानवी हक 21 त्या शतकालीन प्रश्न आणि आव्हाने 2022 यूरो वर्ल्ड पब्लिकेशन, मुंबई.
9. पाण्डेय डा जयनारायणः भारत का संविधान, 2021 सेन्ट्रल ला एजेंसी, इलाहाबाद

अध्याय १७

कोविड-19 महामारी पर एक व्यापक अध्ययन: भारत में स्कूली शिक्षा पर प्रभाव

डॉ. शीला सालवी
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, पेसिफिक यूनिवर्सिटी, उदयपुर 313001, राजस्थान

सारांश

शिक्षा किसी भी राष्ट्र का निर्माण खंड है; यह बच्चे के कौशल, आदतों, ज्ञान और दिमाग का निर्माण करता है। कोई भी राष्ट्र अपनी शिक्षा प्रणाली को बंद करने का जोखिम नहीं उठा सकता है। स्वास्थ्य भी किसी भी राष्ट्र के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय है और अपने देशवासियों को स्वस्थ रखना देश की सरकार की जिम्मेदारी है। कोरोनवायरस (COVID-19) के प्रकोप ने WHO द्वारा अंतर्राष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल (PHEIC) घोषित किया है। इस पत्र में, हम भारतीय संदर्भ में कोविड -19 और स्कूली शिक्षा पर इसके प्रभाव के बारे में चर्चा कर रहे हैं और साथ ही लिंग के दृष्टिकोण से प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। यह एक अनुभवजन्य पेपर है जहां ऑनलाइन शिक्षा के संदर्भ में भारतीय स्कूलों की अवधारणा को समझने के लिए एक साहित्य समीक्षा की जाती है, शिक्षा का महत्व और COVID 19 माता-पिता, शिक्षकों और छात्रों के दृष्टिकोण से शिक्षा पर प्रभाव डालता है। इसके लिए उदयपुर के सरकारी एवं निजी क्षेत्र के विद्यालयों से कुल 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया। संरचित प्रश्नावली का उपयोग करके डेटा संग्रह किया जाता है और समूह सांख्यिकी और स्वतंत्र नमूना परीक्षण की सहायता से विश्लेषण किया जाता है। अध्ययन के परिणामों से पता चला है कि महामारी जैसी स्थितियों में ऑनलाइन कक्षाएं सबसे अच्छा व्यवहार्य समाधान हैं और उपकरण दोनों लिंग हितधारकों द्वारा समान रूप से अपनाया जाता है। हालांकि, इस संदर्भ में समाधान की आवश्यकता वाले कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रशिक्षित और कुशल शिक्षकों के रूप में पहचाना जाता है।

कीवर्ड: कोविड -19, स्कूल, शिक्षा, ऑनलाइन कक्षाएं, आभासी कक्षाएं

परिचय

शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र का विकास असंभव है। यह व्यक्ति के दिमाग के विकास के लिए एक प्रमुख तत्व के रूप में कार्य करता है। एक विकसित दिमाग ही देश के विकास के लिए कुछ नया कर

सकता है और नए विचारों और विचारों के साथ आ सकता है। हम सभी जानते हैं कि "स्वास्थ्य ही धन है।" यानी स्वास्थ्य वह सब कुछ है जो व्यक्ति चाहता है। एक स्वस्थ गरीब व्यक्ति एक अस्वस्थ शरीर वाले धनी व्यक्ति से अधिक धनी होता है।

आज पूरी दुनिया एक COVID 19 महामारी से लड़ रही है। COVID- 19 को कोरोनावायरस रोग के रूप में भी जाना जाता है, यहाँ CO का अर्थ कोरोना है, VI का अर्थ वायरस है और 19 इस संक्रमण के कारण 2019 में आया है। इसकी उत्पत्ति दिसंबर 2019 में चीन में हुई थी। पहला मामला चीन के वुहान शहर में पाया गया था और उसके बाद, यह फैल गया

चीन के प्रांत में। पलक झपकते ही, यह दुनिया के अन्य सभी हिस्सों में फैल गया। WHO ने 30 जनवरी 2020 को अचानक से अंतर्राष्ट्रीय चिंता का एक सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल (PHEIC) घोषित कर दिया और उसके बाद जब यह महामारी ज्यादातर सभी देशों में बदल गई, तो WHO ने 12 मार्च 2020 को COVID-19 को महामारी घोषित कर दिया।

सभी देशों की अधिकांश सरकारों ने COVID 19 के प्रसार को कम करने के लिए सभी स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को अस्थायी रूप से बंद करने का निर्णय लिया है। शैक्षणिक संस्थान सामाजिक दूरी बनाए नहीं रख सकते हैं। इसलिए सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखने के लिए स्कूलों और सभी शिक्षण संस्थानों को अस्थायी रूप से बंद करना अनिवार्य है।

वयस्कों की तुलना में बच्चों में COVID 19 के फैलने की दर अधिक है। भारत में निम्नलिखित लॉकडाउन नियमों के अनुसार, नर्सरी स्तर से स्नातकोत्तर स्तर तक सभी संस्थान बंद हैं, जिससे उनकी शिक्षा बुरी तरह प्रभावित होती है। यूनेस्को के अनुसार

रिपोर्ट के अनुसार, 29 देशों में 290 मिलियन से अधिक छात्र प्रभावित हैं। यूनेस्को द्वारा घोषित, लगभग 32 करोड़ छात्र (स्कूल और कॉलेज सहित) प्रभावित हो रहे हैं।

वर्तमान परिदृश्य के कारण शिक्षण ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर स्विच कर रहा है। कई बार ऑनलाइन पढ़ाई में भी कुछ रुकावटें आती हैं। इंटरनेट कनेक्शन फेल होने, घर के माहौल में गड़बड़ी जैसे कई छात्र ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं। न केवल निजी स्कूल ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म को अपना रहे हैं बल्कि सरकारी स्कूलों को भी ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म को अपनाना पड़ रहा है। कुछ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म वेबएक्स, जूम और गूगल क्लासरूम, स्काइप,

इन तकनीकी उपकरणों को अपनाने से हमारी शिक्षा भविष्य में शिक्षक-केंद्रित दृष्टिकोण से छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बढ़ेगी। ये ऑनलाइन टूल शिक्षकों और छात्रों को उनके कौशल को बढ़ाने और उनके ज्ञान को विकसित करने में मदद करेंगे। अब हम कह सकते हैं कि यह संकट न केवल हमें इस महामारी से लड़ना सिखा रहा है बल्कि हमें यह भी सिखा रहा है कि अपना भविष्य कैसे बनाया जाए। भारत सरकार ने छात्रों की मदद के लिए विभिन्न ई-पोर्टल और ऐप लॉन्च किए हैं जैसे SWAYAM, DIKSHA PORTAL E PATHSHALA, SMILE, STEM- आधारित पोर्टल और कई अन्य।

साहित्य की समीक्षा

हरपन और इटोह के अनुसार, दिसंबर 2019 की शुरुआत में वुहान शहर, हुबेई प्रांत, चीन में एक उपन्यास सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम 2 (SARS-CoV-2) के कारण 2019 (COVID-19) में कोरोनावायरस बीमारी के प्रकोप की पहचान की गई थी। , 2020 एट अल। एक पब्लिक में। अंतर्राष्ट्रीय महत्व के स्वास्थ्य आपातकाल की घोषणा विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 30 जनवरी 2020 को फैलने की घोषणा की। 49,053 प्रयोगशाला-पुष्टि हुई मौतें। और 14 फरवरी, 2020 तक 1,381 वैश्विक मौतें दर्ज की गईं ।

बीमारी के कथित जोखिम के कारण कई देशों को विभिन्न रोकथाम उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है। रोगज़नक़ और मौजूदा महामारी के बारे में जागरूकता को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए, हमने एक साहित्य समीक्षा की जनता के लिए उपलब्ध जानकारी की। इस साहित्य समीक्षा में सभी प्रेरक कारणों, रोगजनन और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया, महामारी विज्ञान, विकृति विज्ञान, देखभाल और प्रबंधन, नियंत्रण और निवारक विधियों पर चर्चा की गई है।

दुनिया भर के हर क्षेत्र में, COVID-19 महामारी का प्रभाव दिखाया गया है। इसका भारत और दुनिया भर में शिक्षा उद्योगों पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। इसने वैश्विक ताला लगा दिया है, जिसका छात्रों के जीवन पर बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लगभग। 32 करोड़ छात्र COVID-19 से प्रभावित हैं और भारत में सभी शैक्षणिक गतिविधियों को रोक दिया गया है। COVID-19 महामारी ने हमें बताया है कि संक्रमण निकट है। इसने उन चैनलों और रणनीतियों को बनाने और चुनने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया है जो शिक्षा संस्थानों के सामने नहीं देखी गई हैं। शिक्षा क्षेत्र संकट की निरंतरता के कारण एक नए समाधान के लिए संघर्ष कर रहा है और महामारी के खतरे को मिटाने के लिए डिजिटल हो गया है। (जेना, प्रावत 2020)।

COVID-19 के खिलाफ रोकथाम के कदमों के कारण स्कूलों के बंद होने से स्कूली शिक्षा, भलाई और सभी इच्छुक पार्टियों के कामकाज और देश के शैक्षिक ढांचे पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है। जबकि दूर या ऑनलाइन शिक्षा में परिवर्तन अब दुनिया भर के कई शैक्षणिक संस्थानों का एक घटक बन गया है, परिवर्तन के अनुसार शैक्षणिक संस्थानों, शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों की निरंतरता में चर की एक श्रृंखला में योगदान करने की उम्मीद है। उनकी भावनात्मक स्थिति। Hyseni Duraku, लिंडा, ज़मीरा और होक्सा, (2020) ने एक अध्ययन में छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों के सामाजिक बहिष्कार की स्थिति और शिक्षकों और माता-पिता के दूरस्थ या ऑनलाइन शिक्षा के विचारों का विश्लेषण और वर्णन किया।

विश्लेषण की गुणात्मक प्रकृति का पालन किया गया था। इस अध्ययन के संदर्भ में केस स्टडी विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया गया था। डेटा संग्रह के लिए (N-13) माता-पिता और (N11) शिक्षकों के साथ अर्ध औपचारिक साक्षात्कार का उपयोग किया गया था। अध्ययन में भाग लेने वाले सार्वजनिक संस्थानों के सक्रिय सदस्य थे

शिक्षा पर COVID-19 के प्रभाव का

एन = 7) कोसोवो क्षेत्रों के शहरों (एन -14) के अंदर पूर्व-विश्वविद्यालय। इस अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि कोसोवो में शिक्षा में बदलाव सहित COVID-19 के प्रसार के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों के बीच कई चिंताएँ पैदा हो गई हैं। विश्लेषण के परिणाम दोनों रिपोर्टिंग पार्टियों की उनके विद्यार्थियों के मूल्यांकन, चिंताओं और अधिभार और अब तक किए गए सीखने की असंगति के अनुमानों के संबंध में साझा चिंताओं की पुष्टि करते हैं। इस अध्ययन के परिणाम शिक्षकों की अपनी विशेषज्ञता और जागरूकता बढ़ाने और शिक्षा दक्षता में सुधार करने में योगदान करने की इच्छा और प्रोत्साहन की पुष्टि करते हैं। यह शैक्षिक हितधारकों के लिए यथार्थवादी सलाह के साथ-साथ ऑनलाइन सीखने की सामग्री, शिक्षक, माता-पिता और परिवार के समर्थन को आगे बढ़ाने के लिए संसाधन भी प्रदान करता है।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) ने इस महामारी की अवधि में आसानी से सीख सकने वाले इस छात्र द्वारा इकतालीस ई लर्निंग प्लेटफॉर्म सूची की अनुमति दी है। ये हैं स्वयं ऑनलाइन पाठ्यक्रम, स्वयंप्रभा, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, ई-कल्पा, ई-शोध सिंधु, मुस्कान, एनसीईआरटी पाठ्य पुस्तकें कक्षा 1 से 12 तक और भी बहुत कुछाराजस्थान सरकार ने एक प्रोजेक्ट SMILE (सोशल मीडिया इंटरफेस लर्निंग एंगेजमेंट) शुरू किया है। यह एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है जिसे कई अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म द्वारा एक्सेस किया जा सकता है। इस परियोजना से राजस्थान के सभी सरकारी स्कूल ऑनलाइन शिक्षा प्रदान कर सकते हैं, कक्षा 1 से 12 वीं तक ऑनलाइन अध्ययन सामग्री और वीडियो उपलब्ध कराने के लिए लगभग बीस हजार व्हाट्सएप ग्रुप बनाए गए हैं।

COVID-19 और शिक्षा

बच्चे की पहली पाठशाला घर होती है और पहली शिक्षिका माँ होती है। लेकिन हम जानते हैं कि अगर हम अपने बच्चे के सामाजिक जीवन और उत्पादकता को विकसित करना चाहते हैं तो हमें उन्हें स्कूल भेजने की जरूरत है। हमारे आर्थिक विकास के लिए स्कूल बच्चों की सामाजिक जागरूकता, कौशल और क्षमता को मजेदार तरीके से बढ़ा रहे हैं। केवल कुछ ही समय बच्चे स्कूल में बिताते हैं और अधिक चीजें सीखते हैं।

हमारा बच्चा बेहतर सीख सकता है जब वह भौतिक कक्षा में शिक्षकों और साथियों के साथ बातचीत करता है। वे अपने सामाजिक जीवन को विकसित कर सकते हैं और वे अधिक प्रभावी ढंग से सीख सकते हैं। इस COVID-19 महामारी के कारण, अधिकांश देशों ने अपने स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय बंद कर दिए हैं। ऐसा लगता है जैसे छात्रों का विकास रास्ते में ही रुक गया हो। लेकिन हमारी सरकार की जागरूकता के कारण छात्र अपनी शिक्षा ऑनलाइन माध्यम से प्राप्त कर रहे हैं। इस तरह उनका सीखना बिना किसी रूकावट के एक सतत चलने वाली प्रक्रिया बनती जा रही है।कुछ फायदे और नुकसान हैं जो भारत में COVID-19 अवधि में डिजिटल सीखने के लिए देखे जा रहे हैं।

COVID में डिजिटल लर्निंग के फायदे। 19 अवधि

1. सीखना अधिक रोचक, प्रभावी और व्यक्तिगत होता जा रहा है।

2. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार भविष्य की दृष्टि से भारत
3. शिक्षक भी अपने ई-लर्निंग मॉड्यूल को बढ़ा रहे हैं।
4. यह पारंपरिक शिक्षा से बेहतर है।
5. यह लागत प्रभावी है।
6. के लिए कोई भौगोलिक सीमा नहीं सीख रहा हूँ।
7. सीखने के लिए कोई समय प्रतिबंध नहीं।
8. शिक्षक के साथ आमने सामने बातचीत और छात्र।
9. वाहन शुल्क और समय की बचत।

COVID-19 अवधि में डिजिटल लर्निंग के नुकसान

1. ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों के पास उचित संसाधन नहीं हैं।
2. माता-पिता को प्रौद्योगिकी के बारे में ज्ञान की कमी।
3. बजट की कमी के कारण भारत सरकार को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा
4. शिक्षकों के साथ बहुत दोस्ताना व्यवहार करना चाहिए4.
   तकनीकी।
5. घर में पढ़ाई का माहौल नहीं मिलता।
6. छात्र कभी-कभी खेल, सोशल मीडिया आदि से विचलित हो जाते हैं।
7. विभिन्न स्तरों के छात्रों की आवश्यकता है
   भविष्य के शोधों को सही तरीके से करने के लिए उपयुक्त तरीके।
8. विभिन्न प्रकार की डिजिटल कक्षाएं। कोई लिखित कार्य प्रदान नहीं करता है
9. सामग्री को बनाए रखा जाना चाहिए हैकिंग से सुरक्षित।
10. प्रभावी मूल्यांकन नहीं किया जा सकता एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर।

तालाबंदी के बाद स्कूलों द्वारा सावधानीपूर्वक पालन किया गया।

1. कोई विधानसभा सत्र नहीं, एक के लिए सेमिनार लंबे समय तक
2. एक दिन में केवल 30% स्कूल की संख्या की अनुमति दी जानी चाहिए
3. स्कूल में दो पालियों में काम होना चाहिए
4. छात्रों के बीच 6 फीट की दूरी
5. 500 वर्ग फुट कक्षा में 10 छात्र
6. छात्र के लिए एक विकल्प है घर पर पढ़ाई करो।

अध्ययन का उद्देश्य:

1. शिक्षा पर COVID-19 के प्रभाव का विश्लेषण करना।

2. COVID-19 के दौरान अध्ययन पुरुष की धारणा का विश्लेषण करने के लिए ओर महिला उत्तरदाताओं
3. COVID-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन अध्ययन के फायदे और नुकसान का विश्लेषण करना।
4. लॉकडाउन के बाद स्कूलों द्वारा की गई सावधानियों का विश्लेषण करना।

पढ़ाई का महत्व

यह विशेष जांच स्कूली शिक्षा पर कोविड-19 के प्रभाव को दर्शाती है। यह कोविड -19 के पीछे के कारणों की जांच करता है। महामारी और अंततः छात्रों पर प्रभाव डालता है। शोध पाठकों को ठीक से स्थापित करने के लिए विद्यार्थियों, माता-पिता और शिक्षकों के महामारी के समय के बारे में उनकी समझ पर विचार करने की अनुमति देगा

अध्ययन का दायरा

अध्ययन के निष्कर्ष एक निश्चित क्षेत्र में उत्तरदाताओं के उत्तरों पर केंद्रित हैं। यह शोध उत्तरदाताओं के लिंग के संदर्भ में ऑनलाइन स्कूली शिक्षा की समझ और उनके विद्यार्थियों की भलाई पर इसके प्रभाव के बारे में एक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद करेगा।

परिकल्पना

- Ho: कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव के बारे में पुरुष और महिला उत्तरदाताओं की धारणा के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- Ha: नमस्ते कोविड -19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव के बारे में पुरुष और महिला उत्तरदाताओं की धारणा के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

अनुसंधान क्रियाविधि

शोध के लिए राजस्थान के उदयपुर क्षेत्र के सरकारी एवं निजी संस्थानों के छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों से डाटा एकत्रित किया गया। सुविधा नमूनाकरण प्रक्रिया द्वारा कुल 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया था। अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अध्ययन में केवल प्राथमिक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। एक ऑनलाइन प्रश्नावली तैयार की गई और सभी उत्तरदाताओं को मेल कर दी गई। उत्तरदाताओं से प्रतिक्रियाएं भी ऑनलाइन एकत्र की गईं क्योंकि महामारी के समय में आमने-सामने बातचीत संभव नहीं थी।

शोधकर्ता ने लिकर्ट पैमाने का उपयोग करते हुए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया है। महामारी की स्थिति के कारण, शोधकर्ता ने Google दस्तावेज़ों का उपयोग करके प्रश्नावली तैयार की और छात्रों और संकायों को व्हाट्सएप, फेसबुक और ईमेल का उपयोग करके लिंक भेजे। आईबीएम

एसपीएसएस सॉफ्टवेयर 20 का उपयोग करके डेटा एकत्र और विश्लेषण किया गया था। इस अध्ययन के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण कारक विश्लेषण, समूह सांख्यिकी और स्वतंत्र नमूना परीक्षण का उपयोग किया गया था।

डेटा कुल 100 उत्तरदाताओं से एकत्र किया गया है।

उपरोक्त तालिका में (2-पूंछ) मान सभी चर के लिए 0.05 से अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षण के बारे में विभिन्न लिंगों की धारणाओं में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। चूंकि पिछली तालिका से, समूह सांख्यिकी बॉक्स से पता चला है कि पुरुष समूह का माध्य महिला समूह के माध्य से अधिक है; हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि महिला समूह उत्तरदाताओं की तुलना में पुरुष समूह COVID-19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण के बारे में अधिक चिंतित था।

निष्कर्ष अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हो जाता है कि छात्रों के बीच कोरोना-वायरस के प्रसार को हतोत्साहित करने के लिए पूरी दुनिया में शिक्षा प्रक्रिया को स्थगित करने के कारण ऑनलाइन शिक्षण को अपनाया जाता है ताकि शिक्षण की निरंतरता को रोका जा सके। हालांकि लॉकडाउन के समय यह तरीका ही एकमात्र संभव समाधान रहा है, लेकिन इसकी अपनी सीमाएं हैं। परिणाम यह भी बताते हैं कि जब छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों का साक्षात्कार लिया गया तो इस महामारी के प्रभाव के बारे में उनकी धारणा का पता लगाया गया।

शिक्षा प्रणाली और ऑनलाइन सीखने को अपनाना यह स्थापित किया गया था कि दोनों लिंग समूह ऑनलाइन सीखने की प्रक्रिया और छात्र की शिक्षा प्रक्रिया पर इसके प्रभाव के बारे में समान धारणा रखते हैं।

निष्कर्ष

साफ है कि कोरोनावायरस का असर सालों तक बना रहेगा। भारत ने अपने विशाल 4जी नेटवर्क के कारण पहले से ही छात्रों की संख्या को घर पर पढ़ाने की योजना बनाई है। भारत में लगभग हर जगह 4जी कनेक्टिविटी बेहद कम कीमत पर उपलब्ध है। शक्तिशाली नेटवर्क कनेक्शन के कारण, छात्र कक्षा के वातावरण में सीख सकते हैं क्योंकि वे सीधे कक्षा में बैठे होते हैं। ऑनलाइन शिक्षण शिक्षण और सीखने में लचीलापन प्रदान करता है और यह कक्षा को प्रेरित करने के लिए अधिक उपकरण और तकनीक भी प्रदान करता है। ऑनलाइन टीचिंग का फोकस स्टूडेंट्स पर ज्यादा है और इसलिए यह पुराने टीचर-सेंटेड लर्निंग के बजाय स्टूडेंट्स सेंटेड लर्निंग को बढ़ावा देता है। भारतीय छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को वर्चुअल की आदत नहीं है। कक्षा। पारंपरिक कक्षा उनके लिए सीखने का एकमात्र तरीका था। लेकिन अब अचानक भारतीयों को अपनी पारंपरिक कक्षाओं को ऑनलाइन कक्षाओं में शिफ्ट करना पड़ रहा है। इस प्रकार, ऑनलाइन क्लासरूम टूल के लिए हमारे शिक्षक के प्रशिक्षण पर काम करने के लिए सिस्टम की आवश्यकता है, ताकि वे छात्रों को अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ा सकें और हमारी भावी पीढ़ी का निर्माण कर

सकें। भारत इन नाटकीय परिवर्तनों के लिए तैयार नहीं था इसलिए यह हमारे देश की आबादी के लिए एक बड़ी चुनौती थी। इस प्रकार अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राजस्थान के उदयपुर जिले में पुरुष और महिला छात्र, माता-पिता और संस्थानों के शिक्षक, COVI-19 महामारी के कारण इस लॉकडाउन समय में ऑनलाइन शिक्षण को एक प्रभावी और सबसे उपयुक्त उपकरण मानते हैं। .

स्कूल प्रशासन को अपने शिक्षक को उस स्तर तक प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है जो सुचारू ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली को सक्षम बनाता है। भविष्य के दृष्टिकोण से, आभासी कक्षाएं हमारे देश के शैक्षिक विकास में योगदान देंगी। हमें अपनी सरकार को ऑनलाइन कक्षाएं अपनाने में मदद करनी चाहिए और अपने छात्रों को उन्हें सर्वश्रेष्ठ भविष्य देने में मदद करनी चाहिए।

संदर्भ:

- COVID-19 महामारी विकिपीडिया। (रा।)। 9 जनवरी, 2021 को https://en.wikipedia.org/wiki/COVI D-19 महामारी से लिया गया
- ई-लर्निंग: डिजिटल लर्निंग: एआईसीटीई ने कोविड -19 लॉकडाउन के दौरान पढ़ाई की सुविधा के लिए 41 ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म जारी किए, सरकारी समाचार, ईटी सरकार। (रा।)। 9 जनवरी, 2021 को https://government. Economictimes.in diatimes.com/news/digital india/digital-learning-aicte-releases41-e-learning-platforms-to-facilitate study-during-covid-19 से लिया गया। . लॉकडाउन/75161549.
- ई-लर्निंग: डिजिटल लर्निंग: राजस्थान सरकार
- ई-लर्निंग के लिए 'SMILE' लॉन्च किया
- स्कूल, सरकारी समाचार, ET https://government. Economictimes.in
- diatimes.com/news/digital (2020)।
- भारत/डिजिटल-लर्निंग-राजस्थान-सरकार ने लॉन्च किया-मुस्कुराओ-ई-लर्निंग-पर
- स्कूल/7516136
- भारत में शिक्षा प्रणाली पर COVID-19 का प्रभाव। (रा।)। 9 जनवरी, 2021 को पुनःप्राप्त,
- https://www.latestlaws.com/articles/impact-of-covid-19-on-education system-in-india/
- जेना, पी.के. (2020). भारत में शिक्षा पर महामारी COVID-19 का प्रभाव।

अध्याय १८

कोविड-19 के दौरान प्रभावित समाज पर सामाजिक-कल्याणकारी युवा नेतृत्व की जिम्मेदारी

खुशबू राठौर
(पी.एच.डी. शोधार्थी, शिक्षा), आई.ए.एस.ई. महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. क्षमा त्रिपाठी
(विभागाध्यक्ष- शिक्षा) डी.एल.एस. महाविद्यालय, (छ.ग.)

सारांश-

Covid-19 मानव जीवन का सबसे ह्रास पूर्ण काल रहा है जो कि पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुआ है इस महामारी ने पूरे समाज को संकट में लाकर खड़ा कर दिया, तब युवाओं को इसका सबसे अधिक खामियाजा भुगतना पड़ा, किन्तु नौजवान समाज का महत्वपूर्ण अंग होता है और युवा-पीढ़ी यदि जिम्मेदारियों को उठा ले तो देश कभी किसी भी बाधा से बाधित नहीं होगा| युवा-पीढ़ी ने इस कोरोना काल में अपनी नैतिकता, सूझ-बूझ, सहयोग, सौहार्दपूर्ण-व्यवहार एवं एकात्मता से महामारी काल को जीत लिया है | देश के नौजवानों ने समाज के साथ मिलकर आपसी तालमेल रखकर सहयोग प्रदान करते हुए अपनी जिम्मेदारी को परिलक्षित किया है| इस कार्य में पुलिसकर्मियों, सफाई-कर्मियों एवं चिकित्सकों के साथ मिलकर महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के NSS,NCC, व स्पोर्ट्स कैडेटों, नर्सिंग संस्था के छात्र-छात्राओं, और समाज के कल्याणकारी युवाओं द्वारा इस महामारी-युद्ध को जितने का लगभग सरोबर प्रयास किया गया है | जिसमें सरकार द्वारा मदद की गुहार से सभी स्वयं-सेवकों ने एवं सामाजिक कल्याणकारी युवाओं द्वारा अपना कीमती समय प्रदान किया गया है|

कुंजी शब्द- Covid-19, सामाजिक कल्याणकारी युवा, नेतृत्व कर्ता

प्रस्तावना-

राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की अहम भूमिका हमेशा से ही होती है। भारत में, आजादी से लेकर अब तक सरकार द्वारा सभी को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न कदम नए नए रूपों में उठाए जा रहे है।

जिसमें युवा नेतृत्त्वता भी एक शैली है और मानव का जीवन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता ही रहा हैं। भारत सरकार ने आज कई समितियों, विभागों, समुदायों और आयोगों का गठन किया है, जिन्होंने भारत में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदमों की पहल की हुई है। आज हम जिस युग में रह रहे है उस युग को 21 सदी का युग कहा जाता है इस युग में कंप्यूटर, इलेक्ट्रोनिक, एवं संयंत्रों का उपयोग बहुत तेज़ी से हो रहा है| कंप्यूटर और प्रयोगशाला का उपयोग अब हमारे शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में किया जा रहा है। जिससे शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच संबंध व अंतःक्रिया मैत्रीपूर्ण हो रहे हैं। और शिक्षक छात्रों को उनकी कई नैतिक जिम्मेदारियों से भी अवगत करा रहे है ताकि वे एक जिम्मेदार नागरिक के साथ ही साथ एक युवा नेतृत्व कर्ता भी बने |

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) को इस वैश्विक महामारी जिसे कोरोना-19 का नाम दिया गया है जिसे SARS-CoV-2 के रूप में जाना जाता है, इस वैश्विक महामारी ने पूरे विश्व को अपने कब्जे में लेकर प्रत्येक वैश्विक नागरिकों को तबाह कर दिया जिससे COVID-19 का कारण बना है जब कोई संक्रमित व्यक्ति खांसता या छींकता है। यह दूषित वस्तुओं या सतहों के संपर्क में आने से भी फैल सकता है। यह एक प्रकार से ग्रसिका, ग्रसिका नली एवं फेफड़ों में श्वसन के माध्यम से, गंदे हाथों व श्वसन रोग मुख्य रूप से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में, बूंदों के रूप में आसानी से फैलता है,यह किसी सर्दी-बुखार से ग्रसित बीमार व्यक्ति के संपर्क दूषित वस्तुओं या सतहों के संपर्क में आने से भी फैल जाता है। COVID-19 से जुड़े लक्षण बहुत गंभीर या घातक तक होते हैं। COVID-19 सभी उम्र के व्यक्तियों को संक्रमित कर सकता है आज इसलिए 12-14 वर्ष के बालकों को भी वैक्सीन लगना शुरू किया गया है। हालांकि, डब्ल्यूएचओ ने आगाह किया है कि वृद्ध व्यक्ति (और अस्थमा, मधुमेह और हृदय रोग जैसी पहले से मौजूद चिकित्सा स्थितियों वाले कोई भी व्यक्ति) गंभीर बीमारी की चपेट में आते हैं। यह वायरस फेफड़ों पर गंभीर रूप से हमला करता है; COVID-19 तंबाकू, धूम्रपान करने वालों या वाष्प के लिए एक विशेष रूप से गंभीर खतरा हो सकता है। हालांकि युवा, स्वस्थ व्यक्तियों में आमतौर पर बुजुर्गों की तुलना में अधिक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली होती है, WHO युवाओं सहित सभी को संक्रमण और संचरण से बचने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरतने के लिए प्रोत्साहित करता है| हम सभी को नियमित रूप से हाथ धोना, दूसरों से सामाजिक दूरी बनाए रखना और बीमार होने पर घर पर रहना। सोशल डिस्टेंसिंग महत्वपूर्ण है, न केवल प्रसार को कम करने के लिए बल्कि ऐसे मामलों में वृद्धि को सीमित करने के लिए भी जिससे अस्पताल गंभीर रूप से बीमार लोगों के इलाज की क्षमता से अधिक हैं बहरहाल कई सरकारों ने युवाओं से अपनी ओंर से पूरी आबादी की सुरक्षा के प्रयास को बनाए रखने व अपनाने का आह्वान किया है। युवा भी सबसे कमजोर लोगों की मदद करने और अपने समुदायों के बीच सार्वजनिक स्वास्थ्य, सामाजिक जागरूकता, सामाजिक समरसता एवं विभिन्न-अभियानों को बढ़ाने में सहायता करने की स्थिति में हैं। यही कारण है कि युवा-वर्ग महत्वपूर्ण हैं और वायरस के प्रसार और सार्वजनिक स्वास्थ्य, समाज और अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव को सीमित करने के लिए सक्रिय योजना का हिस्सा सदा युवा वर्ग ही रहेगा।

COVID-19 का सामाजिक प्रभाव-

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा एक महामारी के रूप में पहचाने जाने वाले कोरोना वायरस रोग (COVID-19), समाजों मूल्यों, व्यवहारों, और नैतिकता पर आघात कर रहा है। यह स्वास्थ्य संकट के साथ ही साथ एक मानवीय, आर्थिक और सामाजिक संकट भी है जो सतत लक्ष्यों को भेदित कर रहा है|

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक नीति के लिए उनके निहितार्थ का आकलन संयुक्त राष्ट्र संघ (UN DESA) करता है। इसके लिए, हम सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने, असमानताओं को कम करने और गरीबी उन्मूलन के लिए एक अग्रणी विश्लेषणात्मक आवाज हैं। लेबर मार्केट में सबसे अधिक झटका covid-19 से माध्यम वर्गीय परिवार को लगा | महत्वपूर्ण रूप से, नौकरियों की गुणवत्ता और मात्रा पर प्रभाव संभवतः सेवा क्षेत्र में लगे युवक-युवतियों या नियमित अनियमित कार्य करने वाले युवाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इन नौकरियों वाले युवाओं को भी स्वास्थ्य संबंधी खतरों का सामना करने का जोखिम होता है |

COVID-19 ने अभूतपूर्व पैमाने पर वैश्विक उथल-पुथल मचा दी है। विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय को कई स्थानों पर अनिश्चितता का सामना पड़ा हैं और इस तरह की विशाल घटना के दीर्घकालिक प्रभावों को पूरी तरह से समझा नहीं जा सका है।

सामाजिक कल्याणकारी गतिविधियाँ-

सोशल वेलफेयर गतिविधियां समाज में विभिन्न प्रकार से चलाई जाती है इसका मात्र उद्देश्य सामाजिक तौर पर मदद करना है | सामाजिक कल्याणकारी कार्य सरकार, शिक्षा विभाग, विश्वविद्यालयों या संगठनों के माध्यम से चलाई जाने वाली एक कार्यक्रम है जो कि नागरिकों, युवा के जीवन को उत्कृष्ट बनाता है| सामाजिक कल्याणकारी कार्य सर्वप्रथम जर्मनी में 1880 की दशक में हुआ था आज सभी देश अपने अपने स्तर पर सामाजिक कल्याणकारी कार्य कर रहे है|

कोरोना काल के दौरान युवाओं ने अपनी नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन अपने कई कार्यो से परिलक्षित कराया है जिसमें पुलिस-कर्मियों के साथ युवा मिलकर हर संभव कार्य में जूता रहा है | यह एक विद्यार्थी में उसके कौशलों को विकसित करने के साथ ही साथ एक सफल नागरिक निर्माण में भी सहायक है |

मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा व्याप्त सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए उनके भीतर के कौशलों को विकसित करने के लिए सामाजिक कल्याणकारी कार्य गतिविधयों को इस प्रकार से अधोसंरचित किया गया है-

- राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC)
- राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)
- स्पोर्ट्स खेलकूद
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- रेड क्रॉस सोसाइटी
- स्वास्थ्य विभाग सोसाइटी
- जन जागरूक सोसाइटी

- प्लेसमेंट सोसाइटी
- एंटी रेगिंग सोसाइटी
- महिला उत्पीडन सोसाइटी

नेतृत्वकारी युवाओं द्वारा चलाया गया अभियान –

एनएसएस (NSS)के निदेशालय और क्षेत्रीय निदेशालय, युवा मामले विभाग, युवा मामले और खेल मंत्रालय और राज्य एनएसएस अधिकारियों, भारतीय सशस्त्र बलों की युवा शाखा (NCC) ने COVID-19 के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए COVID-19 सुरक्षा अभियान चलाया, जिसमें युवाओं को स्वास्थ्य मंत्री द्वारा अपने पड़ोस के 10 लोगों को जागरूक करने हेतु अभिप्रेरित किया| और बीमार व्यक्ति से दो गज की सामाजिक दूरी बनाये रखने, देखभाल करने, और उनके मानसिक पटल पर संकीर्ण बीमारी को जन्म न होने देने की सलाह दी एवं देश के युवाओं को निम्न अभियान में अपनी स्वेक्षा से भागीदारी देने की सलाह दी-

- मास्क बांटना
- जिला प्रशासन का सहयोग करना
- चौक-चौराहा पर नाका ड्यूटी करना
- नारा लेखन कर जागरूक करना
- प्रत्येक जन को सोशल डिस्टेंशिंग का दिशा निर्देश देना
- औषधीय पौधों से उपचार और काढ़ा बनाने की विधि सिखाना
- स्वनिर्मित स्लोगन गीत बना कर ऑनलाइन अभिप्रेरित करना
- मेडिकल टीम के साथ तत्परता से ड्यूटी करना और दवाइयों के वितरण में सहयोग करना
- दीवारों पर चित्रकारी से जन-जन को अभिप्रेरित करना
- सोशल डिस्टेंशिंग और मास्क की महत्ता को प्रत्येक व्यक्ति को बताना
- वैक्कसीनेशन लगवाने हेतु नुक्कड़ नाटक करना
- सोशल डिस्टेंशिंग और मास्क की महत्ता को समझाने के लिए रोड पर रैली निकालना
- पाम्पलेट छपवाकर समाचार पत्रों के साथ वितरित करना
- अपने घरों से ऑनलाइन vedio बना कर जन-जन को जागरूक करना
- स्वास्थ्य की सुरक्षा हेतु योगासन अभ्यास हेतु जागरूक करना
- प्रत्येक नागरिक को शपथ ग्रहण करवाना की वह सदैव दो गज की सामाजिक दूरी रखेंगे, सही रूप में मास्क पहनेंगे तथा हाथों को साबुन से (20 सेकंड तक) धोयेंगे या जहाँ पानी की उपलब्धता कम हो वहां पर सेनिटाइज़र का प्रयोग करेंगे |

सामाजिक कल्याणकारी की युवा नेतृत्व की जिम्मेदारियां-

1. **कर्तव्यनिष्ठा** – छात्रों को अपनी नैतिक जिम्मेदारी को समझे हुए सदैव ही अपने कार्यों के प्रति सजग होना चाहिए| कोरोना काल में कोरबा छत्तीसगढ़ क्षेत्र के NSS एवं NCC के छात्रों ने अपनी कर्तव्यों का निर्वहन पूरे उत्साह से किया है|
2. **ईमानदारी-** यदि शिक्षा के साथ ही साथ एक बालक को नए अवसर के कार्य करने को मिले तब उसे इस अवसर का लाभ लेना कहिये और पूरी ईमानदारी के साथ पूरा करना चाहिए| युवाओं ने कोरोना काल में आगे आकर आज जो परस्पर सहयोग का उदाहरण समाज के समक्ष प्रस्तुत किये है वह प्रशंसनीय रहा है |
3. **धैर्य-** सामाजिक कल्याणकारी कार्य गतिविधियों में भाग लेने वाले युवा नेता कोरोना काल के दौरान समाज में बड़ी ही शालीनता धैर्य से अपने कार्यों को पूर्ण किया है इस विषम कोरोना की परिस्थिति में भी, उनकी कक्षाएँ जब ऑनलाइन माध्यम से होने लगी तब भी वे अपने अक्षमता व आई सी टी के ज्ञान को धैर्य से विस्तारित किये है |
4. **आत्मविश्वास-** सामाजिक कल्याणकारी कार्य गतिविधियों में भाग लेने युवा नेताओं को सदैव धैर्यवान होना चाहिए क्योंकि एक सफल लीडर की तरह सामाजिक कल्याणकारी कार्य करने वाले नेता भी अपने कार्य को पूरे जोश के साथ पूर्ण करता है| यह किसी कार्य को साहस के साथ बिना हिचकिचाहट के साथ वास्तविक काम करने के लिए प्रेरित करता है |
5. **कम्युनिकेटर / मजबूत सम्प्रेषक-** एक अच्छा संचारक अच्छे लीडर की पहचान है| एक प्रभावशाली युवा नेता एक अच्छा किसी सन्देश को किस रूप में रखना है वह भलीभांति जानता है| साथ ही वह अपने कार्य हेतु ऐसे भावों और शब्द सीमा का चयन कर्ता है जो कि स्थिति अनुकूल हो| एक अच्छा संचारक दूसरों की शब्दों से भी सीखते है ताकि वे मानवीय व्यवहारों से उनके मनोवैज्ञानिकता को समझ सके |

उपसंहार-

सामाजिक कल्याणकारी युवा नेता, NSS और NCC के युवागण covid-19 के दौरान एक आम नागरिक की मदद अपनी जान की परवाह किये बिना पूरी सुरक्षा के साथ किये है| एनएसएस (NSS)के निदेशालय और क्षेत्रीय निदेशालय, युवा मामले विभाग, युवा मामले और खेल मंत्रालय और राज्य एनएसएस अधिकारियों, भारतीय सशस्त्र बलों की युवा शाखा (NCC)ने COVID-19 के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को ध्यान में रख कर आम जनता और कोरोनटाइन परिवार को भोजन, पानी, औषधियां, घरेलू सामान एवं प्रत्येक जिले में हर चीजों की उपलब्धता करना रहा है और 18 लाख से अधिक नए युवा नेताओं ने इस नेतृत्व कार्य में सहयोग किया है जिन्होंने मंदी बाज़ार, बैंक , रेलवे स्टेशन , बस स्टैंड, यातायात व्यवस्था, दुकान सड़के सभी जगह अपनी जिम्मेदारियों को उठाकर एवं आरोग्य सेतु जैसे नई सोशल एप्प से सभी को जागरूक किया है इसमें सबसे ज्यादा ४२ लाख युवा ने ही इस एप्प को डाउनलोड किया है और जागरूकता बढाई है|

संदर्भित ग्रन्थ एवं वेब साइट्स-

- TACKLINGCORONAVIRUS(COVID-19) CONTRIBUTING TO A GLOBAL EFFORT, OECD policy Responses to corona virus Youth and covid 19 Response, recovery and resilience pdf, 11.june.2020
- https://nya.org.uk/wp-content/uploads/2020/04/Out-of-Sight-COVID-19-report-Web-version.pdf
- https://ipdj.gov.pt/enquadramento
- The relationship between workforce sustainability, stress, and career decision: A study of kindergarten teachers during the COVID-19 pandemic. Sustainability, 13(20), 11521. https://doi.org/10.3390/su132011521
- https://www.gov.uk/government/publications/covid-19-guidance-on-supporting-child-and-young-Peoples-mental-health-and-wellbeing
- https://covid19.reserve-civique.gouv.fr/
- https://www.gov.ie/en/publication/606da7-coping-at-home-during-covid-19/
- https://nss.gov.in/covid-19
- https://volunteer.ca/index.php?MenuItemID=420
- https://timesofindia.indiatimes.com/readersblog/on-the-rocks/role-of-effective-leadership-leadership-during-covid-19-20076/
- Azorín, C., Harris, A., & Jones, M. (2020). Taking a distributed perspective on leading professional learning networks. School Leadership & Management, 40(2-3), 111-127. https://doi.org/10.1080/13632434.2019.1647418
- https://youthworksupport.co.uk/wp-content/uploads/2020/03/Covid-19-Youth-Workers- final1.pdf
- Carolan, C., Davies, C. L., Crookes, P., McGhee, S., Roxburgh, M. (2020). COVID 19: Disruptive impacts and transformative opportunities in undergraduate nurse education. Nurse Education in Practice, 46, 102807. https://doi.org/10.1016/j.nepr.2020.102807

अध्याय १९

कोरोना वायरस वैश्विक महामारी- 2019

डॉ. सविता
सहायक प्राध्यापिका (समाजशास्त्र विभाग) इन्दिरा प्रियदर्शनी महिला महाविद्यालय झज्जर

कोरोना वायरस:

कोरोना के नाम की उत्पति से संबंधित बात करें तो लतीनी भाषा में "कोरोना" का अर्थ "मुकुट" होता है और इस वायरस के कणों के इर्द-गिर्द उभरे हुये काँटे जैसे ढांचों से इलेक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी में मुकुट जैसा आकार दिखता है, जिस पर इसका नाम रखा गया।

चीन के वूहान शहर से उत्पन्न होने वाला 2019 नोबेल कोरोना वायरस इसी समूह के वायरसों का उदाहरण है जिसका संक्रमण सन् 2019-2020 काल में तेजी से उभरकर 2019-20 वूहान कोरोना वायरस प्रकोप के रुप में फैलता जा रहा है, हाल ही मे (WHO) विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसका नाम कोविड-19 (COVID-19) रखा है।

कोरोनावायरस (CORONA VIRUS) कई प्रकार के विषाणुओं (वायरस) का एक समूह है जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग उत्पन्न करता है। यह आरएनए वायरस होते हैं। इनके कारण मानवों में श्वास तंत्र संक्रमण पैदा हो सकता है जिसकी गहनता हल्की (जैसे सर्दी-जुकाम) से लेकर अति गम्भीर (जैसे, मृत्यु) तक हो सकती है। गाय और सूअर में इनके कारण अतिसार हो सकता है जबकि इनके कारण मुर्गियों के ऊपरी श्वास तंत्र के रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इनकी रोकथाम के लिए कोई टीका (वैक्सीन) या विषाणुरोधी अभी उपलब्ध नही है और उपचार के लिए प्राणी की अपने प्रतिरक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। अभी तक रोगलक्षणों (जैसे कि निर्जलीकरण या डीहाइड्रेशन, ज्वर, आदि) का उपचार किया जाता है ताकि संक्रमण से लड़ते हुए शरीर की शक्ति बनी रहे।

वुहान कोरोना वायरस प्रकोप (2019–20) की शुरुआत एक नए किस्म के कोरोनवायरस (2019-nCoV) के संक्रमण के रूप में मध्य चीन के वुहान शहर में 2019 के मध्य दिसंबर में हुई। बहुत से लोगों को बिना किसी कारण निमोनिया होने लगा और यह देखा गया की पीड़ित लोगों में से अधिकतर लोग वुहान सी फूड मार्केट में मछलियाँ बेचते हैं तथा जीवित पशुओं का भी व्यापर करते हैं। चीनी वैज्ञानिकों ने बाद में कोरोनावायरस की एक नई नस्ल की पहचान की जिसे 2019-nCoV प्रारंभिक पदनाम दिया गया। इस नए वायरस में कम से कम 70 प्रतिशत (70%) वही जीनोम अनुक्रम पाए गए जो सार्स-कोरोनावायरस में पाए जाते हैं। संक्रमण का पता लगाने के लिए एक विशिष्ट नैदानिक पीसीआर परीक्षण के विकास के साथ कई मामलों की पुष्टि उन लोगों में हुई जो सीधे बाजार से जुड़े हुए थे और उन

लोगों में भी इस वायरस का पता लगा जो सीधे उस मार्केट से नहीं जुड़े हुए थे। पहले यह स्पष्ट नहीं था कि यह वायरस सार्स जितनी ही गंभीरता या घातकता का है अथवा नहीं।

इस बीमारी की शुरुआत :

नया कोरोना वायरस 2019 के आखिर में अनजान कारणों से निमोनिया जैसी बीमारी से सामने आया। बाद में पता चला कि इस बीमारी का कारण सीवियर एक्यूट रेस्परेटरी सिंड्रोम कोरोना वायरस 2 या सार्स कोरोना वायरस-2 है। इसमें शुरुआत में हल्की सर्दी-जुकाम जैसे लक्षण प्रकट होते हैं। डब्लूएचओ के मुताबिक, कोरोना संक्रमित करीब 80 फीसद लोग बिना किसी खास इलाज के ठीक हो जाते हैं। संक्रमित छह लोगों में से सिर्फ एक व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार पड़ता है और वह सांस लेने में तकलीफ होने की स्थिति तक पहुंचता है।

डब्ल्यू.एच.ओ. के मुताबिक कोरोना संक्रमित करीब 80 फीसदी लोग बिना किसी खास इलाज के ठीक हो जाते है। संक्रमित छह लोगों में से एक व्यक्ति गंभीर रुप से बिमार पडता है और वह सांस लेने में तकलीफ होने की स्थिति तक पहुँचता है।

संक्रमण की चार श्रेणियाँ

प्रोफेसर विल्सन के अनुसार, कोविड-19 से संक्रमित लोगों को चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है। पहली श्रेणी में वे लोग होते हैं, जिनमें कोई लक्षण नहीं दिखता है। इसके आगे की श्रेणी में वे लोग हैं, जिनमें श्वसन नली के ऊपरी हिस्से में संक्रमण होता है। इस स्थिति में संक्रमित लोगों को बुखार, कफ, सिरदर्द या कंजक्टीवाइटिस (आंख संबंधी बीमारी) के लक्षण होते हैं। इन लक्षणों वाले लोग संक्रमण के वाहक होते हैं लेकिन संभवत: उन्हें इसकी जानकारी नहीं होती है। तीसरी श्रेणी में कोविड-19 पॉजिटिव लोग होते हैं, जिनमें निमोनिया जैसे लक्षण होते हैं और उन्हें अस्पताल में रहना होता है। चौथी श्रेणी के लोगों में निमोनिया जैसी बीमारी का गंभीर रूप दिखता है।

Reference:

1. Virus Taxonomy 2018b Released International committee on Taxonomy of viruses (ICTV) (अंग्रेजी में) March 2019) मूल (HTML) से 4 March 2018 को पूरा लेखित अभिगमन तिथि (24 जनवरी 2020)
2. De Groot RJ Baber SC, Beric R, Enjuances L, Grobalaneny AE, Holmes KV, Perlmens, Poon L, Rottier PJ, Talbot PJ, WooPC, Liebutir J (2011) family corona viridae प्रकाशित AM & King, E lefkowik, MJAdams, EB Carstns Ninth Report of the international committee on taxonomy of viruses else vier, oxford 4 पृ. 978-0-12-384684-6
3. Ref. Svdhiririohi. In/korona-virus-lan krman ka asar international committee on taxonomy of viruses 24 Aug. 2010) CTV master species list 2009-v/o

4. People's Republic of China : Chinese Centre of disease control & Prevention अभिगमन तिथि 9 January 2020
5. New type corona virus Causes pneumonia in wuhan : Expert People Republic of china Zinhua अभिगमन तिथि 9 January 2020
6. Cov 2020 Platform gisaid. Org. अभिगमन तिथि 12 January 2020.

अध्याय २०

कोरोना महामारी का भारतीय राजनीति पर प्रभाव

चन्द्रशेखर उसरेठे
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय महाविद्यालय चैरई, जिला छिन्दवाड़ा

पारिभाषिक शब्दावली– संघात्मक, विनिर्माण, राजनीतिक विमर्श, स्पेनिश फ्लू, मौलिक अधिकार

कोरोना केवल एक महामारी नहीं, बल्कि समकालीन दौर को परिभाषित करने की एक महत्वपूर्ण विभाजक रेखा बन गई है। अब कोरोना पूर्व और कोरोना उपरांत जैसे मानक विमर्श के केन्द्र बन रहे हैं। कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया है। इस संक्रमण काल में दुनिया में व्यापक परिवर्तन होते दिख रहे हैं। भारत में भी कोरोना महामारी ने जीवन के हर क्षेत्रों जैसे आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य आदि को प्रभावित किया है। राजनीति भी इसके प्रभाव से अछूती नहीं रही है और न ही हो सकती है। पूर्व में भी भारत में इस तरह की महामारी का राजनीति पर असर हुआ है। जब भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी युग का आरंभ हो ही रहा था उसी समय 1918 में स्पेनिश फ्लू नामक महामारी देश में फैली थी। अनुमान के अनुसार उस महामारी से भारत में लगभग एक करोड़ अस्सी लाख लोगों की मृत्यु हुई थी। यह उस समय भारत की आबादी का 6 प्रतिशत था। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को देखने से पता चलता है कि स्वतंत्रता से संबंधित बड़ी और निर्णायक गतिविधियां 1918 के बाद ही हुई। 1917 में चंपारण सत्याग्रह से सक्रिय हुए महात्मा गांधी भी इसके बाद और सक्रिय होते चले गये और उनके साथ बड़े पैमाने में लोग जुड़ते चले गये। अमेरिका की प्रसिद्ध वॉल स्ट्रीट जर्नल के एक लेख में कोरोना की तुलना स्पेनिश फ्लू से की गई है। हांलाकि एक सच यह भी है कि तब से लेकर अब तक दुनिया में बहुत परिवर्तन हुए हैं। फिर भी यह स्पष्ट है कि महामारी और राजनीति को अलग करके नहीं देखा जा सकता। ऐसे में यह समझना होगा की कोरोना महामारी ने भारत में राजनीति को किस–किस तरह से प्रभावित किया है।

स्वास्थ्य सुविधायें महत्वपूर्ण चुनावी मुद्दे–

उदारीकरण के दौर में पूरी दुनिया की सरकारों ने जिन क्षेत्रों को सबसे निजी क्षेत्र के हवाले में छोड़ा है, उनमें शिक्षा और स्वास्थ्य प्रमुख हैं। भारत में भी यही हुआ है। इस दौर में केन्द्र में चाहे जिस भी पार्टी की सरकार बनी हो, सबने स्वास्थ्य को निजी क्षेत्र के हवाले ही छोड़ने की नीति को आगे बढ़ाया। राज्यों की सरकारों ने भी ऐसा ही किया। इससे देश में स्वास्थ्य सेवाओं का ढांचा पूरी तरह से चरमरा गया है। देश ने कोरोना की दूसरी लहर में जो मंजर देखा उसे भुलाया नहीं जा सकता। इस घातक लहर में बनी विषम परिस्थितियों ने भारत के स्वास्थ्य सेवा तंत्र की विसंगतियों को उजागर कर दिया।

गांवों में जो सरकारी स्वास्थ्य केंद्र काम कर रहे थे, उनमें से अधिकांश इस वक्त खराब स्थिति में है। कुछ अस्पतालों को छोड़ दे ंतो अधिकांश शहरी सरकारी अस्पताल भी बुनियादी ढांचे के अभाव का सामना कर रहे हैं। इन अस्पतालों में बेड की संख्या आज भी सीमित है। देश में आज निजी अस्पतालों का दबदबा है। एक आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति अपना या अपने परिजन का इलाज किसी निजी अस्पताल में कराने में सक्षम नहीं होता और सरकारी अस्पतालों में लगने वाली लाइनों से हम अपरिचित नहीं हैं। दुनिया में बच्चों की मौत के मामले में भारत नाइजीरिया के बाद दूसरे नम्बर पर है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में 5 साल से कम उम्र के हर पांच बच्चों में से एक की मौत होती है। भारत में शिशु मृत्यु के प्राथमिक कारण समय से पहले जन्म, जन्म के समय कम वजन, निमोनिया, जन्म आघात, दस्त जैसे रोग हैं। इनमें से अधिकांश समस्याओं को एक सुसज्जित सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के साथ प्रबंधित किया जा सकता है। कोरोना की दूसरी लहर के बाद से समाज के हर वर्ग से इस मौजूदा स्वास्थ्य सेवा तंत्र को मजबूत करने की मांग उठने लगी है। देश के कई प्रतिष्ठत नागरिकों और संगठनों ने स्वास्थ्य को मौलिक अधिकारों में शामिल करने की मांग की है। अब आम नागरिक सभी पार्टियों से यह उम्मीद करेंगे कि वे स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर एक स्पष्ट रणनीति सुझाएं। इसका मतलब यह हुआ की स्वास्थ्य सुविधाएँ आने वाले समय में एक चुनावी मुद्दा बन सकती है और स्वास्थ्य क्षेत्र में सरकार की भूमिका बढ़ाने की ठोस कोशिशें दिख सकती है।

राजनीतिक विमर्श के केन्द्र में आर्थिक मुद्दे–

कोरोना वायरस ने न केवल भारत की बल्कि दुनिया की अर्थव्यवस्था की हालत खराब कर रखी है। संक्रमण बढ़ने से रोकने के लिए देशभर में लॉकडाउन रहा। सभी फैक्ट्री, ऑफिस, मॉल्स, व्यवसाय आदि सब बंद रहे। घरेलू आपूर्ति और मांग प्रभावित होने के चलते आर्थिक वृद्धि दर प्रभावित हुई है। विश्व बैंक ने कहा है कि इस महामारी की वजह से भारत ही नहीं बल्कि समूचा दक्षिण एशिया गरीबी उन्मूलन से मिले लाभों को गवॉ सकता है। भारतीय रूपया डॉलर की तुलना में निरंतर कमजोर हो रहा है और देश की जीडीपी में कमी दर्ज की जा रही है। लाखों

लोग अपना रोजगार खो चुके हैं। कोरोना का कहर स्वास्थ्य क्षेत्र के अलावा सबसे अधिक कहीं दिख रहा है तो वह अर्थव्यवस्था है। विनिर्माण और सेवा क्षेत्र पर इसका प्रभाव दिखने लगा है। इस वजह से बेरोजगारी का संकट और गहराना तय है। शेयर भंडार में गिरावट और विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट दर्ज की जा रही है। कुछ क्षेत्रों मे अभी मांग बढ़ी हुई जरूर दिख रही है लेकिन यह घबराहट में बढ़ी हुई मांग है। रोजमर्रा के उपयोग वाली वस्तुओं की बढ़ी हुई मांग इसका प्रतीक है। लेकिन जो वस्तुएँ और सेवायें रोजमर्रा में उपयोग नहीं की जाती हैं, उनकी मांग कम या न के बराबर हो गई है। एक तरफ मांग कम और दूसरी तरफ उत्पादन बंद, ऐसे में मांग और आपूर्ति का पूरा चक्र गड़बड़ होने की आशंका है। इसका मतलब यह हुआ कि पहले से ही सुस्ती की शिकार भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये आने वाला समय और कठिन हो सकता है। ऐसे में राजनीतिक विमर्श के केन्द्र में आर्थिक मुद्दो का आना तय है। आने वाले दिनों में राजनीतिक पार्टियों को जनता को यह भी बताना होगा कि अर्थव्यवस्था की हालत सुधारने के लिए वे क्या करने वाले हैं। बेरोजगारी का संकट और उसमें भी विनिर्माण के बाद अब सेवा क्षेत्र में बेरोजगारी का संकट गहराने से इसकी आंच निम्न वर्ग के बाद अब मध्यवर्ग तक पहुंचेगी। एक राजनीतिक वर्ग के तौर पर देखें तो हमारे देश में मध्य वर्ग ही सबसे मुखर वर्ग है। ऐसे में अगर उसे परेशानी होगी तो जाहिर सी बात है कि बेरोजगारी और अर्थव्यवस्था का बुरा हाल प्रमुख राजनीतिक मुद्दा बनेगा।

संघात्मक व्यवस्था पर महामारी का प्रभाव–

प्रधानमंत्री हमेशा सहयोगात्मक संघवाद की बात करते हैं। वे केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों को मिलाकर 'टीम इंडिया' की बात कहते आए हैं। कोरोना वायरस से निपटने के लिए केन्द्र और राज्य सरकारें आपसी समन्वय के साथ प्रयास करते दिखी। केन्द्र सरकार द्वारा महामारी के दौरान सभी राज्यों के साथ बराबर संवाद किया गया। प्रधानमंत्री द्वारा सर्वदलीय बैठक आयोजित की गई, ताकि सभी राजनीतिक दलों की राय प्राप्त की जा सके। कोरोना संकट केन्द्र और राज्यों की सरकारों को करीब लाया है। केन्द्र सरकार ने कोरोना का सामना करने के लिए कई राहत पैकेज का ऐलान किया जिससे राज्यों को कोरोना से लड़नें में सहायता मिली।

इन प्रयासों के बाद भी महामारी के दौरान कुछ घटनाक्रमों के कारण केन्द्र और राज्यों के बीच कुछ विषयों पर मतभेद दिखे। उदाहरण के लिए–

- केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों का रेड, ऑरेंज और ग्रीन जोन में किये गए वर्गीकरण का कुछ राज्य की सरकारों ने विरोध किया है। राज्यों ने केन्द्र से इस प्रकार के वर्गीकरण में अधिक स्वायत्तता की मांग की है।
- केन्द्र सरकार की घोषणा के अनुसार प्रधानमंत्री केयर फंड को दान करने वाले निगम सीएसआर छूट का लाभ उठा सकते हैं, लेकिन जो व्यक्ति किसी मुख्यमंत्री राहत कोष में पैसे दान कर रहे हैं उन्हे सीएसआर छूट में कोई

लाभ नहीं मिलेगा। इस प्रकार यह सीधे किसी भी मुख्यमंत्री राहत कोष में दान को हतोत्साहित करता है।

- कोरोना के कारण राज्यों के जीएसटी संग्रह बुरी तरह से प्रभावित हुए हैं। केन्द्र द्वारा बकाया देने में बिलम्ब हुआ है इस कारण कल्याणकारी योजनाओं के खर्चों को उठाने में मुश्किलों का सामना करना पड़ा।
- कुछ राज्यों ने कहा कि केन्द्र सरकार बिना विचार विमर्श के कई बाध्यकारी निर्देश राज्य सरकारों को जारी कर रही है।

यह कहा जा सकता है कि कुछ मुद्दो में गंभीर मतभेद होते हुये भी कोरोना के विरूद्ध केन्द्र और राज्यों ने मिलकर संघर्ष किया है। केन्द्र और राज्यों की सरकारें आपसी समन्वय के साथ इससे निपटती दिखी है। उम्मीद यही है कि कोरोना के बाद के दिनों में भी भारतीय राजनीति में यही सहयोगात्मक संघवाद दिख सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राय, निधि, "कोरोना वायरस से भारत की आर्थिक परेशानियां कितनी बढ़ी" बीबीसी, 13 मार्च 2020
2. कश्यप, देव "कोरोना वायरस : महामारी ने भारत की अर्थव्यवस्था पर गहरा निशान छोड़ दिया" अमर उजाला, 3 जून 2021
3. श्रीवास्तव, रोहित "कोरोना महामारी और भारतः क्या शिक्षा की तरह स्वास्थ को जनता के मौलिक अधिकार का दर्जा मिलेगा?" अमर उजाला 16 सितम्बर 2021
4. बादल, राजेश, "कोरोना और जीने का अधिकार : जरूरतमंद को समय पर मिले इलाज" अमर उजाला 30 अप्रैल 2021
5. मधुकल्या, अमृता "कोविड–19 राज्यों ने पीपीई खरीद पर केन्द्र के निर्देश का विरोध किया" हिन्दुस्तान टाइम्स, 10 अप्रैल 2020
6. बर्मन, अनिरूद्ध, "कोविड–19 भारतीय संघवाद को कैसे बदल रहा है" कार्नेगी इंडिया, 28 जुलाई 2020
7. खमरोई, अनुभव "संघवाद और कोविड–19 : केन्द्र के औचित्य के राष्ट्रीय महत्व का विश्लेषण" लॉ स्कूल नीति समीक्षा, 8 अगस्त 2020
8. राय, भूमिका "कोरोना वायरस ने भारतीय राजनीति को कितना बदला है" बीबीसी, 27 मई 2020
9. शेखर, हिमांशु "कोरोना वायरस भारतीय राजनीति को किस–किस तरह से प्रभावित कर सकता है? सत्याग्रह, 28 अप्रैल 2020

अध्याय २१

कोरोना महामारी में कोरोना योद्धाओं की भूमिका

श्रीमती सी.दीपलक्ष्मी राव

सहायक प्राध्यापक, प्राणीशास्त्र, शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा

सारांश

कोविड–19 महामारी ने पूरे दुनिया को घुटनो पर आने के लिए मजबूर कर दिया था। दुनिया में लाखो लोगों की इस वायरस ने जान ले ली। बहुत सारे लोग प्रतिदिन इससे संक्रमित हो रहे थे। इसका सिर्फ एक ही उपाय था और वह था सामाजिक दूरी। इसके साथ ही मुँह पर मास्क पहनना अनिवार्य कर दिया गया । भारत ने कोरोना महामारी से लड़ने के लिए 22 मार्च 2020 को लॉकडाउन घोषित किया और इस लॉकडाउन को कई बार बढ़ाया गया। कोरोना वायरस महामारी के प्रति जागृति और इससे डटकर मुकाबले में कोरोना योद्धाओं का विशेष योगदान हर जगह देखा गया है। कोरोना योद्धा सभी डॉक्टरों, स्वास्थ्यकर्मियों, पुलिस अधिकारियों, स्वच्छता कार्यकर्ताओं और उन सभी को कहा जाता हैं जो कोरोना वायरस या कोविड–19 के खिलाफ लड़ाई में शामिल हुये हैं। उनमें विशेषकर वे लोग शामिल हैं जिन्होंने इस संघर्ष में अपनी जान गंवाई है। इंडियन मेडीकल एसोसीएशन के 2 अक्तूबर 2020 को जारी आँकड़ों के मुताबिक कम से कम 515 डॉक्टर कोरोना वायरस से मुकाबला करते हुए अपनी जान गंवा चुके हैं। ट्रेंड नर्सेज एसोसीएशन आफ इंडिया के आँकड़ों के मुताबिक अगस्त 2020 तक कम से कम 20 नर्सें कोरोना वायरस की वजह से अपनी जान गंवा चुकी हैं जब कि 509 नर्सें रिपोर्ट करने के वक्त इसी वजह से बीमार रही हैं।

प्रस्तावना

दुनिया भर में कोरोना वायरस के प्रसार के दौरान पुलिस अधिकारियों को उनकी कई सकारात्मक सेवाओं के लिए याद किया जाता है। जून 2020 तक 788 पुलिसकर्मी कोरोना वायरस से पीड़ित बताए गए। जबकि इसी दौरान 300 पीड़ित सेहतमंद हो गए और दुबारा कार्य में शामिल हो गए। वर्णित दौर में 248 पुलिसकर्मी संस्थागत क्वारंटाइन में बताए गए जबकि 216 घरेलू क्वारंटाइन में बताए गए।

कोरोना काल में अपनी सेवायें देने वाले मृत पुलिसकर्मियों का सरकारी सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया।

इस मुश्किल घड़ी में सफाईकर्मी भी कई आवश्यक सेवाओं को पूरा करते आए हैं। उनमें सड़कों की सफाई, कचरे की निकासी, पानी की टंकियों की सफाई, प्रयोगशालाओं के अनुपयोगी सामग्रियों की सफाई वगैरा इसमें शामिल हैं। इसके लिए कई बार उन लोगों के पास ना तो सैनीटाइजर होता था और ना ही उनके पास चेहरे का मास्क होता था । इन तमाम लोगों के आँकड़े पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं हैं। भंगी या टॉयलेट से जुड़े सफाईकर्मियों की संख्या सही आँकना काफी मुश्किल है। सरकारी रिकार्ड के मुताबिक 1,82,000 लोग इस पेशे से जुड़े थे, जबकि मानवाधिकार से जुड़े लोगों से प्राप्त आंकड़ों के मुताबिक 7,70,000 लोग इस पेशे से जड़े हैं।

कोविड–19 महामारी के कारण हुई तालाबन्दी से स्वास्थ्य प्रणालियों पर दबाव बढ़ गया है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा. इन ठोस चुनौतियों के बावजूद, कई साहसी आशा कार्यकर्ताओं ने आगे आकर ये सुनिश्चित किया कि महामारी के दौरान महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य व अधिकारों की उपेक्षा न हो पाए. आशा' कार्यकर्ता का काम होता है – महिलाओं को अपने शिशुओं को अस्पताल में जन्म देने के लिए प्रेरित करना, बच्चों को टीकाकरण के लिये क्लीनिक में लाना, परिवार नियोजन को प्रोत्साहित करना, प्राथमिक उपचार के साथ बुनियादी बीमारी और चोट का इलाज करना, जनसांख्यिकीय रिकॉर्ड रखना और गाँव की स्वच्छता में सुधार करना. भारत में कोविड–19 की रोकथाम के लिए तालाबन्दी होने पर, शहरों में काम की कमी और जीविका के अनिश्चित साधन होने के कारण हजारों की संख्या में मजदूर वापस अपने गाँवो व घरों को लौटने लगे थे. हालाँकि गाँव में अपने काम के दौरान बहुत सी चुनौतियों का सामना आशा कार्यकर्ताओं को करना पड़ा. फ्रंटलाइन वर्कर के रूप में जगह–जगह जाने के कारण कई बार लोग उन्हें संक्रमण के डर से अपने घरों के अन्दर बुलाने से डरते थे. इस समस्या के हल के लिये कुछ मामलों में, आशा कार्यकर्ताओं ने गर्भवती महिलाओं तक सलाह और जानकारी देने के लिये पड़ोसियों का सहारा लिया, तो कभी वो महिलाओं से खिड़कियों से ही बात करके आवश्यक जानकारी दे आती थीं।

केंद्र सरकार ने हाल ही मे बीमा कवर स्वास्थ्य सेवा कर्मचारियों के लिए घोषणा की जो संक्रमित लोगो की सेवा कर रहे है। पुलिस वालों के लिए यह एक जोखिम भरा कार्य है क्योंकि इसमें वह ही नहीं बल्कि उनके परिवार वालों के लिए भी संक्रमण का खतरा होने की आशंका जताई जा गई। डॉक्टर और नर्सेज बिना अपनी परवाह किये मरीजो की सेवा में लगे रहे। इसके चलते बहुत से डॉक्टर और नर्सेज संक्रमित हो गए है। डॉक्टर और नर्सेज मन लगाकर मरीजों की सेवा कर उन्हें ठीक करने में जुटे रहे और अपना दायित्व निभाते रहे। कोरोना काल में डॉक्टर, नर्स, वार्ड बॉय, पैथोलोजिस्ट, सभी ने कोरोना योद्धा बनकर देश की सेवा की। सभी डॉक्टर और नर्स रात दिन जागकर कोरोना संक्रमित मरीजो की भरपूर सेवा करते

रहे है। उन्होंने जान जोखिम में डालकर अपने देश, समाज और मरीजों के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी की।

लॉकडाउन के वक्त सामान्य लोगों को असुविधा ना हो इसलिए आवश्यक आपूर्तियों को पूरा करने के लिए दूध, सब्जियां, अखबार इत्यादि का भली भाँती प्रबंध स्थानीय लोगों ने किया, इसलिए हमे किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ा। यह इसलिए मुमकिन हो पाया क्योंकि सभी लोगों ने कोरोना योद्धा बनकर हमे सुविधाएं प्रदान की। दिन भर पानी और बिजली, दूरसंचार और बैंकिंग जैसी सुविधा लॉकडाउन की विषम परिस्थितियों में बंद नहीं हुयी। यह इसलिए नहीं हुआ क्योंकि इससे जुड़े सारे कर्मचारियों ने इस आपातकालीन विषम परिस्थितियों में बिना रुके एक जुट होकर काम किया। इन्हे हम कोरोना काल में योद्धा के रूप में देखते है जिनकी वजह से आम आदमियों को कठिनाईओं का सामना नहीं करना पड़ा।

बैंक कर्मचारी भी जोखिम उठाकर बैंक में जाकर अपना कर्तव्य निभा रहे थे ताकि देश की जनता को बैंक और पैसे संबंधित कोई भी मुश्किल ना हो। बैंको को नियमित रूप से सनीटाईज किया गया ताकि संक्रमण का खतरा ना हो।

प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना काल में निरंतर कार्य करने वाले योद्धाओं का सम्मान किया है। कोविड–19 के इस संकटकाल में प्रतिदिन स्वास्थ्य कार्यकर्ता, स्वच्छता कार्यकर्ता ,पुलिस बल और सुरक्षाकर्मियों ने मेहनत और लगन के साथ समाज और हमारे प्रति जिम्मेदारी पूरी की व बिना थके और बिना रुके समाज के प्रति अपना कर्तव्य निभाया। इन योद्धाओं की हमे कदर और सम्मान करना चाहिए।

हम सलाम करते है

हम सलाम करते है उन स्वास्थकर्मी, पुलिस, बैंक कर्मचारी और दैनिक जीवन से जुड़ी चीजे प्रबंध कराने वाले लोगों को जिन्होंने संकटकाल में हमे सुरक्षित रखा। इनकी वजह से हम अपने घरो में स्वस्थ और सुरक्षित रहे। भारत सरकार ने शिक्षा वर्ष 2020–2021 के दौरान एम.बी.बी.एस और बी.डी.एस कोर्सों में देश के हर विश्वविद्यालय के केन्द्रीय कोटे में मृत कोरोना योद्धाओं के बच्चों के लिए पाँच सीटों के आरक्षित किए जाने का ऐलान किया है। इसके अलावा कई सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों ने इन व्यक्तियों के लिए विशेष रियायतों का ऐलान किया। चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में कोरोना योद्धाओं की संतान के लिए फीस में 10 प्रतिशत कमी और 5 प्रतिशत आरक्षण का एलान किया गया है। कोरोना योद्धाओं की सेवा को देशभर में सराहा गया और उनकी सेवा को सलाम पेश किया गया। उनमें इंटरनैट पर भारत तिब्बत सीमा पुलिस के सिपाही विक्रमजीत सिंह का गीत हिम्मत ना हार काफी लोकप्रिय हुआ। राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रम्प और प्रथम महिला मेलानिया ट्रम्प ने अप्रैल 2020 में कई कोरोना वायरस योद्धाओं को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया। उनमें से एक भारतीय मूल की छात्रा और उसके दो सहपाठियों के लिए पुरस्कार भी

थे, जो लगातार डॉक्टरों, नर्सों और अग्निश्रमिकों को ग्रीटिंग कार्ड और कुकीज भेज रहे थे।

संदर्भः–

1- https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1620468
2- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A5%8B%E0%A4%B0%E0%A5%8B%E0%A4%A8%E0%A4%BE_%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A7%E0%A4%BE
3- https://hindi-essay.com/corona-ke-yodha-par-nibandh/
4- https://news.un.org/hi/story/2020/07/1029251

अध्याय २२

कोरोना महामारी और व्यापार नैतिकता

श्रीमती शोभा प्रजापति
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, श्री अग्रसेन कन्या पी0जी0कालेज, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

कोरोना वायरस (कोविड–19)सम्पूर्ण मानवता के लिए एक ऐसी त्रासदी है जिसने सम्पूर्ण विश्व के लगभग 150 देशो में अपनी भयावहता फैला रखा हैं। आज विश्व में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो इस महामारी से परिचित न हो। अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, कोरिया जैसी विकसित सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था को इस महामारी ने पंगु बना दिया। कोरोना वायरस एक ऐसा अदृश्य, अतिसूक्ष्म वायरस है जिसका सामना करना आधुनिक वैज्ञानिक, तकनीकी प्रगति तथा चिकित्सा व्यवस्था के द्वारा अत्यन्त दुर्गम प्रतीत हो रहा है। इसकी भयावहता के कारण ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित किया। इस वायरस के संक्रमण के प्रारम्भ होने के 2 वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद आज भी सम्पूर्ण विश्व इसकी भयावहता से डरा हुआ है।

कोरोना वायरस या कोविड–19 संक्रमण का प्रारम्भ दिसम्बर 2019 से चीन के वुहान शहर से हुआ। डब्लू0एच0ओ0 के अनुसार इस संक्रमण के परिणाम स्वरूप खाँसी,बुखार व गले में खरास जैसी समस्यायें उत्पन्न होती है और बाद में इससे फेफड़े में संक्रमण व निमोनिया की समस्या उत्पन्न होकर यह वायरस प्राणघातक रूप ले लेता है। यह वायरस खॉसी तथा छींक द्वारा निकलने वाली छोटी–छोटी बूंदों से (ड्रापलेट्स) से एक व्यक्ति से दूसरे में फैल सकता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस वायरस के संक्रमण के स्वरूप में हमेशा परिवर्तन देखने को मिला जिसके कारण इसकी पहचान व इलाज की समस्या हमेशा बनी रही।

कोरोना वायरस (कोविड–19) की भयावहता से भारत भी अछूता नहीं है। भारत में कोरोना वायरस का पहला मामला 30 जनवरी 2020 को केरल में सामने आया था। जहां पर 20 साल की युवती जो चीन के वुहान शहर से आयी थी। वह संक्रमित पाई गई। कोरोना वायरस से भारत में पहली मौत भारत के कर्नाटक के कलबुर्गी में 76 वर्ष के एक व्यक्ति की हुई, जो सऊदी अरब से भारत आया था। उसे साँस लेने में तकलीफ, खाँसी तथा निमोनिया की शिकायत हुई थी। शुरूआती जांच में वह पाजिटिव पाया गया। 10 मार्च को उस व्यक्ति की मौत हो गई। इसके बाद इस बीमारी का प्रसार होने लगा। कोरोना महामारी के प्रसार को रोकने के लिए

भारत में 22 मार्च, 2020 को एक दिन के लिए देशव्यापी कर्फ्यू की घोषणा की गयी। इसके पश्चात् 25 मार्च से सम्पूर्ण देश में पूर्ण लॉकडाउन लगा दिया गया जो कई महीनों तक लागू रहा। भारत में कोरोना की पहली लहर में मृत्युदर काफी कम रही। दिसम्बर 2020 तक भारत में लगभग एक करोड़ व्यक्ति संक्रमित हो चुके थे। जबकि पूरी दुनिया में इस अवधि में 8 करोड़ व्यक्ति संक्रमित हुए थे। इस समय तक भारत में 1.5 लाख व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी थी। जबकि पूरी दुनिया में इस बीमारी से 17 लाख लोग इस अवधि में मृत्यु को प्राप्त हुए।

कोरोना की पहली लहर के नरम पड़ जाने के बाद भारत में स्थिति धीरे धीरे सामान्य होने लगी लॉक अनलॉक में बदलने लगा। परन्तु पुनः कोरोना वायरस के मामले बढने लगे तथा मार्च व अप्रैल के पश्चात् कोरोना की दूसरी लहर ने खतरनाक रूप ले लिया। अंग्रेजी अखबार 'द इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुातबिक सार्वजनिक नीति एवं स्वास्थ्य प्रणाली के विशेषज्ञ डा0 चन्द्रकान्त लहरिया कहते हैं कि कोरोना महामारी की दूसरी लहर में कोविड–19 तेजी से फैला तथा इसकी बीमार करने की क्षमता भी पहले से ज्यादा खतरनाक रही है। जब लोग अपनी जीवन शैली में असावधान हो जाते हैं तो वायरस के लिए स्थितियाँ और अधिक अनुकूल हो जाती है। भारत में कोरोना महामारी की दूसरी लहर ने अत्यधिक कहर बरपाया। 4 लाख से अधिक लोग रोजाना संक्रमित हो रहे थे तथा प्रतिदिन हजारों काल कवलित हो रहे थे। दूसरी लहर के समय यह महामारी शहरों की सीमा को लांघकर गांवों तक फैल चुकी थी। सारा स्वास्थ्य तंत्र पंगु महसूस कर रहा था। इसी बीच 15 अप्रैल से 29 अप्रैल के बीच हुए पंचायत चुनावों ने कोढ़ में खाज का काम किया। इस चुनाव में दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, सूरत, बंगलौर, अहमदाबाद सहित अनेक नगरों व महानगरों से लोग अपने भाई बन्धु व प्रत्याशी के पक्ष में वोट डालने आये। ऐसे लोग पृथकवास में रहने के स्थान पर सीधे चुनाव प्रचार व चुनावी दावतों में शामिल होने लगे व कोविड–19 के दिशा निर्देशों का पालन करना आवश्यक नहीं समझा। जिससे इस महामारी के फैलने के लिए स्थितियॉ अनुकूल हो गयी। कोरोना की दूसरी लहर के दौरान सारा स्वास्थ्यतंत्र पंगु हो गया।

दूसरी लहर के कमजोर पड़ते ही तीसरी लहर की अनुगूंज सुनाई पड़ने लगी। लॉकडाउन के खुलते ही बाजारों में उमड़ती भीड़ तथा कोरोना प्रोटोकाल के टूटते हुए नियमों को देखते हुए माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली ने स्वतः संज्ञान लेते हुए अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि यदि ऐसे लापरवाही होती रही तो कोरोना की तीसरी लहर को बढ़ावा मिलेगा और फिर ईश्वर भी हमें बचा नहीं पायेगें।

कोरोना महामारी की दूसरी लहर के डेल्टा वेरिएंट के आतंक से अभी लोग पूरी तरह सम्भले भी नहीं थे कि नये साल के आगमन के साथ कोरोना के ओमिक्रान वेरिएंट ने दस्तक दे दी। कोरोना की तीसरी लहर को बच्चों के लिए खतरनाक बताया गया किन्तु राहत यह रही कि इस वेरिएंट से बहुत अधिक नुकसान नहीं हुआ। कोरोना वायरस ने समाज के हर वर्ग को प्रभावित किया। समाज में जहॉ

पहले से ही गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, सांस्कृतिक व सामाजिक विघटन की समस्यायें विद्यमान थी। इस महामारी ने इन समस्याओं की वृद्धि में आग में घी डालने का काम किया।

व्यापार नैतिकता पर कोरोना महामारी का प्रभाव

प्रत्येक समाज में व्यवहार के कुछ नियम प्रचलित होते हैं जिन्हें समाज की संस्कृति का अनिवार्य अंग माना जाता है। यह नियम स्पष्ट करते हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में क्या उचित है और क्या अनुचित। भारतीय संस्कृति की पहचान वसुधैव कुटुम्बकम, विश्वबन्धुत्व, परोकार, दया, सहयोग, त्याग, अपरिग्रह जैसे उच्च मानवीय मूल्यों से होती है।भौतिक व पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध में जहाँ नैतिकता का ह्रास हुआ है वहीं इस महामारी के कारण नैतिक मूल्यों का और अधिक अवमूल्यन हुआ है। यह अवमूल्यन हमें पारिवारिक स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक देखने को मिलता है। किसी भी समाज में महामारी अथवा कोई सामुदायिक संकट आने पर आपसी सहयोग की आवश्कयता होती है। ताकि उस संकट पर विजय प्राप्त किया जा सके। किन्तु इस महामारी के समय नातेदारों, रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी से मुँह मोड़ लिया। कष्ट के समय तो सबसे बड़ा सहारा अपनों के अपनत्व और भागीदारी से ही मिलती है। इस महामारी के समय अनेक समूहों व संस्थाओं ने पीड़ितों व असहायों को सहायता पहुँचाने हेतु दिन रात एक कर दिया। कुछ ऐसे संवेदनशील लोग भी थे जिन्होंने विदेश में रहते हुए अपने देश के लोगो की यथासंभव मदद की। किन्तु इसके विपरीत ऐसे लोगों की भी कमी नहीं थी जिन्होंने कालाबाजारी व मुनाफाखोरी से समाज व राष्ट्र की छवि को धूमिल किया। विभिन्न सेवाओं व व्यवसायों में संलग्न व्यक्तियों ने अपने मुनाफे के लिए व्यवसाय से सम्बन्धित नैतिकता का पूरी तरह से परित्याग कर दिया। इस प्रकार की अनैतिकता हमें विभिन्न सेवाओं व व्यवसायों चाहें आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति हो अथवा चिकित्सा जैसे पवित्र पेशे में देखने को मिला।

इस महामारी की दूसरी लहर के समय कोविड–19 के तांडव से श्मशान घाटों की चिताओं की आग ठण्डी नहीं हो रही थी, वही ऐसे समय में कुछ स्वार्थी लोग इस आपदा को भी अवसर में बदलने में तल्लीन थे। अनेक व्यापारी आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी करके, वस्तुओं की कृत्रिम किल्लत दिखाकर दोगुने से भी ज्यादा कीमत वसूलते दिखे। जबकि शासन द्वारा लगातार दिशा निर्देश जारी किया जात रहा कि देश में न तो आवश्यक वस्तुओं की कमी है और न ही उसकी आपूर्ति बाधित होगी, लेकिन स्वार्थी दुकानदारों ने इस आपदा को भी अवसर मानकर मनमाना पैसा वसूला।

चिकित्सा जैसे पवित्र पेशे में लगे कुछ स्वार्थी चिकित्सकों ने अपने कुकृत्यों से इस पवित्र पेशे को कलंकित किया। अनेकों चिकित्सक व स्वास्थ्य कर्मियों ने इस महामारी के समय अपने जान की परवाह न करते हुए पीड़ित लोगों का उपचार किया। कई चिकित्सक व स्वास्थ्यकर्मी पीड़ितों की चिकित्सा करते हुए संक्रमित

होकर मौत के मुँह में चले गये लेकिन कुछ चिकित्सकों ने पीड़ित व्यक्तियों से सामान्य कीमत पर मिलने वाली दवाओं के भी लाखों–लाखों रूपये कीमत वसूल किये। यहॉ तक कि मरीजों के उपचार में काम आने वाली आक्सीजन सिलेण्डर की भी कालाबाजारी की गयी। आक्सीजन सिलेण्डर का उपयोग कोरोना से गंभीर रूप से पीड़ित मरीजों के उपचार में होता था। किन्तु इसकी आपूर्ति में लगे स्वार्थी व्यापारियों ने इस आपदा के समय में भी निजी लाभ कमाने के लिए जरूरतमंद लोगों से कई गुना कीमत वसूल किया। कालाबाजारी किस सीमा तक बढ़ गयी। इसका अनुमान हम इसी से लगा सकते हैं कि दिल्ली हाईकोर्ट को यह तल्ख टिप्पणी करनी पड़ी कि ''अगर कोई भी अधिकारी अथवा कोई भी व्यक्ति आक्सीजन की आपूर्ति को बाधित करने की कोशिश करता है तो उसे फांसी पर लटका देंगे।''

इसी प्रकार रेमडेसिविर इंजेक्शन (कोरोना के इलाज में काम आने वाला इंजेक्शन)की कालाबाजारी में कई चिकित्सक व अन्य स्वास्थ्य कर्मी भी पकड़े गये। यहॉ तक कि तत्कालीन समाचार पत्रों में ऐसी घटनायें भी पढने को मिली जब मरीजों को रेमडेसिविर इंजेक्शन के स्थान पर नकली इंजेक्शन, देकर उसकी मोटी–मोटी कीमत वसूल की। अमर उजाला नई दिल्ली के अंक में एक घटना छपी मिली। जिसमें चीउइकेमी नामक ऐसे व्यक्ति को पकड़ा गया जो नाइजीरिया का रहने वाला था और तीन साल पहले मेडिकल वीजा पर भारत आया था। वीजा की अवधि समाप्त होने के बाद यही पर रहकर धंधा कर रहा था। कोरोना महामारी के दौरान वह कोरोना संक्रमितों को रेमडेसिविर इंजेक्शन उपलब्ध करवाने के नाम पर ठगी कर रहा था, जिसे पुलिस द्वारा पकड़ा गया।

एम्स जैसे प्रतिष्ठित अस्पताल का एक पूर्व चिकित्सक रेमडेसिविर इंजेक्शन का कालाबाजारी करते पकड़ा गया। इसी तरह सुभारती मेडिकल कालेज मेरठ में मरीजसे रेमडेसिविर इंजेक्शन लेकर भी मरीज को डिस्टिल वाटर का इंजेक्शन डॉक्टरों व अस्पताल कर्मियों द्वारा लगा दिया गया।

व्यापार से सम्बन्धित नैतिकता की सबसे निम्न स्थिति हमें उस समय देखने को मिली, जब अस्पताल में मृत्यु हो जाने पर लाशों को श्मशान तक पहुँचाने के लिए एम्बुलेंस चालकों ने मनमाना पैसा वसूल किया, इससे भी भयावह स्थिति तब हो गयी जब लाशों को जलाने के लिए लकड़ी बेचने वाले दुकानदारों व कर्मचारियों ने लकड़ी की कालाबाजारी शुरू कर दी। कालाबाजारी इतनी बढ़ गयी कि प्रशासन को लकड़ी व लाशों को जलाने का रेट निर्धारित करना पड़ा। मौत का तांडव मचाने वाली इस महामारी पर विजय प्राप्त करने के लिए जहॉ विश्व के सभी देश एक दूसरे का आपसी सहयोग कर रहे थे वहीं कुछ स्वार्थी व्यापारी, दुकानदार व विभिन्न सेवाओं में लगे लोग इस विश्वव्यापी आपदा को भी अवसर में बदलने में जुट गये। इन सबके बीच कुछ ऐसे संगठन संस्थायें व व्यक्ति भी रहे, जिन्होंने इस महामारी के समय लोगों की सहायता करने में अपने जीवन को भी संकट में डालने से नहीं चुके। वास्तव में कोई भी महामारी अथवा विपदा आती है, तो हम पहले से उसके लिए तैयार नहीं होते। अतः अकेले सरकारी तंत्र ही अपने कर्तव्य की पूर्ति नहीं कर

सकता है। पुलिस तथा प्रशासनिक व्यवस्था जहॉ इस महामारी से निपटने में व्यस्त थी, वहीं कालाबाजारियों को अपनी स्वार्थसिद्धि हेतु उपयुक्त अवसर मिल गया।

कोविड–19 के खिलाफ टीकाकरण–

कोरोना वायरस से बचाव हेतु वैक्सीन के निर्माण के लिए विश्व के अनेक देशों के चिकित्सकों, वैज्ञानिकों व तकनीकी विशेषज्ञों के अथक प्रयास से कोविड–19 की वैक्सीन बनाई गयी। जिससे निराशा भरे क्षणों में आशा की किरण दिखाई दी। 8 दिसम्बर 2020 को, मार्गरेट कीनन नामक एक 90 वर्षीय उत्तरी आयरिश महिला पहली महिला बनी, जिसे कोविड–19 का टीका लगाया गया।

भारत में कोविड–19 का पहला मामला आने के लगभग एक वर्ष बाद 16 जनवरी को भारत में सबसे बडे टीकाकरण अभियान की शुरूआत हुई, जिससे जीवन को अस्त–व्यस्त करने वाली एवं जानलेवा इस महामारी से उबरने की राह पर चलने की शुरूआत हुई। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के 34वर्षीय सफाई कर्मी मनीष कुमार भारत में कोविड–19 की वैक्सीन लेने वाले पहले व्यक्ति बने। स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा इस अभियान को तीन चरणों में चलाया गया। जिसमें सबसे पहले स्वास्थ्य कर्मियों, फ्रंटलाइन कार्यकर्ता तथा आवश्यक सेवाकर्मियों का टीकाकरण किया गया। दूसरे चरण में 50 वर्ष से अधिक उम्र तथा विभिन्न गंभीर बीमारियों से ग्रस्त लोगों का टीकाकरण किया गया।

21 अक्टूबर 2021 तक 100 करोड़ लोगों को टीके का ऑकड़ा भारत ने हासिल कर लिया था। प्रारम्भ में लोग टीका लगाने से घबरा रहे थे। इसलिए उन्हें विभिन्न प्रचार माध्यमों द्वारा टीका लगवाने हेतु जागरूक किया गया।

18 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को टीके की दो डोज लगने के पश्चात कई महीनों के विमर्श के बाद 3 जनवरी 2022 से 15 से 18 वर्ष के किशोरों को टीका लगाने की शुरूआत हुई।

10 जनवरी 2022 को स्वास्थ्य कर्मी, फ्रंटलाइन वर्कर्स तथा 60 साल से अधिक आयु के लोगों को कोरोना की तीसरी बूस्टर डोज लगने की शुरूआत हुई।

भारत में टीकाकरण हेतु 8 वैक्सीन को इस्तेमाल की मंजूरी मिल चुकी है। लेकिन इनमें से सिर्फ 3 वैक्सीन कोविशील्ड, कोवैक्सीन और स्पूतनिक –बी का ही इस्तेमाल हो रहा है। इसमें भी सबसे अधिक कोविशील्ड और कोवैक्सीन ही लगाई जा रही है। 15 से 18 वर्ष के किशोरों को केवल भारत बायोटेक की ''कोवैक्सीन'' देने की ही सहमति बनी है। इसके अतिरिक्त 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को भी कोरोना का टीका देने हेतु स्वास्थ्य मंत्रालय में गहन विमर्श चल रहा है।

कोरोना वायरस ने जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया तथा तत्सम्बन्धित समस्याओं में वृद्धि की इस महामारी के समय अनेक लोगों का रोजगार छूट जाने के कारण उनके सामने रोजी–रोटी की समस्या उत्पन्न हो गयी। उनकी जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति होना कठिन हो गया। आर्थिक तंगी के कारण बहुत सारे बच्चों की शिक्षा बीच में ही अधूरी छूट गयी। अनेक लोग मानसिक तनावों से ग्रस्त

हो गये, वहीं कुछ लोग इस भयावह आपदा को अवसर में बदलने के लिए मानवीय पतन की चरम सीमा तक पहुंच गये। इन सबके बीच हमें कुछ सकारात्मक तस्वीरें भी देखने को मिली। बहुत से व्यक्तियों, संस्थाओं और संगठनों ने इस महामारी की भयावहता के बीच अपने परोपकार के कार्यो द्वारा मानवता को जीवित रखने का प्रयास किया। जब भी कोई महामारी या अचानक कोई समस्या उत्पन्न होती है तो न तो हम उसके लिए तैयार नही होते हैं और ना ही हमारी प्रशासनिक व्यवस्था। अतः किसी भी महामारी का सामना हम आपसी सहयोग व सामंजस्य से ही कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Ministery of health@mohfw-india.
2. https://indianexpress.com
3. htpps://economtimes.com 5 May,2020
4. htpps://the wire.in (7 June 2020)
5. htpps://wwwdowntoearth.org.in (28 March 2021)
6. दैनिक जागरण,वाराणसी 25 अप्रैल 2021 पृष्ठ संख्या–13
7. दैनिक जागरण,वाराणसी 13मई 2021 सम्पादकीय
8. आज तक,नई दिल्ली 20 जनवरी 2022
9- htpps://www.bbc.com>hindi<india

अध्याय २३

कोविड-19 और सामाजिक व्यवहार

डॉ. ध्रुव कुमार दीक्षित
सप्राध्यापक- समाजशास्त्र, केसरवानी महाविद्यालय, जबलपुर

सारांश :
नवम्बर 2019 से कोविड–19 की चर्चा प्रारंभ हुई। चीन के बुद्धान प्रांत से आ ही लुकी छुपी खबरों से जनसामान्य में एक वायरस की चर्चायें हो रही थी। भारत ही नहीं पूरा विश्व इसे सामान्य व्यास के रूप में ले रहा था। भारत में भी चर्चा थी कि 1% या 2% ही इसका असर होगा। 135 करोड की आबादी में 1% एक तेरह लाख पचास हजार हो तो प्रभावित होगें। लेकिन जनवरी 2020 के प्रारंभ होते ही विश्व को लगने लगा कि ये साामान्य वायरस नहीं है। इतिहासकार बताने लेगे कि हर 100 वर्ष बाद मानव सभ्यता को महामारी का सामना करना पड़ता है। 1918–19 को महामारी के 100 वर्ष होते ही अब हमे इस महामारी कोरोना का सामना करना होगा। मीडिया में इसकी संक्रामकता पर चर्चा की जाने लगी। चीन के बाद यूरोप, अमेरिका इसके प्रभाव के आगे बेबस हो गये। इसी बीच 30 जनवरी को त्रिवेन्द्रम में कोविड–19 संक्रमण का पहला शिकार मिलने से भारत में भी हलच लमच गई और अंततः 10 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड–19 वायरस को महामारी घोषित कर सभी देशों के लिये सुरक्षा उपायों की गाईड लाईन घोषित कर दी। 21 मार्च 2020 को मध्यप्रदेश का प्रामि वायरस संक्रमण जबलपुर शहर में मिलते ही जिला प्रशासन ने कर्फ्यू लगा दिया और 24 मार्च को प्रधानमंत्री के आव्हान् पर देश में लाकडाउन लगाकर 135 करोड़ आबादी को घरों में कैद कर दिया। लाकडाउन हम सभी के लिये नई शब्दावली थी। अपने ही घर में कैद होना एक नया अनुभव हमें मिला और इंटरनेट, टीवी तक सभी परिवार सिमट गये। ये एक नया सामाजिक परिवर्तन था। इस सामाजिक परिवर्तन में ना तो उत्पादन के साधनों में बदलाव हुआ ना ही संस्कृति में और ना ही तकनीक में बदलाव हुआ लेकिन वैश्विक स्तर पर संपूर्ण मानव व्यवहार में परिवर्तन हुआ। हम सभी जानते है कि सामाजिक परिवर्तन आंतरिक और बाह्य कारकों से हेाता है। इस पर हुये सामाजिक परिवर्तन में भी बाह्य कारक ही महत्वपूर्ण है। मानवीय विकास की महत्वकांक्षा ने नित नये–नये प्रयोगों के कारण जहाँ विश्व में पर्यावरणीय संकट है वही विकास की हौड में आगे निकलने

और विश्व विजेता बनने के लिये हम मानवीय मूल्यों को भूलते जा रहे है जिसका परिणाम कोरोना वायरस है।

शब्द कुंजी: कोविड–19, वायरस, कोरोना, सामाजिक परिवर्तन, महामारी, वैश्विक बदलाव, मानव व्यवहार

कोविड–19 और सामाजिक व्यवहार शोध कार्य 2020 से मानव व्यवहारों में हो रहे परिवर्तनों को विवेचित करता है। 10 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने संपूर्ण मानवता को सचेत करते हुये कोविड–19 के कारण फैल रहे संक्रमण की वैश्विक महामारी घोषित किया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी के बचाव के लिये विभिन्न दिशा निर्देश लागू किये। वर्तमान में संपूर्ण विश्व कोरोना महामारी से संघर्षरत है। इस आपदा ने लगभग पूरे विश्व के मूल चरित्र को प्रभावित किया है। समाज की सहज गतिशीलता में एकाएक ब्रेक लग गया। इस वैश्विक आपदा के क्षेत्र में दुनिया के स्थापित सत्यों का नकाब उतार कर उनकी सच्चाई सामने लाकर उन्हें गलत साबित कर हम सभी को परिवार, और रिश्तों की प्रकृति, गरिमा की अहमियत समझ रही है। भौतिकवाद की दौड में भगते–भागते हम इन सबसे बहुत दूर निकलते चले गये। मानव जीवन मूल्यों में संबंध की अहमियत अर्थ (रूपये) ने ले ली थी, लेकिन कोरोना ने बता दिया कि जीवन क्या है ? इस वैश्विक महामारी की वजह से जीवन रूका नहीं बल्कि उसका रूप बदला है। इसका बदलाव ने व्यापक स्तर पर परिवर्तन किया है।

लॉकडाउन ने उच्च शिक्षा के मूल चरित्र में भी बड़े बदलाव किये है। लॉकडाउन में पूरा विश्व अपने घर में सिमट गया है। ऐसे में डिजीटल शिक्षा के नये विकल्प विकसित किये गये। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में तेा वह नूतन रूपांतरण एक अवसर के रूप में आया है। डिजीटल शिक्षा ने हमारे सामने कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हें आज शिक्षा की गुणवत्ता, परीक्षा मूल्यांकन, विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करने और शहरी–ग्रमीण समाज को डिजीटल दुनिया से जोड़ना एक बहुत बड़ी चुनौती है।

लॉकडाउन ने शिक्षा ही नहीं संपूर्ण मानव व्यवहार को बदला है। जीवन जीने की एक नई पद्धति विकसित होने के साथ परिवार का महत्व भी रहा है। वर्क फ्राम होम की संस्कृति के कारण पारिवारिक रिश्तों में सुदृढ़ता और प्रगाढ़ता आई है। भागमभाग भरी जिंदगी में जहाँ गरीब, मध्यम और उच्च वर्गीय, ग्रामीण–शहरों सभी ना तो स्वयं के लिये ना परिवार के लिये समय निकाल पा रहे थे। हम अपने शौक भी पूरे नहीं कर पा रहे थे लेकिन लॉकडाउन ने हर व्यक्ति को जहाँ समय दिया वही व्यक्ति अपनी ख्वाहिशों को पूरा करने लगा। हमने इस दौर में था परिवार और नातेदारी को जनानने के साथ ही साथ इनसे जुड़ाव भी महसूस किया। पुनः संयुक्त परिवार योग आध्यात्म भारतीय जीवन शैली का महत्व देश–दुनिया ने समझाा हाथ मिलाने की जगह नमस्कार के महत्व को पाश्चात्य संस्कृति ने भी अपनाया। इम्यूनिटी बढ़ाकर वायरस से लड़ने के लिये योग, आयुर्वेद, काढ़ा और दादी–नानी माँ के घरेलू

नुस्खे हमारी दिनचर्या का अहम हिस्सा बन गये। स्वच्छता, आध्यात्म, आयुर्वेद, योग की भारतीय संस्कृति को विश्व ने स्वीकार कर कोरोना से लड़ाई प्रारंभ को।

कोरोना और सामाजिक व्यवहार के अध्ययन हेतु प्रस्तुत शोध जबलपुर महानगर में किया गया। जबलपुर महानगर के 50 शिक्षित लोगों को टेलीफोन पर सर्वेक्षण कर प्राप्त तथ्यों का संकलन और विश्लेषण निम्नाकिंत उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये किया।

1. कोरोना से मानव व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में हुये बदलाव को जानना शिक्षा में, विवाह में, कार्य संस्कृति में सम्बन्धों में।
2. कोरोना में परिवार व्यवस्था में आये बदलाव को जानना।
3. वैश्विक महामारी के सामाजिक प्रभावो को जानना।

अध्ययन के उद्देश्यों के लिये टेलीफोनिक साक्षात्कार में उत्तरदाताओं का वर्गीकरण निम्नानुसार था –

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
आयुवर्ग 20–30	16	32
31–40	18	36
41–से ऊपर	16	32
योग	50	100

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
शैक्षणिक स्तर हाईस्कूल	10	20
स्नातक	25	50
स्नात्तकोत्तर एवं अधिक	15	30
योग	50	100

उत्तरदाता	आवृत्ति	प्रतिशत
आर्थिक स्तर मासिक आय		
10000 से कम	18	36
10001–20000 तक	22	44
21000 से अधिक	10	20
योग	50	100

सर्वेक्षण में सम्मिलित उत्तरदाताओं के वैयक्तिक वर्गीकरण से स्पष्ट होता है कि 20 से 30 आयु वर्ग के 32%ए 31 से 40 आयु वर्ग के 36%, और 41 से ऊपर के 32% है। 20% उत्तरदाता हाईस्कूल 50% स्नातक और 30% स्नात्तकोत्तर से अधिक शिक्षित है वही 36ः की मासिक आय 10000 रूप से कम, 44ः 10001 से 20000 रूपये एवं 20% की 21000 रूपये से अधिक आय है।

अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये पूछे गये प्रश्नों के उत्तरों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है –

कोरोना और मानव व्यवहार में बदलाव

बदलाव	हाँ	प्रति.	नहीं	प्रति.	योग	प्रतिशत
शिक्षा क्षेत्रों में	50	100	00	00	50	100
विवाह में	42	84	08	16	50	100
कार्य संस्कृति में	18	36	32	36	50	100
सम्बन्धों में	35	78	11	22	50	100
पारिवारिक संबंधो में	37	74	13	26	50	100
पडोसी व्यवहार में	44	88	06	12	50	100
दैनिक व्यवहार में	36	72	14	28	50	100
खान–पान में	42	84	08	16	50	100

कोरोना अर्थात् कोविड–19 के कारण मानव व्यवहार में नया बदलाव हुआ है इसे जानने के लिये उत्तरदाताओं से शैक्षणिक, वैवाहिक, कार्य संस्कृति, सामाजिक संबंन्धो, पारिवारिक संबंधों, दैनिक व्यवहार आदि में हुये परिवर्तन के विषय में पूछने पर ज्ञात होता है कि शिक्षा क्षेत्र में शत प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि बदलाव हुआ। आज आनलाईन शिक्षण, आनलाईन यू–ट्यूब चैनल्स में पाठ्य सामग्रों की उपलब्धता के कारण विद्यार्थियों के लिय शिक्षा सरल और सहज हुई है। लेकिन अधोसंरचना की उत्कृष्टता ना होने जैसे इंटरनेट की कमजोरी, मंहगे स्मार्ट फोन आदि से शैक्षणिक गुणवत्ता प्रभावी हुई है।

84% उत्तरदाताओं का मानना है कि विवाह में बदलाव हुआ है आज विवाह में सीमित संख्या और दिखावे की प्रवृत्ति में बदलाव आया है वही 16: का मानना है कि वैवाहिक बदलाव क्षणिक था। संक्रमण के घटते ही पूर्ववत विवाह में दिखावा, भीड़–भाड होने लगी है।

64% उत्तरदाताओं का कहना है कि कार्य संस्कृति में कोई बदलाव नहीं हुआ है वही 15% ने बदलाव को स्वीकार किया है। 64: का कहना है कि आई. टी. कम्पनी में ही वर्क फ्राम होम की संस्कृति प्रारंभ हुई है, आन लाईन किराना, खाद्य पदार्थों की उलब्धता कराई जा रही है लेकिन शेष कार्यो के लिये घर के बाहर निकलना ही पड़ता है स्कूल–कॉलेज की प्रत्यक्ष शिक्षा के सामने घर से वीडियों व्याख्यान कारगर नहीं है 75: उत्तरदाताओं ने बताया कि कोरोना के कारण हमारे सम्बन्धों में दूरी आ गई है। संक्रमण के डर के कारण हम दूर रखने लगे है। हमारे सम्बन्ध अब डिजीटल हो गये है। जिसमें अपनापन घटता जा रहा है। 74: का मानना है कि पारिवारिक सम्बन्ध मजबूत हो रहे है। परिवार का महत्व बढ़ा है। वर्क फ्राम होम के कारण बच्चे घर में रहकर ही कार्य कर रहे है संक्रमण से बचाव के कारण अब घर पर व्यक्ति ज्यादा समय व्यतीत कर रहा है जिससे पारिवारिक संबंधों में निकटता आई है।

44: उत्तरदाताओं का मानना है कि अब पड़ोसी के साथ हमारे प्राथमिक सम्बन्ध, द्वितीय संबंधों ने परिवर्तित हो गये है। हम पडौस को अपने परिवार का सदस्य नहीं मानतें। पडौसी से दूरी बढ़ गई है। कोरोना संक्रमण ने पड़ोसी व्यवहार बदल गया। कोविड पॉजीटिव व्यक्ति से दूरी बढ़ गई। मृत्यु में लोगो ने दूरी रखी, खिड़की से ही मृतक की श्रद्धाजली अर्पित कर दी। घरो में आना–जाना, लेने–देन समाप्त सा होता जा रहा है।

72% का मानना है इस वैश्विक महामारी के कारण मानव के दैनिक व्यवहार परिवर्तित हो गये है सेनेटाईजर, मास्क,योग, सुबह–शाम घूमना, व्यायाम, कम्प्यूटरीकृत होना, खान–पान में बदलाव, आर्युवेद को प्राथमिकता देना, गर्म पानी, तुलसी का काढत्रा, मसालों का प्रयोग, स्वच्छता आदि हमारे दैनिक व्यवहार के नियमित अंग बन गये है। फिजूलखर्ची पर रोक लगी है। 84% ने बताया कि कोरोना के कारण खान–पान भी बदला है। आज घर के खने की प्राथमिकता दी जा रही है। संक्रमण से बचाव के कारण रेस्ट्रोरेन्ट संस्कृति में गिरावट आई है। ताजे भोजन की प्राथमिकता दी जा रही है।

कोरोना, सामाजिक परिवर्तन का एक माध्यम बना है स्वच्छता एक सामुदायिक जीवन क्रिया बन गई है बढ़ी आपदा में अवसर की खोज करने वालो ने जमकर मुनाफाखोरी की है। नकली सेनेटाईजर से बाजार भरा पड़ा है। तनावजन्य प्रतिक्रिया से हम टीवी. चैनल्स के साथ जूझ रहे है। कोहन के अनुसार नैतिक घबराहट के क्षेत्र में स्थिति की व्यक्ति और सामाजिक मूल्यों के लिये खतरे के तौर पर पेश किया जाना खतरनाक है। 1980 के दशक में एड्स महामारी के कारण समाज में एक भय नुमा आतंक व्याप्त हो गया था। आज फिर डर, भय, मृत्यु की घबराहट, बीमारी की भयानकता के कारण समाज में नैतिक आतंक (उवतंस च्ंदपब) व्याप्त है। नैतिक आतंक एक ऐसे खतरे के रूप में आज समाज में उभरा है कि वह हमोर सामाजिक मूल्यों और हितो के लिये खतरा बना गया है। कोरोना के नैतिक आतंक को चलते विवाहित जोड़ो ने स्वतः ही परिवार नियोजन को इसलिये आत्मसाव कर लिया कि गर्भावस्था में हाक्वीटल जाना पड़ेगा जहाँ संक्रमण से बचना मुश्किल है अतः परिवार में नये सदस्य की योजना को ही स्थगित कर दिया। घर पर काय्र की संस्कृति के अनुरूप घरों के ना होने के कारण भी कार्यालयीन तत्परता और संरचना का क्षरण हुआ है। परिवार में टकराव, दंपत्ति में तनातनी, आपसी मतभेद, घर में रहने से युवाओं की स्वच्छंरता में कमी भी कोरोना का ही प्रभाव है फिजिकल डिस्टेंसिग, सामाजिक दूरी को बढ़ा रही है। आधुनिकता के लुभावने प्रलोभना से लोगों ने अपनी जीवन शैली को बदल दिया है व्यक्ति आधुनिकता की लुभवनी चकाचौंध से दूर हो रहा है। युवाओं की जीवन शैली भी बदल रही है। पूर्व में मौज मस्ती, हैग ओर, पार्टी, फास्ट फूड, सैर सपाटा में समय बिताने वाली युवा पीढ़ी अब इससे मुक्त होकर भारतीय संस्कृति के आदर्शो को अपना हुये आगे बढ़ रही है जिसे एक नया सवेरा कहा जा सकता है।

संदर्भ–सूची

1. शर्मा. मनीषा : कोरोना संकट और भारतीय समाज, नालंदा प्रकाशन, दिल्ली 2020
2. कोहन स्टेनली : फोम डेविल्स एण्ड डमोरल दैनिक, लंडन, 1973

अध्याय २४

कोरोना संकट उपरांत भारत में गरीबी उन्मूलन की दशा एवं दिशा

डॉ. अब्दुल हक
वाणिज्य विभाग, शासकीय संजय गांधी पी. जी. महाविद्यालय,
सीधी (म. प्र.)

प्रो. ललिता गोरे
सहा. प्राध्यापक: समाजशास्त्र, शासकीय आदर्श महाविद्यालय,
उमरिया (म. प्र.)

सरांश –
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मई 2020 में हर भारतवासी से देश को आत्मनिर्भर बनाने हेतु ***भारत निर्माण अभियान*** में अपना योगदान देने का आहवान किया है। आत्मनिर्भरता से देश में अधिक से अधिक उत्पादन होगा जिससे देश की उत्पादित वस्तुओं की मांग अधिक होगी और इससे रोजगार के अवसरों का भी सृजन होने से गरीबी उन्मूलन से संबंधित योजनाओं और कार्यक्रमों का समुचित क्रियान्वयन भी संभव हो सकेगा। अतः इसके लिए जनमानस को भी अब कारोना संकट के बाद उत्पन्न परिस्थितियों से निपटने हेतु स्वदेशी वस्तुओं का अधिकतम प्रयोग कर इस अभियान को सफल बनाने में अपना यथासंभव योगदान करना चाहिए। विश्व बैंक की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद गरीबी की रेखा के नीचे रहनेवाले लोगों की संख्या में कमी आयी है, तदापि अभी भी 25 प्रतिशत भारतीय गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने हेतु विवश हैं।

भारतीय जनमानस को एक सूत्र में बाधने तथा किसी गरीब को खाली पेट न सोना पड़े इस नियत से तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली को अधिक मजबूत बनाने के नियत से केन्द्र सरकार द्वारा एक राष्ट्र एक राशन कार्ड का प्रावधान किया गया है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह हो रहा है कि कोई भी मजदूर यदि मजदूरी करने एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश जाता है तो उसको अब नए राज्य मे ही राशन प्राप्त होने लगा है। आशा की जानी चाहिए कि गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकानले में यह अभियान सहायक सिद्ध होगा। यदि हम इस दिशा में सफल होते हैं तो आत्मनिर्भर भारत के

लिये एक मजबूत कदम होगा। यदि भारत में गरीबी को दूर करने के सही प्रयास किये गये तोसबका साथ–सबका विकास, महिला सशक्तिकरण, लोक कल्याण जैसी संकल्पनाएं सार्थक और सफल होगी।

कुन्जी शब्द– गरीबी उन्मूलन, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, एवं लोक कल्याण।

भारत सरकार लगातार इस दिशा मे अनेक प्रयास कर रही है कि देश में व्याप्त गरीबी से मुक्ति पाकर भारत को वास्तविक रूप में हर क्षेत्र में विकसित और आत्मनिर्भर बनाया जा सके। इसलिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मई 2020 में हर भारतवासी से देश को आत्मनिर्भर बनाने हेतु ***भारत निर्माण अभियान*** में अपना योगदान देने का आहवान किया है। वास्तव में आत्मनिर्भर शब्द से तात्पर्य है कि अपने देश में अधिकाधिक उत्पादन करना जिससे देश की उत्पादित वस्तुओं की मांग अधिक हो और इससे रोजगार के अवसरों का भी सृजन हो। इस लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में अनेक कठिनाइयां विद्यमान है, फिर भी हमें इनको दूर करने हेतु गरीबी उन्मूलन से संबंधित योजनाओं और कार्यक्रमों का समुचित क्रियान्वयन के प्रयास करने होगें। अतः तभी उम्मीद की जा सकती है कि भविष्य मे यह अभियान देश के विकास में प्रभावी एवं युगांतकारी भूमिका का निर्वहन करेगा। इसके लिए जनमानस को भी अब कारोना संकट के बाद उत्पन्न परिस्थितियों से निपटने हेतु स्वदेशी वस्तुओं का अधिकतम प्रयोग कर इस अभियान को सफल बनाने में अपना यथासंभव योगदान देना होगा।

आज भारत विश्व के लिये बड़ा बाजार ही नहीं, बल्कि समृद्धि की अनंत संभावनाओं का देश भी है जिसमें अपनी पैठ जमाने हेतु बड़े–बड़े व्यापारिक देश दशकों से प्रयासरत हैं। वस्तुतः जब किसी देश में मांग के अनुसार उत्पादन नही होता है तो उसको विदेशों से आवश्यक वस्तुओं का आयात करना पड़ता है। इतिहास गवाह है कि देश में अनेक उपयोगी वस्तुओं का उत्पादन होता रहा है तथा भारत प्राचीनकाल से ही व्यापारिक महाशक्ति के रूप में विख्यात था। अग्रेजों ने भारत के कुटीर उद्योगों को छिन्न–भिन्न कर गरीबी का बीजारोपण कर दिया था। तब से आजतक भारत गरीबी के अभिशाप से संघर्षरत है।

यद्यपि ***विश्व बैंक*** की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद गरीबी की रेखा के नीचे रहनेवाले लोगों की संख्या में कमी आयी है, तदापि अभी भी 25 प्रतिशत भारतीय गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने हेतु विवश हैं। अतः प्रत्येक भारतवासी को आत्मनिर्भर की ओर अपने कदम को बढ़ाने का जो आव्हान हुआ है उसका प्रभाव आज समाज में देखने को मिल रहा है। भारतीय जनमानस में इसके प्रति जिज्ञासा है कि वह इस अभियान को अपनाकर देश निर्माण में सहयोग के लिये हर तरह से अपना योगदान देने के लिये तैयार है। ***आचार्य कौटिल्य*** से लेकर आधुनिक अर्थशास्त्र के जनक ***एडम स्मिथ*** तक ने यह सिद्ध किया है कि प्रत्येक राष्ट्र को जनकल्याण और गरीबी उन्मूलन हेतु अधिकाधिक धन एकत्र

करना चाहिए। चाणक्य ने राजा परामर्श दिया है कि वह जनता से उसी प्रकार कर या शुल्क प्राप्त करे, जैसे बगीचे से माली पके हुए फलों को चुनता है।

भारत में आत्मनिर्भरता की संकल्पना–

भारत के सम्बध में आत्मनिर्भर का नारा नया नारा नही है, बल्कि यह नारा **स्वदेशी आन्दोलन** के रूप में आजादी के पूर्व ही 1905 में बंगाल विभाजन के समय ब्रिटिश सरकार को सबक सिखाने के लिये काफी जोर पकड़ चुका था। तब यह आन्दोलन काफी सफल रहा था। कालान्तर में, परतंत्र भारत में इस नारे को आगे बढ़ाने में दादाभाई नौरोजी, महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपथ राय, अरविन्द घोष, वीर सावरकर, मौलाना आजाद, जमशेद टाटा आदि नेताओं और उद्योगपतियों का योगदान सराहनीय रहा है। स्वदेशी आन्दोलन के अंतर्गत सामूहिक रूप से विदेशी वस्तुओं का विरोध किया गया जिसका अर्थ था कि भारत में निर्मित वस्तुओ का ही अधिकतम उपयोग किया जाए। आत्मनिर्भर भारत अभियान का आशय भी यही है कि प्रत्येक देशवासी अपने देश में निर्मित वस्तुओं पर क्रमशः निर्भर होता जाये।

अतः हमें देश में ही अब ऐसी वस्तुओं का उत्पादन करना होगा जो देश के अधिकांश मांगों को पूरी करता हो। इसके लिए देशवासियों को स्वदेशी वस्तुओं के उपभोग करने के साथ ही देशी वस्तुओं को ग्लोबल बनाने हेतु हमें वोकल भी बनना होगा। वर्तमान कोरोना संकट काल में भारत समेत विश्व की अर्थव्यवस्थाएं जिस प्रकार चरमराने से विकास की रेलगाड़ी पटरी से उतर गई थी। उक्त कारण से भी भारत को आत्मनिर्भर बनना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि भविष्य में यदि इस प्रकार की घटना घटित हो तो आमजन को सुरक्षित रखा जा सके।

कृषि उन्नति से गरीबी उन्मूलन–

हर देश की अर्थव्यावस्था में कृषि का बहुत बड़ा योगदान है। आज भारत की लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी है। कृषि योग्य भूमि के मामले में भारत विश्व में अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर है जबकि इस क्षेत्र में चीन का तीसरा स्थान है। भारत द्वारा किये जा रहे कुल निर्यात के मामले में कृषि उत्पान का योगदान लगभग 13 प्रतिशत है जबकि **वर्ष 2017** के अधिकारिक आकड़ों के अनुसार विश्व के कुल निर्यात में चावल का योगदान 29 प्रतिशत है तो मसाला निर्यात में 17 प्रतिशत है। भारत आज अपनी जनता का पेट भरने में सक्षम है तो दूसरी ओर खाद्य सामग्री का निर्यात भी कर रहा है। देश में पर्याप्त मात्रा में बफर स्टाक है। जून 2020 में जारी ***एफसीआई की रिपोर्ट*** के अनुसार भारत में 270.89 लाख मिट्रिक टन चावल तथा 540.80 लाख मीट्रिक टन गेहूं बफर स्टाक में रखा है। समाधान निकाला जा सके।

स्वास्थ्य सेवाओं की गरीबी उन्मूलन में भूमिका–

ये सर्वविदित है कि तन स्वस्थ्य रहने से मन स्वस्थ्य रहता है मन स्वस्थ्य रहने मानव उत्पादक होता है। स्वस्थ्य शरीर होने से कार्य करने की क्षमता का विकास होता है। सरकार इस सम्बध में अनेक योजनाओं का प्रारंभ किया जिसमें ***राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन*** की शुरूआत 2005 में की गई है। इसके माध्यम से देश में स्वास्थ्य सुविधाओं के सुधार के लिये आवश्यक उपाय किये गये। इस योजना के तहत सरकार द्वारा यह कहा गया कि जो महिला सरकारी अस्पताल में प्रसव कराएगी उनको प्रोत्साहन राशि दी जावेगी साथ ही साथ जो आशा कार्यकर्ता प्रसूता को साथ में लाएंगी उनको भी एक निश्चित मात्रा में प्रोत्साहन राशि प्रदाय की जावेगी।

गरीबी उन्मूलन और एक राष्ट्र–एक राशन कार्ड–

भारतीय जनमानस को एक सूत्र में बाधने तथा किसी गरीब को खाली पेट न सोना पड़े इस नियत से तथा ***सार्वजनिक वितरण प्रणाली*** को अधिक मजबूत बनाने के नियत से केन्द्र सरकार द्वारा एक राष्ट्र एक राशन कार्ड का प्रावधान किया गया है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होगा की कोई भी मजदूर यदि मजदूरी करने एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश जाता था तो उसको अब नए राज्य मे ही राशन प्राप्त हो जाएगा। इस नई व्यवस्था से ***81 करोड़ लोगों को लाभ*** होने से आत्मनिर्भर भारत निर्माण में श्रमिक बल का अधिकतम सदुपयोग किया जा सकेगा।

राहत पैकेज से गरीबी उन्मूलन

प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा मई 2020 में ***कोविड–19 राहत पैकेज*** की घोषणा की थी जिसको बाद में वित्तमंत्री निर्मला सीतामरन द्वारा इसको व्यवस्थित ढंग से समझाया भी गया था। उन्होने बताया गया कि यह राहत पैकेज देश की अर्थव्यावस्था को पटरी पर लाने का दूरगामी प्रयास है। वित्तमंत्री ने **पहली किस्त** जारी करते हुए बताया कि ***एम.एस.एम.ई.***–अर्थात माइक्रो स्माल मीडियम इन्टरप्राईजेस को तीन लाख करोड़ रूपये का लोन बिना गारंटी के दिया जावेगा। जो कम्पनी लोन लेगी उसको 4 साल में चुकाना होगा। जिस एम.एस.एम.ई. का टर्न ओवर 100 करोड़ रूपये होगा उनको 25 करोड़ रूपये तक का लोन मिल सकेगा।

गरीबी उन्मूलन मार्ग की कठिनाइयां–

भारत सरकार द्वारा गरीबी उन्मूलन के लिये किये गये विविध प्रयास अच्छे है, परंन्तु वर्तमान समय में अनेक निम्नांकित बाधाओं को भी पार करना जरूरी है–

1. गरीबी की भयावहता–

भारत में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार गरीबी का प्रतिशत 25.7 है जबकि मध्य प्रदेश मे यह प्रतिशत 35.7 है। भारत में ये गरीबी का प्रतिशत किसी

आकाल या विभीषिका के कारण नही है, बल्कि यह गरीबी की राजव्यवस्था और अर्थव्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह है। भारत में अमीरो की सम्पत्ति जिस गति से बढ़ रही गरीब और गरीब हो रहा है। यह एक बड़ी समस्या है जो भविष्य में आत्मनिर्भर भारत निर्माण की दिशा में बाधाएं खड़ी कर सकती है। ***आक्सफैम रिपोर्ट*** के अनुसार भारत मे मात्र 1 प्रतिशत आबादी के पास ही देश की 73 प्रतिशत सम्पत्ति है। अतः सरकार को अब समय रहते गरीब एवं गरीबी को दूर करने का प्रयास युद्व स्तर पर करना होगा।

2. बढ़ती बेरोजगारी–

वास्तव में गरीबी एवं बेरोजगारी एक सिक्के के दो पहलू है। यदि किसी व्यक्ति को समय पर उसकी आवश्यकता के अनुसार बाजार दर पर कार्य नही प्राप्त होता है तो वह बेरोजगार होता है। जब मानव बेरोजगार रहेगा तो निश्चित रूप से वह अपनी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ होगा। भारत में बेरोजगारी की समस्या जिस गति से बिगत पिछले दशकों से बढ रही है, वह अपने आप में एक चिंता का विषय है। 10 अगस्त .2020 जारी **सीएमआईई** की रिपोर्ट के अनुसार भारत में बेरोजगारी की दर 7.9 प्रतिशत है जो शहर में 9.7 और ग्रामीण स्तर 7.1 प्रतिशत है। अब सरकार को रोजगार बढ़ाने के लिए सतत् प्रयास करने होगें जिससे कि रोजगार के अवसर बढ़ सके। राजनीति शास्त्री ***हेराल्ड जोसेफ लास्की*** ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक ***ग्रामर ऑफ पालिटिक्स*** में लिखा है, ***" प्रजातंत्र में हर व्यक्ति को मताधिकार के अलावा अपनी जीविका चलाने की समुचित सुविधा एवं सुरक्षा मिलनी चाहिये, तभी बेरोजगारी के भय से मुक्त गरीब लोंगों को राष्ट्रनिर्माण के पथ पर चलाया जा सकता है।"***

3. सर्वव्यापी भ्रष्टाचार–

उपरोक्त समस्याओं के अतिरिक्त भारत में सबसे अधिक भ्रष्टाचार ने प्रगति के मार्ग में अनेक बाधाएं खड़ी की हैं। इस समस्या का समाधान आसानी से पाना भी संभव नहीं है। भारत ***भ्रष्टाचार सूचकांक*** **में दो पायदान खिसककर 80 वें स्थान पर आ गया है,** जबकि भारत वर्ष 2018 में 180 देशों की सूची में 78 वें पायदान पर था। जर्मनी के बर्लिन शहर में स्थित संस्था ***ट्रांसपैरेन्सी इन्टरनेशनल*** द्वारा यह सूचकांक जारी किया जाता है। भारत में एक समस्या यह भी बड़ी है कि कोई कार्य यहां की अफसरशाही और लालफीताशाही के कारण समय पर सम्पादित नही किये जाते है। उक्त सम्बध में सरकार को ठोस कदम उठानें होंगे जिससे देश की स्थिति में सुधार लाकर आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हो सके।

भारत में गरीबी उन्मूलन हेतु मौलिक सुझाव–

1. भारत में सबसे पहले गरीबी उन्मूलन के लिये एक विशेष जनजागरूकता अभियान चलाना होगा। इसके लिए प्रत्येक नागरिक को यह समझाना होगा

कि वो इसको अपना मौलिक कर्तव्य मान कर कार्य करे। जैसे–जापान में दो एटमी बंब धमाकों को 1945 में झेलकर भी विकास की गाथा गढ़ी और देश को विकसित देश बना लिया। उल्लेखनीय है कि एटमी प्रहार के बाद जापान का प्रत्येक नागरिक प्रतिदिन दो घण्टे का समय देश विकास के लिये स्वेच्छा से देने लगा था।

2. केन्द्र एवं राज्य सरकारों को आत्मनिर्भर भारत निर्माण के लिये ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास पर विशेष बल देना होगा, क्योकि भारत आज भी ग्रामों का देश है। लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या ग्राम मे निवास करती है। सरकारों को ग्रामीण स्तर पर लघु एंव कुटीर उद्योग को बढ़ाने के लिये हर संभव प्रयास करना होगा।
3. आवश्यक वस्तु अधिनियम–2020 के माध्यम से सरकार को कृषि को वास्तविक रूप से लाभ का धंधा बनाने हेतु चहुमुखी प्रयास करने होंगे। उल्लेखनीय है कि इस अधिनियम के पास होने से कृषि उत्पाद के भण्डारण एवं ढुलाई वितरण में किसी प्रकार की रोक नही होगी, क्योंकि अब प्रत्येक किसान अपनी सुविधा के अनुसार अपनी उपज को किसी स्थान पर किसी को भी बिक्री कर सकता है।
4. वस्तुतः गरीबी उन्मूलन योजनाबद्ध विकास के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। इस हेतु भारत सरकार और राज्य सरकारों द्वारा दो तरह के कार्यक्रम मुख्य रूप से प्रारम्भ किए जाएं–

अ. गरीबी उन्मूलन से संबंधित योजनाओं का लाभ वास्तविक हितग्राही को ही मिलना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
ब. मजदूरी आधारित रोजगार कार्यक्रम और
स. स्वरोजगार एवं उद्यमिता विकास कार्यक्रम।

निष्कर्ष–

आत्मनिर्भर भारत निर्माण के सम्बध में उपरोक्त गुण–दोषों की विवेचना उपरांत निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आत्मनिर्भर भारत का भविष्य भारतीय राजव्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण पर निर्भर करता है। देश में गरीबी घटेगी तो रोजगार की मात्रा बढेगी जो आत्मनिर्भरता को पाने में सहायक सिद्ध होगी। इसके परिणामस्वरूप गरीबी उन्मूलन के लक्ष्य को भी प्राप्त किया जा सकेगा। यह संतोषजनक स्थिति है कि केन्द्र एवं राज्य सरकारों ने इस सम्बध मे प्रयास प्रारंभ भी कर दिये हैं। भारत सरकार एवं सम्बधित राज्य सरकारें रोडमैप बनाकर कार्यरत हैं।

आशा की जानी चाहिए कि गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकानले में यह अभियान सहायक सिद्ध होगा। यदि हम इस दिशा में सफल होते हैं तो आत्मनिर्भर भारत के लिये एक मजबूत कदम होगा। समय रहते भारत में गरीबी को दूर करने के

सही प्रयास किये गये तो ***सबका साथ–सबका विकास, महिला सशक्तिकरण, लोक कल्याण*** जैसी अवधारणाएं भी सार्थक और सफल सिद्ध होगी। भारतीय शासन एवं प्रशासन को भी अब सजग रूप से जनता की ***रोटी, कपड़ा और मकान*** जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने पर विशेष ध्यान देते हुए उनके मानव अधिकारों की रक्षा करनी होगी।

संदर्भ ग्रंथसूची–

1. आहूजा, राम, 2018, भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
2. योजना, अप्रैल–2021, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. नारंग, एन. एस. , भारत में लोकतंत्र : समस्याएं व चुनौतियां, 2003, एनसीईआरटी, दिल्ली
4. भारत–2021, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
5. प्रतिययोगिता दर्पण, अप्रैल, 2022, उपकार प्रकाशन, आगरा।
6. रूद्र एवं सुन्दरम्, भारतीय अर्थव्यवस्था, 2018, एस. चांद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।
7. नंदलाल, राजनीति विज्ञान, 2021, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी, इन्दौर।
8 दैनिक भास्कर, पत्रिका, नव भारत, योजना, कुरूक्षेत्र, रोजगार और निर्माण आदि समाचार पत्र–पत्रिकाएं ।

अध्याय २५

कोरोना महामारी एवं तनाव

डॉ. हर्षा चचाने

प्राध्यापक (राज.विज्ञान) कन्या गृह विज्ञान महाविद्यालय होशंगाबाद (म0प्र0र0) भारत

प्रस्तावना :–

कोरोना वायरस (Covid19 & Coronavirus) ऐसा संक्रमण है जो लोगों के एक दूसरे के संपर्क में आने से फैलता है। इस बीमारी ने आज दुनियाभर में भयावह स्थिति उत्पन्न कर दी है। माना जाता है कि यह विषाणु किसी भी सतह पर मौजूद हो सकता है। इसी कारण यदि हम विषाणु से युक्त किसी भी सतह को छूते हैं और उसके बाद अपने हाथों से चेहरे को तथा आंखों को छूते हैं तब भी यह वायरस हमारे शरीर में अपनी जगह बना लेता है। कोरोनावायरस की शुरुआत सबसे पहले चीन के वुहान शहर से हुई। जहां 8 दिसंबर 2019 को इस वायरस से संक्रमित पहला केस दर्ज किया गया था। इसके बाद से कोरोना वायरस संपूर्ण विश्व के समस्त देशों में फैलता चला जा रहा है। भारत में कोरोना वायरस से संक्रमित पहला केस 30 जनवरी 2020 को सामने आया था। इस वायरस के एक साल बीत जाने के बावजूद अभी भी इसका कहर भारत सहित पूरी दुनिया पर जारी है।

कोरोना वायरस की उत्पति व प्रभाव :–

कोरोना वायरस एक ऐसा संक्रमण है, जो सामान्य जुखाम तथा खांसी से शुरू होकर बेहद गंभीर रूप ले लेता है। कोरोना वायरस का पहला मामला 8 नवंबर 2019 को चीन के वुहान शहर में निकला था। और इसके बाद से इस वायरस ने एक भयंकर रूप लेना शुरू कर दिया। भारत में 30 जनवरी 2020 को इस वायरस से संबंधित मामला देश के समक्ष आया। WHO के द्वारा कोरोना वायरस को Covid-19 का नाम दिया गया। इसके अनुसार, कोरोना वायरस के लक्षण 14 दिन के भीतर प्रदर्शित होने लगते है।

इस वायरस के शरीर में पहुंचने पर मनुष्य की सांस लेने की क्षमता कम होने लगती है व शरीर का तापमान बढ़ने लगता है। यदि इन लक्षणों के प्रभाव में कमी नहीं आती है तो व्यक्ति की मौत होने की संभावना बढ़ जाती है। हालांकि कोरोना वायरस के रोकथाम के लिए स्थाई रूप से कोई दवा तैयार नहीं की जा सकी है।

लेकिन इस वायरस से बचने के लिए आपसी दूरी बनाए रखने का परामर्श विशेषज्ञों द्वारा दिया गया है।

कोरोना वायरस कैसे फैलता है :–

- कोरोना संक्रमित मरीज के छींकने से उसके आस–पास के लोगों तक तेजी से फैलता है।
- किसी कोरोना संक्रमित मरीज के थूक को सतह पर छूने से और फिर अपने मुंह, चेहरे, नाक को हाथ लगाने से फैलता है।
- कोरोना संक्रमित के छींक की बूंदे से कोरोना वायरस सफर कर रहे एक यात्री से दूसरे यात्री में तेजी से फैलता है।
- यह हवाई जहाज के सीटों पर कई समय तक जिन्दा रह सकता है।
- एक कोरोना संक्रमित व्यक्ति हजारों लोगो को संक्रमित कर सकता है। कोरोना वायरस मनुष्य के शरीर में बिना कोई लक्षण दिखाए 14 दिनों तक एक्टिव रह सकता है।

कोरोना वायरस के लक्षण :–

सामान्य तौर पर कोरोनावायरस के लक्ष्ण औसतन 5 दिन के भीतर दिखना शुरू हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार कोरोनावायरस के लक्षण 14 दिन के अंदर व्यक्ति में प्रदर्शित होने लगते हैं।

तेज बुखार, गले में दर्द, खत्म न होने वाली खासी और सांस लेने में तकलीफ। अंत में जाके यह फेफड़ों को कमजोर कर देता है जिससे मरीज को सांस लेने में मुश्किल होती है। यह शरीर के दूसरे अंगों को नाकाम कर देता है जिससे मरीज की मौत हो जाती है।

- यदि किसी व्यक्ति को लगातार लंबे समय तक खांसी आती है तथा खांसी के साथ बलगम भी आता है तो उस व्यक्ति में वायरस होने की संभावना बढ़ जाती है।
- इस वायरस के कारण शरीर का तापमान बढ़ कर 100 से 100.4 डिग्री फारेनहाइट तक चला जाता है। जिस कारण मनुष्य का शरीर ठंडा पड़ जाता है तथा आंखें लाल हो जाती हैं व शारीरिक कमजोरी भी होने लगती है।
- शोधकर्ताओं का कहना है, अन्य लक्षणों के अतिरिक्त खाने में स्वाद का अनुभव ना होना तथा किसी भी गंध युक्त वस्तु में गंध महसूस ना होना भी कोरोनावायरस का एक बेहद खतरनाक लक्षण है।
- इन सभी लक्षणों के साथ वायरस के कारण मनुष्य को सांस लेने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

कोरोना से बचाव के उपाय :–

- सर्वप्रथम कोरोनावायरस से बचने के लिए सामाजिक दूरी बनाए रखना बेहद आवश्यक है। केंद्रीय तथा राज्य सरकारों द्वारा 2 गज की दूरी बनाए रखने की हिदायत भी जनता को दी गई है।
- खांसते तथा छींकते समय अपने मुंह को साफ रुमाल से ढक लेना चाहिए।
- सुरक्षित मास्क का प्रयोग करना चाहिए।
- शरीर की इम्यूनिटी पावर को उचित स्तर पर बनाए रखना आवश्यक है। इम्यूनिटी पावर को बढ़ाने वाले फलों तथा सब्जियों इत्यादि को धोकर तथा साफ करके सेवन करना चाहिए।
- सामाजिक क्षेत्र में उपस्थित होने पर, किसी भी वस्तु का सेवन करने से पहले, अपने हाथों को चेहरे पर लगाने से पहले सैनिटाइजर का प्रयोग समय–समय पर करते रहना चाहिए।
- कोरोनावायरस से संक्रमित व्यक्ति से दूर रहना चाहिए। संक्रमित व्यक्ति को उचित अस्पताल में भर्ती कराना चाहिए एवं संक्रमित व्यक्ति को अलग कमरे में रखना चाहिए।
- कोरोनावायरस से बचाव के लिए वर्तमान में कोवैक्सीन तथा कोवीशील्ड नामक दो टीके लगाए जाना शुरू हो चुके है। एक्सपर्ट्स के अनुसार दोनों ही टीके सुरक्षित है। इस वैक्सीन की दो डोज निश्चित समय के अंतराल पर दी जाती है। अभी यह वैक्सीन आयु के अनुसार देश में लगाई जा रही है।

यद्यपि कोरोनावायरस से बचाव के लिए कोई निश्चित दवाई अभी नहीं बनाई गई है तथापि इस वायरस के अंत के लिए कुशल शोधकर्ता प्रयासरत है। जब तक इस वायरस से बचने के लिए किसी भी प्रकार का निश्चित उपाय हमारे समक्ष नहीं आता है तब तक सरकार तथा कुशल चिकित्सक द्वारा जो दिशा निर्देश दिए जा रहे हैं उनका पालन करना आवश्यक है।

कोरोना वायरस के प्रति जागरूकता कोरोना वायरस अथवा कोविड–19 एक दूसरे के संपर्क में आने से फैलने वाला रोग है। देश की इन परिस्थितियों को देखते हुए जनता के लिए यह आवश्यक है कि वे कोरोना वायरस से बचाव के उपायों का नियमित रूप से पालन करें।

- सामाजिक दूरी बनाएं रखें।
- मास्क का नियमित प्रयोग करें।
- खांसते, छींकते समय रुमाल का प्रयोग करें।
- इम्यूनिटी पॉवर को बढ़ाए रखने का प्रयास करें।

- संक्रमित व्यक्ति से दूर रहें। संक्रमित व्यक्ति को आइसोलेशन तथा क्वांरनटाइन करने का प्रबंध करें। ताकि उस व्यक्ति के सम्पर्क में आने से यह वायरस अन्य लोगों तक न पहुंचे।
- केंद्रीय सरकार व राज्य सरकार द्वारा कोरोना वायरस से बचाव के संबंध में जो दिशा निर्देश जनता को दिए जाएं उनका पालन करें।

कोरोना वायरस की भारत में स्थिति :–

कोरोना वायरस के प्रभाव से अभी तक दुनिया में मरने वालो कि संख्या 31. 79 लाख के पार हो चुकी हैं। आंकड़ों के अनुसार, भारत में इस बीमारी ने अब तक 2,08,330 से भी अधिक व्यक्तियों की जान ले ली है। परंतु दूसरी ओर उचित परामर्श का पालन करने वाले व्यक्तियों पर इस वायरस का प्रभाव कम होता भी नजर आ रहा है। आंकड़ों के मुताबिक, कोरोना वायरस से ठीक होने वाले व्यक्तियों कि संख्या 1,58,84,418 हो चुकी है व मृत्यु दर में भी आंशिक गिरावट हो रही है।

वर्तमान में, देश में कोरोना वायरस से बचाव के लिए टीकाकरण की शुरुआत कर दी गई है एवम् इसकी रफ्तार दिन प्रतिदिन तेज होती जा रही है। कोवैक्सीन तथा कोविशील्ड नाम के ये दो टीके देश में आयु के अनुरूप दो चरण में लगाए जा रहे है। इस टीकाकरण से पूर्व सरकार द्वारा लोगों को घर में रहने का आदेश दिया गया है तथा इसके लिए समय समय के अंतराल पर लॉकडाउन की व्यवस्था उचित रूप से की जा रही हैं।

कोरोना का प्रकोप/ कोरोना से होने वाली हानि :–

कोरोना की वजह से पुरे दुनिया के लोग प्रभावित है। मजदूरों को बहुत नुकसान हुआ है, जो रोजमर्रा के काम से अपने घर का पेट पालते थे। आज उनके लिए एक वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल हो गई। कई मजदूर ऐसे हैं, जो भूखे पेट ही सो रहे हैं। इस महामारी काल में दुनिया भर के कारोबार ध्व्यापर बंद हो चुके हैं। कोरोना और लाकडाउन का सबसे ज्यादा नुकसान किसी को हुआ है तो वह है मजदूर, जो अपने परिवार का पेट पालने के लिए दिन–रात मेहनत करते हैं।

लाकडाउन की वजह से देश की अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान हुआ है। कारखानों को बंद रखने के कारण भारी नुकसान वहन करना पड़ रहा है, वहीं व्यापार भी पूरी तरह से ठप पड़ा हुआ है। लोगों की नौकरियां चली गई हैं जिसकी वजह से बेरोजगारी की समस्या भी उत्पन्न हो गई है। लाकडाउन की वजह से देश आर्थिक रूप से कमजोर पड़ रहा है।

बड़े–बड़े दफ्तर, कल–कारखाने को बंद करने के वजह से मजदूरों पर आफत आन पड़ी है। जो मजदूर दैनिक मजदूरी पे जीते थे उनके घरो में चूल्हा जलना बंद हो गया है। बस्ती में लोग भूखे पेट सो रहे है। गरीब लोगो पर लाकडाउन का सबसे ज्यादा असर पड़ा है, उनके पास घर लौटने के पैसे तक नहीं

है। देश में ऐसी परिस्थिति की वजह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री रहत कोष से जरूरत मंद लोगो की सहायता करने का निर्णय लिया। बहुत सारे लोगो ने भी आगे आकर जरूरत मंदो की मदद कर रहे है। लगभग सभी देशो के करोबार को भरी नुकसान भी पंहुचा है।

बड़े बड़े कारखाने को बंद रखने के वजह से उनको भयानक नुकसान सहना पड़ रहा है। बाकी व्यवसायियों को भी इस परिस्थिति में काफी नुक्सान उठाना पड़ रहा है। लाकडाउन से भारत को अनुमन 100 अरब डालर तक का घाटा होने की आशंका है। भारत में कोरोना वायरस से संक्रमित 2000 से ऊपर पाजिटिव केस की संख्या पायी गयी है। कोरोना की वजह से 14 अप्रैल तक देश में पुरे तरह से लाकडाउन करने का फैसला लिया गया। भारतीय की अर्थव्यवस्था हर दिन 4.5 अरब डालर यानि करीब 34 हजार करोड़ रुपयों का नुकसान हो सकता है। लोगो के आवाजाही पर फिलहाल पूरी तरह से रोक है। कुछ जरूरी सामान और सेवाओं को छोड़कर बाकी सारे कारोबार बंद पड़े है। कोरोना वायरस पर काबू पाने के लिए यह सरे निषेध किये गए है।

सबसे ज्यादा नुक्सान टूर और ट्रेवल, फूड, रियल एस्टेट जैसे इंडस्ट्री को हुआ है। भारत में लॉकडाउन के कारण घर में रहते हुआ लोगो को मानसिक समस्या हो सकती है। इससे छोटे बच्चो को काफी समस्या हो रही है, क्योकि वह बाहर खेलने या स्कूल जाने में असमर्थ है। कई लोग डिप्रेशन का शिकार भी हो सकते है। इन सबसे बचने के लिए एक उपाय यह है की अपने आप को ज्यादा से ज्यादा काम कार्यो में मसरूफ रखना ताकि यह सारे ख्याल हमारे मस्तिष्क में न आये।

1. कोरोनावायरस को कोविड–19 नाम से भी जाना जाता है
2. विश्वस्वास्थ्य संगठन ने कोरोनावायरस को महामारी घोषित कर दिया है।
3. कोविड–19 नाम का यह वायरस अब तक दुनिया के काफी देशों में फैल चुका है।
4. कोरोनावायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है।
5. इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था।
6. यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है।
7. कोरोनावायरस से गंभीर मामलों में निमोनिया सांस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी कितनी पिलाना और यहां तक की मौत भी हो सकती है।
8. इस वायरस से बचने के लिए हाथों को साबुन से धोना चाहिए।
9. अल्कोहल आधारित सेनीटाइजर का इस्तेमाल करना चाहिए।
10. सभी व्यक्तियों से उचित दूरी बनाकर रखनी चाहिए।

निष्कर्ष :

कोरोना वायरस ने पुरे विश्व के शक्तिशाली देशों को घुटनो पर लाकर रख दिया है। सारे देश मिलकर कोरोना वायरस से मुक्ति पाने में जुटी है और डॉक्टर्स

,नर्सेज एकजुट होकर लड़ रहे है। उनकी जितनी भी सराहना की जाए कम होगी। नरेंद्र मोदी ने कोरोना वायरस से लड़ने के लिए कठोर कदम उठाये है जो हमारे देश की भलाई के लिए है और हम सभी को एक भारतीय होने के नाते इस कठोर समय में उनका साथ देना चाहिए ताकि हम देश को रोगमुक्त कर सके। ऐसा करने पर जल्द ही जिन्दगी फिर से वापस पटरी पर आ जाएगी। कोरोना वायरस के खिलाफ यह महायुद्ध तब तक जारी रहेगा जब तक हम इस वायरस को जड़ से खत्म ने करे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन, पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड और नेशनल हेल्थ सर्विस (एनएचएस) से प्राप्त सूचना के आधार पर हम आपको कोरोना वायरस से बचाव के तरीके बता रहे हैं। एयरपोर्ट पर यात्रियों की स्क्रीनिंग हो या फिर लैब में लोगों की जांच, सरकार ने कोरोना वायरस से निपटने के लिए कई तरह की तैयारी की है। इसके अलावा किसी भी तरह की अफवाह से बचने, खुद की सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश जारी किए हैं जिससे कि कोरोना वायरस से निपटा जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. हिन्दुस्तान समाचार पत्र. 2015
2. बीबीसी हिन्दी. 2013
3. ्रण्हववहसमण्बवउ
4. ्रण्पापचमकपंण्बवउ
5. डॉ.अर्चना पाण्डेय : रक्षा अनुसंधान एवं विकास क्षेत्र।
6. प्रो.ललित तिवारी : इंडिया टूडे में प्रकाशित लेख।
7. डॉ.वंदना शिवा : संपादकीय लेख, दैनिक भास्कर।
8. डॉ.मोहम्मद सारिक : अमर उजाला।

अध्याय २६

कोविड-19 महामारी एवं ऑनलाइन शिक्षण पद्धति

डॉ. सपना शर्मा सारस्वत

सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय वी .वाय. टी. स्नातकोत्तर, स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

श्रीमती ललिता साहू

सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय , राजनांदगांव (छ.ग.)

संक्षेपिका

यह पुस्तक अध्याय " कोविड–19 महामारी एवं ऑनलाइन शिक्षण पद्धति के मध्य संबंध" का दस्तावेजिकरण है. इसके अंतर्गत सर्वप्रथम कोरोना महामारी का उद्‌भव और विस्तार किस प्रकार ,कैसे हुआ उसके बारे में वर्णन किया गया है. तत्पश्चात शिक्षा का मानव जीवन में क्या महत्व है ? किस प्रकार शिक्षा एक व्यक्ति के समग्र विकास के लिए आवश्यक है? इसका उल्लेख किया गया है. अध्याय के अगली श्रृंखला में महामारी के दौरान शैक्षणिक निरंतरता को बनाए रखने हेतु 'ऑनलाइन शिक्षण पद्धति' अपनाने के दौरान किस प्रकार की चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पड़ा, इस संबंध में चर्चा की गई है. साथ ही 'ऑनलाइन शिक्षण पद्धति' के सुचारू संचालन हेतु किए गए प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है. तत्पश्चात ' ऑनलाइन शिक्षण पद्धति' के सकारात्मक पहलू एवं नकारात्मक पक्षों एवं सीमाओं पर प्रकाश डाला गया है. अध्याय के अंत में भावी भविष्य में 'ऑनलाइन शिक्षण पद्धति' में किस प्रकार मूलभूत सुधार व आवश्यक उपायों के द्वारा इस पद्धति को बेहतर बनाया जा सकता है, इस पर मूल्यवान सुझाव दिए गए हैं.

कीवर्ड: कोविड–19 महामारी, शिक्षा, डिजिटल तकनीक, ऑनलाइन शिक्षण पद्धति, शिक्षण प्रशिक्षण, शोध, अनुसंधान

महामारी का उद्‌भव और विस्तार

कोरोना महामारी ने संपूर्ण मानव जाति के जीवन को छिन्न–भिन्न कर दिया. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस महामारी के फैलाव और उसकी तीव्रता को देखते हुए

इसे महामारी घोषित किया. भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों ने इस महामारी से बचाव हेतु जनता कर्फ्यू, लॉकडाउन ,सामाजिक दूरी बहुत जरूरी, सोशल डिस्टेंसिंग, टीकाकरण जैसे वैकल्पिक साधनों का उपयोग किया चीन के हुबेई प्रांत के वुहान शहर में 31 दिसंबर 2019 को इस महामारी का पहला केस सामने आया .यह रोग SARS COV-2 वायरस के कारण होने वाला संक्रामक रोग है ,जो एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य में बहुत तेजी से फैलता है. इसे नॉवेल इसलिए कहा गया क्योंकि इसकी पहचान पहले कभी नहीं की गई .भारत में इस महामारी का पहला मामला 30 जुलाई 2020 को केरल तृशशूर में आया. जसने बहुत जल्दी अपनी चपेट में पूरे भारत को ले लिया.विगत 2 वर्षों से इस महामारी के प्रकोप से पूरे विश्व की सामाजिक आर्थिक राजनीतिक व्यवस्था चरमरा गई है .साथ ही इसके कितने वैरीअंट ने संपूर्ण मानव जाति को आज भी एक हाशिए में खड़ा किया हुआ है .आज संपूर्ण मानव समाज इस वायरस के साथ जीवन जीने के लिए मजबूर है.

शिक्षा का महत्व

शिक्षा का अर्थ न केवल सीखना व ज्ञान अर्जित करना है अपितु इसका क्षेत्र तो बहुत विस्तृत है. शिक्षा मानव विकास का मूल आधार है .शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य के शारीरिक, आत्मिक, मानसिक व आध्यात्मिक शक्तियों व क्षमताओं का विकास होता है राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनुसार "शिक्षा से तात्पर्य मानव के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है" युवाओं के प्रणेता स्वामी विवेकानंद के अनुसार' "बच्चों की अंतर्निहित निरंतरता को प्रकाशित करना ही शिक्षा है" शिक्षा एक व्यक्ति को उस समाज के संस्कृति, मूल्य तथा परंपराओं के सात्मीकरण के साथ ही समाज का जिम्मेदार नागरिक बनाने में मदद करती है. हमारे जीवन में गुरुजनों, शिक्षकों का विशेष महत्व होता है ये ही हमें जीवन के सैद्धांतिक व्यावहारिक ज्ञान का आधार प्रदान करते हैं. 11 मार्च 2020 को "विश्व स्वास्थ्य संगठन" की घोषणा के बाद कोविड– 19 एक वैश्विक महामारी घोषित किया गया .तदुपरांत शैक्षणिक संस्थानों को बंद करने वाले देशों में तेजी से वृद्धि हुई. लॉकडाउन के दौरान सीखने व शिक्षा को जारी रखने हेतु ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को विश्व के सभी देशों ने अपनाया. महामारी के दौरान भारत में स्कूलों के बंद हो जाने के कारण' पारंपरिक कक्षा शिक्षा प्रणाली ' अब 'आयोजित ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली ' के रूप में स्थानांतरित की गई

महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षण पद्धति हेतु किए गए प्रयास व चुनौतियां

सर्वविदित है कि शिक्षकों व विद्यार्थियों के मध्य प्रत्यक्ष संवाद, क्लास रूम के भीतर और बाहर छात्रों के मध्य आपस में स्वस्थ चर्चा व सामंजस्य यह सभी अच्छे शिक्षा तंत्र का अभिन्न अंग है, किंतु जब शैक्षणिक संस्थान इस वैश्विक महामारी के कारण बंद हो रहे थे, उस समय शिक्षा के लिए निरंतरता को सुनिश्चित करने हेतु

ऑनलाइन शिक्षा ही एकमात्र विकल्प रहा भारत सहित विश्व के सभी देशों ने शैक्षणिक निरंतरता को बनाए रखने हेतु अथक प्रयास किए. इन प्रयासों व चुनौतियों की संक्षिप्त चर्चा हम यहां करेंगे

1. **E-learning कार्यक्रम को प्रोत्साहन–** सूचना व संचार तकनीकी आधारित ई लर्निंग कार्यक्रम को भारत सहित विभिन्न देशों ने प्राथमिकता दी जिससे विद्यार्थी शिक्षा से जुड़े रहे जिससे शिक्षा निर्बाध रूप से संचालित रहे.
2. **शैक्षणिक संस्थानों में सूचना व संचार आधारित व्यवस्था –** लॉकडाउन के दौरान जब विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों को बंद कर दिया गया. तब सूचना व संचार क्रांति के द्वारा विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों ने शैक्षणिक निरंतरता को जारी रखा. विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों द्वारा इस हेतु आवश्यक सभी तकनीकों व उपक्रमों को प्राथमिकता दी गई जिससे बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराई जा सके.
3. **शिक्षण व प्रशिक्षण कार्यक्रम –** भारत जैसे विकासशील देशों में जहां सूचना तकनीकी के नए आयामों को अपनाया गया है, वहीं प्राचीन शैक्षणिक पद्धति भी विद्यमान है.ऐसे में शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों को इस नई तकनीक से प्रशिक्षित करने हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए .जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षक विद्यार्थियों से इस तकनीक के द्वारा सहज रूप से जुड़ सकें एवं शिक्षा का लाभ उठा सकें.
4. **ऑनलाइन डिजिटल वेबसाइट व कार्यक्रमों का निर्माण** – विभिन्न शिक्षण सामग्री को एक निर्धारित वेबसाइट में अपलोड किया गया. साथ ही विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम बनाए गए जिसके द्वारा विद्यार्थी इन वेबसाइट व कार्यक्रमों से शिक्षण सामग्री प्राप्त कर सके तथा शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन निर्बाध रूप से हो सके.
5. **प्रशासनिक व शैक्षणिक समन्वय –** प्रशासनिक स्तर पर विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित किया गया. विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं को समय–समय पर आवश्यक दिशा निर्देश तथा संसाधनों की उपलब्धता कराई गई जिससे शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा सके विद्यार्थियों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रशासनिक व शैक्षणिक अमले ने सामंजस्य पूर्ण कार्य किया.
6. **पाठ्यक्रम संचालन व परीक्षा पद्धति में भी आवश्यक संशोधन –** परंपरागत कक्षा शिक्षा के स्थान पर डिजिटल कक्षाओं का संचालन किया गया निःसंदेह इसमें कुछ परेशानियों का सामना किया गया. जिसके चलते पाठ्यक्रम संचालन में भी परिवर्तन किए गए .साथ ही परीक्षा पद्धति में भी आवश्यक संशोधन किए गए, जिससे विद्यार्थियों पर शिक्षा का अनावश्यक दबाव ना पड़े.
7. **गैर शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन –** ऑनलाइन शिक्षा पद्धति के द्वारा गैर शैक्षणिक कार्यक्रमों का भी यथासंभव संचालन किया गया जैसे निबंध प्रतियोगिता, पेंटिंग कार्यक्रम, वार्षिक उत्सव कार्यक्रम विभिन्न सामाजिक व

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन, पर्सनैलिटी डेवलपमेंट क्लासेस, योग क्लासेस आदि जिससे विद्यार्थी शिक्षण संस्था से जुड़ाव महसूस कर सके. . छत्तीसगढ़ राज्य में इसी तारतम्य में 'चकमक योजना 'आरंभ की गई यह एक ऐसा प्लेटफार्म रहा जिसके द्वारा विद्यार्थियों को गैर शैक्षणिक गतिविधियां हेतु प्रोत्साहित किया गया.

8. **डिजिटल तकनीकों की उचित व्यवस्था –** शैक्षणिक संस्थाओं के साथ ही विभिन्न प्रशासनिक संस्थाओं ने भी विद्यार्थियों को आवश्यक डिजिटल तकनीक उपलब्ध कराने हेतु निरंतर प्रयास किया .बहुत सारे गैर सरकारी संगठनों ने भी मुफ्त ब्रॉडबैंड उपलब्ध कराने हेतु अथक प्रयास किए, जिससे वे वर्ग जो आर्थिक स्तर पर इन तकनीकों व उपकरणों की उपलब्धता से वंचित है वह भी शिक्षा का लाभ उठा सकें.
9. **काउंसलिंग की व्यवस्था –** ऑनलाइन शिक्षा पद्धति के कारण सामाजिक अलगाव एवं एकाकीपन में वृद्धि हुई है .परिणाम स्वरूप बच्चों में तनाव और अवसाद का स्तर बढ़ा है, जिसका प्रतिकूल प्रभाव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ा. इस समस्या के निदान हेतु विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों एवं प्रशासन ने काउंसलिंग कार्यक्रम व विभिन्न प्लेटफॉर्म का निर्माण किया जिसमें विद्यार्थी अपनी समस्याओं से निजात पा सकते हैं तथा तनाव से उबर सकते हैं.

निःसंदेह महामारी के दौरान शैक्षणिक निरंतरता बनाए रखने हेतु अथक प्रयास किए गए किंतु इन सबके बावजूद कोविड–19 के दौरान इस ऑनलाइन शिक्षा पद्धतियों के संचालन में विभिन्न चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पड़ा इन्हीं पर संक्षेप में उल्लेख इस प्रकार है

1. **बंद समूह का आभास –** ऑनलाइन शिक्षा पद्धति के कारण बच्चों में एक "बंद समूह" का वातावरण निर्मित हो गया, या यूं कहें बच्चे एक कैदखाने में कैद जैसे हो गए यदि संयुक्त परिवारों को छोड़ दिया जाए तो एकल परिवारों व नगरीय संस्कृति में तो बच्चों की स्थिति बिल्कुल कैद खाने जैसी हो गई जिससे उनके जिससे उनमें अवसाद व तनाव की स्थिति तथा शिक्षा के प्रति अरुचि स्पष्ट परिलक्षित होती है
2. **विद्यार्थियों का डिजिटली विभाजन –** इस अकस्मात, अप्रत्याशित तकनीकी बदलाव के कारण बच्चे दो वर्गों में बट गया– एक वर्ग जो डिजिटली संपन्न हुआ दक्ष रहे एवं दूसरा वर्ग जो इनसे अछूते रहें
3. **बुनियादी ढांचे व प्रौद्योगिकी की उपलब्धता की कमी –** भारत जैसे विकासशील देशों में तथा सामाजिक आर्थिक आधार पर पिछड़े हुए क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा पद्धति दूभर प्रतीत होता है. यहां स्थिति 'डिजिटल हैव नॉट्स ' की तरह है अर्थात वह क्षेत्र जो नेटवर्क व अन्य साइबर सुविधाओं से पिछड़े हैं. ऐसे में इन रिमोट एरिया व दूरस्थ अंचल क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा एक कड़ी चुनौती रही.

4. **मानसिक स्वास्थ्य के स्तर को बनाए रखना –** ई लर्निंग कार्यक्रम के द्वारा शिक्षण व्यवस्था से निःसंदेह बच्चे स्वध्याय व एकल अध्ययन पर अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं जिससे उनमें तनाव, अवसाद व मानसिक उग्रता जैसे प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हुए साथ ही निम्न आर्थिक वर्ग के परिवार में आवास ,खाद्यान्न की असुरक्षा, बेरोजगारी की समस्या से उत्पन्न तनाव व विपन्नता से भी शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा . अतः मानसिक स्वास्थ्य के स्तर को बनाए रखना तथा बच्चों के मानसिक विकास को सुदृढ़ करना भी एक प्रमुख समस्या व चुनौती के रूप में उभरा.
5. **शिक्षण – प्रशिक्षण की कमी –** भारतीय शैक्षणिक संस्थानों की यदि बात की जाए तो आज भी शिक्षा का एक बड़ा वर्ग आधुनिक तकनीकी सूचना व संचार से अनभिज्ञ हैं. ऐसे में इन्हें उस स्तर तक प्रशिक्षित करना, जिससे वे ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग कर सकें. निःसंदेह एक बहुत ही चुनौती भरा पूर्ण कार्य रहा इसके अतिरिक्त कई ऐसे परिवार हैं जिनमें विद्यार्थी व उनके माता–पिता भी सूचना क्रांति की तकनीकी से अनभिज्ञ अथवा कम सरोकार रखते हैं. ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा के समक्ष एक बहुत बड़ी खाई दिखाई देती है.
6. **मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम के लाभ से वंचित –** भारत एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं ग्रामीण आबादी वाला देश है शिक्षा के सुचारू संचालन तथा निम्न वर्गों तक भी शिक्षा की उपलब्धता तथा कुपोषण जैसी समस्या को दूर करने हेतु 'मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम 'आरंभ किया गया. ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा पद्धति द्वारा इस योजना का संचालन बाधित हुआ जिससे बहुत सारे विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न हुई तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा.
7. **शैक्षणिक संस्थान व प्रशासनिक व्यवस्था में सामंजस्य की कमी –** महामारी के दौरान पूरा प्रशासनिक अमला निसंदेह आम लोगों के जीवन को बचाने में जूझ रहा था.ऐसे समय में शैक्षणिक संस्थान में शिक्षा की उत्तम व्यवस्था व गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने में कहीं ना कहीं शैक्षणिक संस्थानों और प्रशासनिक व्यवस्था में आपसी समन्वय व सामंजस्य की कमी रही, जिसका खामियाजा विद्यार्थियों को भुगतना पड़ा. अचानक आई महामारी के लिए शिक्षण तंत्र व प्रशासनिक व्यवस्था भी पूर्ण रूप से तैयार नहीं था परिणाम स्वरूप विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा.
8. **वित्तीय संसाधनों की कमी–** "भारतीय बजट" में बजट का एक बहुत कम हिस्सा शिक्षा के क्षेत्र में आवंटित किया जाता है. दूसरी ओर भारत जैसे विकासशील देश में सूचना और क्रांति तकनीकी पहुंच आज भी दूरस्थ या आम व्यक्ति की पहुंच से बाहर है. स्पष्टता इस ऑनलाइन शिक्षा पद्धति के अंतर्गत शिक्षा प्रदान करने हेतु जिस तकनीक एवं उपकरण आवश्यक थे, उस हेतु वित्तीय संसाधनों को पूरा करना भी एक चुनौतीपूर्ण है कार्य रहा.

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कोरोना महामारी के दौरान शिक्षा की गुणवत्ता व उपलब्धता को बनाए रखने हेतु प्रशासनिक स्तर पर – शैक्षणिक स्तर पर विभिन्न अथक प्रयास किए गए, किंतु साथ ही इस अनायास व अकस्मात व्यवस्था हेतु विभिन्न चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा.

ऑनलाइन शिक्षण पद्धति सकारात्मक प्रभाव

कोरोना महामारी ने संपूर्ण मानव जाति को छिन्न–भिन्न कर दिया .इस 2 साल की अवधि का प्रकोप का न जाने मानव जाति अगले कितने साल तक भरपाई कर पाएगी. ऐसे में महामारी का शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव एक विवाद का विषय प्रतीत होता है. किंतु ऑनलाइन शिक्षा पद्धति ने कुछ सकारात्मक प्रभाव भी छोड़े हैं. जिसे नकारा नहीं जा सकता, आइए इसे जानने का प्रयास करते हैं

1. **शैक्षणिक निरंतरता –** वैश्विक महामारी कोरोना के कारण सभी शैक्षणिक संस्थानों को बंद कर दिया गया .ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को शिक्षा उपलब्ध ना कराने के स्थान पर ऑनलाइन पद्धति द्वारा उनके शैक्षणिक निरंतरता को बनाए रखा गया
2. **न्यूनतम आर्थिक लागत व संसाधनों की आवश्यकता –** न्यूनतम संसाधनों में किस प्रकार शिक्षा को जारी रखा जा सकता है .यह ऑनलाइन शिक्षा पद्धति ने सिद्ध किया अर्थात आर्थिक रूप से कमजोर व निम्न वर्गों के लिए ऑनलाइन शिक्षा पद्धति एक वरदान के रूप में दिखाई देती है. मात्र एक स्मार्ट फोन के द्वारा हम शिक्षा का लाभ उठा सकते हैं.
3. **सुदूर दूरस्थ क्षेत्रों हेतु एक सार्थक प्लेटफार्मः–** भारत जैसे विविधता भरे देश में दूरस्थ –वनांचल – सुदूर क्षेत्रों में भी छात्र डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़ जुड़कर शिक्षा का लाभ उठा रहे हैं.
4. **सूचना व संचार तकनीक से जुड़ने का सुअवसरः–** आज पूरा विश्व एक 'वैश्विक ग्राम' की अवधारणा को समाहित किए हुए हैं निसंदेह इस ऑनलाइन शिक्षा पद्धति ने ना केवल विद्यार्थियों अपितु उनके पूरे परिवार को भी सूचना तकनीकी के विभिन्न संसाधनों से जुड़ने का एक अवसर प्रदान किया. सूचना व संचार क्रांति का उपयोग आज समय की मांग है निसंदेह ऑनलाइन पद्धति ने व्यक्तियों को सूचना एवं संचार संसाधनों से जुड़ने का एक बेहतरीन अवसर प्रदान किया.
5. **ICT प्रयोग से प्रशिक्षण स्तर में सकारात्मक वृद्धिः–** विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों ने भी आईसीटी के प्रयोग को न केवल सीखा, बल्कि उनके अधिकतम प्रयोग भी किया. वर्तमान युग सूचना एवं संचार क्रांति का युग है और इस क्रांति से शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं है, इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षा पद्धति ने आईसीटी के प्रयोग हेतु शिक्षण संस्थानों को भी एक सकारात्मक माहौल प्रदान किया.

6. **पारिवारिक समन्वय – सामंजस्य में वृद्धिः–** आईसीटी के प्रयोग के दौरान विद्यार्थियों को उनके माता–पिता से सहयोग प्राप्त हुआ अर्थात परिवार में माता–पिता व बच्चों के मध्य एक पारिवारिक सामंजस्य प्रेम व समन्वय का वातावरण को संवर्धन मिला, जिससे पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्था दोनों ही मजबूत हुई
7. **शिक्षकों व विद्यार्थियों के मध्य समन्वय व सामंजस्य पूर्ण वातावरण का निर्माणः–** ऑनलाइन शिक्षा के अंतर्गत शिक्षक विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष संपर्क में नहीं रह सकते अतः इसी संपर्क को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षकों और विद्यार्थियों ने एक दूसरे से निरंतर समन्वय एवं सामंजस्य पूर्ण वातावरण का निर्माण किया जिससे एक बेहतर शिक्षा का माहौल तैयार हुआ
8. **नए प्रयोग व अनुसंधान :–** प्रशासनिक स्तर पर शैक्षणिक संस्थानों व प्रशासनिक संस्थानों ने शिक्षा को और बेहतर बनाने हेतु शिक्षा में नए अभिनव प्रयोग किए तथा ऑनलाइन शिक्षा के तकनीकों को अपनाने का प्रयास किया. निश्चित तौर पर एक नए प्रयोग व अनुसंधान से शैक्षणिक क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है और आगे भी ऐसी संभावना व्यक्त की जा सकती है.

निश्चित तौर पर इस प्रयास के हमें सकारात्मक परिणाम भावी भविष्य में प्राप्त अवश्य होंगे इस प्रकार कहा जा सकता है कि कोरोना महामारी दुष्परिणाम को भी एक संयोजित साझाबध्द प्रयास द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में कुछ सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए गए तथा प्रयास अनवरत रूप से जारी है.

ऑनलाइन शिक्षण पद्धति नकारात्मक प्रभाव

ऑनलाइन शिक्षा पद्धति के निसंदेह सकारात्मक परिणाम तो रहे, किंतु इनके नकारात्मक प्रभाव को भी नहीं नकारा जा सकता .इन्हीं की चर्चा इस प्रकार है –

1. **शिक्षण के प्रति अरुचि –** ऑनलाइन शिक्षण पद्धति के द्वारा कई बच्चों में औपचारिक शिक्षा तो दूर की बात है शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न हो गई. कक्षा आधारित शिक्षा एक सामूहिक शिक्षा होती है जिसमें प्रत्यक्ष तौर पर विद्यार्थी अपने शिक्षकों व अन्य विद्यार्थियों से संपर्क में रहते हैं, किंतु ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा एकल अध्ययन व स्व अध्ययन के कारण बच्चों में शिक्षा के प्रति अरुचि व अलगाव की स्थिति देखी गई.
2. **सीखने के स्तर में गिरावट –** शिक्षक व विद्यार्थियों एवं विद्यार्थियों में आपस में एक प्रत्यक्ष संबंध निश्चित तौर पर सीखने की प्रक्रिया का संवर्धन करता है. दूसरी ओर ऑनलाइन शिक्षा पद्धति के द्वारा घंटों – लंबी कक्षाएं व अप्रत्यक्ष तौर पर संपर्क ने विद्यार्थियों के प्रशिक्षण स्तर व लर्निंग स्किल को नकारात्मक स्तर से प्रभावित किया.
3. **शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव –** "डिजिटल प्लेटफॉर्म" के कारण स्क्रीन से लगातार जुड़े रहने से शारीरिक स्वास्थ्य की कमी विद्यार्थियों में देखी जा सकती है. इसके अतिरिक्त शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षणेत्तर

गतिविधियों में खेलकूद अन्य सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रम से बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास होता है. एव विद्यार्थियों का एक नियमित दिनचर्या स्थापित रहता है, किंतु ऑनलाइन शिक्षण पद्धति के कारण यह ना केवल बच्चों की दिनचर्या प्रभावित हुई बल्कि इससे शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर पड़ा.

4. **मानसिक तनाव व अस्वस्थता की स्थिति –** शिक्षण संस्थाएं न केवल ज्ञान का रोपण करती है अपितु संपूर्ण व्यक्तित्व का भी विकास करती हैं. ऑनलाइन शिक्षा के कारण बच्चे मानसिक अवसाद, कुंठा व तनाव जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं .एक प्रकार के सामाजिक अलगाव के कारण उनमें चिड़चिड़ाहट, उग्रता, मानसिक उग्रता व आपराधिक गतिविधियां भी बढ़ रही है.
5. **सामाजिक विभाजन –** "डिजिटल तकनीक" ने समाज में वर्गों के बीच एक विभाजन रेखा खींची है जिसमें एक वर्ग इन संसाधनों से परिपूर्ण है तथा दूसरा एक वर्ग इस डिजिटल तकनीक से पूर्णतया अछूता है निश्चित तौर पर इससे एक सामाजिक विभाजन की स्थिति निर्मित हुई है और उस वर्ग के विद्यार्थियों में भी एक सामाजिक विभाजन, कुंठा व तनाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है.
6. **ड्रॉपआउट रेट में वृद्धि –** बहुत सारे विद्यार्थियों ने विभिन्न कारणों से अर्थात आर्थिक विपन्नता, सूचना तकनीकी की अनुपलब्धता, सूचना तकनीकी के प्रशिक्षण की कमी आदि के चलते शाला त्याग दिया. विभिन्न आंकड़ों से स्पष्ट है कि "ड्रॉपआउट रेट" में वृद्धि दर्ज की गई है.
7. **शैक्षणिक ज्ञान के स्तर में गिरावट –** कई विद्यार्थियों ने नियमित रूप से अध्ययन कार्य में रुचि नहीं ली. ऐसे में उनके पास डिग्री तो है किंतु शैक्षणिक ज्ञान का स्तर बहुत ही निम्न है. साथ ही परीक्षा संचालन पद्धति में भी असाइनमेंट व अन्य विकल्प ने शैक्षणिक ज्ञान के स्तर को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया.

सुझाव

महामारी या अन्य किसी कारण से "ऑनलाइन शिक्षा" एक व्यवहारिक विकल्प हो सकता है परंतु इसके लिए आवश्यक है कि कुछ उपाय एवं शर्तों का पालन करें संक्षिप्त में सुझाव इस प्रकार है -

1. शैक्षणिक संस्थानों में पर्याप्त चिकित्सा व्यवस्था आवश्यक सुरक्षात्मक नीतियों का पालन किया जाए.
2. ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था मुहैया कराने के लिए पर्याप्त सार्वजनिक वित्तीय संसाधनों का आवंटन हो विशेष तौर पर आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए.

3. पूरे देश में मजबूत ब्रॉडबैंड व्यवस्था स्थापित किए जाएं इसके साथ पाठ्यक्रम बच्चों तक पहुंचाने के लिए ब्रॉडकास्ट तकनीकों जैसे रेडियो टीवी का सुचारू संचालन हो
4. महानगरों के साथ ही छोटे ग्रामीण अंचल क्षेत्रों के शैक्षणिक संस्थानों को आधुनिक आईसीटी सुविधाओं से लैस किया जाए.
5. दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए आवश्यक नीतियां एवं व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाए .
6. डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग हेतु शिक्षकों को समय–समय पर पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाए.
7. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अंग्रेजी, हिंदी के साथ ही क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई की व्यवस्था को प्रोत्साहित किया जाए.
8. छात्रों के समान सीखने के अधिकार ' का सम्मान करते हुए उन्हें पर्याप्त एवं समुचित संसाधन उपलब्ध कराएं जाना सुनिश्चित किया जाए
9. केंद्रीय ऑनलाइन शिक्षण हेतु आवश्यक व्यवस्था किया जाए.
10. आपातकालीन स्थिति में पाठ्यक्रम में लचीलापन एवं संशोधन हेतु नीति निर्माण किया जाए.

निष्कर्ष

भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों ने कोरोना महामारी के दौरान वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में ऑनलाइन शिक्षण पद्धति को अपनाया. निश्चित तौर पर कुछ सीमाओं एवं चुनौतियों को ध्यान ना दिया जाए तो यह कारगर सिद्ध हुई भावी भविष्य में भी यदि इस तरह की परिस्थितियां आती है तो आवश्यक साझा रणनीतिक प्रयास द्वारा ऑनलाइन शिक्षण पद्धति को समुचित ढंग से लागू किया जा सकता है .

संदर्भ सूची

1 M.Reimers, Fernando Primary and secondary education during covid 18, publisher – Springer cham, edition no -1 *https://doi.org/10.1007/978-3-030*

2 Banerjee, Nanda & Das, Amarnath Covid 19 & education: challenges & strategies *10.4018/978-1-7998-8402-6ch005*

3 Borkotoky,D.K. & Borah,R.(2021).The impact of online education on the university student of ASSAM in COVID times .Indian journal of science and technology. 14(3)1028-1035 *http://www.indjst.org/*

4 UNESCO,(2021) Global survey reveals impact covid 19 higher education, *https://en.unesco.org*

5 Chan ,Roy Y. & Bista,Krishna & Allen ,M.Ryan.Online Teaching and learning in higher education during COVID 19 international perspective and experience s(August 13,2021) . Routledge

6 UNESCO, (October 2021) India case study, situation analysis on the effects of and responses to COVID 19 on the education sector in ASIA, http*://www.unesco.org/open-access/terms-use-ccbysa-en*

अध्याय २७

भारत में कोरोना महामारी का प्रभाव (अर्थव्यवस्था के विशेष परिपेक्ष्य)

डॉ. राजेश मौर्य
सहा. प्रा. अर्थशास्त्र, शास. नेहरू महा. वि. सबलगढ़

सार

वैश्विक महामारी जिसका नाम कोविड-19 है ने संपूर्ण विश्व में ऐसा कोहराम मचाया कि मानव से लेकर अर्थव्यवस्था तक बर्बादी के कगार पर पहुंच गए थे। हालांकि संपूर्ण विश्व में इस महामारी से लोगों की जान बचाने के लिए तालाबंदी की प्रक्रिया को अपनाया था। लेकिन इसकी वजह से जो गंभीर परिणाम हमारे सामने प्रकट हुए तो वे यह थे की मांग व पूर्ति का कम हो जाना, उद्योग व व्यवसाय बंद हो जाना जिसके कारण असंख्य नहीं, बल्कि हजारों लोग बेरोजगार हो गए थे। ऐसी ही स्थिति हमारे देश भारत में दिखाई दी थी।

भारत सरकार ने जैसे ही जनवरी 2020 में पहला मामला सामने आया। वैसे ही संपूर्ण भारत में राष्ट्रव्यापी तालाबंदी की प्रक्रिया को लागू कर दिया था। जिसके तहत संपूर्ण दुकाने, मॉलों, होटलों, सिनेमाघरों यहां तक कि शासकीय विभागों स्कूल, महाविद्यालयों को भी पूर्ण रूप से बंद कर दिया गया था। परिणामस्वरुप अर्थव्यवस्था मंदी की अवस्था में प्रवेश कर गई थी। अर्थात मांग एवं आपूर्ति मंदी में पहुंच गई थी। देश का सकल घरेलू उत्पाद जो कि बस 2018 19 में अनुमानित 7.5% था। गिरकर 4.8% पर पहुंच गया था। एक विदेशी लेखक जिनका नाम गोल्डमैन सैक्स था ने उल्लेख किया है कि भारत सरकार ने जो 21 दिवसीय तालाबंदी की प्रक्रिया को लागू किया था, उसकी वजह से भारतीय जीडीपी की वृद्धि दर 1 10% गिर गई थी। देश का निर्माण उद्योग बंद हो गया था। अर्थात वर्ष 2021 में यह क्षेत्र 39.3% गिर गया था हजारों प्रवासी श्रमिकों को अपने निवास स्थान की ओर पलायन करना पड़ा था। इनमें से कुछ तो ऐसे भी थे जो रास्ते में ही अपनी जान दे चुके थे और कई अभी भी अपने घर नहीं पहुंचे हैं।

यह शोध पत्र कोरोना महामारी के कारण भारत सरकार द्वारा लागू की गई राष्ट्रव्यापी तालाबंदी के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था किस प्रकार प्रभावित हुई।?, कौन कौन से घटक कैसे ब किस प्रकार प्रभावित हुए इत्यादि पर आधारित है।

फोकस क्षेत्र- कोविड-19, विनिर्माण, जीडीपी, मांग व पूर्ति, प्रवासी श्रमिक।

प्रस्तावना-

वर्तमान में विश्व का प्रत्येक नागरिक जिस समस्या से जूझ रहा है तो वह कोरोना महामारी है जिसने दुनिया के अधिकांश देशों में मानव विनाश से लेकर अर्थव्यवस्था, देश का सामाजिक आर्थिक ढांचा, मानव स्वास्थ्य, शिक्षा, नागरिक संरचना, औद्योगिकरण आदि को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। हमारे चारों ओर केवल तबाही का मंजर दिखाई दे रहा है। हालांकि कि मानव ने इस गंभीर महामारी से निपटने के लिए विभिन्न प्रकार की दवाइयों एवं टीकाकरण जैसी प्रक्रियाओं को अपनाना आरंभ कर दिया है। परंतु फिर भी यह कहा नहीं जा सकता है कि हमने महामारी पर नियंत्रण पा लिया है। ऐसी समस्याओं से हमारा देश भारत भी जूझ रहा है।

हांलाकि कोविड-19 महामारी ने देश के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, लेकिन यहां केवल एक क्षेत्र अर्थात अर्थव्यवस्था पर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया गया है।

भारत में जैसे ही इस महामारी का आगाज हुआ जैसे ही भारत सरकार ने मानव स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रव्यापी तालाबंदी की प्रक्रिया को अपनाना आरंभ कर दिया था। तालाबंदी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था में संचालित लगभग सभी क्षेत्रों, दुकान, मोलो, सिनेमाघरों, विभिन्न शासकीय विभागों, उद्योगों, व्यवसायों को अस्थाई रूप से या कुछ समय के लिए बंद कर दिया जाता है जिसका परिणाम यह हुआ कि अर्थव्यवस्था में मंदी की स्थिति निर्मित हो गई है। अर्थात निवेश, उत्पादन, मांग, रोजगार आदि निम्न अवस्था में पहुंच गए। बिजनेस वर्ल्ड (समाचार पत्र 2020) के अनुसार भारत में कोविड-19 महामारी का आगाज होने से वर्ष 2020 में भारत की आर्थिक विकास दर 5.3% तक सीमित हो गई है और घरेलू यात्रा, होटल बुकिंग, रेस्तरां व्यवसाय, तथा अंतरराष्ट्रीय यात्रा बुकिंग में क्रमश: 20%,20% से 70% तक, 30 से 35% व 75% की कमी दर्ज की गई है (1). यही नहीं बल्कि भारतीय तथा विदेशी निवेशकों को विनियोग करने से भी रोका है क्योंकि कोरोना वायरस महामारी ने देश के शेयर बाजार को शीर्ष के स्थान पर न्यून अवस्था में पहुंचा दिया है।

भारत एक सर्वाधिक आबादी वाला देश है और देश के नागरिकों के स्वास्थ्य स्तर को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रव्यापी तालाबंदी को अपनाना अत्यंत आवश्यक था। इसलिए आवश्यक है क्योंकि इस वायरस की अभी तक कोई भी दवा उपलब्ध नहीं है। यही ऐसे कारण रहे हैं जिससे भारत सरकार ने राष्ट्रव्यापी तालाबंदी को अपनाया था, किंतु इसकी वजह से जो समस्याएं (अर्थव्यवस्था की मंदी) उत्पन्न हुई है, उसे प्रत्येक व्यक्ति अच्छी तरह से जानता है।

यह शोध पत्र भारत में कोविड-19 महामारी के कारण ध्वस्त अर्थव्यवस्था पर आधारित है जिसमें इस बात का उल्लेख किया गया है कि महामारी ने अर्थव्यवस्था के कौन-कौन से कारकों को प्रभावित किया है।

भारत- एशिया महाद्वीप में भारत एक ऐसा देश है जो संपूर्ण दुनिया में विविधता के नाम से जाना जाता है। यहां आपको लगभग सभी प्रकार की संस्कृतिया तथा सभ्यताएं देखने को मिल जाएंगे और इसके

साथ ही हमारा संविधान सभी संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के लोगों को अपने विचार व्यक्त करने और अपनी संस्कृति को बचाए रखने की अनुमति देता है।

भारत धार्मिक दृष्टि से भी एक अद्वितीय राष्ट्र है। हिंदू , मुस्लिम, सिख, ईसाई उपरोक्त सभी धर्मों के लोग स्वतंत्रता पूर्वक अपना जीवन यापन करते हैं।

भौगोलिक दृष्टि से अर्थात जनसंख्या तथा क्षेत्रफल में यह देश दुनिया में दूसरा एवं सातवां स्थान रखता है। इसकी सीमा दक्षिण में हिंद महासागर पश्चिम में अरब सागर एवं पूर्व पश्चिम में बंगाल की खाड़ी से लगती है। यह हिमालय पर्वत से गिरा हुआ होने के कारण यहां की जलवायु इस पर्वत से प्रभावित है और गर्म तथा आद्र तापमान के साथ एक उष्णकटिबंधीय जलवायु का निर्माण करती है।(२)

भारतीय अर्थव्यवस्था का संरचनात्मक ढांचा मिश्रित अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाता है जिसका मतलब यह है कि पूंजीवाद और समाजवाद उक्त दोनों का सह अस्तित्व, अर्थात हम कह सकते हैं कि भारत का विकास पूंजीवाद और समाजवाद के माध्यम से किया गया है। यहां जो सत्ता का रूप कायम है तो वह लोकतंत्र या संसदीय शासन प्रक्रिया है, जिसके तहत देश का प्रमुख पद अर्थात प्रधानमंत्री का चयन लोकतंत्र के माध्यम से किया जाता है।

भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा संविधान है जिसके तहत संघ एवं राज्य सरकारों को भिन्न-भिन्न शक्तियां प्रदान की गई है। इस दृष्टि से प्रत्येक राज्य को सार्वजनिक स्वास्थ्य व अन्य प्रकार के कानूनों का निर्माण करने की स्वायत्तता प्राप्त है।(३)

भारत में भाषाओं की दृष्टि से संविधान में लगभग 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। यहां विभिन्न धर्मों के लोग अर्थात 80% हिंदू ,2.3% ईसाई, 1.7% सिक्ख, 14% मुस्लिम तथा 2% अन्य धर्मों के लोग मौजूद हैं।(४) इसीलिए भारत को विविधताऔ से परिपूर्ण संज्ञा प्राप्त है। देश में विभिन्न धर्मों के लोग होने के बावजूद एकता व अखंडता कायम है जो विश्व के अन्य देशों की तुलना में एक अद्वितीय राष्ट्र बनाती है।

भारतीय जनसंख्या के संदर्भ में यह कहा जाता है कि यहां प्रतिवर्ष 1 ऑस्ट्रेलिया देश के बराबर आबादी में वृद्धि होती है। इसीलिए नवीनतम वर्ष अर्थात वर्ष 2022 के अनुसार- 1357181000 आबादी है(५) जो कि दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जनसंख्या की अधिकता के बावजूद यहां पुरुषों तथा महिलाओं की जीवन प्रत्याशा 67.4 वर्ष एवं 70.2 वर्ष है।

भारत की आर्थिक विकास दर के संबंध में यह कहा जाता है कि यह दुनिया की तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है। भारतीय सर्वेक्षण वर्ष 2021, 22 के अनुसार देश की वास्तविक जीडीपी 9.2 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है(६) और यह संभावना व्यक्त की जा रही है कि आने वाले वर्षों में इसमें और अधिक वृद्धि होगी। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का यह दावा है कि भारत की वास्तविक जीडीपी दर वर्ष 2022, 23 में 9% 2022, 23, 24 में 7.1% की दर से बढ़ेगी।(७) यदि इसी तरह बढ़ती गई तो यह विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी। इसका कारण अर्थव्यवस्था में बढ़ता हुआ निवेश क्षेत्र तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश है। आर्थिक सर्वेक्षण 2021, 22 के अनुसार देश में टेलीकॉम ऑटोमोबाइल फार्मास्यूटिकल्स उपग्रह संचार तथा अन्य प्रकार के उद्योगों की भागीदारी में वृद्धि हुई है जबकि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में लगभग 74% की

वृद्धि हुई है।(८) यही नहीं बल्कि असंख्य बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी उपलब्ध हैं जो व्यापक पैमाने पर लोगों को रोजगार प्रदान करने के साथ साथ भारी मात्रा में करों के माध्यम से भारत सरकार को आय प्रदान करती है। इसीलिए नीति निर्माताओं तथा अर्थशास्त्रियों का कहना है कि भविष्य में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था।

कोरोना महामारी के प्रभाव -

यह सर्वविदित है कि कोरोना जैसी महामारी चीन के हुबेई प्रांत के बुहान शहर से आरंभ होकर संपूर्ण देश में फैल गई थी, जिसमें हमारा देश भारत भी शामिल है। यह महामारी इतनी अधिक घातक थी कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियमों के अनुसार कोविड-19 वैश्विक महामारी घोषित कर दिया था।

भारत में कोरोना वायरस पहला मामला जनवरी 2020 में भारत सरकार के समक्ष प्रकट हुआ था(९) जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों में फेलते हुए संक्रमण को रोकना था। यही ऐसा कारण था जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था को मंदी की स्थिति में पहुंचा दिया था। वास्तव में भारत सरकार ने जो ताला बंदी का निर्णय लिया था, वह अमूल्य था क्योंकि लोगों की महामारी से सुरक्षा प्रदान करना सरकार की एक अहम जिम्मेदारी होती है। परंतु इसकी वजह से अर्थव्यवस्था के जिन घटको पर गंभीर प्रभाव पड़ा था उसे हम नकार नहीं सकते है| राष्ट्रव्यापी तालाबंदी के कारण अर्थव्यवस्था के जिन घटकों पर प्रभाव पड़ा था, वह निम्नलिखित हैं।

मांग एवं आपूर्ति पक्ष -

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का संचालन, दो पक्षों, मांग तथा पूर्ति पर निर्भर करता है। मांग का मतलब उस देश के लोगों द्वारा मांगी गई वस्तुओं व सेवाओं से हैं, जबकि पूर्ति का अर्थ अर्थव्यवस्था में मौजूद उद्योग व व्यवसायियों द्वारा उत्पादन के माध्यम से लोगों की मांगों को पूर्ण करना है। राष्ट्रव्यापी तालाबंदी का सबसे पहला असर मांग तथा आपूर्ति पक्ष पर हुआ था। एक तरफ संक्रमण तो दूसरी तरफ विभिन्न उद्योगों, व्यवसायओं, लघु, मध्यम, कुटीर उधोग के बंद होने से उत्पादन कम या हो गया था जिसके कारण अर्थव्यवस्था में मांग व आपूर्ति पक्ष मंदी की अवस्था में पहुंच गए थे। संपूर्ण बाजार में गिरावट का माहौल सृजित हो गया था। इसमें न केवल दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुएं शामिल थी बल्कि सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली वस्तुएं एवं सेवाएं भी शामिल थी। जैसे विमानन पर्यटन व आदित्य आदि संकट की स्थिति में पहुंच गए थे, जबकि भारतीय जीडीपी में इनका योगदान लगभग 9% के बराबर है (१०) जो कि कोविड-19 की स्थितियों में निम्न स्तर पर पहुंच गया था। हमें ज्ञात होना चाहिए कि विमानन उद्योग में लगभग 42.7 मिलियन लोग शामिल हैं। यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है तो कितने लोग अपनी नौकरी से वंचित हो जाएंगे तथा बेरोजगारी की गंभीर समस्या पैदा हो जाएगी। हालांकि भारत सरकार ने धीमी मांग व पूर्ति को ध्यान में रखते हुए विस्तार वादी मौद्रिक नीति को अपनाया है जिसमें मुद्रा आपूर्ति का विस्तार तथा सरकारी राजस्व में वृद्धि या करों में कमी का सहारा लिया जाता है। किंतु भारत

सरकार का यह प्रयास केवल आपूर्ति में आने वाली बाधाओं को समाप्त करने यातायात की सुगमता विशेष रूप से भोजन के संबंध में किया गया है।(११)

भारत में ताला बंदी का असर उपभोग पर भी पड़ा है क्योंकि इसके तहत बड़े-बड़े शॉपिंग, कॉम्प्लेक्स, खुदरा, व्यापारी तथा फुटपाथ पर विक्रय करने वाले व्यापारियों को पूर्ण रुप से बंद करने के आदेश पारित किए गए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि इन क्षेत्रों में कार्यरत लोग बेरोजगारी के कगार पर पहुंच गए थे। ऐसा अनुमान है कि कई लोग मजदूरी दैनिक वेतन भोगी तो नौकरी खोने के डर से अपने प्राण ले चुके थे। देश (१२) इसके संबंध में नीति निर्माताओं तथा अर्थशास्त्रियों का कहना है कि इस संकट काल में मजदूरों व दैनिक वेतन भोगियों की ऐसी स्थिति हो गई थी कि वे अपने मानसिक संतुलन के साथ-साथ आत्मविश्वास के स्तर को हो चुके थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए तथा कैसे जीवन यापन किया जाए। कई लोगों ने तो ऐसी स्थिति में अपने घर की ओर पलायन किया था क्योंकि इसमें कई ऐसे मजदूर भी थे जो प्रवासी थे अर्थात् एक राज्य से दूसरे राज्यों में काम करने के लिए प्रस्थान करते रहते थे।

इसी प्रकार पूर्ति पक्ष भी प्रभावित हुआ था। इसके अंतर्गत ऐसे लघु मध्यम व कुटीर उद्योग शामिल थे, जो अपनी सीमांत अवस्था में थे या व्यापक स्तर पर कच्चे माल में संलग्न थे। हमें ज्ञात होना चाहिए कि ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक सामान व दवाइयां उत्पन्न करने वाले अधिकांश उद्योग कच्चा माल चीन से आयात करते हैं क्योंकि कोरोना वायरस का उद्गम इसी देश से हुआ था। इसीलिए चीन के साथ अंतरराष्ट्रीय व्यापार बाधित हुआ था| मार्केट वॉच (एक अंतरराष्ट्रीय एजेंसी 2020) के अनुसार चीन की माल आपूर्ति पर विराम लगने से भारत के फार्मासिटीयुक्ल, इलेक्ट्रॉनिक, ऑटो मोबाइल व रासायनिक उत्पाद संबंधी उद्योगों को माल की आपूर्ति की कमी का सामना करना पड़ा था।(१३) भारत चीन से 85% फार्मास्युटिकल्स एवं 27% मोटर वाहन के अवयवों का आयात करता है ताकि देश में इन क्षेत्रों से संबंधित उद्योग चलाएंमान रहे और आपूर्ति के साथ-साथ रोजगार भी कायम रह सके परंतु ऐसा नहीं हुआ था। वास्तव में तालाबंदी ने मांग व आपूर्ति पक्ष की कमर तोड़ कर रख दी थी।

सकल घरेलू उत्पाद -

किसी भी देश की सीमा के अंतर्गत एक वर्ष में सभी उत्पादकों द्वारा अंतिम वस्तुओं व सेवाओं के कुल मूल्य से होता है। दूसरे शब्दों में हम इसे एक देश की एक वर्ष की घरेलू आय भी कह सकते हैं। एक देश का यह वह कारक होता है जिसके माध्यम से उस देश की आर्थिक विकास दर का अनुमान लगाया जाता है।

भारत में जैसे ही कोविड-19 का पहला मामला सामने आया, वैसे ही तालाबंदी की प्रक्रिया को अपनाने के कारण देश की जीडीपी प्रभावित होने लगी थी। भारत की जीडीपी पर यह प्रभाव 15 अप्रैल 2020 से दिखाई देने लगा था। संयुक्त राष्ट्र संघ ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि यह महामारी लंबे समय तक कायम रहती है तो इसका प्रभाव भारत की जीडीपी पर पड़ सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ (2020) में उल्लेख किया है कि भारत में वर्तमान में जो जीडीपी संचालित है, वह 4.8% तक कम हो सकती है,(१४)

जबकि वर्ष 2018, 19 में भारत की जीडीपी अनुमानित 7.5% थी जो कि वर्ष 2019 में कोविड-19 की वजह से कम हो गई थी।

भारतीय राष्ट्रीय सांख्यिकी विभाग ने 28 फरवरी 2020 में। तिमाही के आधार पर भारत की जीडीपी के संशोधित आंकड़े प्रस्तुत किए जैसे पहली तिमाही में 7.1% दूसरी में 6.2% तथा तीसरी में 5.6% से 6.6% तक थे।(१५) यह आंकड़े बताते हैं कि किस प्रकार कोरोना वायरस महामारी ने देश की जीडीपी को प्रभावित किया। यदि तालाबंदी की प्रक्रिया को नहीं अपनाते तो शायद जीडीपी धीमी नहीं होती। परंतु यह संभव नहीं था क्योंकि देश के नागरिकों को बचाना भी सरकार की जिम्मेदारी थी। इसी प्रकार गोल्डमैन सैक्स (एक विदेशी लेखक) ने उल्लेख किया है कि भारत सरकार ने जो 21 दिन की राष्ट्रव्यापी तालाबंदी की प्रक्रिया को अपनाया था, उसकी वजह से जीडीपी वृद्धि दर 1.6% गिर गई थी जो कि 400 अंकों की गिरावट के बराबर है।(१६) हालांकि यह स्थिति भारत की ही नहीं थी बल्कि संपूर्ण विश्व के देशों में संचालित रही थी और भारत पहले ही इस बात की घोषणा कर चुका था कि यदि देश में वायरस फैलता है तो सकल घरेलू उत्पाद प्रभावित हो सकता है इस बात का प्रमाण। केपीएमजी (एक वैश्विक लेखा एवं कर सलाहकार कंपनी) ने प्रस्तुत किया है कि भारत सरकार ने अनुमान लगाया है कि कोरोना वायरस महामारी में प्रसार या विस्तार होने से देश की जीडीपी दर 3% से नीचे गिर जाएगी।(१७) इस प्रकार कहा जा सकता है कि कोविड-19 की अवधि में भारत की जीडीपी विकास दर प्रभावित हुई थी।

विनिर्माण क्षेत्र -

यह वह क्षेत्र होता है जिसके अंतर्गत महत्वपूर्ण वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। यह किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में अहम कारक होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण है क्योंकि विनियोग क्षेत्र में रोजगार में वृद्धि करने में मददगार साबित होता है। जैसा कि जॉन (सन 2020) में स्पष्ट किया है कि किसी भी देश के आर्थिक विकास में देश की जीडीपी के साथ-साथ विनिर्माण उद्योग भी एक अहम कारक होता है।(१८) आज जैसे-जैसे संपूर्ण विश्व वैश्वीकरण की प्रक्रिया की ओर अग्रसर होता जा रहा है वैसे-वैसे दुनिया के विनिर्माण उद्योग उच्च उत्पादन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।(१९) जिसमें हमारा देश भारत भी शामिल है, लेकिन वर्ष 2019 से कोरोना महामारी का आगाज होने से देश के अधिकांश निर्माण उद्योग बंद हैं तथा अधिकांश श्रमिकों व मजदूरों की कमी का सामना कर रहे हैं। आर पिच्चेर्ट(२०२०) ने स्पष्ट किया है कि- कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी ने तालाबंदी की वजह से संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप तथा भारत की हजारों विनिर्माण इकाइयों को बंद करने पर मजबूर किया है।(२०)

भारत की कई विनिर्माण औद्योगिक इकाइयां चीनी (देश) विनिर्माण उत्पादन करने वाली इकाइयों पर निर्भर है क्योंकि चीन से महामारी की शुरुआत हुई थी। इसलिए चीन ने अधिकांश उद्योगों को अस्थाई रूप से बंद कर दिया था, जिसका सीधा प्रभाव भारतीय विनिर्माण उद्योगों पर हुआ अर्थात वे बंद के कगार पर पहुंच गए थे।

देश के विनिर्माण उद्योगों के बंद होने के निम्न कारण बताए गए हैं। पहला तालाबंदी की वजह से लोगों को घर पर रहने के लिए मजबूर किया गया जिससे मांग में कमी उत्पन्न हुई तथा दूसरा कोरोना

महामारी के कारण अधिकांश मजदूरों ने अपने घर की ओर प्रस्थान किया था। ऐसी स्थिति में इन विनिर्माण इकाइयों को मांग की कमी के साथ-साथ श्रमिकों की भी कमी का सामना करना पड़ा था। परिणामस्वरुप यह बंद होने के कगार पर पहुच गये थे मार्केट इंडिया विनिर्माण परचेसिंग मैनेजर्स इंडेक्स ने अनुमान लगाया है कि महामारी के कारण विनिर्माण उद्योगों की कच्चे माल की खरीद की लागत 50.8% से बढ़कर 57.5% तक पहुंच गई थी।(२१)

भारतीय नीति निर्माताओं तथा अर्थशास्त्रियों का कहना है कि तालाबंदी के कारण मांग कम होने से देश के विनिर्माण उद्योग वर्ष 2021 की अधिकांश तिमाहियों में गिरावट के रूप में 39.3% की स्थिति दर्ज की गई है।(२२) तालाबंदी की प्रक्रिया ने न केवल भारी मशीनरी, फार्मास्यूटिकल व ऑटोमोबाइल जौसे विनिर्माण उद्योगों को प्रभावित किया है बल्कि भारत सरकार द्वारा संचालित मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों को भी गंभीर रूप से प्रभावित किया और आगे भविष्य में क्या होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता है क्योंकि कोविड-19 अभी भी अपने छिटपुट रूप में संचालित है।

प्रवासी श्रमिक -

सामान्य शब्दों में प्रवासी श्रमिक उन लोगों को कहा जाता है जो एक राज्य से दूसरे राज्य में काम या रोजगार की तलाश में प्रस्थान करते हैं। दरअसल भारत के कुछ राज्य जैसे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान आदि ऐसे हैं जिन्हें बीमारू राज्यों की संज्ञा दी गई है। यहां बीमारू से मतलब आर्थिक रूप से पिछड़े हुए राज्य तथा व्यापक स्तर पर गरीबी, बेकारी का पाया जाना है क्योंकि कार्यबल की दृष्टि से श्रमिकों या मजदूरों को अहम माना गया है इसलिए इसे अर्थव्यवस्था में शामिल किया गया है।

विश्व के विभिन्न सामाजिक चिंतक और नीति निर्माताओं व लेखकों ने स्पष्ट किया है कि कोविड-19 की वजह से लगभग 14 मिलियन प्रवासी श्रमिकों ने अपने निवास स्थान की ओर प्रस्थान किया था। यह संख्या भारत विभाजन के परिणाम स्वरुप किए गए प्रस्थान से भी अधिक मानी गई थी। इस संबंध में विश्व का अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन का दावा है कि। प्रवासी श्रमिकों के संदर्भ में यह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दूसरा सबसे बड़ा वैश्विक संकट है।(२३) आपको ज्ञात होना चाहिए कि भारत की अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में कार्य करने वाले कुल 76.2% प्रवासी श्रमिक हैं, जिनमें से तालाबंदी के कारण लगभग 195 मिलीयन श्रमिकों की नौकरियां जाने का खतरा बना हुआ था।(२४) यह प्रवासी श्रमिक भिन्न प्रकार के कार्यों में संलग्न है जिन्हें तालिका में दर्शाया गया है|

तालिक

क्र.	मद	प्रवासी श्रमिक
१.	निर्माण / विनिर्माण	४० मिलियन
२.	घरेलू कार्य	२० मिलियन
३.	कपड़ा उधोग	११ मिलियन
४.	इट भट्टा	१० मिलियन

source:-iips(2001) major net migration flows, indians institute of population sciences.

इसके साथ ही भारत में प्रवासी श्रमिकों का वेतन या पारिश्रमिक का स्तर भी काफी निम्न या न्यूनतम है एक जन सहयोग सर्वेक्षण संस्था के अनुसार भारत में प्रवासी श्रमिकों के पारिश्रमिक में काफी भिन्नता या असमानता व्याप्त है यहां 39% श्रमिकों को 400 से 7600 के बीच, 55% श्रमिकों को 200 से 400 के बीच तथा 4% श्रमिकों को 7600 से अधिक पारिश्रमिक प्राप्त होता है।(२५) यदि हम इस पारिश्रमिक का मूल्यांकन करें तो यह पता चलता है कि केवल 4% श्रमिक को न्यूनतम मजदूरी के बराबर पारिश्रमिक मिलता है। शेष श्रमिकों को न्यूनतम मजदूरी से कम प्राप्त होता है जो कि गरीबी की श्रेणी में आता है। ऐसी परिस्थितियों में यदि कोविड-19 के कारण उनकी नौकरी या काम मिलना बंद हो जाता है तो यह निश्चित है कि उन्हें गरीबी के साथ-साथ दो वक्त का खाना प्राप्त करना भी मुश्किल प्रतीत हो सकता है भोजन के संबंध में जब सर्वेक्षण किया गया तो यह ज्ञात हुआ कि प्रवासी श्रमिकों में से 39.4% के पास केवल 2 सप्ताह का राशन था, जबकि 49.2% के पास कोई भी राशन उपलब्ध नहीं था।(२६) इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि कोविड-19 की अवधि में प्रवासी श्रमिकों की कैसी स्थिति रही थी। कई श्रमिकों ने तो काम से बाहर होने के कारण पैदल अपने निवास स्थान की ओर प्रस्थान किया था क्योंकि तालाबंदी की अवधि में यातायात पूरी तरह से बंद था। ऐसा अनुमान है कि कई प्रवासी श्रमिक अपने निवास स्थान पर पहुंचे ही नहीं थे। इसकी वजह रास्ते में उनकी मौत हो गई थी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कोरोना महामारी ने संपूर्ण मानव जीवन को प्रभावित करके विनाश के मुहाने पर पहुंचा दिया था।

निष्कर्ष -

उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि कोरोना वायरस महामारी ने वास्तव में मानव विनाश के संकेत दे दिए थे। यदि भारत तालाबंदी की प्रक्रिया को नहीं अपनाता तो ना जाने कितने लोग अपने प्राण दे चुके थे। हालांकि तालाबंदी की प्रक्रिया ने संपूर्ण देश के मानव जीवन से लेकर अर्थव्यवस्था तक को अस्त-व्यस्त कर दिया था। लेकिन लोगों की जान बचाने की दृष्टि से यह निर्णय अहम था।

भारत सरकार ने कोविड-19 के फेलते हुए संक्रमण को रोकने के लिए जो राष्ट्रव्यापी तालाबंदी की प्रक्रिया को अपनाया था, उसकी वजह से अर्थव्यवस्था के विभिन्न घटक जैसे बिनिर्माण, मांग एवं आपूर्ति, सकल घरेलू उत्पाद व प्रवासी श्रमिकों पर गंभीर रूप से प्रभाव पड़ा था। अर्थात यह सभी घटक मंदी की अवस्था में पहुंच गए थे। जिन्हें मंदी से उबारने के लिए भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत अभियान कार्यक्रम की पहल की थी। इसके अंतर्गत कुल 20000 करोड रुपए की वित्तीय सहायता का प्रावधान निर्धारित किया था।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि तालाबंदी के कारण जो अर्थव्यवस्था मंदी की अवस्था में प्रवेश कर गई थी, उसे ऊपर उठाने के लिए पुनः भारत सरकार ने ही वित्तीय सहायता का प्रावधान रखा था। इस

दृष्टि से भारत सरकार सराहना की पात्र है और हम यह भी कह सकते हैं कि देश पर कैसा भी संकट क्यों ना आ जाए। हम पूर्ण रुप से सामना करने के लिए तैयार हैं और रहेंगे।

Reference

1- Impact on covid-19 on indian economy.(www.businessworld.in),30 december 2020, by-nitin shahi.

2- Ministry of health and family welfare.In-national health profile of india 2019.central bureau of health intelligence,editor:government of india:new delhi,india 2019.

3- Wolpert S.A.,ALAM M.,calkins P.B., champakalakshmi R.,DIKSHIT K.R., SCHWARTZBERG J.E.,PERCIVAL SPEAR T.G.,ALLCHIN F.R., SRIVASTAVA A.L.,SUBRAHMANYAM,S., ET AL ENCYCLOPEDIA BRITANNICA, ENCYCLOPEDIA BRITANNICA, Inc, chicago,IL,USA 2020 india

4- IBID.

5- https://www.britannica.com/place/india.

6- Economic survey 2021-2022 (www.ibef.org),feb.2022,avalible- https://ww w.ibe f.org/economy-survey-2021-2022

7- IBID.

8- IBID.

9- Jamwal,A. bhatnager,S and sharma,P.(2020)-corona virus disease 2019 covid-19-current literature and status in india.

10- Leigh,G(2020) The number of daily flight is now dropping.Drastically:-the latest in aviation.FORBES.ACCESSED 31 March 2020 form https://www.forbes.com/sites /gabrielligh/2020/03 /30 the-number-of daily flights-is-now-dropping-drastically-the-latest in aviation/#701c2b9943du.

11- DEV,S.MAHENDRA and R.SENGUPTA(2020) covid-19:-impact on the indian economy,Indira Gandhi institute of development research(IGIDR) working paper series,WP-2020-013.

12- LETZING,J.(2020,MARCH 18) how many policy tool are left to soften the impact of covid-19 ?,world economic forum. ACCESSED 27 March 2020, https://www.weforum.org/ agenda/2020/03/covid-19-coronavirus-policy-too k zs -economic-impact.

13- Market watch (2020,march 10) corona virus sends food prices soaring in china.market watch. ACCESSED 22 march 2020, https://w ww.mar ketw atch.com/story/coronavirus-sends-food-prices-soaring-in-china-2020-03-10.

14- United nations(2020) ECONOMIC AND SOCIAL SURVEY OF ASIA AND THE PACIFIC.ECONOMIC AND SOCIAL commission for asia and the pacific decad action(ESCAP).

15- Chaudhary,M.,sodani,P.R.AND DAS,S.(2020)effect of covid-19 on economy in india:-some reflection for policy and programme,journal of health management 22(2) 169-180,2020.

16- Goldman sachs(2020) Goldman sachs estimates india's GDP growth rate at 1.6% predicts RBI will reduce interest rate by another 50 bas is points, https://www.news18.com/news/business/goldman-sachs-estimates-india's-gdp-growth-rate-at-1-6-predicts-rbi-will-reduce-interest-rate-2569465.

17- KPMG(2020) coronavirus:-india GDP growth may fall blow 3% if lockdown extent,says KPMG report.,BUSINESS TODAY, https://www.busi nessto day.in/current/economy-politics/coronavirus-india-gdp-growth-may-fall-blo w-3 -if-lockdown-extends-says-kpmg-report/stroy/400135,html.

18- JOHNSON,E.(2020)logistics technology:-covid-19 forces freightos into proactive layoffs.JOC.ACCESSED 31 March 2020, https://www .joc.co m/ technology/freight-procurement-systems/covid-19-forces-freightos-proa ctive -layoffs-20200317.html.

19- IHS markit(2020) IHS markit cips flash UK composite PMI,24 march 2020.news relese,chartered institute of procurement and supply(CIPS) and IHS markit, ACCESSED 29 March 2020, https://www.markitecon omics.com/public/home/pressrelease/of164ac 0128b429eaic329104afd62c3.

20- Pickert,R.(2020,march 26)U.S. jobless claim jump to 3.28 million,quadruple prior record.BLOOMBERG,ACCESSED 28 march 2020, https://w ww.blo omberg.com/news/articles/2020-03-26/4-5-jobless-claim-surged-to-record-3-28-million-last-week?

21- Impact on indian economy after the covid-19 second wave:-FINALCIAL EXPRESS (news paper),21 june 2021,by-AMIT KUMAR.

22- The impact of covid-19 on india's manufacturing sector. (www.m.thewire.in),10 may 2021, by-vashali basu sharma.

23- To see the reference number[15]

24- To see the reference number[15]

25- To see the reference number[15]

26- To see the reference number[15]

अध्याय २८

वैश्विक स्तर पर कोरोना महामारी का शिक्षा पर प्रभाव एवं ऑनलाइन शिक्षण का अध्ययन

डॉ. रिज़वाना सिद्दीक़ी
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, सो0 सि0 जी0 वि0 वि0, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

साराँश

11 मार्च, 2020 को कोविड–19 को विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O) ने वैश्विक महामारी घोषित किया। चीन के वुहान शहर से 2019, दिसम्बर में यह प्रारम्भ हुआ। विकासशील देशों की तुलना में विकसित देश अधिक प्रभावित हुए। मानव निर्मित वायरस होने के कारण ही इसे जैव आतंकवाद की संज्ञा दी गयी। इस महामारी ने विश्व को विकास की दौड़ में पीछे कर दिया। मनुष्य का सर्वांगीण विकास बाधित हो गया। शिक्षा के क्षेत्र में भावी पीढ़ियों के समक्ष इसके दुष्परिणाम उपस्थित होंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार, कोरोना वायरस के आर्थिक परिणामों के कारण आगामी वर्षों में लगभग 24 मिलियन बच्चों पर स्कूल न लौट पाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। महामारी के दौरान विद्यालय बंद होने के कारण विद्यार्थियों के पास सीखने के पर्याप्त अवसर, सुविधा और साधन उपलब्ध नहीं थे।

मुख्य शब्द – विश्व स्वास्थ्य संगठन, महामारी, कोविड–19, वायरस, कोरोना, ऑनलाइन।

प्रस्तावना –

एक ऐसा मानव निर्मित वायरस जिसे कोविड–19 की संज्ञा दी गयी उससे पूरा विश्व प्रभावित हो गया। मानव एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के सम्पर्क में आने से ही संक्रमित होने लगा। इस भयावह स्थिति में मनुष्य स्वयं को लाचार महसूस कर रहा था। इस महामारी के फैलाव को रोकने के लिए वर्ष 2020 में विश्वभर के बच्चों की शिक्षा बाधित हो गयी, स्कूल अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिये गये। कुछ प्रयासों से ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा उपलब्ध करायी गयी। अधिकांश बच्चे वंचित संसाधनों के कारण इस लाभ को उठा न सकें। स्मार्टफोन और पर्याप्त नेटवर्क के उपलब्ध न होने की स्थिति में सभी विद्यार्थी ऑनलाईन शिक्षण प्रक्रिया से लाभान्वित

न हो सके। इसी कारण महामारी के दौरान स्कूल और महाविद्यालयों में निरन्तर सीखने की प्रक्रिया बाधित हो गयी।

कोरोना महामारी से पहली और दूसरी लहर से देश और विदेश में भी लगभग हर आयु वर्ग के व्यक्ति को प्रभावित किया। अब इस महामारी की तीसरी लहर में वायरस के नये वेरिएंट ओमिक्रॉन ने पुनः स्थिति असमान्य कर दी है। स्कूल और शिक्षण संस्थानों के बन्द हो जाने के कारण विश्व में लगभग 94% विद्यार्थियो की संख्या प्रभावित हुई है। निम्न तथा निम्न–मध्यम आय वाले देशों में यह संख्या 99% है। कोविड–19 महामारी ने शिक्षा प्रणाली में व्याप्त असमानता को अधिक प्रभावित कर दिया है। निम्न आय वाले देशों को इसके अधिक दुष्परिणामों से सामना करना पड़ा वर्ष 2020 की दूसरी तिमाही के दौरान निम्न आय वाले देशों में प्राथमिक स्तर पर लगभग 86% बच्चे विद्यालयों से बाहर हो गये। उच्च आय वाले देशों में यह आँकड़ा केवल 20% है।

ऑनलाईन शिक्षण का प्रभाव :–

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रिया को सुचारू रूप से विकसित करने के लिए सम्प्रेशण तथा अभिसूचना तकनीकी का प्रयोग हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर पर इंटरनेट सेवा का प्रयोग किया जा रहा है। फलतः तकनीकी के भी नये प्रत्यय जैसे– कम्प्यूटर इन्टरनेट, इंट्रोनट, एक्सट्रानेट, नेटवर्किंग प्रणाली, वेबसाइट, ई–स्कूल प्रणाली, ई–लर्निंग, आभासी कक्षा आदि का उपयोग तीव्रता के साथ प्रचलन में आ गया। कोविड–19 के कारण शिक्षा ग्रहण करने की अवधारणा ही परिवर्तित हो गयी। कक्षाएँ और परीक्षाएँ दोनों ही आभासी हो गयी। विद्यार्थियों के चहुमुखी विकास हेतु जहाँ विद्यार्थियों की भौतिक उपस्थिति अनिवार्य थी वहीं अब वे घर से बाहर ऑनलाईन प्रवेश, कक्षा और परिक्षाएँ सम्पन्न होने लगी। इस कारण शिक्षक और छात्र का कक्षा–कक्ष का सम्प्रेशण खत्म होने लगा।

नोवल कोरोना वायरस का प्रसार रोकने के लिए विश्व में लगभग 190 से अधिक देशों में 140 करोड़ विद्यार्थियों को उनके पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों से वंचित कर दिया। कालान्तर में पुनः कुछ देशों में स्कूल खोले गये। लेकिन पूर्व की भाँति छात्र संख्या उपस्थित नहीं हुई, ऑनलाईन कक्षा शिक्षण में विद्यार्थियों की इन्टरनेट तक पहुँच, कनेक्टिविटी, सुलभता, भौतिक तैयारी, शिक्षकों का प्रशिक्षण और पारिवारिक परिस्थितियों ने भी शिक्षा को बाधित किया। लाखों विद्यार्थियों के लिए विद्यालयों का अकस्मात् बन्द हो जाना उनकी शिक्षा में अस्थायी व्यवधान ही नहीं वरन् जीवन पर्यन्त अपूर्णनीय क्षति रही है।

(लन्दन, 17 मई, 2021) ह्यूमन राइट्स वॉच ने जारी एक रिपोर्ट में कहा कि सरकारों को कोविड–19 महामारी से हुए अभूतवूर्व व्यवधान के कारण बच्चों की शिक्षा के नुकसान की भरपाई के लिए तुरन्त कदम उठाये जाने चाहिए, ह्यूमन राइट्स वॉच

की इस रिपोर्ट के साथ एक इंटरैक्टिव फीचर है, जिसमें महामारी के दौरान शिक्षा से जुड़ी आम बाधाओं के गहराने की पड़ताल की गयी है। ह्यूमन राइट्स वॉच की सीनियर एजुकेशन रिसर्चर **एलिन मार्टिनेज** के अनुसार – **''महामारी के दौरान लाखों बच्चों के शिक्षा से वंचित होने के कारण, अब समय आ गया है कि बेहतर और अधिक न्यायपूर्ण एवं मजबूत शिक्षा प्रणाली का पुनर्निर्माण कर शिक्षा के अधिकार को सुदृढ़ किया जाय। इसका उद्देश्य सिर्फ महामारी से पहले की स्थिति बहाल करना नहीं, बल्कि व्यवस्था की उन खामियों को दूर करना होना चाहिए जिनके कारण लम्बे समय से स्कूल के दरवाज़े सभी बच्चों के लिए खुले नहीं हैं।''**

हाल ही में किये गये **यूनिसेफ** के एक अध्ययन में **सुजॉय घोष** ने अपने लेख में बताया कि – स्कूलों के बंद होने से 286 मिलियन छात्र, जिनमें 48% लड़कियाँ हैं और जो पूर्व–प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्कूलों में पढ़ती हैं, प्रभावित हुई हैं।

ऑन लाईन शिक्षण के दुष्प्रभाव :–

कोरोना महामारी के कारण संपूर्ण विश्व की शिक्षा व्यवस्था पूर्णतया धराशायी हो गयी। अचानक से आये शिक्षा ग्रहण प्रक्रिया में बदलाव के कारण परम्परागत शिक्षा प्रणाली अनियोजित ऑनलाइन आधारित शिक्षा प्रणाली में बदल गयी। प्रत्येक विद्यार्थी मानसिक और तकनीकी रूप से स्वयं को इस स्थिति में सामंजस्य करने में असमर्थ रहा। ऑन लाईन शिक्षण के प्रमुख दुष्प्रभाव इस प्रकार हैं–

- ❖ प्रत्येक देश की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है किन्तु इस नवीन शिक्षा प्रणाली से यह पूर्णतया संभव नहीं है।
- ❖ शिक्षा की बदली तकनीक से विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता बाधित हो गयी।
- ❖ सामूहिकता का रूप व्यक्तिगत हो गया, इस कारण मानसिक स्तर भी प्रभावित हुआ।
- ❖ परम्परागत कक्षा–कक्ष में अध्यापक–छात्र के मध्य की अन्तःक्रिया ऑन लाइन शिक्षण में संभव नहीं है।
- ❖ शिक्षा पर कोविड–19 के प्रभाव के आँकलन हेतु यूनिसेफ ने भारत के छः राज्यो–असम, बिहार, गुजरात, केरल, मध्य प्रदेश और उत्तर–प्रदेश के आँकड़ो से मूल्यांकन स्वरूप पाया कि ''छात्र स्कूल बन्द होने पर स्वध्ययन पर अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं, पर सीख कम रहे हैं। जबकि स्कूल में कम समय बिताते हैं, अधिक सीखते हैं।
- ❖ सामुदायिक सहभागिता से अनभिज्ञ हो जाना इससे सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों का ह्रास परिलक्षित होने लगा।
- ❖ ऑनलाइन शिक्षण में अनुकरण द्वारा सीखने की प्रक्रिया पूर्ण रूप से बाधित हो गयी।

- ❖ लगातार मोबाईल या लैपटॉप स्क्रिन को देखते–देखते आँखों की समस्याएँ ज्यादा होने लगी।
- ❖ ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से अध्ययन करने में लचीलापन होने के कारण विद्यार्थी गलत रास्ते पर भी जा सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षण के लाभ :–

दुनिया भर में कोविड–19 महामारी के पड़ते प्रभाव को मापने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने एक नया ट्रैकर जारी किया है, जिसे जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी, वर्ल्ड बैंक और यूनिसेफ के आपसी सहयोग से बनाया गया है। यह ट्रैकर चार प्रमुख क्षेत्रों से जुड़ी सूचनाओं को एकत्र करता और दिखाता है –

- ❖ क्या है स्कूली शिक्षा की स्थिति?
- ❖ सीखने के अलग–अलग तौर–तरीके इस्तेमाल हो रहे हैं, जैसे– घर पर शिक्षा या स्कूल में आमने–सामने और हाइब्रिड।
- ❖ शिक्षा की स्थिति में सुधार के उपायों की उपलब्धता।
- ❖ शिक्षकों के लिए वैक्सीन की उपलब्धता और उसकी स्थिति।

ट्रैकर से प्राप्त मार्च 2021 की शुरूआत तक के ऑकड़ो के अनुसार 51 देशों के स्कूल खुल चुके हैं। 90 से अधिक देशों में अन्य तरीकों से शिक्षा दी जा रही है।

कोरोना वायरस महामारी ने दुनिया भर में लाखों लोगों के शिक्षित होने के तरीके में भी परिवर्तन कर दिया है। 39 देशों में घोषित किये गये लॉकडाउन के कारण स्कूल बन्द हो गये, जिसके कारण 421 मिलियन से अधिक बच्चे प्रभावित हुए हैं। इस त्रासदी से प्रभावित शिक्षा को पुनः स्थापित करने के लिए एक मात्र उपाय आभासी कक्षा शिक्षण रहा। आज यह दूरस्थ शिक्षा का सबसे नया और सबसे लोकप्रिय रूप है। ऑफलाईन शिक्षा के ठीक विपरीत ऑनलाइन शिक्षा इंटरनेट द्वारा होती है। महामारी के कारण ऑनलाइन कक्षाएँ एक आवश्यकता बन गयी है। इसके प्रमुख लाभी हैं–

- ❖ घर पर रहकर आराम से शिक्षण ग्रहण करना।
- ❖ स्वगति के आधार पर सीखना, आसान रहता है।
- ❖ ऑनलाइन शिक्षा में विभिन्न शिक्षण शैलियों का प्रयोग किया जा सकता है।
- ❖ नियत समय एवं नियत स्थान की बाध्यता नहीं है।
- ❖ विद्यार्थी किसी भी व्यवसाय को चुनकर शिक्षा प्राप्त कर सकता है।
- ❖ इसमें विद्यार्थी विश्व के किसी भी विषय के प्रभावशाली शिक्षक के व्याख्यान का लाभ उठा सकते हैं।
- ❖ ऑनलाईन शिक्षण के साथ कोई भौगोलिक बाधाएँ नहीं होती है।

- ❖ ऑनलाइन अधिगम में विकल्पों का समायोजन होने के कारण इच्छानुसार विषयों का चयन किया जाता है।
- ❖ ऑनलाइन अधिगम में प्रकरण का चयन रूचिनुसार किया जा सकता है।

ऑनलाइन अधिगम (सीखना) के प्रकार :–

ऑनलाइन शिक्षण में विभिन्न प्रविधियों के द्वारा बहुमाध्यमों का उपयोग किया जा सकता है। जैसे–

1. ऑनलाइन अधिगम
2. मिश्रित अधिगम
3. सिन्क्रॉनस अधिगम – (इन्टरनेट, दृश्य सम्मेलन, टेलीकानफ्रेंसिंग)
4. असिन्क्रॉनस् अधिगम – (ई–मेल, सुनना, वाद–विवाद)
5. स्वाध्याय
6. वेब अधिगम
7. कम्प्यूटर आधारित अधिगम
8. दृश्य–श्रव्य टेप द्वारा अधिगम।

ऑनलाइन अधिगम का प्रयोग वेब या सीडी रोम की सहायता से किया जाता है।

कोविड महामारी में शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता :–

कोविड 19 के कारण विपरीत परिस्थितियों ने विद्यार्थियों की शिक्षा को बाधित कर उनके मनोबल पर भी गहरा आघात पहुँचाया है। इस स्थिति में आवश्यकता है कि परिवारण अभिभावक, माता–पिता, शिक्षक, समाज सभी समन्वित रूप से शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने में अपनी–अपनी भूमिका का निर्वहन करे, ताकि लम्बी अवधि तक शिक्षा बाधित न रहे। इसी कारण आवश्यकतानुसार पूर्व प्रणाली में नवीनता का समावेश किया जाये इसके लिए निम्न कार्य सुचारू रूप से किये जायें जैसे–

- ❖ दूरस्थ क्षेत्रों में भी बिजली की पूर्ण आपूर्ति की जाय।
- ❖ इन्टरनेट कनेक्टिविटी को सुदृढ़ किया जाय।
- ❖ शिक्षकों को नवीन प्रणाली में दक्षता दी जाय।
- ❖ शिक्षण प्रक्रिया में लचीलापन लाया जाय।
- ❖ विद्यार्थियों के द्वारा किये गये कार्यों का मूल्यांकन कर पुनः ई–मेल से उन्हें वापस करने से प्रति–पुष्टि प्राप्त होगी।

निष्कर्ष –

वर्तमान समय में वैश्विक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में ये नूतन आयाम है। जिससे बहुआयामी पाठ्यक्रम का संचालन किया जा सकता है। इसी कारण इसे नवीन पद्धति के विकल्प के रू॰ में अपनाया जा सकता है इस

महामारी ने सभी को सीमित संसाधनों में जीने की कला सीखा दी। वैश्विक आर्थिक गतिविधियाँ अवरूध होने के कारण अपने भौतिक संसाधनों को ही नियंत्रित करके जीवन यापन करना पड़ा। हमारी शिक्षा व्यवस्था इस प्रकार के उद्देश्यों को लेकर तैयार की जाय जो कि मानव जाति के सुरक्षित रहने के लिए महत्वपूर्ण साबित हो। वैश्विक महामारी एवं विषम परिस्थितियों के बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल क्रांति से नये कीर्तिमान स्थापित हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- दैनिक जागरण हल्द्वानी झा ऐश्वर्या ;31 दिसम्बर 2021द्ध ष्देश में तीसरी लहर की आहटष् हल्द्वानी जि0 नैनीताल उत्तराखण्ड पृ0 संण् 3
- झा ऐश्वर्या ;2021द्ध ष्डिजिटल क्रांति के दौर में हिन्दी शिक्षण का बदलता स्वरूपष् साहित्य संचय बी.1050 गली नं0 14 सोनिया विहार दिल्ली 978.93.91602.35.2
- भटनागर ए0 बी0 अनुराग ष्शैक्षिक तकनीकी एवं आई0 सी0 टी0ष् विनय रखे जा ब्ध्व आर0 लाल बुक डिपा नियर जीण् आई सीण् मेरठ ;उण्प्रण्द्ध 978.93. 85960ण्61ण्1
- सिंह जितेन्द्र कुमार ;2012द्ध ष्अनुदानित व गैर. अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की धर्मनिरपेक्षताए समाजिक एवं सांस्कृति आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्क अध्ययन शोध केन्द्र हिन्दू काॅलेज मुरादाबाद पृ0सं0 56
- https://www.hro.org – महामारी का शिक्षा पर गंभीर प्रभाव
- https://m.hastakshep.com – महामारी के दौरान भारत में स्कूली शिक्षा का हाल
- From – Codinghoro – delivered by Rajan Dobhal – बच्चों के लिए ऑनलाइन कक्षा (21 जून 2021)
- From – downearth.org.in –शिक्षा पर महामारी के पड़ने वाले प्रभाव को मापने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने जारी किया नया ट्रैकर (28 मार्च 2021)

अध्याय २९

कोरोना और सामाजिक चुनौतियाँ

डॉ. शाहीन शेख
विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, इस्लामिया करीमिया महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

शोध सारांश
व्यक्तियों को जीवन–यापन करने या अपनी आजीविका के लिये विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति है तो संघर्ष है, संघर्ष है तो जीवन है। लाखों व्यक्तियों को काल के गर्त में समा चुका कोराना एक बहुत ही दानवी, राक्षसी रूप लेकर वर्तमान में हमारे समक्ष खड़ा है। भारत ही नहीं वरन् पूरा विश्व पटल कोरोना महामारी का दंश झेल रहा है। आज तक भी हम इससे उबर नहीं पा रहे है।

''भारत में कोरोना वायरस से संक्रमितों की संख्या 4,43,27,890 के पार पहुँच चुकी है जबकि एक्टिव मरीज संख्या 1,01,166 है कुल मृतको की संख्या 5,27,289 है। बहुत कुछ इन आँकड़ों के पार अब भी बाकी व छिपा हुआ है।'' (Web Dunia – Desk. 20 Aug. 2022)

भारत में पहला प्रकरण 27 जनवरी 2020 को भोपाल में एवं 20 मार्च 2020 को जबलपुर में दूसरा प्रकरण रिपोर्ट किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अब तक कई महामारी आई जो मानव जाति के विनाश का कारण बनी अभी वर्तमान में कोरोना महामारी का दानव भयावह रूप लेकर हमारे सामने ज्वलंत चुनौती बना हुआ है।

दिसम्बर 2019 में चीन के हुबेई प्रांत के वुहान में एक संक्रामक श्वसन रोग उत्पन्न हुआ था, जिसे विश्व स्वाथ्य संगठन (WHO) ने 8 अप्रैल 2020 को कोविड–19 (कोरोना वायरस रोग–19) का नाम दिया था, जो कि Omicron, Beta, Deta, वर्तमान में मंकी पॉक्स नये–नये रूप व नाम लेकर हमारे सामने आता रहा है और आगे न जाने कितने रूप हमें दिखायेगा।

मुख्य शब्द – चुनौती, निरंतरता, प्रत्युत्तर कोविड–19, सभ्यता, संस्कृति, परिस्थिति।

यह शोधपत्र समाज पर कोविड–19 की वजह से जो सामाजिक चुनौती खड़ी हुई है उसे प्रकाशित करता है।

SARS – COV-2 सिवियर एक्यूट रेस्पिाइरेटरी सिन्ड्रोम कोरोना वायरस–2 हमारे सामने निम्नलिखित चुनौती लेकर खड़ा है –

1. टीकाकरण की चुनौती।
2. आर्थिक स्वास्थ्य व पर्यावरण की चुनौती।
3. सोशल डिस्टेसिंग की चुनौती।
4. पर्यटन उद्योग की चुनौती।
5. असमानता सामाजिक बँटवारे की चुनौती।
6. मानसूनी संक्रमण की चुनौती।
7. बेरोजगारी की चुनौती।
8. मनोवैज्ञानिक प्रभाव, मनःस्थिति की चुनौती।
9. मंहगाई की चुनौती।
10. गरीबी की चुनौती।
11. अशिक्षा की चुनौती।
12. आलस्य की चुनौती।
13. स्वास्थ्य की चुनौती।
14. पुरानी बिमारियों से ग्रसित हृदयरोग, मधुमेह के रोगीयों के लिये चुनौती।
15. सौहार्द, समन्वय, दृढ़निश्चयता की चुनौती।
16. शिक्षा की चुनौती।
17. कार्यस्थल पर कर्मचारियों की सुरक्षा की चुनौती।
18. विषमता की चुनौती।
19. सामाजिक परिवेश की चुनौती।
20. सार्वभौमिक बुनियादी सुविधा की चुनौती।
21. रोटी, कपड़ा मकान की चुनौती।
22. आय की चुनौती।
23. वृद्धों के लिये चुनौती।
24. अलगाव की समस्या।
25. विकलांगों की समस्या।
26. युवाओं की समस्या, चिंता व चुनौती।
27. परिवारिक सम्बंधों, पास–पड़ोसियों के संबंधों, रिश्तेदारों के संबंधों की चुनौती।
28. शहरी क्षेत्रों में उत्पादन की चुनौती।
29. पर्यावरण की चुनौती।
30. हस्तशिल्प कला उद्योग की चुनौती।
31. लघु उद्योगों की चुनौती।
32. फैक्टरियों, कारखानों, की चुनौती।
33. जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग की समस्या।

34. पर्यावरण प्रदूषण (जल, जंगल, जमीन, वायु, ध्वनी प्रदूषण, मृदा प्रदूषण) की चुनौती।
35. बढ़ते कलह, सघर्ष की समस्या।
36. प्रतिस्पर्धात्मक माहौल की चुनौती।
37. दिखावे, आडम्बर की चुनौती।
38. महिलाओं पर तरह–तरह के अपराध की चुनौती।
39. घरेलू कार्य की चुनौती।
40. दो तरफा बढ़ते कार्य की चुनौती।
41. बाल अपराध की समस्या।
42. महिला अत्याचार की समस्या।
43. बढ़ते तलाक के मामलों की समस्या।
44. घरेलू हिंसा के बढ़ते मामले।
45. अनाथ बच्चे, परिवार की समस्या।
46. यौन शोषण, महिला हिंसा, अत्याचार, यौन अपराधों में बृद्धि।
47. साफ–सफाई स्वच्छता की चुनौती।
48. अस्पतालों में पर्याप्त डॉक्टर की समस्या, नर्स, स्टाफ, पलंग, कर्मचारियों दवाईयों व संसाधनों की कमी, ऑक्सीजन की समस्या, वेंटिलेटर की समस्या।
49. सुरक्षा, सुरक्षित माहौल, भय, डर की चुनौती।
50. श्मशान घाटों में जलाने व कब्रिस्तानों पर दफनाने की समस्या।
51. बच्चों व बूढ़ों का मनोबल बनाये रखने की चुनौती।
52. स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव से नकारात्मकता से दूर रहने की समस्या की चुनौती।
53. खेलकूद से दूरी की चुनौती।
54. योगा, सुबह का टहलना, जल्दी उठना सबकी समस्या।
55. मंदिरों, मस्जिदों, गुरूद्वारों, गिरजाघरों से दूरी।
56. मेडिसिन की चुनौती।
57. वैश्विक पर्यावरण को बल देने की चुनौती।
58. सोशल मिडिया की भ्रामक/गलत जानकारी।
59. सामाजिक चुनौती।

मनुष्य एक नश्वर प्राणी है। जन्म लिया है तो मृत्यु निश्चित है, चाहे वह सजीव हो या निर्जीव। लोगों में डर, दहशत भरा हुआ है लोगों ने ऐहतियात बरतना, सेफ्टी के साथ रहना और अपने आप को जिंदा रखना सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता बना लिया है। लोगों के साफ–सफाई, स्वास्थ्य को पहली जरूरत मानकर अपने आप को जिंदा व सुरक्षित रखने की सबसे बड़ी चुनौती आज हमारे सामने खड़ी है। कोरोना ने आज हमारे सामने अर्थव्यवस्था की नयी उभरती हुई चुनौती को खड़ा किया है।

पूरी दुनिया के 200 से अधिक देशों में अब तक किसी भी चिकित्सीय रूप से स्वीकृत एंटीवायरल दवाओं/टीकों की रिपोर्ट नहीं है, जो कोविड–19 के खिलाफ प्रभावी हो यह पूरी मानव आबादी के लिये स्वास्थ्य, आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों को दरकिनार कर पूरी दुनिया में फैल चुका है।

कुछ ही गिने–चुने देश सिंगापुर, ताइवान, न्यूजीलैण्ड, जापान आदि जो इस महामारी की तबाही से खुद को बचा पाने में कुछ सफल हुये इनके पास नागरिक स्वास्थ्य सुविधा थी। हमारी सरकार ने भी कम पैसे या मुफ्त में लोगों की मदद की, जन सामान्य और कई हस्तियों ने मदद की और इस संकट काल में सबके प्रयास से जन–सामान्य को बचाया जा सका।

- इन्दौर वैक्सीनेशन में प्रथम रहा IAS कलेक्टर श्री मनीष सिंग के अनुसार 100 प्रतिशत भारत में वैक्सीनेशन हुआ।
- अगस्त 2021 में पहला डोज कम्पलीट हुआ।
- 23 मार्च को 2020 को प्रधान मंत्री के द्वारा जनता कर्फ्यू एवं 3 हफ्ते का लाकडाउन लगाया गया।
- अप्रैल 2020 में भारत सरकार ने आरोग्य सेतु एप लागू किया।
- थाली बजाओं अभियान, घरो–घर जाकर मास्क बाटे, टीके लगाये आदि सरकार द्वारा प्रयास किये गये।

सामाजिक परिदृश्य में बदलाव –

जिंदगी की भागदौड़ में अपने परिवार एवं आत्मीय स्वजनों के लिए समय निकालना पहले बहुत कठिन था। लॉकडाउन में यह संबंध आत्मीय हुये। भागदौड़, भौतिकवादी जिंदगी में शांति का सुखद अनुभव मिला। परिवार का साथ मिला, आपसी समझ बढ़ी। नौकरी पर निर्भरता कम हुई परिवार के कार्यो को सभी ने मिलजुल कर किया। आत्मीयता, त्याग, सौहार्द्र व समन्वय बढ़ा। जीवन शैली में परिवर्तन आया। स्वच्छता का महत्व बढ़ा है। आदतों में परिवर्तन हुआ। मुख, नाक, चेहरे को ढकने के लिये मास्क ने परिधान का रूप ले लिया है। घर से बाहर ही जूते, चप्पल उतारना, हाथ पैर धोकर घर में प्रवेश करना, प्राचीन परम्परायें व आदतें हमारी अनिवार्यता बन गई।

देश के कई नामी बिल्डरों व कम्पनियों के नए प्रोजेक्ट में कोरोना के चलते बदलाव के आधार पर डिजाइन तैयार कर रहे है। सभी चीजों के साथ घर, कार्यालय में अलग–अलग कमरे की व्यवस्था भी शामिल है। लोग घर के भोजन को प्राथमिकता देने लगे है। होटल या स्ट्रीट भोजन के प्रति लोगों में डर है। पौष्टिक आहार के प्रति आर्कषण बढ़ा हैं। स्वस्थ जीवनचर्या व प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिये लोगों का रूझान योग, प्राणायम, आयुर्वेद में हुआ हैं। विलासिता व भौतिकवादिता का मोह भंग हुआ है। अभिवादन एवं स्वागत के लिये लोग हाथ मिलाने, गले लगने के बदले 'नमस्ते' की भारतीय शैली को अपनाने लगे हैं।

रोजगार की चुनौती –

करोड़ों लोगों का रोजगार छिन गया। अल्प पोषण की समस्या बड़ गई। 6.9 करोड़ लोग अल्पोषण से पीडित है। यह समय वैश्विक एकजुटता और समर्थन के साथ समाज के लिए निर्बल, कमजोर के साथ जुड़ने का, इनकी मदद करने का है। अर्थव्यवस्था में कार्यरत कामगारों के पास आजीविका चले जाने का डर है। सामाजिक संरक्षा और गुणवत्तापरक स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव है। आय का स्त्रोत नहीं है। परिवार चलाना मुश्किल हो गया है।

वे अपनी घबराहट में सम्पत्ति बेच देना, कर्ज लेना, बच्चों का बाल श्रम का शिकार होना ये सभी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

खाद्य प्रणालियों की चुनौतियां –

व्यापार पर रोक, सीमाएं बंद होना, स्वस्थ सुरक्षित आहार लोगों तक न पहुंच पाना, असुरक्षा, कुपोषण, ग्रामीण गरीबी की चुनौतियां हैं। जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण रक्षण की चुनौती है। युवाओं के लिए रोजगार, शिक्षा व ट्रेनिंग के अवसरों की चुनौतियां हैं।

कोरोना के कारण बेरोजगारी बढ़ी है। इससे गरीबों को बहुत चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। कोरोना महामारी से बहुत से लोगों की जॉब चली गई, जिससे उनका परिवार बेरोजगार हो गया।

कोरोना वायरस की महामारी में सभी के जीवन में शिक्षा के क्षेत्र को बहुत अधिक प्रभावित किया जिससे विद्यार्थीयों की पढ़ाई को ऑनलाइन मोड में परिवर्तित कर दिया। बहुत से विद्यार्थी पढ़ाई से वंचित होते जा रहे हैं।

कोरोना के कारण पूरे देश में लॉकडाउन लगा था जिसके कारण सभी फैक्ट्री, ऑफिस, मॉल, दुकानें आदि बंद हुए जिससे हमारी आर्थिक वृद्धि बहुत प्रभावित हुई और अर्थव्यवस्था पूर्णतः लड़खड़ा गई। कोरोना के चलते तलाक बढ़े हैं, पारिवारिक विवाद बढ़े हैं, लड़ाई–झगड़े और लोगों में जरूरत के सामान के लिए मारामारी की स्थिति बनी रही।

ॲर्नाल्ड टायनसी का ''चुनौती और प्रत्युत्तर'' का सिद्धांत – चक्रीय परिवर्तन का समर्थक है।

A Study of History (1934-63) में लिखा है। सभ्यता की चक्रीय नियति है जन्म एवं मृत्यु। 21 सभ्यताओं का अध्ययन किया है। किसी भी सभ्यता को चुनौती दो परिस्थितियों से मिलती है – भौगोलिक एवं सामाजिक।

ओसवाल्ड जर्मन दार्शनिक स्पेंगलर की संस्कृति का चक्रीय सिद्धांत की पुस्तक The decline of fewest (1926) ''संस्कृति सावयव की तरह है और विश्व इतिहास उनकी सामूहिक जीवनी।''

चुनौतियों का सामना कभी कभी संस्कृति मजबूती से नहीं कर पाती है और इतिहास का हिस्सा बन जाती है। वर्तमान में दुनिया एक अनोखे वायरस से लड़ रही

है। इस महामारी ने लाखों लोगों को निगल लिया है, लाखों बच्चे अनाथ हो गए। परिवार समाप्त हो गए। आज मानव सभ्यता को वायरस चुनौती दे रहा है। दुनिया का सबसे बड़ा आबादी वाला हमारा भारत संसाधनों एवं प्रशिक्षण अपर्याप्त होने के कारण आज तक संघर्षरत है। सभ्यता व संस्कृति का अंतर करते हुए अज्ञेय ने लिखा है, ''सभ्यता वह है जिसमें हम जीते हैं और संस्कृति वह है जो हम में जीती है। जो कुछ हम हैं वही संस्कृति है तथा जो कुछ हमारा है वही सभ्यता है।''

कोरोना संकट का दूसरा पहलू

कितनी ही मौतों का जिम्मेदार कोरोना, कष्टदायी, दुखदायी, संकटदायी, देश के पर्यावरण में शुद्धता लाया, पर्यावरण को दुआऐं मिली, शांति दिखाई दी। प्रदूषण, धुआं, गंदगी, आसमान के जल से साफ हुई, स्वच्छ वायु बही, प्रकृति का सौंदर्य निखरकर आया। गंगा की डालफिन, मेरठ तथा हुगली में दिखाई दी। विशेषज्ञों के अनुसार, गंगा में पहली बार ''बैक्टीरिया फैज'' सूक्ष्म जीवों की संख्या अधिक हो गई जो पानी को सड़ने नहीं देते हैं। लॉकडाउन के दौरान देश की आबो–हवा में 44 प्रतिशत तक सुधार हुआ। जहरीली गैस कम हुई, ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ी। दुनिया के प्रदूषण में 40 प्रतिशत की कमी आई। ग्लोबल कार्बन प्रोजेक्ट के अनुसार, इस वर्ष 5 प्रतिशत से ज्यादा की कमी देखने को मिली।

रिश्तों में मजबूती आई, पारिवारिक माहौल में बदलाव आया, बच्चों ने घर बैठकर पढ़ाई की, ऑफिस में वर्क फ्रॉम होम का कल्चर आया। सामाजिक कार्यक्रम, समारोह में सादगी, कम खर्च में विवाह, मृत्यु आदि संस्कार सीमित खर्च में होने लगे। दिखावा कम हुआ, खर्चे कम हुए। लोगों ने स्वास्थ्य को महत्व दिया। हैल्दी डाइट को अपनाया, स्वच्छता को अपनाया, अपनापन, लगाव बढ़ा। लोग कई खर्चों के बिना ही जीवन यापन ही सीख गए। होम डिलीवरी, ऑनलाइन कार्यक्रम, घर बैठे पढ़ाई से लेकर हर जरूरत का सामान घर पर भी प्राप्त होने लगा। योगा, मेडीसिन, सब कुछ घर बैठे ही उपलब्ध हो गया। अपराधों में कमी देखी गई।

प्रौद्योगिकी एवं नवाचार को प्रोत्साहन

ई–कॉमर्स को बढ़ावा मिला है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आटोमेशन एवं रोबोटिक अधिक इस्तेमाल होने लगा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स को बढ़ावा मिल रहा है।

किसी का हाथ स्पर्श न करना है तो हाथ छोड़ना भी नहीं है। सामाजिक दूरी का पालन करते हुए अस्पर्श्यता की भावना को भी पनपने नहीं देना है। अतिथि देवो भवः की हमारी संस्कृति को बचाए रखना है। सामूहिक सहयोग के बिना कुछ भी संभव नहीं है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।

सेमीनार का स्थान वेबीनार ने ले लिया है। सूचना क्रांति तेजी से फैली है। कोविड ने डिजीटलीकरण को बढ़ावा दिया है। शिक्षण संस्थाओं ने ऑनलाइन के माध्यम से पढ़ाई करवाई।

कोरोना, संकट का कुशलतापूर्वक सामना करना सही नेतृत्व, सही मार्गदर्शन के द्वारा सफलता तक पहुंचना सीखा रहा है। कोरोना ने स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भता की प्रेरणा व नवाचारों को प्रोत्साहित किया है। नकारात्मक विचारों को चुनौती दें सकारात्मक विचारों के साथ।

अंत में यही सार है – "रूक जाना नहीं, तू कहीं जिंदगी से हार के।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. संयुक्त राष्ट्र समाचार
2. आर्थिक और सामाजिक मामलों का विकास
3. अमर उजाला
4. The battle against Covid Diary of Bureaucrat, Tarun7Pithode-Cloomsbury, New Delhi, London, Oxford, New York, Sydney
5. JETIR2107516, Journal of emerging technologies and innovative research (JETIR) www.jetir.org, 2021 JETIR, July 2021 Volume 8Issue 1
6. उच्चतर समाजशास्त्र, विश्वकोष, रावत हरिकृष्ण, पृ. 54
7. A study of History समाजशास्त्र अवधारणाएं एवं सिद्धांत, सिंह जे.पी., पृ. 373
8. Social and Culture, Dynamics (1937-41) समाजशास्त्र अवधारणाएं एवं सिद्धांत, सिंह जे.पी., पृ. 371
9. The Decline of Fewest (1926) समाजशास्त्र अवधारणाएं एवं सिद्धांत, सिंह जे.पी., पृ. 371
10. https://www.aajtak.in
11. दैनिक जागरण 2 मई 2021
12. https://www.dhsgsu.ac.in
13. https://www.orforlins.org
14. यूको रायपुर प्रभा अप्रैल–सितंबर 2020

अध्याय ३०

कोरोना महामारीत युवकांचे योगदान

डॉ. चंदशेखर आत्माराम भगत
प्रभारी प्राचार्य, ए व्ही. पी. एस. कॉलेज ऑफ आर्टस, सायन्स ॲन्ड कॉमर्स, लोणावळा, तालुका मावळ, जिल्हा पुणे, पिन 410 401, महाराष्ट्र राज्य

बीजशब्द : कोरोनाची ठिणगी, कोरोना प्रभावित क्षेत्रे, युवकांचे जगातील स्थान, तरूणांनी दिलेले योगदान.

प्रास्ताविक :

जगाच्या इतिहासात साथीच्या रोगांचा प्रादुर्भाव हा प्रत्येक दशकात कमी अधिक प्रमाणात उदभवलेला पहायला मिळतो. अठराव्या शतकापासून देवी, कॉलरा, फ्लू, क्षयरोग, इंन्फूएंझा अशा अनेक रोगांनी जगात थैमान मांडले होते. 19 व्या शतकात स्पॅनिश फ्लूच्या साथीने पाच कोटी लोक मरण पावले. तेराव्या शतकात प्लेगच्या साथीने ऐशी कोटी पेक्षा जास्त लोक मृत्यूमुखी पडले होते. त्याच काळात भारतात प्लेगच्या साथीमुळे एक कोटी चाळीस लाख लोक मरण पावले होते. एकवीसाव्या शतकात कोविड – 19 चा प्रभाव जगात झालेला दिसतो. दिनांक 9 मार्च, 2020 मध्ये भारतात सर्व प्रथम कोरोना बाधिताचा मृत्यू झाला. दिनांक 11 मार्च पासून देशात संचारबंदी व जमावबंदी लागू करण्यात आली. राज्यात कठोर नियम लादले गेले. जिल्हांतर्गत प्रवासाला मज्जाव करणेत आला. सार्वजनिक, धार्मिक स्थळे बंद करण्यात आली. कोरोनाचा प्रभाव सुमारे वर्षभर सर्वत्र जोमाने फैलावत होता. या काळात देशातील साडेचार कोटी लोक कोरोना बाधित झाले. आजपर्यत देशांतर्गत 5. 26 लाख लोक मृत्यूमुखी पडले. तर जगामध्ये चौसस्ट लाख लोकांचे देहावसान झाले.

कोरोना व्हायरस हा विषाणूजन्य साथीचा रोग असल्यामुळे त्याचा फैलाव हा अद्यापी होत आहे. मात्र लसीकरणाच्या उपायामुळे मृत्यूदरात घट आली असून मानवी जीवनमान स्थिरावत आहे. आज कोरोना बाधितांची संख्या वाढत असली तरी संयुक्त राष्ट्संघाच्या अहवाला नुसार आजपर्यत एकशेसतरा देशांमध्ये याचा प्रसार झाला असल्यामुळे सिमापार असणारा हा रोग पॅन्डेमीक म्हणून जाहीर करणेत आलेला आहे. याचा परिणाम शिक्षण, आरोग्य, सामाजिक जीवन, उद्योग व्यवसाय या सर्व क्षेत्रांवर झालेला दिसतो.

कोरोना प्रभावित क्षेत्रे :

कोरोना महामारीमुळे जगातील आर्थिक, सामाजिक, कौटुंबिक, पर्यावरण, आरोग्य आणि शिक्षण या प्रमुख क्षेत्रांवर सगळयात मोठा प्रभाव झालेला दिसून येतो. जागतिक आरोग्य संघटना (डब्ल्यु. एच. ओ.) यांनी जाहीर केल्या प्रमाणे एखादी साथ देश, राष्ट्, राज्य यांच्या सिमा ओलांडून जेव्हा पुढे जाते तेव्हा या साथीला पॅन्डेमीक असे म्हटले जाते. या परिस्थितीमुळे जगातील अनेक परिस्थितीं वर गंभीर परिणाम होत असतो. जगातील दळणवळण, व्यवहार ठप्प झाले होते. जणूकाही पृथ्वीची गतीच संथ झाली होती. म्हणून कोरोना प्रभावित क्षेत्रे थोडक्यात पाहाणे आवश्यक आहे. या काळात भारतातील तरूणांनी मोलाचे योगदान दिले. जगातील तरूणांच्या लोकसंख्येत भारत हा अग्रेसर असल्यामुळे सामाजिक, राजकीय, आर्थिक समतोल साधणे अशा परिस्थितीत शक्य झाले ते केवळ युवकांमुळेच.

सामाजिक परिस्थिती :

मनुष्य हा एक सामाजिक प्राणी आहे. त्याला समुदायाने राहाणे आवडते किंबहूना मनुष्याचे जिवन हे परस्परावलंबी आहे. मानव ज्या कुटुंब व्यवस्थेत राहातो. त्यात तो आपले नाते – संबंध, आप्त – स्वकिय, शेजारी – पाजारी, गावकरी यांच्या सहकार्यातूनच तो आपला उदरनिर्वाह करीत असतो. त्यांच्या परस्परांतील भाव भावनांमुळे त्याचे जगणे हे जीवन प्रवाहात परावर्तीत होत असते. एकाच कुटुंबातील रक्तातील व्यक्तींच्या समुहाचे कुळ बनते. अनेक कुळांचे एक गाव बनते. जाती, धर्म, वंशाच्या समुदायातून राष्ट् उभे राहात असते. त्यामुळे व्यक्ती ते राष्ट् ही एक अविभिन्न सामाजिक साखळी आहे. कोरोनाच्या महामारीने या साखळीला छेद दिला होता.

कोरोना काळात माणसाच्या मनात इतकी भिती निर्माण झाली होती की, माणूस माणसाचा द्वेष करू लागला होता. गावातील एखाद्या माणसाला थोडे जरी लक्षण दिसले तरी त्याचा तिटकारा करू लागला होता. या अगोदर एखाद्या माणसाला थोडी जरी दुखापत झाली तरी संपूर्ण गाव त्याला पाहाणेकरिता दवाखान्यात जमा होत होते. पण हीच परिस्थिती कोरोना काळात पालटली. माणसातील दयाबुध्दी, करूणा, आपुलकी लोप झालेली पहायला मिळते. नाशिक सारख्या शहरात याचे ज्वलंत उदाहरण घडलेले दिसते. नाशिक मध्ये एक डॉक्टरांना कोरोना झाल्यामुळे वाळीत टाकणेची घटना घडली होती. त्या काळात गावकरी, सोसायटीतील लोक, आजुबाजूचे लोक त्यांच्याकडे डुंकुनही पाहात नव्हते. अखेर त्यांनी विदेशातील आपल्या मुलाला संपर्क साधून पोलीसांच्या माध्यमातुन लोक संपर्क केला. हे माणूसकी शून्य जीवन कोरोनाने जगण्या करिता प्रवृत्त केले होते. एके काळी देशात जातीय व्यवस्थेने लोकांना बहिष्कृत केले जात होते. पण येथे रक्ताचीच माणस 'फिजिकल डिस्टंसींग' ची संस्कृती रूजविणेचा प्रयत्न करीत होते. इतकी सामाजिक विरोधाभासाची परिस्थिती कोरोना काळात निर्माण झाली.

आर्थिक परिस्थिती :

कोरोनाच्या साथीमुळे जगातील अर्थव्यवस्थेवर सगळयात मोठे संकट उभे राहिले होते. संयुक्त राष्ट्संघाच्या अहवालानुसार भारतातील चाळीस कोटी लोक दारिद्रय रेषे खाली ढकलले जाण्याची शक्यता होती. त्यामुळे देशात बेरोजगारी, उपासमारी असे अनेक आर्थिक प्रश्न उभे राहाणार होते. विकसीत देश कोरोनामुळे त्रस्त झाले होते. देशातील असंघटित अर्धकार्यकुशल कारागिरांवर मोठे संकट ओढवले होते. त्यामध्ये रिक्षाचालक, हातगाडीवाले, टॅक्सी चालक, वेटर, मॉल मधील कर्मचारी, व्यापारातील हातकमाई करणारे, काच, कागद, भंगार जमाकरणारे रोजगार इत्यादी कामगारांचे क्षेत्र हे देशातील नव्वद टक्के असंघटित अर्धकुशल कामगार क्षेत्र म्हणून मानले जाते. हे क्षेत्र पूर्णपणे ठप्प झाले होते. त्यांचे चरितार्थाचा गाडा पूर्णपणे थांबला होता.

या शिवाय शिक्षित उच्च पदस्थ लोकांना आपली नोकरी गमवावी लागली होती. शेअर बाजार कोसळले असल्यामुळे आर्थिक परिस्थिती बेताची झाली होती. एंजल गुर्रिया हे 'ऑर्गनायझेशन फॉर इकॉनॉमी डेव्हलपमेंट' चे सेक्रेटरी आहेत. त्यांच्या मते जगाचा आर्थिक विकास दर मंदावल्यामुळे जगाचा विकासदर हा 1.5 टक्के इतका राहील. त्यामुळे शिक्षित लोकांना या सूवर्ण संधीचा फायदा घेता आला तर देशातील आर्थिक परिस्थिती थोडया फार प्रमाणात संकटातून संधीकडे रूपांतरीत होईल. अन्यथा अतिशय कठीण दिवस राहातील. अमेरिकेतील जागतिक अर्थतज्ञ टॉम यांनी असे मत व्यक्त केले आहे की, या काळात राजकीय तत्परता आणि तरूणांचे धाडस व बौध्दिक कुशलतेची गरज आहे. कोरोनामुळे जगाला आर्थिक नियोजनाचे काटकसरीचे धडे दिले. जपान, दक्षिण कोरिया, इत्यादी देशांनी आपले उद्योग व्यवसाय चीनकडून भारताकडे वळविल्यामुळे भारताकडे भविष्यात जगभरातून ज्ञानी लोकांची मागणी वाढणार आहे.

पर्यावरण :

कोरोना साथीच्या रोगाने जगातील मानवाला माणूसकीचा धडा शिकविला. जगणे कसे असावे याचे अनुभव दिले. दया, क्षमा, शांती यालाच महत्व दिले पाहिजे असे शिकविले. पर्यावरण, प्रदुषण, संरक्षणाचे फायदे कोणते याचा प्रत्यक्ष अनुभव लोकांना पहायला मिळाला. 'आजतक' या हिंदी न्यूज चॅनेल वर दिनांक 5 एप्रिल, 2020 च्या बातमीमध्ये असे दाखविणेत आले होते की, जालंधर शहरातील घरांच्या छतांवरून दोनशे तेरा किलोमिटर लांब असणा–या हिमाचल प्रदेशातील कांगडा मंडी जिल्हयामध्ये असणा–या हिमालयाच्या पर्वतरांगा कोरोनाच्या काळात प्रदुषण विरहित वातावरणामुळे स्पष्टपणे दिसू लागल्या होत्या. इतकीवर्ष प्रदूषणामुळे हिमालयाचे दर्शन लोकांना होत नव्हते.

लॉकडाउनच्या काळात उद्योग, धंदे, वाहातूक, बांधकाम व्यवसाय बंद असल्यामुळे धुळीचे, पाण्याचे, हवेचे प्रदूषण होत नव्हते. नैसर्गिक वातावरण शुध्द व स्वच्छ झाले होते. पर्यावरण प्रदूषणाच्या बाबतीत नासाच्या अहवाला नुसार भारतात

गेल्या वीस वर्षातील ऐरोसोलची पातळी सर्वात कमी झाली होती. ऐरोसोल हे लहान द्रव्य कण आहेत. हे मानवी आरोग्यासाठी हानीकारक असतात. यामुळे वातावरण शुध्द झाले होते. या शिवाय समुद्र नदयांतील पाण्यातील शुध्दतेची पातळी वाढली होती. वन्यजीव, जलजीवांचे आयुष्यमान उंचावले होते. शांत, स्वच्छ वातावरण व सूर्यप्रकाश यामुळे अनेक वन्य जीव मानवी वस्तीतून रस्त्या रस्त्यावरून मुक्तपणे विहार करताना दिसू लागले होते. पर्यावरणाचा –हास थांबला होता. पर्यावरणाचे संतुलन काही काळ परिपूर्ण झाले होते. निसर्गातील कोरोनाच्या संकटामुळे समतोलाचे प्रमाण मात्र वाढले होते.

आरोग्य :

कोरोना विषाणुमुळे पसरलेल्या साथीतून माणसाची जीवनशैली बदलून गेली होती. या भयावह साथीमुळे देशातील वैद्यकीय सेवा सुविधां बददल मोठे प्रश्नचीनह उभे राहिले होते. प्रगत औद्योगिक वैद्यकीय तंत्रज्ञान मानवी जीवनाला जगण्यास परिपूर्ण होत नव्हते. रोगावर उपचार करण्याकरिता लस शोधण्याचे काम जगभरातील डॉक्टर, तज्ञ अहोरात्र करत होते.

व्यक्तीगत व सार्वजनिक आरोग्याच्या काळजी बाबत कोणतीही शासकीय यंत्रणा कोरोनापूर्व काळात देशात, राज्यात पुरेशी साधने उपलब्ध नव्हती. सामान्य सोई उदाहरणार्थ दवाखान्यातील खाटा, प्राथमिक उपचार यांची वानवा दिसत होती. मास्क, सॅनिटायझर यांचा वापर काळजीपुर्वक होत नव्हता. शरीराचे तपमान पल्स रेट मोजण्यासाठी आवश्यक यंत्रे, ऑक्सिजनच्या टाक्या इत्यादी सुविधा उपलब्ध करून देण्या करिता शासन यंत्रणेला मोठे कष्ट उपसावे लागले होते.लहान मुले, वृध्द यांचा बचाव करणेसाठी स्वतंत्र योजना, यंत्रणा उपलब्ध करता येत नव्हत्या.

कोरोनाच्या महामारीने जगाला आरोग्याची जणू काही गुरूकिल्ली दिली. नित्याने महानगरांची स्वच्छता, परिसर स्वच्छता, पाण्याचा यथायोग्य वापर, मास्कचा खोकताना, शिंकताना परिपूर्ण वापर या शिवाय आरोग्याची कशी काळजी घ्यायची या सारखे सामान्य नियम कोरोनामुळे माणसाच्या अंगवळणी पडले होते. कोरोना बाधितांचे शारीरीक आरोग्य, औषधोपचाराने ठिक होत असले तरी मानसिक आरोग्य सर्वाचे उत्तम राहाणेसाठी ब्रिटनच्या नॅशनल हेल्थ सर्व्हीसने काही सूचनावजा कृतीउपचार सर्वाकरिता सांगितले होते. ते म्हणजे फोन कॉल, व्हिडीओ कॉल, सोशल मिडीयाच्या माध्यमातुन मित्र परिवाराच्या संपर्कात रहा. काळजी करणा–या गोष्टी मनमोकळेपणे कोणा सोबत तरी बोलत रहा. दुस–यांचे दुःख, समस्या जाणुन घ्या. छंद जोपासा, आनंद देणा–या गोष्टीं साठी वेळ द्या. इत्यादी आरोग्य उत्तम राहाणेसाठी शरीर, मन सुदृढ होणेसाठी नियमित व्यायाम करा व पोषक आहार घ्या. हाच उत्तम उपचार होय.

युवकांचे योगदान :

युवक म्हणजे चेतना. युवक म्हणजे चैतन्य. युवाशक्ती म्हणजे देश, राष्ट्, जग समृध्द करणारे बळकट हात होत. भारताची लोकसंख्या एक अब्ज चौतीस कोटी आहे.

त्यातील युवकांची संख्या ही त्रेसस्ट कोटी आहे. त्यांची वर्गवारी केल्यास संघटित क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र, नोकरी, व्यवसाय, सेवा क्षेत्र, माहिती तंत्रज्ञान, इत्यादी अनेक क्षेत्रां मध्ये ते कार्यरत आहेत. भारतातील या प्रत्येकाच्या हाताला काम देण्याची योजना आखली तर देशाची अर्थव्यवस्था सहजच बळकट होईल. पर्यायाने देश विकसीत होईल. कोरोनाच्या काळात अनेक समस्या तरूणांनी सोडविल्या होत्या. त्यांनी राष्ट्कार्याकरिता सेवा कार्य केले होते. त्यांची शक्ती ही लोककल्याणासाठी उपयुक्त आहे.

देशाच्या विकासात युवकांचा वाटा मोठा आहे. परंतु आजकाल विकास म्हणजे केवळ सोई सुविधा, रस्ते, बाजारपेठा यांचा विचार केला जातो. पण विकास म्हणजे आरोग्य, मनस्वास्थ्य, निसर्गाशी समतोल राखून त्याचा जरूरी पुरता वापर करून समाजाचे स्वास्थ्य स्थिर ठेवण्याकरिता माणसातील परस्पर संबंध दृढ करण्याकरिता, समाजातील विविध धर्माच्या, वंशाच्या लोकांचे ऐक्य याचा विचार करणे गरजेचे आहे. या शिवाय साहित्य, संगीत, कला अशा गोष्टींचाही सर्वसमावेशक विचार केल्यास ख–या अर्थाने विकास म्हणजे संपूर्ण मानवी प्रगती अशी विकासाची व्याख्या करता येईल.

कोरोना काळा मध्ये युवकांना बरेच शिकायला मिळाले. त्यांचे शिक्षण ऑनलाईन असल्यामुळे घरात बसून जगातील अनेक विषयांचे ज्ञान त्यांनी अवगत केले. एकीकडे कोराना म्हणजे माणसाला नजरकैद वाटत असली तरी दुसरीकडे तंत्रज्ञानाचा सदुपयोग सर्वात जास्त तरूणांनीच करून घेतला. यामुळेच समाजा मध्ये प्रेम, जिव्हाळा, आपुलकी वाढलेली दिसून येते. आर्थिक नियोजन आणि बदलती जीवनशैली तरूणांनी स्विकारलेली होती. याच विषयावरती कोरोना काळातले प्रेम या विषया संबंधी 'लव्ह इन द टाईम ऑफ कोरोना' हा कथा संग्रह प्रकाशित झाला. यामध्ये लेखकानी कोरोना काळातील प्रयोगशिल निर्मिती करून तरूणांना लिखाणाकरिता प्रवृत्त केले होते. या शिवाय प्रत्यक्ष सेवा कार्यात, सामाजिक कार्यात अनेक तरूणांनी भाग घेतला होता. त्यांचे अनुभवही गाथा कोरोनाची या सारख्या ग्रंथातून व्यक्त झालेली आहे. डॉ. अभय बंग यांनी आपल्या अनुभवातुन तरूणांना या काळात आरोग्य सेवेकरिता हिरीरीने भाग घ्यावा या करिता ब्लॉग लेखन केले होते. त्यातील अनुभवा नुसार प्रेरणा घेउन अनेक नवशिक्षित डॉक्टरांनी कोरोना काळात आपले प्रयत्न वाढविले. त्याच प्रमाणे पोलीस, शासकीय यंत्रणा, औषधोपचार करणारी सेवाभावी संस्था यांनीही या कार्यात पुढाकार घेतला. या कार्यामुळे कोरोना वॉरियर म्हणून अनेक युवकांचा सन्मान झाला. कोरोनाने केवळ युवा वर्गच नव्हे तर समस्त मानव जातीला एक नवे वळण दिले. कोरोना काळात गरजुंना मदत, गरीब विद्यार्थ्यांना विद्या दान त्याच प्रमाणे उल्लेखनीय कामगिरी केल्या बददल राज्यातील पस्तीस शिलेदारांचा सकाळ यंग इन्स्पिरेटर्स नेटवर्क ने सन्मान केला. त्याच प्रमाणे पोलीस आयुक्त, सामाजिक कार्यकर्ते, उद्योजक यांच्या कडूनही युवकांचा सन्मान आयोजित केला होता.

निष्कर्ष :

1. कोरोना ही एक आपत्ती असली तरी त्याकडे संकट म्हणून न पाहाता संधी म्हणून पाहिले गेले.
2. इतर देशांच्या तुलनेत भारता मध्ये कोरोनोत्तर कालखंड हा कमी वेळात सावरलेला दिसून येतो. कोणतेही संकट हे एकटे येत नसुन ते आपल्या सोबत अनेक संधी घेउन येत असते. त्या संधीकडे पाहाण्याची दृष्टी व त्याचा लाभ घेणेची वृत्ती असायला हवी. ती वृत्ती तरूण वर्गा मध्ये जास्त प्रमाणात होती.
3. देशांतर्गत एकीकडे आर्थिक मंदी असताना दुसरीकडे विद्वत्तेला संधी प्राप्त झाली होती. नोक–या गमावलेल्या असतानाही स्वयंरोजगाराची अनेक दालने खुली झाली.
4. भय, चिंता, तणाव यापेक्षा मानवता, माणूसकी, नातेसंबंध या काळात दृढ होत गेले.
5. सामाजिक आरोग्याला, सामाजिक आचरणाला, विशेष महत्व दिले गेले. व्यसना पेक्षा जीवनातील संतुलीत आहाराला महत्व प्राप्त झाले. मानवाची दिनचर्या आणि जीवनशैली बदलण्या करिता कोरोनामुळे लोक प्रवृत्त झाले.

संदर्भ :

1. पाटील दिनेश शं., कोरोना व्हायरस संकट की संधी, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.
2. डॉ. मंजिरी चेपे व डॉ. सुनिता बाळापुरे, महिलांची परिवर्तनशिल भुमिका (कोरोना काळातील परिस्थिती वर आधारीत), रिसर्च इन पब्लिकेशन, फेब्रुवारी, 2021, अमरावती.
3. वासलेकर संदिप, एका दिशेचा शोध, राजहंस प्रकाशन प्रायव्हेट लिमिटेड, पुणे, आवृत्ती अकरावी. 2012
4. भवारी विजयकुमार, कोरोनाः भयप्रद, भयकंपित इतिहास. प्रथम आवृत्ती, कोमल प्रकाशन, मुंबई.
5. डॉ. राजेश खरात, संभाषित (मुक्त नियतकालिक), वर्ष पहिले, अंक पहिला, सप्टेंबर, 2020, प्रकाशन मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.
6. दैनिक सकाळ, दिनांक 21 फेब्रुवारी, 2021, युवा वॉरियर्सचा सन्मान.
7. श्री अरूण शेवते, हाती ज्यांच्या शुन्य होते, ऋतुरंग प्रकाशन, मुंबई, बत्तीसावी आवृत्ती, नोव्हेंबर, 2015.

संपादकों के बारे में

डॉ.सायमा सरदेशमुख

बी.ए., एम.पी.एड, एम.फिल, पीएच.डी

उच्च शिक्षा विभाग में महिला खेलों के क्षेत्र में अग्रणी नामों में से एक नाम हैं।दो दशकों से शारीरिक शिक्षा विभाग में योगदान दे रही हैं। अपनी खेल यात्रा के दौरान उन्होंने 4 राष्ट्रीय खेलों और 3 इंटर यूनिवर्सिटी में भाग लिया है। वर्तमान में शासकीय महाविद्यालय बरघाट, जिला – सिवनी (म.प्र.) में क्रीडा अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। माधव विश्वविद्यालय पिंडवाड़ा राजस्थान से शारीरिक शिक्षा में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। उनके शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं द्वारा प्रकाशित किए गए थे। लगभग 100 राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों, वर्कशॉप, एफ.डी.पी. एवं क्विज में भाग लिया हैं। अपने अकादमिक मोर्चे और व्यापक कार्य अनुभव के साथ उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है। वह लौ और आग की एक सच्ची मिसाल हैं क्योंकि 20 साल से वह आकाशवाणी छिंदवाड़ा के साथ एक उद्घोषक के रूप में जुड़ी हुई हैं।

मो.न. 918770123031

ईमेल आई डी:- samavee.sirdeshmukh@gmail.com

डॉ.फरहत मंसूरी

एम.ए.नेट,पी.एच.डी.

समाजशास्त्र विषय के सहायक प्राध्यापक के रूप में शासकीय महाविद्यालय बिछुआ जिला छिन्दवाड़ा में कार्यरत हैं। पी.एच.डी.की उपाधि समाजशास्त्र विषय में समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल से प्राप्त की । शिक्षा के क्षेत्र में 11 वर्षों का अनुभव हैं। राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में 6 पुस्तक अध्याय तथा 26 शोध पत्र प्रकाशित किये हैं। लगभग 100 राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों, वर्कशॉप, एफ.डी.पी. एवं क्विज में भाग लिया हैं। मुख्य रूचि का विषय महिलाओं की समस्याओं पर शोध करना एवं उनके निराकरण के उपाय खोजना हैं।

मो.न.7000463635

ईमेल आई डी:- farhat.man87@gmail.com

₹ 400/-

ISBN 978-93-954564-1-8

9 789395 456418 >

red'shine PUBLICATION INDIA

RED'SHINE PUBLICATION PVT. LTD.
88-90 REDMAC, Navamuvada,
Lunawada, Gujarat-389230
Website: www.redshine.co.in
Email: info@redshine.in
Helpline: 0-76988 26988

Available on

kindle amazon goodreads Google Books

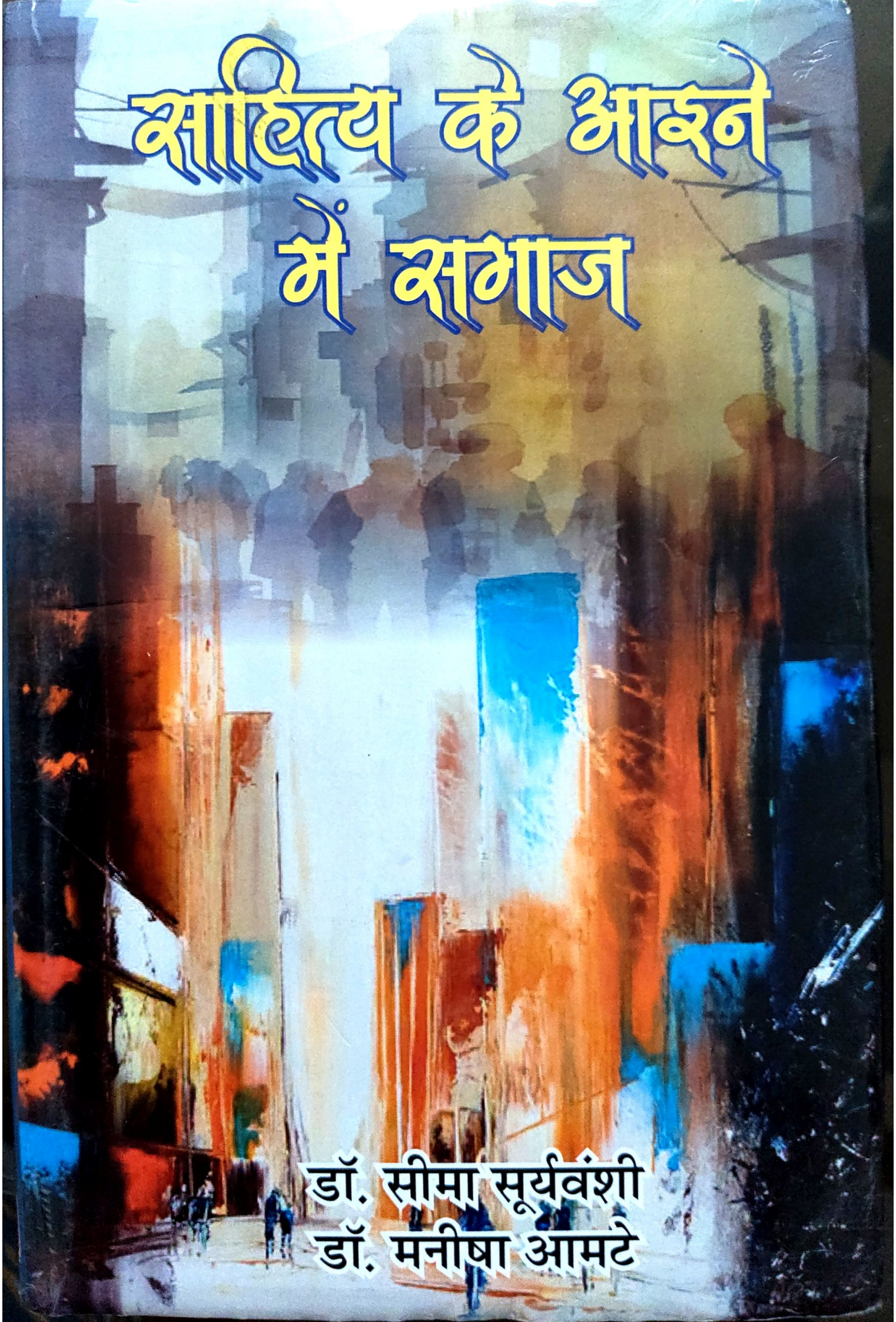
साहित्य के आइने में समाज
डॉ. सीमा सूर्यवंशी
डॉ. मनीषा आमटे

डॉ. मनीषा संदीप आमटे

न्म : 6 अक्टूबर 1973

ाक्षा : एम.ए. (समाजशास्त्र), एम.फिल., नेट यू.जी.सी.) नेट (सी.बी.एस.ई.), पीएच.डी.

ाध्यापन अनुभव : स्नातक एवं स्नातकोत्तर क्षाओं में 21 वर्ष का अध्यापन

यन : (मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग) सहायक-ाध्यापक 2017 समाजशास्त्र के लिए चयन

ोधपत्र प्रकाशन : राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय शोध त्रिकाओं में 30 से अधिक प्रकाशन

शोध संगोष्ठी/कार्यशाला : लगभग 50 राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/कार्यशाला में सहभागिता पत्र वाचन।

संप्रति : मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा में सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) पद पर कार्यरत

पता : 5, गणेश कॉलोनी, नरसिंहपुर रोड, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) 480002

ई-मेल :

drmanisha.sandeep22@gmail.com

साहित्य के आइने में समाज

डॉ. सीमा सूर्यवंशी
डॉ. मनीषा आमटे

वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर
कानपुर - 208021 (उ.प्र.)

ISBN : 978-93-95288-30-9

मूल्य : छः सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	**साहित्य के आईने में समाज**
संपादक	:	डॉ. सीमा सूर्यवंशी डॉ. मनीषा आमटे
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस** A/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**2022**
मूल्य	:	**600.00**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर
आवरण	:	गौरव शुक्ल, कानपुर
मुद्रण	:	सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

डॉ. सीमा सूर्यवंशी

जन्म	:	05 अप्रैल
पिता	:	श्री कोमल प्रसाद सूर्यवंशी
पति	:	श्री रणवीर सूर्यवंशी
शिक्षा	:	एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल., नेट (यूजीसी), नेट (CBSE), पी-एच.डी.
पुरस्कार	:	गोल्ड मेडल (डॉ. हरिसिंह गौर वि.वि. सागर)
अध्यापन अनुभव	:	स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में 14 वर्ष
चयन	:	(मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग) सहायक प्राध्यापक 2017 हिन्दी के लिए प्रवीण सूची 21 में चयन
पुस्तक	:	आधुनिक भारतीय समाज में वृद्धजनों की दशा एवं दिशा प्रभा खेतान के साहित्य में विविध स्वर साहित्य और समाज विविध विमर्श
शोधपत्र	:	40 से अधिक विभिन्न, राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशन लगभग 70 राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता, शोधपत्र वाचन
लेखन	:	कविता, कहानी
संप्रति	:	मध्यप्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग में सहायक प्राध्यापक पद पर कार्यरत (हिन्दी)
पता	:	ग्राम- सिरेगाँव, पोस्ट- मोठार, तहसील- उमरेठ, जिला- छिन्दवाड़ा, (म.प्र.-480001)
ई-मेल	:	drseemasuryawanshi@gmail.com

Also available at : flipkart amazon

वान्या पब्लिकेशंस

ए/2122 आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर
9450889601, 7309038401
vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com
www.vanyapublications.com

₹600/-
ISBN 978-93-95288-30-9

rudra graphics

साहित्य और समाज
विविध विमर्श

डॉ. मनीषा आमटे
डॉ. सीमा सूर्यवंशी

ISBN : 978-93-95288-26-2

मूल्य : पाँच सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	**साहित्य और समाज : विविध विमर्श**
संपादक	:	डॉ. मनीषा आमटे
		डॉ. सीमा सूर्यवंशी
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस**
		3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
		कानपुर - 208 021
		Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
		info@vanyapublications.com
		Website : www.vanyapublications.com
		Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**2022**
मूल्य	:	**550.00**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर
आवरण	:	गौरव शुक्ल, कानपुर
मुद्रण	:	सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

14. लोक के आलोक में लोकनृत्य (राजस्थान अंचल के विशेष संदर्भ में)
डॉ. भरत कुमार 95
15. संगीत का मानव मस्तिष्क पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव
किरण डाँगी 103
16. साहित्य और समाज में आदिवासी विमर्श
डॉ. सविता मरावी 111
17. प्रेमचन्द की कहानियों में वर्णित दलित समाज
सना फातिमा 120
18. साहित्य व समाज में जीवन मूल्य
डॉ. रीतेश झारिया 126
19. दादूदयाल के प्रथम शिष्य राजा-संत : बड़े सुंदरदास
वीरमाराम पटेल 130
20. समकालीन साहित्य में भूमंडलीकरण और बाजारवाद
श्रीमती मीनाक्षी कोरी 135
21. महादेवी वर्मा के काव्य में विरहानुभूति
डॉ. दीपा पंत
श्रीमती पार्वती 140
22. साहित्य एवं पर्यावरण : विवेचन एवं संरक्षण
प्रो. प्रतिभा पहाड़े 148
23. साहित्य व समाज में जीवन मूल्य
डॉ. यू.के. जैन 153
24. मध्यकालीन संत दादूदयाल की भक्ति-साधना में सामाजिक समरसता
डॉ. बाबुराम 157
25. आदिवासी विमर्श - भारतीयता के परिप्रेक्ष्य में
प्रा. डॉ. रंजना वर्दे 166
26. हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में हिंदी सिनेमा की भूमिका
उमेश कुमार 169
27. साहित्य और संस्कार
डॉ. मनीषा आमटे 174

27
साहित्य और संस्कार

–डॉ. मनीषा आमटे

साहित्य भाषा के माध्यम से रचित वह सौन्दर्य या आकर्षण से युक्त रचना है जिसके अर्थबोध से सामान्यजन को आनन्द की अनुभूति होती है अर्थात् साहित्य वह साधन है जो भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होकर अपने सौन्दर्य बोध से जन साधारण को प्रभावित कर आनंदित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय साहित्य में घुले संस्कारों की छवि प्रस्तुत करने का एक लघुतर प्रयास है। भारतीय संस्कृति में मानव को आदर्श व उन्नत रूप प्रदान करने के जो साधन बताए गए है उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है संस्कार। भारतीय संस्कृति में मानव का संस्कारों से अटूट संबंध रहा है।

'जन्म ना जायते शूद्रोसंस्कारादद्विज उच्यते'

अर्थात जन्म से सभी शूद्र होते हैं और संस्कारों द्वारा उन्हें द्विज बनाया जाता है। भारतीय संस्कृति के – सोलह संस्कार महान संस्कृत साहित्य की ही देन है। जो गर्भ धारण से ही शुरू हो जाते है।

संस्कारों की महत्ता भारतीय सहित्य में स्पष्टतः परिलक्षित होती है। साहित्य उत्कृष्टता के पर्याय 'रामचरित मानस' में राम अपने भाइयों को समझाते है कि समाज और राष्ट्र का हित सबसे बड़ा है। हर परिवार को उसके बारे में सोचना चाहिए। जब तक हम अन्य की पीड़ा और व्यथा नहीं समझेंगे राष्ट्र का विकास संभव नहीं है।

राम कहते हैं–

परहित सरिस धरम नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।

यानी दूसरों के हित और सुख से बढ़कर कोई और धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा देने से बड़ा पाप कोई नहीं है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अपने परिवार में जो संस्कार और विचारों की नीव रखी वे सदियों पश्चात् भी भारतीय समाज के प्ररेणा स्त्रोत है। श्री रामकथा मानवता प्रदान करती है। मानवीय जीवन का संपूर्ण संस्कार रामचरितमानस में निहित है।

'महाभारत' जीवन के उन मूल्यों सिद्धांतों और आदर्शों का उद्घोष है जो आने वाली सभ्यता का स्पष्ट भविष्य रेखांकित करता है। यह महाकाव्य बताता है कि संतानों में संस्कारों का आभाव संम्पूर्ण कुल के नाश का कारण बनता है।

चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ईश्वरीय ज्ञान है जो कि सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को वैदिक भाषा संस्कृत में ज्ञान सहित दिए गए थे। इन वेदों में ईश्वर ने वह ज्ञान मनुष्यों तक पहुचाया जो आज 1,96,0854114 वर्ष बाद भी सुलभ है। यह वेद ज्ञान मनुष्य की शारीरिक बौद्धिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति होती है। उदाहरण स्वरूप हम आदि पुरूष ब्रह्मजी, महर्षि मनु, पतंजलि, कपिल, कणाद गौतम व्यास जैमिनी, राम कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द डा. केशव बलिराम हेडगेवार, आदि ऐतिहासिक महापुरूषों को ले सकते है। जिनकी शारीरिक बौद्धिक और आत्मिक उन्नति का आधार वेद था। वेदाध्ययन यद्यपि वेदारम्भ और उपनयन इन दो संस्कारों के अन्तर्गत आता है परन्तु इन दोनों संस्कारों का महत्व अन्यतम है। नित्य आर्य ग्रन्थों के स्वाध्याय का भी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। वेदों के आधार पर जिन सोलह संस्कारों का विधान है वह क्रमशः गर्भाधान पुंसवन, सीमन्तोयन, जातकर्म नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह–ग्रहस्थ, वानप्रस्थ–सन्यास व अन्त्येंष्टि संस्कार है। इन संस्कारों को करने से मनुष्य की आत्मा सुभूषित संस्कारित एवं ज्ञानवान होती है और जीवन के चार पुरूषार्थो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकती है। संसार के शिक्षित अशिक्षित सभी माता–पिता अपनी संतानों को स्वस्थ, दीर्घायु, सदाचार, तेजस्वी, वर्चस्वी, सुखी समृद्ध बनाना चाहते है। वर्तमान स्कूली शिक्षा, माता–पिता के इन आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं करती। इसकी पूर्ति वैदिक साहित्य के ज्ञान व तदनुसार आचरण से ही संभव है।

हमें ब्रहमांड के वैदिक साहित्य के अनंत अलौकिक और अनोखे रहस्यों को बताते है जो साधारण रूप में हमारी समझ से परे होते है। वेदों की नीतियॉ रीतियां, विधियां, और अथाह ज्ञान इस संसार को समझने और दुनिया को सुचारू रूप से संचालित करने में मददगार साबित होते है। परंतु पौराणिक हिन्दू धर्म के साथ वैदिक धर्म का ह्रास हुआ क्योंकि कुछ मनीषियों ने संस्कारों का उपहास किया है। कठिनता भी संस्कारों के ह्रास के लिए उत्तरदायी थी। पश्चात्य शिक्षा पद्धति और भौतिक विचारधारा से भी संस्कारों को धक्का लगा।

इस प्रकार संसार के सभी आदर्श धर्म ग्रंथ साहित्य रचनात्मकता के प्रमाण है। साहित्य को संस्कार का जनक माना जाता है। समाज में साहित्य आदर्शो के समुच्चय और उत्कृष्टता का पर्याय होने के साथ–साथ भावनात्मक उन्नति का मार्ग भी है।

अतः समाज की कमियों के उजागर करने साहित्य जितना योगदान होता है उतना ही उन कमियों को दूर करने में भी होता है। जहां साहित्य संस्कारित हो आदर्श व्यवहार को प्रेरित करता है वहीं आदर्श संस्कारों का उदाहरण भी प्रस्तुत करता है।

संदर्भ

1. वैदिक साहित्य और संस्कृति डां बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर प्रकाशन, वाराणसी।
2. भारतीय दर्शन, आलोचनात्मक अध्ययन, जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल, आगरा।
3. शर्मा डी.डी. हिन्दू संस्कारों की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक समीक्षा।
4. रावत चंद्रभन, दृष्टि एवं दिशाः साहित्यिक निबंध।
5. "वेद विकिपीडिया।"

♦♦♦